

جملەحقوق كتابت بحق ناشرمحفوظ ہيں ت**صر بيجات**

نام کتاب تحریک سیداحمد شهید جهارم مولف مولا ناغلام رسول مهرصاحب گفتی مولا ناغلام رسول مهرصاحب گفتی مولا نامجم عمران قاسمی بگیانوی معداد صفحات ۸۱۲ با جتمام شمشیراحمد قاسمی (دیوبند) با جتمام عمران کمپیوش مظفر نگر (PH: 09219417735) من اشاعت جنوری 2008

ملنے کے پتے

دارالکتاب و یوبند
 نابل کتاب گر د یوبند
 مسعود پباشنگ هاؤس د یوبند
 دارالاشاعت د یوبند
 درالاشاعت د یوبند
 در نریشر شمخل پوره حیدرآ باد
 توحید بک د یو چول پوراغظم گره
 مولاناعبدالسلام خال قای 179 کتاب مارکیٹ بهندی بازارمینی

بسم اللدالرحن الرحيم

مقام بندگ ویگر، مقام عشق دیگر زنوری سجده می خوابی ، زخاکی بیش از ال خوابی چنال خود را نگه داری که باایس بے نیازی ہا شہادت بر وجودِ خود زخونِ دوستال خوابی (آبال)

فهرست عنوانات

| صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
|------|-----------------------------------|------------|---|
| ا۵۱ | • بيتوامارت | 19 | • سطوراولين |
| اه ا | 👁 الل نندهياز کی شرکت | ۳۲ | عوض ناشر |
| | دوسراباب | 1117 | 🏚 نذرشهيدانِ بالاكوث |
| am | وبه . نندهیاز میں قیام کاانظام | 70 | • مقدمه |
| ۵۳ | • صاحبزاده محمر نصير | • | حصهاول |
| ar | • بنیرےست بہار | ĺ | (پینخ و لی محمد اور مولوی نصیرالدین) |
| ۵۳ | • صاجزادے کے انظامات | | يهلا باب |
| ۵۵ | 🖸 جماعت کے دوجھے | | i i |
| rα | 👁 شیخول محمرانی | | شهادت امام اور تجديد نظام |
| ۵۷ | 💿 دونوں گروہوں کے مقاصد | M.M. | شہادت امام |
| ۵۷ | 🗖 صاحبزاده محمرتصير کا دَوره | سوم) | 🏓 مختف راستے نہ سریا |
| ۵۹ | 💠 وموت وتبليغ | איא | 🗢 غربت کی کپلی منزل |
| | تنيسراباب | ra | • موجرول كاپيغام |
| 7. | 🗢 نندهیاژ کی سرگزشت | ۳۲ | 💠 دشوارگذارسفر کائ |
| ۲۰ | • احوال وظروف | <i>۳</i> ۷ | م ما ^{ل کل} نی |
| 4+ | م پېلااقدام | rz ~: | ن ښير |
| ווי | ب. په پرشبخون | 77A 179 | جماعت کی پریثال حالی شخولی محمد کی کیفیت |
| 44 | • نتيج | רים | • سوي حمد ما ليفيت • سيح مشوره |
| 41- | 💠 مجاہدین کے خلاف ساز باز | ۵۰ | و ایک بعولا بواداقد |

| 10,777 | | | |
|----------|---|------|---|
| صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
| 44 | 🗢 مقالبے کی تیاری | Altr | 👁 افشائے راز |
| ۷۸ | 🗖 خواص خال ہے گفتگو | 46. | 💠 صاحبزادے ہے گفتگو |
| <u>۸</u> | 💠 مجم الدين کی گرفتاری | 45 | 🗢 صاف گوئی |
| _ ∠9 | 👁 فنخ خال اپنے اصلی رنگ میں | 40 | 🗢 محمرقاسم اورخیرالدین کو پیغام |
| ۸۰ ا | 👁 مصالحت کی تجویز | YY | 🗢 صاحبزاد ے کااعتراف |
| | <u>چ</u> ھٹاباب | 4۷ | 💠 نندهمیاژےروائلی |
| AI | 🏓 مجاہدین پنجتار میں (۴) | | چوتھاباب |
| AI | با به بین (بایدین) • "جهند الوکا" کا قضیه | ۸۲ | 🗢 شخ و لی محمد کاسفر سوات و بونیر |
| AL | 🎍 فیض اللہ کے پاس پیغام | ۸Ł | • پیش نظر مقصد |
| ۸r | چرصائی اورمصالحت | 19 | • مشقت خيزسغرٍ |
| Ar | • باجابام خیل کامعامله | 49 | 🗣 تخته بنداور نادا گئی میں پیغام |
| l Ar | به بهبارات مت • بورش | ۷٠ | شخ دل محر کوبلانے کا فیصلہ |
| ۸۳ | م بگ م | ۷٠ | خونہ سے تختہ بند |
| Aff | 🗢 خانی ک رہائی | ۷1 | 👁 تخته بنداور ناواگئی فت |
| Arr | زیده کی سرداری کامسئله | ۷1 | 🏚 فتح فال پنجاري در سر سرکریشش |
| ۸۵ | چندائی برفوج کشی | 41 | • بحالیٰ اقتدار کی کوشش • شخور بر ما سرند بر ن |
| AT | ع خانی کا ^ق ش ط خانی کا ^ق ش | ۷۳ | • شیخ کاتاً مل اورآخری فیصله • ماگذ |
| 14 | • سيدميان اورسيدرسول كواطلاع | 28 | 💠 ناواگئی ہے پنجتار 🖚 تاریخان تاریخ |
| 14 | • ارسال وفد • ارسال وفد | ۷۵ | • قيام كاا تظام رنسان |
| ΔΔ | عبدنامه پاینده خال کاعبدنامه | | پانچوال باب |
| | ساتوان باب | ۲۲ . | مجاہدین پنجتار میں(۱) |
| | | 44 | • پریشان مالی کی دجه |
| . ^9 | پاینده خال کی دعوت اور قیام اگرور | 22 | 🗢 ہری شکھنلوہ کا خط |

| صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
|------|---|------|---------------------------------------|
| 1+1 | مولوي صاحب كى روائلى | A9 | پاینده خال اورمجامدین |
| 1+1 | 🗢 بير كهند پر يورش | 9+ | 👁 نجادِ بن کی آ مد |
| 100 | 🗢 مجامدین کی ترکتاز | 91 | 🖸 آغازِ جهاد کی تجاویز |
| 1+14 | ملک بورش ازائی | 98 | 🗢 شبخون |
| 1+2 | • مراجعت | 91" | 🗢 چھاپے کے اثرات ونتائج |
| | دسوال باب | 91" | 👁 مجامدین کا إقدام |
| 104 | • مقائ گروہوں کی فتنہ آگیزیاں | 91~ | 💠 سکھوں ہے چپقاش |
| 104 | 🗢 تچ ں پر شبخون کی تیاری | 91" | 💠 مولوی صاحب کی مراجعت |
| 164 | 🔹 دیشیوں کالشکر | 90 | 💠 خوانين کې دُول جمتي |
| 1+4 | • الدام كانيسله | | آتھوال باب |
| 1+A | 💠 دیشیول کا فرار | 94 | ياينده خان اورخ خان پنجاري |
| 1+A | 👁 مجوڑی پرشبخون | PP | 🏚 فنخ خاں کی چیرہ دستیاں |
| 1+9 | 💠 مصالحت کی درخواست | 94 | 👁 مولوى صاحب كي كلبي |
| 1+9 | 🗢 انتظامات کی کیفیت | 92 | 🗢 جسی کوٹ سےروائل |
| 11+ | 🏚 تَی رکاوٹ | 9.4 | 👲 پاینده خال اور سادات شخانه کامعامله |
| 441 | 💠 پيغام مصالحت | 99 | 🗢 مصالحت کی کوشش |
| 111 | 🗢 مجاہد ین کی یورش | 99 | 💠 مولوى معاحب ادر فتح خال كى گفتگو |
| IIr | • كامياب تعاقب | [++ | 💠 رفع نساد کا خدادادسامان |
| 119 | مصالحت کی مزید کوششیں | J++ | 🗢 ایکواتعه |
| He | 👲 مجابدین کی مراجعت | | نوال باب |
| 110 | 👁 دیہات کا دورہ | 1+1 | 🗢 سنسول بربورش |
| | گیار ہواں باب | | 🗬 پاينده خال |
| HA | 🗢 کیملی پرشیخون | 1+1 | اوردوسرےخوانین میں فرق |

| صغہ | عنوان | صفحه | عنوان |
|------|-------------------------------|------|---------------------------------------|
| IPA | 🍎 جہلے میں داخلہ | 114 | 🗗 بڻلول پر چھاپا |
| IFA | 💠 سکھوں کی آ پر | 114 | 🗢 بارك خال كاقتل |
| 119 | 💠 بٹلول میں شکسوں کا قلعہ | 114 | 🗢 پیژندی |
| IF9 | 🗢 کوٹ میں اقامت | IIA | 🗢 بنلوں میں <u>قلعہ</u> کی تبویز |
| 119 | 👁 شبخون کے متعلق رائے | 119 | 💠 کیھلی پرشبخون |
| 1944 | ے پورپیرے | 119 | 🖸 سکھوں ہے لڑائی |
| 1174 | 👁 سکسوں کی بورش | | بار ہواں باب |
| | چودهوال باب | IFI | 👁 دیشیوں کی خوفنا کسسازش |
| IPT | 🗢 خوانین اگرور کاانجام | IFI | 🗢 نی سازش |
| ırr | • پس منظر | 111 | 🗢 متفرق مجابدين پر حملے |
| irr | 💠 خوانين کي تو قعات اور دوزخي | 155 | 🗗 دِفا گ تدابیر |
| Imm | 🔹 خفیه خط و کتابت | 144 | • معندا کی تدبیر جنگ |
| 1mm | 🏚 خيرخوا بول كااصرار | 144 | 👁 دیشیوں کی پسپائی |
| ira | 🏚 سکسوں کو چھے ہٹانے کی تدبیر | ۱۲۳ | سامان رسد پر چھاپ |
| IFY | 🕏 خوانین اگرور کے خلاف جرگہ | Irr | بلندكوث رشنون |
| IP4 | • عبدالغفورخان كالل | Irr | 👁 مجبوزی پر دهاوا |
| 112 | 👁 كمال خان كاخاتمه | ira | 🗢 اقراراطاعت |
| 11-2 | 🗢 انظامات | | تيرهوال باب |
| IFA | 🗢 پاینده خال کی آرزو | 174 | 🏚 مجاہدین کے چھاپ |
| | پندر ہواں باب | 184 | 🌩 جهز پرچیش قندی |
| 16.4 | 💠 بڻلول ميس خوز يز جنگ | 184 | • كامياب مله |
| 16. | 🗢 بنلوں پر حملے کی تیاری | 172 | 🌩 چېلے پر مچماپ |

| صفحه | عنوان | صفحہ | عنوان |
|-------|---|------------|--|
| | ستر ہواں باب | IMI | • كوث سے روائلى |
| 100 | • قيام تفانه كه والات | ابها | 🐧 ابتدائی حمله |
| 100 | باینده خال کی پریشال حالی | IMY | 🗢 مجاہدین کی پریشانی |
| ۲۵۱ | 🙃 فینخ ولی محمد کاسفر تخته بند | IMM | 🗘 ملانعل محمر کی شہادت م |
| 164 | 💠 خوانین دشر فاء کا جرکه | וויירי | 👁 قطب شاه کی مروانگی |
| 104 | 💠 نې بې صاحبه کې تشريف آوري | 144 | مولوی صاحب کاعزم اقدام |
| | 🗢 مولوی نصیرالدین صاحب | irs | 🗢 مجاہدین کی ایک تدبیر |
| 102 | د ہلوی کا مکتوب | (ma | مجاہدین کی مراجعت |
| | 🗢 مولوی صاحب اور | - IMA | نقصان کی تفصیلات |
| 164 | شخ صاحب كاجواب | 10°4 | 👁 لزائی کا نتیجہ |
| 109 | 🏚 ستماندیں جرکہ | | سولہواں باب |
| 169 | 🗢 سلمول کا پیغام | IMA | 💠 پاینده خال کی عهد شکنی |
| | اٹھار ہواں باب | IM | 👲 پاینده خال اورخواعین اگرور ک |
| 141 | 💠 مولوی نصیرالدین منگلوری کی شهادت | 1179 | 🗘 الائی پر چیما پے معد مقدم کے ہور |
| 171 | 💠 منروری گزارش | 164 104 | مقیم خال کی شہادت |
| 144 | 🗢 ستحاندیس مدت تیام | 10. | 🗘 دوسرابزانقصان 🗪 مهاری در در کاع: مهار |
| 144 | 👁 ماحول کی سر سری کیفیت | 101 | • مولوی صاحب کاعزم المب • المب می واخله |
| 170 | 👁 مجاہدین پرظلم وتعدی | 101 | اسب سن را عد طاقات شن تذبذب |
| ייוצו | 💠 تادىي إقدام | 107 | گفت وشنید |
| ۵۲۱ | 🗢 جنگ و پی | ior | 💠 شخ و ل محمر کو پیغام |
| 144 | 🗢 شديدنقصان | 15m | • سیدا کبرشاہ سے نامہ و بیام |
| 144 | 🏚 مولوی نصیرالدین شهبید | 164 | 🗢 ستمانه کی جانب روانگی |

| صفحه | عنوان | صفحہ | عنوان |
|------|--|------|---|
| IAT | € برت | 144 | • جماعت کی کیفیت |
| IAF" | ب نمازعیداننی ◆ نمازعیداننی | | ط معنادل کا طرحت اول کا استادل کا استادال کا معنادال کا استادال کا |
| IA" | ع بوريو | | l ` <u></u> ' |
| 100 | • نوک • نوک | 179 | محمدامیرخان قصوری محمد میرزخان قصوری |
| IAY | | 144 | • مىلمانوں كاجوثِ حيت سررورور |
| 1 | • مهمان داری اور تما کف • سرس نا رس | 14. | • بيماعزم جهاد • م |
| 11/4 | 💠 او کنلے کا بیان | 141 | محمدامیرخال کافرار |
| | تيسراباب | IZ1 | 🗢 سرحدی زندگی |
| JAA | • مقام جہاد کا فیصلہ | 147 | 👁 بعدک زندگ |
| IAA | 🍎 مولوي صاحب كاعزم | | حصهدوم |
| IA9 | ٹونک میں مشورے | | (مولوی سید نصیرالدین) |
| 19+ | 👁 مولوی صاحب کابیان | | _ |
| 19+ | 👁 سندھ کی ترجیج کے وجوہ | | پېلاباب |
| 191 | 🐧 زراعت وتجارت کے امکانات | 120 | مولوی سیدنصیرالدین دہلوی |
| 195 | • نیملے کی مثبیت | 143 | • تمبير • دار د سرو |
| | چوتھاباب | 14.1 | ♣ مولوی صاحب کے حالات ♣ عالیہ عالیہ |
| | ' ' | 144 | 🗘 وعوت وتبليغ |
| 190 | 🗢 ٹونک سے سندھ | 122 | 💿 دوست محمد فال سے نامدو بیام کی تجویز |
| 190 | 🗘 الجميروجوده پور | I∠∧ | • عزم بجرت |
| 190 | 🗢 جوده پورش مشکلات | 149 | والدهے اجازت |
| 197 | 🗢 اطمینان کی صورت | IA• | 👁 سامان سنر |
| 194 | • ميىلىر | | دوسراباب |
| 19/ | 🏚 خشی امام کل | IAY | ● سنرججرت |
| 19.4 | 🗢 بار برداری کی وقت | IAT | ● داست کاسنلہ |

| صفحه | عنوان | صفحہ | عنوان |
|-------------|---|--------------|---|
| rir | • مرقع عبرت | 199 | طبع خداسازسامان • خداسازسامان |
| rio | کوٹ تاج محمد اور نوشیرو | 149 | • مرحدسنده |
| rio | • مزيد لاقاتيں | *** | جماعت اوراس کاسروسامان |
| rin | 🗘 خوش گوارتو قعات | | يانچوال باب |
| 1 | ساتوان باب | ** * | پ پرس برگرمیان • سنده مین سرگرمیان |
| ria - | • دعوت عام کاامتمام | r•r | |
| MA | • روسیان ماه، منام • سید صاحب کے اکا بر دفقاء | r+r | 💠 بیرکوٹ 🕏 حرُوں کا نظام |
| riā | عید مناسبے او بررتاء علی او بررتاء علی این کے قافلے | r+r" | ● سرون ہا ہے۔ ● سیّداحمہ شہید کے اہل وعیال |
| 719 | 🖸 عابر ین کے ماسے 🗗 قابل تو جہ مکنہ | r• r- | ت سیدا میر هبید سان دسیان پیرهای کوهرشاه |
| 77. | | * •{* | • پارل و ہران • نادرالوجود کتب خانہ |
| ++++ | • مولوی صاحب کے خاطب • میں | r-0 | موادی صاحب کی سرگر میاں |
| rrr | • سدماحب كالبيكاجذبه أيثار • روده | r-a | خدرم عبدالخالق |
| PPA | 📤 اعلام نامه 🕳 دند کرومورم | F+ Y | • سيّدا برهيم شاه |
| | 👁 حالات کی سازگاری د مساطع مساحد مصا | 1.4 | امر بالمعروف |
| try | 👲 سیدعبدالرحن اورد وسرے اصحاب سدید | ** A | 🏚 سيّد جعفرعكي اورميال عثان |
| | آ تھواں باب | P+A | 💠 سادات ِشاه کوٺ |
| FF <u>/</u> | 🕏 د کن میں دعوت دبیلیغ | r+9 | 💠 ونت کےا کا ہر |
| 11/2 | 🗢 سید محمر علی اور مولوی و لایت علی | | چھٹا ہاب |
| 11/2 | ● وموت کے خاص مراکز | MII | پ مبدرآ بادکاسفر 💠 حیدرآ بادکاسفر |
| 779 | 🗢 مبارز الدوله کی عزیمت | rii | م سيدعبدالرحن كا كمتوب م |
| rr• | 💠 مولوی نصیرالدین کااعلام نامه | MI | قيام حيدرآ باداور ملاقات |
| 774 | حیدرآ باودکن ہے حیدرآ بادسندھ | rim . | عدرآبادےمناری |
| PFI | • مبارزالدوله کاانجام | FIF | ♦ بالـ |

| (V, 7) | <u> </u> | | |
|--------|--|---------|--|
| صفحہ | عنوان | صفحه | عنوان |
| | گيار ہواں باب | | نوال باب |
| rmy | 💠 نِنْ قيام گاه اورنۍ تدبير ين | rrr | آغاز جهاد کاپس منظر |
| rmy | • كشمۇ رادر تھمك · • • • • • • • • • • • • • • • • • • | rrr | مزاریون کی سرگزشت |
| rmy | 👁 سکھول پرشبخون | 1444 | € اگریز |
| rr2 | 🗘 مالى شكلات | rrr | • رنجيت عكم |
| rra | • نواب بهاول خان کی سراسیمگی | rra | • حا كمان سنده |
| 144 | 🏚 نئ تيام گاه کي تجويز | rra | افغانستان |
| rrq | 💠 ال سندهاورحا كمان سنده | PPY | عوى كيفيت |
| 10. | بلوچتان ئے تعلقات | ren | مزاریون ادر سکسون کی مخکش مزاریون ادر سکسون کی مخکش |
| rai | • سلمون اور مزاريون كي مصالحت | rra | |
| | بارجوان باب | ''^ | پربهرام خال |
| rar | • انگریزوں سے جنگ اور قیام ستھانہ | | دسوال باب |
| ror | 👁 معلومات كافقدان مير | 1179 | 👁 روجهان اور کن کی کژائیاں |
| 101 | افغانستان میں خانہ جنگی | rma | 🗣 مزاريول بين قيام کي تجويز |
| 101" | 🗘 روی مداخلت کااضطراب | 414 | مولوی صاحب کے تاثرات |
| 100 | دوست محمدخال کاموتف | rr'i | 🗢 قابل غورتكته |
| 100 | 💠 سەگانەمعابدە | المالا | 🏚 مزار یوں سے عبد و پیان |
| ray . | • مولوي صاحب کی اولوالعزمی | ۲۳۲ | 👁 روجهان کامحاصره |
| rat | 💠 غزنی کی کڑائی | ۳۳۳ | مزار یوں کی مراجعت |
| ro∠ | • وليم هنز كابيان | بالبالم | 👁 مجاہدین کی پریشانی |
| ron | او کنامے کا بیان | trr | 🗢 کن بیم از اتی |
| 100 | مولوی صاحب ستفانه میں | ۲۳۵ | 🗢 "باڅ د بهار" کابيان |
| 709 | • انگریزی اقدام کا انجام | | |

| 10,77 | , , , | | المتحريد بتدايدا |
|------------|---|-------------|--|
| صفحه | عنوان | صفحہ | عنوان |
| Jr24 | 🏚 کشن رائے کی دراز دستیاں | 109 | • ایکاورروایت |
| 121 | 🙃 بيچيدگي ميس اضافه |] | تير موال باب |
| 12.7 | ♦ حق وانصاف کے لئے جنگ | 444 | • مولوی نصیرالدین کی شخصیت |
| 120 | 🍎 نا کام انسدادی اقدامات | r4+ | 🕻 وفات |
| 124 | 🗘 شهاوستوزار | 444 | آخری وقت کی حالت |
| 124 | مقدمهاورسزائیں | 741 | 🗘 متازترین کارنامه |
| | حصداول | 277 | • نمایاں ترین خصوصیت |
| | (شیخ و لی محمداور مولوی نصیرالدین) | ۲۲۳ | الحل وعميال |
| | حصيهوم | 748 | • ایک نظم |
| | ر (مولا ناولايت على اورمولا ناعنايت على) | ۳۲۳ | 💠 سيدعبدالرجيم كي امارت |
| ! | - | 740 | 🌢 ایک غیرمعلوم شخصیت |
| | پېلا باب ن | 777 | 💠 مولوی محمر قاسم |
| | 🗢 مولا ناولايت على اور ما | | چو دهواں باب |
| MA! | مولا ناعنايت على معريز | 744 | 💠 فرائضی تحریک اور تیتومیاں |
| PAI PAI | 🔹 تمہیر 🔹 مولا ناولا یت علی | PYA | اندرون ملک کی کیفیت |
| rat l | ع مونا بالونايين في المستونين المست | PYA | 👁 مولوی شریعت الله |
| mr | ع وعظا وسلينغ • وعظا وسلينغ | 444 | 💠 اصلاح کا آغاز |
| mr | 👁 وین خدمات | 244 | 💠 ودووميال |
| MA | مولانا کی کیفیت | 120 | 🗢 الارض لله |
| MA | 👁 تعلیم اوراشاعت کتب | 1/2+ | 🔹 فرائطی تحریک |
| ray. | 🗢 غدادادتا ثیر | r∠i | بیرنارعلی عرف تینومیاں |
| MZ | • سفر حج | ř ∠l | 🌩 تحريك إصلاح |

| ين) | ئابد | شتو | (سرگز |) |
|-----|------|-----|-------|---|
| | • • | - | / | |

| صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
|--------------|------------------------------------|-------------|---|
| r•3 | • مقبوضات کی کیفیت | MAZ | 👁 مولاناعنايت على |
| r.a | • سپاه کاانظام | į. | دوسراباب |
| P-4 | 👲 نظم ونسق ئ تفصيل | 173.9 | 🗢 بزاره می جهاد آزادی |
| F*A | 🏓 افتساب وحدود | 174.9 | • سکسول کی حکومت میں اہتری |
| 174 A | • مرکز کی کیفیت | 174.9 | 🗢 فسادة رفساد |
| P-9 | 🏚 خراج کی تفصیلات | 79 + | 👁 سرحدی علاقوں میں ہنگاہے |
| | پانچوال باب | 797 | 👁 کنڈی مسلمانی |
| 1711 | 👁 مولا ناولا يت على كى تشريف آورى | 191 | 💠 طنبواحاد |
| P ((| 💠 مولا ناولايت على كي آمد | ۲۹۳ | مجاہدین کے کارنا ہے |
| rir | 👁 رفقاءاور مال واسباب | 190 | 🗢 گلاب تنگهه ذوگره |
| mim | 👁 مانسهره میں ورود | | تيسراباب |
| 1111 | 🗢 بھائیوں کی ملاقات | rqy | 🗢 مولا ناعزايت على كرمجا بدانه كارنام |
| Ma | 🗢 اسلام گڑھ میں جلوہ افروزی | 464 | 🗖 افذ |
| Mix | 🗢 ضروری گزارش | rq∠ | 🏚 گرمهی پرحملهاور فتو حات |
| | چھٹاباب | 79 A | مظفرآ باد پر بورش |
| ےا۳ | 🔹 درهٔ ؤ ب کی جنگ | 191 | فتح گڑھ میں مقابلہ |
| rı∠ | 🗢 صورت ِعال | 499 | • جنگ کی کیفیت ت |
| MIA | 🔹 زڙي موقع | ۳., | فراراور قمل |
| 1719 | انقلاب احوال | 1761 | 🗢 او کنلے کابیان |
| P19 | 🗘 در کوئتِ | 7% 8 | 🗢 مقای رؤسا |
| P F1 | 👁 بزاره گزیمیز کابیان | | چوتھاباب |
| PFI | او کنلے کابیان | r.s | 🗢 اسلامی حکومت کی تاسیس |
| | 1 | | |

| منح | عنوان | صفحه | عنوان |
|------------|---|-------------|--|
| איויין | ب بابرین از د | mrr | م بيلوكابيان |
| m | مولانا كى وفات | rrr | مقامی روایات |
| rrr | • عليد | rrr | لسدن كابيان |
| mu. | اللوميال | rro | کیفیت عبورو جنگ |
| rra | • تمانی | ۳12 | 🖸 "تذكرهُ صادقة" كى روايات |
| | نوال باب | PPA | مولانامها حبان کی مراجعت |
| rrz. | • مولانا منايت على كاعبد الات | rra | 👁 بالائی ہزارہ کا تبادلہ |
| rr2 | • ابتدائی حالات اورابارت | ĺ | ساتوان باب |
| rm | اگریز پنجاب وسرحدیں | rr. | پابندی کی زندگی اور جرت |
| my | 👁 دوانگریزول کاقتل | ۳۳۰ | پایندی کی زندگی |
| ro- | 🔹 کوه سیاه کی مبلی مهم | mmi | مولاناعنایت علی کا کام |
| 701 | ♦ بک | rrr | 👁 ستقل انجرت |
| rai | 👁 مجاہدین کے اقد امات | ٣٣٣ | 🗢 منازل ٍسفر |
| ror | 👁 مافظ عبدالجيد كابيان | rrr | 🗗 تيام دېلي |
| ror | 💠 مولانا کی سرگرمیاں | rra | مولانا ستھانہ میں |
| 200 | 💠 دعوت وتنظيم | | آ تھواں باب |
| 721 | 🗣 نیامر کز اور نیادا تر هٔ عمل | 77 2 | 👁 مولا ناولايت على كى دفات |
| 702 | 🌢 انگریزول کی دعوت مصالحت | rrz] | 👁 سرحدی زندگی |
| | دسوال باب | rr2 | • مقمو دنصب العين |
| 201 | 💠 یه ۱۸۵۷ء کا بنگامهٔ آزادی | rra | • بمائيول ميس اختلاف |
| rsa | 🗖 انگریزی فوجوں میں دعوت جہاد | mma | 🕈 وجرافتلاف |
| r09 | ~ 6.16.100∠ ◆ | 1"1" | 👁 نازک صورت حال |
| PY. | 👁 ۵۵ پيادونوج | la.la.l | • او کنلے کابیان |

| صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
|---------------|---|--------------|---|
| 124 | • ایک اورشبخون | ۳4۰ | 🗢 اخوندصوات كاسلوك |
| r22 | 🔹 پنجتار اور چنگلنگی کی تبایی | ווייין | 🗢 سادات کاغان کی بدعبدی |
| 17 2.A | 👁 عبدالحق آ روی کابیان | 747 | 🗢 مزيد مهندوستانی مجاہد |
| P29 | 🏚 منگل تھا نہ کی بربادی | | گیار ہواں باب |
| | تير ہواں باب | ייאריי | 🗗 نارنی کی جنگ |
| 5 74 - | 👁 ستھانہ کی بربادی | 7"17" | 🗢 سمّه پرشبخون |
| ۳۸۰ | 🗢 مادات التي القائد | 770 | • انگریزوں کے اقد امات |
| PAI | 💠 اتمان زئيول سے تعلقات | 777 | 👁 دومراحمله |
| MAT | 👁 انتمان زئیوں کی سرکشی | P12 | 🗘 بيلوكابيان |
| PAP | 🗢 سيدعمر کی شهادت د د د سر | FYA | 👁 مولانا عنایت علی کی سر گزشت |
| MAT | 🗢 عبدالحق آردی کابیان 🕳 🌯 | PYA | 🗢 سرحدی رؤسا و کی منافقت وعداوت |
| MAM | 🙃 انگریزی پورش | 779 | 🗢 مالى مشكلات كا بجوم |
| ras | 🗢 ستماندگ تبای | 12. | • ادائے واجبات |
| | حصه چهارم | 121 | • مصيبت درمصيبت |
| | مولا ناعبدالله | 1 | بارہواں ہاب |
| | (ازابنداءِامارت تاجنگ ِ امبیله) | 12r | 👁 مولانا کی وفات اور مرکز وں کی تباعی |
| | پېلاباب | rzr | • الله عبد كاليفاء |
| PAG | مذكا ورسادات ستمانه | 120 | 🗢 مولانا کی شخصیت |
| 17.49 | • مرکز ملکا | r2r | مولانا کی ایک تصنیف |
| rq. | 👁 بنظمی کا دور | r2r | 👁 مورکتِ حال |
| 1791 | • سادات تفاند كي سر كزشت | PZ0 | 💠 اتروئن واولاد |
| rar | • سيرمحمود شاه كي ملازمت | 724 | • انظام امارت |

| | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | | |
|--------|--|--------------|--|
| صفحه | عنوان | صفحہ | عنوان |
| 14.4 | 🗢 بيليو كى غلا بيانيان | mam | 🗢 شنرادے کی تدبیر |
| • اسم | 🗘 اخوندصاحب سوات | rgr | 🗢 سری میں برزج |
| מוו | 🐧 امیر دوست محمد خال کی امداد | malu | 💠 ہزارہ پرتز کتاز |
| | چوتھاباب | 190 | 🗘 سر کندخال کاقل |
| MIT | • جنگ العبیلہ کے مقد مات | max | 🗢 شنراده مبارک اورسید محمود |
| יווייז | پرش کافیصلہ | ۳۹∠ | 🗘 مکاکیکیفیت |
| ۳۱۳ | • ستماندے الکا | | دوسراباب |
| ۳۱۳ | 🗗 اقدام کی پہلی تجویز | ተዋለ | 👁 آبادی ستھانہ |
| יאוא | 👁 شنرادے کے دفاعی انتظامات | 791 | 🗢 جنگ امبیلہ کے اسباب |
| ۵۱۳ | 💠 خوانین کی مجبوری | 779.4 | 🗘 اتمان زئول ہے خط و کتابت 🗨 کہ ہیں |
| ۵۱۳ | 💠 اقدام کی دوسری تجویز | 1 799 | 🖸 تيا، کھٽل پر چين ندي |
| אוא | • اقدام کی تیسری جحویز | 1744 | اگریزوں کے پاس شکایتیں |
| MZ | 👁 اہل ہونیر سے بات چیت | (Y+1 | اگریزی موقف کی حیثیت |
| MIA | خوانين كالشكر | //•r | 🙃 - تقانه میں <u>قلع</u> ی تقییر • در گاہ کے در در در |
| ศาจ | 💠 مجامدين كااعلان جهاد | ۲۰۰۲ | 🗖 انگریزول کی غلط بیانیاں 🕳 سب |
| M4. | اخوندصاحب کے نام خط | l• l | ایکاوربیان |
| | يانچوال باب | | تيىراباب |
| ۲۲۲ | پېران، ب جنگ د مليد (۱) | | 🏚 جماعت مجاہدین اور |
| | | 144 | اخوندصا حب سوات |
| ~~~ | 🗗 وادی کہ تعلیہ 🕳 اگا ہیں کہ میں قبر میں | ۲۰۰۱ | ڈاکٹر پیلیو کی رپورٹ |
| سهم | انگریزول کی پیش قدی حقل بنگ دید | 1.∻ A | ● عموی کیفیت م |
| ~~~ | جنگی اسکیم اور مشکلات | ~•∠ | 👁 وس جماعتیں |
| rra | 🕹 محرائے کی تجویز | <i>۳</i> •۸ | 🗢 تبمره |

| صغح | عثوان | صفحه | عثوان |
|-------------|--------------------------------|-------------|---|
| 44. | مختف لزائياں | rro | 🗢 مجاہدین وسادات کے انظامات |
| LA(A) | • اصل مصيبت | ለተ Y | 👁 حفاظتی موریچاور لزائیاں |
| | آ محفوال باب | r'Y2 | 🗢 انگریزی سیاست کی کامیابی |
| 444 | 🗢 مجاہدین کی شان جانبازی | ~r <u>~</u> | • سلح • |
| 444 | 🔹 انتشارک کیفیت | ۳۲۸ | 🗢 مزيدتفصيلات |
| 444 | • امبرالمجامد بن كافيصله | | چھٹاباب |
| ויייר | 🗗 تقریراوردعاء | ٠٠٠٠ | 🗣 جنگ امبیله (۲) |
| ۵۳۳ | 🗢 چشرآ فرین منظر | MH. | 🗢 مقامی بیان |
| ~~ <u>~</u> | 🏚 انگرېزول سے بات چيت | ۴۳۰ | 💠 باره جوانول کی مردا تگی |
| r^r∠ | होन्द्री 🕏 | m | 🏚 ئىلى با قاعدەلارائى |
| PP2 | 🏚 مجاہدین کا انظام مستند | <u>የ</u> ሞተ | • تمشری تدبیرین |
| ቦፖለ | 🏚 سَمِنْجِ شهیدال 🕳 کاک | ۳۳۳ | شفراده اورمجاہدین کے انتظامات |
| ma | 💠 لشکروں کامعاملہ خی | سهما | 👁 دوسری لڑائی |
| | حصة بجم | WH. | اخوندصاحب سوات کی طلی |
| | ہندوستان کےاندر | rrs | 👁 تيسري لڙائي |
| | مقدمےاور قیدیں | ለሥዣ | • اخوندصاحب کی تشریف آوری |
| | يہلا باب | | ساتوان باب |
| ror | پہ عظیم آباد کے تین خاندان | MT/ | 🛭 جنگ امبیله (۳) |
| ror | ئىن خاندان • ئىن خاندان | ۳۳∠ | 🗢 عزم شبخون |
| 200 | • انسانوں کے بھیں میں فرشتے | rra | 💠 چۇتنى ألزائى |
| ന്മമ | 💠 بےمثال اخلاص | ሶፖ ለ | 👁 ایک براس انگیزآ واز |
| ന്മമ | 💠 مولا نااحدالله | rrq | 💠 خانِ دِيراورا گريز |

| عنوان صفح عنوان صفح مولانافیاض علی مولانافیاض علی مولانافیاض علی ۱۳۵۹ تا |
|--|
| مولانا کی علی مرازا ب مرازا ب ب ب ب ب ب ب ب ب ب ب ب ب ب ب ب ب ب |
| روسراباب (۳۵۷ مقدمه انباله (۳۳) مقدمه انباله (۳۵۷ مقدمه انباله (۳۵۷ مقدمه انباله (۳۵۷ مقدمه انباله (۳۵۷ مقدمه انباله (۱) ۴۲۰ مقدمه انباله (۱) ۴۲۰ مقدمه شهادتول کانقشه ۴۲۰ مقدمه کاعموی کیفیت ۴۲۰ مقدمه کاعموی کیفیت ۴۲۰ مقدمه کاعموی کیفیت ۴۲۰ مقدمه کاعموی کیفیت ۴۲۰ مقدمه کامیوان ۴۲۰ میفید ۴۲۰ میلادی محد بعفر کابیان بیا ۴۲۰ میلادی کیموال باب بیان بیان بیان بیان بیان بیان بیان |
| دوسراباب (۳) مقدمه انباله (۳) (۳۷۰ مقدمه انباله (۳) (۳۷۰ مقدمه انباله (۱) (۳۷۰ مقدمه انباله (۱) (۳۷۰ مقدمه انباله (۱) (۱) (۳۷۰ مقدمه انباله (۱) (۱) (۱) (۱) (۱) (۱) (۱) (۱) (۱) (۱) |
| مقدمهٔ انباله (۱) ۱۳۲۰ شافت فی شهادتیل ۱۳۲۰ مقدمهٔ انباله (۱) ۱۳۲۰ شاوتون کانقشه ۱۳۲۸ می مودی کیفیت ۱۳۲۹ مقدم کی عمومی کیفیت ۱۳۲۹ مقدم کی عمومی کیفیت ۱۳۲۹ می مقدم کی عمومی کیفیت ۱۳۲۹ می مقدم کی عمومی کیفیت ۱۳۲۹ می مودی کیفیت ۱۳۸۹ می نیان کیفیت ۱۳۸۹ میودی محمد جعفر کابیان استان ۱۳۸۳ میودی میرودی محمد جعفر کابیان استان ۱۳۸۳ میرودی میرود |
| وعوت وتبلینی ۱۲۹۰ شهادتوں کانقشه ۱۲۹۰ شهادتوں کانقشه ۱۲۹۰ شهادتوں کانقشه ۱۲۹۰ شهادتوں کانقشه ۱۲۹۰ شهری کیفیت ۱۲۹۹ شهری کیفیت کیفیت از ۱۲۹۹ شهری کیفیت از ۱۲۹۹ شهری کیفیت از ۱۲۹۹ شهری کیفیت کی |
| الاسم فران خال الاسم فران خال |
| ال عظیم آباد کاسراغ میساد کاس این کاس |
| مولوی محمد بعفر کابیان ۱۳۹۳ هجو دو پیش کمشنر کے پاس ایبل ۱۳۸۳ میلادی محمد بعفر کابیان ۱۳۸۳ میلادی کابی ایبل ۱۳۸۳ میلانی ۱۳۸۳ میلادی کابی ایس ایس ایس ایس ایس ایس ایس ایس ایس ای |
| علاقی باب بازی باب بازی باب بازی باب بازی باب بازی باب بازی بازی |
| الل تقيم آباد كاسراع ١٩٥٥ 🏚 قيداور كالا بإني |
| الل تقيم آباد كاسراع ١٩٥٥ 🏚 قيداور كالا بإني |
| 🕻 مولوی جعفر کافرارا در گرفتاری 📗 ۲۲۳ 🚺 🚓 نی داراف دن بکان تعص 📗 سر 🖍 🖈 |
| و مندارا مرون فارور علب |
| ۲۸۳ اوضدا کے جانباز ۲۸۳ اوضدا کے جانباز ۲۸۳ |
| 🕻 حینی تفاعیسری کی گرفتاری 🔭 🐧 جیل والوں کی پیشکش 🐧 |
| امیرول کے مصائب 🐧 اہتلاء بالائے اہتلاء 🕳 اسرول کے مصائب |
| اوراستقامتِ ۴۸۸ مشقت اوراس میں تخفیف ۴۸۸ |
| 🕻 خوفناك سزائيل 🐧 🐧 🍖 جيب الدين تحصيل دار |
| تيسراباب العظيم آباد كوترغيب ٨٤ |
| ۱ مقدمها نباله (۲) مقدمه انباله (۲) مقدمه انباله (۲) مقدمه انباله (۲) |
| • مزین ۱∠۲ • مولاناعبدالرحیم ۴۸۸ |
| ابتدائی کارروائی اورخوفناک مصائب ۲۵۰۲ 💠 سرکاری گواہوں کی حالت معالب |
| 🕻 ملزموں کی کیجائی 💮 🛷 شخ الکل میاں نذیر حسین 🖔 😘 |

| صفح | عنوان | صفحه | عنوان |
|----------|------------------------------------|------|--|
| ۵1+ | ایرخان کی ریشانی | | |
| | • | | چھٹاباب |
| <u>'</u> | نوال باب | ۳۹۳ | 💠 عظيم آباد کا پېلامقدمه |
| ااھ | 🗣 عظیم آباد کا دوسرامقدمه (۲) | ۳۹۳ | 🗢 مولاتااحرالله |
| ۵۱۱ | 🗘 ہمیس کاریس کی درخواست | W9W | 🗢 مقدے کی کیفیت |
| ۵۱۲ | 🗢 مسٹرانگرام کی تقریہ | ۳۹۵ | • مولانا كامبرواستقامت |
| ۵۱۳ | 🔹 نیصلهاوردوسری درخواست | ۲۹۳ | 🗢 جائىدادى شبطى |
| ۵۱۳ | • آخری فیصله | MAV | الل وعيال كي بي بي |
| ماده | 🗖 امیرخال اور مبارک خال | | سانوا <u>ن باب</u> |
| ۵۱۵ | 🗘 امیرخال کی وفات | ۵+۱ | 🗘 مالدہ اور راج محل کے مقد ہے |
| ۵۱۵ | 🗘 تاریخ وفات | ۵٠۱ | • مرکز عظیم آباد |
| 617 | 👁 حشمت دادخال کی وفات | 0+r | • ہنرکابیان • ہنرکابیان |
| ۵۱۷ | 💠 نارمن پرجمله | 0.r | ♦ مركزمالده |
| | دسوال باب | ۵۰۳ | 👁 مولوى امير الدين |
| ۵۱۸ | 💠 سر گزشت اندمان (۱) | ۵۰۳ | • فراجی در کے طریقے |
| ۵۱۸ | م تمہید | ۵۰۵ | 👁 مقدمه بالده |
| ۸۱۵ | 💠 جزائراندمان | ۵۰۵ | 💠 مقدمه راج محل |
| 019 | 🗖 آبادی کا دوسرادور | | آثھواں باب |
| ar. | 👁 تيديس انتياز | ۵۰۷ | • عظیم آباد کا دوسرامقدمه (۱) |
| orr | 👁 مولا نااحمدالله | ۵۰۷ | 🗘 آخری بردامقدمهٔ |
| arm | 🖨 آخری دوراوروفات | ۵۰۸ | حشمت دادخان اورامیرخان |
| arr | 💠 تنفين وتدفيين | ۵۰۸ | 🂠 كلكته يس مركز تجارت |
| ٥٢٥ | 👁 تاريخوفات | ۵۰۹ | 💠 واستان ایتلاء |

| صفحه | عنوان | صفحہ | عنوان |
|------|---|------------|---------------------|
| ara | • ماؤنٹ ہیریٹ کامعائینہ | 674 | 💠 مولانا يجيٰ على |
| ara | قاتلانهمله | ۵۴۷ | 💠 وفات |
| ר אם | • وائسرائے کی وفات | 012 | 👁 مختلفین و تد فین |
| ۵۳۷ | 🗣 شیرعلی قاتل | ۵۲۸ | • كمال استقامت |
| ۵۳۸ | 🍖 جرم کی تغییش | | گیار ہواں باب |
| am | 🗨 بھائی کی سزا | or. | • سرگزشتهاندُمان(۲) |
| | تیر ہواں باب | ۵۳۰ | • مولاناعبدالرحيم |
| ٥٥٠ | فظام عمل اورا صطلاحات | ori | • كاروباركي اجازت |
| ۵۵۰ | 🗘 غلطهٔ بی اورغلط بیانی | ۵۳۲ | 👁 رہائی |
| اده | • حوصله ورتغير | ۵۳۳ | 👁 باتی حالات |
| sor | • ایک مثال | ۵۳۳ | 💠 مولوی محمد جعفر |
| مه | 🗢 نظام ِ دموت | are | 🗢 اعذبان کی زندگی |
| مدد | ۞ ''تافلہ'' | ۵۳۲ | 🔷 رہائي |
| 700 | 💠 اصطلاحات | ۵۳۷ | 🗢 بعدےحالات |
| ۵۵۷ | 🗢 اسائےرجال | ۵۳۸ | 👁 تميانيف |
| ۸۵۵ | 👁 امکنه واشیاء | ۵۳۹ | 💠 باتن اصحاب |
| | حصهشتم | ۵۳۰ | 🕏 مورنر جرال کا تھم |
| | مولا ناعبدالله | ۱۳۵۵ | ש זוהא |
| | , | • | بارہواںباب |
| | (جنگ اسیلہ سے آخرتک) | ۵۳۳ | 🗢 لارده ميوكاقل |
| | پہلاباب | ٥٣٣ | 🗢 لارۋميو |
| IFG | 🗢 مجاہدین پر قبا مکیوں کی یورش | ۳۳۵ | 🗢 برير سے کا دورہ |
| 941 | 💠 مجامد ين اور سادات يستفانه | ۵۳۳ | 🏚 تيديوں کی خوشی |

| صفحہ | عنوان | صفحه | عنوان |
|------|---|------|---|
| DAM | • سلح | 215 | 💠 کرٹل وائلی کا بیان |
| ۵۸۴ | 👁 سادات پستھاند | 242 | 🗢 حقیقته حال |
| | تيسراباب | DAL | 🏚 <u>فتنے</u> کا آغاز |
| PAG | و. ب مولا ناعبدالله کا آخری دَور | ara | ملا صاحب پر بورش |
| PAG | انگریزول کا جوشِ انتقام | rra | 🗢 اہل حق کی بے بسی اور عزیمیت |
| ۵۸۷ | م نظر کزی تلاش این مرکزی تلاش | ۵۲۷ | مجاہدین کے خلاف اقدام |
| 214 | مبارک خیلوں سے درخواست | ۵۹∠ | • سيدعبدالجبارشاه كابيان |
| 200 | برك يون كرود ك بارگاوالهي شردعاء | AYA | • ذمدداری کامسئله • |
| 000 | 🏓 باره یو این میں دعاء 🕈 میلوائی کا فیصله | PYG | ضروری تصریحات |
| 29+ | ت مرحد در ایوریند ت سرحد در ایوریند | PFG | 🗢 مجاہدین کانقلِ مکان |
| اون | ت سرحدد یورید ۱۸۹۵ – ۱۸۹۷ عی جنگ | 041 | 🗢 ضیمہ |
| | ۰ درهٔ خیبر کی سرگزشت و رهٔ خیبر کی سرگزشت | | دوسراباب |
| agr | ع دره یبری مرست • وفات | 02m | 🏚 کوه سیاه کی مہمیں |
| 895 | ◆ ارواجواولاد | 024 | 💠 اگرور میں فوجی چوکی |
| 697 | | ۵۲۴ | 🏚 کوه سیاه کی دوسری مهم |
| ۵۹۳ | مادات مقانه کے حالات | ۵۷۵ | 👁 محتکش کاامتداد |
| | چوتھاباب | 224 | فسادة رفساد |
| PPG | • مولا ناعبدالكريم | 02 Y | 🗢 دوانگریزافسرول کاقل |
| 697 | 👁 ابتدائی زندگی | ۵۷۷ | 🌢 کوه سیاه کی تیسری مہم |
| ∠9۵ | • الممت | 041 | تورواوركوث كى كالزائى |
| ۵۹۷ | 🗘 آبادی کی کیفیت | ۵۸۰ | • جائی نقصان |
| ۵۹۹ | 🗢 مجامدین کی عام کیفیت | ۵۸۱ | 🕹 بعد کے حالات ت |
| ٧ | • عبدامارت | DAT | • ډونځی مېم |

22

| صفحد | عنوان | صفحه | عنوان |
|------|---|------|--|
| Alk | 👁 تر کی اور جر من مشن | 4+1 | 💠 روالبلا کی توسیع |
| 454 | 🏚 انغانستان کی نضا | 4+4 | 🗢 ہندوستانی لیڈروں سے تعلقات |
| 411 | 👁 اقدام کی شرط | 4+4 | 💠 وفات |
| 777 | 🏚 حکومت موقنه کا قیام | 4+1 | اولاداورخاندان |
| 464 | 🗖 منصوبة تتم | | پانچوال باب |
| 7177 | 💠 مولاناعبيدالله كابيان | 4017 | • امیر نعمت الله |
| 444 | 🏚 اعلانات جهاد | 4+14 | • مسلك مين تبديلي |
| 444 | 🗢 ضروری تصریحات | 4+0 | صلح کی سرگزشت |
| | ضمیمه(۱) | 4+4 | سيدعبدالجبارشاه كالمتوب |
| чга | 🗢 اعلانِ مقدّ سِ د بني بداما لي پنمانستان | Y•4 | 👁 مستجع صورت حال |
| 484 | 💠 استقلال کی دعوت | A+F | مرکز چرکنڈ |
| 444 | 🗢 جنگ اورانگریزوں کی پریشانیاں | 4+4 | مختف لژائیاں |
| 444 | 🏚 حصول مرام کا بهترین وقت | 411 | • امیر کی شهادت • سازم ۱۹ سم متعلقات |
| 451 | 🗢 ترکون کی شیرو لی | 41F | مولانامحمد بشیر کے متعلق شبہات امیر صاحب کے ٹاکل و خصائل |
| 444 | خیری بے پرحملہ | 410 | 1 |
| 444 | 🔹 قبائل عرب ادر قبائل سرحد | (13 | ۵ اولاد |
| 424 | 💠 عربول کی کایا پلٹ | | چھٹاباب |
| YFZ | 👁 دموسته کار | YIY | 👲 کابل میں ترکی اور جرمن وفد |
| YP"Z | 👁 راوم ل | 414 | 🖸 جرمنوں کی امیدیں 🕳 درون میں میں کا ہے ۔ |
| 4144 | 🗢 نواب وبراورخان جندول | 41Z | ہندوستان میں ہنگا ہے کی قد ہیریں بنگال میں اسلحہ پہنچانے کی کوشش |
| 40% | 👁 علماءاور ملآؤل ہے اپیل | 11Z | 🕶 بفال ين المحمدة بعالي من المحمدة العالم من المحمدة العالم المحمدة العالم من المحمدة المحمدة العالم من المحمدة العالم المحمدة العالم من المحمدة العالم من المحمدة العالم العالم المحمدة العالم المحمدة العالم المحمدة العالم المحمدة العال |
| | | 117. | ا |
| | | | |

| صفحه | عثوان | صفحه | عنوان |
|------|--|------------|--|
| AGF | 👁 در وصوات کی مشکش | | ضمير(۲) |
| Par | 🗢 سيدعبدالجبارشاه سقعانوي | 466 | 🗘 راجامهندر پرتاپ کابیان |
| Par | 💠 مشكلات كار | | ساتوان باب |
| 441 | 💠 مَنَا صاحب سندُ اکے کا اقدام | ארם | ع امیرر صدالله • امیر رحمت الله |
| 771 | 💠 دفائی تدبیرین | 110 | ۱۳ بیررنمتالله ۲۰ نیامیر |
| 444 | 🏚 نواب دیرادرانگریزول کیلیج سراسیمگی | , | تابير • تلقّب كاسئله |
| 444 | 🗢 بقيدحالات | מחד | • اسعبدكاكام • اسعبدكاكام |
| | نوال باب | ዛሮ∠ ዛሮል | ل حيده هم ا ل حيده هم المحرض "اور"المجاهد" |
| 440 | 💠 شُخ البندٌ کی تحریک آزادی | 704 | • المعطوط اور المعجامد • • اميرک سيرت |
| 441 | • ایک اہم تحریک | 107 10+ | • جباد کشمیر • جهاد کشمیر |
| 4414 | 👁 ایندائی طریق کار | 100 100 | 🗢 جهایو نیر 🏚 موجوده صورت حال |
| arr | 👁 اسلامی در سگاہوں کی تحریک | 161 | ع حرب آرزو چ حرب آرزو |
| 777 | • منجح تربيت | | آ تھواں باب |
| 747 | • حوادث كاجوم وتواتر | | |
| AFF | • فورى كام كي ضرورت | | جماعت مجاہدین اور |
| 944 | مولا ناعبيدالله سندهی | 40" | بزرگان یاغستان هه شن ^ن نه |
| 72. | ریشی خطوط | 407 | 👁 روشنی کرنیں |
| 741 | • حضرت شخ الهندٌ | 707 707 | الماصاحب بقره الماصاحب بقره |
| 1/2 | • انور یاشا اور جمال یاشاسے الاقات | nar aar | ملاً صاحب بایره ملاً صاحب مثرائے |
| 424 | • "غالب نامهٔ "كاأرسال | 100 | ● ما می صاحب تریک زئی • ما جی صاحب تریک زئی |
| | حضرت شيخ الهندگی اسیری | רכד | این مارسبر عدر ن جنگ ورخم |
| 42M | اوررہائی | 10Z | به |
| | <u> </u> | | |

rø

| صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
|-------------|--|--------------|--|
| 791 | بعض غورطلب امور | 421 | • چند گذارشیں |
| 491 | بادشاه گل اور دوسرے اصحاب کی آید | 140 | • ایک تعب آگیزامر |
| 196 | 🗢 شهادت کی ذرمدداری | | دسوال باب |
| | بار ہواں باب | 444 | مولا نامحمه بشیر شهید ّ |
| 192 | • مولا نامحربشير کی شخصیت | 722 | • ایک عظیم الرزبت شخصیت |
| 49∠ | 👁 قتل کی ذمه داری | 14 0 | 🗢 خاندان |
| APF | 🗢 مولانا کی شخصیت | 4 ∠9 | • مولاناكى ابتدائى تعليم |
| 799 | 🗢 محمر علی قصوری کابیان | 7 2 4 | € بجرت |
| ۷٠٠. | ایک قابل غور نکته | 4A+ | 💠 پابندئ عهد |
| | ﴿ضمِمہ﴾ | IAF | 🗢 سرحدآ زادیس سرگرمیان |
| ۷٠٢ | 🗖 كانل مين أيك وعوت | 444 | 💠 ڪابل ميں اثر ورسوخ |
| 4+1 | 🗢 راجاصاحب کی تقریر | 445 | یا غستان کے لئے وکیل امیر |
| ∠• ٣ | 👁 مولانا محمر بشیر کے ارشادات | 442 | 👁 مولانا کے معاون |
| 4٠٣ | 🗢 ضروری امور | | گيار ہواں باب |
| | تير موال باب | AAP | 💠 شهادت كاحادثة اليمه |
| ۷•۵ | مولوى فضل الى وزيرآ بادى | GAF | 👁 مرکز چرکنڈ |
| ۷٠۵ | 👁 ایتدائی کام | PAY | 🗘 ہمہ کیرشہرتِ |
| ۷•۲ | 👁 گرفتاری اوراسیری | 444 | شهادت کافیل از وقت احساس |
| 4.4 | € جمرت | AAF | وصيت نامه مجمل ه نه ب |
| ∠•∧ | • سدماحب کے متعلق عقیدہ | PAF | 🌩 مفعل وصيت نامه |
| Z-9 | مولوی میاحب کی مراجعت | 191 | ی شهادت - این کرد |
| 41• | ً 💠 وفات | 797 | ● قاتل کی سر گزشت |

| | <u> </u> | | |
|------|------------------------------------|-------------|--|
| صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
| | حصةفتم | | چودهوال باب |
| | اندرونِ ملک (آخری دور) | ۷۱۲ | 🏚 مولوی محرعلی قصوری |
| | پېلا باب | 411 | 🗢 خاندان |
| 200 | 🔹 جماعت کی اعانت اور طریقِ کار | <u> ۱۳</u> | 👁 ابتدائی زندگی |
| | • اسلامی حمیت کابے پناہ سمندر | ∠ا۳ | کابل میں سرگرمیاں |
| 200 | • کار کنوں کے لٹکر | ∠1 0 | کابل سے یاغستان |
| 200 | 💠 جنح زر کا نظام | ∠l1 | 👁 یا غنتان میں کام |
| 222 | • رویے کی مصارف | 212 | • امیر حبیب الله کی بے جمتی • سنه بر |
| ZTA | 👁 ویانت وامانت | 414 | ی آخری دور • بتیه زندگی |
| 429 | 👁 رازداری | ∠19 | • بعيدر ندن • هخصيت |
| ۷٣٠ | 💠 قاصد | 244 | |
| ZM | عبدالقادر | | پندر ہواں باب |
| | دوسراباب | ∠? 7 | • ایک کمنام بابد |
| | 🔹 قاضى كوك كامقدمه | ∠ rr | 🍎 محمد حسين |
| 200 | • تهيد | Zrr | فيصله اجرت |
| ⊿۳۳ | • مقدے کی کیفیت | 2117 | جماعت کا کام |
| ∠~a | • بعض تعجب أنكيز امور | 210 | 🗢 شان عزبیت ۱۳۰۰ می دند به |
| 264 | • ميرااندازه | ۲۲۷ | گرفتاری اوراسیری |
| 202 | • پیشیال اورسزا کمیں | 4 74 | مصیبت بالائے مصیبت |
| 2009 | • قاضى عبدالرؤف كابيان - | ∠r ∠ | ایمت واستفقامت سوستور |
| 200 | ایک اہم معاملہ | AtA | 🏚 آ څري دور |
| ۵۱ ک | • خاندان قاضيال كاشجرة نسب | ۷۳۰ | 🏚 شهیدول کی یاد |

| | | | 4-34-17-18-18-18-1 |
|-------------|---|-------------|--|
| صفحه | عنوان | صفحہ | عنوان |
| 277 | 🕏 ملک کے اندرکام | | تيسراباب |
| 242 | • بجرت | ∠or | • مولاناعبدالقادرتصوري |
| 242 | مولوی محمولی تصوری کابیان | 201 | • مولا ناعبدالقاورقصوري |
| 244 | • جماعت ہے علیحد گ | 200 | ۵ وكالت |
| ∠ ۲9 | 春 واکہی | <u> ۲۵۳</u> | بدیش اشیاء سے احتراز |
| 44. | 🐞 ضروری گزارش | ۷۵۵ | ع الله المنتقامة |
| | پانچوال باب | ۷۵۵ | • بےمثال دیانت |
| 228 | 🔷 اسلامیت کے جواہر پارے(۱) | 404 | 🗘 وزارت کی پیککش |
| 224 | 🕏 حافظ عمتاریت اللہ اثری | 404 | 👁 اعانت ومجابدين |
| 225 | 👁 مستری ابراہیم | 20A | 🖸 پکرمان |
| 220 | र्टर ♦ | 409 | 🗘 وفات |
| 448 | الله د تا عرف عبد الحکیم | ∠ ۵9 | 🗢 مولوي محي الدين احمه |
| 44 | 🍓 چودهري الله داد 🐟 په مارم مارند مات | 4۲۰ | 🗢 اخبارنو کی اور نظر بندی |
| 441 | 💠 مولوی عبدالرزاق 🔹 جماعتی فرائض | ∠41 | 👁 توى خدمات |
| 449 | کا جما کامران ا ● مستقل بجرت | | چو تھا باب |
| 449 | ط مولوی عبدالواسع مولوی عبدالواسع | 24F | 👁 مولوي و لي محمد |
| ۷۸۰ | 🏚 دُین بر کت علی | 245 | 💠 ابتدائی حالات |
| ۷۸۱ | 🗘 مولا نامحرعلی کلھوی | 245 | 👁 ائتبائی سادگی |
| ۷۸۳ | 💠 صوفی عبدالله | 275 | 👁 خدادادتا ثير |
| 416 | 👁 مشکلات کار | 410 | 🗢 طریق وعظ و تذکیر |
| ۷۸۵ | 👁 د يې درسگاه کا قيام | 410 | • ایک عجیب دانغه |
| ۷۸۵ | 🗢 جماعت کے اساتین | 244 | 🗢 جماعت ومجاہدین تے علق |

| (0,7,90) | | | |
|----------|--|-------------|--|
| صفحه | عنوان | صغح | عنوان |
| ۸۰۲ | 💠 مجرحسن | : | چھٹاباب |
| 10°F | 👁 عبدالله اورعبدالرحمٰن | ZAY | • اسلامیت کے جواہر پارے (۲) |
| ۸۰۳ | 🗢 مولوی عبدالباری اور ڈاکٹر شجاع اللہ پ | ZAY | 💠 مولوی سلطان محمد |
| ۸۰۳ | 🗢 عبدالقادرآ زر مندن | 4 84 | • مولوی صاحب کامنصوبه |
| ۸-۵ | 🗢 شَخْ محداراتيم | ۷۸۸ | 💠 مولوی عبدالله پیثاوری |
| <u> </u> | آڻھوال باب | ∠ ∧9 | • مولوي صاحب أوراوة وائر |
| K•4 | اسلامیت کے جواہر پارے(۳) | ۷9۰ | • مولوی کرم الجی |
| 7+A | • سردار عبدالجيدخال | ∠9 r | 🗢 حاتی نور محمر اف |
| Y+A | میرظفر حسین | 49٢ | 👁 مياں غلام حسين |
| ۸٠۷. | 👁 قابل فخر کام | ∠9r″ | 👁 صوفی حلال الدین |
| ^•^ | 👁 افغانستان سے ترکی | 49٣ | 👁 معاونین جماعت |
| A-9 | کابل میں ایک صحبت | ∠9٣ | • متفرق اسحاب |
| All | 🗢 سردارالله نوازخال سه سنژ | | ساتوال باب |
| All All | • ریشی خط • ری داشه | ∠90 | اسلامیت کے جواہر پارے(۳) |
| AIP | ڈاکٹرخوثی ٹیر | 490 | • تمبيد |
| Air | • روس شراعام سران | ۷۹۵ | • كيفيت سز |
| AIF | بعد کےحالاتخضر | 49 ۲ | • مرکزیابدین |
| | ﴿صميمه ﴾ | ∠9∠ | جلال آباد |
| ۸۱۵ | | 4۸ ک | € کائل - کائل ما |
| | 0000000 | ∠99 | • ڈاکٹررصت علی • تاریخ |
| | | A** | قوموں کے لئے سرمایہ فخر مرماہ شہرہ ایش میں اور ایس میں اور ایس |
| | | Λ•1 | • عبدالرشيد |

سطورإولين

بسم الله وحده والصلوة والسلام على من لا نبى بعدة وعلى آله واصحابه واتباعه الى يوم القيامة.

مجاہد کمیر حضرت مولانا ومقتدانا سید احد شہید رحمہ اللہ ہندوستان کی اسلامی تاریخ کا وہ آن ہیں ہندگی اسلامی ہندگی آن آب بندگی مدیوں میں نہیں ملتی۔اسلامی ہندگی عظمت ورفت کی بازیابی اور پرچم اسلام کی بلندی کے لئے آپ کی خدمات روزِروثن کی طرح عیاں اور مصعلِ راہ ہیں۔

مجھے آپ کی زندگی کے قیمتی لمحات اور مجاہدات پر روشی ڈالنا مقصد نہیں، کہ بیکام ضخیم مجلدات کا متقاضی ہے اور الحمد للداب تک ہزاروں صفحات اس حکایت لذیذ اور روح پرور واستان میں مرقوم ہوکر تاریخ کا روش باب بن چکے ہیں۔ حضرت مولا ناسید ابوالحس علی ندوی رحمہ اللہ کی مرتب کردہ دو ضخیم جلدی''سیرت سیدا حمد شہید'' گذشتہ تقریباً نصف صدی سے اہل علم وفدا کا رانِ اسلامیت ہے خراج تحسین حاصل کر رہی ہیں۔

زیرِنظر کتاب''سیداحمدشہید'' حضرت مولا ناغلام رسول مہر کے اعجاز رقم قلم کا شاہکار ہے۔ پیدراصل مولا نا مہر کے اس'' زریں سلسلہ'' کی پہلی کڑی ہے جوانھوں نے حضرت سیدا حمد شہید، ان کی تحریک اوران کے دفقاء کے حالات ومجاہدا نہ کا رنا موں کے بیان میں مرتب کی ہے۔

حضرت مولانا غلام رسول مبرکی تحریر فرموده کتابوں (سیداحد شہیداول-دوم، جماعت
عبامدین اور سرگزشت بجاہدین) تقریباً ایک صدی کی تاریخ ہے جو مجابد کیر، ان کی تحریک اور ان
کے جانباز رفقاء کے حالات ومجاہدات اور خدیات کومنظر عام پرلانے میں نمایاں اور منفر دمقام
رکھتی ہیں۔ یہ ایسی تاریخ ہے جس میں تاریخ نویس خود اس تاریخ کا ایک حصد اور مشاہد محسوں

ہوتا ہے۔ اس کی ایک وجہ بیہ ہے کہ مولا نا مہر نے ان کتابوں کو صرف داستان برائے داستان اور حکایات وروایات اور کتابوں کی مدد سے مرتب نہیں کیا بلکہ بذات خود ان تمام مواضعات، متعلقہ منازل، مقامات بھٹک و جہاد، مشاہد اور رہ گذروں کا مشاہدہ کیا، برسوں ان علاقوں کی دشت نور دی اور بیا سرائی کی جہاں ان مبارک نفوں کے قدم پڑے، جہاں انھوں نے اس بلند مقصد کے لئے لیل ونہار گزارے، جہاں انھوں نے جہاد آزادی اور سر بلندی اسلام کے بلند مقصد کے لئے لیل ونہار گزارے، جہاں انھوں نے جہاد آزادی اور مر بلندی اسلام کے لئے اپنی ذہنی ، روحانی اور جسمانی تمام صلاحیتیں صرف کیس اور حدید ہے کہ بیشتر نے اپنے مقصد میں کامیابی حاصل کی، یعنی جام شہادت نوش کرے اس حیات جاودانی سے سرفراز مقصد میں کامیابی حاصل کی، یعنی جام شہادت نوش کرے اس حیات جاودانی سے سرفراز موسے جو عِند کہ بیشتر نے اپنے مقصد میں کامیابی حاصل کی، یعنی جام شہادت نوش کرے اس حیات جاودانی سے سرفراز موسے جو عِند کر بھم پُرز کُون کے بروانہ خاص کا حقدار بناتی ہے۔

مولا نا مہر کا اسلوب و بیان ادبیت ودکھشی اور جاذبیت وکویت سے ایسا پڑ ہے جس سے مطالعد کنندہ نه صرف اپنے آپ کوان مقامات میں موجود محسوس کرتا ہے بلکدایے اندر اعلائے ککمة الله اور سربلندی اسلام کیلئے ایک جذبہ جوش مارتا ہوا یا تاہے۔انھوں نے اس تاریخ کو برسہابری کی محنت سے لکھا ہے اور حقیقت ہے ہے کہ سید احمد شہید کے اس مشن اور تحریک میں خود ڈوب کراوراس میں خود کوٹوکر کے لکھا ہے۔ کتاب پڑھتے ہوئے آپ دیکھیں گے کہ جگہ جگہ ووان فدایان اسلام کی خدمات عالیه اور جذبه مقدس کوسلام عقیدت پیش کرتے نظر آتے ہیں۔ یہ کتابیں (سید احمد شہید، جماعت بجاہدین، سرگزشت بجاہدین) پچھلے کانی عرصہ ہے ہندوستان میں نایاب ہو چکی تھیں ،میری ایک عرصہ ہے خواہش تھی بدسیریز شائع ہوکراہل علم اور شاکفین حضرات کے لئے دستیاب ہونی جا ہے ۔ کیونکہ بفول مولا ناغلام رسول مبر، اگراس عظیم تحریک کوتاریخ ہند سے نکال دیا جائے تو پھراسلامی جدوجہد کے حوالہ ہے باقی ہی کیارہ جاتا ہے؟ ہمیں این اسلاف کرام کے ان مجاہدانہ کارناموں کی مرگزشت کو ہمیشدا سے سینوں سے لگا کرر کھنے اور مواقع وحالات کے مطابق ان کی تحریک کوآ گے بڑھانے کی ضرورت ہے۔ مجھےخوش ہے کہ عزیز محترم مولانا شمشیر احمد قاسی نے میری خواہش واصرار پراس کام کا

بیڑ الٹھایا۔ پرانے ایڈیشنوں میں اغلاط بھی تھیں ساتھ بی کتابت میں بکسانیت اور جاذبیت بھی نہتی ،اس لئے بہتر ریمعلوم ہوا کہ از سرنو کتابت کرا کراس سیریز کوئی آب و تاب کے ساتھ ہدئے قار کین کیا جائے۔

یہاں اس بات کا اظہار بھی ضروری ہے کہ اب اس سیر بر کو ایک نیا نام دیا گیا ہے لیعنی ''تحریک سید احمد شہیدٌ''جو چار جلدوں پر مشمتل ہوگی ، ٹائٹل اور اندر صفحات کے بالائی حصہ پر اس نئے نام کے ساتھ ساتھ پرانے نامون کو بھی باتی رکھا گیا ہے۔

میں جناب مولا ناششیراحمد قاسمی کومبارک باددیتا ہوں اور ساتھ میں مولا نامحمد عمران قاسمی گیانوی کی تقعیم کی خدمت کوسرا جنے ہوئے دعا کو ہول کہ دب کریم ہمیں بھی ان پاک نفوس کے جذبہ اسلامیت اور عشقِ اللی کا کوئی حبدادر حصہ نصیب عطا کر کے اپنی راور ضا پر چلنے تو فیق ارزانی کرے اور اس فرشتہ صفت جماعت کی معیت نصیب فرمائے ، آمین

الراقم مثمس لحق قامی مکتبدالحق (ممبئ)

عرضِ ناشر

الحمد لله رب العالمين والصاوة والسلام على سيد المرسلين وعلى آله الطيبين الطاهرين وصحبه اجمعين.

مقام مسرت ہے کہ حفرت سید احمد شہید رحمۃ اللہ علیہ کے حالات و خد مات، ان کی تحریک اور ان کے رفقاء کی سرگزشت پر مشمل سے ظیم سیر یز کتب (سیداحمد شہید ہر دوجلد، جماعت بحاجہ بن بسرگزشت بحاجہ بن) جدید عنوان ''تحریک سیداحمد شہید'' کے ساتھ شالع کرنے کی مجھے ایسے موقع پر سعادت حاصل ہور ہی ہے جب کہ ملک میں جدو جبد آزاد کی ہند کی ڈیڑھ سوسالہ سالگرہ حکومتی سطح پر بڑے جوش و خروش سے منائی جارہی ہے۔ لیکن اس میں ہمارے اسلاف کرام کی قربانیوں کو جس طرح نظرانداز کیا جارہا ہے دہ نہ صرف افسوستاک اور قائل منست ہے بلکہ ملت کے رہنماؤں کو خوابِ غفلت سے بیدار کرنے لئے ایک تازیانہ بھی مات ہے۔ جوز مانہ کے جدید تقاضوں کی تغییم ،ان سے حصول مقصد کے امکانات اور مقابل و نخالف ہے۔ جوز مانہ کے جدید تقاضوں کی تغییم ،ان سے حصول مقصد کے امکانات اور مقابل و نخالف مات کے طاقتوں کے خلاف صف آرااور متحد ہونے کی دعوت دے دیا ہے۔ یہ نصص بتارہا ہے۔

اٹھ کہاب بزمِ جہاں کااور بی انداز ہے

حقیقت تو یہ ہے ہمیں چیش قدی کرتے ہوئے خودا پنے اسلاف کرام کی خدمات اور قربانیوں کو منظرعام لانے کیلئے ملکی اور بین الاقوامی سطح پراجتماعات منعقد کرنے چاہئیں اورا پنے اسٹیج سے ان لوگوں کو اپنے بزرگوں کی مدح سرائی کے لئے مجبور کرنا چاہئے تھا، جن کے تغافل کا ہم آج رونارور ہے ہیں۔

آزادی ملک وملت اور سربلندی اسلام کے لئے سروفروشانہ جدوجہداورا ہالیانِ اسلام کی عظمت ِ رفتہ کی بازیانی کی کوشش میں حضرت سید احمد شہید اور ان کے جانباز رفقاء کا جو حصہ ہے ، ان کی جوروشن خدمات ہیں ، بھی اس سیریز کاموضوع ہے۔

اس سريزك عامنيم جلدي جوتقرياً وهائي بزارصفات يمشتل بي،ان كي كمبيوثر

كتابت ميں ايك اہم مسئل هي كا تھا، چونكه كمپيوٹر كتابت ميں اغلاط رہ جاتی ہيں اور بعض مرتبہ وہ عجيب دغريب شكل اور الفاظ كا جامه پہن ليتی ہيں۔

اس مشکل کاحل رب کریم نے اس طرح نکالا کہ جناب مولا نامجہ عمران قاسمی بگیانوی نے اس اہم اور تاریخی سلسلہ کی کتابت وضح کی ذمہ داری لے کر ایک طرح سے ہمارے لئے اس اہم مرحلہ کو آسان بنادیا۔ مولا ناموصوف تصنیف تالیف اور شحج ور جمہ میں ابنی ایک شناخت قائم کر چکے ہیں ، فرید بک ڈیو و بل سے ان کی شعیج کردہ ور تیب دادہ متعدد کتابیں شائع ہمو چکی ہیں۔ گذشتہ سال حکیم الاسلام عالمی سیمینار کے موقع پر حکیم الاسلام حضرت مولا نا قاری محمد طیب صاحب کی تالیفات ومضامین کا حسین مرقع سات جلدوں میں ان کا مرتب کردہ شائع ہوکر الل علم وقد ردال حضرات سے خراج تحسین حاصل کر چکا ہے ، ان کتابول کا اجراء مقتدر علمائے کرام کے باتھوں نہ کورہ سیمینار میں ہوا تھا۔

ایک قابل لحاظ کام یہ کیا گیا ہے کہ سابق ایڈیشنوں میں فہرست ناممل تھی ، صرف ابواب کے سفات کی نشاندہ می کی گئی ہے، یہ یقینا کے صفحات کی نشاندہ می کی گئی ہے، یہ یقینا بری محنت کا کام ہے۔ جس سے ایک ہی نظر میں کتاب کے تمام مندر جات بوری طرح سامنے آجاتے ہیں۔

بہر حال مولانا محمد عمران قاتمی بگیانوی نے اس سلسلہ کتب کی کتابت وقعیج کی خدمت انجام دے کر ہمارے لئے اس سلسلہ کی اشاعت کو کافی حد تک آسان بنادیا۔

اس کتاب کومولا ناغلام رسول مہرنے جس جانفشانی سے مرتب کیا تصنیف و تالیف کی دنیا میں وہ کسی عجوبہ سے کم نہیں۔اللہ رب العزت کا شکروا حسان ہے کہ اس نے ہمیں ایسی اہم کتابوں کی سیریز کی اشاعت کی توفیق سے نوازا۔ وہاتو فیقی الا باللہ

> شمشیراحمدقاسی سنابل کتابگھر دیوبند

نذرشهيدان بالاكوث

ینظم جناب فضل احمد کریم صاحب فضلی سکریٹری (حکومت باکستان) نے زیارت بالاکوٹ کے دفت کئی تھی، جے جماعت بجاہدین بیں شامل ہونا جاہئے تھا، یہ کہیں کاغذات بیں کم ہوگئی، اب بطوریا دگاریہاں شائع کی جاتی ہے:

مجاہدانِ صف شکن بوسے جو نذرِ جال لئے تو موت بادب برھی حیاتِ جاوداں لئے

یہ وہ ہیں جن کے عمر بھر قدم نہ ڈگمگا سکے مصیبتوں نے بارہا ہزار امتحال لیے

یہ سخت کوش و سخت جاں عجب پیام دے گئے کہ زندگی ہے بامرہ اگر ہے تلخیاں لیے

جلال بھی جمال بھی، عجیب ان کی شان ہے نظر میں بجلیاں لیے، نفس میں گلتاں لیے

> جہاں بھی مر جھکا دیا وہیں پر عرش آگیا یہ تجدہ شہید ہے جبیں میں آستاں لیے

یہ سید شہید یہ محاہدانِ جمسفر کہ جیسے ماہتاب ہو جلو میں کہکشاں لیے

مجاہدانِ باصفا کی پیٹوائی کے لیے ملائکہ اتر رہے ہیں نمڑدہ جناں لیے

عقیرت و خلوص کے یہ چند پھول نذر جیں کھڑا ہے فضلی حزیں حقیر ارمغال لیے

بسم اللدالرحمٰن الرحيم

مقدمه

چکونہ ہے بہ میاں آورم دریں مجلس
کہ بادہ حوصلہ سوز است وجملہ بدمست اند
سیداحمد شہید کے سلسلہ کی میتیسر کی اورآخری کتاب ہے۔اس پروہ سنراختتا م کو پہنچاجس
کے لئے سروسا مان اور تگ و تاز میں میری زندگی کے کم ویش ہیں سال صرف ہوئے:
درشار ارچہ نیاورد کیے حاتی را
شکر کال محنت ہے حد وشار آخر شد

اسلامی ہندی تاریخ کا یہ باب آج تک کسی بھی شکل اور کسی بھی زبان میں نظم وتر تیب نہ پاسکا۔ بیٹک اس کے متفرق پہلومختلف صور توں میں وقنا فو قنا پیش ہوتے رہے ایکن ان کی حیثیت ایسی تھی جیے کسی طویل اور مسلسل داستان میں سے کوئی ورق کہیں سے اُٹھالیا اور کوئی کہیں سے اُٹھالیا اور کوئی کہیں سے ۔ نہ چیش کرنے والے کو یہ اندازہ تھا کہ اس کا سیاق وسباق کیا ہے، نہ پڑھنے والے پر یہ حقیقت واضح ہوسکتی تھی کہ یہ ایک منظم و تحکم سلسلہ مجاہدات کی کڑیاں تھیں، جن کی وضع وساخت میں فداکارانِ اسلامیت و آزادی کا جیش بہا خونِ حیات پوری ایک صدی تک بے وریخ صرف ہوتارہا۔ ایسے ہی مجاہدات تو مول اور ملکوں کے لئے سربلندی کا سرمایہ ارجمندی کا فرین واسے نے جی ۔

روِ غیرت خطرناک است پہنا کیش تماشا کن درآں وادی که عشقِ اوست تن یاسرنمی سازد

اس حیات افروز داستان کے اوراق ایک سوسال کی مدت میں اس درجہ منتشر ہو چکے تھے کہ ان کی فراہمی اورشیراز ہ بندی اہل قلم کے ایک بڑے گروہ کی اجتما می سعی و ہمت کے بغیر بروئے کارنہ آسکی تھی، چہ جائیکہ مجھالیا فرومایہ علم عمل اتنے بڑے کام کے سرانجام کا ذمہ تنہا اُٹھالیتا۔ سیدصاحب اوران کی جماعت کوجن ناساز گار حالات سے سابقہ پڑا،ان کی تفصیل بڑی ہی دردناک اورالم آگیز ہے۔

خودسید صاحب کے ارادت مندول نے زیادہ سے زیادہ حالات قلم بند کر لینے کا پورا اہتمام کیا،لیکن انہیں چھپائے رکھنے کے اہتمام میں بھی کوئی دقیقہ می اُٹھاندر کھا۔ متیجہ یہ نکلا کہ کچھ مدت گذر جانے کے بعدوہ قلمی دفائز یک جامحفوظ ندرہ سکے اور کسی کو یہ بھی خبر نہیں رہی کہ بھر بھر کر کہال کہال پہنچے۔معاملہ کا ایک اور یہ بھی ہے کہ حالات جس انداز میں لکھے گئے شے،وہ پرانا تھا اور ہمارے زمانے کیلئے اے کی بھی درجہ میں سازگار نہ سمجھا جاسکتا تھا۔

غرض ہماری ملی غیرت اور اسلامی حمیت کی اس سب سے زیادہ پر تا خیر داستان کے گم ہوجانے میں کوئی بھی کسر باتی ندر ہی تھی ، تاہم اسے سیدصا حب اور اکلی جماعت کے خلوص کا زندہ اعجاز کو بیدواستان تفصیلاً مرتب کر دینے کی توفیق ارزانی ہوئی کیا عجب ہے کہ یہی ناچیز خدمت محاسبہ اعمال کے وقت مغفرت کا وسیلہ اور عفوہ کرم کی دستاویز بن جائے: امیدہست کہ بیگا تکی عرفی را بدوی سخن ہے آشنا بخشند

اس طویل سلسلے ہے جواب تقریباً دو ہزار صفحات پر پھیل گیا ہے جھن داستان سرائی مقصود بھی بلکہ چندنہایت اہم حقائق ومقاصد پیش نظر تھے، جن کا اجمالی نقشہ ہیہے:

ا۔ ہم جس عہد کو دورِ زوال سے تعبیر کرتے ہیں، وہ تاریکیوں اور مایوسیوں کی شب
تاریک ہی بھی ،اس میں سر بلندی کیلئے جا نبازی اورار جمندی کیلئے سرفروشی کی درخشاں کرنیں
بھی جلوہ گر ہوتی رہیں، جن کی ضیا گستری عہد عروج کی شوکت آرائیوں کو بھی پیغام خجالت دے
ری تھی ،افسوں کہ جوآ تھیں تاریکی کی شدت میں بصیرت کی دولت ضائع کر چکی تھیں، دہ دوشنی
کی ان کرنوں سے بہرہ اندوز نہ ہو تکیس، ان میں بلند ترین درجہ سیدا حمد شہید کی تحریک کو حاصل
تھا جو خالص اسلامی مقاصد کے لئے خالص اسلامی بنیا دوں پر اپنی نوعیت کی ایک ہی تحریک
تھی ہے روری تھا کہ اس تحریک کی سرگزشت مرتب ہو جاتی ۔اس کے بغیر ہماری تاریخ کھمل نہ سمجھی جاسی تھی۔

1- عام تاثریہ ہے کہ ہم نے تھم وفر ما زوائی ہے محرومی کے بعد اس سرز مین کی آزادی
اور یہاں اسلامیت کی بحالی کیلئے بچھ بھی نہ کیا۔ برا درانِ وطن نے گزشتہ دس میں سال میں
جہاد آزادی کے متعلق جو کتا ہیں مرتب کیس ان میں عموماً غیر مسلم اکثریت ہی کی سرگرمیوں کو
نمایاں کیا گیا۔ اس وجہ ہے بی خیال تقویت پکڑگیا کہ مسلمان ایک مرتبہ پستی میں گرے تو بھر نہ
اُٹھ سکے ،حکمرانی کے ساتھ ہمت وغیرت کی متاع بھی کھو بیٹھے۔

واقعہ یہ ہے کہ اس وسیع ملک کی آزادی کیلئے جوسر فردشانہ کارنا ہے مسلمانوں نے انجام دیے،ان کی نظیر کوئی دوسری قوم پیش نہیں کر سکتی اور مسلمانوں کی قربانیوں کے مقابلے ہیں دوسری قوموں کی قربانیاں سمندر ہیں چند چلوؤں سے زیادہ وقعت نہیں رکھتیں ،کیکن اسے کیا کیا جائے کہ اسلامی قربانیوں کی سرگزشت معرض ترتیب ہی میں ندا سکی اور جہاد آزاد کی وطن کا یہ بوراباب کم ہوکررہ گیا۔

میں نے بیہ باب مشند تاریخی شواہد کی بنا پر مرتب کر دیا ہے تا کی مسلمانوں کا درجدایٹار و سرفروشی سب پرآشکارا ہوجائے یہ مقصود مقابلہ نہیں ، بیہ ہے کہ اس طویل جہاد کا کوشہ کوشہ سامنے آ جائے ورنہ ظاہر ہے کہ اعلیٰ مقاصد کیلئے قربانیاں مشتر کہ دولت ہوتی ہیں ،خواہ ان کا مصدر ومنشا کوئی گروہ اور کا کوئی قوم ہو،اور ان پرسب کو یکسال فخر ومباہات کاحق حاصل ہوتا ہے۔

۳- پھرسیدصاحب کی تحریک کے سلسلہ میں دواور پہلو بھی خورطلب سے:اول یہ کہ مسلمانوں کی اس جماعت نے اسلامیت وآ زادی کیلئے جہاداس وقت شروع کیا، جب بہاں کے اکثر گروہوں پرٹی الجملہ افردگی و بے حی طاری تھی۔ان کے درمیان حکمرانوں کی خوشنودی حاصل کرنے کیلئے ہٹگامہ مسابقت بپاتھا، یہاں تک کہ جہاد کی عزت وحرمت کے اندازہ شناس بھی بہت کم لوگ سے۔اکثر اس کے نام بی سے ہراساں وگر بزاں سے۔دوم اس جماعت کا مقصد و مدعا حصولی آزادی کے سوا بچھ نہ تھا اور وہ اس کیلئے کسی مادی معاوضے یا دنیوی منفعت کے بھی طلب گارنہ ہوئے۔وہ پور سے سواسوسال تک بے پروایا نداور بے در لیخ اپنی جانیں اور کی طلب گارنہ ہوئے۔وہ پور سے سواسوسال تک بے پروایا نداور بے در لیخ بھی بھی ملوث نہ مال اس راہ میں قربان کرتے رہے اور ان کے دل ایک کلمہ تحسین کی آرز و سے بھی بھی ملوث نہ ہوئے۔ ان کی قربانیوں کے مقابلہ میں وہ انمال وحرکات کیونکر لائے جاسکتے ہیں جن کے ساتھ اخباروں کے نفس پرورمقالے، پھولوں کے ہار، جلسوں اور جلوسوں کی جمیمے، شہرت طبی کے واب اختیاروں کی نشریت کی بیدواستان ان لوگوں کی بلنداسلامیت کا کرشہ تھی اور اس میں ہم سب کیلئے بصیرت و موعظت کا نہایت شری میں میں بہم سب کیلئے بصیرت و موعظت کا نہایت شری میں مار ماری موجود ہے۔

سم اس داستان کی اہمیت کا ایک پہلو یہ بھی تھا کدا ہے جارے حالات سے خاص مناسبت تھی ۔ سید شہید نے جب دعوت اصلاح و جہاد کاعلم بلند کیا تھا تو ملک کی عام کیفیت بعد کے دور سے یقینا قدر سے متفاوت تھی ، تاہم ان کی بے سروسامانی ہماری بے سروسامانی سے مختلف نہ تھی۔ بدایں ہمدوہ اللہ کا نام لے کر اُٹھے اور عزیمت واستقامت کے اعجاز سے وہ تحریک پیدا کردی، جس کی آگ کے شعلوں نے بچیس سال تک سکھوں کواور ایک سوسال تک برطانیہ جسی قاہر قوت کوسلس آئٹ زیریار کھا۔

جارے لئے اس سر گزشت ہے استفادہ کی صورت بجزاس کے کیاتھی کہ بیم تب صورت

میں ہارے سامنے آجاتی۔ یہ مقدس بزرگ پاک وہند کے ایک دورا قادہ گوشے میں اپنے خون حیات سے مراد کے لفش بھاتے اور روش مستقبل کے خط و خال سنوارتے رہے۔ آئ کون اندازہ کرسکتا ہے کہ ان کے دلوں میں کیسے کیسے دلو لے موجزن تھے اور د ماغوں میں کیا کیا انظامی نقشے ہے ہوئے ہوئے جن کی زندگیوں کا ہرسانس ادائے فرض اور د ضاح تن کے لئے وقف رہا، ان کی عظمت کا اندازہ ہم لوگنیس کر سکتے ، جوفرض اور د ضاح مقبوم سے بھی یکسر نا آشاہیں۔ وہ چیش نظر مقاصد کے لئے جانفشانیوں کی شیفتگی میں اس د نیا سے رخصت ہوگئے: مشاہیں۔ وہ چیش نظر مقاصد کے لئے جانفشانیوں کی شیفتگی میں اس د نیا سے رخصت ہوگئے: مشت ہوگئے:

بادیمع انجمن را تا به پایاں زیستن کیاجارا داعیہ حق شناسی اس امر کا بھی تتحمل نہیں ہوسکتا کہ ان کی یاد بہ طرزشایاں تازہ رکھی جائے؟

میں نے اس اہم کام کا ذمہ اُٹھایا تھا تو خواب وخیال بھی نہ تھا کہ اس کے سرانجام ہیں مہلت دیات کی اتنی کمیں مہلت دیات کی اتنی کمیں مہلت دیات کی اتنی کمیں مدت صرف ہوجائے گی۔ اب ویکھنا ہوں تو قلب کی بید کیفیت ہے، سمویا کل رخت وسفر باندھا تھا اور آج منزل مقصود پر پہنچ گیا۔ بے شک محنت بڑی ہی ولکیراور مشقت بدورجہ غایت صبر آز ماتھی ، تاہم اس کی حلاوت وول پذیری کا بیا عالم تھا کہ ذوق و وجدان اب تک اس لذت وسرورکی موجوں میں ڈو بے ہوئے ہیں:

رفتیم بسرزود دریں محفلِ رندال ساق کے تندے بہ ایاغ دل ماریخت

جو کچھ میں نے لکھا ہے جھے پورااحساس ہے کہ بیر ف آخر نہیں اورانسان کی کوئی کوشش کسی کام میں حرف آخر نہیں اورانسان کی کوئی کوشش کسی کام میں حرف آخر بھی جا سکتی ہے؟ ابتدائی ادوار کی سرگزشت میں بھی بعض خلامحسوں ہوتے ہیں، جنہیں میں پرُند کر سکا اور آخری دور کے تو سینکڑ وں افراد ورجال ہیں جن میں سے اکثر کے نام بھی معلوم نہ ہو سکے اور بعض کے نام معلوم ہوئے تو حالات ندل سکے انہم ایک فاکرتیار ہوگیا ہے جس کا ہر حصد تاریخی شواہد پر جنی ہے۔ بیا خاکد ارباب ووق کے لئے مزید

تحقیق میں مشعل راہ کا کام دےگا۔ جن اصحاب سے امداد ملتی رہی ،ان کے اسائے گرامی حواثی کتاب میں جا بجاورج ہیں۔ خاص شکر ہے کے ستی مولا نا محد اسلیل (جماعت اہل حدیث کے ناظم اعلی) ہیں جن کی مجانہ اعانت آخری دور کے سوائح کی تر تیب میں برابر شامل رہی۔ خود کتاب کے متعلق کچھ کہنا میرے لئے زیبانہیں ،البتہ یائی ش کرسکتا ہوں کہ نہ صرف اردو میں بلکہ ہرزبان میں اپنے موضوع پر بیر پہلی کتاب ہے۔ میں نے اس کے لئے کہاں کہاں اردو میں بلکہ ہرزبان میں اپنے موضوع پر بیر پہلی کتاب ہے۔ میں نے اس کے لئے کہاں کہاں اس سے مواو فراہم کئے ، پھرکن کن کاوشوں سے انہیں ایک متند دستاہ پر کی حیثیت میں مرتب کیا ، ان سوالات کا کسی قدر جواب آپ کو ملاحظ کتاب سے مل سکے گا۔ بہر حال خدا کا شکر ہے کہ سالہاسال کی تک ودو کے بعد جگہ گئے ہے۔ پھول چن کرایک گلدستہ تیار کر سکا ہوں۔ شہیدانِ راہِ حتی کی بارگاہ میں اس سے بہتر تحقہ پیش کرنے کی استطاعت جمھ میں نہ تی ۔ باخون صد شہید مقابل نہادہ اند باخون صد شہید مقابل نہادہ اند عون صد شہید مقابل نہادہ اند

غلام رسول قبر مسلم ٹاؤن له لاجور ۲رنتمبر ۱۹۵۲ء

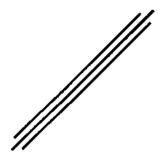
تحریک سیداحر شہید کے سلسلے کی چوتھی اور آخری کتاب (۱۸۳۱ء سے زمانہ حال تک)



حضرت سیداحمد شہیدگی جماعت مجاہدین نے ایک سوسال میں اسلام کےاحیاء،اسلامی حکومت کی بحالی اور ملک کی آزادی کے لئے جو جہاد کیےان کی مفصل سرگزشت

مولا ناغلام رسول مبر

برصغير مندمين تحريك احيائ دين اورسر فروشانه جدوجهدي كمل سرگذشت



حصهاول

(شیخ ولی محمداورمولوی نصیرالدین منگلورې)

پېلاباب:

شهادت إمام اورتجد بدنظام

شهادت إمام

سیدصاحب نے ۱۲۲ (دی قعد ۱۲۳ اھ (۲ رئی ۱۸۳۱ء) کو بروز جعد ۱۱-۱۱ رہے کے درمیان بالاکوٹ میں شہادت پائی۔ ہم بتا چے ہیں کہ آپ کی شہادت نہیں بلکہ گشدگی کی خبر پھیل گئ تھی۔ جس کسی کے کان میں بیخبر پنجی اُس نے لڑائی ہے ہاتھ کھنج لیا اور سیماب وارآپ کی حال میں سرگردال پھرنے لگا۔ بہت ہے جامدین اس سرگردانی کی حالت میں شہید ہوئے۔ اس اثناء میں سکھوں کا دباؤ بردھتا گیا اور جاہدین ہیجے ہے ہے ہے اس بہاڑ کے دامن میں بنجی گئے جو حلقہ کبالاکوٹ کی شالی ست میں واقع ہے۔ مین اس موقع پر بیآ واز بلند ہوئی کہ گو جر سیدصا حب کولڑائی کے کھیت ہے اٹھا کر باہر لے گئے، البذا مجاہدین کو بھی میدان سے نکل آتا چاہئے۔ اگر بیآ واز نہ تی جائی تو بھینا مجاہدین الباکوٹ ہی میں جانی میں دے دیے اور کوئی بھی ہنے پرآ مادہ نہ ہوتا۔ بھی ہیں کہا جا اسکنا کہ گوجروں نے بیہ تدبیر بھیۃ السیف بجاہدین کو بچا لینے کی غرض سے اختیار کی تھی یا سکھوں کے ایماء پر اُن کا مقصد بی تھا کہ مقابلہ ختم ہوجائے اور مزید کھنگ باتی نہ رہے۔ اس حقیقت میں شربیس کہ جاہدین کو بالاکوٹ کے میدان سے ہٹانے کی طرف باتی اور کوئی صورت کا رگر نہ ہو کہی تھی۔

مختلف راست

بالاكوث سے شالى سمت جانے كے مختلف راستے تھے۔ مثلاً ست بنے كا نالا ، برنا

کانالا، ست بنے کے ٹیلے اور برنا کے ٹیلے پر چڑھنے کی گلڈنڈیاں۔ قرائن سے معلوم ہوتا ہے کہ زیادہ تر مجاہدین نے نالوں کے راستے اختیار کئے ممکن ہے کہ بعض اصحاب گلڈنڈیوں کے راستے اوپر چڑھ کئے ہول۔ اوپر چڑھ جانے کے بعد اکثر اصحاب ایک چشمہ پرجمع ہوئے۔ اس وقت مولوی خیرالدین شیر کوئی کی جماعت کے بھی چند آ دی چڑے گئے، جوابے ساتھیوں سے آگے آگے تیز دوڑے چلے آ رہے تھتا کہ جلد سے جلد جنگ میں شریک ہوجا کیں۔ اٹھیں فکست کاعلم ہوا تو دم بخو درہ گئے۔ سب کو انتہائی قاتی اس میں شریک ہوجا کیں۔ اٹھیں فکست کاعلم ہوا تو دم بخو درہ گئے۔ سب کو انتہائی قاتی اس میں شریک ہوجا کیں۔ اٹھیں فکست کاعلم ہوا تو دم بخو درہ گئے۔ سب کو انتہائی قاتی اس میں شریک ہوجا کیں۔ اٹھیں فکست کاعلم ہوا تو دم بخو درہ گئے۔ سب کو انتہائی قاتی اس میں جاہدین اس درجہ پراگندہ خاطر اور حواس باختہ تھے جیسے مجنوں اور سودائی ہوتے ہیں۔ کوئی کسی کا برسان حال نہ تھا۔

غربت کی پہلی منزل

بالاکوٹ کے میدان میں سکھوں کی فوج چھلی ہوئی تھی۔ پہاڑ پر ظہر سے دہنے میں کوئی فائدہ نہ تھا۔ وہاں سے اڑھائی تین کوس کے فاصلے پرانگرائی نام ایک گاؤں ہے، جو ناصر خاں محت گرامی کی ملکیت تھا۔ خان موصوف کی رہنمائی میں مجاہدین نے ای گاؤں کا رخ کرایا اور مغرب تک وہ انگرائی میں بہتے گئے۔ مولوی خیر اللہ بن شیرکوئی کے ہمراہی بھی آ گئے۔ ان سے معلوم ہوا کہ مولوی صاحب بہت بھار ہیں، دواڑھائی کوس پردرہ کا غان میں ایک مقام پر مضم ہوا کہ مولوی صاحب بہت بھار ہیں، دواڑھائی کوس پردرہ کا غان میں ایک مقام پر مضم ہوا کہ مولوی صاحب بہت بھار ہیں، دواڑھائی کوس پردرہ کا غان میں ایک مقام پر مسب مجاہدین دن بھر کئے ہیں۔ وہ خود چل نہیں گئے۔ ساتھی آئیس چھ نہ تھا، مسب مجاہدین دن بھر کے بھو کے تھے، تن کے پڑ وال کے سواکسی کے پاس پچھ نہ تھا، صرف شخخ ولی محمد کی جب میں ایک رو بیر تھا جس کی مکئ خریدی گئی۔ وہی مضمی مخمی مجر مجاہدین میں تھی میں آئیست کے رنج ادر سید صاحب کے ٹم فراق نے ان پر خستگی میں تھاری کی جو کیفیت طاری کر رکھی تھی، اس کا صبحے اندازہ کون کرسکتا ہے؟ جہاں اورافسردہ خاطری کی جو کیفیت طاری کر رکھی تھی، اس کا صبحے اندازہ کون کرسکتا ہے؟ جہاں اورافسردہ خاطری کی جو کیفیت طاری کر رکھی تھی، اس کا صبحے اندازہ کون کرسکتا ہے؟ جہاں

سی کوجگہ لی، بے خرانہ لیٹ کمیا۔ یہاں تک کہان میں سے کسی کو ہتھیار سنجالنے کا بھی ہوش نہ تھا۔ ناصر خال نے اپنے آ دمی حفاظت کیلئے مقرد کردیے۔ دِل برداشتگی اور حواس باختگی کی اس حالت ِزار میں بھی جراحوں نے اپنا فرض فراموش نہ کیا، چنانچہ جان محمد جراح رام پوری اور عبد الرحیم جراح جاستھی نے نماز عشاء کے بعد تمام زخیوں کی مرجم پٹی کی۔

گوجرول کا پیغام

رات کے وقت دو گو جرا گرائی آئے اور بنایا کہ سید صاحب تھوڑی دورآگے(۱) پہاڑ کے درے میں زندہ سلامت موجود ہیں۔آپ لوگ چلیں تو ہم انکے پاس پہنچادیں۔ پینوش خبری س کرسب لوگ بھوک اور تکان بھول گئے لیکن ناصر خال نے رات کے وقت جانا خلاف مسلحت قرار دیا اور کہا:

اگرسید بادشاہ کو اللہ تعالیٰ نے زندہ رکھا ہے، وہ کہیں ہوں، ہرگز نہیں چھنے کے ہم کل سورے آنا، ہم سب تمہارے ساتھ چلیں گے۔(۲)

مجاہدین کو ناصر خال نے سمجھایا کہ اگر امیر المونین خدا کے فضل سے زندہ ہیں تو کل یا پرسوں ان سے ملا قات ہوجائے گی۔ آپ حضرات کیلئے لازم ہے کہ جلد سے جلد بی بی صاحبہ کے پاس پینچ کرا کی حفاظت کا انتظام کریں۔ اگر سکھوں نے اس طرف پیش قدمی کی اور خدانخواستہ بی بی صاحبہ کو گرفتار کر لیا تو یہ بڑی شرم اور قباحت کی بات ہوگ۔ یہ رائے سب کو پہند آئی اور سید ھے بی بی صاحبہ کے پاس پہنچنے کا فیصلہ ہوگیا۔

انگرائی میں مبح کی نماز اداکرنے کے بعد دوتین گھڑی دن چڑھے تک ان گوجروں کا انتظار کیا گیا جورات کے وقت سیدصا حب کی سلامتی کا پیغام لے کرآئے تھے، کیکن اُن میں سے کوئی ندآیا۔ شیخ ولی محمد خال نے ہیجو یز پیش کی کہ مقامی آ دمیوں میں سے ایک دو

⁽¹⁾ مطلب بیب کدانگرائی ہے آگے اس طرف جدهرمجابدین جارہے تھے۔

⁽٢) "وقائع" جلدسوم ص: ٢٥٦ ـ باقى تفسيلات بحى" وقائع" بى كى روايات سے ماخوذين

کو بالاکوٹ بھیج دینا چاہئے تا کہ وہ امیر المونین کے تعلق سیج حالات دریافت کرآئیں۔ اللہ دین ساکن پکھلی اور خصر خال قندھاری بی کام انجام دینے کیلئے تیار ہوگئے۔انہوں نے بالاکوٹ کاراستہ لیااور باقی مجاہدین نے نندھیاڑ کارخ کرلیا۔

دشوار گذارسفر

اگرائی ہے آ کے پہاڑی چڑھائی تھی۔ آدھی چڑھائی پر پہنچ تو ناصر خال نے بائیں جانب اشارہ کرتے ہوئے بتایا کہ دات کو گوجروں نے سید بادشاہ کے قیام کی جوجگہ بتائی مشقت تھی، وہ اُس درے میں ہے۔ وہاں کوئی سراغ ندل سکا تو آ گے بڑھے۔ انتہائی مشقت کے بعد پہاڑ کی چوٹی پر پہنچ، جہاں سے خطر ناک اترائی شروع ہوئی۔ مقامی لوگ تو باسانی اتر نے گئے لیکن مجاہدین کو بڑی مشکلات چیش آئیں کیونکہ وہ ایسے پہاڑی سفروں کے عادی ندھے۔ روایت میں بتایا گیا ہے کہ مجاہدین میں سے:

کوئی تو الٹی فیک کرا ترنے لگا اور کوئی بندوق فیک کر۔ اس میں ایک جگہ کسی صاحب کا پاؤں چیسلا اور گرا۔ بیس پجیس آدمی اُس کے آگے تھے۔ اس کے دھکے سے وہ سب گرے اور لوٹے پوٹے پہاڑ کے نیچے جار ہے۔ کسی کی تکوار ٹوٹ گئی، کسی کی ٹم ہوگئی اور کسی کی بندوق کا کندا ٹوٹ گیا، مگر وہ سب لوگ سلامت رہے ، کوئی زخمی نہ ہوا۔ (1)

نشیب میں نور عالم (تعلب معری) کے بہت سے پود سے تھے۔ مجاہدین مجوک کے مارےان کی جڑیں کھود کھود کو کا جردں کی طرح کھاتے رہے۔ وہاں برف کا ایک موٹا تختہ ملا، جومیل ڈیڑھ میل لمباہوگا۔ اُس پر چلنے گئے تو ینچے سے پانی بہنے کی آواز آئی۔ مقامی نوگوں نے سب کوروک دیا۔ ایک جگہ سے برف پکھل کر غارسا بن گیا تھا۔ جھا تک کردیکھا تو کوئی سوڈیڑھ سوفٹ نیچے پانی نظر آیا۔ مقامی لوگ خود آگے آگے چلنے گئے

^{(1) &#}x27;'وقالَح''جلدسوم ص: 409

تا کہ برف کی پختگی کا اندازہ کرتے جا کیں ،مبادا مجاہدین میں سے کوئی ناواتھی کے باعث الیی جگہ قدم رکھ دے جہاں برف کی تہدزیادہ موٹی نہ ہواور نیچے جا گرے۔اس طرح آہتہ آہتہ نیبی حصے سے گذرے۔

ميال کلنی

دوسری منزل میاں کلئی میں ہوئی جودرہ پنجول میں سیدوں کی ایک مشہور ستی ہے۔
ناصر خال بھٹ گرامی نے پیغام بھیج دیا تھا کہ مجاہدین آرہے ہیں اور ان کی مہمانی کا
سامان تیارر کھا جائے عصرے وقت وہاں پنچے سیدوں نے پہلے بھی ہوئی کئی پیش کی،
پھر گاؤں کے تمام لوگ اپنے اپنے گھروں سے کھانا لے آئے ۔کوئی کڑھی روثی، کوئی دہی
روٹی، کوئی دود ھروٹی اورکوئی وال روٹی ۔زخیوں کیلئے حلوا تیار کیا گیا۔ ہالاکوٹ کے بعد
یہ پہلا کھانا تھا جوراوح ت کے ان جانبازوں نے سیر ہوکر کھایا۔

بنسير

اس اثناء میں گوجروں سے معلوم ہو چکا تھا کہ بی بی صاحبہ مملئ سے بنسیر آگئی ہیں۔ دونوں مقاموں کے درمیان فاصلہ زیادہ نہیں۔ مجام بن میاں کلئی سے روانہ ہوکر عصر کے وقت بنسیر پنچے۔ وہ گاؤں حبیب اللہ خاں رئیس گڑھی کے بڑے بھائی بہرام خاں کی ملکیت میں تھا، اس نے بڑی خاطر داری سے سب کومختلف مکانوں میں اتارااور مہا نداری میں کوئی کسراٹھا ندر کھی۔

۲۹۷ دی قعدہ کی رات انگرائی میں بسر کی تھی اور ۲۵ مرکی رات میاں کلئی میں۔ ۲۹ مرکو منول مقصود پہنچ مجتے، وہیں اللہ دین اور خصر خال بھی آگئے۔ انہوں نے ایک رات بالا کوٹ میں بسر کرنے کے بعد جو حالات معلوم کئے ان کا خلاصہ بیتھا کہ جن مجاہدین کو سکھوں نے زندہ گرفتار کیا تھا اُن سے کورشیر سنگھ نے سیدصا حب کی نعش تلاش کرائی۔

انھوں نے ایک سرکی لاش کے متعلق کہا کہ پوشاک کی بناپر بیسید صاحب کی معلوم ہوتی ہے۔ پھراس کا سربھی تلاش کرایا۔ جب تصدیق ہوگئ کے سید صاحب کی نعش یہی ہے تو اس پر دوشالہ ڈلوادیا۔ خاصے کے دوتھان اور پچیس روپ نقذ دے کر کہا کہ اسلامی دستور کے مطابق اسے دفن کردیا جائے۔ بعد میں نہنگ اکالیوں نے اس نعش کو قبر سے نکال کردریائے کھار میں ڈال دیا۔

بہرحال نظر بہ ظاہر سیدصاحب کی شہادت میں کوئی شک وشبہ باقی ندر ہاتھا، تا ہم بعض اصحاب کو بیامبدگی رہی کہ سیدصاحب زندہ ہیں، اس امید کوتقویت اس امر سے ہوئی کہآیے کو بہ حالت شہادت و کیھنے کی کوئی یقینی اور قطعی روایت موجود نتھی۔

جماعت کی پریثاں حالی

جنگ بالاکوٹ کے وقت مجاہدین کی بڑی جماعت سیدصاحب ہے ہمراہ تھی۔ اس کے علاوہ مختلف گروہ جگہ جگہ ہم ہوئے تھے۔ مثلاً ایک جیش مولوی خیرالدین شیرکوٹی کی سرکردگی جیس مظفر آبادگیا ہوا تھا۔ بیلوگ سرگرم تگ ودو کے باوجود جنگ کے موقع پر بالاکوٹ نہ پہنچ سکے۔ تمیں بتیں مجاہدین مولوی نصیر الدین منگلوری کی سالاری میں درہ محوکر منگ کی حفاظت پر مامور تھے۔ ایک جماعت کوسیدصاحب نے بچوں میں بٹھادیا تھا، ان میں وہ لوگ بھی شامل ہو گئے تھے جو جنگ مظفر آباد میں زخمی ہوئے اور مولوی خوا تین کی حفاظت و خدمت کیلئے ایکے پاس موجود تھے۔ جنگ بالاکوٹ کے بعد بیسب خوا تین کی حفاظت و خدمت کیلئے ایکے پاس موجود تھے۔ جنگ بالاکوٹ کے بعد بیسب خوا تین کی حفاظت و خدمت کیلئے ایکے پاس موجود تھے۔ جنگ بالاکوٹ کے بعد بیسب کی ہوئے اس موجود تھے۔ جنگ بالاکوٹ کے بعد بیسب کی ہوئے سامان نہ تھا، کیونکہ کے اور منائن نہ تھا، کیونکہ طاری تھی، اسلئے کہ بر سردار تھے۔ اکثر کے پاس تن پوشی کا بھی کوئی سامان نہ تھا، کیونکہ ساراسامان بالاکوٹ میں الٹ چکا تھا۔ بی بی صاحبہ کے پاس جو جا جمیں، خیے اور تناش ساراسامان بالاکوٹ میں الٹ چکا تھا۔ بی بی صاحبہ کے پاس جو جا جمیں، خیے اور تناشیں ساراسامان بالاکوٹ میں الٹ چکا تھا۔ بی بی صاحبہ کے پاس جو جا جمیں، خیے اور تناشی ساراسامان بالاکوٹ میں الٹ چکا تھا۔ بی بی صاحبہ کے پاس جو جا جمیں، خیے اور تناشیں ساراسامان بالاکوٹ میں الٹ چکا تھا۔ بی بی صاحبہ کے پاس جو جا جمیں، خیے اور تناشیں ساراسامان بالاکوٹ میں الٹ چکا تھا۔ بی بی صاحبہ کے پاس جو جا جمیں، خیے اور تناشیں ساراسامان بالاکوٹ میں الٹ چکا تھا۔ بی بی صاحبہ کی پاس جو جا جمیں، خیے اور تناشیں ساراسامان بالاکوٹ میں اللے کہ دور تھا۔

خص، شیخ ولی محمہ نے کٹوا کر مجاہدین میں تقسیم کردیں۔انہوں نے انگر کھے، پاجاہے، دو پٹے ، عمامے اور بستر بنوالیے۔ممدوحہ کے پاس کل سولدرو پے تھے، وہ بھی دیدیئے اور اُن سے غلہ خرید کر مجاہدین میں تقسیم کردیا گیا۔

شيخ ولىمحمركي كيفيت

ابسب سے اہم مسئلہ یہ تھا کہ جماعی شظیم کیونکر بھال رکھی جائے۔ ہرایک کی نگاہ بار بارشخ ولی محمد پھلتی پر بردتی تھی۔ اسلئے کہ سید صاحب کے دفقائے خاص میں سے جو لوگ زندہ رہ گئے تھے، ان میں سے شخ صاحب ہی افضل تھے۔ لیکن ان کی حالت یہ تھی بھیے کوئی دیوانہ یا حواس باختہ ہو۔ سید صاحب غم میں ہوش بجانہ تھے۔ جب ان سے کہا جاتا کہ لوگ پریشان حال ہیں، کوئی الیا بندوبست سیجئے کہ بے اطمینانی دور ہو، تو وہ جواب ویتے کہ مجھے سے بچھ کا منہیں، جو چاہ رہ، جو چاہ چلا جائے۔ میں تو بی بی صاحبہ کا خدمت گزار ہول۔ میرا پہلا کام یہ ہے کہ وہ جہاں جانا چاہیں، بد حفاظت انہیں صاحبہ کا خدمت گزار ہول۔ میرا پہلا کام یہ ہے کہ وہ جہاں جانا چاہیں، بد حفاظت انہیں ماری ہو یا جائے۔ بیرال دور ہوئی دوانہ بھی

شخ صاحب نے بی بی صاحب ہے بوچھا کہ آیادہ اپ والدین کے پاس چر ال جانا چاہتی ہیں یا امیر الموننین کی از واج کے پاس سندھ جانے کی خواہاں ہیں؟ بی بی صاحب نے سندھ جانے کا فیصلہ کیا اور شخ صاحب اس سوچ بچار میں لگ گئے کہ کسی طرح انہیں محفوظ رائے سے سندھ پہنچادیں۔

صحيح مشوره

ا کابر مجاہدین میں سے تین بزرگ ایسے تھے جو جنگ بالاکوٹ میں شریک نہ تھے: ایک شیخ حسن علی، دوسرے مولوی محمد قاسم پانی پتی، تیسرے مولوی نصیر الدین منگلوری۔ بالاکوٹ کی شکست اورسید صاحب کے فراق کاغم انہیں بھی سب کے برابر تھا، لیکن ان پر حواس باختگی کی وہ کیفیت طاری نہ تھی جس سے دوسرے بجابدین بے طرح متاثر تھے۔ انہوں نے شخ ولی محمد کو سمجھایا کہ جماعتی نظام سے بے پروائی اور بے تعلقی کا اظہار سراسر خلاف مصلحت ہے۔ اس کا نتیجہ یہ ہوگا کہ سب لوگ گھروں کی راہ لیس گے اور ہم چندآ دمی رہ جا کیں گے، جن کیلئے نہ یہاں قیام کا کوئی اظمینان بخش بندوبست ہو سکے گا اور نہ لی بی صاحبہ کو سندھ پہنچانے کا انتظام کر سیس گے۔ صحیح طریق کاریہ ہے کہ تمام مجاہدین کو تسلی مصاحبہ کو سندھ پہنچانے کا انتظام کر سیس گے۔ صحیح طریق کاریہ ہے کہ تمام مجاہدین کو تسلی دیجے اور امارت بول کر لیجے تا کہ جماعتی نظام قائم رہے۔ امیر المومنین کے زندہ ہونے کی خبریں ال رہی ہیں، آپ کی تشریف آوری تک جماعت کو اختثار سے بچائے رکھنا بہر حال لازم ہے۔

ی کی محمد نے اس مشورے کی معقولیت کا اعتراف کرتے ہوئے کہا کہ مولوی نصیرالدین امیر بن جائیں ،وہ امارت کے اہل ہونے کے علاوہ نسباً سید ہیں۔لیکن جماعت کی بہت بوی اکثریت چونکہ شخ صاحب پر منفق تھی اسلئے تینوں مشیروں کے اصرار پرموصوف نے امیر بنیا قبول کرلیا۔

ايك بھولا ہوا واقعہ

اس اثناء میں انہیں ایک واقعہ یاد آگیا جس ہے آخری فیصلہ پر پہنچنے میں خاص مدد ملی۔ واقعہ بیتھا کہ ایک مرتبہ پنجتار میں نماز گجر کے بعد سیدصا حب نے مولا ناشاہ اساعیل، مولوی ضیاءالدین پھلتی اورشخ ولی محمد کو بلوایا۔ دیر تک جہاد کے فضائل بیان فرماتے رہے، پھر یکا کیک شخخ ولی محمد ہے خاطب ہوکر کہا:

شخ بھائی ممکن ہے میں بھی آپ لوگوں میں ندر ہوں۔آپ کوتا کید کی جاتی ہے کہ جہاد کے کار خیر سے وست کش نہ ہونا۔اللہ تعالیٰ نے اس کام میں بڑی خوبیاں اور برکتیں رکھی ہیں۔ شیخ ولی محمد نے سوچا کہ عجب نہیں وہ ارشاد ای وقت کیلئے ہو، ورنہ مولانا (شاہ اساعیل) کے ہو کہ مولانا (شاہ اساعیل) کے ہوتے ہوئے محمدے کیوں مخاطب فرمایا؟ جب کہ مولانا کے سامنے میں کسی مختل اور شارمیں نہ تھا۔

ببعت إمارت

شیخ ولی محمد امارت کی محرال قدر ذمه داریال اٹھانے کیلئے تیار ہوگئے توسر کردہ اصحاب کے مشور ہے اورا تفاق سے با قاعدہ بیعت کا اتظام کیا گیا۔ان اصحاب میں سے خاص طور پر قابل ذکر افراد یہ ہیں: مولوی نصیر الدین منظوری ، مولوی محمد قاسم پانی پی ، ملا لعل محمد قد هاری ، ملا بازار قد هاری ، ملا دوست محمد قد هاری ، ملا عزت قد هاری ، خضر خال قد هاری ، بعد فرخال بن بزاروی ، حسین خال ترین بزاروی ، بابرشاہ ننگر ہاری ، سید اللہ نورشاہ ساکن مینئی ، مولوی امام الدین ساکن ٹوبی ، اخوندگل بشاوری ، محمد بین خیبری ، قاضی محمد بین اوری ، اخوند فیض محمد غزنوی ، شیخ وزیر پھلتی ، شیخ خواہش علی عظیم آبادی ، پیر مبارک علی محمد عوادی و جید الدین باغیتی ، فیخ محمد آدم پوری ، مولوی عبد الحکیم بڑھانوی ، مبارک علی محمد مین خیلی ۔

اس سلیلے میں مولوی خیر الدین شیر کوئی کا نام روا بنوں میں باکل نہیں آیا، حالا نکہ وہ عجام میں متاز حیثیت پر قائز تھے۔ سمجھنا چاہئے کہ یا تو وہ علالت کے باعث بیعت کے وقت بنسیر پہنچے ہی نہ تھے، یا شدت علالت کی وجہ سے شور کی اور بیعت میں بروقت شر یک نہ ہو سکے۔

اہل نندھیاڑ کی شرکت

بیت کے بعد قرار پایا کہ علاقۂ نندھیاڑ کے رؤساء وخوا نین کوبھی اس انتظام میں شریک کر لینا جائے۔ چنانچہ اخوندگل بیٹا وری اور ملافیض مجمع غزنوی نے سب کوجمع کر کے

شیخ ولی محمد کی امارت پراتفاق کے حالات بتائے۔ان لوگوں نے انظام کی تحسین کرتے ہوئے کہا کہ میں شرکت میں عذر نہیں الیکن اپ بیر ومر شد صاحبز اوہ محمد نوج محصوف بغیر کوئی قدم اٹھانہیں سکتے۔ جماعت مجاہدین کی طرف سے اس وقت صاحبز اوہ موصوف کے نام ایک خطب بہار بھیجا گیا، جس میں شیخ ولی محمد سے بیعت کے پورے حالات درخ اس ایک خطب بہار بھیجا گیا، جس میں شیخ ولی محمد سے بیعت کے پورے حالات درخ میں ان سے درخواست کی گئی تھی کہ آپ کو اس ملک میں پیشواو مقدا کی حشیت حاصل ہے، آپ بھی نشد نی اللہ اس کار خبر میں شریک ہوجا کیں۔ دنیا میں نیک حیثیت حاصل ہے، آپ بھی اللہ اس کار خبر میں شریک ہوجا کیں۔ دنیا میں نیک بوگ اور آخرت میں اللہ تعالیٰ کے ہاں سے جزا پاکس گے۔ صاحبز ادے نے جواب میں لکھا کہ آپ حضرات میرے پاس سے جزا پاکس گے۔ صاحبز ادے نے جواب میں لکھا کہ آپ حضرات میرے پاس سے بہار چلے آگیں، انشاء اللہ میں آپ کا ساتھ دوں گاور حتی الم تقد ور خدمت میں کوتا ہی نہ کروں گا۔

دوسراباب:

تندهيار مين قيام كاانتظام

صاحبزاده محمنصير

صاحبزادہ محمد تصیر علاقہ نندھیاڑ کے سب سے بوے پیر تصاورا س علاقے کا کثر لوگ انہیں کے معتقد تھے۔ وہ خودست بہار میں رہتے تھے اور ان کے دو چھوٹے بھائی محمد نذیر اور محمد بشیر کو ہانہ میں مقیم تھے۔ پہلے بتایا جاچکا ہے کہ اہلِ نندھیاڑ کا تعاون صاحبزادہ محمد تصیر کی رضا مندی اورا تفاق پر موقوف تھا، ای لئے ان کی خدمت میں مکتوب بھیجا گیا تھا۔

بعض روا توں سے معلوم ہوتا ہے کہ سیدصا حب نے جہاں دوسر سے علاء ہ خوا نین ، پر زادوں اور عوام کو جہاد ہیں تعاون کیلئے دعوت دی تھی، وہاں صاجز ادہ محد تصیر کو بھی خطوط ہیں جھے تھے۔ لیکن موصوف کی طرف سے جنگ بالا کوٹ تک تعاون کا کوئی اقدام نہ ہوا ، اس وجہ سے اکثر مجاہدین کوصا جبزاد سے متعلق چنداں حسن خان نہ تھا ، البتہ مولوی محمد قاسم یانی پی صاجبزاد سے سرگرم مؤید تھے۔ وہ کہتے تھے کہ جب صاجبزادہ اعانت کیلئے مستعد ہے تو کیوں اس سے فائدہ نہ اٹھا یا جائے ؟ معاطلی صورت یہ تی کہ علاقہ مندھیاڑ ہیں مجاہدین کے قیام کا بندوبست اس وقت تک ممکن نہ تھا جب تک صاحبزادہ اپنے تیار ہوگیا تو جماعت مجاہدین کیلئے اسکی اعانت سے فائدہ اٹھانے میں تامل کی کوئی وجہ باتی نہ رہی۔ سابق میں اس کا تعاون کیلئے آگے نہ بوھنا موجودہ عزم خیر کے عدم قبول کی دلیل نہ بن سکتا تھا۔ چنانچہ صاحبزادے کی دعوت قبول کر لی گئی۔ اگر چہ یہ تعاون قبول کی دلیل نہ بن سکتا تھا۔ چنانچہ صاحبزاد سے کی دعوت قبول کر لی گئی۔ اگر چہ یہ تعاون قبول کی دلیل نہ بن سکتا تھا۔ چنانچہ صاحبزاد سے کی دعوت قبول کر لی گئی۔ اگر چہ یہ تعاون وقبول کی دلیل نہ بن سکتا تھا۔ چنانچہ صاحبزاد سے کی دعوت قبول کر لی گئی۔ اگر چہ یہ تعاون قبول کی دلیل نہ بن سکتا تھا۔ چنانچہ صاحبزاد سے کی دعوت قبول کر لی گئی۔ اگر چہ یہ تعاون قبول کی دلیل نہ بن سکتا تھا۔ چنانچہ صاحبزاد سے کی دعوت قبول کر لی گئی۔ اگر چہ یہ تعاون قبول کی دلیل نہ بن سکتا تھا۔ چنانچہ صاحبزاد سے کی دعوت قبول کر لی گئی۔ اگر چہ یہ تعاون

زیاده دیرتک جاری ندره سکا جیسا کهآ کے چل کرواضح ہوگا۔

بنسير ہے ست بہار

چنانچے صاحبزادے کی دعوت پر مجاہدین بنسیر سے ست بہارروانہ ہو گئے۔ پہلی منزل بھٹ گرام میں ہوئی جو ناصر خال کا دطن تھا۔ خان موصوف سید صاحب کے خلص معتقد تنے اور بالاکوٹ کی جنگ میں بھی شریک رہے تھے۔ انہوں نے بردی گرم جوثی سے جماعت کی مہمانداری کی۔ شیخ ولی محمد جماعت کی مہمانداری کی۔ شیخ ولی محمد نے صاحبزادے کی دعوت کے متعلق تمام حالات بتائے تو ناصر خال نے کہا کہ اس علاقے میں صاحبزادہ بہت معزز وممتاز ہے۔ اسکے تعاون سے امید ہے کہ جہاد فی سبیل اللہ کا اجراء از مر نو ہوجائے گا۔

ناصر خال خوداس لیئے ساتھ نہ جاسکا کہ بالاکوٹ کی جنگ میں زخی ہو چکا تھا، تاہم اس نے یقین دلایا کہ تندرست ہوتے ہی ست بہار پہنچ جاؤں گا۔

بھٹ گرام سے تیسرے دن روانہ ہو کر مجاہدین موضع پیال میں تھبرے۔اگلے روز بھٹاکول پہنچ گئے، جواخوند مجمدارم کا وطن تھا۔ یہ بھی بڑے پیرزادے اور سید صاحب کے مخلص عقیدت مند تھے۔انہوں نے بھی مہمانداری میں کوئی کسرا تھانہ رکھی۔ بھٹکول سے مست بہار صرف ایک کوس تھا۔ نی بی صاحبہ اور تقریباً ایک سومجاہدین اسی روز ست بہار چلے گئے، باتی اصحاب بھٹکول ہی میں تھبرے رہے۔

صاحبزادے کے انتظامات

صاحبزادہ محدنصیر نے ایک الگ تصلگ مکان بی بی صاحبہ اور مجاہدین کی دوسری خواتین کے طاقی کے دوسری خواتین کے دوسری خواتین کے خالی کرادیا۔ باقی اصحاب کے قیام کا بھی مناسب بندو بست کردیا۔ سب کوتسلی دیتے ہوئے کہا کہ سید بادشاہ کی سلامتی کی خبریں مل رہی ہیں، خدا کرے وہ جلد آجا کیں۔ آپ لوگوں کی طرح میری مراد بھی یہی ہے۔ تاہم جب تک وہ نہیں آتے میں

آپ کے ساتھ ہوکر جہا دمیں پوراحصہ لوں گااور کھانے کیڑے کا انتظام کرتار ہوں گا۔

یندروز کے بعد صاحبزاد بے علاقے کے رؤساء وخوانین کوجمع کیا اور کہا کہ یہ مجاہد بھائی سید بادشاہ کے ہمراہ جہاد نی سبیل اللہ کی غرض ہے آئے تھے۔ آپ کے نہ ہونے کی وجہ ہے کاروبار جہاد درہم برہم ہورہا ہے۔ ان کی خنواری ودلجوئی ہم سب پر لازم ہے۔ ان کے کھانے پینے کا انتظام دو چار آ دمیوں کے بس کا نہیں ،مناسب تدبیر یہ ہے کہ تمام رؤساء وخوانین اپنی اپنی بستیوں میں عشر کا انتظام کردیں اور خود عشر جمع کر کے مقررہ مقابات پر پہنچا دیا کریں۔ ان بھائیوں میں سے کوئی تحصیل کیلئے کہیں نہ جائے گا۔ ماضرین نے یہ تجویز قبول کریی اور پختہ اقرار کے بعدوہ واپس چلے گئے۔

قیاس یہ ہے کہ انظام ہوجانے پروہ مجاہدین بھی ست بہار چلے آئے جو بھٹکول میں مقیم تھے۔ اگر چہکسی روایت میں اس کی تصریح نظر ہے نہیں گذری ، اگروہ جائے قیام کی سہولت کے پیش نظر بھٹکول ہی میں مقیم رہے تو ان کے کھانے پینے کی چیزیں ست بہار ہے بہنچے گئیں۔

عید قرباں (۱۰رزی الحبہ ۱۲۴۷ھ، ۲۲ مرکی ۱۸۳۱ء) ست بہار ہی میں گذری۔ صاحبزاد سے نے قربانی کیلئے ایک بیل شخ ولی محمہ کے پاس بھیج دیا تھا، جسکا گوشت مجاہدین میں تقسیم ہوا۔اس وقت تک سیدصا حب کی شہادت پرسولہ دن گذر چکے تھے۔

جماعت کے دوجھے

نندھیاڑی تمام بستیوں سے عشر کا غلہ ایک مقام پر جمع کرنا بہت مشکل تھا۔ للہذا صاحبزاد نے نے مناسب سمجھا کہ جماعت مجاہدین کودوحصوں پرتشیم کردیا جائے۔ چنانچہ اس نے شیخ ولی محمد آتا ہم بانی پتی کو اس نے شیخ ولی محمد آتا ہم بانی پتی کو بلا کر کہا کہ بی بی صاحبہ دوسری خوا تمین اور ساٹھ ستر مجاہدین ست بہار میں رہیں ، ان کے گزارے کا بندوبست آس باس کی بستیوں کے عشر سے ہوتا رہے گا، باتی مجاہدین میرے گزارے کا بندوبست آس باس کی بستیوں کے عشر سے ہوتا رہے گا، باتی مجاہدین میرے

بھائیوں کے ساتھ کو ہانہ چلے جائیں، وہاں کی بستیوں کے عشر کا انظام میرے بھائی کرلیں گے، اور چندروز بعد میں خود بھی وہاں آؤں گا، تاکہ پورے علاقے کا دورہ کرکے مجاہدین کیلئے قیام کی تمام ہوئیں مہیا کردوں۔ شخ صاحب اور ان کے مشیروں نے صاحبزادے کی اس تجویز سے اتفاق کیا۔ چنا نچہ ساٹھ ستر مجاہدین ست بہار میں تھہر گئے اور باقی اصحاب کو ہانہ دوانہ ہوگئے۔ شخ ولی محمد نے مولوی محمد قاسم پانی پتی کو کو ہانہ والی جماعت تھی جے جہاد کا آغاز کرنا تھا۔ شخ نے جوآدی اپنے ساتھ رکھے تھائن کا مقصد دوسراتھا۔

شخ و لی محمہ کے ہمراہی

جولوگ شیخ صاحب کے ساتھ ست بہار میں رہے، اُن میں بی بی صاحبہ دس گیارہ دوسری خواتین اور بارہ تیرہ بچول کے علاوہ صرف مندرجہ ذیل اصحاب کے نام روایت میں نہ کور ہیں:مولوی نصیرالدین منگلوری،سید حامد علی جھنجھا نوی، حفیظ اللہ دیو بندی، اخوند فیض محمد غزنوی مجمد خیاط ککھنوی ، اللہ بخش خیاط ککھنوی ،مولوی عبدالحلیم بر دوانی ،خیرالدین ہزاروی، حاجی عبد الله گورکھپوری، شیخ احمد حسین صادق پوری،محمود بناری، شیخ رمضانی بناری، ابراہیم نگرامی،عبدالله مجراتی،عبدالا حدیقلتی، گلاب خاں (ساکن میان دوآب) حاجی فاضل پیثاوری، ابراجیم خان خیراً بادی مجمد حسین سهار نپوری، کریم بخش سهار نپوری، شاه ولی سہار نپوری،عبدالرحیم جراح جاسٹھی ،کریم بخش (ہمراہی مولوی نصیرالدین) ، فتح محمرآ دم پوری،حسن خال عظیم آبادی،امان الله گژه مکتیشری،امان الله خال کصنوی،اخوند زعفران قندهاری، خفر خال قندهاری، اشرف ولاین، عبد الحمید سندهی، گل شیرخال كالاباغ،نوركالاباغ،شهباز كالاباغ،احميسي خيل،اخوند محفظيم (كالوخان)،غلام مولا (پھلہ)،محمدز مان (پھلہ)،حسین علی بڈھانوی، رحیم بخش بناری ، امان اللہ خال سمج يورى ممال عبدالقيوم داروغ بينخ لكهمير اور بيرمحرقاصد

دونوں گروہوں کےمقاصد

طبعًا سوال بیدا ہوتا ہے کہ شخ ولی محمہ نے اپنے پاس کیوں تھوڑ ہے آدمی رکھے اور
ہری جماعت کو کس غرض ہے کو ہانہ بھیج و یا؟ مجاہد بین کا اصل کام بیتھا کہ جلد ہے جلد جہاد کا
آغاز کر دیں اور اس نصب العین کے حصول کیلئے جانیں لڑا دیں جو آئیں اور سید صاحب
وطنوں ہے نکال کر مرحد لایا تھا۔ حقیقت یہ ہے کہ شخ صاحب سب سے پہلے بی بی صاحب
کو سندھ پہنچا دینے کے آرزو مند سے تاکہ ان کی حفاظت کے انظامات سے فارخ
ہوجا کیں، پھر بہ اطمینانِ تمام جہاد کر کئیں۔ چنا نچہ انہوں نے وہی آدمی معیت کیلئے چنے
ہوجا کیں، پھر بہ اطمینانِ تمام جہاد کر کئیں۔ چنا نچہ انہوں نے وہی آدمی معیت کیلئے چنے
دونوں گروہوں کے دائرہ ہائے کارعارضی طور پر مختلف ہوگئے تھے، اسلئے ان کی سرگرمیوں
کے حالات الگ الگ بیان کرنے کے سوا چارہ نہیں۔ سب سے پہلے مجاہدین کی ہڑی
مجاعت کے قیام کو ہانہ کی کیفیت بیان کی جاتی ہے، اس کے بعد بتایا جائے گا کہ شنے ولی محمد
نے اپنے چیش نظر مقصد کے لئے کیا کہ جھ کیا۔

صاحبزاده محمرتصير كاؤوره

مجاہدین کی ہوی جماعت مولوی محمد قاسم پانی پی کی سرکردگی میں کو ہانہ پہنی۔ بعد میں مولوی خیرالدین شیر کو ٹی بھی کو ہانہ چلے گئے۔ بعض اصحاب کو مجد میں اُتارا گیا، بعض کے قیام کیلئے ایک اصاطر تجویز ہوا جو مسجد کے قریب واقع تھا اوراس میں صاحبز ادہ محمد نصیر کے بزرگوں کی قبرین تھیں۔ عیال دار مجاہدوں کیلئے مکان خالی کرادیے گئے۔ تین روز تک صاحبز ادے کے بھائیوں کی طرف سے کھانے پینے کا انتظام ہوتارہا، پھرائے ذخیر سے خارتھ سے خارتھ ہونے لگا۔ تھوڑی دیر کے بعد صاحبز داہ محمد نصیر آگئے، انہوں نے مجاہدین کو ساتھ لے کرگر دونواح کی بستیوں کا دورہ کیا، جس کی اجمالی کیفیت ذیل میں درج ہے۔ ماتھ لے کرگر دونواح کی بستیوں کا دورہ کیا، جس کی اجمالی کیفیت ذیل میں درج ہے۔ اس کو دوروز

اپنے پاس تھمرایااور پرتکلف دعوتیں کیں۔خود بھی صاحبز ادہ اور مجاہدین کے ساتھ ہوگیا۔ (۲) تیسرے دن سب اصحاب حاجی میرا گئے۔ پہنچنے کے دن بھی بستی والوں نے دعوت کی ،ا گلےروز بھی کھانا کھلا کررخصت کیا۔

(۳) حاجی میرا ہے تینج بوڑی گئے۔ وہاں بھی شام اور صبح کوبستی والوں کی طرف ہے دعوت کا انتظام ہوا۔

(س) گنج بوڑی ہے کوں سوا کوں سائی خاں کی گڑھی تھی ، وہاں بھی ایک رات قیا م کیااور دونو ں وفت کا کھانابستی والوں نے کھلایا۔

(۵) پھر چھپر گرام گئے، جہاں ملاً مقام نام درویش رہتا تھا۔ وہ ناصر خال کا پیر اور سید صاحب کا مخلص تھا۔ اس نے خان موصوف کو تا کید کی کہ بیمجاہدین خداکی راہ میں جہاد کیلئے آئے ہیں اوران کی خدمت سب پرلازم ہے۔ چھپر گرام میں دومقام ہوئے۔ (۱) چھپر گرام ہے جسول گئے۔ایک روز دونوں وقت کا کھانا جسول کے رکیس شیخانے کھلایا، دوسرے روزبستی والوں نے دعوت کی۔

جسول سے سب لوگ کو ہانہ واپس آگئے۔ دورے میں ہرمقام سے دوجار اکابر ساتھ ہوجاتے تھے تا کہ عشر کے انتظام میں الداددیں۔ کو ہانہ سے میل ڈیڑھ میل پر بیٹنگی نام ایک موضع تھا، دہ عشر کے ۔غلے کا مرکز قرار پایا۔ تمام مجاہدین کو دہاں سے غلہ ملتا تھا۔ جو بستیاں کوس ڈیڑھ کوس پر تھیں، دہاں سے مجاہدین خود عشر لے آتے تھے۔ دور والی بستیوں سے صاحبزادہ محمد نصیر گدھے یا خچر بھیج کر منگوا لیتے تھے۔ بعض مجاہدین کو صاحبزادے نے مختلف بستیوں میں بٹھادیا تھا۔ (۱)

(۱) بیلمام تغییلات' وقالع'' سے ماخوذ ہیں۔ یہاں بیمی بتادینا چاہیے کہ ہزارہ گزییر اردو (معلوور ۱۸۷۸ء) میں مرقوم ہے کہ ہزارہ گزییر اردو (معلوور ۱۸۷۸ء) میں مرقوم ہے کہ بالاکوٹ کے بعد پی اور مولوی تھے ایک سال کے بعد ایک اور صاحب مولوی تعیر الدین کو لے کرفین ولی تھر تھے ادرا گرور، الی ، تندھیاڑ وفیرہ کے علاقوں ہیں مرہ میں اور سام سواحہ بنیاد ہے۔ اغلب ہے کہ تندھیاڑ سے مواجہ بندھیاڑ سے مواجہ بندھیاڑ سے کہ تندھیاڑ سے مواجہ بندوستان جا سے کہ تندھیا گریں ہیں ہو۔

دعوت وتبليغ

عجابدین کو مختلف بستیوں میں متعین کردینے سے ایک فاکدہ بیہ ہوا کہ دین حق کی دعوت وہلیج کا اچھا انظام ہو گیا۔ عام لوگ اہم دینی مسائل سے ناواقف تھے، عام ملا یا پیر جو کچھ انہیں بتادیتے تھے، ای پر عمل کرتے تھے۔ اگر چہ تمام مجابدین کو علاء کا درجہ عاصل نہ تھا، تاہم وہ ضروری مسائل سے بخوبی آگاہ تھے۔ مولوی بخم الدین شکار پوری کو موضع تمائی میں متعین کیا گیا تھا۔ ان کے بیانات سے معلوم ہوتا ہے کہ وہاں کی ایک مجد مولوی صاحب کے وقت کوئی نہ رہتا تھا۔ اسلئے کہ عام تصور کے مطابق اس میں جن مقیم تھا۔ وہی مہدمولوی صاحب کے قیام کیلئے تجویز ہوئی۔ وہ بے تکلف وہاں رہنے لکے اور اس و جہ سے لوگ ان کے بہت معتقد ہو گئے کہ جن نے انہیں کوئی آزار نہ پہنچایا۔

ایک ملا صاحب فعل کننے کے وقت پکھلی ہے آگر نار وصول کرتے تھے۔ مولوی بھم الدین نے بات چیت کر کے انہیں اس بات پر آمادہ کرلیا کہ پکھلی کو چھوڑ کر آزاد علاقے میں آجا کیں۔ اس لئے کہ پکھلی میں سکھوں کی حکومت تھی اوراس کی حیثیت دار الحرب کی ہوگئ تھی۔ مولوی صاحب کی گفتگوین کر ملا کو خیال ہوا کہ وہ بہت بڑے عالم ہوں گے، مگر یہ معلوم کر کے وہ جیران رہ گیا کہ مولوی ہجم الدین نے کوئی کتاب نہ پڑھی تھی، صرف مولانا عبد الحی اور شاہ اسامیل سے مسائل من کردین کے متعلق الی معلومات عاصل کر لی تھیں جو خاصے پڑھے تھے مولویوں کو بھی نصیب نے تھیں۔ اس معلومات عاصل کر لی تھیں جو خاصے پڑھے تھے مولویوں کو بھی نصیب نے تھیں۔ اس امرسے اندازہ ہوسکتا ہے کہ جماعت بجاہدین کی وینی فضا کی کیا کیفیت تھی۔

تيىراباب:

نندهیاڑ کی سرگزشت

احوال وظروف

کوہانہ میں مجاہدین تقریباً دس مہینے مقیم دہے۔ میر ااندازہ ہے کہ جون ۱۸۳۱ء سے
مارچ ۱۸۳۲ء تک۔ اس مدت میں نہوہ آرز دیے مطابق جہاد کے لئے ابتدائی تدہیریں
اختیار کر سکے اور نہ انہوں نے کوئی نمایاں کارنا مدانجام دیا۔ اس کا سبب بیمعلوم ہوتا ہے
کہ دہاں انہیں مستقل حیثیت حاصل نہ تھی۔ وہ ہراقدام کیلئے صاحبز ادہ محمد نصیر، ان کے
محاسوں اور مقامی روساء وخوانین کی امداد ور ہنمائی کے مختاج تھے۔ بطور خود نے کوئی محاد قائم
کر سکتے تھے، نہ سکھوں کے کسی علاقے پر جملہ ویورش کے بجاز وقتار تھے۔ ہرقدم مقامی
لوگوں کے اتفاق ورضا مندی سے اٹھایا جا سکتا تھا اور انہیں شفق ورضا مند کر لینا صاحبز ادہ
محمد نصیریا اُن کے بھائیوں کی مصلحت اندیشی پر موقوف تھا۔ اگر وہ اپنی خواہش کے مطابق
رزم ویکارکا سلسلہ جاری کردیتے تو شدید اندیشہ تھا کہ مقامی لوگ اُسے تا پہندیدہ قرار
دے کر جگر جاتے اور بجاہدین کیلئے قیام کی بھی کوئی صورت باتی نہ دہتی۔

افسوس کہاس احتیاط اور مقامی صلحتوں کی انتہائی تگہداشت کے باوجود نند معیاڑ کی فضا مجاہدین کے لئے متواتر ناسازگار بنتی گئی، یہاں تک کہ انجام کار آئیس وہاں سے نکل کرنے مامن کا زخ کرنا پڑا۔

پہلااندام

قیام کو ہاند کے زمانہ میں سکموں کے خلاف پہلے اقدام کی کیفیت سے کہ ایک روز

چھرگرام کے چندآ دی معاجزادہ محد بشیرادرصا جزادہ محد نذیر کے پاس دوڑ ہے آئے اور بتایا کہ سکھوں کالشکر درہ کوئش میں پہنچ گیا ہے۔ مجاہدین کی ایک جماعت کو ہمارے ہمراہ بھیج دیجئے تا کہ سکھوں پر واضح ہوجائے، ہم مقابلے کیلئے تیار بیٹے ہیں۔ مولوی محمد قاسم پانی پی امیر جماعت نے دی آ دی ان کے ساتھ کردیے: شیر محمد فال دام پوری، مستقم ،ابراہیم فال، محمد یار فال، شاہین مشوانی، نیک محمد لو ہار، شہباز، امان فال، شخ وزیر مستقم ،ابراہیم فال، محمد یار فال، شاہین مشوانی، نیک محمد لو ہار، شہباز، امان فال، شخ وزیر مستقم اور مجم الدین شکار پوری۔ انکے بھینے کا مقصد یہ قعا کہ حالات کا پورااندازہ ہوجائے، اس کے بعد مناسب اقدام کی تد ہیرا فقیار کرلی جائے۔

مجاہدین کی بیچھوٹی کی جماعت چھرگرام پنجی تو اردگرد تہلکہ بیا ہوگیا کہ جاہدین کا حملہ ہونے والا ہے۔ مجاہدین نے باہم فیصلہ کردکھا تھا کہ سکھوں سے مقابلے کی نوبت آئے تو بندوقوں کی باڑ مارتے ہی آس پاس کے پہاڑوں پرچڑھ جا کیں گے۔ پھر مناسب کمین گاہوں میں بیٹھ کرائن پرگولیاں چلاتے رہیں گے۔ دس آ دمیوں کی مختصری مناسب کمین گاہوں میں بیٹھ کرائن پرگولیاں چلاتے رہیں گے۔ دس آ دمیوں کی مختصری جماعت کیلئے اسکے سوالڑ ائی کی کوئی صورت نہتی ، لیکن مجاہدین کی آ مدے آ واز بے نے سکھوں پرایسی ہیب طاری کردی کہوہ درہ کوئش سے باہرنکل گئے اور جاہدین کو ہانہ والیس کے اور جاہدین کو ہانہ والیس کے اور جاہدین کو ہانہ والیس

يفه يرشبخون

بقد میدان پکھلی کے ٹالی جھے میں تخصیل مانسمرہ کامشہور مقام ہے، جوسران ندی کے دائیں کنارے واقع ہے۔ اسے پہلے بھی اہم حیثیت حاصل بھی۔ صاجزادہ محمد بشیراور صاجزادہ محمد بشیراور صاجزادہ محمد نصیر نے مقامی لوگوں سے مشورے کے بعد بفد پرشبخون کا فیصلہ کیا، جس پر غالبًا مجمرا ۱۸۳ء میں عمل ہوا۔ (۱)

⁽۱) روایت کے الفاظ میں "اخیر موسم برسات کا تھا" ظاہر ہے کہ بیم تبرق کا ممیند موسکتا ہے۔

صاجزادہ محدنصیر کے فرزند محمد حسن نے گرد دنواح کی بستیوں میں پھر کردوسو کے قریب مقامی آ دمی جمع کیے۔ بچاس ساٹھ مجاہدین ساتھ لے لئے ، انہیں شبخون کی تجویز کے متعلق کچھ معلوم ندتھا محمد حسن انہیں لے کر گڑھی سائی خاں ہوتا ہواسعادت خاں کے بھانڈے پہنچا۔ وہاں پہنچنے کے بعد شبخون کی تجویز بتائی اوراس کے متعلق تفصیلی مشورہ کیا۔ بھانڈے ہےروانہ ہوئے تو ایک بستی میں تھہرے۔ پھرایک پہاڑ ہر جا بیٹھے،آس پاس ہے جو محض بغہ کی طرف جاتا ہوا ماتا ، اُسے پکڑ کراینے پاس بٹھالیتے تا کہ شخون کے متعلق کوئی اطلاع قصبے میں نہ پہنچ سکے۔ ہزارہ کے ایک مخص کرم خاں کو دریا فت والات کی غرض ہے آ گے بھیج دیا۔اس کے بیچھے خود روانہ ہوئے۔بفد کے قریب بہنچے تو کرم خال نے بتایا کہ تھیے کے تمام لوگ بالکل مطمئن بیٹے ہیں اور کسی کو حملے کا خیال تک نہیں ۔ محمد نے تمام ساتھیوں کو تین گروہوں میں تقسیم کیا۔ ایک گروہ کو راہِ مراجعت کی حفاظت کیلئے متعین کردیا، دوسرے گروہ کے ذمہ بیکام لگایا کہ جہال لڑائی کی نوبت آئے ، اڑے۔ تیسرے گروہ کورو ہیاور مال واسباب اٹھانے کا کام سونیا۔ اڑنا مجاہدین کے ذمہ تھا۔ انہوں نے قصبے میں جنیجے ہی گلی کو چوں کی حفاظت کا بندوبست کرلیا۔ تھوڑی دریس مقامی لوگ بہت سامال واسباب اٹھا کر قصبے سے باہر نکل آئے۔تقریباً بچاس آ دمیوں کوبھی گرفتار کرلائے۔اس اثناء میں بیر کنڈ کی چھاؤنی ہے سکھوں کا جیش آ پہنچا، لرُ الَى مهونَى ،ليكن بحامِدين كا كوئى نقصان نه موا-نمازِ فجرتك تمام لوگ صحح سلامت اس يهارْ ر پرینچ گئے، جہاں ہے شبخون کے لئے روانہ ہوئے تھے۔

نتيجه

مقامی لوگوں نے جونقذ روپیریا مال واسباب اٹھایا تھا، اے اپنے اپنے گھر کے گئے۔ چندروز کے بعد بفد کے مہاجن،صاحبز ادہ محد نصیر کے پاس آئے اور پھٹواڑہ پہنچ کر

جوکو ہانہ سے اڑھائی عین کوئ ہے، اسیروں کی رہائی کیلئے بات چیت کی۔ بارہ یا تیرہ برار روپے پر فیصلہ ہوا۔ صاحبز اوے نے بیرقم اپنے آدمیوں پر اور مجاہدین بین تقسیم کردی۔ قیام نندھیاڑ کا بیآ خری واقعہ ہے۔ اس کے بعد ذخیرہ کروایات میں اور کی اقدام کا ذکر نہیں ملتا۔ سردیوں کے موسم میں پہاڑی علاقے کے اندر نقل وحرکت و یسے ہی وشوار ہوجاتی ہے۔ اغلب ہے کہ بیوفت کی پیش قدمی کے بغیر ہی گذرا ہو۔

مجامدین کےخلاف ساز باز

صاجزادہ محد نصیر نے اپنے اثر درسوخ ہے کام کیکر بستیوں میں عشر جاری کردیا تھا کہ عجابہ بن کا گزارہ ہوتا رہے، کیکن میراخیال ہے کہ اہل سمّہ کی طرح عشر اہل نندھیاڑ کے لئے بھی ایک نا قابل برداشت بوجھ بن گیا، حالا نکہ انہوں نے ست بہار میں ببطیب خاطر یہ ذ مہداری قبول کی تھی۔اغلب ہے، انہوں نے آ ہستہ آ ہستہ صاجزادہ محر نصیر سے مہان شروع کردیا ہوکہ اس بوجھ ہے، میں نجات دلائی جائے۔صاجزادہ کیلئے صاف بور داشت طریق عمل یہ تھا کہ وہ مجابہ بن کوصورت حال سے آگاہ کر کے خوثی خوثی رخصت کردیا۔اس کیلئے وہ تیار نہوا۔ شایدا سے خیال ہوکہ مجابہ بن کی جماعت خاصی بڑی ہو اور وہ لوگ جا باز ہیں، مبادا ناراض ہوجا کیں اور کشکش کی نوبت آجائے۔ بہر حال اہل ندھیاڑ ہیں ہے اظمینانی کی بیٹھ جوئی اندر بی اندر بی رہی۔مجابہ بن تفصیلا سے آگاہ ندھیاڑ ایس نے اظمینانی کی بیٹھ جوئی اندر بی اندر بیتی رہی۔مجابہ بن تفصیلا سے آگاہ نہ سے ایکن انہوں نے احتیا طا اپنے چند آدی صاحبزادہ کے ساتھ معین کردیے ہے تا کہ اہل ندھیاڑ اور صاحبز دہ کے باہم مشوروں سے بے خبر ندر ہیں۔

صاحبزادہ محدنصیر بستیوں میں دورے کیلئے نکلا اور چھپر گرام میں پہنچا تو وہاں مختلف مقامی لوگوں نے جمع ہوکر اس سے کہا کہ مجاہدین سے ہتھیار لے لئے جائیں اور انہیں رخصت کردیا جائے ، یا پھران سے اہل سمّہ کا ساسلوک کیا جائے۔ یعنی میرکہ جہاں جہاں

وہ بیٹھے ہیں، بہ یک وقت اچا کے جملہ کرے انہیں ختم کردیا جائے۔

افثائے راز

خدا بخش دام پوری چھرگرام میں مقیم تھے، وہاں کے چار بڑے خوانین میں سے شاہرادہ خال، خدا بخش کاعزیز دوست تھا۔سب سے پہلے اس نے سازش کی کیفیت خدا بخش بریوں آشکارا کی۔

میں نے اورتم نے ساتھ کھانا کھایا ہے، تم میرے دوست ہو۔ میں نہیں جا ہتا کہ میرے جانتے ہوئے تم کوایڈ اپنچے۔ بات یہ ہے کہ تم اپنے بھائی اللی بخش کو لے کرکسی طرف چلے جاؤ، یہاں رات کوستی کے ملکوں نے جرگہ کیا ہے اور صاحبز ادے سے کہا ہے کہ ہم لوگ تبہارے ساتھ ہو کر سکھوں سے جہاد کریں گے۔ مگر کسی طور اِن ہندوستانیوں کو ہتھیار لے کر رخصت کر واور جو اِن کا مقابلہ کرنے کا خوف ہوتو جا بجا اس ملک کے دروں پر آ دمی دوڑ اور کہ رائے روک لیس ،کوئی نکلنے نہ یائے۔ ستہ والوں کا سامعا ملہ ان سے کرو۔ (۱)

صاحبزاد ہے گفتگو

خدا بخش کیلئے یہ کیونگر ممکن تھا کہ جماعت کو معرض ہلاکت میں چھوڑ کراپے آپ کو
اور پنے بھائی کو بچا کرنگل جاتا؟ اس نے غور وفکر کے بعد خود صاحبز ادے ہے زودر رُو
مفتگومنا سب بھی اور اپنا ما پہلے ایک مثال کی صورت میں چیش کرتے ہوئے کہا:
ایک شخص پادشاہ عالی جاہ کا مصاحب ہے۔ اس نے واسطے خوشنود ک
بادشاہ کے ایک باغ لگایا اور اس میں درخت ہر طرح کے میوؤں اور پھلوں کے
عمدہ ہمرایک شہراور بستی سے لاکر لگائے کہ اس کے میوؤں اور پھلوں ک عمدہ ہمراور بستی سے لاکر لگائے کہ اس کے میوؤں اور پھلوں ک بادشاہ کی نذر کرے۔ سواس باغ کی تازگی اور بہار دکھے کرچند مفسد حاسدوں کو

^{(1) &}quot;وقائع" جلدسوم من: ١٦٨-١٦٩

رشک اور حسد آیا، یہاں تک کہ باغ کاٹ کر تباہ کردیا اور الزام رسوائی دارین کا لیا۔(۱)

اس مثال کی تشریح کرتے ہوئے کہا کہ حضرت امیر المونین ہرشہرادربستی سے مجاہدین کالشکر جمع کرکے ضداکی رضا کیلئے جہاد کی غرض سے آئے تنے۔اہل سمہ نے آئییں المام بنایا، پھرنفس کی شامت اور شیطان کے اغوا سے ایسا کام کیا کدان کے دامن سے بدنامی کا داغ قیامت تک نہ مٹےگا۔

صاف گوئی

پھر کہا کہ جنگ بالا کوٹ کے بعد مجاہدین آئے پاس آئے۔آپ ان کی خدمت گزاری سے نیک نامی حاصل کی۔اب مفسد اور حاسدا سے برداشت نہ کرسکے اور بظاہر آپ کے دوست بن کر بدخواہی کے دربے ہوگئے۔ بستی والوں نے رات آپ سے جو مشورہ کیا ہے میں اس کا حال بن چکا ہوں۔

یہ سنتے ہی صاحبزاد ہے پر گھبراہ نے طاری ہوگئ۔ آبدیدہ ہوکر بولا کہ مشورہ ضرور ہوالیکن مجھے بتاؤ کہ میں کیا تدبیرا ختیار کروں؟ خدابخش نے جواب دیا کہ مولوی محمد قاہم پانی پتی اور مولوی خبر الدین شیر کوئی (۲) کوکو ہانہ سے بلایے اور مجاہدین کوخوشی خوشی رخصت کرد ہجئے ، آپ الزام سے فی جا کیں گے اور ہم لوگ اس ملک سے سلامت نکل جا کیں گے۔صاحبزادے نے اس سے اتفاق کیا۔

محمدقاسم اورخيرالدين كوبيغام

خدا بخش نے معااینے ایک ساتھی کو پورے حالات بتا کرمولوی محمد قاسم پانی ہی اور

^{(1) &#}x27;'وقالُع'' جلدسوم ص:۳۴۱

⁽٢) اس دواضح بوتا ب كة تدرست بونے كے بعد مولوى خبر الدين بھى ست بهار كو باند بنج ك تھے۔

مولوی خیر الدین شیرکوئی کے پاس کوہانہ بھیج دیا۔ انھوں نے حسن تدبیر سے کام لیتے ہوئے صاحبزادے کے بھائیوں اور بیٹے کوبلاکر کہا کہ کل ہم سب کوائ وقت چھپر گرام بلایا ہے، شاید سکھوں پر چھاپہ مارنے کاارادہ ہے۔ چنانچہ وہ سب تیار ہوگئے۔ چھپر گرام سے باہرا کیک چشے پر صاحبزادہ محمد نصیر سے بات چیت ہوئی۔ مولوی خیر الدین نے صاف صاف کہ دویا کہ صاحب ایم بہلے آپ صرف پیر تھے۔ بیلوگ آپ کی صاف قیافت کر کے یامر غامر غی نذرد ہے کر پیچھا چھڑا لیتے تھے۔ اب ہماری وجہ سے آپ ان کے حاکم بن گئے ہیں اور ان پر عشر مقرر کیا ہے۔ بیلوگ حیلہ سازی سے آپ کی حکومت ختم کرنا چاہتے ہیں۔ یادر کھے ہمارے جانے کے بعد بیر آپ کوچھوڑ دیں گے اور عجب نہیں کرنا چاہتے ہیں۔ یادر کھے ہمارے جانے کے بعد بیر آپ کوچھوڑ دیں گے اور عجب نہیں کرنا چاہتے ہیں۔ یادر کھے ہمارے جانے کے بعد بیر آپ کوچھوڑ دیں گے اور عجب نہیں کہ بیتی سے بھی نکال دیں۔

صاحبزاد ہے کااعتراف

صاحبزادے نے پھرآبدیدہ ہوکراعتراف کیا کہ یہ سب بچے ہے، میری نیت یکھی کہ:

سید بادشاہ کے زمانے میں بچھ سے پچھائی رفاقت اور خدمت نہ ہوتکی۔

اس بات سے میں اپنے ول میں بہت نادم ہوا۔ جب آپ لوگ بالا کوٹ سے

یہال تشریف لائے تو میں نے جا ہا کہ آپ کواپنے پاس رکھوں اور کا فروں سے
جہاد کروں، شایدای کام سے اللہ تعالی میری عاقبت بہ خیر کر ہے۔ سوحقیقت
میں یہاں کے مفدول نے ججھے دھوکا دیا، اب وہ کسی طور پر میر سے قابو میں

میں یہاں کے مفدول نے ججھے دھوکا دیا، اب وہ کسی طور پر میر سے قابو میں

میں یہاں ہے جوانیوں سمجھا بجھا کر راہ راست پر لاؤں۔ آپ کورخصت کرنے پر

دل راضی نہیں ہوتا، مگر ناچا راور بے بس ہوں۔ خیر میں نے آپکورخصت کیا اور

خدا کوسونیا، جہاں رہو، میرے دوست ہواور میں آپ کا خیرخواہ ہوں۔ (۱)

^{(1) &}quot; وقا لُع " جلد سوم ص: ٣٢٨

نندھیاڑےےروانگی

یوں دس مہینے کے بعد مجاہدین کو تندھیاڑ سے رخصت ہونا پڑا۔ شخ ولی محمداس سے پیشتر پنجارتشریف لے گئے تھے، جسکے حالات آئندہ بیان ہوں گے۔ کو ہانہ کے مجاہدین نے بھی پنجارہی کارخ کرلیا۔ وہ کو ہانہ سے بھٹ گرام پنچے، جہاں ناصرخان نے دونوں وقت پر تکلف کھانا کھلایا، دوروز دیشیوں کے علاقے میں رہے، پھر چار پانچ مقام بھکول میں کئے۔ مجاہدین کی روائلی کے بعد صاحبزادہ محمدنصیر کو حددرجہ افسوس ہوا اور اس نے انہیں روکنے کی غرض سے بھکول کے گھاٹ سے جالے بھی ست بہار منگوا لئے تھے۔ مولوی انہیں روکنے کی غرض سے بھکول کے گھاٹ سے جالے بھی ست بہار منگوا لئے تھے۔ مولوی خیرالدین شیرکوئی نے دوبارہ صاحبز دے سے لیکراسے مجاہدین کے چلے جانے پر راضی کراہے ہا جہ یہ جہاں فتح خاس پنجوردریا کے بعد سنڈ اکئی پنچے۔ ایک اور بستی میں کھر تے ہوئے کا بل گرام گئے، جہاں فتح خاس پنجاری کا بھائی احمد خاں پیشوائی کیلئے تھر ا

مولوی محمد قاسم پانی پی اور مولوی خیر الدین شیر کوئی بھٹکول ہی میں رہے۔ انہوں نے مولوی محمد قاسم کا عذریہ تھا کہ پنجتار سے سیدصا حب ہجرت کر کے آئے تھے، میں وہاں نہ جاؤں گا، نیز سیدصا حب کے زندہ ہونے کی خبر یں انہیں تلاش کروں گا۔ مولوی خیر الدین صرف سید صاحب کی خبر یں ال رہی ہیں، میں انہیں تلاش کروں گا۔ مولوی خیر الدین صرف سید صاحب کی تلاش کے فواہاں تھے۔ ضلع مظفر آباد کے تین نومسلم بھائی عبد اللہ عبد الکریم اور عبد الرحیم مولوی صاحب موصوف کے ساتھ رہے۔ جیسا کہ جماعت مجاہدین میں بتایا جاچکا ہے کہ مولوی خیر الدین بعد از ال سرحد سے وطن علے آئے تھے۔

چوتھاباب:

يثنخ ولىمحمه كاسفر سوات وبونير

بيش نظر مقصد

ہم بتا ہے ہیں کہ شخ ول محمر مجاہرین کی بڑی جماعت کو کو ہانہ بھیجنے کے بعد خود اس غرض سے ست بہار مفہر گئے تھے کہ لی لی صاحبہ کوسندھ پہنچانے کیلئے کوئی مناسب تدبیر اختیار کرسکیں۔ صاحبزادہ محمد نصیر انظام عشر کیلئے کوہانہ جانے لگے توشیخ نے ان ہے اجازت لے لی تھی کہ ہم لوگ تختہ بند (بونیر) سیدمیاں کے پاس جانا جا ہے ہیں،اسلئے کہ انہیں کے ذریعہ سے بی بی صاحبہ کوسندھ پہنچانے کا بندوبست کرایا جاسکتا ہے۔ صاحبزادے کو گئے ہوئے ایک مہینہ گذرا توشیخ ولی محمد ادر مولوی نصیر الدین نے باہم مشورہ کر کے اخوند محمد ارم کو بھٹکول سے بلایا اور کہا کہ تختہ بند پہنچنے کی کوئی مناسب تدبیر کرد پیجئے۔اخوندموصوف کی رائے پہلے ہی ہے بیقی کہصا جبز ادہ محدنصیراور بچاہدین میں موافقت زیادہ دریک قائم نہیں روسکتی، لبذالی بی صاحبہ کو یہاں سے نکال لے جانا ہی مناسب تھا، چنانچہاخوند نے سنڈ اکی میں اپنی برادری کے لوگوں سے مشورہ کر کے ایک یروگرام بنالیا۔ براہِ راست تختہ بند جانے میں اندیشہ تھا کہ مختلف مقامات بررکاوٹوں سے سابقہ پڑے، لہذا قرار پایا کہ کوہتانی علاقے ہے سوات پہنچیں اور وہاں سے بلی کر بونیر آئیں۔ بیراستہ یقینا بے حدلمبا اور دشوار گزار تھا،لیکن اسے اختیار کئے بغیر محفوظ طريق يرتخته بند پنجناممكن نهقابه

مشقت خيزسفر

روائی کا فیصلہ ہوگیا تو شخ ولی محد نے کو ہانہ میں مولوی محد قاسم پانی پی کو بھیجا کہ ہم بی بی بی صاحبہ کے ساتھ تختہ بند جارہ ہیں۔ وہاں پہنچ کر جو پھیکھیں اسکے مطابق عمل پیرا ہوتا۔ چنانچ شخ صاحب ست بہارہ بھیکول پنچ ، وہاں سے عبور دریا کے بعد جاریا پہنچ ، مہاں سے عبور دریا کے بعد جاریا پہنچ مقام سنڈ اکئی میں کیے۔ اخوند محمد ارم اور ان کی برادری ہی کے لوگوں نے سوات اطلاع بھیج دی تھی ، وہاں سے تین آ دی پیشوائی کے لئے سنڈ اکئی آگئے۔ ان میں سے خاص طور پر قابل ذکر خوند کا صاحبز اوہ تھا، جوسوات بالا میں ورفخیلہ کے قریب ایک مشہور مقام ہے۔ سنڈ اکئی سے بڑے بڑے ہی ہی صاحبز اوہ تھا، جوسوات بالا میں ورفخیلہ کے قریب ایک مشہور مقام خونہ پہنچ ، صاحبز اور کے بی بی صاحبہ اور تمام مجاہدین کو اپنے پاس تھہرایا اور اردگر دی بستیوں سے عشر کا غلد لانے کا بند و بست کر دیا۔

تخته بنداور ناوا گئی میں پیغام

خونہ میں پنچ ہوئے ایک مہینہ گذرگیا توشخ ولی محمد اور مولوی نصیر الدین نے باہم مشورہ کر کے مندرجہ ذیل اصحاب کوسید میاں کے پاس تختہ بند بھیجا: حاجی محمد فاضل پیاوری، ابراہیم خال خیر آبادی، محمد حسین سہار نبوری، دار وغه عبد القیوم اور اخوند محمد عظیم (ساکن کا لوخاں)، تا کہ سید موصوف سے بات چیت کر کے بی بی صاحبہ کوسندھ پہنچانے کا راستہ تجو مزکر الیں۔

بدلوگ تختہ بند پنچ تو سید میاں نے بالا کوٹ کی جنگ کے پورے حالات سنے، پھر انہیں اپنے چپرے بھائی سیدرسول کے پاس ناوا گئی (پھلد) بھیج دیا تا کہ ان کی رائے مجمی لے لی جائے ۔سیدصاحب پنجتارے بھرت کر کے راج دواری گئے تھے تو اپنی بہت سی فالتو چیزیں ناوا گئی ہیں سیدرسول کے پاس چھوڑ گئے تھے۔مثلاً مسی ظروف، دوقیتی زر ہیں، تین خیمے، دوقالین وغیرہ، شیخ ولی محمہ نے آ دمیوں سے کہددیا تھا کہ اس سا مان کی فروخت کا بند دبست ہو سکے تو فروخت کردینا۔ سیدرسول نے بھی بالا کوٹ کی جنگ کی تفصیلات یوچھیں۔

شیخ و لی محمر کو بلانے کا فیصلہ

پہلے قاصد تین مہینے تک واپس نہ ہوئے تو شخ ولی محمہ نے اخوند فیض محمہ غرزوی کو بھیجا۔ اس اثناء میں سید میال نے بوئیر کے خوا نین اور سیدر سول نے جملہ کے خوا نین کا جرگہ کیا معلوم ہوتا ہے کہ اس زیانے میں فتح خال پنجتاری بھی سید میاں اور سیدر سول کے پاس بار بار پیغام بھیجتار ہا کہ شخ ولی محمہ اور ان کے ساتھیوں کو میرے پاس لے آئے، میں سید صاحب کا پر انا نیاز مند ہوں ، ان بھائیوں کی خدمت میں کوتا ہی نہ کروں گا۔ چنا نچہ جرگوں اور طویل مشورہ کے بعد پور ااطمینان کر کے سید میاں اور سیدر سول نے فیصلہ کیا کہ بی میں صاحب، شخ ولی محمد اور مجاہدین کوخونہ سے اپنے پاس لے آئیں ، پھر ان سے بات بی بی صاحب، شخ ولی محمد اور مجاہدین کوخونہ سے اپنے پاس لے آئیں ، پھر ان سے بات بی بی صاحب ، شخ ولی محمد اور مجاہدین کوخونہ سے اپنے پاس لے آئیں ، پھر ان سے بات چیت کر کے جو پچھ تر اربیا نے ، اس کے مطابق عمل کریں۔

خونه سے تختہ بند

اس فیصلے کے بعد تختہ بند ہے سید میاں اور ناواگئی ہے سید رسول کے بھائی سید
حسین شخ ولی محمہ کے قاصدوں کے ہمراہ خونہ گئے تا کہ بجابدین کو ساتھ لے آئیں۔ پچھ
معلوم نہیں کہ دہاں کیا بات چیت ہوئی، روا تنوں میں صرف یہ بتایا گیا ہے کہ شخ صاحب
خونہ سے روائگی کے لئے تیار ہوگئے۔ جس صاحبزاد ہے کے ہاں تھبرے ہوئے تھے، اس
نے روائگی کے وقت پر تکلف دعوت کی۔ وہاں سے چلے تو چار باغ میں مقام کیا۔ سوات
میں سید صاحب کے ایک مخلص عقیدت مند سید عبد القیوم تھے، وہ مجابدین کے ساتھ
دے ۔ وروز منگورہ میں تیام کیا۔ ایک ایک

ون بری کوٹ، جوڑ اورایلئ میں طہرے۔ ہرمقام کے لوگوں نے مہانداری میں کوئی کسر اٹھاندر کھی۔ تختہ بند پنچے تو سیدصا حب نے بی بی صاحبہ کے لئے الگ مکان خالی کرادیا، باقی مجاہدین کے قیام کا بھی بہت عمدہ بندوبست کردیا۔

تخته بنداورناواگئی

تختہ بند میں سیدوں کے چارگھرتھے۔ایک سیدمیاں کا، دوسراسیداعظم کا، تیسراسید قاسم کا اور چوتھا سیدسلیمان کا۔ان چاروں نے ایک ایک دن مجاہدین کی دعوت کی۔ پھر باہم مشورے سے قرار پایا کہ نی بی صاحبہ تختہ بند میں ظہریں اور باقی مجاہدین کوشنخ ولی محمد کے ہمراہ ناوا گئی بھیج ویا جائے۔مندرجہ ذیل اصحاب نی بی صاحبہ کی خدمت کے لئے مقرر کردیے گئے:

سیدها دعلی جهه نبجهانوی ،اخوندفیض محمرغز نوی ،حفیظ الله دیوبندی ،ابرائیم خال خیرآ بادی ،الله بخش خیاط کصنوی ، پین محلاب ساکن میان دوآب ، پین که کمه میر اور دارد غه عبدالقیوم -

سید میاں اپنے دل میں طے کر بھکے تھے کہ شیخ ولی محمد مجاہدین کے ہمراہ پنجتار چلے جائیں _ تفصیلات آگے آئیں گی ، لیکن جماعت میں سے سی کواس بارے میں کوئی علم نہ تھا، بدراز نادا گئی چنچنے پرمنکشف ہوا۔

فنخ خال پنجتاری

فتح خال ان خوانین میں ہے تھا، جنہوں نے سیدصاحب کے ورودِ سرحد کے ساتھ ہیں آپ سے رشتہ عقیدت استوار کیا تھا۔ اس کا وطن پنجنار کم وہیش جارسال سیدصاحب کا مرکز رہا، اس اثناء میں اس ہے کوئی الی حرکت سرز دند ہوئی جو جہاد فی سبیل اللہ میں اعانت کے منفی ہوتی، البتہ جب پشاوری سرداروں اورخوانین سمتہ نے سیدصاحب اور

مجاہدین کے خلاف کشت وخون کی خوفناک سازش کی تو فتح خاں کی حیثیت مشتبہ ہوگئ۔ وہ بظاہر سید صاحب سے عقیدت کا اظہار کر رہا تھا، لیکن صاف معلوم ہوتا تھا کہ سازشی خوا نین سے بھی اس کا دوستان تعلق قائم ہے۔ اسکی یہی دورنگی پنجتار سے بجرت کی فیصلہ کن محرک تھی ، تا ہم سیدصاحب نے روانگی کے وقت اس کی برادری کے لوگوں کو یہ تلقین فر مائی تھی کہ فتح خاں کے دیا۔ تھی کہ فتح خاں کو دیا۔

بحالئ اقتذار كى كوشش

اس صورت ِ حال پر وہ طبعاً پشیان ہوا اور بحائی اقد ارکی تدبیریں سوچنے لگا۔ جب اسے اطلاع ملی کہ شخ ولی محمد مجاہدین کی ایک جماعت کے سماتھ سوات پہنچ گئے ہیں، اور سید میال ساکن تختہ بند کے ساتھ نامہ و پیام جاری ہے تو اس نے بھی سید رسول ساکن ناوا کی اور سید میال کے پاس پیغام بھیج کہ ہیں بھی سید بادشاہ کا مرید اور خلیفہ ہوں، ایسی تدبیر سیح کہ ہیں بھی سید بادشاہ کا مرید اور خلیفہ ہوں، ایسی تدبیر سیح کہ شن میں انکے کھانے پہننے کی ذمہ داری تجھے کہ شن میں انکے کھانے پہننے کی ذمہ داری قبول کرتا ہوں، تمام مجاہدین کی خدمت کرتا رہوں گا اور ان کے ساتھ ہوکر سکھوں سے جباد کروں گا۔

سے پیغامات بار بارآئے تو سیدمیاں نے بو نیر کے خوانین اور سیدر سول نے چملہ کے خوانین کا اجتماع منعقد کیا، تمام حالات انہیں بتائے ، ساتھ ہی کہا کہ اگر مجاہدین کو پنجتار بھیجے دیا جائے اور فتح خال کی موقع پر ان سے دغا کر ہے تو ہماری بدنا می ہوگ ۔ دنیا کہے گ کہان سیدوں نے مجاہدین کوخونہ سے بلا کر فریب کیا۔ آپ لوگ بتا کیں کہ آپ اس کا م میں ہمارے ساتھ تعاون کیلئے تیار ہیں کنہیں؟ انہوں نے غور وفکر کے بعد جواب دیا کہ ہم بہر حال آپ کے ساتھ ہیں۔ آپ مجاہدین کو بھیج دیجئے ، فتح خال کی مجال نہیں کہ آپ کو فتح میں ڈال کر بدع ہدی کرے۔ اگر خدانخو استداس نے کوئی نا مناسب حرکت کی تو ہم سمجھ لیں گے۔اس دلجمعی کے بعد سید میاں مجاہدین کوخونہ سے تختہ بند لائے اور انہیں ناوا گئ بھیج دیا جہاں سیدرسول نے پہلی مرتبہ انہیں بتایا کہ آپ حضرات کو پنجتار بھیجنا منظور ۔۔۔

شیخ کاتاً مل اورآ خری فیصله

شیخ ولی محر پرید حقیقت منکشف ہوئی تو انہوں نے پنجار جانے سے انکار کردیا اور فرہایا کہ فتح خان دنیا دار آ دمی ہے، اس کے پاس ہمارا گذارہ نہ ہوگا۔ اندیشہ ہے کہ دہ ہم سے دعا کر ہے۔ اس وقت سیدرسول نے خوا نین چملہ دبو نیر کے جرگوں کی مفصل کیفیت ہتادی اور کہا کہ ہم آپ کو ان خوا نین کے اتفاق سے پنجاز ہی رہے ہیں۔ فتح خاں میں یہ جرات نہیں کہ چملہ دبو نیر کے خوا نین کی منفقہ رائے کے خلاف کوئی قدم اٹھائے۔ اس اثناء میں ہم پوری کوشش کریں گے کہ بی بی صاحبہ کوسندھ پہنچانے کی کوئی صورت پیدا اثناء میں ہم پوری کوشش کریں گے کہ بی بی صاحبہ کوسندھ پہنچانے کی کوئی صورت پیدا اثناء میں وہ طاہر ہوجا کیں۔ اگر پنجار کا قیام آپ کی رائے اور مرضی کے مطابق نہ ہوگا تو ایس علے آنا، ہم آپ کوہی سندھ پہنچادیں گے۔

تمام مالات س كرفيخ ولى محدفي بيمشوره قبول كرايا-

ناوا گئی ہے پنجنار

شخ صاحب اور مجاہدین کو ناواگئ پنچے ہوئے چے سات روز گذرے تھے کہ فتح خال کی طرف سے تین معتبر آ دمی مجاہدین کوساتھ لے جانے کیلئے ناواگئی آ گئے۔ان میں سے ایک تو تالی کا خان تھا، جس کا نام روایتوں میں سرکا رئی بتایا گیا ہے۔وہ فتح خال کا خاص مصاحب اور رفیق تھا، دوسرا قاسم خیل کا قاضی تھا، تیسرا کوئی اور عالم۔

ناوا گئی سے بنجنار کاسید حااور قریبی راستہ چندلئی (چنگلئی) میں سے تھا، وہاں کے لوگ فنخ خال کے دیمن تھے۔ انہوں نے شخ ولی محمد کے پاس پیغام بھیج دیا کہ اگر چندلنی

مل قیام منظور ہے تو بے تکلف تشریف لا سے ،ہم سب خادم اور فرما نبرادر ہیں ،کین اگر فتح خال کے پاس پنجتار جانام تصود ہے تو چندلئی ہرگز ندآ سے اور کوئی دوسرارات اختیار سیجئے۔اس و جہسے لمبااور پر بیجی راستہ اختیار کرنا پڑا۔

سیدرسول نے اپنے تھوٹے بھائی سیداعظم کو جماعت بجاہدین کے ہمراہ کردیاوہ ناوا گئی سے روانہ ہو کر مخٹرنئ (۱) میں تھہرے، جہاں سید رسول کی سسرال تھی۔ سید موصوف کے ضرنواب خال نے نصف بجاہدین کی دعوت کی باتی لوگوں کوہتی والوں نے کھانا کھلایا۔ اگلے روز منگل تھانہ پنچ جوسید میاں کے بھائی بندوں کی بستی تھی۔ شاہ رنداں وہاں کا رئیس تھا۔ کابل اخوند زادے کا گھر بھی وہیں تھا۔ تیسرے دن دکھاڑہ ہوتے ہوئے ہوئے ماحب نے محدرت کی، پنجار کا رخ کیا۔ اہل دکھاڑہ نے بہ اصرار روکنا چاہا، شیخ صاحب نے معذرت کی، پنجار سے ایک کوس کے فاصلے پر فتح خال پیشوائی کیلئے موجود تھا۔

یوں تقریباً ایک سال (۲) کے بعد مجاہدین پھر پنجتار میں وار دہوئے ،جسکی سرز مین کا چپہ چپہ چپارسال تک ان کی مجاہدان سرگر میوں کا مرکز رہا تھا۔ لیکن اب ان کی حالت وہ نہتی ، جس میں وہ پنجتار سے رخصت ہوئے تھے۔ سیدصا حب، مولا نا شاہ اساعیل اور دوسرے ، بہت سے اکا برراوحق میں شہادت یا بیکے تھے۔ اگر چدان کے بلند مقاصد اور ان کی خاطر پہلی کی فدا کاری میں کوئی فرق نہ آیا تھا، تا ہم ان کی سابقہ شان باقی نہ رہی تھی۔

⁽۱) بیرخدد خیلوں کا گاؤں ہے، جو فتح خال کے ہم توم تھے۔ رواجوں میں اسے مکبر نی لکھا ممیا ہے۔ مجھ تلفظ خفر نگ ۔۔۔

⁽۲) سیرصاحب نے وسطِ رجب ۱۳۳۱ ه یم پنجارے جمرت کی تھی۔ ۲۳۰ روی قعدہ کو بالاکوٹ کی لا ائی ہوئی۔ عید الائل سیرصاحب نے وسطِ رجب ۱۳۳۱ ه یک مہینہ ست الائل تک مجاہر ین ست بہار کا تھی ہے ہے۔ آخ ولی محمد نے ہونے ود مہینے وہاں بسر کئے، کو یا محرم ۱۳۳۷ ه یکا مہینہ ست بہاری میں گزارا۔ نی بی صاحب کے ساتھ روانہ ہوکر تقریباً پندرہ دن میں (بہنمول قیام وسنر) خونہ پہنچہ آ یک مہینے کے بعد قاصد تھے بند بھیجے ، تین مہینے مشوروں میں گذر گئے، بھر کے وقت خونہ سے تختہ بندونا والکی اور پنجار وین پنے میں لگا ، لبندا میں اندازہ ہے کہ جمادی الاخری یا رجب میں وہ بنجار بہنچے ہوں کے۔ یوں ایک سال کی مدت بن گئی۔

قيام كاانتظام

یادہوگا کہ سیدصاحب نے پنجتار میں مجاہدین کیلئے مکان ہنوا کرایک مستقل آبادی کا انتظام کرلیا تھا۔ فتح خال نے وہ تمام مکان مجاہدین کے حوالے کر دیے اور شخ ولی محمد امیر جماعت کو اس برج میں تفہر ایا ، جس میں سیدصاحب رہتے تھے۔ دوروز تک فتح خال کے بہاں سے کھانا آتار ہا، چھر غلے کا وہ ذخیرہ ان کیلئے کھول دیا گیا جوسیدصاحب کے زمانے سے محفوظ چلا آتا تھا اور معمول کے مطابق غلقتیم ہونے لگا۔

مولوی محمہ قاسم اور مولوی خیر الدین شیر کوئی مجاہدین کی ہڑی جماعت کے ساتھ کو ہانہ ہی میں مقیم سے ۔شخ و کی محمہ نے بنجار پہنچتے ہی آ دی بھیج ویئے کہ سرکاری اون بنجتار کے بارہ سے کہ ندھیاڑ میں سردی زیادہ تھی جو اونٹوں کیلئے سازگار نہتی ۔ بنگ زیدہ کے بعد اونٹوں کی تعداداش کے قریب بہنچ گئی تھی ، پھر مرتے مرتے دی بارہ رہ گئے ۔مولوی محمہ قاسم اور مولوی خیرالدین نے اونٹوں کے ساتھ احمہ یار فال ، کریم اللہ فال ،عبد الحمید فال ،نورسندھی ،اخوند خیرالدین ، حاجی عبد اللہ گور کھپوری اور حاجی یوسف فال ،عبد الحمید فال ،نورسندھی ،اخوند خیرالدین ، حاجی عبد اللہ گور کھپوری اور حاجی یوسف کشمیری کو بھیج دیا۔ محمد قاسم ساکن امر و ہم کو ان کا امیر بنادیا۔ یوگسٹنی پنچی ، جہاں سے کشمیری کو بھیج دیا۔ مجمد ناتی مور کا کوئی انتظام نہ ہوسکا ،اس لئے کہ کشتیوں والے دریا عبور کرنا تھا۔ چھسات روز تک عبور کا کوئی انتظام نہ ہوسکا ،اس لئے کہ کشتیوں والے زلز لہ سیدھا حب کے اونٹ بارنہ آتار نے کی سزا ہے۔ چنا نچی انہوں نے بلا اجرت اونٹ باراتارہ یے۔ چھسات دن میں بیلوگ پنجتار پہنچ گئے ،اس سے تقریباً تین مہینے بعد کو ہانہ کے رمجا بیل سے تقریباً تین مہینے بعد کو ہانہ کے حکے این سے تقریباً تین مہینے بعد کو ہانہ کے حکے این سے تقریباً تین مہینے بعد کو ہانہ کے حکے جو سات دن میں بیلوگ پنجتار پیشتر بیان کے جا تھے ہیں۔

يانچوال باب:

مجامدین پنجتار میں ۱)

پریشان حالی کی و جه

ممکن ہےآ کیے دل میں سوال بیدا ہو کہ جاہدین کیوں ایک مقام برجم کرن تھر سکے اور کس وجہ سے انہیں بے دریے اپنی قیام گا ہیں جھوڑنی پڑیں؟ وہ پہلے نندھیاڑ میں تھمرے تھے،لیکن ہم بتا کیے ہیں کہ دس مہینے کے بعد انہیں وہاں ہے مجبورا نکلنا بڑا۔ بنجتار میں بھی ان کیلیے مستقل قیام غیرممکن ہوگیا جیسا کہ آ کے چل کرواضح ہوگا۔اس کے بعد پاینده خال تنولی ان کارفیق بن گیا،کیکن اس ہے بھی نبھ نہ کی۔ آخر انہیں۔تھانہ میں ا قامت اختیاد کرنی بری اس پریشان حالی کا سبب مدے کہ سادات عقاند کے سواسر حد کے اکثر خوانین اور پیرزاد مصرف نمود ونمائش کے پرستار تھے۔ جہاد فی سبیل اللہ کے لتے ان کے دلوں میں کوئی مخلصانہ جذبہ موجزن نہ تھا۔مجاہدین کی قوت وجانبازی سے د نیوی اغراض میں فائدہ اٹھانے کیلئے وہ تیار ہوجاتے تھے الیکن نہ وہ للہیت کی روح ہے آشنا تصاور ندمجابدين كرارك كامعمولي انظام أنسي قابل برداشت معلوم موتا تما۔ مجاہدیں لنبی مقاصدی خاطر ہر پیشکش کو تبول کر لینے پرآ مادہ ہوجاتے تھے، کیکن جب حقیقی مقاصد کیلئے مخلصانہ کام میں اعانت ہے کامل مایوی ہوجاتی تھی تو انہیں اس کے سوا چاره ندر بها تما كه كوئى دوسرامامن تلاش كريل مصرف ستماند ، چملد اور بونير كے حضرات كا

دامن غرض برسی کے لوث سے پاک رہا، یمی وجہ ہے کہ ان کے سوا مجاہدین کی حقیقی اعانت ورفاقت کاحن کوئی ادانہ کرسکا۔

ہری سنگھنلوہ کا خط

مجاہدین کو پنجتار پہنچے ہوئے تھوڑی ہی مدت گذری تھی کہ ہری سنگھ نلوہ سرحد پہنچا اوراس نے خواص خاں خنگ رئیس اکوڑہ کو دکیل بنا کرتمام خوانین ستمہ کے پاس بھیجا کہ خراج اوا کریں۔ایک خط فتح خاں پنجتاری کے نام بھی آیا کہ تہارے پاس سیوصا حب کی تو پیس محفوظ ہیں، وہ حوالے کردو، ورندلڑائی کیلئے تیار ہوجاؤ۔ فتح خاں نے اس کا جوجواب دیااس کا خلاصہ ہیہ ہے:

(۱) مجھے سید باوشاہ کی تو بوں کے متعلق کچھ کم نہیں ،مجاہدین کوان کا پیتہ ہوگا اوروہ میرے قابو میں نہیں۔

(۲) اگرتم یورش کرو گے تو جب تک لڑسکوں گالڑوں گا۔ د باؤ بڑھے گا تو اپنے لوگوں کو لے کرپہاڑ پر چڑھ جاؤں گا۔

(۳) زیادہ نے زیادہ بیہوگا کہتم لوگ میری بستیوں کو برباد کرڈ الوگے، کیکن تمہاری واپسی کے بعد پھر آ کرانہیں آباد کرلوں گا۔

مقابلے کی تیاری

چونکہ سکھوں کی بورش کا شدید خطرہ لاحق تھا، اس لئے فتح خال نے اپنے ہم تو مول کے علاوہ چملہ اور بونیر کے تمام خوا نین ورؤسا کے پاس پینامات بھیج دیے کہ سکھ پنجتار پر پیش قدمی کر نیوا ہے ہیں، اگر چملہ و بو نیر کا بیدروازہ ان کے قبضے میں آگیا تو تم لوگوں کی آبادی بھی محفوظ ندرہ سکے گی، الہٰذا پنجتار کو بچانے کی غرض ہے جو پچھ کر سکتے ہوا سکے لئے تیار ہوجاؤ۔ چتا نچے تھوڑے ہی دنوں میں تمن ہزار تمن سو بچاس جا نباز پنجتار میں جمع ہو گئے۔

سیدصاحب کے زمانہ قیام میں بھی سکھوں نے پنجتار پر حیلے کی تیاری کی تھی اور سید صاحب کے تھے۔ وہ مور پے محفوظ صاحب کے تھے۔ وہ مور پے محفوظ تھے، اور ان میں آ دمی بٹھا دیے گئے، رات کے وقت فتح خال کے سوار درے کے دہانے پر پہروداری کے لئے پہنچ جاتے تھے، اس طرح پنجتار کی حفاظت ہوتی رہی۔

خواص خال ہے گفتگو

اس اثناء میں ہری سنگھ کی طرف سے خواص خاں پہنچ گیا اور پیغام بھیجا کہ فتح خال جہاں جا ہے۔ جہاں جاہے، گفتگوکر لے۔

بجمالدین کی گرفتاری

ہم بتا چکے ہیں کہ نجم الدین رام پوری بطورخود فتح خال کے آدمیوں کے ساتھ چلے عصے سے سلم خال کے میدان میں بہنچ کروہ سکھوں کی فوج کے مسلمانوں میں تبلیغ حق

کرتے رہے، اس بنا پر گرفتار ہو گئے۔ انہوں نے خوداس ابتلاء کے صالات ہوں بیان
کئے کہ میں دود فعہ سکھوں کے فشکر میں گیا اور مسلمانوں کو وعظ وقعیحت ہے راہ پر لایا۔ وہ
سکھوں کی نوکری چھوڑ کر ہمارے پاس آنے کو تیار تھے، اس اثناء میں مجھے گرفتار کر کے
لا ہور بھیج دیا گیا۔ یہ خبر رنجیت سنگھ تک پنچی تو مجھے در بار میں بلایا گیا۔ مہارا جہنے دکیمے
میری زنجیریں اتر وادیں اور کہا کہ میں نے خلیفہ صاحب (۱) کے مجاہدوں کی بحر ماری
کے متعلق بہت پھسنا ہے، ذرا مجھے بھی اس کا نموند دکھاؤ۔ چنا نچے میں نے بحر ماری کے گئ
فائر کئے۔ رنجیت سنگھ بہت خوش ہوا اور کہا ہماری نوکری کر لو، میں نے جواب دیا کہ ہم
جہاد کیلئے بہاں آئے ہیں، کسی کی نوکری نہیں کر سکتے۔

غرض مہاراجہ نے جم الدین کوایک تیلیا گھوڑا، دو بناری دو پے اور پچاس روپے نقلا دے کراپے آدمیوں کو تاکید کردی کہ یہ جہاں جانا چاہے، بہ حفاظت پہنچادو۔ چنا نچہ جم الدین کوا ٹک پہنچادیا گیا، وہاں سے وہ پنجتار آگئے۔ گھوڑا، دو پے اور روپے شخ ولی مجم الدین کوا ٹک پہنچادیا گیا، وہاں سے وہ بنجتار آگئے۔ گھوڑا، دو پے اور روپے شخ ولی محمد کی خدمت میں پیش کردیے کہ یہ چیزیں خدا کا مال ہیں اور انہیں بیت المال میں داخل کرلیا جائے۔

فتح خاں اپنے اصلی رنگ میں

سکھوں کی طرف سے اطمینان ہو گیا تو فتح خال نے یہ بجویز پیش کردی کہ میری تو م کی بستیاں مجھ سے باغی ہیں۔ اب ضروری ہے کہ انہیں میری اطاعت پر مجبور کر کے عشر کا انتظام کیا جائے تا کہ مجاہدین کے گزارے کا بندوبست ہو سکے۔ میں تنہا اسنے بڑے لشکر کے خرج کا متحمل نہیں ہوسکتا۔ حقیقت سے ہے کہ مجاہدین کو پنجتار لانے میں اس کی اصل غرض یہی تھی ، مجاہدین کی امداد کے بغیروہ کی بستی کو اپنے تابع نہ لاسکتا تھا۔

^{(1) &}quot;سرت سيداحمشهيد" بل بتاياج إكاب كركوسيدصاحب و"خليف ماحب" كتي تقر

شخ ولی محمہ نے مجلس شور کی منعقد کی ،جس میں مندر جد ذیل اصحاب شریک تھے:
مولوی نصیر الدین منگلوری ،محم سعید خال جہان آبادی (متصل رائے بریلی) ، پیر
مبارک علی جھنجھا نوی ، ملاً علی خال کنڈ وہی ، اخوندگل پشاوری ، اللہ نورشاہ ساکن ٹوپی ، بابر
شاہ ننگر ہاری ،جعفر خال ترین بزار وی ، مشی محی الدین کشمیری ،خوش باش امازئی ، ملاً لعل محمہ
قدھاری ، ملا نور محمد قندھاری ، ملا لعل میر قندھاری ،خفر خال قندھاری ،عبد الصمد خال
خیبری ، ملا گلزاری محمد خیبری ۔ اس مجلس میں قندھاری اور ہندوستانی مجاہدوں کے علاوہ
دوسر ہے اصحاب کو بھی شامل کر لیا گیا۔

مصالحت كى تجويز

فتح خال کی تجویز سنتے ہی سب بول اٹھے کدوہ اپنے اصل رنگ میں ظاہر مور ہاہے۔ دنیادار آ دمی ہے، اپنی سرداری اور ناموری چاہتا ہے، دین سے اسے پچھ غرض نہیں۔ ہم لوگ جمت ِشرق کے بغیر مسلمانوں برفوج کشی نہیں کر سکتے۔ چنانچہ غور ومشورہ کے بعد مجاہدین نے فتح خال سے کہددیا کہ تمام بستیوں کومصالحت کا پیغام بھیجو، اگر قبول کرلیں تو معاملہ ختم ہوجائیگا، قبول نہ کریں اور مقابلے کیلئے تیار ہوں تو پھر سوچا جائے گا کہ اس سلسلے میں مناسب راؤمل کیا ہونی چاہئے۔

چنانچہ پنجناری چاربستیوں قاسم خیل ،غورغشی ،سنگ بنٹی اور ظام کئی (1) کے باشندوں نے مصالحت کا پیغام ملتے ہی کہلا بھیجا کہ ہم ہر خدمت کیلئے حاضر ہیں اور ہمارے لئے جو پچھ سجویز کیا جائے وہ ہمیں بے تکلف منظور ہے۔اس طرح پنجنار کے گردونواح کا معالہ خوش اسلوبی سے طے ہوگیا ، البتہ باتی بستیاں مصالحت کیلئے تیار نہ ہو کیں اور ان کے متعلق جو تدبیریں افتیار کرنی پڑیں وہ تفصیلا آئندہ باب میں بیان کی جا کیں گی۔

⁽۱) '' دقائع'' کی اس روایت سے معلوم ہوا کہ جس مقام کوآج کل پنجتار کہتے ہیں،اس کا اصل نام سید و تھا اور ابتدا میں یا نبچوں بستیوں کے لئے پنجتار کا نام استعمال کیا جا تا تھا۔

چصاباب:

مجامدین پنجتار میں (۲)

''حجنڈابوکا'' کا قضیہ

آس پاس کی بستیوں کا فیصلہ مصالحت سے ہوگیا تو فتح خال نے جھنڈ ابوکا کے خال فیض اللہ خال پراٹشکر کشی کا ارادہ کر لیا اور شیخ ولی محمد سے اعانت کا طلب گار ہوا۔ شیخ نے جواب دیا کہ بلا شبہ آپ ہمارے معاون ہیں، ہمیں اپنے ہال تھمر نے کیلئے جگہ دی ہے، لیکن ہم صرف امیر المونین کے انتظار میں تھم رے ہوئے ہیں۔ اگر آپ کو غیر مسلموں سے جہاد در پیش ہوتو ہم جانیں دینے کیلئے تیار ہیں، مسلمانوں سے نہیں لڑ سکتے۔ ہمیں مہلت دیجئے۔ فیض اللہ خال کے پاس اپنے آدی بھیجیں گے اور مصالحت کی کوئی صورت نکالیں گے۔

فیض اللہ کے پاس پیغام

چنانچہ شخ صاحب نے شخ فئے علی عظیم آبادی کوتقریبا ہیں مجاہدین کے ساتھ فیض اللہ خال کے پاس بھیج دیا۔ خان موصوف نے کہا ہیں سید بادشاہ کا مطبع و فر ما نبر دار رہا، اب شخ ولی محمد کا اطاعت گزار ہوں۔ اگر وہ اپنا ایک آ دمی بھیج دیں کہ جمنڈ ابوکا خالی کر کے باہر جلے جاؤ تو ہرگزیس وہیش نہ کروں گا۔ فئے خال مجھ پر زیادتی کرتا ہے، اس کی کوئی بات

نہیں مان سکتا۔اے میری طرف قدم اٹھانے کا حوصلہ بیں ہوسکتا ،صرف آپ لوگوں کے بل پرچڑھائی کاارادہ کئے بیٹھا ہے۔

یکٹی فتح ملی بات چیت کے بعد فیض اللہ خال سے کہدا سے کہ اس قضے کوئتم کرنے کے ایک قضے کوئتم کرنے کے ایک قضے کوئتم کرنے کیا گئے اگر شخط و کی محمد جھنڈ ابو کا خالی کرنے کا پیغام بھیج دیں تو اسے ضرور تبدا ہوجائے۔ صرف میہ دوگا کہ فتنہ بڑھنے نہ یائے اور حسن تد بیر سے امن کی صورت بیدا ہوجائے۔

چڙهائي اورمصالحت

فقح خال کوفیض اللہ خال سے قلبی عداوت تھی، لہذا اس نے انظار کے بغیر چڑھائی کردی۔ شخصاحب نے کوئی ایک سو کے قریب مجاہدین اس غرض سے ساتھ روانہ کئے کہ جس طور بھی ممکن ہوصورتِ حال کوسنجالیں۔ ملائزت قدھاری، بابرشاہ ننگر ہاری اور سید اللہ نورشاہ ساکن ٹوپی ان مجاہدین کے افسر قرار پائے۔ فیض اللہ خال کوالگ پیغام بھیج ویا کہ آپ مقابلہ ہرگز نہ کریں اور دو چارروز کیلئے باہر چلے جا کمیں۔ مال واسباب کی تفاظت کے ذمہ دار ہم ہیں۔ فتح خال کے آدمیوں اور اپنے مجاہدوں کوتا کید کردی کہ فیض اللہ خال حجن لہ اور عالی جائے تو اس کے مال واسباب پر ہرگز دست اندازی نہ کی جائے۔ محفوظ رہا اور تمام لوگ ایک رات جمنڈ ابو کا میں گزار کر پنجتار واپس آگئے۔ یہ تضیہ یوں محفوظ رہا اور تمام لوگ ایک رات جمنڈ ابو کا میں گزار کر پنجتار واپس آگئے۔ یہ تضیہ یوں خوش اسلو بی سے ختم ہوگیا۔

باجابام خيل كامعامله

جینڈ ابوکا کے بعد فتح خال نے باجا بام نیل کا معالمہ پیش کردیا، جہاں تین بھائی سرداری کے منصب پر فائز تھے۔ایک خانی، دوسرا محب اللہ خال، تیسرے کا نام معلوم ند ہوسکا۔ شیخ ولی محمد نے اس معالمہ کو بھی مصالحت سے ختم کردینے کی انتہائی کوشش کی ،لیکن

محت الله خال مفدداور صدی آدی تھا، اس نے کوئی تدبیر کارگر ند ہونے دی، بلکہ فتح خال کو کہلا بھیجا کہتم ہندوستانی مجاہدوں کے بل پر مجصد بانا چاہتے ہو، میں ہرگز ند د بول گا۔ اپنے بھائی بندوں سے مشورہ کروں گا، اگر انہوں نے صلح کی رائے دی توصلح کرلوں گا، ورنہ تہارے مقابلے پر جمار ہوں گا۔

واضح رہے کہ میخض مجاہدین کے خلاف اہلِ سمّہ کی سازشِ قبل میں پیش پیش تھا اور مینی کے مقام پر مجاہدین کی ایک بوی جماعت کوشہید کرانے میں اسکی انگیخت بھی شامل تھی۔

> يورش م

فتح خاں ، محب اللہ خاں کا پیغام س کر یورش کیلئے تیار ہوگیا تو شخ ولی محمہ نے بھی بہی مناسب سمجھا کہ اپنے مجاہدین کو تیاری کا تھم دیدیں۔ ان کا مقصدیہ تھا کہ حتی الامکان مصالحت کی صورت پیدا کریں یا کم از کم باہمی تھا ش اور خوزین کو بردھنے اور پھیلنے نہ دیں۔ اگر چہوہ اُن دِنوں بیار تھے، تاہم خود مجاہدین کے ساتھ جانے کیلئے تیار ہوگئے۔ نماز عشاء کے بعد فتح خال کے لئکر اور مجاہدین پنجتار سے روانہ ہوئے۔ بام خیل سے نصف کوس پر درختوں کا ایک مجنڈ تھا، وہاں تھم کر تین آ دمی اس غرض سے بھیجے گئے کہ دیکھیں صلح کا کوئی امکان ہے یانہیں، جب معلوم ہوا کہ مقابلے کیلئے با قاعدہ مور چہ بندی کر گئی ہے تو لڑائی ناگزیر ہوگئی۔

جنگ

چنانچہ پور کے نگر کے دو حصے کر لئے گئے۔ مولوی نصیرالدین اور فتح خال ایک جھے کو لئے کرمشر تی جانب سے بہتی میں داخل ہوئے۔ شخ ولی محمد نے دوسرے جھے کے ساتھ شالی جانب سے پیش قدمی کی۔ اس طرح مقابلہ کرنے والے دونوں لشکروں کے درمیان گھر گئے۔ بہتی سے باہر نگلنے کا اور کوئی راستہ نہ تھا۔ شخ صاحب کے ساتھ تھوڑے

آدمی تھے، اس لئے مدمقابل نے ادھر کارخ کیا۔ شاہباز ساکن بنوں، شیر محمد خاں رام
پوری اور محمد امیر خال قصوری نے قرابینیں چلائیں، بہتی کے تین سر داروں میں سے
دوو ہیں گر گئے، تیسرا جس کانام خانی تھا، گرفتار ہوگیا۔ مولوی نصیرالدین نے فورا امن کا
اعلان کردیا۔ لڑائی روک دی اور سب کوتا کیدفر مادی کہ کسی کے مال پر ہاتھ نہ ڈالا جائے۔
اس لڑائی میں تین مجاہد شہید ہوئے: ایک صبیب خال ساکن بونیر، دوسرا خدا بخش
ساکن امر وہہ، تیسرا قوم کا مشوانی تھا اور اس کا نام معلوم نہ ہوسکا۔ مقامی ملاؤں کو
اجازت دے دی گئی کہ مقول خوانین کو ڈن کردیں۔

خانی کی رہائی

زیده کی سرداری کا مسئله

سیرت سیداحمد شهبید میں تفصیلا بتایا جاچکا ہے کہ زیدہ کے خان اشرف خاں کی وفات پراس کا بڑا ہیٹا مقرب خال سروار بنا تھا۔ اگر چہ خودا شرف خال اپنے بیٹھلے بیٹے فتح خال کو سروار بنانا چاہتا تھا۔ پچھ مدت کے بعد مقرب خال زیدہ چھوڑ کر چلا گیا اور سید صاحب نے فتح خال کو وہاں کا سروار بنادیا۔ سید صاحب پنجنار سے ہجرت کر کے راج دواری چلے گئے تو سکھوں نے اس بنا پر فتح خال اور اس کے بھائی ارسلان خال کو زیدہ سے نکال دیا کہ وہ سیدصا حب کے خلص عقیدت مند سے اور سرداری کی مسند پراشرف خال کے بھائی لطف اللہ کو بھا وہ اور ارسلان خال نے اپنا مور وثی مند براشرف خال نے اپنا مور وثی منصب والیس دلانے کی درخواست کی ۔ شخ ولی محمد اور مولوی نصیر الدین نے لطف اللہ خال کو ایک خط بھیجا، جس میں اسے مشورہ دیا کہ سرداری کا منصب بھیجوں کے حوالے کرد ہے اورخودای طرح زیدہ میں رہے جس طرح اشرف خال کے ذمانے میں رہتا تھا۔ اس نے جواب دیا کہ فتح خال سکھوں کے خوف سے زیدہ چھوڑ کمیا تھا، میری قسمت نے یاوری کی اور سکھوں نے جھے سردار بنادیا۔ اب میں اس منصب کوچھوڑ نہیں سکتا ۔ مجاہدین یاوری کی اور سکھوں نے جھے سردار بنادیا۔ اب میں اس منصب کوچھوڑ نہیں سکتا ۔ مجاہدین یا دفتح خال اور ارسلان خال کی حق ری کیلئے زیدہ کے ماصر سے کی تیاری کر لی، میں اس موقع پر اخوند زعفر ان قندھاری نے بیخر بہنچائی کہ میں حضر سے امیر المونین کو اپنی آتھوں موقع پر اخوند زعفر ان قندھاری نے بیخر بہنچائی کہ میں حضر سے امیر المونین کو اپنی آتھوں موقع پر اخوند زعفر ان قندھاری نے بیخر بہنچائی کہ میں حضر سے امیر المونین کو اپنی آتھوں سے دیکھور آیا ہوں ، ان کے تھم کے بغیر تھیر نے نظر نے نوٹر نے کا کوئی حق نہیں۔

راوی کابیان ہے:

ینہیں معلوم کہ لڑائی موقوف کرانے کو اخوندصاحب نے بی خبر کھی یا اس میں کچھ اور مسلحت تھی، واللہ اعلم ،گر لوگوں نے بیخبر سنتے ہی لڑائی موقوف کی۔(۱)

رات کے وقت کشکر زیدہ سے اٹھ کر پنج پیریبنچا اور وہاں سے پنجتار چلا گیا۔

چندلئ پرفوج کشی

پنجتار کے شال میں فتح خال کے ہم قو موں کا ایک برا گاؤں چندئی تھا، وہ لوگ بھی فتح

^{(1) &}quot;وقالَع" جلدسوم من ١٠١٠ ١١ ١١٠ م

ہمیں بہر حال یکی مجمنا چاہئے کدامل خبر بالکل ہے بنیاد تھی۔ اخوند ذعفران کے متعلق انجائی حسن بخن کی بناء پر بجو سکتے جیں کر آئیس دسوکا نگا۔ چونکہ بجاندین کے ایک گروہ کو اس وقت تک سید صاحب کی شہاوت کا یعین نہ ہوا تھا اس لئے انہوں نے بے لکلف خبر کودرست مان لیا دیکن فاہر ہے کہ بیٹال سر اسر فلوا تھا۔

خال سے سرکشی اختیار کئے بیٹھے تھے۔ یاد ہوگا کہ جب شنخ ولی محد نے پنجتار آنے کا قصد کیا تھا تو ان لوگوں نے شنخ کو پیغام بھیجا تھا کہ یہاں آ کرر ہنا چاہیں تو شوق سے آ کیں ہم خدمت میں کوتا ہی نہ کریں گے۔ اگر پنجتار جانامنظور ہوتو چندلئ کاراستہ ہرگز اختیار نہ کریں۔

فتح خال نے اب انہیں بھی زیر کرلینا چاہا اور شخ ولی محمد ہے بھی امداد مانگی ۔ شخ نے صاف کہددیا کہ مندوستانی مجاہدوں میں سے ہم کسی کو نہ جیجیں گے، اور لوگ جانا چاہیں تو چلے جائیں ہم خود نہ جانے کا حکم دیں گے، نہ کسی کور دکیس گے۔ فتح خال نے چندلئی پر یورش کی، پہرڈیڑھ پہرلزائی ہوئی، اہل چندلئی مقابلہ نہ کر سکے اور گاؤں چھوڑ کر چملہ کے علاقے میں چلے گئے۔

غرض پنجتار میں مجاہدین کے مختصر سے قیام کا نتیجہ یہ ہوا کہ فتح خال کے تمام ہم قو م از سرِ نواس کے مطیع وفر ما نیر دار بن گئے۔

خانی کافل

چندئی کی تسخیر سے ہیں پھیس روز بعد کا داقعہ ہے کہ ایک دن فتح خاں کا بیٹا مقرب خال پنجتار سے باجا بام خیل گیا۔ اس نے وہاں کے سردار خانی کو مشور سے کسلئے باہر بلایا اور ایک الگ مقام پر لے گیا۔ وہاں اس غریب کو بدردی سے قل کرڈ الا۔ یہ خبر شخ ولی محمد اور مولوی نصیر الدین نے تی تو جیران رہ گئے۔ انہوں نے فتح خال کو بلوایا اور کہا کہ پختہ عہد و پیان کے باوجود اس رنج افزاح کت کسلئے کون ک و جہ جواز موجود تھی ؟ اس نے جواب ویا کہ مقرب خال نے محص سے بع جھے بغیر اس حرکت کا ارتکاب کیا، میں بالکل جواب ویا کہ مقرب خال نے محص سے بع جھے کہ جہاد فی سبیل اللہ میہوں۔ یہ سراسر فریب تھا مقرب خال بطور خود کوئی ایسا قدم نہ اٹھا سکتا تھا۔ مجام ین اس غرض سے بنجار آ کے تھے کہ جہاد فی سبیل اللہ کے مناسب تد بیرا ختیار کریں۔ ان کا مقصد یہ نے تھا کہ وقع خال کی سرداری کو تقویت پہنچانے کیلئے مسلمانوں میں کریں۔ ان کا مقصد یہ نے تھا کہ وقع خال کی سرداری کو تقویت پہنچانے کیلئے مسلمانوں میں

کشت دخون کا ہنگامہ بیا کردیں ،خصوصاً خانی کافٹی تو سراسر ناحق تھا۔اس واقعہ ہاکلہ کے بعد مجاہدین کے لئے بنجتار میں قیام کی کوئی صورت باتی ندری -

سيدميان اورسيدرسول كواطلاع

شخ ولی محمد اور مولوی نصیر الدین نے اسی وقت فتح خال سے قطع تعلق کر لیا۔ سید رسول کو ناوا گئی اور سید میاں کو تختہ بند میں خط ارسال کرویے کہ فتح خال کے باس رہنا غیر ممکن ہوگیا ہے، ہم آپ کے مشورے کے مطابق یہاں آئے تھے، اب فرما ہے کہ کیا کریں۔ چندروز کے بعد ان کا پیغام آگیا کہ ناوا گئی چلے آ ہے، ہم خدمت گزاری میں کونائی نہ کریں گے۔

اس زمانے میں پایندہ خان تنولی والی اسب کی طرف سے بھی ایک پیغام آیا تھا کہ میں سید بادشاہ کے وقت میں شامت نفس کے باعث خدمت گزاری کی سعادت سے محروم رہا، اب آپ لوگ پنجتار سے اٹھ کرامب چلے آئیں۔ شاید آپ کی خدمت گزاری کی برکت سے اللہ تعالی میری سابقہ خطائیں معاف کردے۔

ارسال وفيد

ناوا گئی روانہ ہونے سے پیشتر شیخ ولی محمد نے چار آ ومیوں کا ایک وفد امب روانہ کر ویا تھا کہ وہاں کے حالات تفصیلاً معلوم کر لیس، پھر جو پچھ مناسب ہواس بڑمل کیا جائے۔ یہ وفد محمد امیر خال قصوری، اللہ نورشاہ ساکن ٹو بی، بابرشاہ ننگر ہاری اور اللہ بخش پر مشتمل تھا۔ یہ اصحاب کم وہیش دو ہفتے پایندہ خال کے پاس رہے۔ اس نے گرھی کے دروازے پران کیلئے خیمہ نصب کراویا، اپنے ساتھ کھانا کھلاتا رہا اور رخصت کے وقت باصرار کہا کہ شیخ ولی محمد اور مولوی نصیر الدین آ جا کیس تو میں اگر ورکا علاقہ ان کے حوالے باصرار کہا کہ شیخ ولی محمد اور مولوی نصیر الدین آ جا کیس تو میں اگر ورکا علاقہ ان کے حوالے

كردول كا، اورجس كوث كا قلعد بنے كے لئے دے دول كا۔

بإيبده خال كاعبدنامه

شخ ولی محمد اور مولوی تصیرالدین مجاہدین کو لے کرناوا کئی پہنچے دفد اسب سے واپس آیا تو پابندہ خال نے اپناوکیل بھیج دیا، جس نے اگر ور ااور جسی کوٹ کی حوالگی کا وعدہ دہرایا۔ شخ نے مولوی تصیر الدین کو تین مجاہدول کے ساتھ وکیل کے ہمراہ اسب روانہ کر دیا۔ پابندہ خال نے مولوی تصاحب کے ہاتھ پر با قاعدہ بیعت تو بہ کی اور فسق و فجو رسے تائب ہوکر اطاعت شریعت کا افرار کیا، نیز اگر ورا ورجسی کوٹ کی حوالگی کا عہد نامہ لکھ کرد یہ بوکر اطاعت شریعت کا افرار کیا، نیز اگر ورا ورجسی کوٹ کی حوالگی کا عہد نامہ لکھ کرد یہ دیا۔ پندرہ روز کے بعد مولوی صاحب بیر عہد نامہ لے کرناوا گئی پہنچ تو سیدرسول اور سید میان سے اس کے متعلق رائے پوچھی گئی۔ انہوں نے کہا کہ شخ صاحب نی الحال ناوا گئی میں رہیں البتہ مولوی تصیرالدین کو اسب بھیج دیں۔ پھر جسے حالات پیش آئیں ان کے مطابق عمل کیا جائے۔ چنا نچے شخ نے دس میابدا سے ساتھ رکھ لئے باتی جماعت کو مولوی تصیرالدین کی سرکردگی ہیں اسب بھیج دیا۔

ساتوال باب:

پاینده خال کی دعوت اور قیام اگرور

بإينده خال اورمجامدين

یباں اس امر پر بھی غور کر لینا چاہئے کہ پایندہ خال کیوں اگرور کا علاقہ مجاہدین

کے جوالے کردینے پرآمادہ ہوا، اور کیوں اس نے بداصر ار آبیں اپنے پاس بلایا۔ کیا ہمیں

یہ بھنا چاہئے کہ اس کا اڈعائے رفاقت خلوص پر بنی تھا؟ ابتدا میں بظاہر بھی معلوم ہوتا تھا

کہ اس کی دعوت اخلاص پر ببنی ہے، لیکن آ کے چل کر پنہ چلا کہ اس کے نہاں خات قلب

میں بھی ایک خاص غرض پوشیدہ تھی ۔ وہ غرض پوری ہوگئ تو تجاہدین کے تعلق اس کی توثن

میں بھی ایک خاص غرض پوشیدہ تھی ۔ وہ غرض پوری ہوگئ تو تجاہدین کے تعلق اس کی توثن

میں بھی ایک خاص غرض پوشیدہ تھی ۔ وہ غرض پوری ہوگئ تو تجاہدین کے تعلق اس کی تر بنی نے باس تھیر نے کی کوئی بھی صورت باتی

ندر ہی ۔ یہ بات تھوڑی ہی تفصیل کی متقاضی ہے۔

پایندہ خال کی ہمشیرعبد الغفور خال رئیس اگر ورسے منسوب تھی۔ پھر دونوں کے تعلقات میں اتنا تکدر پیدا ہوگیا کہ شادی توقف میں پڑگئی۔ جب پایندہ خال سید صاحب کے مقابلے میں تکست کھا کر بہ حالت سراسیگی بھاگا تو مال واسباب اور الل وعیال کو پیچے چھوڑ گیا۔ مولا نا شاہ اسلعیل نے عبدالغفور خال رئیس اگر در کے بھائی کمال خال سے کہددیا کہ پایندہ خال کے متعلقین اور اس کی تمام چیزیں بحفاظت موصوف کے باس پیچادی جا کیں۔ اس تھم کی تقیل ہوئی الیکن خان اگر در نے موقع سے فاکدہ اٹھا کر منسوبہ سے بطور خود شادی کر لی۔ بایندہ خال کی رضا مندی اور شرکت کا انتظار نہ کیا۔ یہ کرکت عام حالات میں بھی نازیبانتی، پریشان حالی کے خاص حالات نے اسے پایندہ کرکت عام حالات میں بھی نازیبانتھی، پریشان حالی کے خاص حالات نے اسے پایندہ

خال کے لئے حدور جدرتج افزابنا دیا۔ یہ داغ اس کے دل سے مدت العمر ندمال

یوں پایندہ خان اور خوانین اگرور کے درمیان مستقل عداوت کی آگ بجڑک اٹھی۔ مجاہدین کوجسی کوٹ میں بٹھانے اور اگرور اُن کے حوالے کر دینے کی غرض یہی تھی کہ خواثین اگرور کواپنے علاقے میں استقلال کا موقع نہ لے۔ ہزارہ گزییٹر میں تو صاف صاف مرقوم ہے کہ پایندہ خان نے ہندوستانی مجاہدین کوآلہ کار بنا کرخان اگرورکواس کے علاقے نے نکلوایا۔ (۱)

پایندہ خال کی دوراندیش اورد قیقہ بنجی قابل ستائش ہے کہ اپنے حقیقی مقصد کے متعلق مجاہدین سے بھی کچھ نہ کہا اوراس کی بھیل حالات کی طبعی رفبار پرچھوڑ دی۔ ابتدا میں رئیس اگر وراوراس کا بھائی مجاہدین کے معاون بنے رہے تاہم پایندہ خال نے اس پر بھی کوئی اعتراض نہ کیا۔ معلوم ہوتا ہے اسے یقین تھا کہ بیتعاون زیادہ دیر تک قائم ندرہ سکے گا، چنا نچہ خوا نین اگرور کی دور فی کا آشکارا ہوگئی اور مجاہدین کو ان کے خلاف آشری اقدام کے سواحیارہ نہ رہا۔ یوں پایندہ خال کا مقصد پورا ہوگیا، ساتھ ہی اس نے ایسے طریقے اختیار کر لئے کہ مجاہدین اگرورسے اٹھ کرستھانہ جانے برمجبور ہو گئے۔

مجامدین کی آمد

مفصل حالات تو آ مے چل کر بیان ہوں گے، یہاں یہ بات بیان کرنامقصود ہے
کہ پایندہ خال سے اگرور میں قیام اور جس کوٹ کی مرمت کے متعلق عہد و بیان ہوجانے
کے بعد مولوی نصیر الدین مجاہدین کو لے کرامب روانہ ہو گئے۔سید میاں اور سید رسول
کے مشورے کے مطابق می ولی محمہ ناوائی ہی میں رہے۔ چملہ سے امب جانے کا راستہ
میٹ کی میں سے تھا جوامب کے مین سر پر مغربی جانب واقع ہے۔ پایندہ خال نے دوسو

⁽١) "جراروكزيين" مطبوره ١٨٨٣-٨٨٠ وجي: ١٨

سواروں اور پیادوں کے ساتھ بھیٹ گلی میں مولوی صاحب کا استقبال کیا اور ہوے اعزاز سے انہیں امب لایا۔ مولوی صاحب کو امب کی معجد میں اتارا۔ مجاہدین کے لئے متعدد مکان خالی کرادیے۔ کم وہیش دو ہفتے مولوی صاحب اور مجاہدین امب میں تھمرے رہے۔ اس اثناء میں پایندہ خال نے بڑے اہتمام سے مہمانداری کا فرض انجام دیا۔ بظاہر معلوم ہور ہاتھا کہ اس کی روش اور افکار وخیالات میں نمایاں خوش گوار تغیر پیدا ہوچکا ہے۔ جس کوٹ کی گڑھی کے جو حصے مرمت طلب تھے، ان کی درتی کا انظام شروع ہوگیا۔ مرمت کی تحکیل کیلئے پایندہ خال نے کچھرویے مولوی صاحب کی خدمت میں ہوگیا۔ مرمت کی تحکیل کیلئے پایندہ خال نے کچھرویے مولوی صاحب کی خدمت میں مور کی جو کے ہوئے ہوئے ہوئے ہوئے ہی کوٹ کی خدمت میں کوٹ پہنے مولوی ساحب مولوی ساحب کی خدمت میں کوٹ پہنے مولوی ساحب مولوی ساحب کی خدمت میں کوٹ پہنے مولوی ساحب کی خدمت میں کوٹ پہنے مولوی ساحب مولوی ساحب کی خدمت میں کوٹ پہنے مولوی ساحب کی خدمت میں کوٹ پہنچ مولوی ساحب کی خدمت میں کوٹ پہنچ مولوی ساحب کی حدور کر میں کی مولوں کی کوٹ کی کوٹ کی کوٹ کی کوٹ کر کوٹ کی کوٹ

آغاز جہاد کی تجاویز

قیام کے لئے مناسب مقام مل کیا تو مولوی صاحب آغاز جہاد کی تد ہر یں سوچنے گئے۔ ''ہیلہ داروں''(۱) کی مجلس شور کی منعقد کی تو میاں خاں سواتی نے جبوری پر چھاپے کی تجویز پیش کی ، جو بالا کوٹ کے قریب ہے، اور وہاں سکموں کا ایک تعاند تعاند تعاند اس تجویز پر عمل در آ مد کا ایک واضح فا کدہ بیتھا کہ جبور ٹی تک کا پورا علاقہ جس میں درہ کوئش شامل تھا، مجاہدین کے ذریا از آجا تا اور سکموں کیلئے مدافعت کا کوئی موقع باقی ندر ہتا۔ اس تجویز سے سب نے اتفاق کیا۔ چنا نچہ مجاہدین کی مختلف جماعتوں سے تقریباً ایک سوافراد کو تیاری کا تھم دے دیا گیا۔ غلہ پاس نہ تھا، مولوی صاحب نے دوگا کیس خریدیں اور انہیں ذری کرا کے گوشت مجاہدین میں تقسیم کردیا کہ پکا کرساتھ لے لیس ، یکی دوروز کے لئے ان کا زاوراہ تھا۔ جو بجاہدین اس چھاپے میں شریک ہوئے ان میں سے مندر جدذیل لئے ان کا زاوراہ تھا۔ جو بجاہدین اس چھاپے میں شریک ہوئے ان میں سے مندر جدذیل کے ان کی سے مندر جدذیل کے ان کا زاوراہ تھا۔ اس کو سے انہ رہے ہوں کہ جات کی اصطلاح میں 'نہید''فرن کے اس کلاے کو کہتے تھے جو بیں گوریوں پر مشتل ہوتا تھا۔ اس کلاے کا افر 'نہیا۔ دار'' کہلا تا تھا۔

کے نام روانیوں میں آئے ہیں: شیخ وزیر پھلتی منتقیم جہان آبادی (متصل رائے ہریلی)، ابراہیم پور بی، مقیم ساکن کالا باغ ،محمد عمر سندھی ،عبد الحمید سندھی ، نور سندھی ، ملآ لقمان سندھی جعفر خال ترین ہزار دی ، کرم خال اور ان کے دو بھائی ، ملاعزت قندھاری ، ملا عل محمد قندھاری ، احمد خال کا شکاری (چرالی) ، شاہین مشوانی ۔

شبخون

مجاہدین کی بیچوٹی می جماعت نماز فجر کے بعد جسی کوٹ سے روانہ ہوئی۔ جبوڑی
کا عام راستہ بھی بہاڑی ہونے کے باعث خاص دشوارگز ارتقا۔ ان لوگوں کو بنظرِ احتیاط
عام راستے کے بجائے جنگل جنگل جانا پڑا تا کہ منزلِ مقصود کے متعلق کسی کو علم نہ ہو، اور راز
فاش ہوجانے کے باعث اصل مقصد کو نقصان نہ پہنچے۔ اسلئے بڑی مشقت اٹھانی پڑی۔
فاش ہوجانے کے باعث اصل مقصد کو نقصان نہ پہنچے۔ اسلئے بڑی مشقت اٹھانی پڑی۔
ظمر کے وقت ایک مقام پر پہنچ کر تھوڑی دیر کیلئے آرام کیا۔ شام کے وقت پھر روانہ
ہوتے ، رات بھر چلتے رہے، فجر کے وقت ایک جنگل میں تھر گئے۔ ظہر کے وقت وہاں
سے چلتو عشاء سے پہلے بہلے میاں خال سواتی نے مجاہدین کو اس بہاڑ پر پہنچادیا جس

رات کے پچھلے پہر اٹھ کر جبوزی کے تھانے کی طرف بڑھے۔ پہر بدار سکھ نے آ ہٹ پاکر بندوق چلائی، گوئی سی کے نہ گی۔ مجاہدین ایک دم ہلہ کر کے تھانے میں داخل ہوگئے۔ تھانے کے پچھسپائی مارے گئے، باقی بھاگ کر بستی کے گھروں میں جاچھے۔ مجاہدین نے پچھ مال واسباب اٹھا یا ایک مرداور تین عورتوں کو گرفتار کیا اور فجر کی اذان کے وقت بستی سے نکل کر بہاڑ پر چڑھنے گئے۔ سکھوں نے جمع ہو گرگولیاں چلائی شروع کیں، لیکن مجاہدین کو خدا کے نفل سے کوئی نقصان نہ پہنچا۔ دوسرے روز وہ جسی کو نہنچ گئے۔ بعد میں معلوم ہوا کہ جبوڑی کے مقتولوں میں ناصر خال بھٹ گرامی کا بھنتیجا بھی شامل تھا، جس نے تھانے کے ساہروں میں سے مردول جس نے مردول

نے بہطیب خاطراسلام قبول کرلیا عورتوں کو تین سور دیدے کرچھٹرالیا محیا۔

حچھاپے کے اثر ات ونتائج

جیدا کہ خیال تھا، چھا ہے کے اثر ات دنتائے بہت اچھے رہے۔ بورے علاقے میں مجاہدین کی دھاک بیڑہ گئی۔ بارک خال اور محمد خال در ہورکونش کے بڑے خال تھے، انہوں نے مولوی نصیر الدین کے پاس خط بھیج کر اطاعت تبول کی اور عشر دینے کا اقرار کرلیا، مولوی صاحب نے انہیں تملی دی کہ آپ لوگ ہمارے بھائی ہیں ہماری طرف سے بچھاندیشہ نہ کریں، ہم حتی الا مکان آپ کی حفاظت کرتے رہیں گے۔

سکھوں کیلئے میصورت حال کیونکر گوارا ہوسکتی تھی؟ انہیں میہ بھی شبہ ہوا کہ مجاہدین کا چھا پارائے کے مقامی لوگوں کی اعانت کے سبب کا میاب ہوا، اوراس پر بھی غصر آیا کہ در ہ کونش کے لوگ مجاہدین کوعشر دینے پر راضی ہو گئے ہیں۔ گویاسکھوں کی حکومت سے نکل کرمجاہدین کے دائر ہ اثر ہیں چلے گئے ہیں۔ چنانچہ وہ ایک لشکر لے کر آپنچے۔ بادک خاں اور محد خاں کوخوب دھرکا یا کہ اگر مجاہدین کوعشر دیا تو تہ ہیں تباہ کرڈ الیس گے۔

مجامدين كاإقدام

بارک خال اور محمد خال نے ان حالات کی اطلاع مولوی صاحب کو دے دی تو انہوں نے اپنے مشیروں کو بلا کر پوچھا کہ کیا کرنا چاہیے؟ خود فرمایا کہ جولوگ ہماری اعانت کا اقر ارکر چکے ہیں انہیں ضرورت کے وقت ہر ممکن مدد دینا ہم پر لازم ہے، نیز یہاں ہیٹھے بیٹھے سکھوں کا انتظار کیوں کریں؟ بہتریہ ہے کہ خود درہ کوئش میں جا کیں اور دیکھیں کہ کون ہمارے معاونین کو دھر کا تاہے؟ اس اقد ام سے سکھوں پر دباؤ پڑے گا اور ہمارے معاونین کو دھر کا تاہے؟ اس اقد ام سے سکھوں پر دباؤ پڑے گا اور ہمارے معاونین کیلئے اظمینان ورلم معی کا سامان ہوگا۔ چنا نچے جسی کوٹ سے درہ کوئش میں جانے کی تیاری کرلی تھوڑ سے مجاہدین گڑھی کی حفاظت کیلئے چھوڑ دیے۔

سکھوں سے چپقلش

مولوی صاحب نے بھی کوٹ سے روانہ ہوکر ایک رات موضع آبال میں گذاری۔
استی والوں نے بڑے اہتمام سے مہمان داری کا انتظام کیا۔ دوسر سے روز کھانا کھا کر
وہاں سے روانہ ہوئے اور بٹلوں پنچے جو بارک خاں اور محرخاں کا مرکز تھا۔ بٹلوں سے
ہارکوں پرموضع بالی منگ تھا، مولوی صاحب وہاں وارد ہوئے تو معلوم ہوا کہ تقریباً چار
کوں پرسات سو سکھوں کالشکر موجود ہے۔ نیج میں بہاڑی گھائی تھی، سکھوں نے گھائی
دوک لی تا کہ مولوی صاحب آئے نہ بڑھ سکیں۔ پانچ چھ گھڑی فریقین میں اڑائی ہوتی
دی ، مجرمولوی صاحب نے پر از در حملہ کیا اور سکھ گھائی چھوڑ کر بھاگ نظے۔ سیچوں سے
انہوں نے کھانے پینے کی جس جراوصول کی لیکن مجاہدین کے خوف سے وہاں تھہر نہ سکے
ادروشکیاری چلے محلے جو در ہ بھوگڑ منگ کے دہانے پرواقع ہے اور وہاں سکھوں نے ایک
اوروشکیاری چلے محلے جو در ہ بھوگڑ منگ کے دہانے پرواقع ہے اور وہاں سکھوں نے ایک

مولوي صاحب كي مراجعت

سکھوں کے فرار کے بعد مولوی صاحب لوٹے اور کودروں کی بہتی میں تھہرے، جو
مقام جنگ سے دواڑھائی میل تھی۔ وہیں اِردگرد کی بستیوں کے لوگ عشر لے کرآئے،
جس میں غلہ، نفذر تم ، کمل وغیرہ شامل تھے۔ سکھوں کے بہت سے جانور بھی ہاتھ لگے
تھے: مثلاً بھینسیں ، گھوڑے ، ٹٹو ، فچر کودروں سے مولوی صاحب بالی منگ ہوتے ہوئے
بٹلوں گئے۔ بارک خال اور محمد خال نے معمول کے مطابق مولوی صاحب کی دعوت کی۔
بٹلوں گئے۔ بارک خال اور محمد خال نے معمول کے مطابق مولوی صاحب کی دعوت کی۔
اس سے پیشتر ایک مخلص عقیدت مند نے میا طلاع پہنچائی کہ دونوں خان دورُخی چال چل
دے ہیں۔ اندیشہ ہے کہ دعوت میں بلاکرآپ کونقصان نہ پہنچا کیں۔ مولوی صاحب کھانا

خاں کو خالفانہ اِقد ام کا حوصلہ نہ ہوا۔ مولوی صاحب عشر جسی کوٹ پہنچانے کی تاکید کرتے ہوئے واپس ملے محکے۔

خوانین کی دُول ہمتی

بارک خاں مجمد خال اور دوسرے خوانین کے متعلق ابتدامیں خیال تھا کہ سکھوں کے خطرے کی روک تھام کے بعد وہ ضلوص ہے کار و بار جہادیش معاون بن جائیں مے ، پائم از کم خالف قو توں کوتقویت پہنچانے سے بازر ہیں گے۔افسوس کہ بیدخیال درست ثابت نہ ہوا۔ ان لوگوں کی بےعز می اور دُوں ہمتی واضح طور برآ شکارا ہوگئی ۔ حقیقت میہ ہے کہ ان کے سامنے کوئی بلندنصب العین ندتھا، وہ صرف اپنی جائدادیں بچائے رکھنے کے لئے مفطرب تھے۔مجاہدین کا دباؤ بوحتا ویکھا توبظاہران کی خیرخواہی کا دم بحرنے لگے، کیکن خفیہ خفیہ سکموں کو بھی اپنی اطاعت کا یقین دلاتے رہے۔ بیصورت حال پہم اور متواتر عامدین کیلئے گونا گوں تشویشات کا باعث بنی رہی۔ وہ رَزم و پریکار کی تمام ذمہ داریاں خود اٹھانے کیلئے تیار تھے۔صرف اتنا جا ہے تھے کہ خوانین دوڑخی سے ان کے اقد امات میں خلل نه و اليس ليكن بيخوا بش دراصل سي بعي دوريس بوري نه بوسكي ، اورمقا ي او كول كي بے عزمی ہرنازک ساعت میں آ فات کا موجب بنتی رہی۔ نتیجہ یہ ہوا کہ نہ کسی موقع ہر مستقل محاذ جہاد قائم ہوسكا اور نددور خى جاليس جلنے والے خوانين ياداش كے تازيانے كى ضرب ہے محفوظ رہ سکے۔

آ محوال باب:

بإينده خال اورنتخ خال ينجتاري

فتخ خال کی چیرہ دستیاں

پنجارے ہجرت کے وقت سیدصاحب نے فتح خال کے ہم قو مول سے فر مایا تھا کہ جس طرح ہمیں عشر دیتے رہا۔ مقصد بی قاکہ حسل طرح ہمیں عشر دیتے رہا۔ مقصد بی قائم کہ قوم میں اجتماع واتحاد کا جوائظام ہو چکا تھا، اس میں خلل نہ آئے اور پہلے کی طرح تفرقہ پیدا ہوجانے ساجتا کی قوت کو نقصان نہ پہنچ۔ فتح خال نے سیدصاحب کے اس ادشاد کو اپنی سرداری اور حکم انی کی دستاویز بنالیا اور زوروقوت سے تمام ہم قوموں کو فرمانبردار بنائے رکھنے پرتل گیا۔ اس کی غلط روش کے باعث ہم قوموں کی مختلف بستیوں فرمانبردار بنائے رکھنے پرتل گیا۔ اس کی غلط روش کے باعث ہم قوموں کی مختلف بستیوں نے سرتا لی افترار بلانے میں اس کی غرض صرف بیتی کہ بہا ہدین کی احداد سے تمام بستیوں پر اپنا تسلط از سرِ نومعکم کر لے۔ شخص صاحب نے اثر ورسوخ سے کام لے کر بعض بستیوں کو مصالحت پر آمادہ کرلیا۔ صرف باجابام خیل سے درسوخ سے کام لے کر بعض بستیوں کو مصالحت پر آمادہ کرلیا۔ صرف باجابام خیل سے لڑائی کی نوبت آئی اور اس کا دائرہ بھی بہت محدود رہا۔ فتح خال نے برعہدی کر کے باجابام خیل کے نیکس خانی کو بے دردانہ قبل کراد یا تو شخص صاحب نے فتح خال سے تعلی تعلی کرلیا اور وہ پنجتار کو چھوڑ کرناوا گئی ہے گئے۔

فتح خال اس کے بعد بھی گردونواح کی بستیوں پرظلم وتعدی کرتار ہا۔ آخراو پی مینی، کھلا بث منارہ، بنج پیراور مرغز کے خوانین نے تنگ آکر پایندہ خال والی امب سے امداد کی التجا کی۔وہ بے تامل امداد کے لئے تیار ہو گیا۔اس لئے کداس میں اور فتح خال میں مدت ہے قبلی عداوت چلی آتی تھی۔ جب پایندہ خال نے لشکر کے ساتھ ستہ کی طرف جانے کا فیصلہ کرلیا تو مولوی نصیرالدین کو بھی بلوالیا۔

مولوی صاحب کی طلبی

مولوی صاحب کودر ہ کوئش ہے واپس ہوئے میں بائیس روز گذر بچے تھے کہ پایندہ خاں کی طرف ہے ایک خط آیا جس میں مرقوم تھا:

ہماراارادہ ٹونی مینی کی طرف جانے کا ہے۔ آپ بھی ہمارے لشکر کے ساتھ تشریف لے چلیں ، آپ کے سب سے ہمیں زیادہ قوت ہوگی۔(۱)

مولوی صاحب موصوف اس اقدام کے اصل مقصد سے ناواقف نہ تھے۔ مجاہدین سے فتح خاں کا نامناسب سلوک بھی ان کے سامنے تھا، تا ہم اس خیال سے روائلی کیلئے تیار ہوگئے کہ دومسلمان گروہوں میں رزم و پر کارکورو کئے کی کوئی صورت ہوتو اس سے فائدہ اٹھا کیں اوران میں مصالحت کرادیں۔ آئیں کی وجہ سے لڑائی رُکی، جیسا کرآگے جل کرواضح ہوگا، ورنہ خوفناک خونریزی کے آغاز میں کوئی شبہ باقی ندر ہاتھا۔

جسی کوٹ ہے روانگی

مولوی صاحب نے بیٹس مجاہدوں کوجسی کوٹ میں چھوڑا، جن کے نام یہ ہیں:
محرحسین سہارن پوری، نظام الدین خال شاہ جہاں پوری، جم الدین شکار پوری، احمد
حسین صادق پوری، سید عبد الله عظیم آبادی، محسن جون پوری، رمضانی کاشی پوری، حافظ
واقف علی ساکن میان دوآب، دوست محر رام پوری، محمود بناری، شخ رمضان الدآبادی، شخ
حسن علی، شخ عبد الرحمٰن، شخ عبد العزیز اور شخ عبد القادر ساکنان کیا، احمد سندھی، اللی بخش
یانی ہی، کامن خال سندھی، ہدایت اللہ ہزاروی، حبیب الرحمٰن الدآبادی، شخ کالب ساکن

^{(1) &}quot;وقالع" جلدسوم من: ٣٤٧ – ٣٤٤

میان دوآب،نورخان ہزاروی جمعلی ہزاروی ،دین محمداور اللہ بخش ساکنانِ میانِ دوآب، اشرف خال بیٹاوری ،عبدالقادر ساکن امرو ہد،نور محمداوران کے بھانے جن کا نام معلوم نہ ہوسکا مجمد قائم ساکن امرو ہد۔

آ خرالذ كركواس جماعت كا امير بنايا۔ بارك خال اور محمد خال رئيسانِ كوش كوتا كيدى خط لكھ ديا كہ ہم پايندہ خال كے بلانے پر امب جارہ ہيں،معلوم نہيں وہال سے كب لوٹيس،آپ لوگوں كے پاس عشر كا جوغلہ جمع ہواً ہے جسى كوٹ پہنچاديں۔

تقریباً اڑھائی سومجاہدوں کے ساتھ مولوی صاحب ملتہ پانی مھمرتے ہوئے امب پہنچ مرے۔

بإينده خال اورسا دات ِستھانه کامعامله

آپ دوروز امب میں تھہر کرعشرہ چلے گئے۔ تین روز بعد پایندہ خال تین سوسوار اور چارسو بیادے لے کرعشرہ بہنچا۔ وہاں سے خان، اس کالشکر اور بجاہدین موضع آبی میں جا کرتھہر ہے۔ پایندہ خال اور سادات ستھانہ کے در میان مدت سے شکش چلی آئی تھی ، آبی میں مولوی صاحب نے گردونواح کے خوانین کا جرگر بلا یا اور کوشش کی کہ خان اور سادات میں مصالحت ہوجائے۔ سیدا کرشاہ سادات ستھانہ کے سرخیل تھے۔ انہیں پیغام بھجا گیا، میں مصالحت ہوجائے تین چھوٹے بھائیوں سیدعمر، سیداصغراور سیدعمران کو گفتگو کے لئے بھیج دیا۔ جرگے میں فریقین کے گلے شکوے نے ایسی صورت اختیار کرلی کہ باہم لڑائی کا اندیشہ پیدا ہوگیا۔ مولوی نصیرالدین نے بات چیت روک دی اور فرمایا:

ہم تو مصالحت کے خواہاں تھے، یہاں لڑائی کا رنگ بیدا ہوگیا۔سب باتیں چھوڑ ہے اورمصافی کر لیجئے۔

اس طرح بیدمعاملہ ختم ہوا۔ کیا سے اشکر کھتل گیا، جہاں تقریباً ایک ہفتہ تعیم رہا۔ وہاں سے ایک منزل پر کھلا بٹ میں فتح خاں پنجتاری اشکر لئے بیٹھا تھا۔

مصالحت كى كوشش

نظر بہ ظاہر پایندہ خاں اور فتح خاں میں خونریز جنگ بالکل یقینی ہوگئ تھی۔مولوی نصیرالدین صرف اس غرض سے ساتھ آئے تھے کہ دونوں فریقوں میں صلح کرادیں۔ چنانچہ وہ اس کوشش میں لگ گئے۔انہوں نے پہلے پایندہ خال اور اس کے ساتھیوں کو مصالحت پرراضی کیا، پھر فتح خال کوخط کھھا جس کا مضمون بیتھا:

اس نواح کے خوانین وغیرہ لوگوں نے آپ سے تک ہوکر پایندہ فال کو بلایا ہے کہ آپ کا مقابلہ کرے۔ ہم لوگ بھی پایندہ فال کے ہمراہ آئے ہیں۔ سوہم کو سلمانوں سے جنگ وجدل کی صورت منظور نہیں ،خصوصاً آپ سے کہ ہمارے جناب امیر المومنین سیدصا حب کے فلیفہ اور انصار ہیں۔ ہم ہی چاہتے ہیں کہ آپ اور یہ دونوں نفسانیت اور عداوت قد بمی کوچھوڑ کر للہ فی اللہ آپ س میں کہ آپ اور تنقق ہوکر کچھوکام خدا کا بنا کمیں کہ ونیا اور آخرت میں نیک میں وارثواب پاکمیں۔ ہم پر جوحق اخوت اسلام کا تھا وہ ہم نے ادا کر دیا، اب آگے آپ مختار ہیں۔ (1)

مولوی صاحب اور فتح خال کی گفتگو

(۱) ''وقالَع''جلدسوم ص:۴۸۰

فتح خاں نے اس خط کے جوب میں لکھا کہآپ کا ارشاد منظور ہے،لیکن ضروری ہے کہآپ پہلے علیحد گی میں میری باتیں سن لیں۔

یوں مصالحت کے امکانات بڑھ گئے۔ مولوی صاحب اور پایندہ خال کھ بل سے باڑ ااور وہاں سے کوٹھا گئے، جہاں سے کھلا بٹ صرف ڈیڑھ کوئی تھا۔ فتح خال کو خط بھیجا کہ کل آپ تشریف لا کمیں میں بھی آٹھ دس مجاہدین کے ساتھ آجاؤں گا اور بات چیت ہوجائے گی۔ چنانچے دونوں میں حسب قرار داد ملاقات ہوئی، لیکن کمی بات پراتفاق نہ

ہوسکا۔ فتح خال کا اصرارتھا کہ گردونواح کے تمام خوا نین میرے فرما نبردارر ہیں اور مجھے عشر دینا قبول کریں۔مولوی صاحب فرماتے تھے کہ آپ اپنے ہم قوموں یعنی خدوجیلوں کے مالک و مختار ہیں، انہیں کے تعلق میں آپ کو خلیفہ بنایا گیا تھا۔ جولوگ آپ کے ہم قوم نہیں ان پر کیوں جبر کرتے ہیں؟ وہ جس دستو پر پہلے سے آرہے ہیں، اسی پر انہیں قائم رہنے دیں۔ فتح خال ناراض ہوکروا پس جلاگیا۔

رفع فسادكا خدادادسامان

ادھر پایندہ فال مصر تھا کہ جلد سے جلد لڑائی شروع کردے۔ مولوی صاحب نے وعظ وقصیحت سے اسے رو کے رکھا۔ کو تھا سے دوکوں پرموضع مینئی ہے۔ ایک روز وہاں کے لوگ پایندہ فال کو اپنے ہال لے گئے اور پر ' تکلف وعوت دی۔ دوسر بروز جھنڈ ابوکا کی طرف سے وعوت آگئی۔ پنج تار جھنڈ ابوکا سے صرف تین چارکوں ہے۔ فتح فال کے دل میں وسوسہ بیدا ہوگیا کہ مکن ہے، میں کھلا بٹ میں بیٹھار ہوں اور پایندہ فال کا لشکر پنج تار پر مملد آور ہوجائے ، اس وسوسے کی بنا پروہ کھلا بٹ کوچھوڈ کر پنج تار چلا گیا۔ اس طرح لڑائی کے انسداد کا فداوادسا مان ہوگیا۔

ایک داقعه

ایک روز بہاڑی طرف سے بندوقیں چلنے کی آواز آئی۔جھنڈ ابوکا میں شور کچے گیا کہ فئے خال کے سوار آئی پہند ملے تو فئے خال سے فئے خال کے سوار آئی ہے۔ پابندہ خال کی آرزو بھی میتھی کہ کوئی بہانہ ملے تو فئے خال سے لئروں۔ وہ نورا گھوڑے پر سوار ہوا اور نیزہ ہاتھ میں لئے کر اُدھر چل پڑا، جدھر سے بندوقوں کی آواز آئی تھی۔ اس کے سوار بھی ساتھ دوڑ پڑے۔ دامن کوہ میں ہر چند تلاش کیا، لیکن بندوقیں چلانے والوں کا پند نہ ملا۔

فتح خال سے لڑائی کا خرنحشہ بالکل مٹ گیا تو پایندہ خال اور مولوی صاحب واپس آگئے۔مولوی صاحب دو تین روز امب میں تفہر ہے، پھرجس کوٹ پہنچ گئے۔

نوال باب:

سکھوں بر بورش

بإينده خال اور دوسر يخوانين مين فرق

ہم بتا چکے ہیں کہ چاہدین کواگر ور ہیں بھانے کا فیصلہ کرتے وقت پابندہ خال کے پیش نظرایک بڑامقصد بیتھا کہ خواہین اگر ور کے لئے اپنی ریاست ہیں مستقل قیام کی کوئی صورت پیدانہ ہو،کیکن اس حقیقت کا اعتراف کرنا چاہئے کہ وہ سکھوں سے بھی لڑنے کا خواہاں تھا اور جب تک گر دو پیش کی مسلمتیں اس کے خصوص تصورات حکومت ہیں حائل نہ ہوئیں، وہ سکھوں کے خلاف بھی وقنا فو قنا قدم اٹھا تار ہا۔ دوسر نے خوا نین مثلاً فتح خال کی حیثیت پابندہ خال سے مختلف تھی۔ وہ صرف اپنی سرداری کو مشحکم کرنے کے در پ تھے، حالانکہ مجاہدین بلا دِ اسلا میہ کو غیر مسلموں کے تسلط سے نجات ولانے کیلئے مضطرب سے علاوہ مجاہدین کے مقاصد کی تحکیل کے علاوہ مجاہدین کے مقاصد میں بھی تعاون کیلئے تیارتھا، چنا نچ سمتہ سے مراجعت کے جندروز بعد وہ لئکر لے کر شیر گڑھ آ گیا اور مولوی نصیرالدین کو جسی کوٹ پیغام بھیجا کہ ہم چندروز بعد وہ لئکر لے کر شیر گڑھ آ گیا اور مولوی نصیرالدین کو جسی کوٹ پیغام بھیجا کہ ہم پہلی میں سکھوں پر جملہ کرنا چاہتے ہیں، آپ بھی ہمارے ساتھوتشریف لے چلیں۔

مولوی صاحب کی روانگی

يه پيغام ملتے عي مولوي نصير الدين تخيينا ؤير ها و مندوستاني اور ولايتي (١) مجاہدوں

(١) رواغول من يكى لفظ استمال مواج - چونكد مار عذ مان عل والين كاسي باقى ماشيا كل مني

کے ساتھ پایندہ خال کے پاس شیر گڑھ پہنچ گئے۔ وہاں سے دونوں نے پکھلی کی طرف
کوچ کیا۔ پہلی منزل بھوج درہ (۱) میں ہوئی جوشیر گڑھ سے بہست جنوب ہائل بہ شرق
تقریباً پانچ کوں پرواقع ہے۔ چھروزاس مقام پر شہر سے رہے، یہ وقت سکھوں کے مختلف
تھانوں اور چوکیوں کے حالات کی چھان بین میں گذرا۔ جن کا جال پور سے علاقے میں
پھیلا ہوا تھا۔ اس لئے کہ تھانوں اور چوکیوں کے بغیر سکھا ایک دن کے لئے بھی کسی جھے پر
عکومت نہ کر سکتے ہے۔ ساتویں روز قدم آگے بڑھا یا اور نیلور میں جا تھہر سے جو بھوج درہ
سے بہست مشرق مائل بہ جنوب اڑھائی کوں تھا۔ اس جھے میں سکھوں کی مملداری کا بہ
پہلا مقام تھا، وہاں چندسید بھی رہے تھے، وہ پایندہ خاں اور مجاہدین کی چیش قدمی کے
ساتھ بی گھریارچھوڑ کر کھوٹ چلے گئے۔ اس لئے کہ خالفت کرنہ سکتے تھے اور غالباً کرنا بھی
ساتھ بی گھریارچھوڑ کر کھوٹ چلے گئے۔ اس لئے کہ خالفت کرنہ سکتے تھے اور غالباً کرنا بھی
سنجا ہے۔ اگر شہر سے رہے تو بعداز اں سکھوں کے عاب کا ہدف بنتے۔

ببر کھنڈ پر بورش

پایندہ خان اور مجاہدین تمین دن نیلوریٹ کھہرے رہے۔روزانہ سواروں کوآس پاس
کے دیہات میں سیروگشت کے لئے بھیجے دیا جاتا، ان میں سے خاص طور پر قابل ذکر مقام
کینیا ہے جو نیلور کے قریب عین مشرق میں واقع ہے۔ وہاں سے بسمت شال بیر کھنڈ میں
منکھوں نے ایک مضبوط قلعہ بنار کھا تھا، غور ومشورہ کے بعداس پر حملے کا فیصلہ کرلیا گیا۔
خان اور مجاہدین کے سوار اور بیاد نے تقریبا اڑھائی ہزار تھے۔ نماز ظہرا داکر کے کینیا سے
ہیر کھنڈ پر یورش کی گئی۔ سکھ سلح ہوکر مقابلے کیلئے نکلے۔ ان کی جمعیت جار ہزار کے قریب

www Rootl IrduRooks wordpross com

گذشته مخد کا بقیہ حاشیہ منہوم کچھ اور ہو کمیااس لئے غلاقہی کے از الے کی غرض سے بیدواضح کردیا مناسب ہے کے بجابرین کی روایت میں 'ولایتی'' مے مقصود و ولوگ ہیں جوقند ھار بنگر باریاس حدو غیرہ سے تعلق رکھتے تھے۔

⁽۱) عجابدین کی روافتوں میں اسے "بردرو" کھماعمیا ہے ممکن ہے کہاس زیانے میں یہی تلفظ ہو۔ میں نے موجود و تلفظ میں نظر رکھا ہے تا کہ قار کین کو فلائنی ندہو۔

تھی جن میں سوار کم تھے اور پیادے زیادہ۔ نیچ میں سرن ندی تھی۔ خان اور مجاہدین کے لئکر بے تکلف اس میں اتر گئے۔ کمر تک پانی تھا، اس اثناء میں سکھ بے در بے بندوقیں سرکرتے رہے لیکن یورش کنندوں میں ہے بنفضل خدائسی کو نقصان نہ پہنچا۔ ندی سے گذرتے ہی قلع میں جلے گئے۔ بیادے فیس باندھے ہوئے بیر کھنڈ کے بائیں جانب جائم ہے اٹھے ہی جلے گئے۔ بیادے فیس باندھے ہوئے بیر کھنڈ کے بائیں جانب جائم ہے اٹھے ہی قلع سے گولیاں برسے گئیس تو پائیدہ خال پورے فیکرکو گولیوں کی زدسے باہر کے گیا اور قدم جما کر کھڑ اہو گیا۔

مجامدين كىتر كتاز

اب خان نے مولوی صاحب سے کہا کہ ذراا ہے مجاہدین کی بورش کا بھی نظارہ دکھا دیجے مولوی صاحب نے فرمایا:

خان بھائی! بید مارے مجاہدین خداکے عاجز بندے ہیں۔ان کالڑنا مجرثا صرف خداکے واسطے ہے، اپنی ناموری اور بہادری جتانے کوئیس۔ مگر خیر جو آپ نے اس امرکی درخواست کی توان کا بھی تماشاد کیھئے۔(1)

یہ فرماتے ہی مولوی صاحب مجاہدین کو لے کرسکھوں کی جانب روانہ ہوئے۔
پیر کھنڈ کے قریب پنچے تو سکھوں کی فوج میں بگل بجا اوران کی جوفوج بستی کے بائیں
جانب تھہری ہو گی تھی ،اس کی دوسفیں بن گئیں۔ایک صف اپ مقام پرجی رہی ، دوسری
صف بستی کی آڑ میں جا تھہری اور سوار قلعے سے نکل کر اس آخری صف کی پشت پر
جا کھڑے ہوئے۔منصو بدیتھا کہ جاہدین سمامنے کی صف پر جملہ کریں تو دوسری صف موقع
کی مناسبت کے لحاظ سے جملہ آوروں کے عقب میں پہنچ جائے اوران کی واپسی کا راستہ
منقطع کردے۔سواراس جنگی چال کوکامیاب بنانے میں کوئی دقیقہ سی اٹھاندر کھیں۔
مولوی صاحب نے میصورت دیکھی تو اپنی فوج میں سے بچاس جانبازوں کومقیم

^{(1) &}quot;وقاكع" جلدسوم ص: ٢٨٤

خال ساکن کا لا باغ کی سالاری میں شالی جانب بھیج دیا کہ سکھوں کے عقب سے حملہ كريں - خود طالعل محمد قندهاري اور باقي مجاہدين كے ساتھ بستى ميں سے ہوكر آتے بر سے ۔ سکھوں نے مولوی صاحب کود کھتے ہی بندوقیں سرکیں۔ اس اثناء میں مقیم خال ن نعره کیمیر بلند کیا اور این مجاهرین کو لے کریر از ورحمله کردیا۔ ادھر سے مولوی صاحب اور مالعل محر بجلی کی تیزی سے ان پر جا پڑے تھوڑی ہی دیر میں سکھ میدان چھوڑ کر بھا مکنے لگے۔ پچھکا نوں کی اس باڑیں اٹک گئے جو قلع کے اردگر دحقاظت کیلئے لگار کھی تھی اور وہ وہیں مارے گئے۔ باقی قلع میں داخل ہو گئے اور اندر سے بندوقیں سرکرنے گئے۔ مجاہدین باڑ کے دروازے پر بہنج گئے، ڈیڑھ دوگھڑی دن رہے پایندہ خال نے اپنے دو مشهور سالاروں شاما اور مندا کو بھیج کرمولوی صاحب اور مجاہدین کو واپس بلالیا اور کشادہ ولی سے اعتراف کیا کہ مجامدین کی بہادری وجوانمردی کے متعلق جو پچھ سنا تھا، اس سے زیادہ اپنی آنکھوں سے دیکھ لیا۔ اس لڑائی میں مجاہدین کا کوئی آ دی زخی تک نہ ہو ااور دونول حملوں میں سکھوں کے بچاس ساٹھ آدی مارے گئے۔ زخمیوں کا حال معلوم نہ ہوسکا۔مغرب کی نمازسرن ندی کے کنارے اوا کی گئے۔ یانچ چھ گھڑی رات مجئے خان اور مجامِد بن كالشكر كينيا بينيج محيا۔

ملك بورمين لزائي

دوسرے روز مراجعت کی تیاری ہوئی۔ پابندہ خاں نے مولوی صاحب سے کہا کہ
آپ بھوج درہ میں تھبریں، میں ملک پور سے ہوتا ہوا شام تک آپ پاس پہنچ جاؤں گا۔
ملک پوردہاں سے دواڑ ھائی کوئ پر واقع تھا۔ مولوی صاحب نے چالیس پچاس مجاہدین
امان اللہ خال کھنوی کی سرکردگی میں پابندہ خال کے ہمراہ کردیے تھوڑی دورچل کر
پابندہ خال نے امان اللہ خال سے کہا کہ آپ سرن ندی کے ساتھ ساتھ سید ھے ملک پور
چلیں، میں اوپر کے راستے سے موضع برال ہوتا ہوا آپ سے آملوں گا۔ اپنے بھی دوسو

آدمی امان الله خال کے ساتھ کردیے۔

ملک پور میں دوگڑھیاں تھیں اور دونوں میں سکھوں کی طرف سے تھوڑ ہے موڑ ہے مسلمان سپائی ستعین تھے۔ امان اللہ خال ندی کے نشیب میں سے ہوتے ہوئے دونوں گڑھیوں کے درمیان جا کھڑا ہوا۔ مسلمان سپاہیوں نے بہ ظاہر مجاہدین کا خیر مقدم کیا۔ مکئی کے بھٹے متگوادیے کہ بھون بھون کر کھا کیں۔ چنانچیسب نے تسلم سے ظہر کی نمازادا کی الیکن خفیہ خفیہ ان سپاہیوں نے چا در ہلا ہلا کر بیر کھنڈ میں سکھوں کو پیغام بھی دیا کہ جس قدر جلد ہو سکے آؤادران بچاہدوں کو ختم کر دو۔ چنانچے تھوڑی ہی دیر میں سکھا گئے۔ ان کی طرف سے بندوقیں سر ہوئیں تو دونوں گڑھیوں کے مسلمان سپاہیوں نے مجاہدین پر طرف سے مگر دیں اور گولیوں کی بارش شروع کر دی۔ یوں وہ اچا تک تین طرف سے گھر شکھوں پڑھروں اور گولیوں کی بارش شروع کر دی۔ یوں وہ اچا تک تین طرف سے گھر شکھوں پڑھروں اور گولیوں کی بارش شروع کر دی۔ یوں وہ اچا تک تین طرف سے گھر شکھوں پڑھر نے اور انہیں بھا دیا۔

اس تشکش میں میاں خال سواتی گڑھی دالوں کی گولیوں سے شہید ہو گیا۔ امان اللہ خال سکھوں کی بسپائی کے بعد شمشیر علم کر کے گڑھیوں کے سامنے جا تھہرا اور کہا کہ ہم اپنے بھائی کے خون کا بدلہ لیس کے، اور گڑھیوں کے تمام سیا ہیوں کو آل کریں ہے۔ اسلئے کہ انہوں نے دغا بازی ہے کام لیا۔ ان لوگوں نے ایک سید کو واسطہ بنا کر خطا معاف کرائی اور کہا کہ اگر ہم سکھوں کو اطلاع نہ دیتے تو وہ بچھتے کہ ہم پایندہ خال اور مجاہدین سے طے ہوئے ہیں، اسلئے ہمیں تباہ کر ڈالتے۔ بحث و گفتگو کے بعد اُن کا قصور معاف ہوا۔

مراجعت

امان اللہ خاں نے میاں خال کی میت جار پائی پراٹھوائی اورشام کے وقت مع کشکر نیلور پہنچ گیا۔ وہیں میاں خال شہید کو دن کیا۔ پایندہ خال بھی شام تک آگیا، پھروہ شیر گڑھ ہوتا ہواامب چلا گیااورمولوی صاحب اپنے مرکز جس کوٹ میں تشریف لے گئے۔

دسوال باب:

مقامی گروہوں کی فتنہائگیزیاں

یچوں پرشبخون کی تیاری

مجاہدین کیلئے اپنے مقاصد کے مطابق سعی وجہد کی فضاسازگار ہورہی تھی اور مولوی صاحب بچوں پر شبخون کی تیاری کررہے تھے، جہاں دو ہزار سکھ فصل خریف کا مالیہ وصول کرنے کیلئے آئے ہوئے تھے۔ غالبًا ہی وجہ سے بارک فاں اور محد فاں ساکنانِ بٹلوں نے عشر بھی نہ بھیا تھا۔ مولوی صاحب چاہتے تھے کہ ان علاقوں کے باشندوں پر سے سکھوں کا دباؤ اُٹھادیں اوران کی حفاظت کا کمل بندو بست کردیں۔ اس کے بغیران سے عشر وصول کرنے کا کوئی حق بھی نہ تھا۔ چٹانچہ وہ سکھوں پر شبخون کا سروسا مان کرد ہے عشر وصول کرنے کا کوئی حق بھی نہ تھا۔ چٹانچہ وہ سکھوں پر شبخون کا سروسا مان کرد ہے سے۔ اس اثناء میں اچا تک معلوم ہوا کہ ایک مقامی فننے نے سراٹھایا ہے او را یک ٹی رکاوٹ بہدا ہوگئی ہے، جس کا از ال کے بغیر سکھوں کے خلاف کوئی قابلِ ذکر تدبیر اختیار نہ کی جاسکتی تھی۔

ديشيول كالشكر

عجام بن کیلئے یہ بہت بڑی آفت تھی۔اگر وہ سکھوں کی طرف بڑھتے تو یہ لوگ بے تکلف جسی کوٹ پر قابض ہو جاتے اور مجامدین کواپنے مرکز سے محروم ہونا پڑتا۔ غور ومشورہ کے بعد یہی مناسب معلوم ہوا کہ پہلے اس فتنے کا انسداد کیا جائے پھر بہاطمینان دوسری جانب قدم اٹھایا جائے۔
قدم اٹھایا جائے۔

بجیب بات یہ ہے کہ دیشیوں کے اس اقد ام کی کوئی بھی و جموجود نہ تھی۔ مجاہدین نے نہ ان کے کسی حق سے تعرض کیا تھا اور نہ انھیں کوئی نقصان پہنچایا تھا۔ ان کی غرض صرف بیتھی کہ مقامی لوگ کاروبارِ جہاد میں حتی الا مکان تعاون کریں، بہ درجہ ہم تنزع شر دیتے رہیں تا کہ انہیں سکھوں کے تسلط سے نجات دلانے کا بند وبست ہو سکے۔ لیکن ان لوگوں کی حالت بیتھی کہ جو بجاہدین ان کی خیرخواہی میں جا نیس لڑارہے تھے، انہیں پر جتھے بنا کر حملے کیلئے تیار ہوجاتے تھے۔ سکھ اگر چہ ان کی جان، مال اور آبرو تینوں کے احرام سے سراسر بے پر واشے تا ہم ان کے خلاف کوئی قدم اٹھانے کیلئے تیار نہ ہوتے تھے۔ اس رنج افر اصورت حال پر کونسا در دمند مسلمان خون کے آنسونہ بہائے گا۔

اقدام كافيصله

غرض بخ ں پر شبخون کومعرض التوامیں ڈال کر دیشیوں کی طرف توجہ ناگزیم ہوگئ۔
مولوی صاحب نے مجاہدین کے تمام سالا روں کو جمع کر کے مشورہ کیا اور آخری فیصلہ میہ ہوا
کہ جسی کوٹ میں حلے کا انتظار کرنے کے بجائے خود پیش قدمی کی جائے۔ اگر انتظار کیا
جاتا تو اندیشر تھا کہ وہ لوگ آ ہستہ آ ہستہ مزید آ دمی جمع کرلیں گے۔ پھر مجاہدین کیلئے مقابلہ
بالکل ناممکن ہوجائے گا۔ چنانچے مولوی صاحب نے موضع مجمنیا سے جو ایک کوس جانب
شال واقع تھا، چوروپے کا غلم منگوایا اور مجاہدین میں تقسیم کردیا تا کہ سب کھا تا پکالیس اور
تیار ہوجا کیں۔ معمول کے مطابق انتجائی مجر واکساری سے بارگاہ اللی میں دعاء کی اور

(سرگزشته مجابدین)

مجاہدین کو لے کراس درے کی طرف روانہ ہو گئے جے دیشیوں نے بند کر رکھا تھا۔ یہ جسی کوٹ سے تقریباً دوکوس تھا۔ دیشیوں نے آس پاس کے پہاڑ وں پرمور ہے بنا لئے تھے اور وہ مقابلے کے لئے تیار بیٹھے تھے۔

ديشيول كافرار

مولوی صاحب نے موقع کا معائینہ کر کے مجاہدین کو درے کے دونوں جانب کے پہاڑوں پر چڑھائی کا تھم دے دیا اور وہ تھوڑی ہی دیر میں دیشیوں کے مور چوں ہے او پر بہاڑوں پر چڑھائی کا تھم دے دیا اور وہ تھوڑی ہی دیر میں دیشیوں کے مور چوں ہے او پر چھوڑ کر بھاگ نظے۔ مجاہدین تفاقب کرتے ہوئے جی بنگ پہنچ گئے۔ وہاں پھر معمولی عجوز کر بھاگ نظے۔ مجاہدین تفاقب کرتے ہوئے جی بنگ پہنچ گئے۔ وہاں پھر معمولی می جمغرپ ہوئی اور دیشیوں نے دوبارہ دراو فرارا ختیار کی ۔ مجاہدین آگے بڑھ کرموضع ترن میں جامغم رے ۔ وہاں سے ایک گولی کی زو پر شائی خاں کا قلعہ تھا۔ مولوی صاحب نے میں جامغم دے دیا۔ اس کے محاصرے کا تھم وے دیا۔ شام سے پہلے بہلے مجاہدین اس پر بھی قابض ہوگئے۔ یہ اس کے محاصرے کا تھم وے دیا۔ مام مقام تھا، للبذای کو مجاہدین نے اپنا بڑا مرکز قرار دیدیا۔

مجورى پرشبخون

قلعد شائی خال میں رہتے ہوئے تقریباً ڈیڑھ مہینہ گذر گیا تو خبر لی کہ دیشیوں اور مندھیاڑیوں نے مجبوڑی میں نو دس ہزار کا نشکر جمع کرلیا ہے۔ یہ مقام شائی خال سے تقریباً دومیل تھا اور مولوی صاحب نے پھر بہی فیصلہ کیا کہ ان کی پورش کا انتظار کرنے کے بجائے خود حملہ کیا جائے خود حملہ کیا جائے ، چنا نچہ حملے کا ساز وسامان تیار کر کے دات کے پچھلے پہر شائی خال سے نگلے ہجا ہدین کی تعداد دوسو کے قریب تھی ۔ ایک نالے پروضو کر کے اول وقت نماز فجر اداکی پھر لشکر کو تین گروہ ہوں میں تقسیم کیا : ایک گروہ کو مقیم خال کی مرکردگی میں گئی جو زئی کے بائیں جانب بھیجا، دوسرے کو لیس مجمد خال قید جاری کی سالاری میں دائیں گروں کے بائیں جانب بھیجا، دوسرے کو لیس مجمد خال قید جاری کی سالاری میں دائیں

جانب رواند کیا ،خود تیسر گروہ کو لے کربستی کے سامنے سے حملہ آور ہوئے۔ بستی کے قریب و بہتے ہے قریب و بہتے ہے قریب و بہتے ہے اور پاس کے بہاڑ پر جمع ہوئے۔ وہا گئے۔ دیشی اور ندھیاڑی بدحواس ہو کر بھا گے اور پاس کے بہاڑ پر جمع ہوئے۔ مجاہدین بھی تیزی سے تعاقب کرتے ہوئے قریب جا پہنچے، وہ لوگ دوبارہ بھا گے، پھر آٹھ کوس تک کہیں مقابلہ نہ کر سکے اور پراگندہ ہوگئے۔ مجابدین کو ظاہرین کے ، جودیشیوں کی سرحد پرواقع تھا۔

مصالحت كي درخواست

کونلہ میں مجاہدین کو بہت ساغلہ، شہداور کھی ملا۔ مولوی صاحب نے بیتمام جنسیں اٹھوا کرسٹگلی پہنچاویں، جوکونلہ سے چارکوں جنوب میں واقع تھا۔ اس اثناء میں ویشیوں اور ندھیاڑ ہوں نے ایک وفد کے ذریعے سے مصالحت کی درخواست کی جوعبدالغفورخال آگروری ، کمال خاں اگروری ، مظفرخاں بن ناصر خاں بھٹ گرامی، حبیب خال ساکن راج دواری، سعادت خال ساکن تیکری اور بعض مقامی علاء پر شتمل تھا۔ مولوی صاحب نے ان کی درخواست منظور کرلی چنانچہان کے جتنے جانور پکڑے گئے تھے، سب واپس کردیے، انہوں نے احکام شریعت مان کرعشر دینا قبول کرلیا۔ ان میں دو نامور سردار سے ایک کیول خال ، دوسرانقیب اللہ خال۔ مولوی صاحب نے اپنے ہاتھ سے آھیں مرداری کی دستاریں بہنا کمیں، جابجا قاضی مقرر کردیے تا کہ شریعت کے مطابق ان کے مقدموں کا فیصلہ کرتے رہیں اورخود قلعہ شائی خال میں رہنے گئے۔

انتظامات كى كيفيت

اب جوعلاقہ مجاہدین کے زیر اثر آچکا تھا، اور اس میں شرقی نظام جاری ہو چکا تھا،
اے انتظامی لحاظ سے چار حصول میں تقسیم کیا گیا: ایک درہ فیکری (۱) دوسرا درہ نندھیا ثر،
(۱) وادی فیکری ندھیاز اور اگرور کے درمیان واقع ہے۔ یہ تقریبا آٹھ میل ہی اور چار میل چوڑی ہے۔ اس کی سطح
ساز ھے چار ہزار ند بلند ہے۔

تیسرا دیشیوں کا علاقہ، چوتھا درہ کوئش۔ چندروز کے بعد مولوی صاحب نے ان علاقوں میں مخصیل عشر کے لئے حسب ذیل اصحاب کو تعین کردیا:

۱- ندهیاژ پیرمبارک علی همنجها نوی
 ۲- کونش اخیرشارکولی
 ۳- دیشیول کاعلاقه اخوندزاده کاجب

چوتھے جھے یعنی درہ ٹیکری میں خود مولوی صاحب موجود تھے۔وہ جہاں جے چاہتے ہے، بوقت ضرورت بھیج دیتے تھے۔اس انتظام کے ماتحت عشر ہا قاعدہ دصول ہونے لگا۔ مولوی صاحب نے تاکیدی ہدایات جاری کردیں کہ کسی بہتی کی کوئی زمین جس میں کاشت ممکن ہو، غیر مزروعہ ندرہے۔اس طرح ان علاقوں کی پیدادار بھی ہوھ گئی۔

نئىركاوث

مجاہدین کی آرزوصرف پیھی کہ اپنی پوری تو تیں بحاذِ جہاد کے استخام واستواری میں صرف کردیں ،لیکن مقامی گروہوں کی فتندا گیزیاں قدم قدم پران کے ارادوں میں حائل ہوجاتی تھیں۔ دیشیوں کی جانب سے مطمئن ہو کر مولوی صاحب نے فیصلہ کیا کہ بچوں پر شبخون ماریں ، جہاں تین ہزار سکھ آپنچ تھے، اور اپنا عمل وظل متحکم کرنے میں لگے ہوئے تھے۔ شائی خال سے بچوں تک دوروز کی مسافت تھی۔ مسافت کا تو چنداں خیال نہ تھا، تر در دکا خاص سب یہ تھا کہ بچ میں سرن ندی پڑتی تھی اور اس پرصرف ایک جگہ چوبی پیل بنا ہوا تھا، جس سے گذر نا آسان نہ تھا۔

اس مشکل کے باوجود فیصلہ کر لیا گیا کہ شبخون ضرور مارا جائے۔ چنانچہ تیاریاں شروع ہوگئیں۔اس اثناء میں موضع جسول ہے ایک آ دمی پینجبر لایا کہ علاقہ الائی (۱) کے

⁽۱) اس علاقے کے شال وشرق شر کو ستان ہے۔ جنوب میں بھو گر منگ، بقیدها شیدا محصف ربر

آ ٹھ نو ہزار آ دی کو ہانہ سے ڈیڑھ کوئ پر پہاڑ کے اوپر ایک میدان میں اترے ہوئے ہیں اور قلعہ شائی خال پر جملے کا عزم کئے بیٹھے ہیں۔ بینچر سنتے ہی چوں پرشنون کا ارادہ پھر مجور المتوی کرنا پڑا۔

بيغام مصالحت

مولوی نُصیرالدین نے دیشیوں کے سردار نقیب اللہ خاں کو بلوایا اور جار پانچ فی علم اصحاب کے ہمراہ ان لوگوں کے پاس بھیجا کہ آئیں سمجھا و اور یقین ولاؤ:

ہم ہے اور تم سے کسی طور کا علاقہ نہیں۔ تہارا ملک جدا۔ جو ہم لوگوں پر چڑھ کرآئے ہو، بیس اسر تہاری زیادتی ہے۔ اس ملک جس ہمارا مقابلہ سکھوں سے ہے اور تم مسلمان بھائی ہو، تم کولازم تھا کہ ہمارے ماتھ شریک ہو کسکھوں سے لڑتے اور جو اتی حیت دین کی نہتی تو اپنے ملک جس فاموش بیٹے رہے ۔ ناحق ہم پرندآتے ۔ سواب مناسب یمی ہے کہ اس طرف فاموش بیٹے رہے ۔ ناحق ہم پرندآتے ۔ سواب مناسب یمی ہے کہ اس طرف آئے نہ بڑھو، اینے ملک کو چلے جاؤ۔ (۱)

مجاہدین کی بورش

ان افسوس ناک حالات پر مولوی نصیر الدین اور مجاہدین کاول خون ہوتا تھالیکن وہ مجور تھے۔ حملے کی روک تھام کے سوان کیلئے کوئی جارہ کاربی ندتھا۔ مجاہدین میں سامالن جگ تقسیم ہوگیا۔ دو دوروز کی روٹیاں سب نے تیار کرلیں ، نمازِ عصر کے بعد جارسو کے

مرزشت سنی کا بقیدهاشید نزهیا اورویشی اس کی مغربی حدوریائے سندھ ہے۔ یہ پہاڑوں کی دوبزی و بوارول کے درمیان واقع ہے کو بستان کی سنت کا پہاڑ پندرہ بڑارفٹ بلند ہے، نندهیا اُ اوردکشی کی سنت کا پہاڑیمی خاصا اونچا ہے، اور تاکوٹ کے شال میں دریائے سندھ پرختم ہوتا ہے۔ وادی الائی تقریباً بارہ کیل لمبی ہے، اور اس کارقبدو سومرلح میل ہے کم نہوگا۔

(1) "وقالع" جلدسوم ص: ١١١٠

قریب بجاہدین مولوی نصیرالدین کی سرکردگی میں قلعہ شائی خان سے روانہ ہوئے ، مولوی صاحب نے روائی سے پیشتر معمول کے مطابق بارگاوالی میں دیر تک کریدوزاری کی۔ شائی خان سے دواڑھائی کوس پرنمازِ مغرب پڑھی ، وہاں سے کوس سواکوس پرالائی والوں کا لفکر تھا۔ جب بجاہدین کولی کی زدمیں پنچے تو الائی والوں نے باڑ ماری جباہدین کولی کی زدمیں پنچے تو الائی والوں نے باڑ ماری جباہدین کے چھ آدی زخی ہوئے ، جن میں ملاحل محمد قدھاری بھی تھے۔ ان کی کلائی پر کولی گئی تھی کسی ک نبان سے بے اختیار نکل کیا کہ ملاحل محمد زخی ہوگئے۔ یہ سفتے ہی ملاصاحب نے اس کے منہ پر طمانچہ مار ااور فرمایا:

چپ رہو،الی بات نہ کہوجولوگوں میں ہراس پیدا کرے۔

غرض مجامدین بے باکانہ آگے بڑھتے گئے۔ اگر چدان کی اور الائی والوں کی تعداد میں ایک اور بیس کا فرق تھا، تاہم الائی والوں پر ایسی ہیبت طاری ہوئی کہ مال واسباب اور ہتھیار چھوڑ کر بھاگ گئے۔ مولوی نصیرالدین نے تاکیدی تھم جاری کردیا کہوئی بھائی کسی چیز کو ہاتھ نہ لگائے اور بھا گئے والوں کا تعاقب جاری رکھا جائے۔

كامياب تعاقب

آگراستا تنا تنگ تھا کہ صرف ایک ایک آدی گذرسکتا تھا۔الائی والے پہاڑک چے چے سے واقف تھے۔ وہ مختلف سمتوں بی منتشر ہو گئے گر مجاہدین نے تعاقب نہ جھوڑا، یہاں تک کدوہ ایسے مقام پر پہنچ گئے جہاں حدِنظر تک برف جی ہوئی تھی۔الائی والوں کے جوگروہ دورنظر آئے، وہ بھی مجاہدین کو دیکھتے ہی بھاگ نظے۔سفر اور چڑھائی میں مجاہدین کو بہت مشقت اٹھائی پڑی تھی،اور بھوک کے غلبے نے پریشان کررکھا تھا۔ان میں جو بہت ہتھے رہ گئے کی روثیاں مولوی فتح علی عظیم آبادی اور عبداللہ پور بی کے پاس تھیں، جو بہت ہتھے رہ گئے کے روثیاں مولوی فسیرالدین نے وہی چنگی کے۔ملانور محمد قندھاری کے پاس کی کا تھوڑا سا آٹا تھا،مولوی فسیرالدین نے وہی چنگی

چنگی مجاہدین میں بانث دیا۔خودمولوی صاحب نے بھی ایک چنگی آٹا بھا لکا۔ چونکدان کے مندمیں دانت ند تصاس لئے آٹا مند کے اندر نہ جاسکا اور اڑگیا۔

برف سے گذر کر آگے بڑھے تو جگہ جگہ گو جروں کے چندگھر ملے۔ وہ اپنی بھیر بریاں نے کر بھاگ گئے تھے، اوران کے بچے پیچے چھوڑ گئے تھے۔ مولوی صاحب نے حکم دے دیا کہ ان بچوں کوکوئی ہاتھ نہ لگائے۔ دو گھڑی دن رہے بجاہدین موضع بہاری میں پہنچ گئے۔ وہاں کے لوگ بھی بستی چھوڑ کر بھاگ چکے تھے۔ مولوی صاحب نے مجاہدین میں اعلان کرادیا کہ کوئی بھائی کسی کے مال واسباب کو ہاتھ نہ لگائے، جنکے پاس کھانے کو بچھ نہ ہو، وہ جمیں اطلاع دیدے، ہم جنس تول کر دیدیں گے، تا کہ اس کا حساب رہے اور وہ لوگ واپس آئیں تو آنہیں ترج کی ہوئی جنس کی قیت دیدی جائے۔

مصالحت كى مزيد كوششيں

مولوی نصیرالدین نے یورش کے سلسلے میں انتہائی احتیاط سے کام لیا تھا۔ ان کی خواہش بیتھی کہ لڑائی طول نہ پکڑے اورجلد سے جلد مفاہمت ہوجائے۔ چنانچہ انہوں نے مقامی ملاؤں کودوبارہ ان لوگوں کے پاس بھیجا کہ تمہاری پیش دیتی کے باعث جمیں پورش کرنی پڑی، اب بھی پہنی بیش بڑا، آرام واطمینان سے بیٹھ جاؤ، فسادچھوڑ دو، اپنامال واسباب لے کرامن سے رہو۔ بی فہمائش بھی بے نتیجہ رہی۔ اس اثناء میں معلوم ہوا کہ ان لوگوں نے پٹن اور پالس (۱) سے کمک طلب کی ہے تا کہ از سرنو مجاہدین سے لڑیں۔ بہاری سے تین کوس پرسیدوں کی ایک بستی تھی ، مولوی صاحب وہاں گئے اور سیدوں سے کہا کہ ان لوگوں کو سمجھا ہے۔ ہم ان سے تعرض کے خواہاں نہیں ، وہ کیوں ہم سے لڑنے کہا کہا کہ ان لوگوں کو سمجھا ہے۔ ہم ان سے تعرض کے خواہاں نہیں ، وہ کیوں ہم سے لڑنے کہا کہا کہ ان لوگوں کو سمجھا ہے۔ ہم ان سے تعرض کے خواہاں نہیں ، وہ کیوں ہم سے لڑنے کہا کہا کہ ان لوگوں کو سمجھا ہے۔ ہم ان سے تعرض کے خواہاں نہیں ، وہ کیوں ہم سے لڑنے کہا کہا کہ ان لوگوں کو سمجھا ہے۔ ہم ان سے تعرض کے خواہاں نہیں ، وہ کیوں ہم سے لڑنے کہا کہ ان لوگوں کو سمجھا ہے۔ ہم ان سے تعرض کے خواہاں نہیں ، وہ کیوں ہم سے لڑنے کہا کہا کہ ان لوگوں کو سمجھا ہے۔ ہم ان سے تعرض کے خواہاں نہیں ، وہ کیوں ہم سے لڑنے کہا کہ ان لوگوں کو سمجھا ہے۔ ہم ان سے تعرض کے خواہاں نہیں ، وہ کیوں ہم سے لڑنے کہا کہ ان مصفطر کرنے ہوں ہم سے لڑنے کہا کہ ان سے تعرض کے خواہاں نہیں ، وہ کیوں ہم سے لڑنے کہا کہ ان سے تعرض کے خواہاں نہیں ، وہ کیوں ہم سے لڑنے کہا کہ ان سے تعرض کے خواہاں نہیں ، وہ کیوں ہم سے لڑنے کا کہا کہ کہا کہ ان سے تعرض کے خواہاں نہیں ، وہ کیوں ہم سے لڑنے کو کہ کیسیوں کی کیسیوں کھیں کو کھوں کو کیوں ہم سے لڑنے کیوں ہم سے لڑنے کی کورٹ ہم سے لڑنے کے کہا کہ کو کھوں کو کھوں کی کیں کو کھوں کو

⁽¹⁾ میمقامات علاقہ کو بستان میں واقع میں۔ پٹن ور پائے سندھ کے وائیں کنارے اور پاکس بائیں کنارے ہے۔

مولوی صاحب بہاری میں نور وزخمبرے رہے۔ وہاں سے پاؤ کوں پرنوگانواں ایک مقام ہے، وہاں الائی والوں نے نودس بزار کی جمعیت فراہم کر لی۔ چارروز تک فریقین کی طرف سے بندوقیں چلتی رہیں، چونکہ چھ میں ندی حائل تھی، اسلئے ایک دوسرے پر حملے اور دست بدست لڑائی کی نوبت نہ آئی۔

مجامدين كى مراجعت

اس اثناء میں ناصرخاں بھٹ گرامی کے فرزند مظفرخاں نے کمال خاں اگروری کے فرزند مظفرخاں نے کمال خاں اگروری کے فرر یعے سے بیغام بھیجا کہ آس پاس کے تمام لوگوں نے سکھوں سے ساز باز کرلی ہے اور خطرہ ہے کہ وہ مجاہدین کونر نعے میں لے کریمین فتم کردیں گے۔لہذا بچاؤ کی کوئی مناسب تدبیرا ختیار کر لیجئے۔

مولوی صاحب نے مجروح اور معذور مجاہدوں کو مملئی بھیج دیا۔ (1) خود جنگل سے درخت کو انے شروع کے اور اعلان کر دیا کہ ہم ندی عبور کرنے کیلئے پل بنوا ناچا ہتے ہیں تاکہ ایک دم تملہ کر کے لڑائی کا فیصلہ کر دیں۔ یہ در اصل مخالفوں کو مرعوب کرنے کی ایک تدبیر تھی۔ پھر حکم دیدیا کہ زور وشور سے بندوقیں اور شاہینیں سرکی جا کیں تاکہ مخالفوں پر ظاہر ہوکہ مجاہدین پارا ترنے والے ہیں۔ رات ہوئی تو مجاہدین کو مراجعت کا حکم دیدا۔ خود میں چاہدین کو مراجعت کا حکم دیدا۔ خود میں چاہدین کو مراجعت کا حکم دیدا۔ خود میں چاہدین آدمیوں کے ساتھ محاف جنگ پر تھی رے دے ہوڑی دیر بعد خود روانہ ہوئے اور ملائعل محمد قدماری سے فرمایا کہ ہم گولی کی زور پہنے جا کیں تو آپ ہمارے پیچے ہوئے۔ اس میں تو آپ ہمارے پیچے کئے۔

⁽۱) روایت میں بتایا حمیا ہے کہ دو قند هاری زخی تھے۔ ان کے علاو العل مجمد جگدیش پوری ،مجمد قائم ساکن اگروالہ ، گلشیر ساکن کالا باغ ،شاہ ولی نولی اور برکات مظفراً بادی تپ ولرزہ میں مبتلا تھے۔ بیٹملئی چلے مجئے۔

ديبهات كادوره

شملئ سے مولوی صاحب نے دیہات کا دورہ شروع کردیا۔ اس سلسے میں مندرجہ ذیل دیہات کے نام آئے ہیں: بٹن بوڑی، کا کرسٹک، بھٹ گرام، چھتر گرام، حاجی میرا، پھٹوڑا، چوہن، دہریاں، بہانیاں، تیاں، فیکری اور پورا۔ جس مقام پر جانے، پوچھتے کہ آیا لوگوں نے ہماری مخالفت میں دشمنوں سے ساز بازی ہے؟ وہ براءت کا اظہار کرتے۔ تمام مقامات پر بجابدین کی مہما نداری ہوئی۔ پھٹوڑا کے ایک سیٹھ کی دکان پرمولوی صاحب کی ہنڈیاں آئی تھیں۔ وہ ملاقات کیلئے آیا تو نذر کیلئے شیرینی لایا۔ یوں دورہ کرتے ہوئے مولوی صاحب قلعہ شائی خاں پہنچ گئے۔ اٹی غیر حاضری میں شخ ولی محمد دورہ کرتے ہوئے مولوی صاحب قلعہ شائی خاں بینچ گئے۔ اٹی غیر حاضری میں شخ ولی محمد میں اور شاہینیں اور شاہینیں دورہ کی گئیں۔

گیار ہواں باپ:

پکھلی پرشبخون

بثلول يرجهايا

پہلے بیان کیا جاچکا ہے کہ سمھوں کا خاصا بڑالشکرشنگیاری ہے اٹھ کر پچوں میں جمع ہوگیا تھا تا کہ آس پاس کے علاقول سے خراج وصول کر ہے۔ مولوی نصیرالدین ای لشکر پر چھاپہ مارنے کا ارادہ کئے بیٹھے تھے۔ جب الائی والوں کی بے وجہ یورش اس ارادے کی شکیل میں حائل ہوگئی، اس اثناء میں سکھوں نے اپنا اٹر ورسوخ متحکم کر لیا اور بٹلوں کے رکیس بارک خال اور محمد خال بھی ان سے ال گئے تھے۔ الائی والوں سے فارغ ہوکر مولوی صاحب پھر سکھوں کی طرف متوجہ ہوئے اور تقریباً سواسومجاہدوں کو لے کر قلعہ شائی خال سے نگلے۔ پچھ مقامی لوگ بھی ساتھ ہوگئے تھے۔ شائی خال سے پانچ چھ کوس کے فاصلے پر جھتر نام ایک وسیع میدان ہے، جس میں دوسری بستیوں کے علاوہ سیدوں کی ایک بستی لاچھی بنگ واقع ہے۔ مولوی صاحب وہال تھر بے اور حیا لیس بچیاس مجاہدوں کو اس خرض لاجھی بنگ واقع ہے۔ مولوی صاحب وہال تھر گئے اور جیا لیس بچیاس مجاہدوں کو اس غرض لاجھی بنگ واقع ہے۔ مولوی صاحب وہال تھر گئے اور جیا لیس بچیاس مجاہدوں کو اس غرض لاجھی بنگ واقع ہے۔ مولوی صاحب وہال تھر گئے اور جیا لیس بچیاس مجاہدوں کو اس غرض لیے بنلوں بھیج دیا کہ بارک خال کوساتھ لے آئیں۔

غالبًا مولوی صاحب کا مقصد بیتھا کہ اس سے گفتگوکر کے بچوں پر یورش کی تدابیر اختیار کر یں۔ بٹلوں لاچھی بنگ سے صرف دوکوں بہ جانب مشرق واقع تھا۔ معلوم ہوتا ہے کہ مجاہدین کی آمد کے متعلق عام افواہ کھیل گئ اور بارک خال اپنے دس آدمیوں کے ساتھ کہ بستی چھوڈ کر اس پہاڑ کی طرف بھا گاجہاں سے سکھوں کالشکر قریب تھا۔ مجاہدین نے اس کا

تعاقب کیااور گرفتار کے لاچھی بنگ لے آئے۔

بارك خال كاقتل

مولوی صاحب جس مقام پر تھہرے ہوئے تھے وہ بستی سے ایک میل باہر تھا۔
''ولا یق'' مجاہدین بارک خال سے با تیں کرتے جارہ شے۔ انہوں نے کہا خان
صاحب! آپ بوے وانا ہیں۔ خدانے آپ کوسر واری کا منصب دیا ہے۔ کس قدر افسوں کا
مقام ہے کہ آپ مسلمانوں کا ساتھ چھوڑ کر سکھوں سے ل گئے ہیں۔ اس نے جواب دیا:
سب یہ ہے کہ سکھوں کا پایہ بھاری ہے۔ وہ صاحب ملک اور صاحب
طومت ہیں اور تم لوگوں کو میں اس قدر صاحب شوکت وسلطنت نہیں دیکھا،
آج یہاں ہو،کل اور کہیں چلے جاؤ گے۔ اگر صاف صاف تمہارا شریک
ہوجاؤں تو کہاں رہوں؟

اس بیان سے طاہر ہے کہ بارک خال کے پیش نظر کوئی دینی یا قو می مقصد نہ تھا، وہ اس کا ساتھ دینا چاہتا تھا جس سے اس کی دنیوی اغراض بہ سہولت پوری ہوتی رہیں،خواہ وہ کوئی ہو،اورخواہ اس تعاون ہے دینی اور قومی اغراض کو کتنا ہی نقصان پنچے۔

یہ بات سنتے ہی سید میر کے ایک ہمراہی سپاہی کو اتنا غصر آیا کہ بے تامل بجری ہوئی قرابین چلادی اور بارک خال وہیں ڈھیر ہوگیا۔ سپاہی ای وقت بھاگ گیا۔ مولوی صاحب کو میہ اطلاع کمی تو صد درجہ ناخوش ہوئے۔ ملاگلزار خال جمعدار سے فرمایا کہ اپنے آدمی لے جائے اور بارک خال کی میت کولاچھی بنگ میں وفن کرد یجئے۔ چنانچہ اس ارشاد کے مطابق عمل ہوا۔

پیش قدمی

لاچھی بنگ ہے اٹھ کر مولوی صاحب رچھاڑی پہنچے جو درہ بچوں میں واقع ہے۔

وہاں سے پیجوں دوکوس تھا۔ سکھوں کواطلاع مل گئی، رچھاڑی اور پیجوں کے درمیان سرن ندی بہتی تھی۔ وونوں شکرندی کے دونوں کناروں پر کھڑے گولیاں چلاتے رہے۔ یورش اور دست بدست لڑائی کی نوبت نہ آئی۔

تین دن ای طرح گذر گئے، چوتے دن مولوی صاحب نے مقیم خال ساکن کالا باغ کومجاہدین کی ایک جماعت کے ساتھ بنجول بھنج دیا۔ راستے میں کیے بعد دیگر ہے دوندیاں پر تی تھیں۔ مقیم خال انہیں عبور کر کے بنجول پہنچا اور وہاں دودن سکھوں سے لڑتا رہا، آخر انہیں شکست دے کر مال واسباب لے آیا۔ دونوں ندیوں کے درمیان سکھوں نے بھر حملہ کیا اور پہرسوا پہر تک لڑائی جاری رہی۔ مجاہدین میں سے دوشہید اور دوزخی ہوئے۔ سکے پھر شکست کھا کرلوٹ گئے اور مقیم خال کا میاب وہا مرادمولوی صاحب کے یاس پہنچ گیا۔

بٹلوں میں قلعے کی تجویز

پھرمولوی صاحب بٹلول پہنچ گئے اور فیصلہ کیا کہ اس مقام پر ایک قلعہ بنا کر سو
پچاس مجاہدین بٹھا دینے جا بمیس تا کہ سکھوں کیلئے آس پاس کے علاقے پر تسلط کا کوئی
امکان باقی ندر ہے، اور لوگ مظمئن ہو کر کاروبار جاری رکھ سکیں۔ بٹلوں سے باہر ایک
چھوٹا ساٹیلا تھا اسی کو قلعے کیلئے منتخب فر مایا۔ اس اثناء میں دوہندوستانی مجاہد ناراض ہوکر
راہی وطن ہوئے۔ مولوی صاحب نے نظام الدین خال شاہ جہال پوری، متنقیم خان
جہان آبادی، ابر ابیم نگرامی اور رحیم بخش سہار نبوری کو ان کے پیچھے بھیجا کہ سمجھا بجھا کر
والیس لے آسکیں۔ افسوس کہ یہ فیمائش سود مند نہ ہوئی۔ مولوی صاحب کے قلب صافی پر
والیس لے آسکیں۔ افسوس کہ یہ فیمائش سود مند نہ ہوئی۔ مولوی صاحب کے قلب صافی پر
اس واقعہ کا ایسانا خوش گوار اگر پڑا کہ وہ تھیر قلعہ کی تجویز معلق چھوڑ کرشائی خال واپس چلے
اس واقعہ کا ایسانا خوش گوار اگر پڑا کہ وہ تھیر قلعہ کی تجویز معلق چھوڑ کرشائی خال واپس چلے

کے تبویز کردہ مقام پر قلعہ بنالیا اور وہاں خاصی بردی جمعیت بٹھا دی۔ اس وجہ سے مجاہدین کو جونقصان اٹھانا پڑا اُس کی کیفیت آگے چل کربیان ہوگ۔

پکھلی پرشبخون

کے دریا بعد مقیم خال ساکن کالا باغ نے مولوی تصیرلدین سے عرض کیا کہ پھلی میں سکسوں پرشبخون کی اجازت دی جائے۔ مولوی صاحب موصوف نے فرمایا کہ فاصلہ نیادہ ہے، اسلئے چست وجالاک مجاہدین چن کر لے جائے۔ چنانچہ مقیم خال ڈیڑھ سومجاہدول کے ہمراہ شائی خال سے روانہ ہوا، اور پہلی منزل سنگل کوٹ میں کی جو درہ کوئش میں پیر خیلوں کی بہتی ہے اور سید قمر علی شاہ اُن کا رئیس تھا۔ مجاہدین وہاں سے چلے تو اُہل میں جا مظہرے۔ تین جاسوں پہلے سے مختلف سمتوں میں بھیج رکھے تھے کہ معلوم کرآئیں، کہاں کھرے۔ تین جاسوں کی جمعیت ہے اور شبخون کیلئے کون کون سے مقامات موز وں ہوں گے۔ خود مقیم خال اُہل سے نگلاتو کو شایاں میں جا تھر اجو پھلی کی سرحدیروا قع ہے۔ تین جاسوسول میں سے دو واپس آگئے اور اطلاع دی کہ شبخون کیلئے کوئی موز وں جگہ نظر نہیں آتی، اسلئے کہ سکسوں نے جا بجا قلعے اور چوکیاں بنا رکھی ہیں۔ ہرجگہ خاصی فوج متعین ہے اور عام افواہ پھیلی ہوئی ہے کہ مجاہدین کا حملہ ہونے والا ہے۔ اس و جہ سے سب لوگ چوکس ہیں افواہ پھیلی ہوئی ہے کہ مجاہدین کا حملہ ہونے والا ہے۔ اس و جہ سے سب لوگ چوکس ہیں۔ اور افرانہوں نے پہریداری کے پورے انظامات کرر کھے ہیں۔

سكھوں ہےلڑائی

مقیم خاں کوشبخون کی جانب سے مابوی ہوگئ تو فیصلہ کرلیا کہ سرن ندی کے کنارے کنارے کنارے گنارے گئارے کا بہتے جا کیں۔ چنانچہ وہ رونہ ہوا۔ اچھڑیاں نام بستی میں ایک چشمے کے کنارے مجاہدین کھانا کھانے گئے بھنکیاری وہاں سے دوکوں ہوگا، جہاں سکھوں کی فوج کا بڑا مرکز تھا۔

کھانا کھاتے ہوئے ایک مجاہد نے اٹھ کرشنگیاری کی طرف دیکھا تو معلوم ہوا کہ پچھآ دمی چلے آرہے ہیں۔ چنانچہ تمام مجاہدین ہتھیار سنجال کر کھڑے ہو گئے۔تھوڑی دریمیں سکصول کی ایک جمعیت نمودار ہوئی ، بیلوگ نوسو کے قریب تھے،سوار کم بہاد ہے زیادہ۔ چ میں ندی حاکل تھی مجاہدین کنارے کنارے ندی کے اوپر کی طرف روانہ ہوئے تا کہ کسی موز دل مقام ہے یار اتر کرلڑیں۔ سکھوں نے سمجھا کہ مجاہدین تلت ِ تعداد کے باعث مقابلے سے پہلوتھی کررہے ہیں۔اس اثناء میں فریقین کی طرف سے گولیاں بھی چل رہی تھیں۔ ایک مقام برعبدالغفار خال جعدار ساکن پکھلی نے مجاہدین کو پکارا کہ بهائيو! ديکھتے کيا ہو؟ آؤان پر دھاوا ٻول ديں۔ پير کہتے ہی عبدالغفار خاں ندي ميں کود پڑا۔ کمرےاوپر یانی تھا تاہم وہ گولیوں کی بارش میں یاراتر گیا، باقی مجاہدین نے بھی اس کا ساتھ دیا اور تلواریں تھنچ کر بحل کی تیزی ہے سکھوں پر جاپڑے یہیں بچیس سکھ وہیں مارے گئے، باقی بدحواس ہوکر بھا گے۔ مجاہدین نے وہڑیال نام بستی تک ان کا تعاقب کیا، جوتقریباً اڑھائی کوس برتھی۔ وہاں تک ستر استی سکھ ہلاک ہوئے ،مجاہدین میں ہے سن کے خراش تک نہ آئی ۔مقتول سکھوں کے ہتھیار لے کرمجابدین لائی بنگ اور سنگل کوٹ میں کھبرتے ہوئے شائی خاں پہنچ گئے۔

بارہواں باب:

دیشیوں کی خوفنا ک سازش

نى سازش

مجاہدین پھر اطمینان سے اپنے اصل کام میں مصروف ہو گئے تھے کہ لکا یک دیشیوں نے ان کے خلاف دوبارہ سازش کرلی جھے کامیاب بنانے کیلئے اتفا قا ایک اچھا موقع پیدا ہوگیا۔ وہ اس طرح کہ بابندہ خال والی امب نے مولوی نصیرالدین کے پاس پیغام بھیجا:

. آپجام**رین کو لے کرشیر گڑھ**آ جا ئیں ،وہاں سے پکھلی پہنچ کرسکھوں پر حملہ کریں **مے۔**

مولوی صاحب موصوف تین سومجاہدوں کے ساتھ شیر گڑھ پہنچے۔ وہاں سے پایندہ خال کے ہمراہ بیر کھنڈ کا رُخ کرلیا اور بھوج درہ میں مقام کیا۔ شخ ولی محد کے پاس شائی خال میں صرف بچاس ساٹھ مجاہدین رہ گئے تھے۔ اس دوران میں دیشیوں نے ایکا کر کے مجاہدین کوشہید کریں مرکے مجاہدین کوشہید کریں جود یہات میں جا بجا بھورے ہوئے تھے۔ پھرشائی خال پر چڑھائی کرکے باتی مجاہدین کو موت کے کھاٹ اُتاردیں۔

متفرق مجابدين برحمل

چنانچ مولوی صاحب کے جاتے ہی دیشیوں نے اپنے منصوبے کے مطابق عمل

شروع كرديا-روايات معلوم بوتاب:

ا - شخ ولی محرکے ہیلے کا ایک مجاہد خدا بخش بلند کوٹ میں شہید کرڈ الا گیا۔

۲- ملاً لعل محمد قندهاری کے بہیلے کا ایک آدی فیض محمد موضع آتھل میں متعین تھا، وہ موت کے گھاٹ اتاردیا گیا۔

۳- شخ نسکھ میسر کوبھی بلند کوٹ ہی میں متعین کیا گیا تھا اوراس نے مجد کے حجرے میں اقامت اختیار کرر کھی تھی ، رات کے وقت اس پر بھی حملہ ہوالیکن وہ شمشیر زنی کے کمالات سے کام لیتے ہوئے چار آ دمیوں کوزخی کر کے بھاگ نکلا اور شیخ سلامت شائی خال پہنچ گیا۔

سے دیشیوں کوسب سے زیادہ دشمنی ملا کا تب اخوند زادہ سے تھی، جوان کے علاقے میں مخصیل کا حاکم اعلی تھا۔ موصوف کو ہروفت اطلاع مل گئی اور وہ رات کو نگلے بدن بھاگ کرشائی خال پہنچ گیا۔

باقی مجاہدین کے متعلق سخت تشویش تھی ،لیکن وہ سب بخیر و عافیت دوسرے یا تیسرے دن شائی خال میں داخل ہو گئے۔گویادیشیوں کا میں منصوبہ نا کام رہا،البتہ جسیا کہ اوپر بتایا جا چکا ہے، دومجاہد سراسرناحق ، دے گئے۔

دِفاعی تدابیر

اس اثناء میں دیشی گجوڑی کے مقام پرجمع ہونے لگے۔ شخ ولی محد نے قلعے پر پہرے کا پختہ بندوبست کرلیا۔ قلعے سے ساٹھ ستر قدم پرایک چشمہ تھا، جس سے پانی لیا جاتا تھا، اس پر برج بنا کر دو پہرے لگادیے تاکہ پانی کی رسد محفوظ رہے اور مولوی نصیرالدین کو بھوج درہ پر پیغام بھیج دیا کہ جلد سے جلدوا پس آ جائے۔

باینده خال نے سکھول پر پیش قدی کی تجویز ملتوی کردی۔خود اسب واپس چلا میا

ورا پنے دواڑھائی سولشکری مھند اجمعدار کی سرکردگی میں مولوی صاحب کے ساتھ شائی غاں بھیج دیے۔ بیسب بندرہ بیں روز حملے کا انظار کرتے رہے۔

مهندا کی تدبیر جنگ

جب دیشیوں کی طرف ہے کوئی اقدام نہ ہوا تو مھندا جمعدار نے شیخ صاحب اور بولوی صاحب کی اجازت سے خوولا ائی جھیڑنے کی ایک معقول تدبیرا فقیار کی۔اس نے بیاس ساٹھ تنولیوں کو تھم دیا کہ ممرہ پر ہوتے ہوئے دیشیوں کی طرف جا کیں، اٹھیں کیصتے ہی بندوقیں سرکریں۔ جب وہ مقابلے پڑکلیں تو کو ٹ پڑیں۔اس مذہبر کا مقصد رپہ عا کہ دیشی قیام گاہ سے اٹھ کرشائی خال کے قریب آ جائیں تا کہ ان سے لڑائی کا اچھا و تع نکل آئے۔

دیشیوں کی پسیائی

اس تدبیر برعمل ہوا اور دیثی تنولیوں کا تعاقب کرتے ہوئے ہزاروں کی تعداد میں نائی خال پر بڑھے۔ادھرےمولوی صاحب اورمھند اجمعدار اُکےمقابلے کیلئے نکلے۔ اج دواری کا سردار بلندخاں سب ہےآ گے بڑھ کر تنہاان پرحملہ آ ور ہوااور تھوڑی ہی دیر ں اس نے حاریائج دیشیوں کو زخمی کردیا، پھر باقی لوگ ان پر ٹوٹ بڑے۔ دلی ا جواس ہوکر بھا گے، ڈیڑھکوں تک ان کا تعاقب کیا گیا اور تمیں جالیس آ دمی موت کے لھاٹ ا تار دیے گئے۔مجاہدین میں سے دونے شہادت یائی۔ چونکہ شام ہوگئ تھی اس لئے سب لوگ تعاقب چھوڑ کر داپس آ گئے۔

سامانِ رسد پر حجماییہ

اس اثناء میں معلوم ہوا کہ سکھوں کی طرف ہے گولی بارود کا بہت بڑاذ خیرہ دیشیوں

(سرگزشته مجابدین ------

کے لئے بھیجاجار ہاہے اور صرف بچاس ساٹھ آ دی اس فرخیرے کی حفاظت پر متعین ہیں۔ عبد الغفار خال ساکن پکھلی نے نیلی شنگ اور بھگوڑ اکے درمیان ان لوگوں پر چھاپ مارا اور ساراسا مان لوٹ کرلے آیا۔

اس دانعے سے یہ حقیقت بھی واضح ہوگئی کہ دیشیوں نے سکھوں سے ساز ہاز کے بعد مخالفانہ قدم اٹھایا تھا ورنہ سکھوں کی طرف سے سامانِ جنگ انہیں کیوں بھیجا جاتا؟ یقین ہے کہ اس ساز باز میں سب سے بڑا حصہ اُن رئیسوں اور سر داروں نے لیا ہوگا جو اپنی جاگیروں کی حفاظت کے جنون میں اسلامی مقاصد سے بالکل بے پروا تھے، اور مسلمانوں کی جانوں سے بے تکلف کھیل رہے تھے۔

بلندكوث برشبخون

دیثی بسپاہور گجو زی میں جابیشے تو مولوی نصیرالدین نے بچاس ساٹھ مجاہدین کی ایک جماعت کو قیم خال کی سرکروگ میں بلند کوٹ پر بھیج دیا اور فرمایا کہ تمہاری کمک کے لئے اگرور سے بھی آ دی آ کیں گے اور نما نے فجر کے بعد ہم بھی پہنچ جا کیں گے۔ تیم خال اپی جماعت کو لے کرعشاء کے دفت شائی کوٹ سے روانہ ہوا۔ چری بنگ میں ایک چشے پر سب نے وضو کیا، دہاں سے ایک کول بہاڑ پر بلند کوٹ تھا۔ اس بہاڑ پر چڑھے تو صبح پر سب نے وضو کیا، دہاں سے ایک کول بہاڑ پر بلند کوٹ تھا۔ اس بہاڑ پر چڑھے تو صبح صادق نمودار ہور ہی تھی، بجاہدین نے نماز پڑھی۔ اُدھر سبتی میں شور چھھ گیا کہ مجاہدین آ گئے اور مولوی صاحب بھی تشریف لے آئے۔ چھودیر بعدا گرور سے بھی کمک پہنچ گئی اور مولوی صاحب بھی تشریف لے آئے۔ چی دیر بعدا گرور سے بھی کمک پہنچ گئی اور مولوی صاحب بھی تشریف لے آئے۔ چی دیر بعدا گرور سے بھی کمک پہنچ گئی اور مولوی میں خصمت اللہ نے مجاہدین کی مہمانداری کی۔

منججوزى يردهاوا

حرید مارروز گذر مے _ بانچویں رات کومولوی صاحب نے مجبوڑی پر دھاوے کا

فیصلہ کیا اور فر مایا کہ بچاس ساٹھ مجاہدین راتوں رات اس بہاڑ برجا چھیں جو گجوڑی کے
او بروا تع ہے۔ ہم صبح کو حملہ کریں گے، تواس وقت بیمجاہدین کمین گاہ نے تکل کر گجوڑی ک
طرف آئیں۔ چتا نچے سید میر خال کو بچاس ساٹھ مجاہدین کے ساتھ گجوڑی کی طرف روانہ
کردیا گیا، سب لوگ گھروں سے نکل کر بہاڑ برجع ہو گئے اور وہاں سے بندوقیں چلانے
گئے، لیکن کسی مجاہد کو گزندنہ بہنچا۔ سید میر خال نے خود آگے بڑھ کر حملہ کر دیا۔ بیلوگ وہاں
بھی ندھہر سکے اور دوسری طرف بہاڑ کے بنچا تر گئے۔ بہاڑ کے نشیب میں شدگلیاں اور
شکھالیاں نام دوبستیاں تھیں۔ ان کے درمیان اہل وعیال کو چھوڑ کر دو ہزار کے قریب
دیشی مجاہدین کے مقابلے پر نکلے۔ ادھر سے قرابینیں سرہو کیس تو دیشی پھر بھاگ نکلے۔
کوس سواکوں پرموضع کوٹ گلہ تھا، وہاں تک تعاقب کیا گیا، اس اثناء میں مولوی نصیراللہ بن
کیس سواکوں پرموضع کوٹ گلہ تھا، وہاں تک تعاقب کیا گیا، اس اثناء میں مولوی نصیراللہ بن

اقرارإطاعت

اب دیشیوں نے بے بس ہوکرا پنے ملا وَں کوعذرداری کے لئے بھیج دیا۔ مولوی صاحب نے فرمایا کہ ہم شدگلی میں قیام کریں گے، وہیں آخری فیصلہ ہوگا۔ چنانچہ وہاں پہنچ کر دیشیوں نے اطاعت کا اقرار کرلیا۔ ان کی خطامعان کردی گئی، تمام بستیوں سے عشر کا غلہ گدھوں اور خچروں پر بار ہو ہوکر شائی خاں چینچنے لگا۔ مولوی صاحب قلعے میں واپس چلے گئے۔ اس کے بعد مجاہدین جب تک شائی خاں میں مقیم رہے، ویشیوں نے مرکثی اور تمروکی کوئی حرکت نہ کی۔

(سرگزش<u>ت مجابد ب</u>

تيرهوال باب:

مجامدین کے چھاپے

جترر برپیش قدمی

ویشیوں کی طرف سے اطمینان ہوگیا تو مقیم خال ساکن کالا باغ نے مولوی

نصیرالدین ہے عرض کیا کہ اجازت ہوتو میں درۂ پچوں میں جا کر جبڑ پر چھاپہ مارنا چاہتہ

ہوں، جوسکھوں کی عملداری میں واقع ہے۔مولوی صاحب نے اجازت دیدی اور مقیم خال دوسومجاہدوں کے ساتھ نماز ظہر کے بعد شائی خال سے روانہ ہوا۔ رات اچھی بنگ

علی اور اور ایران کے ایکے میں گزاری میں ہیالاگ موضع بالی منگ میں ہینچے، وہاں کھانے

علی کا نظام تو نہ ہوسکا البتہ مقامی لوگوں نے ہرمجاہد کی خدمت میں کمئی کے آٹھر آٹھ بھٹے پیش

کرویے۔ وہاں سے پہاڑ پر چڑھائی شروع ہوگئی۔سارا دن سفر میں گذرا،نمازِ مغرب کروچے۔ وہاں سے پہاڑ پر چڑھائی شروع ہوگئی۔سارا دن سفر میں گذرا،نمازِ مغرب

کے وقت پہاڑ کی چوٹی پر پہنچے۔ وہاں سے اتر نے گلے تو گھاس میں سے گذرنا پڑا جو اتنی کمبی تھی کہ سینے تک آتی

تھی۔ سوئے اتفاق سے دہاں برکات مظفر آبادی کی تلوار میان سے نکل کر گریزی اور اندھیرے میں تلاش کے باوجود ندل کی۔ طالعل محمد قندھاری نے اپنے بہیلے کا ایک آدمی

برکات کے ساتھ کردیا اور فرمایا کہ رات بھر یہاں تھہرے رہو، صبح کو اجالا ہوگا تو تلوار

ڈھونڈلینا، ہاتی مجاہدین علی الصباح دامنِ کوہ کی ایک ویرانِ بہتی میں پہنچ گئے ، جہاں سے جتمر ایک میل ہوگا، وہیں صبح کی نماز ادا کی۔

كامياب حمله

ای مقام سے جڑ پر حملہ کیا۔ مجاہدین بکلی کی تیزی سے بہتی میں جا پہنچ ۔ جس قدر مال واسباب ہاتھ لگا، پہاڑ کے او پر پہنچا دیا۔ جڑ سے نصف میل پر ایک اور بستی تھی پھھ مجاہدین وہاں بھی جاپنچ ۔ اس وقت معلوم ہوا کہ پچوں سے سکھوں کا نشکر مقابلے کے لئے آ پہنچا ہے، ان کی گولیاں مجاہدین پر برسنے لگیں۔ طابعل جمہ قندھاری اور مقیم خال نے یدد کیصتے ہی تلواریں سونت کران پر جملہ کردیا۔ پہلے ہی جلنے میں پچیس تمیں سکھ مارے گئے اور باتی بھاگ گئے ۔ مجاہدین مال غنیمت لے کر اطمینان سے پہاڑ کی چوٹی پر پہنچ اور وہاں نماز ظہر اوا کی۔ جس بستی میں رات ہوئی، وہاں کھانے کوکوئی چیز نہل سکی، مجورا مرف گوشت پر گزارہ کیا گیا۔ ایکے دن وہاں سے چل کرشام کومملئی پہنچے۔ بعض مجاہدین خراہ گئے۔

چہلے پر چھاپہ

چندروز بعداطلاع ملی کے شنمیاری کے سکھول نے درہ بھوگڑ منگ کی ایک بستی چہلے میں بہت سامال واسباب جمع کررکھا ہے۔ چنانچے مولوی نصیرالدین نے اس مقام پر چھا ہے کا فیصلہ کرلیا اور اڑھائی سوآ دمی لے کراُ دھرروانہ ہوئے۔ رات درہ کونش کی ایک بستی ملکانام میں گزاری ہے کوروانہ ہوئے قوعمر کے وقت سران ندی کے کنارے پنچے۔ ندی کے دوسرے کنارے پنچے۔ ندی کے دوسرے کنارے پر سکھ موجود تھے۔ مجاہدین کو دیکھتے ہی وہ بندوقیں چلانے لئے۔ ندی عبور کرنے کا کوئی سامان نہ تھا، لہذا مجاہدین اس کے کنارے کنارے روانہ ہوئے۔ سکھ بھوگڑ منگ کی طرف لوٹ گئے۔ نظر بہ ظاہراُن کا مقصدیے تھا کہ بڑالشکر لاکر مجاہدین کامقابلہ کریں۔

چہلے میں داخلہ

کوئی دوکوس کی مسافت طے کرنے کے بعد لکڑی کا ایک بل طا، جس بہتی پر مجاہدین چھاپہ مارنا چاہتے تھے، وہ بل کے قریب واقع تھی۔ بہتی والے مجاہدین کا حال س کر بل گرانے کیلئے دوڑ ہے لیکن مجاہدین نے ان کے پہنچنے سے پہلے ہی بل پر قبضہ کرلیا۔ ملا لعل محمد قندهاری نے ایک جہاعت بل کی حفاظت کیلئے متعین کردی، باقی مجاہدین کو لے کربہتی میں پہنچ گئے۔ وہاں کے لوگ پہلے ہی گھر بار چھوڑ کر پہاڑ پر چڑھ گئے تھے، انہوں نے مجاہدین پر گولیاں چلائی شروع کیس، لیکن بستی میں داخل ہوجانے کے بعد مجاہدین بالکل محفوظ ہوگئے۔ سکھوں نے تھی، شہد، غلہ وغیرہ بہ کشرت جمع کر رکھا تھا، اس پر قبضہ بالکل محفوظ ہوگئے۔ سکھوں نے تھی، شہد، غلہ وغیرہ بہ کشرت جمع کر رکھا تھا، اس پر قبضہ کرئیا۔ چھروز بہ اطمینان وہاں بیٹھے رہے۔ مولوی صاحب کے پاس شائی خاں میں پیغام ارسال کردیا کہ کہ چھڑ بھیجے ویں تا کہ ان پرسامان بار کیا جا سکے۔

سکھوں کی آید

چھے روز خبر کی کہ تقریباً چہ سو کھ شکیاری ہے آرہے ہیں۔ مالعل مجمہ نے مقیم خال
سے کہا کہ اندیشہ ہے، وہ لوگ بل پر قابض نہ ہوجا کیں۔ اگر ابیا ہوا تو ہمارے لئے
واپسی کوئی راستہ باتی نہ رہے گا۔ لہذا یا تو آپ ستی میں تھبریں اور میں پچاس ساٹھ
مجاہدین کے ساتھ بل کی حفاظت کیلئے چلا جا تا ہوں، یا آپ وہاں جا کیں اور میں بہاں
مجمبرتا ہوں۔ مقیم خال فور اروانہ ہو گئے۔ اس اثناء میں اطلاع کی کہ مائسمرہ سے مزید دو
تین سو کھ قریب آپنچ ہیں۔ اتفاق یہ کہ مولوی کی طرف سے بار برداری کا کوئی جانورنہ
پہنچا اور ملائعل محمہ نے ساتویں روز مراجعت کا فیصلہ کرلیا۔ مختلف مجاہدین جتنا سامان خود
اٹھا سکے اٹھالیا، باتی چھوڑ دیا۔ بل سے گذرتے وقت پانچ چے سوسکھ پاس کی ایک پہاڑی
پرنمودار ہوئے انہوں نے گولیال بھی چلائیں، جن استے دونین آدی زخی ہوئے، لیکن وہ

آ گے نہ بڑھےاور مجامدین لاچھی بنگ تھہرتے ہوئے شائی خال بھٹے گئے۔

بثلون میں سکھوں کا قلعہ

ہم بتا چکے ہیں کہ مولوی نصیرالدین بٹلوں میں ایک قلعہ بنانا چا ہتے تھے کہ آس پاس
کے علاقے کی حفاظت کا انظام بہتر طریق پر ہوسکے،لیکن بعض مجاہدین کی ناراضی کے
باعث یہ تجویز التوامیں پڑگئی۔سکھوں کوموقع ملاتو انہوں نے بٹلوں میں ایک مضبوط قلعہ
بنایا اور اس میں تین چار ہزار جنگجو بٹھا دیے۔ اس طرح آس پاس کے علاقے پر ان کا
تسلط متحکم ہوگیا۔ مجاہدین کیلئے اس کے سواچارہ ندر ہا کہ انتظار کریں اور جب مناسب
موقع پیدا ہو بورش کر کے اُس قلع کو متحر کرلیں۔

اس سلسلے میں بیخطرہ بھی خاصی اہمیت اختیار کر چکا تھا کیمکن ہے کہ سکھ کسی وقت بٹلوں کے قلعے سے اٹھ کرشائی خال پر بلہ بول دیں ،للبذا درمیانی علاقے میں حفظ و دِ فاع کے ضروری انتظامات کر لئے گئے۔

كوث ميں ا قامت

بٹلوں سے شائی خاں کی جانب دوکوں پرموضع کوٹ تھا۔مولوی نصیرالدین نے مقیم خال کو حکم دیا کہ ایک سومیں آ دمی لے جا داور کوٹ میں تھم و مقیم خال سے جلاتو سیر سا کوٹ کو نہ گیا ہاکہ میں آگے لاچھی بنگ جا پہنچا،
کوٹ کو نہ گیا بلکہ شارکول ہوتے ہوئے کوٹ سے کوئی ایک میل آگے لاچھی بنگ جا پہنچا،
وہاں مشیروں سے بوچھا کہ میں سکھوں پرشبخون مارنا جا ہتا ہوں، آپ کا مشورہ کیا ہے۔

شبخون کے متعلق رائے

مشیروں نے جواب دیا کہ ہم سب آپ کے ساتھ مرنے مارنے کو تیار ہیں الیکن میہ سوچ لیجئے کے سکھوں کی جمعیت ہزاروں پرمشمل ہے اور ہم پورے سواسو بھی نہیں کدانجام پرخوب غور کر لینا چاہئے۔ ہوسکتا ہے ہم اپنے مقصد میں کامیاب نہ ہوں اور سکھے ہارے تعاقب میں نکل پڑیں، پھر نہ ہم کوٹ میں تھرسکیں سے اور نہ شائی خال میں۔ اگر آپ شبخون ہی پر تلے بیٹے ہیں تو کم از کم مولوی نصیرالدین سے مشورہ کے بغیر کوئی قدم نہ اٹھا ناچاہئے۔

چور پہرے

چار ہزار کے قلعہ نشین کشکر پرسوا سوآ دمیوں کے ساتھ شبخون مارنے کا عزم مقیم خال کے غیر معمولی جو شبخ عت کا ایک کرشمہ تھا۔ مشیر ول نے جن خطرات کا اظہار کیا تھا، ان کے پیش نظر مقیم خال کیلیے التواء کے سواچارہ ندر ہا۔ چنا نچہ وہ کوٹ میں مقیم ہو گیا اور بٹلوں کی سمت میں تین چور پہروں کا انتظام کر دیا: ایک لاچھی بنگ میں، دوسرا باخلہ میں اور تیسرااروڑی میں۔ شام کو چند مجاہدین ان مقامات پر جا بیٹھتے ، رات و ہاں گزار تے اور مسح کی نماز کے بعد کوٹ چلی آتے۔ ان چور پہروں کا مقصد میں تھا کہ سکھوں کی طرف سے معمولی سابھی مخالفا نہ اقدام ہوتو اس کی اطلاع کوٹ کے بجابدین کوٹو را ہوجائے۔

سکھول کی بورش

مقیم خال کوکوٹ میں پنچے ہوئے بارہ تیرہ دن گذرے تھے کہ ایک رات کواروڑی کے چور پہرے والوں میں سے ایک نے دُورسکڑ دل تو ڑے چیکتے دیکھے اور سمجھ لیا کہ سکھ چھاپہ مارنے کوآر ہے ہیں۔ اس نے نور اُبندوق دا فی اور ساتھی پہرے داروں کو لے کر بہاڑ پر چڑھ گیا۔ باقی چور پہرے والے اور کوٹ کے جامدین ہوشیار ہو گئے۔ صبح کی نماز پڑھ کر وہ بھی بہاڑ کی چوٹی پر جا پہنچے۔ سکھان سے بچاس ساٹھ قدم نیچے رہ گئے، ان سکھوں میں گڑھی کا خان، حبیب اللہ خال بھی شامل تھا، جو سکھوں کو بٹلول میں لانے کا فرمہ دار تھا۔ مقیم خال نے سید میر خال جمعد ار کو تھم دیا کہ جالیس مجامدین کے ساتھ بہاڑ کی مددار تھا۔ مقیم خال نے سید میر خال جمعد ار کو تھم دیا کہ جالیس مجامدین کے ساتھ بہاڑ کی مددار تھا۔ مقیم خال نے سید میر خال جمعد ار کو تھم دیا کہ جالیس مجامدین کے ساتھ بہاڑ کی مددار تھا۔ مقیم خال نے سید میر خال جمعد ار کو تھم دیا کہ جالیس مجامدین کے ساتھ بہاڑ کی میں بھارگی کے ساتھ بہاڑ کی میں ساتھا۔

چوٹی پر جے رہواورخوداس نے اسّی مجاہدین کو لے کرسکھوں پر مملہ کردیا۔اس اثناء میں سکھوں کی ایک کو لید دخاں قندھاری کے سینے پر گلی اور وہ سے کہتے ہوئے جان بحق ہوگیا کہ بھائیو! میرا کام تمام ہو چکا۔ میرے پاس تھر نے سے پچھ فائدہ نہیں۔سب آگ بوھ کر وشمن کو مارو۔ مقیم خال نے بے در بے تین بلتے کئے۔ ہر بلے میں بندرہ بیس سکھ مارے جاتے تھے۔ آخر سکھ لیہا ہوگئے۔ مجاہدین میں سیدمیر نام ایک نوجوان گو جر بھی شامل تھا، وہ یہاڑی چوٹی پر دوڑا دوڑا بھرتا تھا اور باآواز بلند کہتا تھا:

"شاباش بهائيوا شاباش اوشمنون كوخوب مارد مولوى صاحب بهى كمك

لے کرآ رہے ہیں۔''

ایک جگہ جھاڑی میں پچھ سکھ چھے بیٹھے تھے،ان کی گولی سے سیدمیر شہید ہوگیا۔
بالآ خرسکھ ناکام واپس چلے گئے ،مجاہدین میں سے دوشہید (مددخاں اورسیدمیر) اور چھ
زخمی ہوئے۔ ملا الہام الدین کے کلئے پرزخم آیا،نورمحدخاں قندھاری کی کلائی زخمی ہوئی،
فتح خاں ولا بتی کے سینے میں اور اکبرعلی خال سواتی کی ران میں گولی گئی۔ دو ولا بتی
مجروحوں کے نام معلوم نہ ہوسکے۔

اس واقعہ کے بعد مولوی نصیرالدین نے حکم دیدیا کہ کوٹ کے پاس پہاڑ کی چوٹی پرایک بُرج بنالیا جائے ، جس میں بچاس مجاہدرہ سکیں۔ ہر مہینےان مجاہدوں کی تبدیلی ہوتی رہتی تھی۔

چودهوال باب:

خوانين إگر در كاانجام

يسمنظر

ہم قبل ازیں پابندہ خال تولی اور خوانین اگر در کی عدادت کاذکر کر چکے ہیں۔ پابندہ خال کی بورشوں نے عبدالغفور خال اور کمال خال کواگر در سے نکال دیا تھا اور وہ وادئ فکری کے ایک مقام چو ہان ہیں مقیم تھے۔ لیکن پابندہ خال کے مقبوضات ہیں وقا فو قا لوٹ مار کرتے رہتے تھے۔ یہ بھی لکھ چکے ہیں کہ ممکن ہے، پابندہ خال کے سامنے دوسرے مقاصد بھی ہوں ، تا ہم مجاہدین کو جس کوٹ میں تظہرانے کا ایک بہت بڑا مقصد میں مجھی تھا کہ خوائین اگرور کی قزا قاند دست ار دکا سلسلہ ختم ہوجائے۔ چنا نچاس مقصد میں غیر معمولی کا میابی حاصل ہوئی۔ مجاہدین کی وجہ سے خوائین اگرور کے چھاپے نہ صرف غیر معمولی کا میابی حاصل ہوئی۔ مجاہدین کی وجہ سے خوائین اگرور کے چھاپے نہ صرف فیر معمولی کا میابی حاصل ہوئی۔ مجاہدین کی وجہ سے خوائین اگرور کے چھاپے نہ صرف فیر معمولی کا میابی حاصل ہوئی۔ مجاہدین کی وجہ سے خوائین اگرور کے چھاپے نہ صرف

تاہم عجیب بات یہ ہے کہ سرحدی خوانین میں ہے کسی کی بھی نظریں ذاتی مقاصد سے بلند تر نہ تھیں۔ ہر خض اس وقت تک مجاہدین کا ساتھ دیتا رہتا جب تک اُسے کار برآری کی تھوڑی بہت امید گلی رہتی۔اس امید کے پوراہوتے یا ٹو نئے ہی وہ مجاہدین سے الگ ہوجاتا بلکہ معاندانہ پیش دی میں بھی تامل نہ کرتا۔خوانین اگر وربھی اس عام سطح سے بلند نہ رہ سکے اور نتیجہ ایک خونچکاں المیہ کی صورت میں ظاہر ہوا، جس کی تفصیل اس باب کا موضوع ہے۔

خوا نین کی تو قعات اور دورُخی

عبدالغفورخان اور کمال خان اس توقع پرمجاہدین کے معاون بنے تھے کہ اگرور میں از مرنور پاست قائم کرنے کا بندوبست ہوجائے گا۔بعض روایتوں ہے معلوم ہوتا ہے کہ وہ مجامدین کوعشر دینے پر بھی آ مادہ تھے،لیکن مجاہدین پایندہ خال کے تعاون کی بنا پر جسی کوٹ پنچے تھے گردو پیش کےخوانین میں پایندہ خال بدلحاظ قوت ومردا تگ سب سے بزها مواتهااوراس كاتعاون مقاصد جهاد كيلئة زياده يسے زياده تقويت كا باعث موسكتا تھا۔ لہذا مجامدین کیلئے کوئی ایساقدم اٹھا ناسراسرخلاف مصلحت تھاجو پایندہ خال کے لئے حققی کا باعث ہوتا ۔ چنانچہ وہ عبد الغفور خاں اور کمال خاں کو اگر ور میں آباد کرنے پر آمادہ نہ ہوئے،البیتہ جب وادی میکری میں نہیں عمل خل کا موقع ملاتو عبدالغفور خاں سے خاص مراعات کا برتاؤ کیا، یعنی أے عشر ہے متثنی رکھا اور بیجمی کہددیا کہ جب آپ کے آ دمی جہاد میں امداد کیلئے ہارے یاس آئیں گے تو انھیں دوسرے عابدین کی طرح با قاعدہ رسد ملا کرے گی عبدالغفور خاں نے بہ ظاہر توان انظامات کوخوش ولی سے قبول کرلیالیکن اس کادل مجاہدین سے پھر گیااوراس وقت ہےاس نے خفیہ خفیہ سکھوں کے ساتھ سازباز کے انتظامات شروع کردیے۔

گڑھی کا خان حبیب اللہ خال، عبد الغفور خال کا حقیقی ماموں تھا اور وہ تھلم کھلا سکھوں سے ملا ہوا تھا۔ عبد الغفور خال اب اسے برا بھیختہ کرنے لگا کہ سکھوں کالشکر لے کر مجاہدین کوختم کر دوتا کہ اگرور خالی ہوجائے اور میں (عبد الغفور) سکھوں کی سرپرتی میں اس پر قبضہ کرلوں۔

خفيه خط وكتابت

جب سکھ بٹلوں میں قلعہ بنا کر بیٹھ مجئے اور مجاہدین نے ان کے مقابلے کیلئے کوٹ

کے او پر بُرج بنالیا تو عبدالغفور خال کا ایک خط صبیب الله خال کے نام پکڑا گیا جس کا مضمون مذتھا:

تم چار پائچ ہزار سکھوں کی جمعیت رکھتے ہواور سوسواسو بجاہدین تم سے دوکوں پر کوٹ بیں پڑے ہیں۔ اگر ان پر شبخون لاؤ اور ان کو مارلوتو قلعہ شائی خال تک تمباراعمل دخل ہوجائے اور جو تمبارے مقابلے سے بھا گر کرادھر آئیں گے اُن کو میں بجھ لول گا اور وہاں قلعہ شائی خال میں تمبارا مقابلہ کوئی نہ کرےگا۔ (1)

موضع قبولہ کا قاضی احمد مجاہدین کا خیرخواہ تھا، وہ پہلے بھی مولوی نصیرالدین کو بتا چکا تھا کہ عبدالغفور خال کی روش ٹھیکے نہیں۔اس خطے تاضی موصوف کے بیان کی تصدیق ہوگئ، تا ہم مولوی صاحب نے صبر پختل ہے کام لیا۔ یہی مناسب سمجھا کہ انتظار کریں اور دیکھیں حالات کیاصورت اختیار کرتے ہیں۔

سکھول کے جس چھاپے کا ذکرہم گزشتہ باب میں کر چکے ہیں، اس سے چندروز بعد پھرکوٹ میں عبدالغفور خال کا ایک قاصد پکڑا گیا، اس کے پاس سے جو خط برآ مدہواوہ اس امر کا مزید ثبوت تھا کہ عبدالغفور خال معاندانہ ترکوں میں بدستور سرگرم ہے۔ چنانچہ بیخط لے کرملائل محمد قندھاری، اخوندگل بشاوری اور قاضی احمد، مولوی صاحب کے پاس کئے اور کہا کہ اس کا تدارک ہونا جا ہے، تساہل ہرگز مناسب نہیں۔

خيرخوا هون كااصرار

روایت مظهر ہے:

قاضی احمہ نے بہت غصے ہوکر مولوی صاحب ہے کہا، آپ اس مفسد کا تدارک نہیں کرتے بلکہ اس کے بھائی (کمال خاں) کو اپنار فیق سجھتے ہیں، یہ

^{(1) &}quot;وقائع" جلدموم ص: ٢٦٥

بات خوب نہیں۔ اگر آپ ان کے مارنے کی قد بیر نہیں کرتے تو سمجھ لیجئے ہم سب ولا بق آپ کے دشمن جانی ہیں، کیونکہ یہ مفسد ہماری نیخ کئی کے در بے ہیں اور آپ اس کوا کی سال سامحا ملہ بیجھے ہیں۔ مولوی صاحب نے کہا کہ خفور خاں تو البت مفسد ہے اور اس کے خطوط بھی کچڑے گئے ہیں مگر کمال خال نے تو آج کے کئی فن فریب ہمارے ساتھ نہیں کیا، اگر باطن میں پچھ شرارت کرتا ہو تو وہ جانے ، ہم کو خرنہیں۔ (۱)

غرض مولوی صاحب کسی تادیبی کارروائی کیلئے تیار نہ تھے،خصوصاً کمال خال کووہ عبدالغفور کی طرح مجرم مانے پر بھی آمادہ نہ تھے، لیکن مقامی خیرخواہوں اورولایتی مجاہدوں نے حدور جہ معقول دلائل اور محکم شواہد کی بنا پر ایسی روش اختیار کرلی کہ مجاہدین کا قیام بھی معرض خطر میں پڑھیا، چنا نچے مولوی صاحب مجبوراً خوداس معاملے سے بے تعلق ہوگئے۔ مقامی آ دمیوں اور ولا بی مجاہدوں نے بطور خودعبد الغفور خال اور کمال خال کوئم کرنے کی اسکیم بنالی۔

سکھوں کو پیچھے ہٹانے کی تدبیر

بٹلوں میں قلعہ بنا لینے سے سمھوں کا خطرہ بہت بڑھ گیا تھا۔ پابندہ خال نے اس خطرے کوختم کرنے کی تد ہیر بیسو چی کہ ہیر کھنڈ پرحملہ کردیا جائے۔خیال بیتھا کہ ادھر دہاؤ پڑے گا تو سکھ بٹلوں کوچھوڑ کر چیچے ہے جائیں گے۔ چنانچہ پابندہ خال اور مولوی صاحب شیر گڑھ سے بھوج درہ ہوتے ہوئے کینیا گئے، جو ہیر کھنڈ سے صرف دوکوں تھا۔ وہاں چھ سات دن تھہرے رہے ہیکن بٹلوں میں سکھوں کی جمعیت پرکوئی اثر نہ پڑا۔ پابندہ خال کا اندازہ سیح ثابت نہ ہوا، لہٰذا وہ اور مولوی صاحب کینیا سے مراجعت پرمجبور ہوگئے۔

^{(1) &}quot;وقائع" جلدسوم ص:٢٤٦

خوا نین اگرور کےخلاف جرگہ

خوانین اگرور کوتل کرنے کامنصوبہ جن اصحاب نے تیار کیا اور اسے پایر محیل پر پہنچایا،ان میں سے نمایاں اور متازیہ ہیں:

ا- قاضی احمرساکن قبوله ۲- اخوندگل پیثاوری ۳-ملالعل محمر قندهاری ۲-مقیم خال ساکن ۲-مقیم خال ساکن که طلاوه بهی متعدد لوگ شریک بنتے، لیکن وه سب مقامی یاو لایتی تھے، کالا باغ ۔ ان کے علاوہ بھی متعدد لوگ شریک بنتے، لیکن وہ سب مقامی یاو لایتی تھے، ہندوستانی کوئی نہ تھا۔

عبدالغفورخال اپنے مرکز چوہان میں مقیم تھا۔ کمال خال بچاس ساٹھ آدمیوں کے ساتھ کوٹ آیا ہوا تھا۔ قبل کامنصوبہ یہ قرار پایا کہ بچھ آدی چوہان جا کرعبدالغفور خال کو موت کے گھاٹ اتاریں، بندوقی درمیانی بہاڑی چوٹی پر بیٹے رہیں، وہ چوہان میں بندوقیں چلنے کی آواز سنتے ہی خود بندوقیں سرکردیں تا کہ کوٹ والے آگاہ ہوجا کیں اور فی الفور کمال خال پر حملہ کر کے اسے ختم کرڈ الیس۔ چنانچ گزار خیبری، نور محمد خرد جلال آبادی اور اخوندگل پٹاوری بچاس ساٹھ آدمیوں کے ساتھ عبدالغفور کے تل کیلئے چوہان آبادی اور اخوندگل پٹاوری بچاس ساٹھ آدمیوں کے ساتھ عبدالغفور کے تل کیلئے چوہان کے ساتھ عبدالغفور کے تل کیلئے چوہان سے کوٹ میں رہے۔

عبدالغفورخال كآثل

جولوگ چوہان گئے تھے، وہ مسجد میں جاتھ ہرے۔ وہاں سے ایک گولی کی زدپر عبدالغفورخال کی گڑھی تھی ،جس کے اردگر د تمین طرف نالا بہتا تھا۔مسجد کی ست ہموار میدان تھا۔عبدالغفورخال دوخدمت گاروں کے ساتھ مسجد میں آیا،معلوم ہوتا ہے کہ دہ حقیقت حال کو بھانپ گیا تھا،تھوڑی دیروہاں بیٹھا، پھریہ کہتے ہوئے اٹھا کہ میں گڑھی میں جاکر آپ لوگوں کیلے کھانے پینے کا بندوبست کرتا ہوں۔نور محمد خرد قرابین لے کر ساتھ ہوگیا، اخوندگل پٹاوری نے ساتھیوں سے کہا دیکھتے کیا ہو، ہلہ بولو، سب لوگ تلواریں تھینچ کردوڑے۔عبدالغفور خاں نالے کی طرف بھاگا،نور محمدنے قرابین ماری اور و فشیب میں گرکر جال بحق ہوگیا۔

كمال خال كاخاتمه

قرابین کی آواز سنتے ہی ان لوگوں نے بندوقیں داغ دیں جودرمیانی پہاڑ کی چوٹی پر بیٹھے تھے۔اس طرح کوٹ میں عبدالغفور خال کے مارے جانے کی خبر پہنچ گئی۔ ملاحل محمد اور مقیم خال مشورے کی غرض سے کمال خال کوچیت پر لے گئے، اس کے ہاتھ میں تلوار تھی جے دیکھنے کے بہانے ملاحل محمد نے لے لیا۔ مقیم خال نے قرابین ماری۔ کمال خال گرتے ہی ختم ہوگیا اور صرف بیالفاظ اس کے منہ سے نکلے:

ذال گرتے ہی ختم ہوگیا اور صرف بیالفاظ اس کے منہ سے نکلے:

دمقیم خال ! تم نے دغا کی۔'

انتظامات

اس المیے کی اطلاع شائی خال میں شیخ ولی محمہ کے پاس پینجی تو موصوف اور مجاہدین بے حدمتالم ہوئے۔اسی وفت شیخ صاحب نے حسن خال عظیم آبادی (۱)، کریم اللہ خال میواتی (۲)، کریم بخش سہار نپوری (۳) اور ملا الہام الدین (۴) کو چوہان بھیج دیا کہ عبد الغفور خال کی تجمیز وتکفین کا انتظام کریں۔اس کے اہل وعیال اور مال واسباب کو

⁽¹⁾ بیصاحب کومدت بعداؤ تک چلآئے تھے، نواب وزیرالدولہ نے انہیں اسلحہ فانے کاداروفہ بنالیا تھا۔

⁽٢) يېچى نونك مى ملازم بوڭ تھے۔

⁽٣) يونك بوت بوع كم معظم على تعددين مقيم باوروفات بال-

⁽٣) يېمى تو تك قصيم تلے اور نواب وزيرالدولد نے انہيں رسالدار كاعبد ودے ديا تھا۔

حفاظت میں لے لیں۔ چنانچہ یہ لوگ چوہان پہنچ عبد الغفور خال کے بیٹے کومستورات نے اٹا کے پاس بستی میں بھیج دیا تھا۔ کمال خال کا بیٹا جس کی عمر سات برس کی ہوگی ،گڑھی ہے آکر حسن خال کی مود میں بیٹھ گیااور بولا:

میرا باپ جب کوٹ میں جانے لگا تو وصیت کر کیا تھا کہ بیٹا! اگر میں ماراجاؤں تو تم اپنی مال کو لے کر قلعہ شائی خال میں مولوی صاحب کے پاس چلے جانا، وہ تمہاری معاش کے لئے کچھ مقرر کردیں گے۔ یہاں تمہارا چیا (عبدالغفورخال) تمہیں ردثی ندد کے گا۔

۔ پچکی ہے باتیں س کر حسن خال اور ان کے ساتھی آب دیدہ ہو گئے عبد الغفور خال کو فن کردیا۔ گرھی میں اس کے اہل وعیال اور دوسر ہے متعلقین کیلئے کھانا پکوا کر جیجوایا۔
چاروفت تک کھانے کا انتظام مجاہدین کی طرف سے ہوتا رہا، بعد از ال عبد الغفور خال اور مملک کمال خال کے بال بچول کو بستی میں بھجوا دیا۔ ان کے دو بھیجوں اللہ داد خال اور جمعہ خال سے بھی کہدیا کہ اطمینان سے رہو ہم سے کوئی تعرض نہ ہوگا۔ گڑھی میں اپنے پہرے مقرر کر دیے۔

پاینده خال کی آرزو

یوں مت مدید کے بعد پابندہ خال کی آرزوئے انقام پوری ہوگئ۔ وہ خودخواشین اگرورکوٹھکانے ندلگاسکا تھا، قدرت ہی کی جانب سے اس امر کا انتظام ہو گیا۔ جیسا کہ ہم پہلے کہہ چکے ہیں، پابندہ خال کے قد برکا کمال ہیہ ہے کہ اس نے مجامہ بن کوجسی کوٹ میں بھاتے وقت اشارۃ مجمی اس مقصد کا ذکر ند کیا تھا، اور اس کی تکیل حالات کی طبعی رفار پر چھوڑ دی تھی۔معلوم ہوتا ہے کہ اسے پختہ یقین تھا کہ جاہدین کوجسی کوٹ میں بٹھا دیے ہی سے اصل مقصد پورا ہوجائے گا، اگر چہ بیا ندازہ نہ ہوکہ کیونکر پورا ہوگا۔ مجاہدین کے ہیں۔

خواب دخیال میں بھی یہ بات نہ تھی کہ اگرور ایوں ہے کسی نوع کی تھکش پیدا ہوگی ،عبدالغفور خاں کی دورُخی نے معاملات آخری منزل پر پہنچادیے۔

دونوں بھائیوں میں ہے کمال خال کا آتل اس لئے حددرجہ در دناک ہے کہ اس سے عجابدین کے خلاف عناد کی کوئی حرکت سرز دنہ ہوئی تھی، جیسا کہ مولوی نصیرالدین خود اعتراف فرما چکے تھے۔لیکن مقامی لوگوں اور ولایتیوں نے اسے غالبًا اس و جہسے قبل کیا کہ مکن ہے، کمال خال بعداز اس بھائی کے خون کا بدلہ لینے کے لئے ہنگامہ بیا کرے۔ یہ بہر حال نظر بہ ظاہراس کے مظلوم مارے جانے ہے کی کو اختلاف نہیں ہوسکتا۔ (۱)

⁽۱) '' وقائع'' کی ایک روایت بیس بنایا گیاہے کہ سیدصاحب بنجارے جمرت کرکے بسکھیلسی کی طرف گئے تھے تو کمال خال کی خواہش بھی ، آپ کو اگر ور بیں وقوت و سے عبد الغفور خال کی پس و پیش کے باعث اس پڑمل نہ ہوسکا۔ جلد سوم میں: ۴۷۸

بندر ہواں باب:

بڻلوں میں خونریز جنگ

بٹلوں پر حملے کی تیاری

بٹلوں سے سکھوں کو تکا لئے کے لئے پایندہ خاں اور مولوی نصیر الدین نے ہیر کھنڈی جانب پیش قدمی کی تھی، جس کا ذکر او پر کیا جاچکا ہے۔ لیکن اس سے کوئی نتیجہ برآ مدنہ ہوا۔ بعد از ال اس کے سواچارہ ندر ہا کہ براہ راست بٹلوں پر حملہ کیا جائے ، کوٹ میں مجاہدین نے جملے کے جومور ہے بنائے تھے ان کی غرض بھی یہی تھی، چنا نچہ مولوی نصیر الدین نے جملے کے لئے تیاری شروع کردی۔

بٹلوں بین سلموں نے دفائی استحکامات کمال پر پہنچار کے تھے، مثلاً کوٹ کی طرف بٹلوں کے عین سامنے ایک نالاتھا، پیٹلوں کی حفاظت کا ایک قدرتی سامان تھا۔ خود بٹلوں ایک میدان میں واقع تھا اور آئی بہت پر پہاڑ کے دامن میں قلعہ تھا، قلع کے بٹلوں ایک میدان میں واقع تھا اور آئی بہت پر پہاڑ کے دامن میں قلعہ تھا، قلع کے مضبوط شکر بنالیا تھا۔ اس باڑ کے بیرونی جھے میں شختے نصب کردیے گئے تھے۔ باڑاتی او نجی تھی کہ اندر آ دی کھڑا ہوجائے تو باہر سے مض سرنظر آسک تھا۔ اس میں صرف ایک دروازہ تھا جو مشرقی جانب واقع تھا، گویا یہ او نجی جگہ بھی ایک مضبوط گڑھی بن گئی تھی۔ سکھوں کی جمعیت اور اعلی استحکامات کے سروتے ہوئے جملہ بہل نہ تھا، تا ہم مولوی صاحب نے ضروری سامان تیار کر لینے کا تھم درے دیا، چنانچے سید قطب شاہ حیدر آبادی دکی نے بہت سے سینگ اور جھینوں کی آنتیں دے درے دیا، چنانچے سید قطب شاہ حیدر آبادی دکن نے بہت سے سینگ اور جھینوں کی آنتیں

بارود سے بھر لیس تا کہ حملے سے پیشتر انہیں آگ دے کرسکھوں پر پھینک سکیس ۔ متعدو نمٹیاں بھی بنالیس تا کہ حملے کے وقت انہیں بار کے ساتھ لگا کرشگر کے اندر بیٹنی سکیس۔

کوٹ ہےروانگی

تیاریاں کمل ہوگئیں تو مولوی صاحب نے مجاہدین میں گولی بارود تقسیم کردی، وہ سب چیر سب چارسو کے لگ بھگ تھے۔ کوٹ میں جو چیزیں اورجنسیں موجود تھیں، وہ سب چیر مبارک علی تھنجھا نوی اور فتح محمد سہار نیوری کے حوالے کردیں کہ شائی خال لے جا کیں۔ گویا مولوی صاحب ایک فیصلہ کن حملے کا ارادہ کر چکے تھے، جس میں اندیشہ تھا کہ ممکن ہے، سکھوں کے جوابی حملے کی و جہ ہے کوٹ خطرے میں پڑجائے۔ عصر، مغرب اورعشاء کی نمازوں میں سر برہند ہوکر دعاء کی کہ جس کام کیلئے جاتے ہیں، اللہ تعالی اسے پورا کرنے کی توفیق دے اور استقامت نصیب کرے۔ مجاہدین کو تاکید کی کہ گنا ہوں سے تائب ہوکر مغفرت کی دعائیں مائلو، عشاء کے بعد کم بندی کا تھم دیا۔ چلنے گئو فرمایا:

تائب ہوکر مغفرت کی دعائیں مائلو، عشاء کے بعد کم بندی کا تھم دیا۔ چلنے گئو فرمایا:

خودمولوی صاحب خچر پرسوار ہوئے ، مجاہدین بیادہ تھے۔

ابتدائى حمله

چلتے چلتے نالے پر پہنچ، جس میں کمرتک پانی تھا۔ وہاں سے تقریبا نصف کوئ سنگر تھا۔ اے بائیں جانب چھوڑ کر پہاڑ پر چڑھنے لگے تا کداد پر سے اُز کر حملہ کریں۔ جب مجاہدین چڑھتے پڑھتے سنگر کے محاذ میں بہنچ گئے تو سب نے اول وقت نماز اداکی۔ آگے برھے تو بچپاس ساٹھ سکھ نظر آئے، جو سنگر سے نکل کر آ رہے تھے، مگر اندھیرے میں نہ سکھوں نے بچاہدین نے سکھوں کو۔ ایک سکھنے بنجا بی میں پوچھا:
سکھوں نے بچاہدین کو بہچپانا، نہجاہدین نے سکھوں کو۔ ایک سکھنے بنجا بی میں پوچھا:

تم کس کے ڈیرے ہے آئے ہو؟ ایک ہندوستانی نے جواب دیا: تو کیا کہتاہے؟

یہ من کر سب سکھ'' مجاہدین آگئے، مجاہدین آگئے'' پکارتے ہوئے سنگر کی طرف بھائے۔ مجاہدین بائد آواز سے تعمیر کہدکر حملد آور ہوئے۔ سنگر وہاں سے کوئی نصف میل تھا سکھ بندوقیں لے کر تیار ہوگئے اور گولیاں برسانے لیگے، لیکن مجاہدین ایک لمحے کے لئے بھی ندر کے ۔ طالعل محمد قندھاری کے نشان بردار لال میر قندھاری نے گولیوں کی بارش میں اپنا نشان سنگر کی باڑ پر جا کر گاڑا، باقی چارنشان برداروں نے بھی کے بعد دیگر ہے میں اپنا نشان وہیں پہنچادیے۔ اس حملے میں بندرہ سولہ مجاہدین شہادت یا گئے۔

مجاہدین کی پریشانی

اس موقع پر بجابدین کواس و جہ سے خت پر بیٹانی لاحق ہوئی کہ وہ باڑے کودکرسگر

کاندر نہ جاسکتے تھے۔اس مقصد کیلئے قطب شاہ حیدرآ بادی نے جوسامان تیارکیا تھا یعن

بارود سے بھرے ہوئے سینگ، بارود سے بھری ہوئی بھینسوں کی آنتیں اور نمٹیاں، وہ سب

پہاڑ ہی پررہ گئ تھیں ۔ جملہ اس طرح ا جا تک اور آ نافا ناہوا کہ عجلت میں بیسامان ساتھ نہ لیا

جاسکا۔ سکھ شکر کے اندر بیٹھ گئے اور مجاہدین کی گولیوں سے بڑی حد تک محفوظ ہوگئے، لیکن

خود مجاہدین ہرست سے گولیوں کا ہدف ہے ہوئے تھے اور ان کے گردوپیش کوئی اوٹ نہ

مقی۔ پہاڑ پر سے نمٹیاں یا دوسر اسامان لا نااس وقت غیر ممکن تھا، قطب شاہ نے با تکا (۱)

افھایا اور ایک مقام سے باڑکا شنے لگے، مگر ظاہر ہے کہ اس شم کی کوئی تد بیر چنداں مؤثر نہ

ہوسکی تھی۔ خود مولوی صاحب مجاہدین سے بیچھے، پہاڑ کی اونے ائی پر کھڑ رے لڑائی کا حال

⁽١) باتكابانس ياشافيس يابازكاف كالمجرابوتاب، جدرواتول ين كتا (بكاف منوح) بتايا كياب.

د کیور ہے تھے عبداللہ خرداور شیخ فتح علی عظیم آبادی ان کے پاس تھے۔

ملانعل محمر كى شہادت

مجاہدین کی خاصی بڑی تعدادشہید ہو چکی تھی۔ سکھوں کی گولیاں مینہ کی طرح برس رہی تھیں۔ بیرحال دیکھ کرایک جماعت سنگر سے تھوڑے فاصلے پڑتھنگ کررہ گئی۔ ملاحل محمد قندھاری نے لاٹھی اٹھائی اوران لوگوں کوشکر پر جملے کا تھم دینے کے لئے پلنے ،عین اس حالت میں ان کے قلب پرگولی گئی اور شہید ہو گئے۔ (۱)

مولوی نصیرالدین کے ہمراہیوں میں مالعل محد قدھاری کو وہی بلند درجہ حاصل تھا جس پرسیدصا حب کے رفقاء میں سے مولانا شاہ اساعیل فائز تھے۔ جماعت مجاہدین کے لئے یہ بہت بڑا نقصان تھا۔ ملائے موصوف نے اس زمانے میں سیدصا حب کی رفاقت اختیار کی تھی جب آپ بہ قصد جہاد قدھار سے کا بل کی طرف روانہ ہوئے تھے۔ کم وہیش سات سال جماعت مجاہدین کے روح روال بن رہے۔ اکثر از ایموں میں انہیں سبقت کا شرف حاصل ہوا۔ بہت جوائم د اورصالح بزرگ تھے۔ جنگ مردان کے بعد مولانا شاہ اساعیل نے دومجاہدوں کے کارناموں کو بے حد قابل قدر قرار دیا تھا: ایک مولوی مظہر علی مطلع کے دوئی کھا کرزمین پراس انداز میں بیٹھ گئے کہ معلوم ہوا پاؤں میں کا نتا چھ گیا ہے۔ تمام رفیقوں کو بچار مالعل محمد کی برطا ہرنہ ہونے دیا، شوی کو بچار کو ایک رفرمار ہے تھے: ''تم چلو میں ابھی آتا ہوں''۔ دوسرے جاہد مالعل محمد رفیقوں کو بچار کو ایک رفرمار ہے تھے: ''تم چلو میں ابھی آتا ہوں''۔ دوسرے جاہد مالعل محمد اس قندھاری تھے، مردان کے ایک برج سے برابر گولیوں کی بارش ہورہی تھی، ملائل محمد اس کے پاس بینچ گئے اور ساتھیوں کو پشتو میں تھم دیا: ''اندر پائی راوڑا، اندر پائی رواڑا، اندر پائی کیا بھوری سے میں بھوری سے میں بھوری سے میں بھوری سے میں بھوری ہورائی کے میں بھوری ہورائی کے بھوری ہورائی کو بھوری ہورائ

⁽۱) روایت مظہر ہے کہ کو لی ملائعل محمد کے جانب دیپ پہلو میں گئی۔ چونکدان کی موت آنا فافا واقع ہوئی اس لئے میرا خال ہے کہ موصوف کا قلب بیصافی کو لی کا نشانہ ہنا۔

سیرهی لاؤ، سیرهی لاؤ۔ حالانکہ دہاں کوئی سیرهی نہ تھی۔ برج والوں نے سمجھا کہ مجاہدین او پر چڑھتے ہی ان کا خاتمہ کردیں گے لہٰدا اُنہوں نے ہتھیارینچے بھینک دیے اور اپنے آپ کو حوالے کردیا۔

اس کتاب کے دسویں باب میں آپ پڑھ چکے ہیں کہ علاقہ الائی کے لوگوں سے جنگ پیش آئی تھی تو ملافعل محمد کے بھی کلائی پر گولی گئی تھی۔ کسی مجاہد نے کہا کہ ملا صاحب زخمی ہوگئے تو موصوف نے اس کے تھیٹر مارتے ہوئے کہا ایسی بات کیوں کہتا ہے جس سے رفیقوں میں ہراس پیدا ہو۔ ملائے موصوف نے سیدصاحب کی رفاقت اختیار کرنے کے بعد زندگی کا ایک ایک لیے جہاد فی سمیل اللہ میں گزار ااور وطن مالوف سے ہزاروں میل دورعا لم غربت میں شہادت یائی۔ رحمہ اللہ تعالیٰ

قطب شاه کی مردانگی

ملائعل محمد کی شہادت کے ساتھ ہی قطب شاہ کے شانے پر گولہ لگا اور تلوار کا سازخم ہوگیا۔ ینچے کا گوشت ینچے لنگ پڑا اور پر کا گوشت اوپر چڑھ گیا۔ انہوں نے پانی ما نگا، ملا البام الدین جنہوں نے قطب شاہ سے قرابین کی بھر ماری سیھی تھی، پاس کھڑے تھے لیکن نہ پانی نزدیک تھا، نہ ساتھ کوئی برتن تھا۔ وہ گولیوں کی بارش میں نالے کی طرف دوڑے، اپنی چا در پانی میں بھگولائے اور نچوڑ کر پانی قطب شاہ کے منہ میں ٹیکا یا۔ دو محون طلق سے اتر تے ہی قطب شاہ شدیدزخم کے باوجودا مٹھے اور اپنا با نکا ہاتھ میں لئے مولوی نصیرالدین کے باس پہنچ گئے۔

مولوي صاحب كاعزم اقدام

اُس وقت تک بچاس سے او پرمجاہدین شہادت با چکے تھے اور کوئی ستر زخی ہو چکے تھے۔مولوی صاحب نے یہ نقشہ دیکھا تو شمشیر علم لے کر چلے کہ اب تنہا ہمار اجینا بالکل بلطف ہے، جہاں ہمارے بھائی شہید ہوئے، وہیں ہم بھی شہید ہوں گے۔ شخ فتح علی اورعبد الله دونوں رو کئے کیلئے ان سے لیٹ گئے مگر مولوی صاحب ندر کے۔ شخ وزیر پھلتی نے دور سے انہیں آتے دیکھا تو قرابین کندھے پر ڈال کر دوڑ ہے۔ مولوی صاحب کا راستہ روک لیا اور کہا: آپ کہاں جاتے ہیں؟ آپ ہی کے دم سے یہ انتظام قائم ہے۔ ہم لوگ کتنی ہی تعداد میں شہید ہوجا کیں، پھھر تری نہیں۔ آپ کے ند ہونے سے جہاد کا پورا کاروبار در ہم برہم ہوجائے گا۔ غرض شخ موصوف برز ورنہیں پھیر کر پیچھے لے گئے۔

مجامدين كى ايك تدبير

روایتوں سے معلوم ہوتا ہے کہ سکھ گو لے گولیاں چھیکتے چھیکتے تھک چکے تھے اور ہانڈیاں، گھڑے، پھر ،کھڑیاں جو پچھان کے ہاتھ آتا، مجابدین پر پھینکتے۔ مولوی صاحب نے فرمایا کہ اب شکر کے اندر پہنچنا مشکل ہے۔ مناسب بیہ ہے کہ ہم لوگ پیچھے ہنیں، سکھ ہمیں پسپا ہوتے و کمھ کرتعا قب میں نکلیں گے۔ جب وہ خاصی تعداد میں باہر آجا کیں تو ایک دم پلٹ کران پر حملہ کردیا جائے۔ اس منصوبے پڑمل ہوا۔ جب سکھ سوسواسوقد م شکر سے باہر آگئے تو مولوی صاحب نے بلند آواز سے تکبیر کہتے ہوئے تھم دیا کہ بھا کیو! اب ہلد کر کے انہیں ختم کر ڈ الو۔ چنا نچے مجابد ین اللہ اکبر کے نعر سے لگاتے ہوئے کھواریں سونت کران پر جا پڑے۔ اس بلنے میں بھی بہت سے سکھ مارے گئے۔ باتی پھر بھاگ کر سکر میں واضل ہو گئے۔ جو گڑھی کے قریب تھے، وہ گڑھی میں چلے گئے۔

مجامدين كي مراجعت

اس آخری ملے کے بعد مولوی صاحب نے مراجعت کا تھم دے دیا، چنانچہ وہ بٹلوں سے چلے اور بانی منگ کے گورستان میں پہنچ کرظہر کی نماز ادا کی۔عصر کے وفتت اینے مرکز کوٹ میں داخل ہو گئے۔ جنگ کے متعلق مفصل اطلاعات شیخ ولی محمد امیر جماعت کے پاس شائی خال بھیج دی تھیں ،اگلے روز وہاں سے رسد کا سامان آگیا۔ مولوی صاحب نے برج کی مرمت کرادی اور پچاس مجاہدین کی جماعت اس میں متعین کردی۔ تیسر نے روز بٹلوں کی طرف سے دھو کیں کے بادل اٹھتے ہوئے نظر آئے۔ مولوی صاحب نے پچاس مجاہدین کو تفتیش احوال کے لئے بھیجا تو معلوم ہوا کہ سکھوں نے شکر کو آگادی اور خود قلعہ چھوڑ کر شکیاری مطلے گئے۔

نقصان كي تفصيلات

ابتدامیں اندازہ تھا کہ لڑائی میں کم وبیش سات سوسکھ مارے گئے، بعد میں قرب وجوار کے مقامی لوگوں کی زبانی معلوم ہوا کہ مقتولین کی تعداد چارسو سے زیادہ نہ تھی۔ عبداللہ نام ایک نومسلم سکھ نے بھی اس تعداد کی تقید بیتی گی۔ وہ اسلام لانے سے پیشتر مجاہدین کے خلاف رہا تھا، مسلمان ہوکر شخ ولی محمد کے قافلے کے ساتھ سندھ پہنچا۔ سید عبدالرحمٰن (خواہرزادہ سیدصا حب) نے اس کیلئے سفر جج کا انتظام کردیا، باتی عمراس نے حرمین شریفین ہی میں گزاری۔

لزائي كانتيجه

ہم بتا چکے ہیں کہ مجاہد شہیدوں کی تعداد پیچاس سے پچھ اوپر تھی۔ ان میں سے مندرجہذیل کے سواکسی کا نام معلوم نہ ہوسکا:

ملالعل محد قندهاری، برکات مظفر آبادی ،عبد الستار بیثاوری، شابین خال مشوانی ساکن علاقه کنگرنز دتربیله،رحیم بخش ساکن بانسی ،میر مردان علی میرشی _

بعد میں معلوم ہوا کہ سکھوں نے گڑھی اور شکر کے درمیان ایک لمی می قبر کھود کرتمام شہیدوں کواس میں فن کرادیا۔ سکھوں کے ہمراہی مسلمانوں نے بتایا کہ یہی مجاہدوں کا شجنج شہیداں ہے۔ ملائعل محمد قندهاری کے بہلے میں تینتیں آدمی تھے۔ان میں سے اکتیں بٹلوں ہی میں شہید ہوئے ،صرف لال میرخاں نشان بردار اورنورمحمد کلاں کو ہائی زندہ بچے۔تقریباً ستر مجاہد زخمی ہوئے تھے، وہ بغضل خدا چندروز میں اچھے ہوگئے۔

دیشی ادراگرور کے قیام میں مجاہدین نے جولڑائیاں کیں، ان میں سے بناوں کی اوراگرور کے قیام میں مجاہدین کا مقصد بیتھا کہ سکھ بناوں سے نکل جا کیں۔
الڑائی سے بیہ مقصد پورا ہوگیا اگر چہ اس سلسلے میں مجاہدین کو شخت نقصان اٹھانا پڑا۔ سید صاحب کی ترتیبات جہاد کا موقع مجل اور وقت ایسا تھا کہ اس میں تدبیر ہے کہیں زیادہ شجاعت ومردائی ضروری تھی۔ بناوں کی لڑائی میں اگر چہ تدبیر نظر انداز نہ ہوئی تاہم بیہ مجاہدین کی شجاعت ہی کا ایک قابل فخر کارنامہ تھی، اگر انہیں پابندہ خال کی بدع ہدی سے مباہدین کی شجاعت ہی کا ایک قابل فخر کارنامہ تھی، اگر انہیں پابندہ خال کی بدع ہدی سے مباہدین کی شجاعت ہی کا ایک وفات پر سکھوں کی حکومت میں خوفا ک اہتری پیدا ہوگئی۔ اگر اس موقع پرمجاہدین کا محافظ میں انہوں کی حکومت میں خوفا ک اہتری پیدا ہوگئی۔ اگر اس موقع پرمجاہدین کا محافظ موجود ہوتا تو اغلب تھا کہ وہ پور سے سرحدی علاقے کو قبضے میں لے موقع پرمجاہدین کا محافظ ہوتا، لیکن اب اس کے سواکیا کہا جا سکتا ہے کہ:

يك كاشك بود كدبه صد جانوشتهايم!

سولهوال باب:

بإبنده خال کی عهر شکنی

بإينده خال اورخوا نينِ اگرور

ہم بتا ہے ہیں کہ پابندہ خال اور خواجینِ اگرور کے درمیان بخت دشمنی تھی۔ کشکش میں خواجین ایپ وطن سے نکل کر علاقہ کو گئی ہیں تھیم ہوگئے تھے، تاہم ان کی طرف سے پدر پ یورش اور چھاپوں کا شدید خطرہ تھا۔ پائیدہ خال مجاہدین کو زیادہ تر اس خیال سے جسی کوٹ لایا تھا کہ ان کے ہوتے ہوئے خواجینِ اگرور چھاپے نہ مار کیس گے۔ اس مقصد ہیں اسے پوری کا میابی حاصل ہوئی۔ عبدالغفور خال نے اس لئے مجاہدین کا ساتھ دیا کہ ان کی وساطت سے اگرور ہیں دوبارہ آباد ہوجانے کی امیر تھی۔ مجاہدین پابندہ خال کی شدید و تشمی کے چش نظر بہ طور خود عبدالغفور خال کواگرور نہ لا سکتے تھے، اسے مایوی ہوگئی تو خفیہ خفید اپنے ماموں حبیب اللہ خال کے ذریعے سے سکھوں کے ساتھ ساز باز مرکی۔ اس کا بھائی کمال خال مارے گئے اور اس خطرے کا کرلی۔ اس کا بھیجہ یہ ہوا کہ وہ اور اس کا بھائی کمال خال مارے گئے اور اس خطرے کا استیصال ہوگیا جو مجاہدین کوجس کوٹ میں لانے کا موجب بنا تھا۔ ساتھ ہی پابندہ خال کی تدبیریں کرنے لگا۔ استیصال ہوگیا جو مجاہدین کوجس کوٹ میں لانے کا موجب بنا تھا۔ ساتھ ہی پابندہ خال کی تدبیریں کرنے لگا۔

بعض بیانات ہے معلوم ہوتا ہے کہ مختلف مقامی رئیسوں نے پابندہ خال کواس امر کی طرف متوجہ کیا تھا، وہ کہتے تھے کہ ہم آپ کے فر مانبر دارر ہیں گے، با قاعدہ خراج ادا کریں گے، لیکن شرط میہ ہے کہ مجاہدین کو نکال دیجئے ۔ وجوہ کچھے ہوں، پابندہ خال اپنے عہد برقائم نے رہااور مجاہدین کو مسلسل خبریں ملے لگیس کہ دہ اپنی عادت کے مطابق پر میج

عالیں اختیار کرنے کے در ہے ہے۔

الائی پر چھاپے

اگر چدالائی کےلوگ مجامدین کی فرمانبرداری کا اقرار کر چکے تھے، تا ہم وہ سکھوں کی انگیخت اورامداد کی بناپر مخالفانہ سرگرمیوں میں مصروف رہے۔ بٹلول کی اثرائی سے دو أ رُّ ها فَي مهينے بعد مقیم خال نے مولوی نصیرالدین ہے اجازت لے کران پر ایک چھایہ مارا اور بہت سے جانور پکڑ کر لے آیا۔تقریباٰ دو ہفتے کے بعدمعلوم ہوا کہ الائی والے سکھوں کی اعانت سے مجاہدین پرشبخون مارنا جاہتے ہیں۔مقیم خال چھتیں مجاہدوں کے ساتھ دوباره ان کی گوشالی کیلئے روانہ ہوا۔ ایک رات بٹن بوڑی میں گزاری ، دوسرے روز الائی کے جنوبی پہاڑی چڑھائی شروع ہوئی۔موضع بہاری کے نالے برمجاہدین نے صبح کی نماز ادا کی۔اس مرتبہ بھی بہت سے جانور پکڑ لیے،لیکن الائی والوں نے بڑی تعداد میں جمع ہوکرتعا قب کیااورتھوڑا سا چکر کاٹ کرالی جگہ قدم جما کربیٹھ گئے، جہاں سے مجاہدین کو وابس جانا تھا۔ وہ چوسات سو سے كم ند تھے۔ بہادر مقيم خال نے ايك جگه يہلے تعاقب کرنے والوں پرحملہ کیا ادران کے سات آٹھو آ د<mark>می تل</mark> کردیے، وہ پسیا ہو کر بھا گے۔ بھر ان لوگوں پر دھاوابول دیا،جنہوں نے راستہ روک رکھاتھا۔ تین جارا ومی ان کے بھی زخی ہوئے، دوراستہ چھوڑ کرآس یاس کے پہاڑوں میں منتشر ہوگئے۔

مقیم خاں کی شہادت

مجاہدین دو تین میل آگے بڑھ کرایسے مقام پر پہنچے جہاں دو نیلوں کے درمیان نشیب تھا۔ دفعۂ دونوں نیلوں سے ان پر گولیاں بر سنے لگیں۔ مقیم خال کے پاس قرابین تھی، اس نے تین چار بار قرابین چلائی، مگرنہ چلی۔ اس اثناء میں ایک آدمی قریب پہنچ کی۔ اس اثناء میں ایک آدمی قریب پہنچ کیا۔ مقیم خال نے قرابین اٹھا کراس کے سر پردے ماری اوراس کا سر پھٹ گیا، کیکن او پر

ے ایک آ دمی نے بھاری بھر مقیم خال کی طرف اڑھکا دیا جوموصوف کی گردن میں لگا۔ وہ بہتا ہو موصوف کی گردن میں لگا۔ وہ بہتا ہو ہو کر گرا۔ دوسر بے لوگول نے تلواروں سے اسے شہید کرڈ الا۔ مقیم خال کے علاوہ پانچ اور دو زخمی ہوئے۔ مخالفوں کے بندرہ سولہ آ دمی مارے گئے۔ مجاہدین ان کے مقابلے میں بہت کم تصے لہذا جانور چھوڑ کر چلے آئے اور کا کڑشنگ کھیرتے ہوئے شائی خال پہنچ گئے۔

دوسرابز انقصان

ملافعل محمد قندهاری کی شہادت کے بعد مقیم خال کی شہادت جماعت بجاہدین کے دوسرا بڑانقصان تھی۔ یہ جوانمر دمجاہد کا لاباغ کا اعوان تھا۔ پچھ معلوم نہیں کہ کس زمانے میں مجاہدین کے ساتھ شریک ہوا، ہم صرف اتنا جانے ہیں کہ سیدصا حب کے عہد میں اس کا ذکر ندسنا گیا۔ جب مجاہدین جس کوٹ اور شائی خال میں آئے تو مختلف مہموں میں مقیم خال نے نمایاں خدمات انجام دیں ،ای بنا پراسے ایک جماعت کا سالار بنادیا گیا تھا۔ مجاہدین کی اصطلاح میں اسے جمعداری کا عہدہ کہا جاتا تھا۔ اس پہاڑ کے کس گیا تھا۔ مجاہدین کی اصطلاح میں اسے جمعداری کا عہدہ کہا جاتا تھا۔ اس پہاڑ کے کس حصے میں شہادت یا کی جوالائی کے علاقے کو نندھیاڑ دغیرہ سے جدا کرتا ہے۔ یہ معلوم نہیں کہاں دفن کیا گیا۔ مولوی نصیرالدین اور شیخ ولی محمد کو مقیم خال کی شہادت کا حال معلوم ہواتو انہوں نے بہت افسوس کیا۔

مولوي صاحب كاعزم امب

پایندہ خال نے اپنے ذہن میں ایک منصوبہ پختہ کر کے مولوی نصیر الدین کو امب بلایا۔ موصوف من چکے تھے کہ خان مخالفانہ تدبیروں میں مشغول ہے، لہذا دعوت کو ٹال گئے اور کو تی جواب نددیا۔ خان نے دوبارہ تاکید آبلیا تو مولوی صاحب نے مجاہدین میں سے امرکوئی جواب ندد گجی۔ قلعد شائی اہتی آدمی چن لئے، جن میں سے ہیں چیس قرابین دار تھے اور باتی بندو فجی ۔ قلعد شائی

خال سے روانہ ہوکر دوروز جسی کوٹ میں رہے۔آگے بڑھے تو ہری گاہ نالے پڑھملی کے قاضی صاحب ملے جو پایندہ خال کے چھوٹے بھائی مدوخال کے قاضی تھے۔ انہوں نے مشورہ دیا کہ پایندہ خال کے باس جانا مناسب نہیں ،اسلئے کہ وہ فریب کار ہے۔ مولوی صاحب نے فرمایا کہ ہم خدا کے اعتماد پر جاتے ہیں، وہی ہماری حفاظت کرےگا۔

ایک رات نکه پانی میں گزاری دریائے سندھ کوعبور کر کے چھتر بائی پہنچ - مولوی صاحب کا دستورتھا کہ مجاہدین کے ساتھ دریاعبور کرتے تو ملاحوں کو پچاس روپے یا پچیس روپے اورایک بیل دیتے نظیر کی نماز بلوچوں کی گڑھی (۱) میں اداکی -

امب میں داخلہ

بلوچوں کی گڑھی ہے مولوی صاحب نچر پرسوار ہوئے۔قرابین دارآ گے ہے اور بندو فی پیچے۔ وہ عمو ما اسب کی جامع معجد میں تھہرا کرتے تھے، کین اس موقع پربتی کو دائیں جانب چھوڑتے ہوئے کھیتوں ہیں سے قلعے کی طرف بڑھے۔ راستے میں محندا دائی جددار ملاجو پایندہ خاں کا مخارِ کارتھا۔ اس نے مولوی صاحب کودیکھا تو کہا: آج آپ اس تھاٹ سے آئے ہیں کہ پہلے یہ ٹھاٹ ہم نے بھی نددیکھا تھا۔ قلعے کے دروازے پر پایندہ خاں کا دوسرامعتد جعدارشاما ملا۔ مولوی صاحب نے اسے کہا: خان کوسلام پہنچاؤ اور بوچھوکہ جہاں اجازت ہو، ہم تھر جا کیں۔ پایندہ خاں نے جواب میں سلام اور مزائ بیری کے بعد کہاوایا کہ جہاں آپ ہمیشہ تھر اگرتے ہیں، وہیں تھر یں۔

⁽۱) اس مقام کوآج کل اسب جدید کتے ہیں۔ اسمارا وی طغیانی میں چھتر بائی، بلوچوں کی گڑھی، اسب قدیم ، ستھانہ وغیرہ تمام مقامات تباہ ہو گئے تھے۔ پابندہ خال نے نیااسب بلوچوں کی گڑھی کی میک تقیر کرایا۔ یسی آج کل اسب کہلاتا ہے۔ اسب قدیم کے مقام پربھی ایک چھوٹا ساموضع آباد ہے۔

ملاقات ميں تذبذب

اگلے دن جمعہ تھا، پایندہ خال نماز جمعہ کیلئے نہ آیا۔عصر کے وقت دواڑھائی سوآ دمی ساتھ کے کرمنجد میں پہنچا، جن میں سے چالیس بچاس نگی تلواریں لئے ہوئے تھے۔ تھوڑی دیر بیٹھا۔مولوی صاحب قبلہ روشتے، پایندہ خال ان کے مقابل تھا۔زیادہ بات چیت نہ ہوئی اور یہ کہہ کرلوٹ گیا کہ کل آپ کو قلع میں بلایا جائے گا۔

صبح کو پیغام بھیجا کہ مولوی صاحب پانچ چھآ دی لے کر قلعے میں آ جا کیں ہموصوف نے ساتھیوں میں سے پانچ چھ کو تھم دے دیا کہ تیار ہوجاؤ ہے فرزیر پھلتی نے اپنے رفیقوں سے کہا: بھا ئیو! آپ خوب جانے ہیں کہ پایندہ خال بزافر ہی اور مفسد ہے۔ اگر خدانخواستہ مولوی صاحب کواس نے کوئی گزند پہنچایا تو ہم ہے کچھ بھی نہ بن پڑے گا، مناسب یہ ہے کہ ہم لوگ مولوی صاحب مے پیچھے پھلیں اور ان کا ساتھ نہ چھوڑیں۔ چنانچہ مولوی صاحب موانہ ہوئے وہ ان کی جھھے پیچھے پھل پڑے ہو تین آ دی اسباب کی موانہ مولوی صاحب کے پیچھے پھلیں اور ان کا ساتھ نہ چھوڑیں۔ چنانچہ مولوی صاحب کے حفاظت کیلئے ڈیرے پررہ گئے۔ قلعے کا دروازہ کھلا اور پانچ چھآ دمی جومولوی صاحب کے ساتھ تھے، اندر داخل ہوگئے۔ وہ کھفیت دیکھتے ہی پاندہ خاں پر ساتھ تھے، اندر داخل ہوگئے۔ یہ کیفیت دیکھتے ہی پاندہ خاں پر دوچار نے وہ کالگایا اور آ نافانا سب اندر داخل ہوگئے۔ یہ کیفیت دیکھتے ہی پاندہ خاں پر ہراس طاری ہوگیا۔ معمولی مزاج پری کے بعداس نے مولوی صاحب کو بھایا بھی نہیں، مراس طاری ہوگیا۔ معمولی مزاج پری کے بعداس نے مولوی صاحب کو بھایا بھی نہیں، خود کھڑا ہوگیا اور کہا کہ آپ ڈیرے پرتشریف لے چلیں، میں کل وہیں صاضر ہوجاؤں گا۔ جنانچہ مولوی صاحب پھر بات چیت کے بغیروا پس ہوگئے۔

گفت وشنید

اس کے بعدمولوی صاحب تقریباً ایک مہینہ امب میں مقیم رہے، لیکن نہ پایندہ خال ملاقات کے لئے خود آیا، نہ مولوی صاحب کواپنے پاس بلایا۔ البنة شاما جمعدار کے ذریعے ے اس نے نامدو پیام کا سلسلہ جاری رکھا۔ اس کا مطالبہ بیتھا کہ جاہدین قلعه شائی خال خال خال کی دریں اور جسی کوٹ میں رہیں۔ مولوی صاحب نے اس کا جوجواب دیاوہ انہیں کے الفاظ میں ہے: الفاظ میں ہے:

ہم تو پایندہ خال کے بلانے ہے اس ملک میں آ۔ آبیں اور انہیں کی مرضی ہے رہتے ہیں۔ اگر رہیں گے تو قلعہ شائی خال میں رہیں گے، ورندند وہاں رہیں گے، نہ اگرور میں۔ ہم لوگ اپنے وطنوں سے صرف خدا کی رضامندی کی خاطر یہاں آئے ہیں، دنیا کمانے کونہیں آئے۔ اگر طالب دنیا ہوتے تو کیا ہمارے وطن میں مال دنیا کم تھا؟ (۱)

پاینده خان اپنے مطالبہ پرمصرر ہااورمولوی صاحب اپنے جواب پر قائم رہے۔

ينتخ ولى محمد كوبيغام

جب مولوی صاحب کو یقین ہوگیا کہ پایندہ خال سے مفاہمت کی کوئی امیہ نہیں رہی تو شیخ ولی محمد کو پورے حالات لکھ بھیجے۔ ساتھ ہی کہا کہ آب اہل وعیال جسی کوٹ بھیج دیں اور خود تیار رہیں، ہم جسی کوٹ بھیج کر آپ کواطلاع دیں گے تو قلعہ شائی خال پایندہ خال کے آ دمیوں کوسونپ کر جسی کوٹ آ جانا۔ شیخ صاحب نے اپنے اہل وعیال کوعبدالقیوم اور اپنے برادر نسبتی عبد اللہ کے ہمراہ سھانہ بھیج دیا ، پھھ دن بعد باقی مجاہدین کے اہل وعیال بھی ستھانہ روانہ کردیے۔ قلعہ شائی خال پایندہ خال کے حوالے ہوگیا اور شیخ صاحب جسی کوٹ بھی سے اللے موالے موالیا اور شیخ صاحب بھی ان سے جالے۔

سیدا کبرشاہ ہے نامہو بیام

پایندہ حال ہے موافقت کارشتہ منقطع ہوجانے کے بعدجسی کوٹ میں ملم رناممکن نہ

⁽۱) "وقالع" جلدسوم س:۴۰۵-۵۰۵

تھا۔ خاص طور پراسلے کہ جس پایندہ خال نے بو جہ انہیں شائی خال سے اٹھایا تھا، کیا وہ بچھ دیر کے بعد جسی کوٹ ہے بھی نداٹھا دیتا؟ بیجی ظاہر ہے کہ تذبذ ب کی حالت میں مجاہدین اپنے اصل مقصد کیلئے کوئی قابلِ ذکر کوشش نہ کر سکتے تھے، لہذا ان حالات کے متعلق سیدا کبرشاہ ستھا نوی کواطلاع بھیج دی گئی، اسلئے کہ اس حصہ سرحد میں صرف وہی ایک شخصیت تھی جس کے اخلاص اور مستقل اعانت پر بھروسا کیا جا سکتا تھا۔ سید محدوح نے جواب میں کہلا بھیجا:

آپ پہال ستھانہ چلے آئیں، یہ آپکا گھر ہے۔ جب تک چاہیں رہیں، جو پھی ہم سے ہو سکے گا خدمت گزاری میں حتی المقد ورقصور نہ کریں گے۔(1)

ستفانه کی جانب روانگی

شخ صاحب اورمولوی صاحب آگے بیچے جسی کوٹ سے رواندہوئے۔ امب سے باہر آم کا ایک بھاری پیڑھا، وہاں ممہر کر بیر مبارک علی تھنجھا نوی کو پایندہ خال کے پاس بھیجا کہ بھیرہ کے میں وہیں ملاقات کیلئے آؤں گا۔ بجاہدین عشرہ میں تفہر سے اس کی طرف وال محورے پرسوار ہوکر امب سے نکلا ایکن تھوڑی دیر کے بعد قلع میں چلا کیا۔ جب بھین ہوگیا کہ وہ نہ آئے گا تو شخ صاحب اور مولوی صاحب بجابدین کو کیکرستھانہ کی طرف روانہ ہوئے۔ سید اکبر شاہ بستی سے میل ڈیڑھ میل باہر استقبال کیلئے موجود کی طرف روانہ ہوئے۔ سید اکبر شاہ بستی سے میل ڈیڑھ میل باہر استقبال کیلئے موجود میں سے بعض کیلئے۔ تھانہ اور بعض کیلئے منڈی (۳) میں قیام کا انتظام کردیا۔

^{(1) &}quot;وقالك" جلدسوم ص: اا ٥

⁽٢) اس يقريا تمن ميل بجانب سماندوا قع بـ

⁽۳) - تعاندے باؤمیل ای ہے متعلق ایک بہتی ہے۔

ستر ہواں باب:

قیام ستھانہ کے حالات

پاینده خال کی پریشال حالی

میرا اندازہ ہے کہ مجاہدین ۱۸۳۴ء یا ۱۸۳۵ء تک جسی کوٹ شائی خال میں رے۔(۱) یا بندہ خال نے انہیں اس خیال سے اٹھایا تھا کداب کوئی خزدشد باتی نہیں رہا۔ نەصرف اگرور بلكە دىشى، ئىكرى، نىدھيا ژ، كۈش اورالانى كےعلاقے بھى فرمانبردارر بى گے،لیکن وہ سب لوگ سکھوں سے ملے ہوئے تھے جو پایندہ خاں کے سخت دشمن تھے۔ اس بیل کے مقابلے میں صرف مجاہدین ایک متحکم بند کا کام دے رہے تھے۔وہ اٹھے تو دیشیوں نے جمع ہو کر قلعہ شائی خاں برحملہ کردیا اور پابندہ خاں کے لوگوں کو وہاں سے نکال دیا، بلکه ایک ضرب توب بھی چھین لی۔ ا<u>۱۸۳۷ء میں سکھوں نے اگرور پرحمله کردیا اور ب</u> ملاقہ بھی یا بندہ خال ہے چھن گیا۔اس کے بعد دریا کے بائیں کنارے پر دور دورتک سکھوں کاعمل دخل ہوگیا، مایندہ خال کے قبضے میں دریا کے دائیں کنارے برتھوڑا سا علاقہ رہ گیا۔ جس وسیع ریاست کے وہ خواب دیکھر ہاتھا،مجاہدین کے نکلتے ہی وہ درہم برہم ہوگئے۔تاہم ووسکھوں سے لڑتار ہااور اسم 1/2 میں اس نے وفات یائی۔ یقین ہے کہ زندگی کے آخری دور میں اسے اپنی غلط اندیشی پر پشیمانی ہوئی ہوگی الیکن تیر کمان سے نکل چکا تھا اور پشمانی اس کے بگڑ ہے ہوئے کا رخانے کو درست نہ کر سکتی تھی۔

⁽۱) بزاره گزیمزاردوش سیرس کا معتمال کی ہے۔

يشخ ولى محمه كاسفر تخته بند

ستھانہ میں اطمینان سے طہرنے کا بندو بست ہو گیا تو شیخ ولی محد ہیں بائیس مجاہدوں کے ساتھ اس غرض سے تختہ بند چلے گئے کہ بی بی صاحبہ کو ستھانہ لے آئیں اور سندھ پہنچانے کا کوئی انظام کریں۔ ان کے ہمراہیوں میں سے مندرجہ ذیل اصحاب کے نام روایت میں نہ کور ہیں: شیخ وزیر پھلتی ،سید قطب شاہ حیدر آبادی ، شیر محمد خاں رام پوری ، مستقیم جہان آبادی ، ابراہیم خال گرامی ، امان خال کنج پوری ، محمد یار خال کشمیری اور عبدالقیوم خادم سید صاحب۔

شیخ صاحب نے ایک مقام موضع گبائی میں مولوی مختشم کے مکان پر کیا، دوسر بے روز موضع ملکا میں مفہر ہے، تیسرا مقام موضع مختر نئی میں کیا، چوشی منزل ناوا گئی میں ہوئی، جہاں سیدرسول نے انہیں تین دن تفہرائے رکھا۔ تمام مقامات میں مہمانداری کا پڑ تکلف انتظام ہوا۔ ناوا گئی سے شخ صاحب تختہ بند چلے گئے۔

خوانین وشرفاء کا جرگه

سید میاں رئیس تختہ بندنے دو نتے شخ صاحب کو اپنے پاس رکھا، اس اشاء میں گردونواح کے خوانین وشرفاء کو بلایا اور لہا کہ شخ صاحب بی بی صاحب کو لینے آئے ہیں، آپ لوگوں کی کیارائے ہے؟ ان سب نے بالا تفاق کہا کہ ہم آ پکے بھی خادم ہیں، بی بی صاحبہ کے بھی فرما نبردار ہیں۔ اگر ممدوحہ کو یہاں رہنے میں کوئی تکلیف ہو تو ہمیں فرما کمیں۔ گھرنے کہا: فرما کمیں۔ گھانے ، پہنے اور ضروری خرج کا انتظام ابھی کئے دیتے ہیں۔ شخ ولی محمد نے کہا: معاشوا بیس آپ کا سلوک اوراحسان ہے۔ بی بی صاحبہ کو یہاں رہنے میں سوائے آرام کے کوئی تکلیف نہیں سے ہم چاہے ہیں کہ جہاں حضرت میں سوائے آرام کے کوئی تکلیف نہیں سندھ میں ہیں، وہیں ان بی بی امیر الموثین علیہ الرحمة کی اور دو بہیاں ملک سندھ میں ہیں، وہیں ان بی بی

صاحبہ کو پہنچادیں۔ بچہ ہم سب بے فکر اور فارغ البال ہو کر جہاد فی سبیل اللہ میں جو پچھ ہو سکے ، وشش کریں۔(۱)

الل جركدنے جواب ديا كه اس صورت ميں آپ كواختيار ہے، جميں جس خدمت كے لئے ارشاد ہوگا اسے بسر وچيثم انجام ديں گے۔خواہ آپ يہاں فرمائيں ياستھان پہنچ كر۔

بی بی صاحبہ کی تشریف آوری

غرض بیخ صاحب ،سید میاں اور خوانین وشرفائے بونیر کی رضامندی سے بی بی صاحب کو روانہ ہوئے۔دوروز ناوا گئی میں سیدرسول کے پاس تفہرے، تیسرامقام منگل تھانہ میں اور چوتھا چنگی میں کیا۔ وہاں سے ستھانہ پیغام بھیج دیا تھا۔سیدا کبرشاہ اور مولوی نصیرالدین مجاہدین کے ہمراہ استقبال کے لئے آئے ہوئے تھے۔سیدا کبرشاہ نے بی بی صاحبہ کے لئے ایک محفوظ مکان خالی کرار کھا تھا، وہاں انہیں اُتارا، دو وقت اپنے ہاں سے کھانا پیش کیا۔

شخ صاحب ،مولوی صاحب اورسیدا کبرشاہ بی بی صاحبہ کوسندھ پہنچانے کی مختلف تجویزیں سوچتے رہے ،کیکن تقریبا ایک سال تک کوئی مناسب اور محفوظ تدبیر بروئے کار ندآسکی۔

مولوی نصیرالدین صاحب دہلوی کا مکتوب

اس اثناء میں مولوی نصیر الدین دہاوی مجاہدین کا ایک قافلہ کیکر سندھ پینی بھی تھے۔
ان کے حالات تفصیلاً آئندہ ابواب میں بیان ہول گے۔ انہوں نے اساعیل اور احمد الله
نام دو قاصدوں کے ہاتھ ایک خط ستھانہ میں بھیجا ،جس کا مضمون میں تھا کہ ہم تین سو
ہندوستانیوں کے ہمراہ سندھ میں آگئے ہیں اور بھالیہ جسی کے رئیسوں بجار خال اور

⁽۱) "وقائع" جلدسوم ص: ۵۱۵

مداری خال کے پاس مقیم ہیں۔آپ لوگوں کے متعلق معلوم ہوا کہ پابندہ خال ہے اُن بَن ہوگئ ہے اورآپ قلعہ شائی خال سے ستھاندآ گئے ہیں۔اگر یہاں تشریف لے آئیں تو ہم سب مل کر جہاد فی سبیل اللہ کا ہندو بست کریں، شاید اللہ تعالی اپنی رحمت سے کامیا بی عطافر مائے۔

مولوى صاحب اورنينخ صاحب كاجواب

شخ ولی محداور مولوی نصیرالدین نے غور و مشورہ کے بعد لکھا کہ آپ کے سندھ پہنچنے کی خبرس کردل کوخوشی اور تقویت حاصل ہوئی ، باقی رہی آپ کی دعوت تو ہماری رائے ہیہ:

ظاہرا آپ کے ہاں اس کام کے اجرا کی کوئی معقول صورت نظر نہیں آتی ،
کیونکہ وہ ملک میدانی ہے اور یہاں پر جو ہم لوگ پڑے ہیں ، سبب اس کا ہیہ کہ اول اس کام کے واسطے حضرت امیر الموشین علیہ الرحمة نے یہی ملک کہ اول اس کام کے واسطے حضرت امیر الموشین علیہ الرحمة نے یہی ملک کو ہتان کا پہنداور لوگوں کو متفق کرنے میں بہت کوشش اور جانفشانی کی۔ جو خلوص دل سے ملے ان کا بھی حال ظاہر ہوگیا اور جو منافقا نہ ملے ان کا بھی حال کو میں گوگ آپ جگہ نہ ہوئی ،
کمل گیا۔ دوسرے سے کہ اہمی ہم لوگ آپی جگہ قائم ہیں ۔ ایک جگہ نہ ہوئی ،
دوسری جگہ ہی ۔ اللہ تعالیٰ سے امید ہے کہ یہاں تھہرنے میں شاید کوئی صورت نظا حیت کی نکل آوے ۔ سواگر آپ بھی سب آ دمیوں کوئیکر یہاں تشریف لے فلاحیت کی نکل آوے ۔ سواگر آپ بھی سب آ دمیوں کوئیکر یہاں تشریف لے آوی تو بہت مناسب ہے تا کہ ہم اور آپ بلکراس کا دِخیر میں کوشش کریں ۔ (۱)

⁽۱) "وقائع" جلدسوم ص: ۵۱۸-۵۲۰ جیب امریه ہے کہ خود مولوی سید تصیرالدین وہلوی کے کمتوب سے اس جواب کی تقدر قرق کے کمتوب سے اس جواب کی تقدد یہ تنجیز کے بعد دوآ دمی ان کیابدوں کی طرف بھیج و بے تتے جو معزرت امیر الموشین کے دفیقوں میں سے باتی تتے ۔ شخ ول محد اور مولوی تقییر لدین ان کے سردار تھے۔

دراواکل ذی قعده فرستادگان اخلاص نشان مع جواب خط واپس آیدند چوں براوران غازیان اراد هٔ روانگی خود دراوائل شوال در خواست رہبرے کہ واقف راوراست باشد وطلب خرج نوشتہ بودند، بقید ماشیدا میکل صفحہ پر

تتفانه مين جركه

عجابدین کچھ دت تک اپنے وسائل کی بناء پروفت گزارتے رہے، پھرسیدا کبرشاہ نے مناسب سمجھا کہ معاش کامستقل انظام ہوجائے، چنانچہ اس غرض سے منڈی، کیا، کھتل برگ، گیارہ باڑاوغیرہ گردونواح کی بستیوں کے خوانین اور ملکوں کا جرگر منعقد کیا اور ان لوگوں کو بتایا کہ بیر مجابدین جو ہمارے ہاں اترے ہیں، اللہ کی رضا کے طالب ہیں، ملک و مال و نیا ہے انہیں کوئی غرض نہیں ۔ ایک سبب سے ہم سب کوا طمینان عاصل ہے۔ ہم سکھوں کے شروفساد سے امن ہیں ہیں۔ مناسب سے ہم کہ ان کے کھانے پینے کا بندوبست کردیا جائے۔ ان لوگوں نے بالا تفاق کہا کہ ہم اپنی پیداوار سے بیسوال حصہ انہیں بالالتزام پہنچاتے رہیں گے۔ اس طرح مجابدین کے لئے گزارے کا اطمینان بخش انہیں بالالتزام ہوگیا۔

سكهون كابيغام

انھیں دنوں ہزارہ کے سکھ گورز ہری سنگھ نلوہ نے سیدسن شاہ کواپی طرف سے وکیل بنا کرشنخ ولی محمد اور مولوی نصیرالدین کے پاس بھیجا، اس نے بتایا کہ ہری سنگھ پندرہ ہزار

م خرشة سلحه كا بقيه حاشيه برسرعت تمام دوكم از واقف كاران راوم عنرج مطلوبه روانه كرد وام رانشاء الله تعالى دركالا ياغ حسب نوشته برداران غازيان منظرخوا بهندنشست .

ترجمہ: اوائل ذی قعدہ میں میرے بھیجے ہوئے آ دی خطاکا جواب لے کرآ گئے۔ غازی بھا ٹیوں نے اوائل شوال میں روائل کا ارادہ فٹا ہر کیا تھا ، نیز لکھا تھا کہ ایک رہبر بھیج دیا جائے جوسید سے رائے ہے واقف ہو، نیز خرج ارسال کیا جائے۔ میں نے ان کی تحریر کے مطابق و آ دمیوں کوجلد سے جلد خرج دے کر بھیج دیا، وہ رائے سے واقف جس اور غازی بھا ٹیوں کے ارشاد کے مطابق کالا باغ میں انتظار کریں گے۔

عمکن ہے یہ پہلے نہیں، دوسرے خط کا جواب ہو۔ یہ بھی ممکن ہے کہ پھومدت بعد شخ ولی محمد نے بی بی صاحبہ کو لے کر جانے کا فیصلہ کرلیا ہوا دراس سلسلے میں رہبرو غیرہ کے لئے لکھا ہو۔ روپ سالانہ کی تحصیل کاعلاقہ مجاہدین کو ہزارہ میں دینے کیلئے تیار ہے، پندرہ ہزارروپ نفتہ پیش کرتا ہے، اسکےعلاوہ کہتا ہے کہ جاہدین دریائے سندھ کی دائیں جانب جتنا پہاڑی علاقہ اپنے قبضے میں لے لیں گے، وہ انہیں کی ملکیت سمجھا جائے گا۔ شرط صرف یہ ہے کہ وہ اُنہیں کی ملکیت سمجھا جائے گا۔ شرط صرف یہ ہے کہ وہ اُنہیں کی ملکیت سمجھا جائے گا۔ شرط صرف یہ ہے کہ وہ اُنہیں کی ریں، اِدھر سے ہم چڑھائی کریں گے تا کہ اسے ختم کردیا جائے، وہ بڑا بدع ہداور مکار ہے۔ اس نے جاہدین سے کوئی اچھاسلوک نہیں کیا۔

کردیا جائے، وہ بڑا بدع ہداور مکار ہے۔ اس نے جاہدین سے کوئی اچھاسلوک نہیں کیا۔

شخ صاحب اور مولوی صاحب نے بالا تفاق جواب دیا کہ ہم سمحوں کی جماعت

س ملا میں میں میں اور ووں ما حب سے بالا مال ہوا ہو، یا کہ ہم سول ی جماعت میں کسی مسلمان پر فوج کشی ہیں کرسکتے۔خواہ وہ کیسا ہی مکار وغدار ہو۔ ہری سکے کوہم سے ایسی امید ہرگز ندر کھنی چاہیے خواہ وہ کتنی ہی جا کیریں اور نفذر و پیدپیش کرے۔سید حسن شاہ سے میہ بھی کہددیا کہ آئندہ ہمارے پاس اس تم کا کوئی پیغام ندلانا۔

اللهار موال باب:

مولوی نصیرالدین منگلوری کی شهادت

ضروری گزارش

سیدصاحب کی شہادت کے بعد جماعت کے حالات ومجاہدات کی جو کیفیت اب
تک بیان ہوئی وہ' وقائع' کے ذخیرہ روایات پر بخی تھی۔ ستھانہ بہنچنے کے تھوڑی دیر بعد
روایات کا بیسلسلہ منقطع ہوگیا۔'' وقائع'' کا جونسخہ میرے پاس ہے، اس میں بعد کے
متعلق صرف ایک ورق موجود ہے، جتنے نسخے دیکھے وہ ناقص ہے، اورا کر نسخوں میں
روایات اس سے پیشتر ہی ختم ہو چکی تھیں۔ ممکن ہے'' وقائع'' کا کوئی کمل ترنسخہ بھی کہیں
موجود ہو، مجھاس کا علم نہ ہوسکا، لہذا اسکے سواچارہ نہیں کہ دوسرے ذرائع سے جومعلومات
ماصل کی جاسیس آنہیں پیش نظر رکھ کر قر ائن کی بنا پر حالات کا نقشہ تیار کیا جائے۔ میں
وامل کی جاسیس آنہیں پیش نظر رکھ کر قر ائن کی بنا پر حالات کا نقشہ تیار کیا جائے۔ میں
زیادہ کمل نے دار سکے تو اغلب ہے کہ زیادہ مفصل و متند نقشہ سا شن آجائے۔

ستفاندمين مدسة قيام

ڈ اکٹر بیلیو کے بیان کے مطابق مجاہدین تین سال تک بداطمینان ستھانہ میں مقیم رہے۔(۱)

⁽۱) اے جزل رپورٹ آن دی ہوسٹ زئی۔ ۔ A General Report on The Usuf zai by مطبوعہ گورتمنٹ پرلیں لا ہو ۱۸۲۳ء (ص :۹۵)

اس کا مطلب یہ ہوا کہ تقریباً ۱۸۳۸ و تک مجاہدین کی سالاری عامہ کا منصب مولوی نصیرالدین منگلوری کو حاصل رہا۔ مجاہدین کے امیر شخ ولی مجر پھلتی تھے، کین وہ مجاہدات میں ذیادہ سرگرم حصد نہ لیے ، جیسا کہ گذشتہ واقعات سے آشکارا ہے۔ ان کی تمام توجہ بی بی صاحبہ کوسندھ بہنچانے پرجمی ہوئی تھی۔ معلوم نہ ہوسکا کہ وہ کس ذریعے اور کس راستے سندھ بہنچ ، نہ یہ بتایا جاسکتا ہے کہ ان کے ساتھ کون کون سے مجاہدین سندھ آئے یا بیسفر بالنہ عیس کس زمانے میں ہوا۔ میر ااندازہ کہ یہ ۱۸۳۱ء یا ۱۸۳۷ء کا واقعہ ہوگا۔ بیسفر بالنہ عیس کس زمانے میں ہوا۔ میر ااندازہ کہ یہ ۱۸۳۱ء یا ۱۸۳۷ء کا واقعہ ہوگا۔ اسلاء کہ مولوی سید نصیرالدین وہلوی کی طرف سے ۱۲۵۴ء (۱۸۳۸ء) میں جواعلامات جا بجا بھیجے گئے ان پر دوسرے اصحاب کے علاوہ شخ ولی محمد کے بھی دشخط ہیں۔ یہ اس حقیقت کا جوت ہے کہ ۱۳۵ او سے پیشتر شخ موصوف بی بی صاحبہ کو لے کر سندھ بہنج گئے مقاور مجاہدین منگلوری کے دوشِ مقصاور بیابہ ین منظوری کے دوشِ محمد کر بارگراں مولوی نصیرالدین منگلوری کے دوشِ محمد کر برا۔ (۱)

ماحول کی سرسری کیفیت

اب ہمیں اس ماحول کی سرسری کیفیت سا صنے رکھ لینی چاہئے جس میں مجاہدین سخمانہ کام کرتے رہے۔ سخمانہ کے مغرب میں تھوڑے فاصلے پر خدو خیل کا علاقہ واقع تھا جہاں فتح خاس پنجتاری ایک مستقل ریاست کی تابیس میں لگا ہوا تھا۔ وہ ان خوا نین میں (۱) مولوں سرنسیرالدین د بوی کے ایک محتوب میں بتایا میا ہے کہ شخ ولی محمد ۱۳۹۸ جمادی الانزی ۱۳۵۳ ہے۔ موصوف فرماتے ہیں ماراکتو پر ۱۸۳۷ء کو بی ماحب کے رفقاء مرد ادر عور تمی کوئی دوسو ہوں کے ادر ان کے ساتھ تین شائیش تھیں۔ کہ بی بی صاحب ادر شخ صاحب بی اس عالموں کے ساتھ بی بی بی صاحب ادر شخصاحب بیاس عالموں کے ساتھ بی بی بی ماحب کے بی بی اس کے ساتھ تین شائیش تھیں۔ کہ دب بی ماحب اور قاضی محمد شکار بوری نے شکار بورے آئے کیل کران کا استقبال کیا۔

(مکتوبات کامخطوطی ۲۰۰۰)

ے تھا جنہوں نے سرحد میں سیدصاحب کی دعوت جہاد پرسب سے پہلے لبیک کہی تھی۔
اس کامقام پنجتار کم دبیش چارسال تک سیدصاحب کا مرکز بنار ہا۔ اہل ستمہ کی سازش کے
وقت فتح خاں کا اخلاص معرضِ اشتہاہ میں آیا اور سیدصاحب کو یہی مناسب معلوم ہوا کہ
پنجتار کوچھوڑ کر کسی دوسرے مرکز میں ڈیرے ڈالیس۔ مجاہدین نندھیاڑ سے واپس ہوئے
شے تو فتح خاں نے سیدمیاں ساکن تختہ بند (بونیر) اور سیدرسول ساکن ناوا گئی (چملہ) کی
وساطت سے آئیس پنجتار آنے کی دعوت دی اور ہرمکن ذریعے سے مخلصانہ خدمت گزاری کا
یقین دلایا۔ دس مہینے کے بعد آشکارا ہوگیا کہ اسکے پیش نظر ذاتی اغراض کے سوا کی جہیں
اور وہ مقاصد جہاد میں معاون نہیں بن سکتا، لہذا مجاہدین کو دوبارہ پنجتار چھوڑ ناپڑا۔

اس کے بعد پایندہ خان تنولی والی اُمب سرگرم دعاوی اخلاص کے ساتھ مجاہدین کو اگر در لے گیا جہاں وہ تقریبا تین سال رہے، لیکن خوانین اگر در کے خاتمے کے بعدوہ بھی عہد موافقت پر ثابت قدم ندر ہااور مجاہدین کواس سے بھی کنارہ کشی کے سواچارہ نظرنہ آیا۔ ستہ لینی میدانی علاقہ کے لوگ ۱۸۳۰ء کی خوفناک سازش کے وفت سے مجاہدین

ستہ یعنی میدانی علاقہ کے لوگ ۱۸۳۰ء کی خوفناک سازش کے وقت سے مجاہدین کے مخالف چلے آتے تھے اور مجاہدین کی جانب سے عفوو درگذر کے باوجودان لوگوں کے دل مطمئن نہ ہو سکتے تھے۔ اگر ور، دیش، نیکری، الائی وغیرہ کے لوگ بھی مجاہدین کی خیر خوابی کا دم نہ بھر سکتے تھے۔ اگر ور، دیش، نیکری، الائی وغیرہ کے لوگ بھی مجاہدین کی طرف خیر خوابی کا دم نہ بھر سکتے تھے ، سکھوں کی مخالفت مجاہدین کا نصب العین تھی اور ان کی طرف سے مصالحت کی بہ ظاہرا کی خوش گوار تبجویز کوشنے ولی محمد اور مولوی نصیرالدین نفرت سے مصالحت کی بہ ظاہرا کی خوش گوار تبجویز کوشنے ولی محمد اور مولوی نصیرالدین نفرت سے مصالحت کی بہ ظاہرا کے خوش گور انوں کے سوامجاہدین کو بے غرض اور سادات تبختہ بندیا اُن سادات کے بعض متفرق گھر انوں کے سوامجاہدین کا حسن سلوک پڑا خلاص تعاون کی امید کی حادات کی رفاقت کا متجہ تھا، نوا تی ستوں نے مجاہدین کی شیوں نے مجاہدین کی شیار کرشاہ سقانوی کے اثر ورسوخ کا کرشمہ تھا۔ کیلئے گزار رہے کا جوانظام کر دیا تھا وہ میدا کرشاہ سقانوی کے اثر ورسوخ کا کرشمہ تھا۔

بلاشبه مجابدین مدت مدیدتک ستفانه میں باطمینان مقیم رہے لیکن ان کے گردو پیش ہر جانب دشمنی کی آگ سلگ رہی تھی اور مخالفانه ہوا کا خفیف سابھی جھو تکا اسے کسی وقت مشتعل کرسکتا تھا۔

مجامدين برظلم وتعدي

معلوم ہوتا ہے کہ فتح خال پنجاری مجاہدین کی خالفت میں سب پر سبقت لے جانا چاہتا تھا، شایداس کی وجہ بیہ ہو کہ اس خرد کیے مجاہدین کو نتم کئے بغیرریاست کی بنیادیں استوار نہ کی جاسمتی تھیں۔ وہ اس ذریعے ہے اہل ستہ میں ہر دلعزیزی حاصل کر لینے کا خواہاں تھا۔ غرض اس نے گردو پیش کی بستیوں میں ایسی فضا بیدا کردی تھی کہ مجاہدین میں سے جہال کی کوکوئی آتا جاتا مل جاتا اسے لوٹ لینے اور بدسلوکی کا ہدف بنانے میں کوئی دقیقہ سعی اٹھا نہ رکھا جاتا۔ مجاہدین کی چھوٹی چھوٹی ٹولیاں ورویشوں کے بھیس میں ہندوستان سے ستھانہ پنچتی رہتی تھیں، فتح خال کے زیراثر بہتوں میں ان سے بے در پے بدسلوکیاں ہوتی رہیں، اس رنج افز اسلیلے کا ایک اہم واقعہ منارہ میں پیش آیا جو دریائے بدسلوکیاں ہوتی رہیں، اس رنج افز اسلیلے کا ایک اہم واقعہ منارہ میں پیش آیا جو دریائے سندھ کے کنارے واقع تھا اور ۱۸۲۱ء کی طغیانی میں بیشان ہوگیا۔

بیلیولکھتا ہے کہ نو وار دمجاہدین کی ایک چھوٹی می جماعت ہندوستان ہے آرہی تھی ، وہ لوگ منارہ پہنچے تو وہاں کے باشندوں نے ان کا ساراسا مان لوٹ لیا اور ان سے انتہائی بدسلو کیاں کیں۔(1)

تاديبي إقدام

پ در پے پیش دستیوں کے بعد مجاہدین کیلئے زبردست تادیبی اقدام کے سوا جارہ ندر ہا، چنانچے مولوی نصیرالدین منگلوری نے مجاہدین کی ایک جماعت لے کرمنارہ پر شبخون

⁽۱) اے جزل دیوت آن دی اوسف زئی (انگریزی) ص ۱۹۳۰

مارا۔ بیلیو کے بیان کےمطابق اس شیخون میں گاؤں کے بہت ہے آ دمی مارے گئے اور گھروں کولوٹا گیا۔(۱)

نتخ خال پنجتاری اس وقت سے مجاہدین کواپنے دشمن سمجھنے لگاتھا جب سے وہ سادات ستھانہ کے پاس مقیم ہوئے تتھے۔وہ اب مخالفت میں بہت سرگرم ہوگیا۔اس نے بہت جلد ایک لشکر جمع کرلیا،مجاہدین کواپنے ہاں کی پہاڑیوں سے باہر نکال دیا اور ان کے امیر نصیرالدین کوئل کرڈ الا۔(۲)

جنگ ِنُو بي

ییلیو کے بیان سے لڑائی کی صحیح کیفیت واضح نہیں ہوتی۔ قرائن سے معلوم ہوتا ہے کہ منارہ پڑجنون کے بعد مجاہدین نے ٹو پی پرحملہ کیا۔ اسلئے کہ وہاں کے لوگ بھی مجاہدین کی مخالفت میں بہت پیش پیش سے ہوا ہوین ٹی بی میں سے کہ وہاں کے باشندوں نے چھتوں پر سے جا دریں ہلا ہلا کر فتح خاں پنجتاری کے لشکر کواندر بلالیا۔ اس طرح مجاہدین بہتی میں محصور ہوگئے۔ مولوی نصیرالدین نے بہ حالت دیکھی تو ساتھیوں سے فرمایا کہتی کہ بہتی میں محصور ہوگئے۔ مولوی نصیرالدین نے بہ حالت دیکھی تو ساتھیوں سے فرمایا کہتی محبور ہوکہ تھی مرائے ہوئے اس پر چڑھ کر مقابلہ کرنا چاہئے ،لیکن اُدھر جانے کا راستہ ندل سکا، مجبور ہوکہ تھی مدیدیا کہ مجاہدین جہاں جہاں موجود جیں و جیں مور ہے قائم کر کے بہا درانہ جنگ کریں ،خالفین میں سے جو ذرا فاصلے پر سے ،ان پر گولیوں کی بارش ہوتی رہی اور جو قریب آئے ہوئے وہ کواروں سے موت کے گھاٹ اثر تے رہے۔ اس اثناء میں مولوی نصیرالدین کے سینے پر ایک گوئی ، وہ ڈھال تکوار لئے ہوئے بیٹھ گئے۔ لڑائی بدستور جاری رہی ، پھرایک اور گوئی گئی ، مو ڈھال تکوار لئے ہوئے بیٹھ گئے۔ لڑائی بدستور جاری رہی ، پھرایک اور گوئی گئی ، مو ڈھال تکوار سے موسوف شہادت یا گئے۔ (۳) جاری رہی ، پھرایک اور گوئی گئی جس سے مولوی صاحب موسوف شہادت یا گئے۔ (۳)

⁽۱) اے جزل ربوت آن دی بوسف ذئی (اگریزی)ص:۹۳

⁽r) اے جزل رہوئ آن دی پوسف زئی (انگریزی) ص: ۹۵

⁽٣) بزاره گزییر شربعض امور غلط طریق بریش کے گئے ہیں-مثلاً بیک مولوی بقیدهاشیدا مظلم سخد بر

شديدنقصان

اس جنگ میں مجاہدین کوشدید نقصان اٹھانا پڑا۔ مولوی صاحب کے علاوہ جماعت کے بہت سے اصحاب شہید ہوئے جن میں سے صرف مندرجہ ذیل ممتاز حضرات کے نام معلوم ہو سکے:

نیخ وزیر پیلتی ، نظام الدین خاں شاہ جہاں پوری، عبد الله بناری، کریم بخش سہار نپوری، شیر محمظیم آبادی، تمس الدین ہریانوی، النی بخش ہریانوی، قادر بخش ساکن امرو ہه، منتقیم ساکن گوتن، ابراہیم پور بی اور جا بی فاضل ساکن جسی کوٹ۔

مجروهين كى تعداد بھى خاص برزى تھى مثلا:

ا۔ شیخ ولی محمہ کے براد رئیستی شیخ عبداللہ کے جسم پرتلوار کے گیارہ زخم تھے۔

۲۔ حاجی امان اللہ کے بائیں بازومیں کولی لگی۔

س- شیرمحمرام پوری کادایاں کندهازخی موا۔

۳- جلال الدین گوجر کے سر، کند ھے اور پیٹ برتلوار کے زخم آئے۔

ا نکے علاوہ ملانور محمد گوجر کا بھانجاعبداللہ مظفر آبادی ، ملا الہام الدین ، انکے ساڑھونا در اور اساعیل سہار نپوری گولیوں سے زخمی ہوئے۔ باتی مجروحین کے نام معلوم نہوسکے۔

مولوی نصیرالدین شهید

مولوی نصیرالدین کی شہادت سے علاقہ سرحد میں مجابدین کا کاروبار جہادعملاً ورہم

مخذشتہ منجی کا بقید ماشید نصیرالدین ارسلان خال زیدے والے کی ایداد کے لئے لو پی آئے تھے، جو سکھوں کا معاون تھا اور فتح خال پنجاری کا مخالف نیموں کے سی طرفدار کی ایداد کے لئے تیار ہو سکتے بھے، اور ندو پھا اور فتح خال پنجاری کا مخالف ندو پی جسلے کی اصل وجہ بھی کی وہ بال کے لوگ خواہ مخاہدین کو ایڈ ا درجاج بن کور نئے میں اور کی بیان کی موقع پر دھا وابولا اور مجاج بن کور نئے میں الم ایک میں ہزارہ کر بیش کا دی مارٹ میں کہ موقع میں مارٹ کے موقع میں مارٹ کے مارٹ کی میں اللہ ایک میں ہوا ہوں کا درجاج بن کور نئے میں ایک میں میں میں میں کہ میں میں کہ میں کہ اور میں کے موقع میں میں کے موقع میں کے موقع کی مارٹ کے مارٹ کی میں کوشید کر ڈالا۔ (می۔ ۱۳۳۳)

برہم ہوگیا، اگر چہ جماعت اس کے بعد بھی باقی رہی الیکن اس کی مجاہدانہ سرگرمیاں بڑی حدت افسر دہ ہوگئیں ۔ مولوی صاحب موصوف منگلورضلع سہار نپور کے باشندے تھے۔
بالکل ابتدائی دور سے سید صاحب کے ساتھ دے اور آپ کی شہادت کے بعد جماعت کی مجاہدانہ سرگرمیوں کو اعلیٰ بیانے پر قائم رکھنے کا سہرا انہیں کے سرتھا۔ موصوف شاہ اساعیل، مولوی خیرالدین، شخ بلند بخت وغیرہ کی طرح شجاعت اور حسن تدبیر کا پیکر تھے۔ عمر کا کوئی صحیح اندازہ نہ ہوسکا۔ قرائن سے معلوم ہوتا ہے کہ خاصے من رسیدہ تھے، اس لئے کہ ایک روایت بیس بتایا گیا ہے کہ منہ میں کوئی دانت نہ تھا۔ جہاد نی سبیل اللہ کیلئے سید صاحب روایت بیس بتایا گیا ہے کہ منہ میں کوئی دانت نہ تھا۔ جہاد نی سبیل اللہ کیلئے سید صاحب کے دست مبارک پر بیعت کرتے وقت جو عہد و بیان کیا تھا اس پر زندگی کے آخری سانس تک چٹان کی طرح قائم رہے اور انجام کارخونِ شہادت سے اس پر تصدیق کی آخری مہر شبت کردی۔ انسانیت کے ان گراں مایہ گو ہروں میں سے تھے جن کا وجود قوموں اور ملکوں کیلئے انتہائی نخر وعزت کا باعث ہوتا ہے۔

وہسیدصاحب کی تربیت اور مردم گری کا ایک نہایت عمدہ نمونہ تھے۔للّہیت کی شان ملاحظہ ہوکہ اگر چیعلم وفضل ، قیادتِ عساکر اور انتظام وسیاست کے یگانہ جو ہروں سے مزین تھے اور کسی بھی ریاست ومملکت میں بلند ترین عہدوں کے فرائض بطریق احسن انجام دے سکتے تھے، تاہم کسی دنیوی غرض سے ان کے فکر وخیال کا دامن بھی آلودہ نہ ہوا ، اور اہل ملک وملت کی تحسین وصلہ سے بالکل بے نیاز ہوکر اپنی بیش بہازندگی ہے در لینے را و حق میں قربان کردی۔ رحمہ اللہ تعالی

جماعت كى كيفيت

یہاں پہنچ کر جماعت مجاہدین کی سرگزشت کا پہلا دورختم ہوگیا۔ جولوگ ہاتی ہے وہ بدستور ستھانہ میں مقیم رہے۔میراولا دعلی کوانہوں نے امیر بنالیا۔مولوی محمد قاسم یانی پی نہ پنجتار گئے، نہ شخ ولی محمد ادر مولوی نصیر الدین کے ساتھ دیشی یا اگر در میں رہے۔ معلوم ہوتا ہے کہ انہوں نے کوائی (درہ کا غال) میں اقامت اختیار کر لی تھی ، موقع پر ان کا ذکر آئےگا۔
سرگزشت کا دوسرا دور مولوی سید نصیر الدین دہلوی کی اقامت جہاد ہے شروع ہوتا ہے جنکے حالات آئندہ ابواب میں بیان ہوں گے۔لیکن یہاں یہ بتا دینا چاہئے کہ مولوی نصیر الدین کی شہادت کے بعد کم وہیش آٹھ نوسال تک سرحد میں کوئی قابل ذکر سلسلة جہاد شروع نہ وسکا۔اگر چہ سید صاحب کی جاری کردہ تحریر کی کا چراغ بدستور روشن رہا۔

﴿ ضميمه حصداول ﴾

محمداميرخال قصوري

مسلمانون كاجوشِ حميت

سیدصاحب کی تحریک جہاد نے مسلمانوں میں اسلامی جمیت کی ایک فاص حرارت پیدا کردی تھی جس کا ایک نہایت اچھانمونہ محد امیر خال قصوری تھے۔ ان کا نام''سیرت سید احد شہید''اور'' سرگزشت مجاہدین'' میں بار ہا آ چکا ہے۔ بیعفوانِ شاب بی میں سید صاحب کے پاس بی گئے تھے۔ ایک مرتبہ خود سید صاحب کے استفسار پر انہوں نے اینے حالات بتائے جن کا خلاصہ ذیل میں درج ہے۔

پی تصور کاباشدہ تھا۔ اغلب ہے بٹھان ہو۔ اس کا والدریاست ناہمہ میں ملازم تھا
اوراملوہ کے قلعے کے حفاظت اس کے ذہرے تھی۔ ساتھ ساتھ پیری مریدی کاسلسلہ بھی
جاری تھا اور جگہ جگہ اسکے مرید موجود تھے۔ تحد امیر خال کے بچا کی عرسیا جی میں گذری۔
دبلی ، کلکتہ ، بمبئی ، حیدر آباد ، سندھ ہے بھی فیض یاب ہو چکا تھا۔ چوں کہ بغداد میں دیر تک مقیم رہاتھا ، اسلئے عام لوگوں میں بغدادی مشہور تھا۔ اس نے دبلی میں سیدصاحب کود یکھا تھا۔ جب نواب امیر خال سے الگ ہوکر سید موصوف نے اجرائے جہاد کیلئے مستقل تحریک کا آغاز کیا تھا۔ تحمد امیر خال کا بچا اکثر کہا کرتا تھا کہ ایسا صاحب اخلاق ، عالی ہمت ، بلند ارادہ اور صاحب تاثیر بزرگ میں نے زندگی بحر میں نہیں و یکھا۔ جب سید مصاحب جائیں آکر بمبئی میں تھر سے وقعہ امیر خال کے بچانے بھی ان سے بیعت صاحب جے سے واپس آکر بمبئی میں تھر سے وقعہ امیر خال کے بچانے بھی ان سے بیعت

کی اور خلافت کامنصب پایا۔وہ اکثر محمد امیر خاں سے ذکر کرتار ہتاتھا کہ سیدصاحب جہاد کے لئے نکلیں گےتو میں بھی ان کی معیت اختیار کروں گااور تمہیں بھی ساتھ لے جاؤں گا، لیکن سیدصاحب کی روائگی ہے پیشتر اس کا انتقال ہوگیا۔

بچ کاعزم جہاد

محمدامیرخاں کی عمراس وفت گیارہ بارہ برس سے زیادہ نہتھی لیکن چھا کے ارشادات ول میں اس طرح پوست ہو گئے تھے کہ ای دور میں جہاد کیلئے سیدصا حب کے یاس چنجنے کا پختہ ارادہ کرلیا۔ چودہ پندرہ برس کی عمر ہوئی تو رائے بریلی کا ایک برہمن املوہ میں ملا جس نے سیدصا حب کے پاس سرحد پینینے کا ارادہ کررکھا تھا۔ پٹیالہ کا ایک مسلمان راجیوت مجمی اس کے ساتھ ہو گیا۔ان دو محصوں کاعزم تھدامیر خاں کے سمند شوق کے لئے تازیانہ بن گیا۔ والدیے گھر جانے کی اجازت مانگی۔اس نے بچھرویوں کے علاوہ سواری کے لئے ایک یابودے دیا۔ یوں محمد امیر خاں برہمن اور راجپوت کی معیت میں بظاہر وطن کی طرف اورحقیقتاً سیدصاحب کی جانب روانہ ہوا۔املوہ سے چوتھے دن پہلوگ امرتسر پہنچے، وہاں دسبرے کی تقریب میں بھاری اجتاع تھا۔مجمد امیر خاں اور اس کے ساتھی دسبرہ و کیھنے کیلئے مخبر گئے۔اس اثناء میں محمد امیر خال کی ملاقات کپتان سلطان محمود سے ہوگئی جو اس كوالدكامر يدتفاراس في يوجها كيه آئ؟ تومحد امير فال في ظاهر كياكه والد کے ساتھ آیا ہوں کیکن تھوڑی ہی دہر میں راز فاش ہو گیا اور پیۃ چل گیا کہ والد ہے اجازت لئے بغیر بھاگ آیا ہے۔اس کے بعد کپتان سلطان محمود آ گے جانے کی اجازت نەدىسىكتانغا_

کپتان کی معیت میں محدامیر خان کو ایک مرتبہ رنجیت سنگھ کے در بار میں جانے کا بھی موقع ملا۔ اس موقع پر عکیم عزیز الدین انصاری نے سید صاحب کا آیا ہوا ایک کمتوب خایا، جس کامضمون بیتھا کہ ہم لوگ نہ تیرے ملک و مال کے طالب میں نہ تیری

جان اورعزت کونقصان بہنچانا چاہتے ہیں، نہاڑنے کے خواہاں ہیں، صرف میرچاہتے ہیں کہ ہماراساتھ دے اور ہمارار فیق بن جا۔ دشمنوں کے خلاف جہاد کر کے ہم ملک تیرے جوالے کردیں گے۔ اگر بیدعوت منظور نہ کی تو لڑائی کے سوا چارہ نہ رہے گا۔ بین خطائ کر رنجیت سنگھ نے کہا کہ ایسا صاحب ارادہ اور صاحب ہمت و جرائت ہم نے اپنے زمانہ میں نہ کی کودیکھا، نہ سنا۔

محداميرخال كافرار

اس اثناء میں کہتان سلطان محمود کو کہیں جانے کا تھم ہوا۔ محمد امیر خال نے اس مہلت سے فائدہ اٹھایا۔ چوکیدار سے سیر کی اجازت نی۔ سواری ای کے پاس چھوڑ دی اورا پی ساتھیوں کو لے کر لا ہور کی طرف نکل پڑا۔ پہلے دن پندرہ کوں کا فاصلہ طے کر کے بیلوگ ایک مندر میں اترے، پھر منزل بہ منزل لا ہور او رراولپنڈی ہوتے ہوئے حضر و کے قریب ایک بستی میں پنچے جہاں کے حاکم نے پوچھا کہاں جارہ ہو؟ محمد امیر خال نے کہا کہ میرا بھائی افک میں ملازم ہے، اس سے طنے جارہ ہوں ۔ اس بیان کی غلطی بھی بہت جلد واضح ہوگئی، لیکن جب حاکم کو معلوم ہوا کہ محمد امیر خال سید صاحب کے پاس جا رہا ہے تو اس نے ایداد میں تامل نہ کیا۔ محمد امیر خال کے کا نول میں چھوٹی چھوٹی سنہری رہا ہے تو اس نے ایداد میں تامل نہ کیا۔ محمد امیر خال کے کا نول میں چھوٹی چھوٹی سنہری بالیں تھیں، انہیں چالیس رو بے میں بیچا۔ پچھ کپڑے بنواد ہے، دورو ہے بھنا کر خرج کے بالی تاکہ دے دے و یہ باتی نقد حوالے کر دیے۔ پھرایک آ دی ساتھ دیکر محمد امیر خال کو دریا کے کنارے کی ایک بستی میں پہنچا دیا۔ وہاں کے خان کو تا کید کردی کہ اس نو جوان کو بحفاظت کرارے کی ایک بستی میں پہنچا دیا۔ وہاں کے خان کو تا کید کردی کہ اس نو جوان کو بحفاظت دریا کے پاس پہنچا دیا جا ہے۔ اس طرح محمد امیر خال سیدصاحب کی فدمت میں پہنچا۔

سرحدی زندگی

محد امیر خال نے بچھ مدت بنجنار میں سید صاحب کے ساتھ گزاری۔انھیں کے

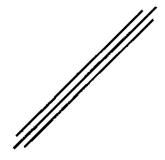
بعد کی زندگی

اس کا بنابیان ہے کہ ہم لوگ سرحد سے دوانہ ہو کرامیر المؤمنین کی ازواج کے پاس پیرکوٹ (سندھ) پہنچ ۔ ابان اللہ خال اور ابراہیم خال تو وہیں تفہر گئے ، میں نے چندروز کے بعدر خصت چاہی ۔ بوی لی بی صاحب نے مجھے داستے کیلئے معقول خرچ دیا اور اجمیر تک کرائے کے ایک اونٹ کا انتظام فرمادیا۔ چنا نچہ میں اجمیر میں مولوی سراج الدین کے مکان پر ابر اجو حضرت امیر المؤمنین کے خلص مریداور خلیفہ تھے۔ موصوف نے بوی عزت وتو تیر سے میری مہما نداری کی ، وہیں معلوم ہوا کہ نواب امیر الدولہ بہادر والی ٹونک نے وفات یائی اور نواب وزیر الدولہ بہادر جانشین ہوئے۔

چنانچ کھرامیر خال ایک گاڑی کرائے پرلے کرٹونک بہنچا۔ نواب وزیرائدولہ نے تین مہینے اپنے گھرامیر خال ایک گاڑی کرائے پرلے کرٹونک بہنچا۔ نواب وزیرائدولہ نے تین مہینے اپنے پاس تھم رائے رکھا۔ دونوں وقت اپنے ساتھ کھانا کھلاتے تھے۔ پھر محقول زادِراہ دے کر رخصت فر مایا۔ محمد امیر خال وطن پہنچا تو اسکے جو اقرباء ریاست میں ملازم تھے۔ متھے انہوں نے اسکی ملازمت کا بھی انتظام کرادیا۔ اس کے پانچ کھوڑے بھی نوکر تھے۔ ہم چھٹے مہینے تین سومن غلہ اورڈیڑ ھ سورو پے نقد محمد امیر خال کو ملتے تھے اور تین سومن غلہ سورو پے نقد محمد امیر خال کو ملتے تھے اور تین سومن غلہ سورو پے نقد محمد امیر خال کے مقرز ول کیلئے مقرر تھے۔ کم وہیش دی سال بیسلسلۂ ملازمت جاری رہا۔ (۱)

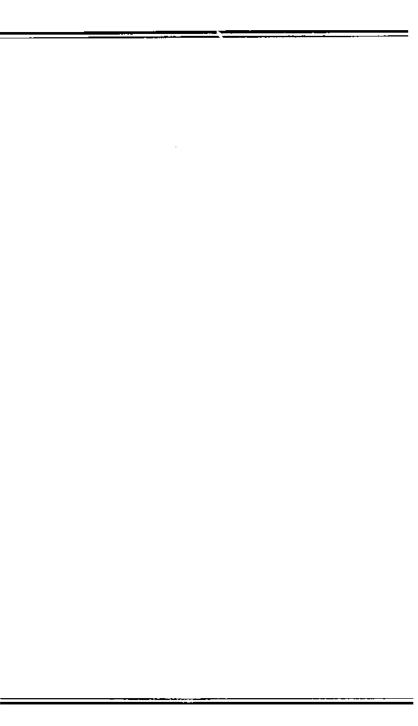
⁽۱) بیمالات دوقائع احمدی کے ماخوز جیں نواب امیرالدولہ کا انتقال ۱۸۳۳ء میں بوا، لبذا مجمنا جا ہے کہ محمد امیر خال ای سال مرمد سے والی آیا۔ المو محد کے پاس ایک معروف مقام ہے۔

برصغير ہند ميں تح يك احيائے دين اور سرفر وشانه جدوجهد كى كمل سرگذشت



حصهروم

(مولوی سیدنصیرالدین دہلوی)



يهلاباب:

مولوی سیدنصیرالدین د ہلوی

تتمهيد

ہم بتا ہے ہیں کہ متھانہ پہنچنے کے بعدمجاہدین کی حالت خاصی کمزور ہوگئ تھی۔ان کی كاركردگى كادائره بهت محدود موچكا تقاروه اس عظيم الشان جماعت كامحض ايك نشان ره كئے تھے جوسيدصاحب كى سركردگى ميں ہندوستان كى تطہير كىلئے اللمي تقى ،اورجس كى مجاہداند سر رمیوں نے چارسال تک بنجاب کی طاقتور سکھ حکومت کوسراسیمگی کاہدف بنائے رکھا تھا۔اگر چہ جاں نثاران حق کے چھوٹے چھوٹے گروہ وقتا فو قتاسر حدی بینے تر ہے تھے، تاہم عام مسلمانوں کے جوشِ جہاد میں افسردگی پیدا ہور ہی تھی ،اس لئے کہ سرحد میں کوئی نمایاں كارنامها نجام يان كاموقع باتى ندر باتها للبذاسيد صاحب كى تحريك جهاد ك كارفر ماؤل کوضرورت محسوس ہوئی کہ د دبارہ ایک بڑی جماعت تیار کر کے آزاد علاقے میں بھیج دی جائے،جس سے سیدصاحب کے شروع کئے ہوئے کام میں جوش وخروش کی نئی روح پیدا ہوجائے۔اس اہم فرض کی بجا آوری کا شرف روزِ از ل سے مولوی سیدنصیرالدین دہلوی کیلئے مقدر ہوچکا تھا،جنہوں نے سیدصاحب کے نقش قدم پر چلتے ہوئے ملک کے مخلف حصول کا دورہ کیا، دعوت جہاد ہے ایک جماعت تیار کی اورسید صاحب کی طرح وطن، مالوف سے بحرت کر کے کاروبار جہاد کی تجدید کا انظام فرمایا۔

مولوی صاحب کے حالات

مولوی سید نصیرالدین و بلوی حضرت سید ناصرالدین تفاییری (۱) کی اولادیس سے تھاورشاہ رفیع الدین محدث و بلوی کے نواسے تھے۔ (۲) نفعالی رشتے کی وجہ سے ویلی ہی ہیں تربیت پائی لیکن ابتداء ہیں تخصیل علم کی طرف چندال توجہ نہتی ۔خود فرماتے ہیں کہ شاہ آگی (۳) کی صاحبز ادی سے نکاح کیلئے والدہ نے درخواست کی مگر علوم سے بالتفاتی کے باعث درخواست منظور نہ ہوئی۔ اس واقعے نے مولوی سید نصیر الدین کے دل میں خاص جوش پیدا کر دیا اوراس و وق وشوق سے پڑھنے گئے کہ تھوڑی ہی مدت کے دل میں خاص جوش پیدا کر دیا اوراس و وق وشوق سے پڑھنے گئے کہ تھوڑی ہی مدت مرکولی صاحب نے بیجی شاہ الحق نے یہ دیکھتے ہی صاحبز ادی کا نکاح ان سے کر دیا۔ مولوی صاحب نے بیجیل علوم کیلئے پورب کا سفر کیا اور کلکتہ ہیں بھی خاصی دیر تھہر ب مولوی صاحب نے بیجیل علوم کیلئے پورب کا سفر کیا اور کلکتہ ہیں بھی خاصی دیر تھہر ب مولوی سید نصیر الدین و ہیں مقیم تھے۔ ۱۳۲۰ ھیں شاہ آگی وعظ فرماتے تھے تو مولوی سید نصیر الدین و ہیں مقیم تھے۔ ۱۳۲۰ ھیں شاہ آگی وعظ فرماتے تھے تو مولوی نصیرالدین مرابیا۔

دعوت ونبليغ

حاجی سید عبدالرحیم سورتی ، مولوی بہاؤالدین چینا پٹنی (۴)، احمد سادہ کار، امام الدین سوزن ساز وغیرہ رفیقانِ خاص ہے مشورہ کیا اور کہا کدا پنے میں سے کسی ایک

⁽۱) بعض اصحاب نے انبیں سونی بی تکھا ہے۔ دونوں مقاموں بین نصل خاصا ہے۔ اعلب ہے کدوہ پہلے تھائیسر میں رجے ہوں بعداز ال سونی بت بین قوطن اختیار کرایا ہو۔

⁽٢) شاہر فیج الدین کے پانچ بیٹے تھے اور ایک بیل۔ بین کا نام است اللہ تعابمولوی سید فصیر الدین ای کے بعل سے تھے۔

⁽٣) شاواتلی محد افضل کے فرزندا درشاہ عبدالعزیز محدث (برا درشاہ رفیع الدین) کے نواے تھے۔

⁽س) چینا شدراس کابرانانام ہے۔

کوامیر بنالو۔سب رفیقوں نے خود مولوی صاحب ہی کی امارت پراتفاق کیا۔اس کے بعد آپ نے ٹوکک، اجمیر، میرٹھ ،امروہہ، رام پوراوراطراف ویلی میں دعوت و تبلغ کی غرض ہے دورے کئے تاکہ مجاہدین کی ایک جماعت فراہم ہوجائے۔ اس سلط میں احیائے دین اورر قبد عات کا کام بھی انجام دیتے رہے۔ چھوٹے چھوٹے معاملات کے متعلق اختلافات مٹانے اور مسلمانوں کو اصل و اساسات وین پر متحد کرنے کا خاص اہتمام تھا۔ ایک موقع پر کسی نے کہا کہ ذہبی معاملات میں اختلاف نیانہیں، یہ صحابہ کے اجبائ زمانے میں بھی موجود تھا۔سید نصیرالدین نے فرمایا کہ ہم اکابر کی لغوشوں کے اجبائ پر مامور نہیں۔ بیشک صحابہ میں باقتضائے بشریت اختلاف کی مثالیں بھی ملتی ہیں، لیکن ہیں ان کے مکارم کی ویروی کرنی چاہئے۔

دوست محمدخال سے نامہ و بیام کی تجویز

مولوی سید نصیرالدین کے مقاصد نہایت بلند، نظر دور رس اور طبیعت بہت بھی ہوئی مقی ۔ وہ پرانے جھڑوں میں الجھ کر وقت کے احوال وظروف سے چہٹم پوٹی نہ کر سکتے ہے۔ انہیں معلوم تھا کہ سید صاحب کے زمانے میں پٹاور کے بارک زئی سرداروں کی پور پے معاندت کے باعث ایک افسو ساک کٹکٹ پیدا ہوگئ تھی، جو حد درجہ رخ وافزا ناکج کا سرچشمہ بن گئی اوراس وجہ سے دوست خال والی کابل بھی جماعت مجاہدین ناکج کا سرچشمہ بن گئی اوراس وجہ سے دوست خال والی کابل بھی جماعت مجاہدین کا حامی یا خبرخواہ نہ رہا۔ تا ہم خود مولوی صاحب موصوف کے زمانے میں دوست محمد خال ایک طرف سکھوں سے مصروف پیکارتھا، دوسری طرف آگریزوں کے اقد امات کی روک تھام میں قابل ستائش استقامت و کھار ہاتھا۔ لہذا آئیس دوست محمد خال سے صلیفا نہ تعلقات پیدا کرنے میں ایک لیے کیلئے بھی تامل نہ ہوا۔ وہ زیادہ تر وقت و بلی کی تعلقات پیدا کرنے میں ایک لیے کیلئے بھی تامل نہ ہوا۔ وہ زیادہ تر وقت و بلی کی اکبر آبادی مسجد میں گزارتے تھے، جہاں شاہ عبدالقادر محدث اور شاہ رفیع الدین محدث

کے بعد دیگرے درس دیے رہے تھے، اور خود سید صاحب نے بھی تنظیم جہاد کا کار و بار ای مجدیں بیٹ کرشروع کیا تھا۔

یک دوتن یک دونفس بهرخدابنشیند

آسال مجدہ کند برسرخاکے کہ برو

چنانچ مولوی سید نصیرالدین نے ای مجدیس رفیقوں سے مشورے کے بعد دوست محمد خال کے پاس سفارت بھیجنے کا فیصلہ کیا۔ اس کیلئے انظامات بھی کھمل کر لئے۔ ابواحمد علی ادر سید ابراہیم سورتی اس سفارت کیلئے تجویز ہوئے ، کیکن اچا تک سیدعبدالرحیم سورتی اور سیدعبدالرحیم سورتی اور سیدعبدالرحیم بڑالی کے درمیان کی معمولی بات پر جھڑا ہوگیا۔ نوبت یہاں تک پینی کہ بڑگالی نے سورتی کا ہاتھ دانتوں ہے د بالیا۔ سورتی نے ہاتھ زور سے کھینچا تو بڑگالی کا ایک دانت اکھڑ گیا اور بہت خون نکلا۔ (ا)

اس ناخوش گوارواقعے کی وجہ سے ارسال سفارت کی تجویز معرضِ التواء میں پڑتمی، تاہم مولوی سیدنصیرالدین میدانِ جہاد میں اتر آنے کے بعد امیر دوست محمد خال کی جانب سے دفاعی کوششوں میں برابر معاون ومددگار رہے، جسیا کہآگے چل کر واضح ہوگا۔

عزم ہجرت

بہر حال مولوی صاحب جہادی نیت ہے ججرت کیلئے تیار ہوگئے۔ان کی خواہش یہ ججرت سے پیشتر ملک کے مختلف حصوں میں دورہ کریں اور زیادہ سے زیادہ مسلمانوں کو معیت کیلئے تیار کرلیں ۔سید صاحب کے مقرر فرمائے ہوئے نقیب جابجا دعوت و تبلیغ میں مصروف تھے۔ مثلاً مولا نا ولایت علی عظیم آبادی، پہلے حیدر آباد میں کام کرر ہے تھے،سید صاحب کی شہادت کے بعد اپنے وطن بہنچ سے۔ان کے بھائی مولا نا دار ہے والی سید میں مارہ میں رسالے ہا فرزیں جوانموں نے مولوی سید میرالدین کی مجاہدانہ سر کرمیوں کے محل سا۔

عنایت علی مشرقی بنگال میں سرگرم عمل سے مولوی سید محمطی رام پوری مدراس میں وعذا ،
سیداولاد حسن قنوتی اپنے گردو پیش یمی کام انجام دے دہ سے سے مولوی سیدنصیرالدین
سیداولاد حسن قنوتی اپنے گردو پیش یمی کام انجام دے دہ سے سے مولوی سیدنصیرالدین
عالبا جا ہے ہے کہ دعوت و تبلیغ کی ان مسامی میں تنظیم پیدا کر کے انداز ، فرمالیس کہ کل کتنی
جمعیت کا انتظام ہو سکے گا اور آئندہ کیلئے بجاہدین کی آمد کا سلسلہ کس بیانے پر جاری رہ
سیم گا۔ نیز انجی خواہش تھی کہ جن حصوں میں منظم دعوت و تبلیغ کا انتظام نہیں ہوا، ان میں
بھی گھوم پھر کر اجرائے کار کابند و بست کردیں۔ جب سوچا کہ اس طرح آغاز جہاد میں
بہت تاخیر ہوجائے گی تو یمی فیصلہ کیا کہ زیادہ تاخیر ندروار تھی جائے اور ظاہر ہے کہ
جواں مردانہ میدانِ جہاد میں اتر آنا بجائے خود دعوت و تبلیغ کا ایک مؤثر پینام تھا۔ اس
سلسلے میں جو پچھ پہلے ہو چکا تھا اور بور ہا تھا ، اس میں لاز مازیادہ جوثن و سرگری پیدا ہوجائے
کے قوی امکانات موجود ہے۔

والده يعاجازت

مولوی صاحب کی والدہ ماجدہ زندہ تھیں،ان سے اجازت لینے کامر حلہ طے نہ ہوا تھا۔والدہ کی ایک تمنا یہ تھی کہ ماہ رمضان کے اندر جامع شاہ جہانی میں نماز اواکریں۔ مولوی صاحب نے رمضان ۱۲۵۰ھ (جنوری ۱۸۳۵ء) میں ایک رات نماز ترائع کے بعد والدہ کی یہ تمنا پوری کردی،اپ ساتھ مجد میں لے گئے اور انہوں نے باطمینان جننی دریا کہ مناز پڑھٹی رہیں۔اس خدمت سے وہ بہت خوش ہوئیں،اس وقت مولوی صاحب نے عرض کیا۔قرآن مجید کاارشاد ہے:

مولوی صاحب نے عرض کیا۔قرآن مجید کاارشاد ہے:

مولوی صاحب نے عرض کیا۔قرآن مجید کاارشاد ہے:

ترجمہ: تم ہر گز حقیق نیکی کونہ پہنچو کے جب تک ان چیزوں میں سے خرچ نہ کرو،

جن ہےتم کو پیارہے۔

بیآیت پڑھ کرکہا کہ آپکو مجھ سے بہت محبت ہے، میں خداکی راہ میں جہاد کا آرز ومند ہول ، آپ اس کار فیر کہا کہ آپکو مجھے اجازت دیں اور مفارفت پر صبر و تکلیب سے کام لیس سید ہول ، آپ اس کار نے بخوشی اجازت دیدی۔ اس طرح مولوی صاحب کے راستے کی آخری رکاوٹ بھی دور ہوگئی اور وہ پورے اطمینان سے بجرت کی تیاری میں مصروف ہو گئے۔

سامان سفر

مولوی صاحب نے بہت تھوڑی مدت میں سفر کا سامان تیار کرلیا، جس کی تفصیل ہمیں معلوم نہیں۔ صرف اتناجائے ہیں کہ موصوف کی اہلیہ نے فرش اورظروف کے علاوہ اپنے کیڑوں کی ایک جوڑی پیش کی ، نیز مندرجہ ذیل کتابیں ساتھ لیں: قرآن مجید ہفییر جلالین ، مشکلو قہ سنن ابی داؤد، جبل اہمین ، حجہ اللہ البالغہ میں سے کتاب الاحسان۔

بعض رفیقوں نے عرض کیا کہ تغییر بیضادی بھی ساتھ لے لیجئے ۔ فرمایا: ہم جس مقصد کے لئے یہ سفراختیار کررہے ہیں اس میں کتابوں کے مطالعے کی نوبت نہ آئیگی۔ سرزی الحجہ ۱۲۵ ہے (۲ را پر میل ۱۸۳۵ء) کو گھریار، اہل وعیال اوراعزہ واحباب سے مفارفت اختیار کر کے عرب سرائے میں جاتھ ہرے، جو دہلی ہے تقریباً چارمیل پر ہے۔ مجاہدین کی مختصری جماعت ساتھ تھی۔

ہمارے ہاں لوگ عیدین کے موقع پر باہر سے گھروں میں آتے ہیں تا کہ شاد مانی کی بیتھر یہیں عزیز وں اور دوستوں میں اداکریں الیکن جوتن پرست بزرگ اپنی زندگیاں اہم ویٹی کاموں سے پیار ہوتا ہے اور دنیا کی کوئی خوشی انہیں اپنی طرف متو جہیں کر سکتی ۔ مولوی سیدنصیر الدین مزید چندروز کے لئے تو قف فرما کر عیدکی نماز وطن میں اداکر سکتے تھے لیکن انہوں نے جس اہم فرض کی

بجاآوری میں اپنی جان تک ویدینے کا عزم فرمالیا تھا، ان کے نزدیک زندگی کی ہرخوثی صرف اس کی تکیل پرموتوف رہ گئی تھی۔ چنا نچہ وہ بے تکلف اٹھے اور قرب عید چندروز کیلئے بھی ان کا عنال گیرنہ ہوسکا۔ راورضا سہل نہیں، بہت تھن ہے لیکن مردانِ حق نے مشکلات کو یک قلم نظر انداز کرتے ہوئے ہمیشہ اسے بے پروایا نہ طے کیا ہے، اور جب تک و نیا باقی ہے مردانِ حق کے اس شیوے میں فرق نہیں آ سکتا۔ ان کے سانے وجود کا ہرتاراس ترانے کے لئے وقف تھا۔

صيدے كەندشدكشة دريى بندحرام است

زندانی مغم باش که در شرع محبت

دوسراباب:

سفرہجرت

داسط كامسك

ابوحمد کا بیان ہے کہ مولوی سیّد نصیر الدین لدھیانہ کے راستے سرحد پنچناچاہتے ہے، جہال سیدصاحب کے بقیۃ السیف رفقاء موجود ہتے۔ گویا وہ دبلی سے پانی پت، کرنال، انبالہ، لدھیانہ، بہاول پوراور ڈیرہ غازی خال کاراستہ اختیار کرناچاہتے ہے(۱) کی تبینی دورے کے سلیلے میں ٹو تک گئے ہتھے تو نواب وزیرالدولہ نے مولوی صاحب سے عہد لیا تھا کہ سرحد جاتے ہوئے ٹو نک سے ہوکر جا کیں، البذا مجوز و راستہ چھوڑ کر شوکک، اجمیر اور راجیوتانہ کاراستہ اختیار کیا گیا۔

أتجرت

جیدا کہ عرض کیا جاچکا ہے، مولوی صاحب ۳ رذی الحجہ ۱۲۵ ہو کھر ہے نکل کر عرب سرائے میں تفہر محتے تھے، جوا کئے سفر ہجرت کی پہلی منزل تھی ، اور وہاں تین دن مقیم رہے۔ یقینی طور پر معلوم نہیں کہ اسحد ساتھ کتنے ارباب عزیمت تیار ہوئے، لیکن خیال ہے کہ انکی تعداد زیادہ نہ ہوگ ہمیں صرف مندرجہ ذیل اصحاب کے نام معلوم ہوسکے:

میٹے محمد تقی اللہ آبادی، حاجی سیّد عبد الرحیم سورتی، شیخ عبد الکریم شاہ جہان آبادی

⁽۱) رسالے میں ندکور ہے کہ مولوی سید نعیر الدین لدھیانہ اور لا ہور کا راستہ افتیار کرنا جا ہے تھے۔ بید راستہ اس صورت میں افتیار کیا جا سکتا تھا کہ جماعت مچھوٹی مچھوٹی ٹولیوں میں بٹ جاتی اور تمام لوگ درویشیوں کے نباس میں سکھول کی مکومت ہے گذرتے۔ بصورت و مگروہی راستہ افتیار کیا جا سکتا تھا جس کا ذکر میں نے متن میں کیا۔

(مؤذن جماعت)، سيدعبد الرجيم بركالی، شخ رمضانی، شخ عبد الکريم عازی پوری، شخ عبدالله گورکی، شخ عبدالله گورکی، شخ الله بخش الله آبادی، شخ کرم علی، شخ واحد علی سيد واحد حسين، شخ رجب علی شخ کريم بخش سيد وزير علی (بيه چهاصحاب حوالی عظيم آباد کے باشند ہے ہے)، شخ امجد علی برگالی، رشم خال شاہ جہان آبادی، شخ قادر بخش صباغ شاہ جہان آبادی، شخ قادر بخش صباغ شاہ جہان آبادی، شجم آملعیل بحثی، فور محمد بخابی، مولوی ابراہيم اورنگ آبادی، کريم خال بريلوی (بيد دونوں بزرگ بهت نور محمد بخابی، مولوی ابراہيم اورنگ آبادی، کريم خال بريلوی (از اولاد شخ آدم بنوری)، بوڑھے ہے)، شريعت الله سهار نبوری، محمد بنگالی، سيدنوازش علی (از اولاد شخ آدم بنوری)، ميرز ااحمد بيک دکنی، شخ حبيب الله پنجا بی، شهباز خال ساکن حوالی د بلی، شمس الدين قصاب، سيد ابواحم علی، سيدمحمد آخل (برادر کلال ابواحم علی)، ميرز اشهاب الدين فرزند ميرز امجمد حسن تيوری مو خر الذکر شنرادگانِ د بلی جس سے ہے اور انھوں نے چند آدی ميرز المحمد سے سے اور انھوں نے چند آدی

نمازعيدإضى

۲ رذی الحجرکومولوی صاحب عرب سرائے سے روان ہوئے اور قطب صاحب میں حوضِ مشی (۱) کے کنار مے مسجد اولیاء کے متصل تیام کیا۔ عرذی المحجرکو چلے تو ای دن یا ایک دن رائے میں قیام کرتے ہوئے ریواڑی پہنچ گئے، جہاں ایک باغ میں تشہرے۔

⁽۱) یدوض قطب صاحب کے قریب تھا اور سلطان مٹس الدین انتش نے بنوایا تھا۔ اب اس کا صرف نشان ہائی ہے۔ ابن بطوط کے بیان سے معلوم ہوتا ہے کہ بیدو کیل چوڑ ااور ایک میل اما تا ہے کہ اس حوض سے قطب صاحب کے جمر نے میں پائی جا تا تھا اور تکلافوں کے زمانے میں اس کا پائی تظلی آباد کی خندتی میں پہنچا تھا۔ مجد اولیاء اس حوض کے مشرق کنارے برخی ، نشان اب بھی موجود ہے۔ کہتے ہیں کہ حضرت خواج قطب الدین بختیار کا کی اور بعض دوسرے بردگوں نے خودٹو کریاں و موجو موکریہ مجد منائی تھی ، نیز خواج ما حب اور حضرت خواج معین الدین الجمیری نے اس و جہ سے مجداولیاء یا اولیاء میا والیاء محدے نام سے مشہور ہوگئی۔

عیدِ النحیٰ کی نمازای مقام پراوا کی۔

ہم بتا چکے ہیں کہ بعض اوقات راوحق میں قدم رکھتے ہی شدید امتحانوں سے مابقہ پڑجا تا ہے۔ اہل حق کیلئے بیامتحان از دیادِ ایمان داستقامت کا باعث ہوتے ہیں۔ گویا قدرت خود ایسا انظام کردیتی ہے کہ وہ لوگ بخت تر مشکلات کومبر وسکون سے برداشت کر لینے کے اہل بن جا کیں۔ مولوی صاحب کو بھی ابتدائی منازل ہی میں شدید امتحان سے دوچار ہونا پڑا، یعنی راستے کے حرج کیلئے جورتم ایک تھیلی میں محفوظ کررکھی تھی، وہ مم ہوگئی۔ دوچار ہونا پڑا، یعنی راستے کے حرج کیلئے جورتم ایک تھیلی میں محفوظ کررکھی تھی، وہ مم ہوگئی۔

ج پور

ریواڑی ہے ۱۵رزی المجہ کو روانہ ہوئے۔گری کاموسم شروع ہو چکا تھا۔ پھر
راجیوتانہ کاسفر، بری تکلیفیں چیش آئیں۔ جے پور پہنچ کر حکیم واصل خال کے باغ میں
تھہرے ۔ رفیقول میں سے سیّد ابواحم علی کے بھائی سیّد محمد المحق خاصے کمزور تھے اور کئی
مزمن بیار بول میں مبتلا چلئے آئے تھے۔ریگزار میں پیدل چلئے سے کمزوری بڑھ گئی۔اس
مزمن بیار بول میں مبتلا چلئے آئے تھے۔ریگزار میں پیدل چلئے سے کمزوری بڑھ گئی۔اس
اثناء میں لوگئی۔ میرزا شہاب الدین کے ساتھ گاڑی تھی۔ انھوں نے اپنی پاس بھالیا،
لیکن جے پورو پہنچنے کے دن سیدصا حب فوت ہو گئے۔ جہاد کی نیت سے جمرت اختیار کی
تھی۔اگر چہ میدانِ جہاد میں نہ پہنچ سکے،کین بجرت اور جہاد دونوں کے ثواب سے شرف

ج پور میں باہر سے میت لا تاممنوع تھا۔ میر ذاشہاب الدین حسن تد ہیر سے ان
کی میت واصل خال کے باغ میں لے گئے۔ وہاں مرحوم کی تجہیز وتکفین ہوئی۔ مولوی سید
نصیرالدین نے اس موقع پر نہایت پر تا ثیر خطبہ دیا، جس میں فرمایا کرسیّد آخی نے خداسے
جوعہد کیا تھا، اسے پورا کر دکھایا۔ دعاء ہے کہ ہم سب کو اپنے عہد پورے کرنے کی تو فیق
ارزانی ہو۔ سیّد ابوا حمل نے اپنے بھائی سیّد امیر الدین اور دوسرے احباب واعو وکو جو
خط بھیجا، اس میں لکھا:

بعد ازسلام مسنون محبت مقرون واضح آنکه بعد از بجرت ازال دار الحرب پرُاز کرب درج بوررسیدو درآنجا واقعهٔ ناگزیراخی الاعظم مغفور ومرحوم پیش آمد به انالله وانالیدراجعون - (1)

ترجمہ: محبت بھرے سلام مسنون کے بعد واضح ہو کہ ہیں تکلیفوں سے
لبریز دارالحرب کوترک کر کے جے پور پہنچا اور وہاں بڑے بھائی مغفور وہ جوم
کی وفات کا داقعہ پیش آیا تحقیق ہم سب اللہ کے لئے ہیں اور اس کی طرف
لوشنے دالے ہیں۔

ثونك

ج پورے آ می صرف ایک منزل کا نام معلوم ہے، یعنی نوائی ، جوٹو تک کی سرحد

کر جرب واقع ہے۔ مولوی سید نصیر الدین ، سید وزیم کی سید واحد حسین اور شخ شریعت

اللہ ج پوری میں بیار ہو گئے تھے۔ سید الواحم علی ان سب کی بیخار داری کرتے رہے۔

غالبًا بیاری ہی کے باعث وہاں ایک ہفتہ تھہرے رہے۔ نواب وزیرالد ولد کو پیغام بھیج دیا

تھا۔ مولوی صاحب کی بیاری کاس کر نواب ممدوح نے آپ کیلئے میا نہ ارسال کر دیا اور

استے میں جگہ جگہ آ دمی مقرر فرمادیے ، جو مولوی صاحب کا استقبال کیا۔ مصافحہ و محافقہ کے

راستے میں جگہ جگہ آ دمی مقرر فرمادی ، جو مولوی صاحب کا استقبال کیا۔ مصافحہ و محافقہ کے

بعد زین پوش بچھا کر دعائے صحت کی۔ مولوی سید نصیر الدین کی طرح نواب وزیرالد ولہ

بھی کی الدیاء اور کیٹر البکاء تھے۔ ان کا مقررہ و ستوریہ تھا کہ ہرکام کے آغاز اور انجام پر

وعاء کرتے بعض اوقات در بار میں بیٹھے بیٹھے کلاہ سرے اتار کر دعاء کے لئے قبلہ رن

مکر سے ہوجاتے۔ در باریوں کوتا کید فرمار کھی تھی کہ ایسے موقع پر بہ اطمینان بیٹھے رہیں

اور اعزاز کی غرض سے ہرگز کھڑے نہ نہوں۔ خاص طور پر قابل ذکر امریہ ہے کہ زندگی

میں کمی دیمن کے لئے بھی وعائے بدنہ کی۔

⁽١) "اخبارمولوي سيدفعيرالدين" خليف سيداحدما حب يخطوط ص:٢٠

مولوی صاحب نے پہلے روزعیدگاہ کے باغ میں قیام کیا، دوسرے دن ان کے

کے منورخاں کا بنگلہ اور احاطہ تجویز ہوا، جہاں نواب ممروح کے بھائی صاحبز اوہ حافظ محمد جمال دیتے تھے۔

مهمان داری اور شحا ئف

نواب وزیر الدولہ نے مولوی سیرنصیر الدین اور ان کے رفیقوں کی مہمان داری بوے اعلیٰ پیانے پر کی ۔ایک روز نظر باغ میں وعوت کا انتظام کیا، جس میں تمام صاجزادے، اکابرریاست ،سیدحمیدالدین رائے بریلوی اور دوسرے اصحاب شریک تتھے۔سب نے دو مفیں باندھ کیں اور مولوی سیدنصیرالدین سے با قاعدہ بیعت کی۔اس موقع برنواب وزیرالدولہ نے فرمایا که حضرت امیرالمونین ٹونک تشریف لائے تھے تو میں تحصیل علوم سے فارغ نہ ہوا تھا۔ آپ تشریف لے گئے۔ مجھے ہوش آیا تو اپنی محرومی برحد درجدافسوس ہوا۔ میں نے بہت سے در ویشوں کو دیکھا، جوفیض سیدصا حب سے یایا، وہ سمی دوسری جگہ سے حاصل نہ ہوا۔ مولوی سیدنصیر الدین میں ای فیض کا پڑ تو نظر آتا ہے۔ نواب صاحب نے اسلحہ مثلاً تلواروں ، ہندوتوں کے علاوہ اونٹ اور گھوڑ ہے مولوی صاحب کی خدمت میں پیش کیے۔ایک گھوڑاا تناعمرہ تھا کہ ویسائسی رئیس کے پاس نہ تھا۔آیک محودے کا نام' مخوش خرام' تھا۔تیسرا محود اکمیت تھاجس کا نام' بری' تھا۔ دو کھوڑے سرنگ تھے۔ایک سرخ،ایک مشکی اور ایک سبزہ رنگ نواب کے رفیقوں میں سے جد اکبرخاں نے ایک گھوڑا دیا۔صالح محد خال نے دعوت کی تو ایک گھوڑا، ایک اونث، ایک یا بواور ایک تکوار پیش کی ۔ان کے ایک خدمت گار غلام جیلانی نے ایک **یا بونذ رکیا، نیز فرش، خیمے، بوی جانمازیں،گھڑیال،ایک بوی دیگ اور دوسراسامان توشه** فانة رياست علا تواب نے تمام جاہدوں كے لئے دستاروں، الكر كھوں، ياجامول، کمربندو**ن ادر یا پیشون کا**انتظام کردیا، نیز کھانڈ اورا کمی کی بڑی مقدارساتھ کردی کیمسی کو

صفراوى بخار بوتو دوران سفريس اس كاعلاج كياجا سكه-

ریتفسیلات سید ابواحرعلی کے رسالے سے ماخوذ ہیں۔ وہ آیک خطیس تکھتے ہیں:

نواب معلی القاب دین پرور، نیکوسیر، حامی کوین محتین محری ، محی صراط

مستقیم احری نصر اللہ تعالی بدانواع تائیدات و تکریمات جماعت مہاجرین

معامل شدوبا سلاح وچار پایان سواری وبار برداری بدو جہ نیکود لجوئی وخدمت

مخزاری ایں جماعت با کرامت کردند۔(۱)

ترجمہ: بلند لقب والے نواب نے جو دین کے خدمت گزار، نیک سیرت، دین محمدی کے حامی مراطمتنقیم احمدی کے زندہ کرنے والے ہیں، الله تعالیٰ ان کا ناصر ہو، فتلف طریقوں سے جماعت مہاجرین کی تائید و تکریم فرمائی ہتھیار دیے، سواری اور بار برداری کے لئے جانور مہیا کیے اور اس جماعت کی خدمت گزاری و لجوئی احسن طریق برفر مائی۔

او کنلے کا بیان

او کنلے کا ذریعہ معلومات خداجانے کیا تھا، وہ اپنے مقالے'' وہائی ہندوستان ہیں'' کھتا ہے کہ مولوی نصیرالدین وہلی سے روانہ ہوئے تھے تو ان کے ساتھ تھوڑے سے آدمی ستھے ٹو تک میں آخیس مجاہدین کی بڑی تعدادل گئی۔وہاں سے روپیہ بھی بہت ملا اور ہتھیار مجمی ۔ پھر دہ شکار پور چلے گئے۔ان کا فیصلہ بیتھا کہ مجاہدین خاصی تعداد میں جمع ہوجا تمیں توسکھوں سے لڑیں۔(۲)

مین کی مولوی سیدنسیرالدین ابتدائی بین شکار پور چلے گئے تھے۔اس مقالے میں بعض اور بھلے گئے تھے۔اس مقالے میں بعض اور بھی غلط باتیں درج ہیں، تاہم اس میں شبنیں کدد، بلی سے ان کی روا تکی اور تو یک سے امداد کے متعلق جو کچھ لکھا گیا ہے، وہ فی الجملہ درست معلوم ہوتا ہے۔

(۲) كلكتاريوي، بابت جولا لك ١٨٨٥، ص ١٨٨٠

⁽۱) اخبارمولوی سیدنصیرالدین مخطوط ص:۲۰

تيسراباب:

مقام جہاد کا فیصلہ

مولوی صاحب کاعزم

مولوی سیدنصیرالدین نے راو بجرت میں قدم رکھا تھا تو ان کی خواہش بیتھی کہ سید ماحب کے ان بقیہ السیف رفقاء سے تعلق بیدا کریں جوسر حد آزاد میں مقیم تھے۔اس سلسلے میں وہ امیر دوست محمد خال کی حکومت کا تعاون بھی چاہتے تھے۔اس وقت متعدد مقامات مخلف حیثیتوں سے موز دن نظر آتے تھے۔مثلاً:

ا۔ مزاری اور لغاری بلوچوں کاوطن، جوسکھوں سے ازر ہے تھے۔

امیر دوست محمد خال کا دائر ؤ حکمر انی ، جو ایک طرف سکھوں سے اور دوسری طرف انگریز دل ہے برسر پریکارتھا۔

سے سندہ، جہال کے امیرا گرچہ انگریزوں سے معاہدہ کر چکے تھے، تاہم امکان تھا کہ انتظام کیا جائے۔

لیکن ان مقامات پرمعامله کنها دیخصرند تفار مولوی صاحب کا فیصله بیرتھا که جهال بھی تفہر نے کا بند وبست ہو جائے ، وہ اپنی زندگی کلمه کت کی سربلندی بیس قربان کر دیں۔ چنانچے ایک خطیس لکھتے ہیں:

جرچندهم ومنمرآل بودكدازراه بهاول بوراة لأبه جلال آباده كالل متوجه نثود اگردرآ نجامقر دوستقر برائه مهاجرين بدست آيد فهنداها كنا نسخ والا الم تكن اد ص الله واسعة مطمح نظر ساخته بحروستاز محروسات

مسلمانان، بخارا باشد باسمرقد ،غزنی باشد یا نها وند، کو بستان مزار بال بودخواه دیار پخاتا ریال ، رسیده ومقر دیار پخاتا ریال ، دبال سندهیال باشد یا کوه بائ انغاریال ، رسیده ومقر برائ جماعت مهاجرین بدست آور ده به توفیقات البی و تا سیدات لا متنایی تاجال درتن و مربر بدن با قیست ، به می بقت و جملگی نبهت مصروف و مبذول اعلی محمد الله العلیا شود (۱)

ترجمہ: اگر چدارادہ بیتھا کہ بہاول پور کے رائے جلال آباداور کا بل جاؤں۔ اگر وہاں مہاجرین کے قیام کا انتظام ہو جائے تو یہی ہماری خواہش ہ، ورنہ ''کیا خدا کی زمین وسیج نہیں؟''کونصب العین بنا کرمسلمانوں کی کی حکومت میں پہنچ جاؤں۔ بخارا ہو یا سمر قند، غرنی ہو یا نہاوند، مزاریوں کا کوہستان ہو یا پنجتاریوں کا علاقہ ،سندھیوں کے پہاڑ ہوں یا لغاریوں کے مہاجرین کے لئے جگہ کا ہندوبست کرلوں۔ پھر خدا کی توفیق اوراس کی ہے انتہا تائید سے جب سک تن میں جان اور بدن پرسر ہے، پوری ہمت اور کامل ادادے سے کلمۃ اللہ کی سر بلندی میں مشغول رہوں۔

ٹونک میں مشورے

مولوی صاحب موصوف ٹونک پنچ اور جائے قیام کے متعلق مشورے شروع ہوئے تو نواب وزیرالدولہ،سید حمیدالدین (خواہر زادہ سید صاحب) اور بعض دوسرے اکابر نے بیرائے دی کہ سندھ کو مرکز جہاد بنانا چاہئے۔سید حمیدالدین سفر ہجرت میں سیدصاحب کے ساتھ رہے تھے اور آھیں سندھ، بلوچستان، افغانستان اور سرحد کے حالات سے براہِ راست آگا ہی حاصل ہو چکی تھی۔انھوں نے یقینا معاملے کے تمام پہلوؤں کا موازنہ کرتے ہوئے سندھ کے انتخاب پرزوردیا ہوگا اور ان کے دلائل کو چیش

⁽۱) اخبارمولوي سيدنعيرالدين مخفوط من ١١٠

نظرر کھتے ہوئے مولوی سیدنصیرالدین نے یہی فیصلہ کیا کہ سندھ میں قیام کیا جائے۔ پھر غوروفکر کے بعد جہاں سے مناسب ہو، جہاد شروع کردیا جائے۔

مولوي صاحب كابيان

چنانچه مولوی صاحب این ایک کمتوب میں فرماتے ہیں:

بعدرة وبدل بسیار و تامل و تدیّر بشار چنال مقرر شد که دیار سنده منزل مقعود مهاجرین شبت الله اقدامهم گردد، و بعدر سیدن آنجاا گرایل آل دیر داوانساریت دادند و جائے برائے ثبات اقدام این جماعت فقرا و مقرر کردند فهو المعراد و الاملک خدا تنگ نیست و پائے ثالنگ نیست ۔ (۱) مترجمہ: خاصے ردّ و بدل اورغور وفکر کے بعد فیصلہ ہوا کہ دلایت سنده کو مها جرین کی منزل مقصود قرار دیا جائے ۔ اللہ تعالی اسکے قدموں کو ثبات بخشے ۔ وہاں و نیخ کے بعد اگر اہل ملک نے تائید ونصرت کا حق ادا کیا اور فقیروں کی اس جماعت کے لئے کوئی جگہ مقرر کر دی تو یہی جاری مراد ہے، ورنہ خدا کا

سندھ کی ترجیج کے وجوہ

ملک تک نبیں اور چلنے والاکٹکڑ انبیں۔

مشیروں نے سندھ کی ترجیجے کئی پہلوپیش کیے۔مثلاً یہ کدوہاں پہنچنا آسان ہے۔ وہاں کے لوگ قول وقرار کے سینچ ہیں۔ آھیں سیّداحمد شہید کے رفیقوں اور نیاز مندوں سے محبت ہے۔ مولوی صاحب نے اپنے ایک مکتوب میں ترجیح کی پانچ وجہیں بیان کی ہیں۔ فرماتے ہیں:

آنچه درترجح وایثار این دیار بر کابل وجلال آباد و جبال یوسف زئیان ومقام مهاجرین سابقین بیان کردند،از آن جمله اقل آسانی راه است ورسیدن

⁽١) اخبارمولوي سيرنسيرالدين مخلوط من ١٨٠

قوافل مهندوستان بدراحت وآرام، دوم درست پیانی الل آن دیار، سوم محبت و اخلاص مسلمانان آنجا بدالل الله خصوصاً به مختسبان حضرت سیّدا حمد صاحب چهارم مخالفت وعدم ملایمت پنجا تاریال و بوسف زئیال و برا دران امیر دوست محمد خان غازی وا تاباع ایشال با حضرت ایشال - اگر چه امیر معروح فی نفسه و به ذات خود از خلصین و محبین است - پنجم صعوبت و راه و شدا کد گذرگاه کابل و جلال آباد و جبال افاغنه بسبب کریوه و مخاک و را بزن و دان باک و مملماری سکمان نایاک - (۱)

ترجمہ: کابل، جلال آباد، پوسف زئیوں کے پہاڑی علاقوں اور پہلے مہاجرین کے مقام پرسندھ کی ترج کے جو پہلو بیان کیے، ان بیس ہے ایک بیہ ہے کہ داستہ آسان ہے اور ہندوستان کے قافے راحت و آرام سے یہاں پی سکتے ہیں۔ دوم یہ کہ سندھ کے باشند ے عہد و بیان کے سیچ ہیں، سوم بیا کہ بہاں کے مسلمانوں کو اللہ والوں سے مجت واخلاص ہے، خصوصاً مسلمانوں کے مہاں کے مسلمانوں کے امام حفرت سید احمد کے ساتھ تعلق رکھنے والوں سے مہر دار اور مجابدوں کے امام حفرت سید احمد کے ساتھ تعلق رکھنے والوں سے ہجارم پنجاری، پوسف زئی، امیر دوست محمد خال کے بھائی اور ان کے ساتھی سید صاحب کے مخالف ہیں، اگر چہ خود امیر موصوف بوے مخلص اور محب ہیں۔ پنجم کابل، جلال آباد اور افغانی کو ہتان کے راستے ، ٹیلوں اور غاروں کے سبب سے بہت دشوارگز ارہیں۔ ان ریاستوں میں ڈاکوؤں کا بھی خطرہ ہے ہیں محمد کے محمد کے سبب سے بہت دشوارگز ارہیں۔ ان ریاستوں میں ڈاکوؤں کا بھی خطرہ ہے ہیں محمد کی عمد کی محمد کے سبب سے بہت دشوارگز ارہیں۔ ان ریاستوں میں ڈاکوؤں کا بھی خطرہ ہے ہیں محمد کے سبب سے بہت دشوارگز ارہیں۔ ان ریاستوں میں ڈاکوؤں کا بھی خطرہ ہے ہیں محمد کی عمد کی باعث ان سے گذر نا خالی از خوف نہیں۔

زراعت وتجارت کےامکا نات

مولوی صاحب نے مختلف خطوں میں سندھ کی ترجیج کے چنداور پہلوہ می بیان کیے میں۔مثلاً بید کہ سندھ کی زمین کیتی باڑی کیلئے بہت موزوں ہے اور بہت زیادہ ہے۔اس

⁽۱) اخبارمولوي سيدنعيرالدين مخطوطه م ۲۳:

کے مقابلے میں آبادی بہت کم ہے، نیزیہاں تجارت کیلئے بڑی مخبائش ہے اور اہل سندھ کو تجارت سے وی کوئی دلچیں نہیں۔سندھ کے باشندے زم طبیعت کے ہیں اور ان کے مزاج میں درشتی بالکل نہیں۔ چنانچہ ایک خط میں فرماتے ہیں:

ای ملک مسلمانان برائے جمرت خوب است بخصوماً کسانے کہ شوق زراعت دارند۔ زیرا کرزمین ایں ملک ریگستان است، نہ سنگستان دزمین بسیار است دمرد ماں کم به خلاف مندوستان که جائے تنگ است دمرد مال بسیار۔(۱)

ترجمہ: مسلمانوں کا بید ملک ،جرت کیلئے بہت موزوں ہے۔خصوصاً ان لوگوں کیلئے جنھیں بھیتی باڑی کا شوق ہو، کیونکہ اس ملک کی سطح رتیلی ہے، پھر ملی نہیں ۔زمین بہت ہے اور آبادی کم ۔اس کے خلاف ہندوستان میں جگہ نتگ ہے اور آدمی بہت زیادہ۔

ايك اورخط مين لكصة بين:

برائے بھرت ایں ملک خوب است ،خصوصاً برائے الل زراعت، زیراکہ زمین ارزاں بدوست می آید وآبیاری آل ازوریا می شود۔ بد بارش چندیں صاجت ندارد۔(۲)

ترجمہ: یہ ملک ہجرت کیلئے بہت موزوں ہے، خصوصا تھیتی باڑی کرنے والوں کیلئے، کیونکہ زمین ستی مل جاتی ہے۔اس کی آبیاری دریا ہے ہوتی ہے۔بارش کی چندال حاجت نہیں۔

ایک اور خطمظهر ب:

برائے مہا جرت بھائی یعقوب صاحب ملک سندھ بسیار خوب است و دریں جادرمہا جرت ہر کہ دمہ رابسیار فوائد است۔اگر خدا تعالیٰ استقامت عطا

(٢) اخبار مولوي سيدنصير الدين مخطوط ص: ٣٠

(١) اخبار مولوى سيدنعير الدين مخطوط ص ٢٢:

فرماید ومرد مان سنده امر تجارت نمی دانند و در محنت کثی بسیار چست اند ـ (۱)

مرجمه: یه ملک بھائی یعقوب کی بجرت کیلئے بہت اچھا ہے ۔ یہاں چھوٹا

بڑا جو بھی ہجرت کر کے آئے گا، بہت فائدے حاصل کر ے گا۔ خدا تعالی

استقامت عطا کرے ۔ سندھ کے لوگ تجارت کر نائبیں جانتے ، ویسے بڑے

مختی ہیں۔

ايك كمتوب من الل سنده كم تعلق لكهت بين

مسلمانانِ سنده لین الطّبع ومبرّ ازخشونت مزاجی اند_(۲)

ترجمہ: سندھ کے مسلمان طبیعت کے زم ہیں اور ان کے مزاج درشتی سے بالکل یاک ہیں۔

سندھ میں قیام کیلئے کشش کا ایک باعث بی بھی ہوا کہ اس زمانے میں ڈیرہ غازی خاں کے مزاری بلوچ سکھول کے علاقوں پر پورشیں کرر ہے تھے اور مولوی نصیرالدین کو اجمیر وجودھ پور میں بیخبرمل گئ تھی۔ چنانچہ اس وفت سے وہ مزاریوں کی طرف راغب ہوگئے۔ (۳)

فضلے کی حیثیت

مولوی صاحب نے واقف حال مشیروں کی پیش کر دہ معلومات کے مطابق جو فیصلہ کیا، اس کی درستی میں کسی کو کلام نہیں ہوسکتا، لیکن معلومات جس زمانے میں حاصل کی گئی بخصیں، وہ اور تھا اور مولوی نصیر الدین جس وقت سندھ پنچے، صورت حال میں بہت بڑی تبدر کی ہوچکی تھی۔ مثلاً:

⁽۱) اخبار مولوی سید نصیرالدین مخطوطه ص:۱۳

⁽۲) اخبارمولوی سیدنصیرالدین مخطوط ص ۲۴۰

⁽۳) اخبار مولوی سید نصیرالدین مخطوط ص ۲۹:

ا۔ دالیانِ سندھ بوی حد تک اگر بروں کے دست بگر ہو گئے تھے۔ رنجیت سکھ سندھ کی جانب پیش قدمی کرر ہاتھا اور دالیانِ سندھ کو امید ندر ہی تھی کہ انگر بروں کے سوا کوئی انھیں سکھوں کی دست کر دسے بچاسکتا ہے۔

۲۔ اہل سندھ یقینا اللہ والوں کے معتقد سے ایکن جن پیروں کو وہ اہل اللہ مانے بیٹے سے ،ان میں سے کوئی بھی کسی بڑے جاہدا نہ اقدام کیلئے تیار نہ تھا ،الا ماشاء اللہ۔

۳۔ مزاری ہلوچ بلا شبہ سکھوں ہے برسر پیکار سے ، لیکن اکی تنظیم بہت ناقص تھی اور تھوڑی ہی مدت میں وہ مقابلہ چھوڑ کر سکھوں سے جالے ، جیسا کہ آ کے چل کر واضح ہوگا۔

۳۔ سندھ میں زمین حاصل کر کے جیتی باڑی یا تجارت بے شک شروع کی جاسکتی تھی ،لیکن اس طرح سندھ کو اس تصرف کے خطرے سے محفوظ نہ کیا جاسکتی تھی ،لیکن اس طرح سندھ کو اس تصرف کے خطرے سے محفوظ نہ کیا جاسکتی تھا ، جس میں بہ کم نصیب ملک جتلا ہو چکا تھا۔

مولوی سیدنصیرالدین نے خاصی مدت جدوجہد میں بسر کی،کین انھیں کوئی بڑا کارنامہانجام دینے کاموقع نیل سکا۔تفصیلات کیلئے آئندہ ابواب ملاحظہ فرمائیں۔

چوتھاباب:

ٹونک سےسندھ

اجمير وجوده لور

ٹونک سے روانہ ہوکر مولوی صاحب نے اجمیر میں قیام کیا۔ وہاں سیّد احمد شہید کے نیاز مندموجود تھے۔ انھوں نے قافلۂ مجاہدین کی خاطر داری میں کوئی وقیقہ سعی اٹھاندر کھا ہوگا، کیکن حالات کا جوقلمی و خیرہ ہارے سامنے ہے، اس میں قیام اجمیر کی تفصیلات موجوز نہیں ۔ صرف بیمرقوم ہے کہ ٹونک ہے:

بہصورت رسالداز رسالہ جات سواراں روانہ بدارا کخیرا جمیر شد۔ ترجمہ: سواروں کے رسالے کی صورت میں دارالخیر اجمیر کی طرف روانہ ہوا۔

جودھ بور میں مشکلات

اجمیر میں چندروز تھہرنے کے بعد خیر پورسندھ کا قصد کرلیا۔سیدھاراستہ جودھ پور سے ہو کر جاتا تھا،لہذااس مقام پر بھی تھہرے۔ وہاں ابتدائے قیام میں بڑی مشکلات پیش آئیں۔مثلاً:

ا۔ راجانے دروازہ ہائے شہر کے پاسبانوں کو حکم دے دیا تھا کہ بجاہدین کے قافلے کا کوئی آ دمی اندر نہ آنے پائے۔

۲۔ اس عمم کا نتیج محض بہی نہ نکلا کہ اہل قافلہ شہر میں داخلے سے محروم ہو گئے، بلکہ شہر کے خلص مسلمان بھی اس خیال سے ملنے کیلئے نہ آسکے کہ بیدامررا جاکی ناراضی کا باعث

ہوگار

سال تیسری اورسب سے بوی مصیبت بیپیش آئی کہ بعض ساتھیوں نے ہتھیار اور سامان لے کر بھاگ جانے کا فیصلہ کرلیا۔ مولوی سید نصیر الدین نے معمول کے مطابق دو رکعت نماز اوا کر کے بجز وزاری سے بارگاہ باری تعالیٰ میں دعاء کی کہ میرا تو بھروسہ صرف تجھ پر ہے۔ تیر نے ضل کے یقین پر ، تیری رضا کیلئے گھر بارچھوڑ ا ہے کہ دین کی نصرت کا کام انجام پائے۔ میں گنہگار ہوں ۔ میر کے گنا ہوں سے در گذر کر۔ اپنی رحمت پر نظر کھے۔ تیرے سواکس کے آگے ہاتھ کھیلاؤں؟

اس دعاء کے بعد مخالفین کا فتنہ دب گیااوروہ لوگ قافلے کوچھوڑ کر چلے گئے۔

اطمينان كي صورت

معلوم ہوتا ہے کہ چندروز کے بعد یہ مشکلات ختم ہوگئیں۔اس سلسلے میں خوا جہ
الماس نام ایک خض کی اعانت بہت مؤقر ثابت ہوئی۔اسے در ہار جودھ پور میں خاصا
رسوخ عاصل تھا۔مولوی سیّدنصیرالدین اسے''مر دِسعادت مند''و''صلح دوست' بتاتے
ہیں۔اس نے شہر میں دا ضلے کی بندش کا تھم منسوخ کرادیا۔بعدازاں اہل شہر سے میل
جول کی صورت بھی پیدا ہوگئی۔خودخوا جدالماس نے دو بیش قیت ،خوش شکل اور تیز رفتار
اونٹ مولوی صاحب کی خدمت میں بہطور نذر پیش کیے، نیز ایک فیمتی تلوار، بہت بڑی
وھال اور دوسور و پے گزرانے۔امید ہے کہ دوسرے مسلمانوں نے بھی حسب استطاعت
نذریں پیش کی ہوں گی۔

جيبلمير

جودھ پور کے بعد جیسلمبر میں قیام کا ذکر ہے، جہاں قافلہ دس روز کے قریب تھہرا رہا۔ وہاں کا راجاحسن سلوک سے پیش آیا۔اس نے شہر کے اندر دو بڑی حویلیاں قافلے کیلئے خالی کرادیں اور مہمانداری کے سامان میں بڑی سرگرمی دکھائی۔ مولوی صاحب لکھتے ہیں کہ جیسلمیر میں چار مسجد میں افران کہنے کی اجازت کھی ، جوقندھاریوں کے محلے میں واقع تھی۔ باقی کسی مجد میں افران ندہوتی تھی ، کین:
مرد مان جماعت ہر جاہ کہ می خواستند ، افران می دادند ونماز می خواندند حتی کہ یک تالاب کلال درجیسلمیر است کہ گردآ ل بت خانہ ہائے تھیں تھیرشدہ کے مکان تھین درمیان تالاب واقع است۔ مرد مانِ جماعت برآل افران دادہ نماز می خواندندوتمام کا فرال را بسیار شاق معلوم می شد ہیکن از بہینے دم نمی زدند بلکہ روز ہے راجا برائے سیر تالاب درمعبد خود رفتہ رو بروئے اومرد مانِ اس جاعت افران دادہ نماز خواندند۔ بسیار دیدلین تیج نہ گفت۔ (۱)

ترجمہ: ہماری جماعت کے آدمی جس جگہ چاہتے ، اذان دیتے اور نماز اداکر تے ۔ جیسلمیر میں ایک بڑا تالاب ہے ، جس کے اردگر دیتھر کا ایک مکان تالاب کے عین درمیان واقع ہے ۔ ہماری جماعت کے لوگ اس میں بھی اذان وے کرنماز پڑھتے ۔ غیر مسلموں کو بیامر بہت شاق گذر تالیکن ہیت بق کے باعث دم نہ مارتے ۔ ایک روز راجا تالاب کی سیر کیلئے اپنے عباوت خانے میں آیا۔ اس کے روبر وہمی ہماری جماعت کے لوگوں نے اذان وے کرنماز پڑھی ۔ وہ دیکھتار ہا اور پجھنہ کہا۔

ایک اور خط میں ان تمام باتوں کا ذکر کر کے لکھتے ہیں کہ ہماری جماعت کے آدمی فجر سے عشاء تک ان بت فانوں میں رہتے اور سوتے جو تالاب کے إردگر د ہے ہوئے سے نماز کے وقت بلند آواز سے اذان کہتے تو بت خانوں میں گھنٹے بجئے لگتے۔ غیر مسلموں میں سے چندلوگ چندمجامدوں کو لے کران بت خانوں کے بڑے برہمن کے غیر مسلموں میں نے کہا کہ یہ خدائے بزرگ پاس پنچے ۔ مجاہدوں نے کلمات اذان کے معنی بیان کیے تواس نے کہا کہ یہ خدائے بزرگ

(۱) اخبارمولوی سیدنسپرالیدین مخطوط ص:۵ و۶

کنتظیم کے کلے بیں ،ان کے اوقات میں گھنٹے نہ بجانے جاہئیں۔(۱)

منشى امام على

اس نے زمانے میں منتی امام علی نام ایک صاحب حکومت انگلشیہ کی جانب سے جیسلمیر میں اخبار نوٹسی پر مامور تھے۔انھوں نے مجاہدوں کی خاطر کا خاص اہتمام کیا۔ راجے کے دل میں بھی منتی صاحب کی بڑی قدر دمنزلت تھی اور شہر کے لوگ بھی ان سے بہت ڈرتے تھے۔مجاہدین کو جیسلمیر میں جو سہولت وآسائش نھیب ہوئی ،اس میں منتی صاحب کے اثر درسوخ کو خاص وخل ہے۔

مولوی صاحب نے جیسلمیر سے روائگی کا قصد کیا تو کرایے کے اونٹ ملنے میں بڑی دفت پیش آئی۔اخیس خیال تھا کہنٹی صاحب کی سعی سے اونٹ میٹر آ جا کیں گے، لیکن میسعی بے نتیجہ رہی۔مولوی صاحب فرماتے ہیں:

چونکہ ایں چنیں خیال ازطرف غیر خدا کر دہ بودم، ہر چند منٹی موصوف در کرایہ کردن شتر ال بسیار قصد کردلیکن شتر ان کرایہ میستر نہ شدند۔ (۲) ترجمہ: منٹی صاحب نے کرایے کے اونٹ حاصل کرنے میں بہت کوشش کی اور میں دوگنا کرایہ دینے کے لیے تیار ہو گیا،لیکن میرایہ خیال چونکہ غیر خدا کی طرف تھا، لہذا کرا ہے کے اونٹ میسر ندآئے۔

بار برداری کی دِنت

مجبور ہوکرا ہے ہی اونٹوں پر سامان لا دلیا۔ پھرا یک اونٹ والاخود بخو دآگیا۔ جتنا کرایہ میں اسے پہلے دیتا تھا، اس سے نصف کیکر راضی ہوگیا۔ اس طرح جماعت بجاہدین نے جیسلمیر سے خیر پور کی طرف بیس کوس کا راستہ تین روز میں بہ ہزار خرابی سطے کیا۔ بوجھ (۱) اخبار مولوی سیونسیرالدین مخطوط میں ۲۱ کی زیادتی کے باعث اونٹ زخمی ہو گئے۔ دہاں ایک شخص ملا، جوسیّد احمد شہید کے عقیدت مندوں میں سے تھا۔ اس نے کہا کہ میں خدمت کیلئے تیار ہوں اور کرایے کے پانچ اونوں کا بندوبست کر بھی دیا۔ پانچ روپے بیعانہ بھی لے گیا، کیکن روائگی کے وقت اونوں والوں نے انکار کردیا اور بیعانہ واپس کر گئے۔

خداسازسامان

آخرمولوی صاحب نے خوداونٹ فراہم کرنے کا فیصلہ کرلیا۔ چنانچہ وہ چندآ دمیول کوساتھ لے کر گھوڑ ہے پرسوار ہوئے اورا کیے گاؤں میں پہنچ گئے۔آ دمیول کوتا کید کر دی کہ خبر دار کوئی کسی ہے کرایے کے اونٹول کی بات نہ کر ہے۔اس گاؤں کا چودھری بیار تھا۔ لوگوں نے دودھ، چھاچھاور پراٹھوں سے مولوی صاحب اورائے ساتھیوں کی تواضع کی اور بیار کے لئے تعویذ ما نگا۔ مولوی صاحب نے کلم دوات لے کر تعویذ لکھ دیا اور بیار کے جیتے کوا کیہ طرف لے جا کر کہا کہ شافی مطلق بیار کوشفاد ید ہے تو ہمیں کیا ہے گا؟اس نے کہا، جوفر ما کمیں ، حاضر کر دوں گا۔ مولوی صاحب نے کہا کہ میری دوشرطیں ہیں:ایک یہ کہا، جوفر ما کمیں ، حاضر کر دوں گا۔ مولوی صاحب نے کہا کہ میری دوشرطیں ہیں:ایک یہ کہا، جوفر ما کمیں ، حاضر کر دوں گا۔ مولوی صاحب نے کہا کہ میری دوشرطیں ہیں:ایک یہ کہا تیز رفنا راونٹ ججھے دیا جائے۔ دوسری ہی کہمیں فی الحال بار برادری کیلئے اونٹ یہ کہا گیری ہوگرایہ مناسب ہو، لے لیں اوراونٹوں کا انتظام کر دیں۔خدانے اپنی رحمت ہے مریض کوشفادی۔اس طرح اونٹوں کے انتظام کی صورت بی۔

ترحدسنده

سفر کرتے ہوئے مولوی صاحب سرحد سندھ پراس جگہ پنچے، جہاں کٹھار وکا قلعہ واقع تھا۔ اہل قلعہ نے انھیں قزاقوں کی جماعت سمجھ لیا اور گولیاں چلانے لگے۔ جب انھیں حقیقت ِ حال بتائی گئی تو ہولے، پہلے اونٹوں اور گھوڑوں کا محصول دو، بھر داخلے کی اجازت دی جائے گی۔اور اسی وقت یانی کنوئیں سے نکالنے کاحق حاصل ہوگا۔ آھے خیر پورتک چوہیں کوس کی منزل تھی ، جہاں کہیں پانی نہ ملتا تھا محصول کا حساب پوچھا گیا تو انھوں نے بتایا کہ چالیس رویے سے کم نہ ہوگا۔

مولوی صاحب نے کہا کہ ہم تین آ دمیوں کو میررستم فرمازوائے فیر پور کے پاس معافی راہ کا پر وانہ حاصل کرنے کی غرض ہے بھیج چکے ہیں۔ہم سے محصول نہ لیجئے ،البتہ ایک بندوق آپ کے پاس بہ طوراما نت چھوڑ دیتے ہیں۔اگر میرصاحب کی طرف سے معافی کا پر وانہ آگیا تو ہماری بندوق واپس بھیج دیجئے ،ورنہ ہم رقم اواکر کے بندوق لے جاکمیں گے۔ چنا نچہ حاجی عبد الرحیم کوایک بندوق دیکر قلع میں بھیج دیا گیا۔ جماعت میں جا کمیں گے۔ چنا نچہ حاجی عبد الرحیم کوایک بندوق دیکر قلع میں بھیج دیا گیا۔ جماعت میں عرضت سے وہی سندھی زبان جانے تھے۔ پھر قلعہ وار نے خود مولوی صاحب کو بلالیا۔ بڑی عرضت سے پیش آیا۔ بندوق واپس کر دی اور اپنے بیل لگا کر کنو کمیں سے پانی نکلوایا۔ مرخصت کے وقت مولوی صاحب کے جوتے سیدھے کیے۔اس طرح مولوی صاحب مزل بہ منزل فیر پور ہوتے ہوئے بیرکوٹ بینی گئے۔ جہاں سیدا حیرشہید کے اہل وعیال منزل بہ منزل فیر پور ہوتے ہوئے بیرکوٹ بینی گئے۔ جہاں سیدا حیرشہید کے اہل وعیال مقیم سے۔اس وقت سیدعبدالرحیٰن (خواہرزادہُ سیدصاحب) حیدر آباد گئے ہوئے تھے۔ مردوں میں سے صرف سیدا ساعل (برادرزادہُ سیدصاحب) موجود تھے۔

جماعت اوراس كاسروسامان

مولوی صاحب نے پیرکوٹ پینچنے کے بعد جماعت اور سروسامان کی کیفیت ان لفظوں میں بیان کی ہے:

فی الحال ده راس اسپان کلال که چهاراز آل بیش قیمت و کم یاب است و دوراس یا بونانگھن صورت و دوراس یا بومتوسط الحال و یک مادیاں وسیز ده راس اشترال و یک ناقه نز دایں جماعت موجوداندود و کم پنجاه تن ازمها جرین ہمدم وہم قدم۔(1)

⁽۱) اخبار مولوی سیدنعیراندین مخطوط ص ۲۳:

تر جمہ: اس وقت ہمارے پاس دس بڑے گھوڑے ہیں، جن میں سے چار بہت قیتی اور کم یاب ہیں۔ دوجھوٹے قد کے نٹو، دو درمیانے قد کے نثو، ایک گھوڑی، تیرہ اونٹ اور ایک سانڈنی ہے۔ اڑتالیس مہاجرین ساتھی اور رفیق۔

ظاہرہ کہ جوعظیم الثان کا م مولوی صاحب کے پیش نظرتھا، اسے انجام دینے کے یہ روسامان اور بیر فیق کچھ حیثیت ندر کھتے تھے، کین اسلیلے میں دو حقیقیں ہر لحظ منا منے رہنی چاہئیں: اوّل بی تھن ہراول دستہ تھا۔ مولوی صاحب کوامید تھی کہ ہندوستان ہے بھی لوگ کثیر تعداد میں پہنچیں گے اور سندھ ہے بھی ہزاروں جا نباز ساتھ ہو جا کیں گے۔ دوم اصل معاملہ احساس ادائے فرض پر موتوف تھا۔ اگر باتی مسلمان اس احساس سے بہرہ مند نہ ہو سکے یا بہرہ مندی کا کوئی عملی ثبوت انھوں نے پیش نہ کیا تو نہ اس بنا پر مولوی صاحب یا ان کے رفیق کی جوہ سے یہ مورت تھی کہ جب تک بہت بڑ الشکر تیار نہ ہوجاتا، مولوی صاحب یا ان کے رفیق گھروں میں بیٹھے رہے۔ اس پہلو پر'' سیدا حمد شہید' میں مفصل بحث ہو چکی ہے، جس کے اعادے کی ضرورت نہیں۔

بإنچوال باب:

سنده میں سرگرمیاں

بيركوث

پیرکوٹ جس کاسندھی نام' پیرجو گوٹھ' تھا۔ سادات کے اس خاندان کامر کز چلاآتا ہے جو' پیر پگاڑو' کے لقب سے شہرت پذیر ہوا۔ بدر دہڑی سے پندرہ سولہ میل جنوب میں اور خیر پورے کوئی آٹھ میل کے فاصلے پر داقع ہے۔ ہم'' سیّداحمہ شہید' میں بتا چکے بیں کداصل پیرکوٹ دریا کی دست برد میں آگیا۔اس نام کا موجودہ مقام پہلے مقام سے تقریباً پانچ میل مشرق میں آباد کیا گیا۔

سیدصاحب کے زمانے میں پیرصبغۃ اللّدشاہ مندنشین ارشاد وہدایت تھے۔انھوں نےسیدصاحب سے کامل تعاون کاعہا کیا تھا اور اس کے ایفاء میں برابر سرگرم رہے۔سیّد صاحب کی شہادت سے چندسال بعدوۃ ت یائی۔

حرُول كانظام

پیرمبغة الله شاه بی نے اپنے مریدوں میں جہادی تحریک جاری کی تھی۔ پیرصاحب کدی پر بیٹھے تو ان کے بعض بھائیوں نے نخالفانہ سرگر میاں شروع کر دیں اوراس سلسلے میں پیرصاحب پر قاتلانہ حملے بھی ہوئے۔ لہذا ان کے مریدوں نے حفاظت کیلئے ایک جماعت بنالی، جو تروں کے نام ہے مشہور ہوئی۔ پیرصاحب نے ارادہ کرلیا کہ اس نظام کو وسعت دے کرسندھ کو اجنبیوں اور غیروں کی دست رُد سے بچایا جائے اور ممکن ہوتو اس

نظام ہے وسیج تر دائرے ہیں کام لیا جائے۔اس موقع پرسیدصاحب بیعزم جہادسرحد جاتے ہوئے سندھ پنچ تو بیرصبغة الله شاہ نے اشتر اکِ مقاصد کی بنا پرسیدصاحب سے تعادن کا فیصلہ کرلیا۔ حروں کا نظام برابرقائم رہااوراب تک قائم ہے۔

موجودہ پیرصاحب کے والد ماجد پیرصبغة الله شاہ تانی نے بھی اس جماعت سے
سیاسی کام لینے کی تیاریاں کی تھیں، لیکن ایسے حالات پیش آگئے کی حکومت وانگلشیہ نے
انھیں گرفتار کرلیا۔ ان پر مقد مہ چلایا اور موت کی سزادیدی۔ پیرصاحب کے مرکز کی
اینٹ سے اینٹ بجادی اور سندہی کوختم کر دینے کا فیصلہ کرلیا۔ پاکستان بن جانے بعد
مند بحال ہوئی اور پیرصبغة الله شاہ ثانی کے فرزندار جمند پیرسکندرشاہ، شاہ مردانِ ثانی
کے لقب سے ذینت آرائے مندہوئے۔

سیّداحدشهید کے اہل وعیال

سیّداحدشہید پیرصبغۃ اللّه شاہ اول کے جذب اسلامیّت سے اس درجہ متاثر ہوئے سے کہا ہے اہل وعیال کے قیام کیلئے پیرکوٹ ہی کا مقام تجویز کیا، حالا تکہ نواب امیر خال والی ٹو تک اور امیر انِ سندھ بھی اسکے قیام کیلئے مناسب بندوبست کردیئے پر ہمہ تن آ مادہ سے اور نظر بہ ظاہر پیرصبغۃ اللّه شاہ کے مقابلے بیں ان والیانِ ریاست کے وسائل بہت نیادہ سے ایکن سیّد صاحب نے جذبہ اسلامیّت کو فراوانی وسائل پرتر جج وی۔ چنانچہ آ کیکا اہل وعیال واقعہ کالاکوٹ کے بعد بھی کی سال تک پیرکوٹ ہی میں مقیم رہے۔ مولوی سید فصیرالدین نے ای تعلق کی بنا پر سندھ میں پیرکوٹ کوانی پہلی منزل قراردیا تھا۔

پیرعلی گو ہرشاہ

مولوی صاحب پیرکوٹ پنچ تھے تو پیرصفۃ الله شاہ اوّل کے فرزند پیرعلی گوہرشاہ مندنشین تھے، کیکن وہ اس زمانے میں کچھ کی طرف دورے پر گئے ہوئے تھے۔ چنانچہ مولوی صاحب ابتدائی خطوں میں سے ایک میں لکھتے ہیں کہ: پیرصاحب بہطرف گچھ برائے دورو سرر رفتہ اند_(1)

دوسرے میں فرماتے ہیں کہ وہ سورت واحمد آباد کی طرف مھئے ہوئے ہیں۔سندھ کے سب سے بڑے ہیں تھے۔مولوی صاحب کو اُمیدتھی کہ ان کے مریدوں میں سے جانبازوں کی بہت بڑی تعداد جہاد میں ہمراہی کے لئے تیار ہوجا نیگی۔

نا درالوجود كتب خانه

پیرکوٹ کا کتب خانہ برلحاظ سے نادر سمجھا جاتا تھا۔ خصوصاً مخطوطات کے ایسے بیش بہاذ خیرے کی مثالیں بہت کم ملتی ہیں۔ افسوں کہ یہ پیرصبغة اللّٰہ شاہ ثانی کی گرفتاری کے بعد حکومت انگلھیہ کے ہاتھوں جاہ ہوا۔ مولوی صاحب کی تحریر سے معلوم ہوتا ہے کہ اس کتب خانے میں قرآن مجید کا ایک ایسا مترجم نسخہ موجود تھا جس کے حاشیے پرچارتفسیریں متام و کمال درج تھیں۔ اول تفییر نمیشا پوری ، دوم بیضاوی ، سوم مدارک ، چہارم کشاف۔ ان کے علاوہ تفییر کشاف بنفیر مقدی ہفیر مقدی ہفیر قرطبی ، تفییر قشیری ، ورمنثور وغیرہ بہت ی تفییر کیر ہفیر نمیشا پوری ہفیر سے دیشہ میں صحاح سنة کے علاوہ در مفتور وغیرہ بہت ی تفییر میں الگ الگ موجود تھیں۔ صدیث میں صحاح سنة کے علاوہ کر مانی۔ فقہ الباری ، قسلال فی اور مشکو ق ، روضة الصالحین ، سنن بہتی ۔ حدیث کی شرخوں میں عینی ، فتح الباری ، قسطول فی اور کر مانی۔ فقہ میں زیلعی تمام و کمال ، بحوالرائق ، فتح القدیر ، جموی شرح اشاہ و نظائر۔ میصرف بعض نہ ہی کتابوں کا ذکر ہے ، لیکن معلوم ہے کہ اس کتب خانے میں شعرو

یے سرف بعض نرہی کتابوں کا ذکر ہے، کیلن معلوم ہے کہ اس کتب خانے میں شعرو ادب اور تاریخ کی کتابیں بھی بے شارتھیں۔ بارہ چودہ سال پیشتر سیّد حمید الدین (خواہر زادہ سید صاحب) نے بیہ کتب خانہ دیکھا تھا۔ دہ فرماتے ہیں کہ صرف مشہور کتابوں کی چدرہ ہزار جلدیں اس میں ہیں۔ان میں فارس دیوانوں کے تقریباً ایک سومطلاً سنے تھے

⁽١) اغيارمولوي سينسيرالدين مخلوط ص ١٣٠

اور پنیٹھ جلدی تفسیروں کی تھیں۔''شاہنامہ''کے پانچ نسخ نہایت عمدہ تصویروں سے مزین تھے۔احیاءالعلوم اور فتو حات مکتیہ کے گئ کی نسخ موجود تھے۔

مولوی صاحب کی سرگرمیاں

مولوی صاحب نے سندھ بینچتے ہی پیش نظر مقاصد کیلئے جدو جہد شروع کردی۔
انھیں بعض اکا بر کے حالات سید حمید الدین ہے ٹونک میں معلوم ہو چکے تھے۔ بعض کے
حالات انھوں نے سندھ بینچ کر معلوم کر لیے اور کیے بعد دیگر ہے ان سب سے ملاقا تیں
شروع کر دیں تا کہ آغاز جہاد کے متعلق اپنی سوچی بھوئی اسکیم انکے سامنے پیش کریں
اور ان کی معلومات سے فائدہ اٹھا کر آخری اقدام کے باب میں فیصلہ کرلیں۔ اس سلسلے
میں یہ بھی مطلوب تھا کہ دریافت کریں کہ ان اکا برسے کس قدر مالی یا جانی امداد کی توقع
ہو کتی ہے۔ چنانچہ انھوں نے سید صاحب کے برادر زادے سید آسمعیل کو ساتھ لے کر
مختلف مقامات کے دورے شروع کردیے۔

مخدوم عبدالخالق

مخدوم عبدالخالق ساكن كھڑ وكو خاص شہرت حاصل تھى ۔ مولوى صاحب فرماتے ہيں: در اتباع شریعت وحمیت اسلام مشہور بودہ اند در حکومت میر رستم فتوائے ایشاں جاریست وسید حمیدالدین برائے ملاقات شاں در ٹو مک وصیت کر دہ بودند واز آواز و دین داری شاں ایس نیاز مند در گاہ اللی بسیار برائے ملاقات شاں مشآق بود۔ (1)

⁽۱) اخبار سیّد نصیر المدّین مخطوط ص: ۱۰ مخدوم عبد الخالق ۱۳۳۴ه (۱۸۱۷) بیس سجاده نظین ہوئے اور ۱۳۹۸ اله (۱۸۵۲ء) میں دفات پائی۔ بینخدوم محمد عاقل کے صاحر اوے تھے۔ ان کے بعد خاندان میں دستور مقرر ہوگیا کہ ایک سجاده فضین کا نام محمد عاقل ہوگا تو دوسر سے کاعبدالخالق۔

ترجمہ: شریعت کی پابندی اور اسلائ حمیت میں بہت مشہور ہیں۔میر رستم والی خیر پورکی حکومت میں انھیں کا فتوئی جاری ہے۔سید حمید الدین نے توک میں ان سے طاقات کیلئے تاکید فرمائی تھی اور مخدوم کے دین داری کے شہرے کی وجہ سے میں طاقات کا بے حد شائق تھا۔

کھڑہ پیرکوٹ سے دس بارہ کوس تھا۔ چنا نچہ مولوی صاحب سیّد اسمُعیل کے ساتھ وہاں گئے۔ مخدوم صاحب بوی فاطر داری سے پیش آئے۔ جہاد میں شرکت کا اقر ارکیا۔ مولوی صاحب فرماتے ہیں کہ ابتداء اُن سے عربی میں باتیں ہوئیں، بعد از ان فاری میں۔ وہیں ان کے برادر بہتی مولوی محرشفیع مل گئے، جو کی جج کر پیکے تھے اور شخ عبداللہ میں۔ وہیں ان کے برادر بہتی مولوی محرشفیع مل گئے، جو کی جج کر پیکے تھے اور شخ عبداللہ مراج کے تلافدہ میں شار ہوتے تھے۔ وہ جہاد کیلئے مخدوم صاحب سے بھی زیادہ سرگرم معلوم ہوتے تھے۔ ابتدائی ملاقات ہی میں اس درجہ تھل مل گئے گویامہ ت مدید سے محبت واضلاص کے تعلقات جاری تھے۔

مخدوم صاحب کی ملاقات ہے مولوی سیدنصیر الدین نے بیدا ثر قبول کیا کہ جہاد شروع ہوتے ہی موصوف اپنے ہزاروں مریدوں کوساتھ لے کرشریک ہوجا کیں گے۔

سيدا برهيم شاه

کھڑہ سے تقریباً ایک سوکوں گمب میں سید ابرہیم شاہ رہتے تھے، جوحفرت شخ عبدالقادر جیلائی کی اولا دمیں سے تھے۔ انھیں بھی بہت شہرت حاصل تھی۔ چنا نچہ مولوی صاحب گمب بھی پنچے، لیکن دِقت یہ پیش آئی کہ سید ابراہیم شاہ نہ فاری جانتے تھے نہ ہندی اور نہ عربی مصرف سندھی میں بات چیت کر سکتے تھے اور سندھی سے مولوی صاحب ناواقف تھے۔ سید اسلعیل کو سندھی میں ایسی مہارت حاصل نہ تھی کہ بیش نظر مسائل کے سلسلے میں ترجمانی کاحق ادا کر سکتے ، حسنِ اتفاق سے ایک مقامی عالم قاضی عبد الجلیل ال مے ، جنعیں مولوی صاحب اپنے مطالب فاری میں بتاتے اور وہ سندھی میں سید ابراہیم شاہ کو سمجھا دیتے ۔ سید موصوف نے آخر میں فر مایا کہ جو پھھ آپ کہتے ہیں، اسکی بجا آوری میں تامل نہ ہوگا اور دور و پ بہطور نذر مولوی صاحب کی خدمت میں پیش کیے۔(1)

امر بالمعروف

مولوی سیدنصیرالدین کی اس خصوصیت کا ذکر ضروری ہے کہ وہ جہاں کوئی بات خلاف سنت پاتے، باتو قف دلائل کی بنا پراس کی اصلاح میں کوشاں ہوجاتے۔ چنانچہ وہ لکھتے ہیں:

ار میں مخدوم عبدالخالق کے پاس پہنچا تو ائل سندھ کی عادت کے مطابق ، نیز مخفل و ذکر میں انہاک کے باعث نماز میں تاخیر کرتے تھے۔ میں نے ان کے سامنے 'معکوق'' کی احادیث اور'' ور مختار'' کی روایات چیش کیں۔ مخدوم صاحب نے میری بات مان لی اور نماز میں تاخیر ترک کردی۔

۲۔سیدابرہیم شاہ ختم قادر سیس ایک تبیح 'سا شیخ عبد القادر شیعاً لله ''کی بھی پڑھتے تھے۔ میں نے انکے خلیوں کو جو خاصے عالم تھے،ایسے طریق پر مجھادیا کہ انعوں نے اسکے ممنوع ہونے کا قرار کرلیا۔ انھیں بھی نماز اول وقت میں ادا کرنیکی تھیجت کی۔ امر بالمعروف میں اس کامیا لی سے پیش نظر مولوی صاحب تکھتے ہیں:

(۱) سید ابراہیم شاہ کے متعلق معلوم ہوا کہ بغداد ہے وہ بھائی ہیرسید محد شاہ اور پیرسید احمد شاہ معال غلام شاہ معلو ڑا کے عہد مکومت جس سندھ پنجے تھے۔ خدا جانے کس بناء پرشبہ پیدا ہوا کہ وہ سلطنت عثانیہ کے جاسوں ہیں۔ لہذا انھیں سندھ جس تھے۔ خدا جانے کس بناء پرشبہ پیدا ہوا کہ وہ سلطنت عثانیہ کے جاسوں ہیں۔ لہذا انھیں سندھ جس تھے ہیں اجاز ان بحوالی ہوا ہے گئرہ نے ایک ہوئی کو کم ساحب کھڑو نے ایک ہوئی کو کم سام ہوئی کو مسافی شاہ رائی پورشر بغے جس جادہ ہیں ہوئے اور دوسرے بینے ہیرسیدا براہیم شاہ کو کم مسلم کی مسند کی مستد کی سام دوسرے بینے ہیرسیدا براہیم شاہ کو کم مسلم کی مسند کی مستد کی مستد کی دونات پران کے فرز ند ہیرش الدین تھے۔ بیدونوں کہ یاں آئ جس کی دونات کے اور دوسرے بینے اور دارائی پورشر بھے جس ہیں جھر میں جس کی مستد کی دونات کی الدین تھے۔ بیدونوں کہ یاں آئ جس کی کا کم تیں۔

مرد مانِ اینجابسیارسلیم الطبع اندو برگز برگز مقابله کر بعت نی کنند، کو کے کے خالف طبیعت ایشاں بگو یہ بخر مرد ان حق کو اینجا بین اندائی میں مطبع دیگر نیست ۔ بعضے از پیرال حمیت واسلامی ہم دارند، مگر اہتمام درامر بالمعروف نی کنند۔

ترجمہ: یہاں کے لوگ بہت سلیم الطبع ہیں اور وہ شریعت کی مخالفت قطعاً نہیں کرتے ،اگر چہ کوئی مختص ان کی مرضی کے خلاف بات کیے ، البتہ یہاں حق گوآ دی نہیں۔ یہاں کے پیروں کو بیعت لینے کے سواکوئی غرض نہیں۔ بیشک بعض پیروں میں حمیت واسلامی بھی ہے، مگر وہ امر بالمعروف کا اہتمام نہیں کرتے۔

سيدجعفرعلى اورمياب عثمان

اس وفت خیر پور کے سادات میں ایک سیّد جعفرعلی تھے، جنسیں مولوی نصیر الدین نے ''سعادت دستگاہ''،'' ذی وجاہت''اور'' ذی دیانت' 'بتایا ہے۔ وہ مولوی صاحب کے عزم کا حال من کر خیر پور سے پیرکوٹ پہنچے اور بات چیت کے بعد خود جہاد میں شرکت ورفاقت پرآمادگی ظاہرکی۔(۲)

ایک صاحب میاں عثمان سندھی تھے، جن کی سکونت نوشہرہ میں تھی۔ کھڑ ہ ہیں مولوی محمد شفیع نے ان کا ذکر کیا تھا۔ مولوی صاحب ان سے مدینہ منوّرہ ہیں مل چکے تھے۔ ان سے بھی ملاقات کی، جس کا ذکر سفر حیدر آباد کے سلسلے ہیں آئے گا اور اسی سفر میں سندھ کے دوسرے اکابر سے بھی ملاقاتوں کی تفصیل بیان ہوگی۔

سادات شاه کوٹ

مولوی صاحب کے ایک مکتوب میں سادات ومشائخ شاہ کوٹ کاذکر ہے۔فرماتے

(۲) اخبارمولوی سیدنعبیرالدین مخطوط ص:۲۷ و ۳۹

(۱) اخبار مولوی سید نعیر الدین مخطوط م ۱۱:

میں کہ بدلوگ بہت بوے پیروں میں سے ہیں۔سیدسن شاہ ،سید محمد عطاشاہ ،سید کیا ہے۔ شاہ اور دوسرے بزرگوں نے اپنی مہریں میرے جاری کر دہ دعوت نامہ جہاد پر قبت فرمادیں۔ یقینا ان کے سینوں میں دین احمدی کی حمیت موجزن ہے اور وہ ملت واسلامیہ کی ترقی کے آرز ومند ہیں۔

ان کے علاوہ کو ہتانی علاقے کے مشہور پیروں میں سے سیدمومن شاہ اور سید امیر شاہ کا ذکر مولوی صاحب نے بطور خاص فر مایا ہے۔ حاتی شکر اللہ کو اعلام نامد دے کراس غرض سے حیدر آباد اور مدراس کی طرف بھیج دیا گیا کہ وہ ان علاقوں میں دعوت جہاد کا انظام کریں۔ان کا خط بھی آگیا کہ جلد ہزاروں مسلمان جہاد کی غرض سے میدان میں بینی جا کیں مے۔(۱) تغصیلات جدا گانہ باب میں بیان ہوں گی۔

ونت کےا کا بر

حاکمانِ حیدرآباد کے بلند پابیعبدہ داروں میں سے احمد خال لغاری اور یوسف خال کا ذکرآ گے آئے گا۔ مولوی سیدنصیرالدین نے ریاست خیر پورکے دزیر فتح محمد خال غوری کی بہت تعریف فرمائی ہے۔ لکھتے ہیں:

ریاست پناه ، رفعت جا یکه ، معدن حمیت اسلامیه بخزن غیرت ایمانیه سردار فتح محمد غوری که مختار رتق وفق وفقام ملک داری ولئکرکشی میر صاحبان خیر پور به قبضه افتد ارآل دین داراست ، به کمال اخلاص دلی وخلوص قلبی دم نصرت می زند به چول در بعض معاملات که به آل دین دارا تفاق افراده مخلصانه پیش آمه ، غالب که دم او باقدم باشد - (۲)

ترجمہ: سردار فتح محمد غوری اسلای حیت کی کان ادر ایمانی غیرت کا خزانہ ہیں۔وی ریاست خیر پورے انظامات کے عثار ہیں۔ افکر کشی محمی آمیں

(١) اخبارمولوي سينصيرالدين مخطوط ص:١٣٣٠ (٢) اخبارمولوي سينسيرالدين مخطوط ص :٨٢

کے حکم ہے ہوتی ہے۔ وہ دلی خلوص ہے میری جمایت کا دم بھررہے ہیں۔ بعض معاملات میں سابقہ پڑا تو انھوں نے اخلاص کا ثبوت دیا۔ اغلب ہے، وہ اپنے وعد ہ المداد کاعملی ثبوت پیش کریں۔

اس زمانے میں حکومت قلات کی وزارت پر مخارالدولہ میر محرحسن (۱) مامور تھے۔
مولوی صاحب نے ان سے بھی خط و کتابت شروع کر دی تھی۔ان کے بھی دو خط اس
مجموعے میں موجود ہیں، جس کے حوالے باربار دیے جا رہے ہیں۔ان سے واضح
ہوتا ہے کہ وزیر موصوف بھی جہاد میں ہر ممکن اعانت کیلئے تیار تھے اور انھوں نے میر محراب
خال والی قلات کے مشورے سے بیخط کھے تھے۔

⁽۱) یرجمد سن اخوند افتا محرکا بینا تھا، جوسید صاحب کے سفر بھرت کے دقت قلات کا وزیراعظم تھا۔ ایک سومیس برس کی عمر ہو چکی تھی ایکن تو کاضعف وانحطاط سے محفوظ تھے ۔ سید حمید الدین خواہر زادہ سید صاحب نے اخوند کے متعلق اککھا تھا کہ عمر واقبال اور دیانت وتقوکل کی یا ورک کے ایسے مونے بہت کم دیکھے محتے ، جیسا کہا خزند افتح محمد تھا۔

جھٹا ہا ب

حيدرآ بإدكاسفر

سيدعبدالرحمٰن كامكتوب

ہم بتا چکے ہیں کہ مولوی سید نصیر الدین پیرکوٹ پنچے تھے تو سید عبد الرحمٰن (خواہر زادہُ سید صاحب) حید رآبادگئے ہوئے تھے ۔ مولوی صاحب نے خیر پور سے ایک خط ان کے نام ارسال کردیا تھا۔ انھوں نے جواب میں لکھا کہ حید رآباد میں دونیک دل سردار ہیں: ایک احمد خال لغاری، دوسرا بوسف خال ۔ ان سے بات چیت ہوئی تو جواب دیا کہ مولوی صاحب پیرکوٹ میں تھہر ۔ رہیں، ہم مناسب موقع پر حاکمان سندھ کے سامنے یہ معاملہ چیش کریں عے تاکہ موسوف کو بہطریق احسن حید رآباد بلایا جائے ۔ سیدع بدالرحمٰن نے یہ بھی لکھا تھا کہ جب بلایا جائے تو دس سلح سوار لے کر فشکی کے راستے سے آئیں۔ مولوی صاحب یہ خط و بینچنے سے بل کشتی کے ذریعے سے حید رآباد جانے کا انظام کر چکے تھے۔ (۱)

قيام حيدرآ بإداورملاقات

افسوس کہ مولوی صاحب کے حیدرآ باد جانے اور حاکمانِ سندھ سے ملا قات کرنے کی تفصیل اس مکتوب ذخیرے میں نہل سکی جواَب تک دستیاب ہوسکا ، کیکن قرائن یہی ہیں کہ وہ کشتی کے ذریعے سے حیدرآ باد گئے ۔وہاں کچھ مدت مقیم رہے۔اغلب ہے،

⁽۱) اخبار مولوي سيد نصير الدين مخطوط ص ١٣:

حا کمانِ سندھ نے کچوتخا کف اور روپ پیش کے ہوں، تا ہم جہاد میں سرگرم اعانت کی امید پوری نہ ہوئی۔ اگر وہ لوگ اعانت کے لئے تیار ہوجاتے تو یقینا اس کا کوئی عملی ثبوت سائے آجا تا۔ ایک خط میں صرف اتنامر قوم ہے:

الحال كهاز ملاقات ميرصاحبان حيدرآ بادفراغ دست داده مه آگرفضل البي سجانهٔ شامل حال است ،فردايا پس فردااز حيدرآ باد به راوخشكی به طرف پيركوث ردانه خواجم شد _(1)

ترجمہ: اب سندھ کے میرول سے ملاقات ہو چکی، میں خدا کے فضل سے کل یابرسول خشکی کے داستے حیدرآ بادستے دوانہ ہوکر پیرکوٹ پہنچ جاؤں گا۔

جس زمانے میں سیدصاحب حیور آبادے گذرے شے، حاکمانِ سندھ کے لئے
حالات بدر جہا سازگار شے، کین وہ اس زمانے میں بھی ہمت وعزیمت کا تقاضا پورا نہ
کر سکے۔ آتھ دس سال گذر جانے کے بعدحالات خاصے ناسازگار ہو چکے شے۔ اس
وقت ان سے جانبازی کے کس کار نامے کی کیا توقع ہو سکتی تھی؟ اگریزوں نے آتھیں
معاہدوں کی زنجیروں میں بے طرح جکڑ لیا تھا۔ رنجیت سکھ آہتہ آہتہ سندھ کی طرف
بڑھا چلا آر ہا تھا۔ اگر حاکمانِ سندھ جنگ کیلئے تیار ہوجاتے تو یقین تھا کہ سندھ کے پیر
بھی ان کا ساتھ دیتے اور بجاہدین کی اعانت سے کم از کم سکھوں کو فکست دینا مشکل نہ
تھا۔ اس کے بعد انگریزی افتد ارکی زنجیریں بھی ڈھیلی ہوجا تیں، لیکن یہ جانبازی اور
جانفٹانی کا کام تھا اور حاکمانِ سندھ عزت مندانہ زندگی کے اس جو ہرسے بالکل بے ص
خے۔ نتیجہ یہ نکلا کہ مزید چندسال میں ان کی حکومت کا نقش حرف غلط کی طرح منادیا گیا اور
ہندوستان کے مسلمان حاکموں کی بے عزی کے باعث اسلامی افتد ارکی فکست وریخت
کا جوائم نامہ تیار ہور ہا تھا، اس میں ایک شے باعث اسلامی افتد ارکی فکست وریخت

⁽۱) اخبار مولوی سیدنصیرالدین مخلوط ص: ۵۰

غرض ملاقات کی تفصیلات تو چین نظرنہیں ، لیکن مولوی صاحب نے حیدرآباد سے واپسی کے سفر کی مختصری سرگزشت آیک کمتوب میں بیان فر مادی ہے، أسے ذیل میں ورج کیا جاتا ہے۔
کیا جاتا ہے۔

حيدرآ بادے مثاری

مولوی صاحب حیدرآباد سے چلتو پہلی منزل مناری میں ہوئی، جوسندھ میں سادات کی ایک مشہور مند ہدایت وارشاد ہے۔ مولوی سیدعبدالکریم مند پر فائز تھے، جنھیں تمام سادات فاص عزت و تحریم کاستحق سجھتے تھے۔ مولوی سیدنصیرالدین نے جعد کی نماز مسجد میں اداکی۔ و ہیں میاں لطف اللہ سندھی سے ملا قات ہوگئی، جومدیند منورہ کے راستے میں مولوی صاحب سے لل چکے تھے۔ انھوں نے فور آھیھے چا ول تیار کرا لئے۔ مولوی صاحب اور ان کے بارہ ساتھیوں نے میاں لطف اللہ عی کے بال دو پہر کا کھانا کھایا۔ شام کی دعوت مولوی سیدعبدالکریم کے بال تھی۔ کھانے سے فارغ ہو کر اصل مقصد کے متعلق بات چیت کی۔ مولوی سیدعبدالکریم اور میاں لطف اللہ دونوں نے کہا کہ مزاریوں کے بات چیت کی۔ مولوی سیدعبدالکریم اور میاں لطف اللہ دونوں نے کہا کہ مزاریوں کے بات جیت کی۔ مولوی سیدعبدالکریم اور میاں لطف اللہ دونوں نے کہا کہ مزاریوں کے بات جیت کی۔ مولوی سیدعبدالکریم اور میاں لطف اللہ دونوں نے کہا کہ مزاریوں کے بات جیت کی۔ مولوی سیدعبدالکریم اور میاں لطف اللہ دونوں نے کہا کہ مزاریوں کے بات جیت کی۔ مولوی سیدعبدالکریم اور میاں لطف اللہ دونوں نے کہا کہ مزاریوں کے بات جیت کی۔ مولوی سیدعبدالکریم اور میاں لطف اللہ دونوں نے کہا کہ مزاریوں کے بات جیت کی۔ مولوی سیدعبدالکریم اور میاں لطف اللہ دونوں نے کہا کہ مزاریوں کے بات جیت کی۔ مولوی سیدعبدالکریم اور میاں بیت کی میں بیٹھنا بہت مناسب ہے:

اگرامسال جعیت گردشاشد،ای جانبان مع اتباع خویش حاضرخواهیم شد_سال آئنده ارادهٔ مدیندمنوره داریم_(۱)

تر جمد: اگراس سال آپ کے پاس معقول جمعیت فراہم ہوگی تو ہم بھی اپنے مریدوں کو لے کر حاضر ہوجا کیں مے۔ا محلے سال ہم مدیند منورہ جانے کا ارادہ کئے بیٹے ہیں۔

بإله

مٹاری سے روانہ ہو کرمولوی صاحب بالد پینے، جو مخدوم نو گ کی درگاہ کے باعث

⁽۱) اخبارمولوی سینسیرالدین مخلوط ص ۳۵۰

سنده میں بہت مقدس مقام ما ناجاتا تھا۔ مولوی سیدنصیر الدین نے درگاہ کے متولی مخدوم سے بھی ملاقات کی ادر کہا کہ آپ کو بھی جہاد میں شریک ہونا چاہئے۔ انھوں نے فر مایا:
اگر پیرانِ سندھ بھراوِ شاخوا ہندرفت مانیز حاضر سنتیم ۔ (۱)
ترجمہ: اگر سندھ کے پیرآپ کا ساتھ دینے کیلئے تیار ہوگئے تو ہمیں بھی حاضری میں تال شہوگا۔

مرقع عبرت

د کیھے عزت کی زندگی کے متعلق مسلمانوں کی بے بروائی بلکہ بے حسی س ورجہ افسوس ناک صورت اختیار کر چکی تھی۔ بہلوگ بڑی بڑی گدیوں کے مالک تھے اور وہ محمد یاں صرف خدمت حق کی برکت سے بنی تھیں۔خدمت حق ہی ان کا اصل وظیفہ تھا، تا ہم بدلوگ بھی فریضہ مجہاد کواس صورت میں ادا کرنے پر آمادہ تھے کہ دوسرے آمادہ ہوجا ئیں ۔مولوی سیرعبدالکریم اور میاں لطف اللہ نے بھی اپنی حاضری کومعقول جماعت کی فراہمی سے مشروط کیا۔ یہی شرط مخدوم ہالہ نے پیش کی ۔ گویا جعیت کی فراہمی تنہا مولوی سیدنصیر الدین کے ذیعے تھی اور ان لوگوں کا کام صرف بیتھا کہ ہزاروں آ دمی میدان جنگ میں کھڑے دیکھیں تو بہمی جا کھڑے ہوں۔حقیقت بیہ ہے کہ مسلمان سبقت وعزیمت کی روح سے محروم مو کے تھے۔ یہی ان کے زوال کا پیش خیمہ تھا۔ افسوس کداس عبرت احکیز صورت حال برآنسو بهانے والی آکسیس بھی بہت ہی کم تھیں۔ متاع عزت كالتنايقينارنج افزاتها،كين اس سے بدر جہازياده رفج بيتها كد لنے والول كول من نقصان كا حساس زائل موكيا - ا قبال كيا خوب كهدي من مرحمه الله تعالى: وائے ناکامی متاع کاروال جاتا رہا کاروال کے دل سے احساس زیاں جاتار ہا

⁽۱) اخبارمولوی سینصیرالدین مخطوط ص:۳۵

كوث تاج محمدا درنوشهرو

مولوی صاحب نے ہالہ کے بعد کوٹ تاج محمد اور نوشہر وکا ذکر کیا ہے۔ بچ میں یقینا بعض منزلیں چھوڑ دیں، عالبًاس لئے کہ وہاں کوئی قابل ذکر واقعہ پیش نہ آیا۔ کوٹ تاج محمد میں مولوی جان محمد احمد نے رفاقت کا عہد کیا۔ نوشہر و میں وہ پیرشہاب الدین کی گدی کے سجادہ نشیں صاحب سے طے، جن کا نام عبد الحمی اور لقب امیر عمر تھا۔ مولوی صاحب فرماتے ہیں کہ بیصاحب بڑے عابد، زاہداور عالم ہیں۔ میری آمد کاس کراستقبال کیلئے ایک کوس با ہرنگل آئے، لیکن میں دوسر راستے سان کے مکان پر جا پہنچا۔ انھوں نے دمارے مظہرانے کا انتظام بخو نی کردکھا تھا۔ بڑے حسنِ اخلاق سے پیش آئے۔

سوئے اتفاق ہے مولوی صاحب کے چندساتھی سفر کی تکان اور اختلاف آب وہوا کے باعث بیار ہو گئے۔ ابواح معلی اونٹ سے گر محتے تھے اور ان کا شاند از گیا اور جوڑوں میں ورد ہونے نگا۔ مولوی صاحب تین روزنوشہرو میں تفہر ہے۔ وہ بیار قدر سے رو بہمحت ہوئے تو میاں عبد الحق سجادہ نشین نے انکی سواری کیلئے کجاوے والے اونٹ کا بندو بست کردیا۔ میاں ابواح معلی اور میاں عبد الرحیم کو تاصحت نوشہروہی میں چھوڑ تا پڑا۔ میرنوازش علی کوان کی تیارواری کے لئے مقرر کردیا گیا۔

مزيدملا قاتيس

مولوی صاحب نوشہر و سے روانہ ہوئے تو میال عثمان سندھی سے جالے۔ انھول نے ایک صاحب سید محمد نواز کا پیتہ دیا اور کہا کہ ان سے ضرور ملنا چاہئے۔ چنانچے میال عثمان کو ساتھ کیکر مولوی صاحب آٹھ کوس کا چکر کا شنے ہوئے سید محمد نواز سے ملے۔ پھر منگورجہ پہنچے اور سید ناصر علی سے ملاقات کی ، جو سندھ کے بلند پایہ مشائخ ہیں سے مشکورجہ پہنچے اور سید ناصر علی سے ملاقات ہوئی اور کھڑہ ہیں مخدوم عبد الخالق کے پاس

جائم سے۔سید محدنواز بسید ناصر علی اور پیرزادہ دراز والا کی ملاقاتوں کا مفصل حال مرقوم نہیں۔مولوی صاحب نے صرف اتنا لکھا ہے:

حاصل آ نکہ زبانی ہمہ مشائخ وعلاء اقرارِ شمول درامر معلوم کر دند۔(۱) ترجمہ: غرض سندھ کے تمام علاء اور مشائخ نے امر معلوم یعنی جہاد ہیں شامل ہونے کا زبانی اقرار کیا۔

خوش گوارتو قعات

اس سفر میں ہنگو رجہ پہنچ کرمولوی صاحب خو دہمی بیار ہو گئے ۔ پیرکوٹ پہنچے تو بیاری بڑھ گئی۔ ناچارمسہل لیمنا پڑا۔

ا پنے کچھ ساتھیوں کو گھوڑ ہے اور اونٹ دے کر شکار پور بھیج دیا تھا، غالبًا اس لئے کہ وہاں جانوروں کی چرائی کا انتظام اچھاتھا۔

ایک کمتوب میں اپنی سرگرم کوششوں کے نتائج کا خلاصہ بتاتے ہوئے لکھتے ہیں:

ہفتل ایز دی جمعے علاء ومشائخ ملک سندہ درامر مانحن فیہ شریک فقیراند
وعہد ہا کر دہ واقرار نامہ ہا نوشتہ دادہ اند عوام وخواص ایں ملک چہ علاومشائخ
وچہد گیراں قبول تسلیم بسیاری دارندانشاء اللہ تعالیٰ درعرصۂ چندروز ہمہ ہا تابع
علم غازیاں خواہند شد وسلسلہ مخصیل صد قات ہم از دست وبیاں دریں ملک
کنانیدہ می شود، دوعظ ونصائح درعوت ہجرت و جہاد بہز بان سندھی از وشاں حق
الامکان کنانیدہ می شود۔ آئندہ بایدد ید کہ تقدیم ایز دی چظہوری فر ماید۔ (۲)
الامکان کنانیدہ می شود۔ آئندہ بایدد ید کہ تقدیم ایز دی چظہوری فر ماید۔ (۲)
انھوں نے اقرار نامے کھے کردے دیے ہیں۔ ملک کے عوام وخواص علاء دمشائخ

⁽۱) اخبارمولوی سرونسیرالدین مخلوط ص: ۱۳۸

⁽۲) اخبارمولوي سيرنسيرالدين مخلوطيس: ١١٨٠١٨٨

ہوں خواہ دوسرے لوگ، قبول دعوت کا اظہار بڑی سر گری سے کر رہے ہیں۔خدانے چاہا تو چندروز ہیں وہ سب غازیوں کے ساتھ ہوجائیں گے۔ اس ملک ہیں صدقات وصول کرنے کا کام بھی انھیں کے ہاتھوں ہیں انجام پارہا ہے۔سندھی زبان میں وعظ وقعیت اور دعوت بھرت وجہاد کا انتظام بھی جس حد تک ممکن ہے وہی کررہے ہیں۔ آئندہ دیکھتے،خداکی تقدیر کس رنگ میں فاہر ہوتی ہے۔

ساتوال باب:

دعوت عام كااهتمام

سيدصاحب كحا كابررفقاء

مولوی سیدنھیرالدین ایک طرف سندھ میں بیٹے ہوئے مختلف اصحاب کواعا نت کیلئے تیار کررہے تھے، دوسری طرف ہندوستان میں پے در پے دعوت جہاد کیلئے اعلام نامے بھیج رہے تھے۔ سیدصا حب نے اپنی زندگی میں جا بجادعوت عام کا جوانظام فر مادیا تھا، وہ بھی بدستور جاری تھا۔ خصوصاً مولا ناسید محمظی رام پوری اور مولا ناولایت علی عظیم آبادی ادائے فرائف میں بڑی سرگر می دکھا رہے تھے۔ بھین ہے کہ یہی کیفیت سید مساحب کے مقرر فر مائے ہوئے دوسرے داعیوں کی ہوگی، اگر چدان کی سرگرمیوں کے تفصیلی حالات معلوم نہ ہو سکے اور مولائی سید نصیرالدین نے اپنے خطوں میں صرف مولانا تعصیلی حالات معلوم نہ ہو سکے اور مولائی سید نصیرالدین نے اپنے خطوں میں صرف مولانا

مجاہدین کے قافلے

ایک خط میں فرماتے ہیں: سیدالفت حسین ،مولا نامجرعلی اورمولا ناولایت علی سے رخصت ہوکر کلکتہ سے آخر ذی قعدہ میں یہاں پہنچ گئے۔ان کے ساتھ تقریباً ہیں آ دی ہیں۔وہ ہتھیاراور گھوڑے بھی ساتھ لائے ہیں۔(۱)

ایک اور مکتوب میں فرماتے ہیں:

⁽۱) اخبار مولوی سیدنصیرالدین مخطوطیس:۹۳

مولوی عبدالرحمن صاحب با پنجاه کس مجامدین ونقذی وسلاح بهموجب ارشادمولوی ولایت علی صاحب از بگاله داردشدند.....دمولوی محمودعلی صاحب نیز به جماعهٔ کشرشامل نشکرگرد بدند علی بندالقیاس توافل بسیار بهموجب ارشاد مولوی سیدمح علی صاحب حاضر حضور مجابدان می شود - (۱)

ترجمہ: مولوی عبدالرطن صاحب پیاس مجاہدوں کے ساتھ نقدی اور ہتھیار لے کرمولوی ولایت علی کے ارشاد کے مطابق بگال سے آگے اور مولوی محدوظی صاحب بھی بڑی جماعت کے ساتھ لشکر میں شامل ہو گئے۔ای طرح مولوی سید محموظی کے ارشاد کے مطابق بہت سے قافلے مجاہدین کے پاس پہنچ مولوی سید محمطی کے ارشاد کے مطابق بہت سے قافلے مجاہدین کے پاس پہنچ رہے ہیں۔

ایک کمتوب سے ظاہر ہوتا ہے کہ مولوی عبد الرحمٰن اور مولوی محمود علی کے علاوہ ایک صاحب مولوی عبد اللہ بھی مجاہدین میں شریک تھے۔ شاہ آخل نے اطلاع دی کہ مولوی سید احمد شاہ کر نال وسہار نبور سے بچاس مجاہدین کو لے کر دبلی بہنچے تھے اور سندھ روانہ ہوگئے۔ (۲) جزئل ویشیا تک سوسائی بمبئ ، کے ایک مقالے سے واضح ہوتا ہے کہ مولوی صاحب کے پاس زیادہ تر مجاہدین بڑال اور ہندوستان یعنی بہار اور بو بی سے بہنچ۔ (۳)

قابل توجه نكته

سیدصاحب کی جاری کی ہوئی تحریک کے سلسلے میں رینکتہ خاص طور پر قابل توجہ ہے کہ اس وقت ہندوستان کی وسیع سر زمین میں احیائے اسلام واسلامیت کیلئے جانبازی وجانفشانی صرف ای گروہ میں محدودرہ گئی تھی، جوسیدصاحب کی آغوشِ فیض میں تربیت

⁽۱) اخبارمولوي سيرتعيرالدين مخلوط ص:١٢١٣

⁽۲) اخبار مولوی سیدنصیرالدین مخطوط من ۱۳۵۰

⁽٣) جلد جهاروبم ص٥٥٥

یاچکا تھا۔ ہندوستان میں اس وفت بھی کروڑ وں مسلمان موجود تھے بلکوں اور ری<u>ا</u>ستوں کے والی بھی ، بزے بزے امیر ادر جا گیر دار بھی ،علاء دمشا کتے بھی ،کیکن اسلامی حمیت کے سلسلے میں ایٹار وقربانی کی تؤب صرف سید صاحب کے رفقاء میں موجز ن تھی۔وہ جہاں بھی تھے اور جس حال میں بھی تھے بصرف اس نصب العین کے حصول کو تقویت پہنچانے کے لئے وقف تھے،جس کائکم سیرصاحب نے بلند کیا تھا۔سوال بنہیں کدان امحاب کی قربانیوں کا نتیجہ حسب مراد لکلایانہ لکلا، سوال صرف بیہے کہ جس مقصد کووہ حق سمجھتے تھے، جونعب العین ان کے نزدیک اسلامیت کی روح اور غیرتِ ایمانی کی جان تھا،اس کیلئے **جو کھان کے امکان میں تھا، وہ انھوں نے کیا، یا نہ کیا۔ تاریخ کی شہادت اس بارے میں** ایک اور صرف ایک ہے۔ وہ سخت سے سخت اور نازک سے نازک حالات میں بھی ہے دریداحیائے اسلامیت کیلئے قربانیاں کرتے رہے اوراس امرے کوئی سروکار ندر کھا کہ سمی اسلامی حلقے کی زبان بر محسین کا کوئی کلمہ جاری ہوتا ہے یانہیں ، کیونکہ وہ اپنی ان قربانیوں کیلئے صرف فعدائے بزرگ وبرتز ہے اجرکے آرز ومند تھے۔ان کے سانر وجود کا · ترانصرف ايك تماليني إن أجرى إلاعكى الله _ مارى اسلاميت كاشيوه ان كيعلق میں کیار ہا؟ بیکتم می ان پرفساد عقا کد کے الزامات عا کد کردیے اور بھی ان کے اسلام ہی کو محل نُظر قرار دے دیا۔ہم گزشتہ سوسال میں جن بدبختیوں کا شکا ررہے ، کیا وہ ہمارے أنميں انسوس ناک اعمال کاطبعی نتیجہ نتمیں؟

مولوی صاحب کے مخاطب

مولوی صاحب نے جواعلام نامے بھیج، وہ تمام مسلمانوں کے نام تھے، کین ایک کتوب میں انھوں کے نام تھے، کین ایک کتوب میں انھوں نے اپنے خاص مخاطبین کے نام بھی درج کردیے ہیں، جواس خرض سے یہاں چیش کیے جاتے ہیں کہ اول مولوی صاحب کے دائر و دوے کی وسعت کا

انداز ہ ہوجائے ، دوسرے بیمعلوم ہوجائے کہاس تاریک دور میں کون کون سے اصحاب دعوت حق کے خیر مقدم میں پیش پیش شے:

ا۔ مولوی محدسراج الدین اور دوسر کے خلص دیندار سا کنانِ اجمیر۔ ۲_مولوي خليل الرحمٰن ، ائے فرزنداور بھائی ، مولوی بہادرعلی ،سید حمیدالدین (خوہر زاده سید صاحب)،سیدمحمر بعقوب (برادر زاده سید صاحب)،سید زین العابدین ،سید ابوالقاسم (ابناءسيداحم على خواجرزادة سيدصاحب) اوردوسر ، دين دارسا كنان أو مك . س.مولانا شاه آیخی مولانا یعقوب مولوی کرامت علی مولوی محبوب علی (۱) ، مولوی نصیرالدین ،مولوی مظفر حسین ،مولوی نیشخ محمد ، حاجی محمد ، حاجی مزال ،مولوی حافظ محمد حسين ،مونوي كرم الله ،مونوي اللي بخش ،مونوي جمال الدين ، حافظ عبد الرحمٰن ،مونوي محمد وزبرعلی بنشی ایز دبخش ،امیرالدین ،امین الدین ، حافظ عبدالرزاق ،مولوی عبدالله ،مولوی على محمد بمولوى بهاء الدين بمولوى عبد الخالق ،مولوى امام على ، حافظ اكرام الدين بمولوى شاه على مولوى عبدالله خال علوى (٢) ، بشارت خال ، مولوى عبدالجيد ، قارى احرز مال ، حافظ چھو بیک، حافظ احمدخال عظیم الله خال، میر زاایوب بیک،میان نجابت علی، قامنی عبدالرحمٰن عرب سرائے والے میاں غلام محی الدین ، حافظ ولی محمد ، میاں رکن الدین ، میاں الہی بخش آئینہ ساز ،مولوی امدادعلی ،مولوی نذ برجسین (۳) نیز دوسر ےعلما وطلبداور صلحاءسا کنان دہلی دنواح۔

س۔ مولوی بزرگ علی (م) مولوی عنایت احمد (۵) مولوی محمر متقی اور دوسرے

⁽۱) ہودی مولوی مجرب علی میں جوسید صاحب کے ذمانے میں سرحد کافئے کر بعض وسادی کی بنا پروائس آ محے تھے۔

⁽۲) و بلی کے آخری دور کے مشہور عالم ،طبیب اور شاعر۔اصل دلمن غالبًا خورجہ تعا۔زندگی کا بڑا حصد د لی بیس گزارا۔ پھرشس آبادیش ایک رئیس کے پاس ملازم ہو گئے تھے۔وہیں ۲۷۲اھ(۱۸۴۷ء) بیس فوت ہوئے۔

⁽m) فيخ الكل ميال سيدنذ يرحسين مرحوم محدث داوي-

^{(&}quot;) على أله حال جامع معجد كدر سكاستاد معقول كربهت يوسعالم تصد

⁽۵) مولانامفتى عنايت احمدكاكوروى،جنول فيشاه الخل عديدي بقيرماشيم في كدور

علماء ومسلحاء ساكنان على كرّهـ

۵_قاضى حيات بخش (١) بمولوى مردان على ،شيخ محرتقى ،داروغدراحم ساكنان ميرخد_

۲_مولوي وحيد الدين ،مولوي خدا بخش ،مولوي تهور على ،مولوي خير الدين (۲) ،

مولوى منيرالدين ساكنان يعلب جمينه وغيره

2_مولوی رمضان علی مولوی امانت علی مولوی کریم الله ، پیخ رحمان بخش ،صوفی

صاحب، شاه غلام على مير بدى اور دوسر اكابرساكنان امروبه

٨- حافظ عبدالرجيم،ميال عثان،ميال جي خليفها كنان مرادآباد

٩- حاجي صبغت الله، يتنفخ محمر حسين اور دوسر ديندارسا كنان كره مكتيشر -

•ا_مولوي حيد رعلي ،مولوي نو رالاسلام ، اخوند زعفران ، اکبرعلی خال ،شاه دل خال ،

حافظ احد على مرتقى خال ، اخوندامام الدين ، قارى صاحب اور دوسر اصحاب ساكنان

اا میرزاحس علی (۳) به مولوی خرم علی (۴) به مولوی اللی بخش بسیداولا دحسن (۵) ، مولوی مکارم خان مولوی سخاوت علی (۱) مولوی کرامت علی (۷) ساکنان کان يور، فرخ آباد، بانده، بريلي، قنوح، جون يوروغيره-

مدشته صفی کا بقیہ حاشیہ سندلی مجر مولوی بزرگ علی نے نیف حاصل کیا اور انھیں کے مرسے میں ملازم ہو گئے تے۔ آخر کار آگرہ میں صدر اعلی بن مئے تھے غدر کے سلسلے میں ان پرمقد مدچلا اور صبی دوام برعبور دریائے شور کی ر سزالی و میں افوں نے تاریخ صبیب الد کھی تھی۔ قیدے د ہاہوکرآئے اور حج کے لئے رواندہوئے۔ راستے میں جہاز جیان کے طرا کرغرتی ہو کمااورمولا ناسمندر کی نذر ہوئے ۔ تاریخ وفات بے مشوال اعرامہ (بحرام یا ۱۸۲۳م) ہے۔

(1) قامنى احدالله ميرتنى شهيد بالاكوث كوالد

(۲) ان ے عالیًا مولوی خیرالدین شرکونی مرادیی ۔

(۱۳) مولوی خرم علی بلبوری به (۳) میرزاحس علی محدّث به

(۵) سیداولاد حسن قوتی (نواب مدیق حسن خال کے والد) (۲) مولوی تاوت علی جون میری -

(۷) مولوی کرامت علی جون بوری به

۱۲ مولوی احمد الله، مولوی رحمت الله ، حافظ صدیق اور دوسرے علماء وصلحاء ساکنان بنارس۔

سار شیخ فرزندیلی،مولوی محمد صبح اور دوسرے علماء ساکنانِ غازی بور،مہمرام،آرہ نیر۔

۱۳ ما۔ شاہ محمد حسین ،مولوی ولایت علی ،مولوی البی بخش اور دوسرے خلفاء سید صاحب سا کنانِ عظیم آباد ،مظفر پور ، پھیرہ ،مونگیروغیرہ۔

۵۱_مولوی محمطی ،مولوی امام الدین ،مولوی مراد ، قاضی عبدالباری ،صونی نورمحمد ، منشی غلام رحمٰن ،مولوی حراست الله،مولوی عبدالله ،مستری ر جب علی اور دوسرے علماء وصلیا یککنته دنواح۔

یکل ایک سوچھاصحاب ہیں ۔اس سے اندازہ ہوسکتا ہے کہ سیدصاحب کے زمانے ہے دعوت کا کتنا عمدہ انتظام ہوگیا تھا۔

سيدصاحب كي المليه كاجذبه أيثار

سیدہ ام آملیل (اہلیہ سید صاحب) سید صاحب کے زمانے میں بھی جماعت بہ عجابہ بن کی ہرمکن خدمت انجام دیتی رہیں۔ایک موقع پرانھوں نے دس ہزار کی رقم سید صاحب کے پاس بھنج دی تھی ،حالانکہ خود اُن کے گذار سے کا کوئی مستقل انتظام شدتھا۔ مولوی سید نصیرالدین لکھتے ہیں کہ ہم لوگ پیرکوٹ پہنچ تو سیدہ محتر مدنے ہماری خبر کیری میں کوئی دقیقہ سعی اٹھاندر کھا۔

ایک موقع برمواوی صاحب سےفر مایا:

آنچہ از ماست، برائے این کار است و خجستہ اطوار، سعادت دار محمہ اطعیل معاضد وسماعد تست وتمامی اتباع خودرار دبروئے این نیاز مند درگاہ اللی

سجانه کر دند که این جماعة مخلصین که تحض حسبهٔ للداز دفت امام هام به رفادت واطاعت مابود و اند واز رفقاء اصفیاء تواند به هر چه گوئی جمیع اند، و به هر چه فرمائی مطبع به (۱)

ترجمہ: ہمارے پاس جو پہھ ہے، جہاد کے کار خیر کیلئے وقف ہے۔ مجھہ اسلمیل (سیدہ کا فرزند ارجمند) آپ کا حامی اور مددگار ہوگا۔ پھراپ تمام خادموں کومیرے سامنے بلا کرفر مایا: پیخلص لوگ سیدصا حب کے زمانے ہے محض خدا کیلئے ہمارے ساتھ چلے آتے ہیں، بیسب آپ کے ساتھی ہیں۔ جو کھفر ماکمیں مے، اے نیں مے، جو تھم دیں مے، اس کی قبیل کریں مے۔

اعلام نامه

پھرسیدہ نے عام سلمانوں کیلئے ایک مفصل اعلام تامہ مرتب کیا، جس کامضمون بیتھا کہ واقعہ بالاکوٹ کے بعد کاروبار جہاد پہلی صورت بیں قائم ندر ہا۔ مولوی سید نصیرالدین نے عالی ہمتی سے کام لے کر پھراس کا بیڑا اٹھایا ہے۔ بیس عورت ذات ہوں اور بیکا منجام نہیں دے سی میرا بی چھر آمھیل کسن ہا وراس بارگرال کا متحمل نہیں ہوسکتا۔ ہم لوگ صرف دعاء کر سکتے ہیں۔ مسلمانوں کا فرض ہے کہ میدانِ عمل بیس آئیں۔ جن کے پاس ذاوراہ ، مواری اور ضرورت کی دومری چیزیں موجود ہوں ، وہ جلد پہنچیں ۔ جوخود نہ آسکیں ، وہ دومروں کی امداد کریں۔افسوں کہ مسلمان تن آسانی کے باعث اپنی عمریں اس مرز بین بی ضائع کر ہے ہیں، جس پر غیر مسلم مسلط ہیں اور باہم اتحاد وا تفاق سے وہ قدم نہیں اٹھا تے ، جس پر مسلمانوں کی شوکت کا نخصار ہے :

اگر ایمان داران مندوستان تو نیش یافته به قدر طاقت واستطاعت و فود از یک فلوس تا لک روید امداد غازیال کنند، بعیداز اخلاص مندی وحمیت اسلامی

۱) اخبار مولوی سید نصیرالدین مخطوط ص : ۹

ایشاں نخواہد بودوبہ قبو اصوا بالمنعق و تو اصوا بالصبر کارفر موده غریب بدامیر دفتی بدفقیر وزن برشو ہروشو ہربرزن و مسابہ برجسایہ ودوست بدوست برغیب ایں امداد و هرت دین کنند، از غیرت ایمانی اینال دور نہ خواہد بود۔ (۱) ترغیب ایں امداد و هرت دین کنند، از غیرت ایمانی اینال دور نہ خواہد بود۔ (۱) تر جمہ: اگر ہند وستان کے ایمان داروں کو خدا توفیق دے اور وہ استطاعت کے مطابق ایک پیسے سے ایک لاکھ تک ان غاز بول کی امداد کریں تو یہام اُن کے اخلاص اور اسلامی جمیت سے بعید نہ ہوگا۔ خدافر ما تا ہے: ایمان دارلوگ دہ ہیں، جضوں نے اجھے کام کیے اور ایک دوسرے کورات اور مبر کی تاکید کی۔ اس فر مان کے مطابق غریب امیرکو، غن فقیرکو، یوی شو ہرکو، شو ہر یوی کو، پروی پروی کو، دوست دوست کو اس امداد کی ترغیب دے اور دین کی کورت کرے تو یہامرا بمانی غیرت سے دور نہ ہوگا۔

حالات کی ساز گاری

ای وقت علاقہ سرحد میں سکھوں کی حکومت کےخلاف خاصا ہنگامہ بپاتھا۔ ایک طرف امیر دوست محمد خال پشاور کی ہازیافت کیلئے سرگرم کوششیں کررہا تھا، دوسری طرف خوانین سرحد میں سے مختلف اصحاب امیر موصوف کی ہرمکن امداد کیلئے میدان میں آ چکے سے، جن میں سے فتح خال پنجتاری بہطور خاص قابل ذکر ہے۔ سیدہ اُمِ اسلحیل اپنے اعلام نامہ میں ان واقعات کا ذکر کرکے فرماتی ہیں:

کفارسکھ بہ آل سومشغول ومصروف ۔اگرخواستہ تعضرت قادر توانا جل جلالۂ است، دریں وقت کارےخواہر شد۔ (۲)

تر جمه: سکھ پیثاور کی طرف مشغول ومصروف ہیں (دوسری طرف بھاری

⁽۱) اخبارمولوي سيدنصيرالدين مخطوطي ٩٨٠-١٠٤

⁽۲) اخبار مولوی سیدنعیرالدین مخطوط ص ۱۰۷

تشکر نہیں لا سکتے)اگر خدائے قادر وتو انا کا نصل شامل حال ہوتو اس موقع پر پچھے کام ہو سکے گا۔

سيدعبدالرحمن اوردوسر باصحاب

سیدعبدالرحمٰن کاروبار جہاد میں ہمدتن شریک تھے۔متعدداعلام ناموں پر اُن کے اورسید آمکعیل کے دستخط شبت ہیں۔ہم پہلے بتا چکے ہیں کہ شخ ولی محمد پھلی بھی سید صاحب کی چتر الی اہلیہ کو لے کرسند ھے بہنچ گئے تھے۔وہ بھی تمام سرگرمیوں میں شریک رہے۔بعض وعوت ناموں اور خطوں پر وہ بھی دستخط فرماتے رہے۔

غرض ان خدا مست اصحاب نے جہاد کو کا میاب بنانے کیلئے سعی وکوشش کا کوئی پہلو اٹھا نہ رکھااور جو کیجھان کی استطاعت میں تھا، اسے دلی خلوص اور تڑپ سے پورا کر دیا۔

آ تھواں باپ:

رکن میں دعوت و تبایغ

سيدمحرعلى اورمولوي ولايت على

ہم پہلے بتا چکے ہیں کہ سیدصاحب نے ابتدا میں سیدمحم علی رام پوری کو دعوت وہنٹ کی غرض ہے حیدرآ باد بھیجا تھا۔ پھر مولوی ولایت علی وہاں متعین ہو گئے اور مولوی محم علی کو مدراس جانے کا حکم مل گیا۔ مولوی ولایت علی حیدرآ باد سے روانہ ہوئے تو دس ہزار کے قریب مسلمان ان کے صلفہ ارادت میں داخل ہو چکے تھے۔ ان میں بہت سے اکابر بھی شامل تھے۔ مثلاً:

ا۔ مولوی محمد آصف جومولوی محمد رفیع الدین مغفور کے دامادیتھے۔ان کی کوششوں سے بعد ازاں ایک لاکھ کے قریب مسلمان داخل بیعت ہوئے۔ان میں امیر کبیر نواب شمس الامراء بھی شامل تھے۔

۲۔سید محمد عباس، بیمولوی محمد آصف کے بھانجے اور ناصر الدولہ نظام کے بھائی مبارز الدولہ کے استاوز اوے تھے۔

٣_مير فضل الله جوخود ناصر الدوله كےاستاد تھے۔

ان کے علاوہ مولوی سید جمد مغربی ہمولوی مجمد عباس ہمولوی پیر مجمد اور مولوی سید قاسم کے نام بھی ندکور ہیں۔

دعوت کے خاص مراکز

حلقہ ارادت کی توسیع کے ساتھ جا بجا مراکز قائم ہو گئے تھے، جن کا انتظام مختلف

بزرگون نے سنجال لیا تھا۔مثلا:

ا۔مولوی محمد ولی الدین۔ بیرصاحب مسٹر پا مرانگریز تاجر کے بچوں کو پڑھاتے تھے۔ان کامکان عیسیٰ میاں کے بازار میں تھا۔

۲_مولوی محد سلیم جومبارز الدوله کی سر کاربیس ملازم تنجے۔ان کا مکان کو ٹلہ علی جاہ میں تھا۔

سے مولوی محمد کرامت علی ، بیراجا چند ولعل کی سرکار میں ملازم تھے اور آن کا مکان صفدر نواز جنگ کی مسجد کے قریب شکر تنج میں تھا۔

۳۔مولوی محمد عماد الدین، به مولوی محمد آصف کے فرزند تھے۔مبارز الدولہ کی سرکار میں ملازمت اختیار کر لی تھی،ان کا مکان باز ارسلیمان جاہ میں تھا۔

۵۔مولوی محمد فریدالدین ، یہ بھی مبارز الدولہ کی سرکار میں ملازم تھے اوران کا مکان کوٹلہ عالی جاہ میں سیدمحمدعباس کے مکان ہے متصل تھا۔

۲ _ مولوى عبدالها دى ملازم سركار مبارز الدوليه ان كامكان كوثله عالى جاه ميس تقا_

ے ۔مولوی محمد جعفر ملازم سرکارنواب تنس الدولہ ،ا نکام کان بازار سلیمان جاہ میں تھا۔

۸۔سیدعبدالواحد عرف واحد علی ، یہ سید قاسم کے چھوٹے بھائی اور دولت آصفیہ میں ملازم تھے۔ان کا مکان مولوی محمد جعفر کے مکان سے قریب تھا۔

9_مولوی حسن محمد ملازم سرکار تنس الا مراء، ان کامکان فتح دروازه کے پاس تھا۔

•ا_حافظ عبدانسيع ملازم سركارمبارز الدوله،ان كامكان بيكم بإزار مين تھا_ إ

۱۱_میان محد شرف الدین ملازم سر کارمبارز الدوله، ان کا مکان مسجد نصیحت المسلمین

کے پاس تھا۔

۱۲ حافظ حسن خاں رام پوری ملازم ہر کار مبارز الدولہ،ان کا مکان مولوی محمد جعفر کے مکان کے پاس باز ارسلیمان جاہ میں تھا۔ ١٣_مولوى عبدالرزاق،ان كامكان كوثله عالى جاه ميس تعا-

۱۳۳ سید جلال الدین، بیسنگاریڈی پیٹ رہتے تھے اور وعظ فرمایا کرتے تھے۔سید عبداللہ ان کےمعاون ورفق تھے۔

قیام گاہوں کی تفصیل بیان کرنے کا معابیہ ہے کہ بید مقامات تعلیم وتدریس، وعظ وقصیحت اوراصلاح ودری کے خاص مرکز تھے۔ گردو چیش کے مسلمان انھیں مقامات پروقنا فو قا جمع ہوجاتے تھے۔ اس سے اندازہ ہوسکتا ہے کہ سید صاحب کے رفقاء و خلفاء احیائے اسلامیت اور اصلاح عقائد و اعمال کا کام کس اہتمام و تنظیم سے انجام دیتے سے۔ بیصرف ایک مقام کی سرسری تفصیلات ہیں۔ یقین ہے کہ انھوں نے ہرمقام پرائی فتم کے انظامات کرد کھے ہوں گے۔

مبارزالدوله كى عزييت

ناصرالدولہ کے بھائی نواب مبارز الدولہ نے اس تحریک اصلاح بیں سبقت کا مقام ماصل کر لیا۔ انھوں نے سید صاحب کی کتاب ''صراطِ متنقیم'' اور شاہ اسلمیل کی کتاب ''تقویۃ الایمان ''پڑھیں تو شرک و بدعت اور منہیات کے تمام مراسم ترک کر دیے۔ وقت کے امراء کی طرح ان کے حرم بیں بھی بہت می عورتیں داخل تھیں۔ مبارز الدولہ نے صرف چارعورتیں رکھیں۔ باقی سب کو اجازت دے دی کہ نکارِ ٹانی کرلیں اور جرا کیک کو صرف چارعورتیں رکھیں۔ باقی سب کو اجازت دے دی کہ نکارِ ٹانی کرلیں اور جرا کیک کو اس کی دوسری چیزیں دے دیں۔ ان کے دربار میں آداب تسلیمات کے بجائے سلام مسنون جاری ہوگیا۔

غرض ان کے گھر، دربار اور جا گیر میں شریعت کے مطابق عمل ہونے لگا۔بعض لوگوں نے مخالفت کا شورا ٹھایا،کیکن مبارز الدولہ طریق حق پرعزم وجزم سے قائم ہو چکے تھے،للبذاان پرکوئی اثر نہ پڑا۔

مولوي تصيرالدين كااعلام نامه

مولوی نصیرالدین کا اعلام نامدنواب مبارزالد؛ له کے ملاحظے میں پیش ہواتو نواب مولوی سیدقاسم، حافظ سیدمحموداور مولوی موصوف نے مولوی حمرات بچاس بجابدین ساتھ لے کر سندھ چلے جائیں، تمام حالات خود ملاحظہ کریں۔ بیددیکھیں کہ حاکمان سندھ کس حد تک حمایت کے لئے تیار میں، مجاہدین کی قیام گاہ کیسی ہے اور وہاں اخراجات ومصارف کا کیا حال ہے۔ بیسب بچھددر بافت کرکے:

و کیل معتمد را نزد مافرستاه و اطلاع دہید، ماحتی الامکان به تائید مجاہداں خواتیم پرداخت ومال واسباب کثیر ومردم بسیار روانہ خواتیم نمود۔(۱) مرجمہ: قابل اعتاد وکیل ہمارے پائی بھیج کر اطلاع دیجئے۔ہم حتی الامکان مجاہدین کی تائید کریں گے۔ بہت سامال واسباب اور بہت سے آدی بھیجیں گے۔

حيدرآ بادوكن سے حيدرآ بادسندھ

سیتمام حفرات سید محرعلی رام پوری اور مولوی ولایت علی عظیم آبادی کے معتقد تھے۔
ان سے استصواب کی خاطر کلکتہ خطوط بھیجے۔ جب وہاں سے جواب باصواب آگیا تو
سارشعبان ۱۲۵۳ ہ (۱۸۳۷ میر ۱۸۳۷ء) کو حیدر آباد سے روانہ ہوئے۔شولا پور اور پونہ
ہوتے ہوئے بمبئی سے جہاز کی سواری میں کراچی پنچے۔ وہاں سے ایک ہفتے میں حیدر
آباد چلے گئے۔ سیدعبد الرحمٰن (خوہر زادہ سید صاحب) نے ان کا خیر مقدم کیا،عزت
سے تھمرایا اور پورے حالت ان کے گوش گزار کردیے۔ وہاں سے اواخر ذی قعدہ میں سید

⁽۱) اخبارمولوي سيدنصيرالمدين مخطوطيس: ۱۳۱

لوگ کشتی پرسوار ہوکر مولوی سید نصیر الدین کے پاس گئے، جواس وقت شکار پور میں تھے اور جومعلومات حاصل کرنے کی غرض ہے وہ آئے تھے، ایک مفصل مکتوب کی صورت میں دوقا صدوں کے ذریعے سے حیدر آباد تھے دیں۔

مبارزالدوله كاانجام

افسوس کہ مبارزالدولہ کا یہ مبارک اقدام ان کے بھائیوں اور دوسرے امراء میں گونا گوں غلط فہمیوں کا باعث بن گیا۔ ناصر الدولہ نے یہ مجھا کہ اس طرح مبارزالدولہ وولت آصفیہ کی حکومت حاصل کرنے کے خواہاں ہیں۔ جن مستورات کوحرم سے نکالا گیا تھا، انھوں نے شور مچایا تو مبارزالدولہ کے بھائیوں نے اس روش کوآباء واجداد کی رسم کے خلاف قرار دیتے ہوئے بدنا می کا باعث تصور کیا۔ چنا نچہ اس نیک دل نواب کو حیدر آباد سے نکال کر گولکنڈ ہ کے قلع میں نظر بند کر دیا گیا۔ بچھ مت بعد انھوں نے وفات پائی۔ پھرناصر الدولہ، ان کے بھائیوں ، دوسرے امیرول، نیز پر انی وضع کے عالموں اور پیروں نے ان تمام اصحاب کو گونا گول مصیبتوں کا ہدف بنا دیا جو تحریک اصلاح جہاد سے وابست سے ۔ اس طرح منظم اصلاح تحریک کا شیراز ہ در ہم برہم ہوگیا۔

نوال باب:

آغاز جہاد کا پس منظر

مزاریوں کی سرگزشت

مولوی سیدنصیرالدین نے تمام معاملات برغور وفکر کے بعد مزاریوں کے علاقے میں اقامت افتیار کر لینے کا فیصلہ کیا تھا۔ یہ علاقہ خبر پور کے حدود سے متصل موجودہ صلع ڈیرہ غازی خال کے جنوبی جھے پر مشتمل ہے۔ اس سلسلے میں تفصیلات کا رشتہ ہیان سنجالنے سے قبل مناسب معلوم ہوتا ہے کہ اول خود مزاریوں کی سرسری سرگزشت پیش سنجالنے سے قبل مناسب معلوم ہوتا ہے کہ اول خود مزاریوں کی سرسری سرگزشت پیش کردی جائے۔ دوم گردو پیش کے سیاسی ماحول کی مجمل کیفیت بتادی جائے۔

مزاری(۱) بلوچوں کی ایک بہت بڑی قوم ہے، جوغالبًا سترھویں صدی عیسوی کے اواخر یا اٹھارہویں صدی عیسوی کے اواخر یا اٹھارہویں صدی کے اوائل میں اپنے پہلے مقام سے اٹھ کرنی چراگا ہوں کی تلاش میں نگلی۔اس زمانے میں ناہر قوم دریائے سندھ کے کناروں پر قابض تھی۔وہ دوفریقوں میں بٹی ہوئی تھی، جو آپس میں لڑتے رہتے تھے۔ایک کا صدر مقام کن تھا، دوسرے کا میں بٹر ان کی مردکر کے وہ علاقہ صلے بھا کسر ۔ایک لڑائی میں مزاریوں نے ناہر قوم کے ایک رفیق کی مددکر کے وہ علاقہ صلے

⁽۱) مولوی سیدنسیرالدین اورسید صاحب کے تمام ارادات مندشرک و بدعت کے رسوم سے تخت بیزار تھے۔ مزار کی ایک نام سے ہندوستان کے اٹل تن کوشیہ ہوسکا تھا کہ بیلوگ غالبًا مزار پرست ہیں، البذا مولوی صاحب نے اپنے ایک مکتوب ہیں تصریحاً لکھا کہ بیتوم کا تام ہے۔ مزار پرتی سے اسے کوئی تعلق نہیں ، البت و جسمید کا پیونہیں چل سکا۔ بیا لکل درست ہے۔ مزار بول کی و جسمید میں دوروایتیں ہیں: ایک بید کدان کے بزے کا نام مزار تھا۔ دوسری بید کہ بیتوم البتدا میں ایک تدی ہوئیا۔ ابتدا میں ایک تدی برتے گیا۔

میں لے لیا، جوشلع ڈیرہ غازی خال میں روجھان اور دریائے سندھ کے مابین واقع تھا اور وہ اس علاقے میں مستقل طوریر آباد ہوگئے۔

احد شاہ ابدائی کوعروج عاصل ہواتو اس نے داخل اور ہرنڈ کے علاقے قلات کے بروہی حکمران کو دید ہے، جو مزاریوں کے وطن سے شال میں واقع شے۔ انھوں نے کشٹ میں قلعہ بنا کرمزاریوں سے لڑائیاں شردع کرویں۔ ایک لڑائی میں مزاریوں کا مردارگل شیرخاں مارا عمیا۔ اس کے بیٹے شاہ علی خاں نے کشٹ و پرحملہ کر کے بروہیوں کو وہاں سے نکال دیا۔ شاہ علی خال کے بعد اس کا بھائی ووست علی خال اور بھتیجا حمل خال کے بعد دیگر ہور سے تعلقات بیدا کے بعد دیگر ہور سے تعلقات بیدا کے بعد دیگر ہور سے تعلقات بیدا کر لئے۔ ۱۰ ۱۹ء میں وہ فوت ہواتو اس کا بیٹا میر بہرام خال مزاری قوم کا مردار بن عمر سے میں مولوی سید نصیرالدین مزاری علاقے میں بیٹیے اورانھوں نے جہاد کا آغاز کیا۔

أنكريز

اب سب سے پہلے ساسی ماحول کا سرسری نقشہ سامنے رکھ لیجئے ،ہم ایک ایک طاقت کا حال الگ الگ بیان کریں گے۔

ہندوستان پرانگریز قابض ہو بھے تھادروہ اپنادائر وَ اقتدار آ ہستہ آ ہستہ بڑھار ہے تھے۔ حاکمانِ سندھ سے ان کا تعلق تجارت کے سلطے میں ہوا اور ایک معاہدے کے ذریعے سے انھوں نے دریائے سندھ میں تجارت کی غرض سے کشتی رانی کا ٹھیکہ لے لیا۔ ساتھ ساتھ وہ حاکمانِ سندھ کی حفاظت کے بھی ذمہ دارین گئے۔ اس زمانے میں اگریز وں کو ہندوستان کی طرف روی چیش قدمی کا بہت خطرہ تھا، لہذا افغانستان پر بھی ان کی نظریں جی ہوئی تھیں، جوروسیوں کے مقابلے میں ہندوستان کا پہلامور چہ تھا۔ انھوں کی نظریں جی ہوئی تھیں، جوروسیوں کے مقابلے میں ہندوستان کا پہلامور چہ تھا۔ انھوں

نے افغانستان کے دو حکمرانوں کو بھی اسی خیال سے اپنے ہاں پناہ دے دی تھی کہ جب ضرورت پڑے گی،ان سے اپنی مرضی کے مطابق کام لے لیس گے۔ایک زمان شاہ درّانی، جسے اس کے بھائی محمود نے اندھا کر دیا تھا(۱)، دوسراشاہ شجاع۔

رنجيت سنكه

رنجیت شکھے نے ۹۰ ۱۸ء میں انگریزوں ہے معاہدہ کر کے دریائے تتلج کواپنی عملداری کی جنوبی حد بنالیا تھااوروہ مسلسل شالی دمغربی جانب پیش قدمی کرتار ہا۔ چنانچیاس نے ہزارہ کے علاوہ پشاور تک سرحدی علاقہ لے لیا، نیز شکار پور کی طرف پیش قدمی شروع کر دی۔ انگریز اورسندهی اس پیش قدمی کورو کئے کےخواہاں تھے۔ رنجیت سنگھ کا دعویٰ پیتھا کہ تھن کوٹ سے نیچے جو دریا ہے،اہے بھی دریائے شلج سجھنا جا ہے جوسکھوں اورانگریزوں کے درمیان صرفاصل قرار یا چکا تھا۔ کو یا وہ اس دریا کے یار کی سرز مین کوان علاقوں میں شار کرتا تھا جن میں ۹۰ ۱۸ء کے معاہدے کے مطابق وہ حسب دلخواہ پیش قدمی کا مجازتھا ادرا تگریزاسے رو کئے با چیش قدمی میں مداخلت کرنے کے حقدار نہ تھے۔انگریز کہتے تھے کہ ۱۸۰۹ء کے معاہدے کی حد مضن کوٹ برختم ہوجاتی ہے،اس لئے کہ دریائے تلج وہاں اُ ختم ہوجاتا ہے۔اس سے آ گے دریائے سندھ ہے، جے معاہدے سے کوئی علاقہ نہیں۔ رنجیت سنگھ نے میاں عبدالنبی کلھوڑ ہ کوبھی اپنی عملداری میں راجن پور کے مقام پر ایک جا گیردے دی تھی۔اس سے ٹالبرول نے سندھ کی حکومت چینی تھی۔رنجیت سکھ کا مقصد بیتھا کہ ضرورت پیش آئے گی تو میال عبد النبی کوسندھ برقبضے کیلئے ٹالپرول کے خلاف آلہ کارکےطور پراستعال کرےگا۔ بیوہی یاکیسی تھی جس برانگریز افغانستان کے

⁽۱) زمان شاہ کو اسیری کے زبانے ہیں انگریزوں کی طرف سے دو ہزار روپے باجوار بدطور و کھیف ملتے رہے۔ خالبًا ۱۸۳۵ء میں شاہر صوف نے وفات بائی۔

تعلق میں کاربند تھے۔

حا كمان سندھ

حا کمانِ سندھ کی پوزیش عجیب وخریب تھی۔ وہ انگریزوں سے بھی ہراسال تھ،
رنجیت سنگھ سے بھی اور والیانِ افغانستان سے بھی۔ بھی ایک کی پناہ لینے پرآ مادہ ہوجاتے،
سبھی دوسر سے سے معاملے گی گفتگوشر و عکر دیتے ، بھی تیسر سے کی طرف ماکل ہوجاتے۔
شکار پور درّا: بوں کی حکومت کے زمانے میں سلطنت افغانستان کا جز و بن چکا تھا۔
نالپروں نے جب اس کا انظام سنجالاتو حکومت افغانستان کو خاص رقم بطور خراج دینے کا
عہد کیا تھا۔ افغانستان میں ورّانیوں اور بارک زئیوں کے درمیان خانہ جنگی شروع ہوگئ تو
حاکمانِ سندھ نے خراج روک لیا ، لیکن آھیں ہروقت خطرہ لگارہتا تھا کہ خدا جانے کب
کوئی حکمراں شکار پور پر قبضہ کرلے۔

افغانستان

افغانستان پہلے سد وزئیوں کے قبضے میں تھا۔ ان میں خانہ جنگی شروع ہوئی تو پہلے زمان شاہ معزول ہوا، پھر شاہ شجاع باہر نکلا۔ آخر میں شاہ محود کی حکومت زائل ہوئی اور بارک زئی افغانستان کے مختلف حصوں پر قابض ہو گئے۔ صرف ہرات سد وزئیوں کے قبضے میں رہ گیا۔ زمان شاہ اور شاہ شجاع لدھیانہ میں ہو گئے اور انگر بزوں نے ان کے لئے وظیفے مقرد کر دیے۔ شاہ شجاع کھوئی ہوئی سلطنت حاصل کر نے کی سعی میں برابرلگا رہا۔ ایک موقع پر اس نے شکار پوراور بیثا ور دونوں رنجیت شکھ کے حوالے کر کے مدد لینی چاہی ہیکن فیصلہ نہ ہوسکا۔ ۱۸۳۳ء میں وہ خود افغانستان کو فتح کرنے کیلئے لکلا۔ حاکمانِ سندھ نے یکی مناسب سمجھا کہ اسے گذر جانے دیں اور کوئی مزاحمت نہ کریں ، محرشاہ شجاع نے شکار پور پی کے دا کم ان سندھ سے بقایا خراج کا مطالبہ پیش کردیا۔ بوی مشکل شجاع نے شکار پور پی کے دا کم اللہ پیش کردیا۔ بوی مشکل

ے اسے پانچ لا کھروپے دے کرراضی کیا گیا۔آگے بڑھا تو اس نے فکست کھائی۔وہ لوٹا تو اندیشہ پیدا ہوگیا کہ ممکن ہے چھرشکار پوریس قدم جما کر بیٹے جائے۔اس خوف سے حاکمانِ سندھ شکار پورکورنجیت سکھ کے حوالے کرنے پر آمادہ ہو گئے تا کہ شاہ شجاع کی دست بُدد سے بیچر ہیں۔

عمومي كيفيت

غرض مولوی سیدنصیرالدین کے پینچنے برعموی کیفیت بیتی:

ا۔رنجیت سنگھ شکار پورکی جانب بڑھ رہاتھا اور سندھ کیلئے نظرہ پیدا ہو چکاتھا۔وہ کہتا تھا کہ شکار پورسندھ کا حصہ نہیں بلکہ سلطنت افغانستان کا حصہ ہے اور اس پر قبضہ سے مجھے روکا نہیں جاسکتا۔

۲۔ انگریزا پی مسلحوں کے پیش نظر سندھ کورنجیت سنگھ کی دست ہُر دیے محفوظ رکھنے کے لئے کوشاں تھے۔ ساتھ ہی سیبھی چاہتے تھے کہ رنجیت سنگھ کے ساتھ دوستانہ تعلقات میں فرق نہ آئے۔

۳- حا کمانِ سندھ کی دلی خواہش بیتھی کہ جوگروہ رنجیت سنگھ کا مقابلہ کریں ،انھیں ہرممکن ذریعے سے خفیہ خفیہ مدددیں ،کیکر اس مدد کی ذمہ داری ان پرعا کم نہ ہونے پائے۔ ۴- مختلف گروہوں میں سے مزاری بلوچ سکھوں کی مخالفت میں پیش پیش بتھے ،لہذا سندھ کے تمام عناصر کی خواہش یہی تھی کہ انھیں تقویت پہنچائی جائے۔

مزار بوں اور سکھوں کی کشکش

مزاری اینے دستور کے مطابق سکھ علاقوں میں تاخت وتاراخ کرتے رہتے تھے، اس و جہسے سکھوں ادرسندھیوں کے درمیان کشکش شروع ہو جانے کا خطرہ موجود تھا۔ کسننگھم لکھتاہے کہ ۱۸۳۳ء میں دیوان ساون مل نے ، جوسکھوں کی طرف سے ملتان کا ناظم تھا، مزاریوں کی شدید گوشالی کی اور روجھان کے قلع میں اپنی فوج بھا دینے کا ارادہ کرلیا لیکن رنجیت سکھ نے اجازت نہ دی۔اسے بھینا یہ خیال ہوگا کہ ممکن ہے، اگریزی حکومت حا کمانِ سندھ کی جمایت میں اس پرمعترض ہوا دراس سے تعلقات بگڑ جا کیں۔۱۸۳۵ء میں یہ حقیقت واضح ہوگئ کہ مزاری والی خیر پور کی انگیفت پرسکھوں کی چوکیوں کے خلاف ترکمازیاں کررہے ہیں۔اس پرانگریزوں نے حا کمانِ سندھ کو متنبہ کیا کہ دیکھوں کے کہ انگیفت کا بیسلسلہ ختم ہوجانا چاہے اور مزاریوں کو ترکمازیوں سے روکنا ضروری ہے تا کہ رنجیت سکھ کو مداخلت کا بہانہ نہ ال سکے۔لیکن مزاریوں کے جملے جاری رہے، یہاں تک کہ اگست ۱۸۳۱ء میں دیوان ساون ال نے روجھان پر قبضہ کر کے وہاں اپنی فوج بھا دی۔(۱)

سيدمحر لطيف فرماتے ہيں:

اگست ۱۸۳۱ء میں دیوان ساون مل ناظم ملتان نے مہارا جا کے پاس عرضداشت بھیجی کہ مزاری بلوچ سکھوں کی جو کیوں پرسلسل حملے کرتے رہتے ستھے، البندا میں نے روجھان پر قبضہ کرلیا ہے۔ آئندہ اکتوبر میں بھر مزاریوں اور سکھوں کے درمیان لڑائی ہوئی۔ مزاری بھاری نقصان اٹھا کر شکست کھا گئے اور فتح مند سکھوں نے ان کے قلعہ کن پر قبضہ کرلیا۔ اس اثناء میں کنور کھڑک سنگھاور کنور نونہال سنگھ بہت ہوی فوجوں کے ساتھ دریائے سندھ کے کنارے پرموجود تھے۔ (۲)

بیرحالات تنے، جب مولوی سیدنصیرالدین اور مزاریوں کے درمیان عہد و پیان ہوا اور جماعت بحابدین کوآغاز جہاد کا موقع ملا۔

⁽۱) كننگهم كىتارىخ سكهان (انگريزى) طبع اول ص: ۴۱٦

⁽٢) سيدلطيف كى تارىخ بنجاب (أعمريزى) مطبوعه ١٨٩١ وص ٣٥٠٠

ميربهرام خال

موہن لال دہلوی نے مارچ ۱۸۳۱ء میں سرکارانگلفیہ کے ملازم کی حیثیت میں ان علاقوں کا دورہ کیا تھا۔ چنانچہ وہ کھتا ہے کہ علاقوں کا دورہ کیا تھا اور اس سفر میں وہ میر بہرام خال سے بھی ملاتھا۔ چنانچہ وہ کھتا ہے کہ اردگرد کے بلوچوں میں دانشمندی اور فہم وفر است کے لحاظ سے بہرام خال کو خاص شہرت حاصل ہے:

وہ دبلا پتلا آ دمی ہے،قد درمیانہ، دیکھنے میں ایسامعلوم ہوتا ہے جیسے کوئی شخص گہرے خیالات میں ڈوبا ہواہو۔اس کی طبیعت میں وہ شرارت اور دنائت بھی نظر نہیں آتی ،جوعام طور پراس ہے منسوب کی جاتی ہے۔اس کے تین بیٹے ہیں اور چار بیٹیاں۔وہ سرداروں کا سالباس نہیں پہنتا،اگر چہ میں نے سناہے کہاس کے یاس بہت روپیہے۔(۱)

موہن لال نے یہ بھی لکھا ہے کہ سکھوں نے میر بہرام کی خوش دامن جنت بی بی کو گروتاں رامن جنت بی بی کو گروتا رکر لیا تھا اور اے ملتان لے آئے تھے، جہاں میں نے بھی اس سے ملاقات کی تھی۔ میر بہرام خال نے اس کے فدیے میں میں اونوں کی چیش کش کی تھی لیکن سکھوں نے مزید بچیس اونوں کا مطالبہ پیش کردیا تھا۔ (۲)

⁽۱) موین ال کاستر نامه (انگریزی)ص: ۳۲۶-۳۲۵

⁽۱) موہن لال کاسفرنامہ(انگریزی)۳۸۹–۳۸۹

دسوال باب:

روجهان اورکن کی لژائیاں

مزاريوں ميں قيام كى تجويز

سندہ پہنچنے کے بعد مولوی سیدنصیرالدین کوتقریاً ہر ذمتہ دار آ دمی نے یہی مشورہ دیا کہ مزاریوں کے علاقے میں قیام کرنا چاہئے۔ چنا نچیہ مولوی صاحب بیر کوٹ پہنچے توسید عبدالرحمٰن (خواہر زادہُ سید صاحب) نے پہلے سے موصوف کیلئے یہی تجویز طے کرر کھی تھی۔سید جعفر علی ساکن خیر پورسے اس بارے میں گفتگو ہوئی تو انھوں نے بھی اس تجویز پر پہندیدگی کا اظہار کیا۔

میراخیال ہے، بیمشورہ اس بناپردیا گیا کہ اس زمانے میں مزاری بلوچ سکھوں کے خلاف کر رہے تھے، لیکن اس معاملے کے مختلف پہلوؤں کا ٹھیک ٹھیک اندازہ نہ کیا گیا۔
مثلاً مزار یوں کا مقام ایسا تھا کہ وہاں زیادہ دیر تک جنگ جاری نہ رکھی جاسکتی تھی۔اگر حاکمانِ خیر پورہ حیدر آباد پرانگریزوں اور سکھوں کا دباؤ پڑتا تو وہ یقینا الگ ہوجاتے بلکہ مزار یوں کو بھی مجاہدین کی اعانت سے روک دیتے۔پھروہ جانباز ان راوح ت اس علاقے کو چھوڑنے پر مجبور ہوجاتے اور جہاد کے تمام انظامات بے سودرہ جاتے، خاص طور پر قابل تو جہام ریہ ہے کہ مزاریوں کی نفری اگر چہ خاصی تھی، لیکن ان میں کوئی تنظیم نہتی۔ یا بخت ان بیٹھانوں کی طرح وہ لوٹ مارمیں خاصی سرگری دکھا سکتے تھے، تا ہم مدے مدید کی یا بیٹے تھے۔ تا ہم مدے مدید کی تربیت کے بغیروہ منظم جنگ کیلئے زیادہ کار آمدنہ ہو سکتے تھے۔

مولوی صاحب کے تاثرات

مولوی صاحب نے عالبًا اس بنا پریہ مشورہ بے تامل قبول کرلیا کہ گردہ پیش اور کوئی موزوں مقام نہ تھا، جہاں سے جہاد کا فوری آغاز ہوسکتا۔ بیام بھی قابل غور ہے کہ پہلے سے ان کے دل پر مزاریوں کے متعلق اچھا اثر پیدا ہو چکا تھا، اگر چہ بیتا ترجی شنید پر مبنی تھا، خود مولوی صاحب کو تجر بے کی بنا پر اس کی تو ثیق کا موقع نہ ملا تھا۔ چنا نچہ وہ ایک کمتو ب میں کھتے ہیں:

مزاریاں بہ شجاعت وشہامت ضرب المثل اندو نیز دراجمیر وجودھ پور بذریعہ اخبارا گریزی معلوم شدہ بود کہ دریں ولاقوم ندکور بربعض محروسہ ومتبوضہ سکھاغارہ کر دندوچار پائے ہابسیار بہ غارت بردند۔ بہطرف ایں قوم رغیتے می یافتم۔(۱)

ترجمہ: مزاری بہادری میں ضرب الشل ہیں، علاوہ بریں اجمیر اور جودھ پور میں اگریزوں کی بہم پہنچائی ہوئی خبروں ہے معلوم ہو چکا تھا کہ اس زمانے میں مزاریوں نے سکھوں کے بعض علاقوں پرتر کناز کی اور بہت ہے مولیثی لوٹ کئے مالہذا اس قوم کی طرف میرے دل میں اک کوند وغبت بیدا ہوگئ تھی۔ پھر فرماتے ہیں:

چوں میرانِ خیر پور زیر دستانِ فرنگیاں وآشتی دارانِ سکھاں اند ،قر ارخود درمحروسہ ایٹاں مقرون صلاح نی بینم ۔اگر چیمتوقع چناں است کہ بفضلہ سجائۂ مسلمانانِ ایں دیار بسیار ہے از بسیار ہمراہ خواہند شد۔ بہ خلاف قومِ مزاری کہ نہ از سکھاں خوفے دارند ، نہ فرنگیاں۔ (۲)

⁽١) اخبار مولوي سيد نعير الدين مخطوط ص: ٢٩

⁽۲) اخبارمولوی سیدنصیرالدین مخطوط ص: ۳۹،۴۳۰

ترجمہ: والیان خیر پور چونکہ فرگیوں کے زیراثر ہیں اور سکھوں سے
انھوں نے صلح کر رکھی ہے، البذاان کے علاقے میں قیام میر بنزدیک خلاف
مصلحت ہے۔ بایں ہمدامید کی جاتی ہے کہ اس ملک کے مسلمان بہت زیادہ
تعداد میں میراساتھ دیں مے۔ والیانِ خیر پور کے فلاف مزاری نہ سکھوں سے
ڈرتے ہیں، نے دکیوں ہے۔

قابل غورنكنه

آخری اقتباس سے داضح ہے کہ مولوی سیدنسیرالدین نے دوو جہ سے خیر پور میں بیٹھنا مناسب نہ سمجھا۔ اول ریاست کا فرگیوں کے زیراثر ہونا، دوم سکھوں سے مقالحانہ تعلقات رکھنا۔ مولوی صاحب موصوف سید صاحب کی میراث کے حامل تھے۔ اگر انگریزوں کے متعلق سیدصاحب کی رائے وہی ہوتی جومولوی محم جعفر تھائیسری کی تحریر کے مطابق بعض حفرات نے ایک صدی تک قبول کئے رکھی تو مولوی صاحب اگریزی اثر کو کیوں موجب قدر حقر اردیتے ؟ حقیقت یہی ہے کہ سیدصاحب اوران کے تمام رفقاء کیوں موجب قدر حقر اردیتے ؟ حقیقت یہی ہے کہ سیدصاحب اوران کے تمام رفقاء وظفاء ہندستان کو ہرائس تسلط سے پاک کرنا چاہتے تھے جومسلمان حکم انوں کی نا ابلی کے باعث یہاں قدم جماچکا تھا۔ سکھ تھوڑے سے جھے پر قابض تھے۔ ملک کا بڑا حصہ اگریزوں کے قبضے میں تھا۔ پھر یہ بزرگ سینا پراگریزی تسلط کو بہ اطمینانِ خاطر قبول اگریزوں کے خلاف با قاعدہ جنگ کی اور کرسکتے تھے؟ آگے چل کرمولوی صاحب نے انگریزوں کے خلاف با قاعدہ جنگ کی اور مناسط کو وضاحت کی آخری منزل پر پہنچادیا۔

مزار بول سےعہدو بیان

قطعی فیلے کے ساتھ ہی مزار ہوں سے با قاعدہ گفت وشنید شروع ہوگئ تا کہ طریق کار کے متعلق سب بچھ طے ہو جائے۔ مزار یوں میں سے مولوی صاحب نے زیادہ تر تین آومیوں کا ذکرکیا ہے: ایک حاتی خال، دوسرائنخ خال اور تیسراکرم خال۔(۱) ایک مقام پر بہرام خال مزاری، کرم خال مزاری، تیمرک خال بگٹی اور بجار خال ڈوکی کا ذکر فرمایا ہے۔(۲) اول الذکر تینوں سردار میرر تم کے پاس خیر پورآئے ہوئے تھے۔مولوی صاحب نے اپنے رفیق خاص ابواحم علی کوان کے پاس بھیج دیا کہ گفتگو ہوجائے۔(۳) ماحب خط میں لکھتے ہیں کہ کرم خال مزاری نے اقرار نامہ لکھ کروے دیا ہے۔ان بلوچوں کی کیفیت ہیں۔

جر که در خانهٔ ایشال برودتا جال در تن ایشال جست، رفاقت اومی کنند درایخ العهدوصادق المیثاق بودن ایشال مشهوراست به چنانچه بعضا توام ایشال درمیان خوددشنی دارندو جنگ درمیان خودمی کنند برگاه که وعده کنند که دوسال صلح جست، برگز درمیان خودغدرنی کنند (۴)

ترجمہ: جو خض ایکے گھر چلا جائے ، جب تک جان بدن میں رہے ،اس کا ساتھ دیتے رہیں اور ان کا وعدے پر قائم رہنا اور بادفا ہونا مشہور ہے۔ چنانچہان کے مختلف گروہوں میں دشمنی کی بنا پرلزائیاں ہوتی رہتی ہیں ،مگر جب وعدہ کرلیتے ہیں کہ شلا دوسال کیلئے صلح ہے تو اسکی خلاف ورزی نہیں کرتے۔

روحجان كامحاصره

ہم بتا چکے ہیں کہ روجھان پر سکھوں نے قبضہ جمالیا تھا۔ مولوی صاحب مزاریوں سے عہد و بیان کے بعد پہلے پہنجی میں تشہرے رہے۔ شعبان ۱۲۵۳ ھے آخری عشرے

⁽١) مثلاً لما حظه واخبار مولوي سيد نعير الدين مخطوط ص: ٢٥٠١٨

⁽٣) ملاحظه بواخبار مولوي سيد نعير الدين مخطوط ص ٨٣:

⁽۳) ملاحظه بواخبار مولوي سيرنعبيرالدين مخطوط ص :۲۹،۲۲

⁽٣) مثلًا طاحظه موا خبارمولوي سينصيرالدين مخطوط ص: ٣٠

(نومبر ۱۸۳۷ء) میں روجھان پر پیش قدمی کی اور ۲۵ رشعبان کو قلعے کا محاصرہ کرلیا۔
مجاہدین کے پاس چارشا ہینیں تھیں، جنہیں مختلف مورچوں میں نصب کرلیا اوراثرائی
شروع ہوگئی۔اال قلعہ نے درواز بندکر لئے اورتوپ لگا کرجاہدین پر گولہ باری کرنے
لگے۔دوروز محاصرہ جاری رہا۔ آخر محصورین نے تک آکر دست بدست لڑائی کی ٹھائی۔
وہ دو چارم تبہ قلعے سے باہر نکلے، جا بجامور بے قائم کے ایکن مجاہدین کے مقابلے کی
تاب ندلا سکے اور قلع میں جا بیٹھے۔دوروز میں تقریباً میں محصورین مارے گئے اور تین
مجاہدین نے شہادت یائی۔

۰۰ ہے۔ - ۰۰ - ۲۰۰۰ مہاسٹگے روجھان کا قلعہ دارتھا اور اس نے اپنی امداد کیلئے تھن کوٹ، ممرکوٹ (۱) اور ڈیرہ غازی خاں کے قلعہ داروں کو بھی باالیا تھا۔

مزار يول كي مراجعت

مزار یوں میں سے ایک سردار سکھوں کے ہمراہ تھا۔ مولوی صاحب لکھتے ہیں:
دوست علی خاں پسر کلان سردار بہرام خال مزاری و جمال خال ولٹکر خال
پسران کرم خال مزاری ہاتمن ہائے خوداز مغیبان آل بلوچ که در حکومت
سکھال می زیست ، کشتند وگلہ ہائے گاداں وغیرہ بہ غارت بردند۔ (۲)
ترجمہ: بہرام خال مزاری کے بڑے بیٹے دوست علی خال نیز کرم خال
کے بیٹوں جمال خال اور لشکر خال نے اس بلوچ سردار کے سواروں اور پیادوں
کوفل کردیا، جوسکھوں کی حکومت میں رہتا تھا اور موریثی وغیرہ کے بہت سے
گلے قبضے میں لے لیے۔

اس بلوچ سر دار نے سوچا کہ اگر روجھان فتح ہو گیا تو بہرام خاں اور کرم خاں کے

⁽۱) واضح رہے کہ بیم کوٹ منلع دیرہ عازی خال میں روجھان اور راجن پور کے درمیان داقع ہے۔

⁽۲) اخبار مولوی سید نصیرالدین مخطوط من ۲۷:

بیٹے جھے زندہ نہ چھوڑیں گے۔ چنانچاس نے اپنے بچاؤ کے لئے بیتد بیرا فتیاری کہ ایک بلوچ کوقر آن دے کران مزاریوں کے پاس بھیجا،جس نے بتایا کہ دیوان ساون مل ناظم ملتان بھاری لشکر لے کر قریب آبہبچا ہے۔قر آن بہطور حلف بھیجا گیا تھا کہ اس خبر کی صحت کے متعلق کوئی دسوسہ باقی نہ رہے۔

جیدا کہ میں عرض کر چکا ہوں ، مزاری منظم جنگ کے اہل نہ تھے۔ بینجر سنتے ہی ان پرخوف طاری ہو گیا۔ وہ لوٹے ہوئے رپوڑ لے کر مولوی صاحب کو اطلاع دیے بغیر، روجھان سے چلے گئے اور چلتے وقت کہہ گئے کہ ہم جانوروں کیلئے چارہ کیکرواپس آ جا کیں گے۔

مجامدین کی پریشانی

مجاہدین کی تعداد بھی زیادہ نہ ہی اوران کے پاس رسد کا بھی کوئی ذخیرہ نہ تھا۔ سب
کے لئے رسد کشمور سے جاتی تھی، جور وجھان سے دومنزل پر واقع تھا۔ اس بنا پر محاصرہ
جاری رکھنے کی کوئی صورت باقی نہ رہی۔ اگر سکھوں کی بوی فوج روجھان بہنے جاتی تو
مجاہدین اس کے مقابلے بیس تھہر نہ سکتے تھے اور دومنزل سے روز اندر سدمنگوانے کا انتظام
بہت مشکل تھا، لہٰذا مولوی صاحب نے فیصلہ کیا کہ فی الحال محاصرہ چھوڑ دیا جائے اور نے
سرے سے فوج مرتب کر کے ووبارہ اقدام کیا جائے۔ چنانچہ آپ نے روجھان کے
مور ہے جھوڑ کرنما نے عشاء کے بعد کشمور کا راستہ لیا۔ (۱)

كن ميسائزاني

روجھان سے تقریباً چارکوس جنوب میں کن واقع ہے، جہاں سکھوں نے ایک فوجی چوکی قائم کررکھی تھی۔روجھان کے سکھوں کو جب معلوم ہوا کہ مجاہدین محاصرہ چھوڑ گئے

⁽۱) بیتمام تعبیات: خبار مولوی سیفعیرالدین تخطوط سے ماخوذ بیں ۔ طاحظہوں صفحات ۲۹۸ تا ۲۸۸ ۔

ہیں تو دہ سب ان کے تعاقب میں نکل پڑے۔ کن کے قریب انھوں نے نقارے بجاکر عجامہ ین پر تملہ کردیا۔ تجام ین نے اللہ اکبر کے نعروں سے ان کا مقابلہ کیا اور ایک بی حلے میں سکھوں کو راو فرار افتیار کرنے پر مجبور کر دیا ہمیکن اندیشہ تھا کہ وہ بلٹ کر حملہ کریں گے، لہذا بجام ین دو پہر تک ای جگہ انظار میں بیٹھے رہے۔ چنا نچ سکھ دوبارہ فمودار ہوئے اور و بارہ جنگ شروع ہوگئی۔ انفاق سے مصن کوٹ کا قلعہ دار کرم سکھ اور اس کا ایک ساتھی مجامد بن کے نرغے میں آگئے۔ محمد شاہ عبد العظیم خال ، مہر خال ، عظیم اللہ خال اور نور محمد نے افعیل موت کے گھا اس اور دونوں کے سرکاٹ کر قلعہ کن کے دروازے پر لیکا دیے۔ سکھ دوبارہ بھاگ نکے۔ ان کے دس سوار مارے گئے اور بہت سے ذخی ہوئے۔ دوسرے روز مجامد بن کن سے روانہ ہوکر کشمور پہنچ گئے۔ (۱)

''باغ وبهار'' كابيان

ان لڑائیوں کے حالات کی کتاب میں درج نہیں ہوئے۔ ہتورام نے '' باغ وہبار''
کے تام سے ضلع ڈیرہ غازی خال کی تاریخ اے۱۸ء میں شائع کی تھی جو آب بہت کمیاب
ہے۔ مرف اس میں روجھان پر سکھوں کے قبضے کا ذکر کرتے ہوئے لکھا گیاہے:
تھوڑا عرصہ بعد مولوی نصیر الدین غازی ہند وستانی علاقہ قد حار سے
پھرتا ہوا ہہ جمیت ایک ہزار سوار و بیادہ وار دعلاقہ سندھ ہوا تی دار مزاری نے
مولوی خدکورکو حائی نئود بنا کر علاقہ روجھان کو تا خت و تا راج کرنا شروع کیا ہمر
کار دار متعینہ قلعہ کروجھان بہ سبب بناہ اُس قلعے کے نی گیا۔ مرد مان مزاری
علاقہ روجھان کو ماریناہ کر کے واپس بیلے گئے۔ (۲)

مولوی صاحب کے متعلق بیر کہنا کہ وہ علاقہ قندھار سے سندھ آئے ،غلواہمی پر مبنی ہے، تاہم یہ بیان فی الجملہ مولوی صاحب کے تحریر کر وہ واقعات کا مصبر ق ہے۔

(٢) "ياخ وبهار" طبع اول ص: ١٥٥

(١) اخبارمولوي سيدنعسرالدين مخلوط من ١٥٠٥٠

گیار ہواں ہاب:

نئى قيام گاه اورنئى تدبيري

كشمو راور بهمك

مجاہدین چندروزکشمور بیس مقیم رہے۔ یہ مقام سکھوں کی عملداری سے بہت قریب تھا اور جر کحظ کشکش کا اندیشہ لگا رہنا تھا۔ انی فرصت نہ ملی تھی کہ مولوی صاحب مخلف مقامات کا دورہ کر کے لوگوں کو جہاد کیلئے تیار کرسکیں۔ اس سے بھی بڑی مصیبت یہ پیش آئی کہ کشمور کا حاکم خفیہ خفیہ ماون ٹل ناظم ملتان سے ساز باز رکھتا تھا، وہ مجاہدین کیلئے رسد کی بم رسانی میں رکاوٹیں پیدا کرنے لگا۔ البندا یہ مناسب معلوم ہوا کہ شمور کے بجائے کسی دوسرے مقام کوم کز بنایا جائے۔ چنانچہ مولوی صاحب مجاہدین کو لے کرایک اور مقام پر حاکم ہوروجھان سے آٹھ تو کوس دور تھا۔ (۱)

سكصول برشبخون

(۱) اخبار مولوی سید نصیرالدین تخطوط ص ۱۰۹ اس مقام کامیح نام معلوم ند دوسکا، نظر بظاہر بید سمک یا نبمک معلوم موتا ہے ،لیکن جمعے ایسے مقام کا پیدند چل سکا۔ آغابد الدین رئیس یاسین گرھی نے بھی چھان بین کرائی۔ سادن مل اس مقام سے تعوژے فاصلے پرفوج لئے بیٹھا تھا،اس نے اپنے آ دمیوں کوشنون کے لئے تیار کرنا چا ہاتو جواب ملا:

تو پیش مای روی، ماہم ہمراوتو می رویم والاً مجال نداریم که برغازیاں شبخون زنیم _(1)

تر جمہ: تو ہمارے آ مے چل بہم تیرے ساتھ جانے کے لئے تیار ہیں، ورنہ میں بیردوصلنہیں کہ غازیوں پرشبخون ماریں۔

ساون مل نے ان مزار یوں کو جنون پرابھار نے کی کوشش کی جوابے ہم قوموں کا ساتھ چھوڑ کر سکھوں سے ملے ہوئے تھے۔ انھوں نے بھی انکار کر دیا۔ نتیجہ یہ لکلا کہ ساون مل وہاں سے ہٹ کر مالمان کی طرف چلا گیا اور روجھان کا نظم ونسق اس نے مزار یوں کے حوالے کر دیا۔ مولوی صاحب مجاہدین کواس کے تعاقب میں بھیجنا چاہتے تھے کیکن خرج کی کمی کے باعث بیر ہروئے کارنہ آسکی۔ (۲)

مالى مشكلات

اگر چەختلف مقامات خصوصاً نونک سے وقتا فو قتار و پیم آر ہا تھا اور مجاہدین کے مختلف جیش بھی اپنے مالی مشکلات کچھ زیادہ جیش بھی اپنے ساتھ رقبیں لاتے رہے تھے، تا ہم اس زمانے میں مالی مشکلات کچھ زیادہ ہی ہوگئی تھیں۔ مولوی صاحب ایک خطیس لکھتے ہیں:

دری ولاعسرت و تکی خرج که مطابق مَسْتهُ مُ الْبَ أَسَاءُ ازامتحانات جهاد بداست بخواه نوکران به حد نهایت رسیده بای که زیورات الل خانه میان ولی محمد صاحب ودیگر مستورات مجاهدین و جناب عصمت قباب بی بی صاحبه کرمه معظمه فروخت به صرف مجاهدین و تخواه نوکران و دا که متاهم کفایت نه کردونو بت فاقه یک دوروز هم رسیده - (۳)

⁽١) اخبارمولوى سيفسيرالدين مخطوط ص:١٠٩ (٢) ابيناص:١١٠ (٣) ابيناص:١٠٩

ترجمہ: ان دونوں مَسْتُهُمُ الْبَالْسَآءُ (اَلْمِسَكُنْ نِے آ پُرُا) كِمطابق فرچ كَ تَكُلْ بِيْنَ آئى۔ يہ بھی جہاد كے امتحا نات میں سے ہے۔ نوكروں كی تخواہ بھی نہیں دی جاسكتی۔میاں ولی محمد صاحب كے اہل خانہ، دوسر سے جاہدوں كی خوا تین اور خودسید صاحب كی بی بی صاحب نے بھی اپنے زیورات زج كر قبیں عہدین كے گزار ہے اور نوكروں كی تخواہوں كیلئے دیدیں، جب بھی ضرورت پوری نہ ہوئی اوراك دودن فاقے كی نوبت بھی آئی۔

ایک اور خط میں فرماتے ہیں:

مخفی و محتبجب مباد که دری ولادینداران این ویاروسلمانان بدایت شعار به قدر طافت خود از مال وغیره تائید واعانت و مجاهدین نموده اندوا کشر سے از برادران مجاهدین مثل میال ولی محمد صاحب و دیگر همراهیان ایشال و میال سید اسلمیل زیورات مستورات خود بافر دخته تجیز ساز و سامان نموده اند. (۱)

ترجمہ: واضح رہے کہ ان دنوں اس علاقے کے دیندار اور ہدایت یا فتہ مسلمان اپنی استطاعت کے مطابق مجاہدین کی مالی الداد کرتے رہے۔ مجاہد بھائیوں میں سے اکثر مثلاً شیخ ولی محد، ان کے ساتھیوں اور سید آسمعیل نے مستورات کے زیور بچ کرسروسامان کا انتظام کیا۔

نواب بہاول خاں کی سراسیمگی

مجاہدین حس مقام پر تھبرے ہوئے تھے، وہ اگر چہ حاکمانِ سندھ کی عملداری ہیں واقع تھا، تا ہم ریاست بہادل پور کی سرحد سے قریب تھا۔ اس وجہ سے نواب بہاول خال کے دل میں خواہ مخواہ سرسیمگی پیدا ہوگئی۔ اس نے سمجھا کیمکن ہے، مجاہدین خود اس کے علاقے میں دست اندزی شروع کر دیں حالا تکہ مجاہدین کواس سے کوئی کاوش نہتھی ۔غرض وہ فوج کے ساتھ مجاہدین کی قیام گاہ سے دو تین کوس پر آبیٹھا اور اپنا وکیل حاکمانِ سندھ

⁽۱) اخبارمولوي سيدنعيرالدين مخلوط ص: ١٣١،١٣٠

کے پاس بھیج و یا کہ مجاہدین کووہاں سے مثالیا جائے۔(۱)

نئ قيام گاه کي تجويز

ما كمان سنده في مولوي صاحب كو پيغام بهيج دياكه:

آل صاحب لشكرخودرا برداشته در ملك مايال برمقام رويا كهنام ضلعيست ياجائ ديگر بهآل لب دريائ اباسين يعنى بطرف شكار پور جرجائ كه بسند خاطرافتد، جيماؤني لشكرخوداندازند-(٢)

ترجمہ: آپ ای الشکر کو ہٹا کر امارے ملک کے ضلع رویا میں آجا کیں ، جو دریائے سندھ کے اس طرف یعنی شکار پور کی جانب ہے یاکسی اور مقام پر کھیر جا کیں جو آپ کو پہند ہو۔

چنانچہ مولوی صاحب نے لشکراس بہتی ہے ہٹالیااور مہر دہی تیم ہو گئے جوشکار پورے ایک منزل پر واقع تھا۔وہ فرماتے ہیں کہ بیر چکہ بوی دلکشا اور راحت افزاہے۔ یہاں پانی، غلے، گھاس اور نکڑی کی کمینیں۔ گھوڑوں اور اونٹوں کیلئے اچھی چرا گاہیں موجود ہیں۔ (۳)

ابل سندهاورحا كمان سنده

مبرومیں قیام کے حالات بتاتے ہوئے مولوی صاحب لکھتے ہیں: امیر سندھ درصورت اقامت مایاں دریں ملک وجنگ کرون با کفار

- (۱) اخبار مولوی سیرنعیرالدین مخلوط ص: ۱۳۱۰۱۳۰
 - (۲) اخبار مولوي سيد نصير الدين مخطوط ص: ١٣٣
- (٣) آغابدرالدین رئیس اعظم گرھی یاسین نے بتایا کہ ظار بورے شالی حصا ورجیکب آباد کے تعوق سے جونی حصے کوز ماندقد بم سے دویاہ کہتے تھے، آگر چدآئ کل سرکاری نام بیٹیس، لیکن موام میں بید خطر آج بھی رویاہ ہی کے نام سے موسوم ہے۔ مولوی صاحب کے خط میں مقام کا نام مہرہ بتایا گیا، میری تحقیق کے مطابق محمح نام مہرو ہے جوشکار پور سے بھی سولد میل مشرق میں دریائے سندھ کے وائیس کنارے پرواقع ہے۔ اس سے تعمل سندھ نام ایک نبر تکلق ہے۔ اس سے تعمل سندھ نام ایک نبر تکلق ہے۔ اس سے تعمل سندھ نام ایک نبر تکلق ہے۔ اس کا پورانام مہرد ماڑی ہے۔

سلّعال وفراجم آوردن مسلمانال به في وجه مانع دمزاهم بيمتند وازسكونت لِفكر اسلام خواه از روئ تجارت وزراعت باشد ياكسب ديگر، كيه ناخوش نيست زيرا كهزيمن سنده صد باكروه ويران وغيرآ بادا فآده است برقدرآ بادى بعل آيد،خوشنودى رئيسان اين نواح است . (1)

ترجمہ: سندھ کے امیر مجاہدین کے قیام ، سکموں سے جنگ اور لڑنے والے مسلمانوں کی فراہمی میں قطعام زاحت نہیں کرتے۔ ہمارے لوگ یہاں رہ کر تجارت کریں یا کھیتی باڑی یا کوئی اور پیشا ختیار کرلیں ، کسی کو برانہیں لگتا۔ کیونکہ سندھ میں سیکڑوں کوئی زمین ویران اور غیر آباد پڑی ہے۔ یہاں جتنی آبادی ہوگی ، رئیسوں کے نزدیک خوشنودی کا باعث مجمی جائے گی۔

بلوچستان سے تعلقات

سی محد معلوم نہیں کہ مولوی صاحب کب تک مہروش مقیم رہے ، لیکن جیسا کہ پہلے بتایا جاچکا ہے، وہ قلات کے وزیر اعظم مختار الدولہ محد حسن سے بھی خط و کتابت شروع کر چکے متع اور ان کی خواہش بتھی کہ موقع طرتو بلوجتان چلے جائیں۔

مختار الدوله محمد حسن طاہر أمولوى صاحب كے خير مقدم كيلئے ہمد تن تيار تھا، جبيها كه اس كے خطوط سے واضح ہوتا ہے۔ مثلاً ايك خط ميں لكھتا ہے:

ایس فدوی خدای واند که خودرا خائبانه یکے از غلامان ودامن گرفتگانِ خاد مان عالی می داند_(۲)

تر جمیہ: خدا گواہ ہے کہ میں اپنے آپ کوآپ کے غلاموں اور متوسلوں میں شار کرتا ہوں۔

دوسرے میں لکمتاہے:

اصلة خودرا ازموّيدات اي امرشريف دين نبوي حتى الامكان ورلغ ند

(٧) اخبار مولوي سينصير الدين مخطوط ص:١٣١٠

.(١) اخبارمولوي سيرتعيرالدين مخطوط من سيما

خوابدداشت_(۱)

ر جمد: میں دین نبوی کے اس اہم تھم بعنی جہادی تا ئید وحمایت میں کوئی کسر اٹھاندر کھوں گا۔

تاہم مجرحت عام تاریخی معلوبات کے مطابق جالاک اور زماندساز آ دمی تھا۔ (۲) وہ جو پچے کہتارہائس پر تو قع اورامید کے مطابق یقیناعمل نہ کیا ہوگا ،لیکن ہمیں مولوی صاحب کے حالات کے متعلق جو کمتوب ذخیرہ مل سکا ،اس میں قیام مہرو کے بعد کی کوئی سرگزشت موجود نہیں۔ نہ اس خلاکو پوراکرنے کا اور کوئی ذریعی میسر آسکا۔

سكھوں اور مزاریوں کی مصالحت

مولوی صاحب نے لکھا ہے کہ دیوان ساون ٹل مجاہدین سے مرعوب ہوکر روجھان مزاریوں کے حوالے کرنے پر آمادہ ہوگیا۔ متند تاریخوں سے معلوم ہوتا ہے کہ دیوان نہ کور مزاریوں کی بورشوں سے بہت پریشان ہوگیا تھا، جو بجاہدین کی اعانت کے باعث خاص خطرناک صورت اختیار کر گئی تھیں۔ لہذا یہی مناسب معلوم ہوا کہ ان سے مصالحت کی کوئی صورت پیدا کر کے تھکش ختم کر دی جائے۔ چنا نچرجیم خال لغاری کے درسیع کے قت وشنید ہوئی۔ مزاریوں کے تمام سابقہ حقوق بحال کردیے گئے ادر انھوں نے یہ منظور کرلیا کہ اپنے آپ کو سکھوں کی رعایا ہمجھیں سے ۔ میر بہرام خال مزاری کو پہلے ملکان بلایا گیا اور دیوان ساون ٹل نے اسے ایک بزار روپ کا خلعت دیا۔ پھراسے رنجیت سکھ خلعت دیا۔ پھراسے رنجیت سکھ خلعت نیز اس کے ساتھ جو بچاس مزاری سوارتھی آئھیں ریشی کپڑے دیے۔ (۳)

⁽۱) اخبارمولوي سيلصيرالدين مخطوط ص: ١٣٨

⁽۲) بنب انگریزوں نے شاہ شجاع کی حمایت میں افغانستان پر فوج کشی کی تھی تو محمد حسن ہی قلات کا وزیراعظم تھا۔ انگریزوں نے ایک رنگ میں خط و کتابت کی محراب خال والی قلات کودوسرے دیگ میں مشورے دیے۔ یہاں تک کہ انگریزوں کے دل میں والی قلات کے متعلق شدید خلط فہال پیداہو کئیں اور وہ بے چارانا حق مارا کہا۔ (۳) ''ماغ و بھار''مین ۵۵۔1

بارجوان باب:

انگریزوں سے جنگ اور قیام ستھانہ

معلومات كافقدان

جنگ روجھان کے بعد مولوی سیرنصیرالدین کی سرگرمیوں کے تعلق مفصل معلومات عاصل کرنے کا کوئی بھی ذریعہ میسر نہ آ سکا۔اب تک جو پچھ کھھا گیا،وہ دو کتابوں ہے ماخوذ تھا:ایک رسالہ جوموصوف کے حالات میں سید ابواحم علی نے مرتب کیا تھا، دوسرا مجموعه ممکا تیب جس کے حوالے'' اخبار مولوی نصیر الدین'' کے نام سے جابجا دیے جا کیکے ہیں۔مکا تیب جنگ روجھان بر پہنچ کرختم ہو گئے۔رسالے کا جونسخدل سکاوہ سراسر ناقص تھا۔اسکے مقدے سے صرف اتنا معلوم ہوتا ہے کہ جنگ روجھان کے بعد مولوی سيدنصيرالدين سنده سے جمرت كركے بلوچستان چلے گئے ۔وہستى ، ڈھاڈر بھل چيتا لى دغيرہ میں رہے اور اس سلسلے میں شادوزئی بلاء ئی، کاکثر،استرانی، بزداروغیرہ قوموں کے درمیان سکونت کا ذکر بھی آتا ہے۔اس کا مطلب میہ ہوا کہ مولوی صاحب سندھ سے پھی گئے۔ پھر ستی ،لورالائی، زوب اورکوئٹہ کے کوہستانی علاقوں میں مقیم رہے۔اس کے بعد حافظ محمر تاصراوران کے رفیقوں کوشہادت کی منزل پیش آئی ، بجابدین کی جماعت بھھ گئی اور مولوی صاحب تنہا ہندوستان کے مختلف شہروں میں پھرتے پھراتے۔ تھانہ پہنچے۔ وہاں جماعت عام ین کفراهی کا انظام کیااور جهاد کی دعوت شروع کردی _و بین وفات پائی _ ان اشاروں سے مولوی صاحب کی سرگرمیوں کا ایک سرسری نقشہ تو سامنے آجاتا

ہے، کیکن تغصیلات اس وقت تک بیان نہیں کی جاسکتیں ، جب تک رسالے کا تممل نسخہ

ہاتھ نہ آجائے۔ سندھ یا بہاول پور میں جہاد کا انظام ممکن نہ تھا، اس لئے کہ ان علاقوں کے حاکم اگریزوں سے وابستہ تھے۔ مزاری بلوج سکھوں سے سلم کر چکے تھے، ان سے بھی اعانت کی کوئی امید نہ ہوسکتی تھی۔ لہذا مولوی صاحب کو بلوچستان کی طرف جانا پڑا۔ اچا تک گردو پیش کے سیاسی حالات میں ایساتغیر پیدا ہوگیا کہ انگریز افغانستان کی آزاد کی سلب کر لینے پرتل گئے۔ امیر دوست محمد خال نے مقابلے کی ٹھائی۔ اس سلسلہ میں مولوی صاحب نے بھی امیر موصوف کی اعانت میں مجاہدا نہ شان سے قدم آگے بڑھایا۔ سب سے پہلے اس تغیر کی مختصری کیفیت من لیجے۔

افغانستان مين خانه جنگي

افغانستان میں تباہ کن خانہ جنگی کا آغاز تیمورشاہ (ابن احمدشاہ ابدالی) کے فرزندوں سے ہوا۔ ان میں سے زمان شاہ زیادہ قابل سجھا جا تا تھا۔ وہی تیمورشاہ کے بعد تخت شین ہوا، کیکن اس نے اپنے بعض خود غرض مثیروں کے اکسانے سے پابندہ خاں بارک زئی کو ناحق قبل کرادیا، جوافغان سرداروں میں سب سے زیادہ مد براور بااثر تھا۔ پابندہ خاں کے بیٹے زمان شاہ کے بھائی شاہ محمود کے حامی بن گئے۔ زمان شاہ نوح کے کر ہندوستان آیا۔ شاہ محمود نے تعانی شاہ بیخ برس کرواپس ہوا، کیکن اس شاہ محمود نے تحت گاہ پر قبضے کے لئے قدم بڑھایا۔ زمان شاہ بیخ برس کرواپس ہوا، کیکن اس کے چنچنے سے پیشتر کابل چس چا تھا۔ شاہ محمود نے بھائی گوگرفار کرکے اس کی آنکھوں میں سلائی پھر وادی۔ پھر زمان شاہ کے مال جائے بھائی شاہ شجاع اور محمود شاہ میں خاصی دیر تک سنگش جاری رہی۔ آخر شاہ شجاع کو بھی افغانستان سے نکل کر رنجیت سکھ کے پاس پناہ کئی بڑی۔ اپنی بڑی۔ کا اور اگریزوں کے پاس بنائی میں انہوں نے لدھیانہ میں تھمرایا اور فیفے مقرر کردیا۔

محمود شاہ کوسلطنت پایندہ خال کے فرزندوں کی بدولت ملی تھی، جن میں ہے فتح خال سب سے بوا تھا۔ وہی وزیر اور مختار کل بن گیا محمود شاہ کے بینے کا مران نے پچھ مدت بعدا سے قل کرادیا۔ اس کے بھائیوں نے محمود شاہ کی سلطنت کا چراغ گل کر کے افغانستان کے مختلف حصول میں اپنے دیے روش کردیے اور محمود شاہ کے قبضے میں صرف برات کا صوبدہ میا۔

پایدہ خال کے بیٹول میں سے دوست محد خال نے کائل میں اپنی حکومت قائم کرئی۔وبی احد شاہ ابدالی کی سلطنت کا دارث بن گیا۔شاہ شجاع نے ایک مرتبہ سلطنت واپس لینے کی کوشش کی مکین تا کام رہا اور ستقل طور پرلدھیانہ میں بیٹھ گیا، جہاں زمان شاہمی آممیا تھا۔

روسي مداخلت كالضطراب

ہندوستان پرقابض ہوجانے کے بعداگر بروں کو باہر سے بحری حملے کے متعلق تو کوئی تشویش نہ رہی تھی ،اس لئے کہ کسی یور پی طافت کے پاس ایسا جنگی بیزا نہ تھا جو انگریزی بیزے کو کشست و کے کربزی فوج ہندوستان پہنچاسکتا،البتہ خشکی کے راستے سے حملے کا خطرہ موجود تھا۔اس بنا پروہ افغانستان ادرابران سے گہرے دوستانہ تعلقات قائم کرنے کے لئے کوشاں رہے۔فاہر ہے کہ خشکی کے راستے جوفوج آتی ،وہ انھیں دو ملکوں میں سے ہوکر آتی۔ یور پی تا جداروں میں سے نپولین نے روس کوساتھ ملا کر ہندوستان پر حملے کا منصوبہ تیار کیا تھا۔ نپولین شکست کھا کر قید ہوگیا تو اگر براطمینان سے بیٹھ مکئے۔ پھر روس نے وسط ایشیا میں پیش قدی شروع کی تو اگر بروں کو از سرنو سراسیمگی پیدا ہوئی۔ روس نے دونوں سے انفانستان اور ایران کے در باروں میں اپنے اپنے مقاصد کے لئے جوڑ ویٹر فرم کردی۔

دوست محمد خال كاموقف

امیردوست محمد خان انگریزوں سے خوش گوار تعلقات قائم رکھنے کیلئے تیار تعااوراس
امرکا بھی ذمہ لیتا تھا کہ وہ روس یا کسی دوسری اجنبی طاقت کی فوجوں کو افغانستان جس سے
ہندوستان کی جانب پیش قدمی کرنے کی اجازت نہ دیگا ،کیکن کہتا تھا کہ پشاور افغانستان
کی ملکیت ہے، اسے سکھوں سے واپس دلاؤ یا واپس دلانے میں پوری امداد کرو۔
انگریزوں کی پوزیشن صددرجہ مفتحکہ خیزتھی۔وہ ایک طرف بیچا ہے تھے کہ امیر دوست محمد
خاس روس کے خلاف ان کا دفاعی مورچہ بنارہے، دوسری طرف اس کے جائز حقوق کی
بازیانت کے لئے کوئی مدد دیے پر آمادہ نہ تھے۔گویا سکھوں سے بھی دوستانہ تعلقات
بحال رکھنا چا ہے تھے۔

محض یہی نہیں بلکہ امیر دوست محمد خال سے بید مطالبہ بھی کررہے ہتے کہ محمود شاہ کے بیٹے کا مران کی حکومت ہرات میں بھی کوئی مداخلت نہ کی جائے۔ اس کے برعکس روس امیر دوست محمد خال کو بیٹا ورکی بازیافت کے لئے ہر ممکن امداد دینے پرآ ماوہ تھا، للبند المیر اگریزوں نے جوشِ غیظ میں بید فیصلہ کر لیا کہ اگریزوں نے جوشِ غیظ میں بید فیصلہ کر لیا کہ امیر دوست محمد خال کو تخت سے اتار کرشاہ شجاع کو افغانستان کا بادشاہ بنایا جائے ، جوشخت کی خاطر ہر شرط قبول کر لینے پر راضی تھا، خواہ وہ اس کے لئے یا افغانستان کے لئے کتنی ہی مصیبتوں اور پریشانیوں کا باعث ہوتی۔

سهگاندمعابده

چنانچدانگریزوں نے ایک معاہدہ کیا، جسے اس وجہ سے 'سرگاند معاہدہ'' کہا جاتا ہے کہ اس میں تین فریق شریک تھے: اول انگریز، دوم شاہ شجاع، سوم سکھے۔شاہ شجاع نے اس معاہدے کے مطابق افر ارکرلیا کہ اسے پشاور یاسکھوں کے دوسرے مقبوضہ افغانی علاقوں سے کوئی سر دکار نہ ہوگا، نیز جہال سکھوں اور افغانوں کی فوجیس کیجا ہوں گی، وہاں افغان گائیں ذرج کرنے سے محترز رہیں گے۔ دوسری طرف آگریزوں سے اقر ارکیا کہ وہ افغانستان پر قبضہ دلانے کے سلسلے میں شکار پور پر تمام حقوق سے دست بردار ہوتا ہے۔ اس معاہرے کے بعد آگریزوں نے شاہ شجاع کی جمایت کیلئے دوفو جیس تیار کیس ۔ ایک سندھ بلوچ تنان کے داستے قد حارکی طرف، دوسری درہ خیبر کے راستے جلال آباد کی طرف برحی۔

مولوي صاحب كي اولوالعزمي

غرض شاہ شجاع کی عاقبت نا اندیثی یا خود غرضی کے باعث افغانستان کی آزادی سکھوں اور آگریزوں کی وجہ ہے خطرے میں پڑگئی تو مولوی سیدنصیرالدین بے تکلف اس آزادی کے تحفظ کی خاطر سرگرم عمل ہو گئے۔ بچھ معلوم نہیں کہ وہ کہاں کہاں لڑے۔ ہم صرف میہ جانتے ہیں کہ جہال جہاں انھیں موقع ملاء اپنے محدود وسائل کے باوجود انگریزوں کا مقابلہ کرتے رہے۔

غزنی کیلژائی

درہ بولان کے راستے پیش قدمی کرنے والی فوج بہت بوی تھی اور اس کے ساتھ برتم کا سامان جنگ موجود تھا۔ اس فوج نے قد هار پہنچ کرشاہ شجاع کی تخت نشینی کا جشن منایا۔ پھروہ کا بل کی جانب حرکت میں آئی تو غزنی میں اسے شدید مقابلے سے سابقہ پڑا۔ جومعلومات ہمارے سامنے ہیں، ان میں بتایا گیا ہے کہ مولوی صاحب اور ان کے مجاہدین غزنی میں برق جانفشانی سے لڑے۔ اگر یزوں کے لئے آگے بوصنے کا کوئی موقع مجاہدین غزنی میں برق جانفشانی سے لڑے۔ اگر یزوں کے لئے آگے بوصنے کا کوئی موقع نہا۔ اس اثنا وہیں امیر دوست محمد خال کا ایک عزیز انگریزوں سے ل گیا اور اس نے قلعہ

غونی کے تمام اندرونی حالات انھیں بتا دیے۔(۱) انگریزوں نے رات کی تاریکی میں ایک درواز ہے پر بارود کے تعلیلے رکھے۔ انھیں آگ لگا دی تو خوفناک دھا کا ہوا۔ در داز ہ از گیا اور انگریزوں کی فوج قلعے میں داخل ہوگئی۔ مولوی سیدنصیر الدین کے اکثر ساتھیوں نے دست بدست اڑ ائی میں شہادت یائی۔ بیا ۲ رجولائی ۱۸۳۹ء کا واقعہ ہے۔

وليم هنشر كابيان

ڈاکٹر ولیم ہنٹر نے مجاہدین اور مرکز ستھانہ کے حالات بیان کرتے ہوئے بہت می غلط بیانیاں دانستہ یا نادانستہ کی ہیں، تا ہم موصوف کا بیدوعوی بطور خاص مستحق تو جہے کہ مجاہدوں میں اونچے درجے کے آ دمی بھی شامل تھے، جواس لئے ترک وطن کر کے ستھانہ بینج جاتے تھے کہ عیسائی حکومت کے ماتحت امن وآ سائش ہے زندگی گزار نا ان کے نزد یک ند ہانا درست تھا۔وہ سکھوں کے دیہات پر بھی چھایے مارتے رہتے تھاور الكريزون برضرب لكانے كاكوئي موقع ہاتھ آتا تواس كا بھي بندول سے خير مقدم كرتے: انھوں نے جنگ کا بل میں ہمارے دشمنوں کی امداد کے لئے بری فوج مجیجی اور اس میں سے ایک ہزارنے ہمارے خلاف استقامت سے جنگ کرتے ہوئے جانیں قربان کیں۔صرف سخیر غزنی کے دوران میں تین سو عجابدوں نے احکریزی علینوں سے شہادت کی سعادت حاصل کی۔(۲) ہنٹر نے بیتو بتا دیا کہ تین سومجام غزنی میں شہید ہوئے تھے الیکن یہ نہ بتایا کہ ایک ہزارنے کہاں شہادت بائی۔ بدحقیقت بھی واضح کردینی جائے کہ برمجاہدین حقانہ سے نہ مجئے تھے بلکہ وہی تھے جومولوی سیدنصیر الدین کے ساتھ کی سال سندھ ،روجھان اور

⁽۱) اس کا نام عبد الرشید خال بتایا گیا ہے، جو انگریزوں کے ملازم موہن لال تشیری کا دوست تھا۔ (ملاحظہ ہو''رجالی وردئیداد ہائے تاریخی'' بیزبان فاری ۔ شاکع کروہ المجمن تاریخ انفانستان ص: ۹۰)

⁽r) "بندوستانی مسلمان" (انگریزی) مرتبه ولیم بنظر مع سوم من اسما

بلوچستان م*یں گز ار <u>بھ</u>ے تھے*۔

او کنلے کا بیان

او کنلے نے اپنے مضمون میں لکھا ہے کہ مولوی نصیرالدین نے پہاڑی علاقوں میں جہاد کا ارادہ ترک کر دیااور شکار پور میں بیٹھے رہے۔ رفتہ رفتہ ان کے آ دمیوں میں اضافہ ہوا۔ ہندوستان سے رو بیراور مجاہدین آنے لگے۔ جب لارڈ آک لینڈ نے شاہ شجاع کو افغانستان پر مسلط کرنا چاہا تو مولوی نصیر الدین نے دوست محمد خال کی امداد کا فیصلہ کرلیا۔ بعض اصحاب اس پر تیار نہ تھے اور وہ لوٹ آئے۔ خود مولوی صاحب ایک ہزار آدی کے کرکابل کی طرف بڑھے۔ ڈھاڈر سے انھوں نے تین سومجاہدوں کی جمعیت وست محمد خال کی امداد کے لئے بھیج دی۔ یہاوگ غرنی کی حفاظمت پر تعیین ہوئے تھا ور وہ بیں جال بحق ہوئے۔ (۱)

یہ بیان اگر چے غلطیوں سے پاک نہیں ، تاہم اس سے مولوی تصیر الدین کے متعلق بیان کردہ حالات کی مزید تقدیق ہوتی ہے۔

مولوي صاحب ستطانه مين

بیان کیا جاتا ہے کہ مولوی صاحب اور ان کے جو چند ساتھی بیچے اور وہ ہولناک مصیبتوں کے طوفان سے گذرتے ہوئے ستھانہ پہنچ گئے، جہاں مولوی نصیر الدین منگلوری کے زمانے سے مجاہدین نے مرکز قائم کر رکھا تھا۔ وہاں پہنچتے ہی مجاہدین نے انھیں اپنا امیر بنالیا۔ سقانہ پہنچنے کی صبح تاریخ معلوم نہیں۔ قیاس ہے کہ یہ واقعہ ۱۸۳۹ء کے اواخریا ۱۸۴۰ء کے اوائل میں رونما ہوا ہوگا۔

(۱) او کیلے کا مقالدا محکریزی میں بے عنوان ' و ہائی ہندوستان میں ' مندرجہ کلکتہ ربو یو (۷-۱۸۷۰ء) نیز جرش ایشیا تک سوسائٹی مبعمی جلد جہار دہم ص:۳۵۲

انگریزی اقدام کا انجام

اگریزوں نے غربی کی تسخیر کے بعد کابل پہنچ کرشاہ شجاع کو حکمران بنا دیا اور شرفائے افغانستان پر بوی زیاد تیاں کیں۔لوگ شاہ شجاع سے پہلے بھی خوش نہ تھے۔ اگریزوں کی دراز دستیوں نے پوری قوم میں غیظ وغضب کی آگ لگا دی۔شاہ شجاع، اگریزی سفیرادراگریزی دکیل مارے گئے۔اگریزی فوج جلال آباد کے راستے واپس ہوئی،لیکن قدم قدم پر افغانوں کی گولیوں کا ہدف بنتی رہی۔پوری فوج میں سے صرف ایک شخص ڈاکٹر ڈرائیڈن زندہ سلامت جلال آباد پہنچا اور بیرونی دنیا اس اَلم نامے کی تفصیلات سے آگاہ ہوئی۔اگریزں نے دوبارہ زبردست فوجیس تیار کیس،گرانجام کار افغانستاں کوامیر دوست محمد خال کے حوالے کیے بغیرکوئی چارہ کا رنظر نہ آیا۔

ایک اور روایت

ہزارہ گزیٹیڈ،اردومیں بتایا گیا ہے کہ مولوی سید نصیرالدین دہلوی بہت نرم طبع ہتے،
اسلئے عوام میں بہت ہردل عزیز ہوگئے۔انھوں نے پابندہ خال تنولی والی اسب کولکھ کہ مارا ساتھ دواور ہرمکن مدد کرو۔ پابندہ خال نے انھیں اسب بلالیاو ہاں کی روزمہمان رہے۔
مشہور ہے کہ پابندہ خال نے انھیں زہر دلواویا تھا۔اس میں شبہیں کہ وہ اسب ہی میں
بیار ہوئے اور بیاری ہی کی حالت میں ستھانہ آئے جہاں چندروز بعدوفات یائی۔(۱)

⁽۱) ہزارہ گریٹیڈم : ۱۹۳۹ کے لیکن یہ بالکل غلط ہے کہ پائیدہ خاس نے مولوی صاحب کوز ہردلوادیا ہے بدین کے مختلف طلقوں کی طرف سے جتنی روایتیں مجھے لیکس ان بیل سے کسی بیل اس کے متعلق اشارہ تک موجود نیس سیمکن ہے کہ مولوی صاحب میں بیل ہوئیں۔ بیمکن ہے کہ مولوی صاحب میں بیل ہو۔

تير موال باب:

مولوی نصیرالدین کی شخصیت

وفات

مولوی نصیرالدین منظوری کی شہادت کے بعد صرف ستر استی مجاہدین باقی رہ گئے سے ، جن کا انتظام میراولا دعلی ظلیم آبادی نے سنجال رکھا تھا۔ مولوی سیدنصیرالدین ستھانہ پہنچے تو وہ امیر بن گئے ، لیکن ابھی وہاں کوئی کار نامہ انجام نہ دینے پائے سنے کہ خدا کی طرف سے بلاوا آگیا۔ مجے تاریخ معلوم نہیں لیکن یہ بینی ہے کہ ان کی وفات ، ۱۸۴ء میں موئی۔ وہ ستھانہ میں وفن ہوئے (۱) اور ان کی قبر ۱۸۴۱ء کی طغیانی وریائے سندھ میں بہہ موئی۔ وہ ستھانہ میں وفن ہوئے (۱) اور ان کی قبر ۱۸۴۱ء کی طغیانی وریائے سندھ میں بہہ گئی۔ (۲)

آخرى وقت كي حالت

نواب وزیرالدولد نے لکھا ہے کہ جب ان پرنزع کی حالت طاری ہوئی تو خداکی قدرت کا عجیب نقشہ نظر آیا۔اس حالت میں انسان کے ہوش وحواس مم ہوجاتے ہیں ہیکن: حضرت مولانا ۔۔۔۔۔ یکا کیساز بستر وحالت اضطحاع برخاستہ قائم نشستند

(۱) ہزارہ گزینے اردو میں خداجائے کس سند کی بنابر لکھا گیا ہے کہ مولوی تصیرالدین منگلوری کے بعد مولوی محر حسن امیر ہے۔ وہ ایک سال بعد بیت المال کاروپید لے کرا ہے بھائی حافظ جی کے ساتھ بھیرہ خوشاب کی طرف چلے مجے رپھر دوسرے مولوی تصیرالدین پہلے دوآ دمیوں کے ساتھ - تھانہ آگئے۔ ایک سال بعد شکار پور بخز ٹی ، کا بل وغیرہ کے راستے - متعانہ پینچے اور تقریباً یانسوآ دی جمع کر لیے۔ (ص ۲۳۴۰)

(٢) وزير الدول كوصايا جلداول بص:٥٥

و باوجود کمال ضعف و ناطاقتی که لاحق جسم مدایت مجسم بود چیثم فیض حشم کشاده وانگشت و سعاوت سرنوشت ستا به بر داشته به با نگب بلندوآ واز ار جمند به بیان قصیح والفاظ صحح کلمات ایمانی واهانی ولمفوظات واسلامی سر بسرخوش کامی در زبان عربی ومحاوری بندی ادافرمودند _ (۱)

ترجمہ: حضرت مولانا لیٹے لیٹے یکا یک اٹھے اور بداطمینان بیٹھ گئے۔
اگر چدان کاجسم انتہائی ضعف و بے طاقتی کاشکار ہو چکا تھا، کیکن آنکھیں کھولیں،
انگشت شہادت اٹھائی اور بلند آواز سے عربی وہندی میں ایمان واسلام کے
متعلق نہایت عمد وہاتیں بہت اچھے انداز میں بیان فرماتے رہے۔

ممتازترين كارنامه

مولوی سید نصیرالدین کا ممتازترین کارنامہ یہ ہے کہ جب سیدصا حب اوران کے دوسرے بلند منزلت رفقاء کی شہادت کے بعد جہاد کی گرم جوشیوں پرافسرد گی طاری ہوگئ ۔ تو مولوی صاحب موصوف نے عزم وہمت سے کام لے کراس کاروبارکوتازہ رونق بخشی۔ ہندوستان کے طول وعرض میں مسلمان بے حسی کا شکار ہو چکے تھے۔ اجنبیوں نے ملک کی حکومت ان سے چھین کی تھی اورنظم ونسق کواپی مصلحوں کے مطابق چلانے گئے تھے۔ گویا عام اسلامی فضا کی جگہ سراسر غیر اسلامی فضا بیدا ہورہی تھی۔ سیدصا حب اسٹھے ہسلمانوں کا جمود تو ڑااوران کے سامنے یہ نصب العین پیش کیا کہ جانفشانی وجا نبازی سے کام لے کا جمود تو ڑااوران کے سامنے یہ نصب العین پیش کیا کہ جانفشانی وجا نبازی سے کام لے کیا جاسکتی ہے اور اسلامیت کا وقار از سرنو تا تم کرکھوئی ہوئی عزش و قروش ختم ہورہا کیا جاسکتی ہے اور اسلامیت کا جوش و قروش ختم ہورہا کیا جاسکتی ہے۔ تو جوانمر دانہ میدان میں آگے اورا بی ذات کو بے تامل قربانی کیلئے چیش کردیا۔ نواب و زیرالدولہ بالکل بجافر ہاتے ہیں کہ سیدصا حب کی شہادت کے بعد خلق خدا کی ہدایت،

⁽¹⁾ وزیرالدول کے وصایا جلداول اس اس

شریعت کے احیاءاور جہاد کا کاروبار بے آب وتاب ہور ہاتھا، خدا کی رحمت ہے مولوی سیدنصیرالدین کی بدولت اس کاروباریس بے انداز ہرونق اور جلاپیدا ہوگئی۔(۱)

نمايال ترين خصوصيت

ہم پہلے بتا چکے ہیں کہ مولوئی سید نصیرالدین کثیر الدعاء تصاور ان کی وعاء میں ہوئی تا شیرتھی۔ نواب وزیرالدولہ لکھتے ہیں کہ جب وہ کسی مجمع میں دعاء کرتے تھے تو سب پر خاص ایمانی حالت طاری ہو جاتی تھی۔ایک مرتبہ سندھ میں انھوں نے مجمع کثیر کے درمیان دعاء کی جسکی تا ثیر سے تمام لوگ زار زار رونے گے،اکٹر پر بیہوٹی کی حالت طاری ہوگئی۔ بعض لوگ مجذوبیت کے عالم میں کپڑے بھاڑ کرصحرا کی طرف چلے گئے۔ (۲) ہوگئی۔ بعض لوگ مجذوبیت کے عالم میں کپڑے بھاڑ کرصحرا کی طرف چلے گئے۔ (۲) ای طرح مولانا کی دعوت میں بری تا ثیرتھی۔ بیان کی حق پرتی بحشی کتاب وسنت اور اخلاص کا روثن ثبوت تھا۔

اہل وعیال

مولوی صاحب کی شادی شاہ آخق کی صاحبز ادی سے ہوئی تھی اور ان کے دوفر زند ہتھ۔ایک کا نام عبد اللہ تھا اور دوسرے کا عبد انکیم ۔مولوی صاحب جہاد کے لئے نکلے تھے تو ان کے دونوں فرزند تعلیم پارہے تھے۔ چنانچ بعض مکا تیب میں ان کی تعلیم کے لئے تاکید فرمائی ہے۔

ايك مكتوب مين إلى المبيركولكصة بين:

امیداز ما لک خود توی دارند که او جل جلالهٔ ماو ثنارادر دارد نیا به مراد ملاتی کناندودر جرا مرتوکل برخدا باید کرد، داستقامت برنما زمفروضه و تلاوت قرآن

⁽۱) وزير الدول كوصايا جلداول بص:٥٠٠

⁽۲) وزیرالدوله کے وصابا جلداول بص۳۷-۲۷ م

بايدنمود، وغفلت درزكوة نه بايد كرد، ودرتعليم عبدالله وعبدا ككيم بايد كوشيد، ودل را با مرد وفرزندان بايد چهانيد ودرونت نشست و برخاست وقيام وتعودنام خدابايد گرفت _(1)

ترجمہ: خدائے توی امیدر کھے کہ وہ ہم اور آپ کواس دنیا میں حسب مراد ملائے گا۔ ہر کام میں خدا پر بھر وسار کھنا چاہئے۔ فرض نماز اور تلاوت قرآن پر استقامت ضروری ہے۔ ادائے زکو ہیں غفلت ند ہو۔ عبداللہ اور عبدا کھیم کی تعلیم کے لئے کوشش سیجے۔ دل دونوں بیٹوں میں لگائے۔ اٹھتے بیٹھتے خدا کا نام لیتے دیے۔

سیدصاحب کی طرح مولوی نصیرالدین کوبھی اس دنیا ہیں ہوی اور بال بچوں سے
ملاقات کی نوبت نہ آئی۔اغلب ہے کہ مولوی صاحب کی اہلیہ اور بیٹے شاہ اسحاق کے
ساتھ جرت کر کے مکہ معظمہ چلے گئے ہوں۔مولا ناسید عبدالحی رائے ہر بلوی نے لکھا ہے
کہ مولا ناسید نصیرالدین کے اولا دنہ چلی ، البتہ ان کے بھائی سید ناصر الدین کے ایک
فرزند سید معز الدین شخے اور سید معز الدین کے فرزند سید ظہیرالدین احمہ جن سے مولا نا
سید عبدالحی نے ۱۸۹۵ء میں ملاقات کی تھی۔ انھیں سید ظہیرالدین احمہ نے ولی اللّٰی سید عبدالحی کے بیائی سید عبدالحی کے اللے اللّٰہ کی انہوں کے بیائی سید عبدالحی کے بھی اللّٰ تھیں، بلکہ اس غرض سے ایک مطبع قائم کرایا تھا۔ (۲)

ايك نظم

مولوی صاحب شعر بھی کہتے تھے، لیکن ان کی شعر گوئی بھی انھیں دینی مقاصد کے وقف تھی ، جن میں ان کی زندگی کا ایک ایک لحد صرف ہوا۔ یہاں تک کہ جان بھی انھیں مقاصد کیلئے دے دی۔ ان کی ایک نظم مولوی ابواحد علی نے اپنے رسالے میں نقل کی ہے،

⁽۱) اخبارمولوی سیدنصیرالدین مخطوط ص: ۱۵

⁽۲) "ارمغان احباب" بواسط معارف بابت فروري: ۱۹۳۹ء

جس کے شعرشاعری کے معیار پر بورے اترتے ہوں یانہ الیکن ان کامضمون بے شبہ ستحقِ تحسین ہے۔ فرماتے ہیں:

راہ نجی کی مجھ پہ تو کر جلوہ گر مانع نہ ہو راہ کا کوئی بھی جن وبشر شوق ہوتو حید کا ،عمر ہواس میں بسر اوج ہو اسلام کا ،شرع ہو بازیب وفر اور انھیں ایسا بنا ، چیسے ہوں شیر وشکر ہے وہی عالم کے بچے مشرک وکا فر بتر لڑنے کوئی ہے ہے ساف باندھ لیاس نے کم رکھے دعاؤں میں آپ اس کو بھی مذنظر

اے مرے پروردگارکردے کرم کی نظر
پہنچوں ای راہ سے خدمت عالی میں میں
کرد ہے مسلمان سے شرک کی باتوں کودور
برعت و کفرونفاق ان کوتو جلدی سے کھو
پھوٹ مسلمانوں سے اسے مرے دب دورکر
جو کہ کرے غیر کو ساجھی خدا کا ذرا
جو رکھے ولیوں ہے بس دشنی و کین و کد
ہرکہ دمہ سے بیعرض کرتا ہے عاج نفسیر

سيدعبدالرحيم كى امارت

بتایاجا تا ہے کہ مولوی سید نصیرالدین کی وفات کے بعد حاجی سیدعبدالرجیم جماعت مجاہدین کے امیر ہے ۔ پھر دریائے سندھ میں خوفناک طغیانی آئی، جس میں تھانہ برباد ہوگیا۔ اس بستی میں زندوں کے مکانات یا مردوں کی قبروں کا کوئی نشان باقی نہ رہا اور مجاہدین کی جماعت بھر گئی۔ انسوں کہ سیدعبدالرجیم کے متعلق مفصل معلومات حاصل نہ ہوگیں۔ مولانا مشاق احمد صاحب انبیٹھوی نے ایک سیدعبدالرجیم کا ذکر کرتے ہوئے کہ کھا ہے کہ ان کا اصلی وطن افغانستان تھا۔ وہ پہلے شاہ رحم علی صاحب ساکن پنجلا سے شلع انبالہ سے سلملہ قادر بیمیں بیعت ہوئے، پھرامر وہہ میں شاہ عبدالباری سے نسبت چشتیہ حاصل کی ، آخر میں سیداحمہ شہید ہر بلوی سے بیعت کی۔ انھیں کے ساتھ جہاد کے لئے حاصل کی ، آخر میں سیداحمہ شہید ہر بلوی سے بیعت کی۔ انھیں کے ساتھ جہاد کے لئے حاصل کی ، آخر میں سیداحمہ شہید ہر بلوی سے بیعت کی۔ انھیں کے ساتھ جہاد کے لئے

چلے مئے اور شہادت پائی۔(١)

ممکن ہے یہی سیدعبدالرحیم ولایق ہوں، جومولوی سیدنصیرالدین کی وفات ہے عابدین کے ماتھ کھنیں کہسکتا۔

یوں جون ۱۸۴۱ء میں جماعت مجاہدین کا دوسرا دورختم ہوگیا۔اس کے بعد مولاتا ولایت علی عظیم آبادی اور ان کے بھائی مولانا عنایت علی نے پھرے مرکز مجاہدین کا انتظام کیا۔ان کے حالات کتاب کے تیسرے حصے میں بیان ہوں گے۔

ايك غيرمعلوم شخصيت

اسلیلے میں ایک غیر معلوم خص کا ذکر ضروری ہے جو میدان جنگ سے ۱۳۵۸ھ (۱۸۳۲ء) میں واپس آگیا۔ موکن خال مرحوم کے فاری دیوان میں ایک قطعه اس کے متعلق موجود ہے اور اس کا عنوان ہے '' تاریخ باز آمدن از جہاد''۔ موکن نے اس کا نام زین خال بتایا ہے ۔ وہ کون تھا؟ کہاں سے واپس آیا؟ دہلی پہنچ کر کیا کچھ کہتا رہا؟ میں انتہائی کوشش کے باوجود کچھ معلوم نہ کرسکا۔ قطعہ بطوریا دگار ذیل میں ورج ہے:

مالش از سک خراب تر باشد

گربه صورت بهمه بشر باشد

تا ز صدقش به دل آثر باشد
آخرین فتنه این قدر باشد

باشد این عیبا بنر باشد

کیین او مطنی ستر باشد

رازدانے که یرده در باشد

مولوی زین خال که باہمہ علم از شیاطین بود به نجب نہال رفت وچند ہے بہ فوج دیں جاکرد آخر کار فتنہ ہا انگینت تہمیج بست ہر امیر کریم رشمن دوستان حق گردید بوست برکندہ گفت طبعے کہ ہست

⁽ا) "انوارالعاشقين" من ٨٢- بعض لوگ انھي شهيد بالاكوت بتاتے ہيں،مير يزو يك سيح نيس -

چه کند برکه بدگهر باشد که ز دجال بم بتر باشد گر ز الل دات خبر باشد چو بیاید ہنوز خر باشد به حمد آب آدمیت ریخت خرِ عیسش خواندم و خجلم کشف ِ سعدی یقین توانی کرد سالِ تاریخ باز گشتن او

مولوى محمد قاسم

مولوی محمد قاسم پانی پی کے متعلق بھی چند سطریں لکھ دینا ضروری ہے، جن کے بارے میں عام طور پر کہا جاتا ہے کہ انھوں نے کا غانی پہاڑوں کے ایک غار میں سید صاحب اور ان کے دور فیقوں کے ڈھانچ بنا کر کھڑے کر دیے تھے اور لوگوں کو ان ڈھانچوں کی زیارت کرا کے بقین دلایا جاتا تھا کہ سیدصا حب زندہ ہیں اور وہ وقت موعود پر ظاہر ہوں گے۔ انگریزی بیانات میں بتایا گیا ہے کہ مولوی زین العابدین نے اس فریب کا پروہ چاک کیا۔ ان کے ایک خط میں مولوی محمد قاسم کو ' قاسم کد آب' قرار دیا گیا ہے۔ مقد مدانبالہ کی شہادتوں میں بھی اس امر کا ذکر آیا تھا۔

اوکنلے کے ایک بیان سے مترشح ہوتا ہے کہ مولوی محمد قاسم عالبًا بیخ ولی محمد پھلتی اور سید صاحب کی اہلیہ کے ہمراہ سندھ پہنچ گئے تھے۔ پھر مولوی سید نصیرالدین دہلوی کے ہمراہ جہاد کرتے ہوئے شہید ہوگئے تھے۔

'' ہزارہ گزییر''(اردو) میں بتایا گیا کہ مولوی صاحب جنگ ؤب کے بعد چوتن (۵۳) آدمی لے کرڑال قوم میں حسن علی خال کے پاس آگئے تھے۔ایب صاحب نے

⁽۱) برتطعدان اشعاریس سے ہے جو براورم امتیاز علی خال صاحب ترخی ناظم کاب خاندرام پورنے موس کے فاری د بوان سے تقل کرا کے ارسال فرمائے ہیں۔

تھم دیا کہ وہ موضع عالم میں رہیں۔ چنانچہوہ وہیں فوت ہوئے۔(۱) ایک اور بیان سے معلوم ہوتا ہے کہ ۱۸۵۳ء میں انگریزوں نے انھیں گرفتار کیا اور سیالکوٹ میں قید کردیا۔ وہیں انھوں نے وفات یائی۔

میری تحقیق کے مطابق مولوی محمد قاسم بزے ہی مخلص مجاہد تھے۔اغلب ہے وہ بھی مولا ناولایت علی ،مولا ناعنایت علی اور بعض دوسر ہے اصحاب خصوصاً اصحابِ صادق پور کی طرح سیدصاحب کی حیات ورجعت کے معتقد ہوں ،کیکن میں سیلیم کرنامشکل ہے کہ انھوں نے ایسے اس عقید ہے کو تقویت پہنچانے کی غرض ہے کوئی جال چلی ہوگ۔

⁽¹⁾ كلكتەربويو بايت جوازلى ١٨٤٠ بس:١٨٩

(سرگزشت مجامدین)

چودهوال باب:

فرائضى تحريك اورتتيوميان

اندرون ملک کی کیفیت

اب تک ہاری توجہ جماعت مجاہدین کے اس حصے کی سر گرمیوں پرجمی رہی جو ہندوستان کی شالی دمغربی سرحدوں میںمصروف کا رتھا۔ ملک کے اندر جواصلاحی کام ہوتا ر ہا،اس کی کیفیت بھی اختصار آبیان کروینا ضروری ہے تا کہ تحریک یا اس سے متعلقہ یا مشابها حوال کا مرضروری پہلوسامنے آ جائے۔

سید صاحب کے خلفاءخصوصاً مولا نا سید محمرعلی رام پوری،مولا نا ولایت علی عظیم آبادی اور مولانا عنایت علی بڑے اہتمام سے دعوت وتبلیغ میں مشغول تھے۔وہ پہلے سیدصا حب کیلئے رویے اورمجاہدین کا انظام کرتے رہے۔ بعداز آں مولوی سیدنصیرالدین کو ہر ممکن ایداد دیتے رہے۔ ملک میں اصلاحِ عقائد داعمال کا کام بھی بوی خوش اسلو بی ہے انجام پار ہاتھا۔ اس باب میں جو کچھ ہمیں معلوم ہو۔ کا، وہ تو آ گے چل کر پیش کریں گے، یہاں دوتح یکوں کا سرسری ذکر ضروری ہے۔ان میں سے فرائھی تحریک کوسید صاحب کی تحریک سے یقینا کوئی علاقہ نہ تھا،لیکن اس کی بنیاد واساس بھی نہ ہی تھی اوروہ کمی مدت تک ایک محد و د دائر ہے میں بہت مؤثر رہی ،لبذا اے نظر انداز نہیں کیا جا سکتا۔ دوسری تحریک میرغارعلی عرف تیتومیاں کی تھی جوسیدصاحب کامرید اورخلیفہ تھا۔

مولوي شريعت الله

فی انھی تح کید کے بانی مولوی شریعت اللہ تھے، جوشلع فرید پور (بنگال) کے ایک

گاؤں بہادر پر میں پیدا ہوئے۔اٹھارہ برس کی عمر میں جج کیلئے چلے گئے۔ کم وہیش ہیں برس مکہ معظمہ میں دینی تعلیم حاصل کرتے رہے۔۱۸۰۲ء کے قریب وطن واپس آئے۔
وہ اپنے ساتھ بیش قیمت کتا ہیں بھی لائے تھے اور ہیں برس کی تعلیم میں انھوں نے بہت کی تحقیق یا دواشتیں مرتب کر لی تھیں۔ راستے میں ان پرڈ اکد پڑا اور سب پچھاٹ گیا۔
مولوی صاحب نے خالی ہاتھ لوٹنا ہے سو سمجھا اور ڈاکو وک بی کی معیت اختیار کرلی۔ اپنے زہد وا تقاء سے تھوڑی ہی مدت میں ڈاکو وک کو پر ہیز گار اور عبادت گر ارمسلمانوں کی جماعت بناویا۔

اصلاح كاآغاز

ان رفیقوں کے ساتھ وطن پنچے تو مسلمانوں کے عقائد واعمال کی اصلاح کا کام شروع کر دیا۔ گر دو پیش کے علماء نے سخت مخالفت کی ، کیکن مولوی شریعت اللہ اطمینان و دل جمعی سے اپنے کام میں لگے رہے اور تھوڑی ہی مدت میں ان کا اثر دور دور تک پھیل گیا۔ غریب ، مزدور اور کسان ان کی تح کیہ اصلاح سے حد درجہ متاثر ہوئے اور سب مولوی صاحب پرجانیں چھڑ کئے گئے۔

ودودميال

مولوی صاحب نے غالبًا ۱۸۳۰ء میں وفات پائی۔ پھران کے فرزندار جمند مولوی محمحن عرف ودود میاں نے تر ندار جمند مولوی محمحن عرف ودود میاں نے تحریک کی باگ ڈور سنجالی، وہ بڑے پر بجوش سرگرم آدی سے۔ انہوں نے گردو پیش کے تمام کسانوں کو سیچ مسلمان بنا کرمنظم کر دیا۔ ان کی اپنی پنچا یہ بیتی قائم کردیں، جو ہرتسم کے تنازعات کا فیصلہ کرتیں۔ اس طرح اپنے تمام مریدوں اور معتقدوں کو ایک مستقل نظام سے وابستہ کردیا۔

الارض للد

آ خرودودمیاں نے ''الارض للہ'' کا نعر و لگایا اور اعلان کرویا کے زمین خدا کی ملکیت ہے اور کمی کوئی نہیں کہ بطور وراشت اس پر قابض ہو۔ جولوگ بھیتی باڑی کرتے ہیں، وہی اس کے مالک ہیں۔ حکومت اپنے واجبات ان سے لیسکتی ہے۔ نام نہاد مالکانِ اراضی ان سے کوئی لگان وصول کرنے کے حق دار نہیں۔ اس اعلان پر بڑے بڑے زمیندار ودود میاں کے جانی دیمن بن محتے۔ ان کے خلاف ڈکھتی اور مداخلت بے جاکئی مقدے میاں کے جانی دیمن میں محتے۔ ان کے خلاف ڈکھتی اور مداخلت بے جاکئی مقدے قائم کرائے محتے۔ لیکن گواہ نیل سکنے کے باعث سب کے سب ناکام رہے۔ ۱۸۱۹ء میں انہوں نے وفات یائی۔ (۱)

فرائعنى تحريك

تحریک کانام فرائعتی اس لئے پڑا کہ اس میں شری فرائض کی بجا آوری پر خاص زور دیا جاتا تھا۔ ودود میاں نے تظیم کمال پر بہنچا دی تھی۔ ان کے کارکن جگہ تھیلے ہوئے سے کہ ہر چھوٹی بوی خبر انہیں برونت مل جاتی تھی۔ بہنخوف تر دید کہا جاسکتا ہے کہ مشرقی بنگال کے بوے حصے میں انہوں نے ایک نوع کی متوازی حکومت قائم کردی تھی اور ان کی جماعت کے لوگوں کو حکومت سے اس کے سواکوئی واسطہ ندر ہاتھا کی جماعت اور ان کی جماعت کے لوگوں کو حکومت سے اس کے سواکوئی واسطہ ندر ہاتھا کہ وہ وہ زین کا مالیہ ہاتا عدہ اواکرتے تھے۔ کسانوں کی تنظیم اور زیادہ سے زیادہ لاتھا ون کی میہ یہلی کا میاب تحریک تھی جومشرقی بنگال میں جاری ہوئی۔ افسوس کہ ودود دمیاں کی میہ یہلی کا میاب تحریک تھی جومشرقی بنگال میں جاری ہوئی۔ افسوس کہ ودود دمیاں کی میہ یہلی کا میاب تحریک تھی کے والاکوئی ندر ہا۔

⁽۱) فعنلی صاحب سیکریری محکومت پاکستان نے بتایا کدو دود میاں کوز برداوایا گیا تھا۔ان کے فرزند کی سر پرتی خود حکومت نے اپنی خاص مصلحتوں کی بناپر کی ۔ بادشاہ میان بومشہور تو میکارکن ہیں،ودود میاں کے بوتے ہیں۔

مير نثار على عرف تنتومياں

میر نارعلی عرف تنومیان سیدصاحب کا مرید تھا۔ وہ چاند پور کے ایک خوشحال زمین دارگھر انے میں ہوئی تھی۔(۱) دارگھر انے میں ہوئی تھی۔(۱) ابتداء میں پہلوانی کرتا تھا، پھرندیا میں ملازمت کرلی۔اس زمانے میں بھی مظلوموں

ابنداء میں پہلوانی کرتا تھا، پھرندیا میں ملازمت کرلی۔اس زمانے میں بھی مظلوموں
کی جمایت کیلئے پیش پیش رہتا تھا۔ اتفاق سے ایک زمیندار کے ساتھ اس کا جھڑا ہوگیا۔
اس نے مقدمہ دائر کردیا،جس میں تیٹو میاں کوقید کی سزا ہوئی ۔قید سے رہا ہوتے ہی وہ دائل کے ایک شنرادے کے ساتھ جج کو چلا گیا۔ مکہ معظمہ ہی میں سیدصا حب سے ملاقات ہوئی، وہیں بیعت کی ۔ پھراس کی پوری زندگی بدل گئی اور ایک ایک لیحہ دین کی خدمت میں بسر ہونے لگا۔ ۱۸۲۷ء میں وطن واپس آیا، جب سیدصا حب ہندوستان سے ججرت میں جہاد فی سیل اللہ کا آغاز کر کے سرحد میں جہاد فی سیل اللہ کا آغاز کر کے سرحد میں جہاد فی سیل اللہ کا آغاز کر کے سرحد میں جہاد فی سیل اللہ کا آغاز کر کے سے۔

تحريك إصلاح

تیومیاں نے مسلمانوں میں اصلاح عقائد وا عمال کی تحریک جاری کردی۔ اوکنلے نے کھا ہے کہ کم وہیش اٹھارہ میل لہے اور بارہ میل چوڑے علاقے میں انکا اثر ورسوخ بھیل گیاتھا۔ اس علاقے کا مرکز مقام نرکل بریا تھا۔ سید جعفر علی نقوی ''منظورۃ السعداء'' میں فرماتے ہیں کہ پورنا کے ایک زمیندار کشن رائے کے علاقے میں بہت سے چھوٹے چھوٹے چھوٹے گاؤں تھے، جن کے باشندے سیدصا حب کے مرید تھے۔ تہد کے سوا اُن کے بدن پرکوئی کیڑ انہ تھا، نماز روزے کے سواکوئی عبادت نہ جانے تھے تیتو میاں وہاں بہنچ تو ان لوگوں کو دینی مسائل کی تعلیم دی۔ مرکزی مقام میں نماز جعہ کا انظام کیا اور وہاں کشرت سے مسلمان جمع ہونے لگے۔ تیتو میاں غیرشری رسموں سے روکا تھا مثلاً قبروں کی پوجا، نذرو نیاز وغیرہ۔ وہ تا کید کرتا تھا کہ مسلمان واڑھیاں رکھیں۔ غیر مسلموں کے کی پوجا، نذرو نیاز وغیرہ۔ وہ تا کید کرتا تھا کہ مسلمان واڑھیاں رکھیں۔ غیر مسلموں کے

(1) او كنك نے تيزومياں كے ضركا نام منتى امير بتايا ہے۔ (ملاحظہ مؤد كلكت ربويؤ 'بابت جولا كى ١٨٧٠ م

رسوم درواج چھوڑ دیں اور ایب الباس پہنیں جس میں وہ غیر مسلموں سے متاز معلوم ہوں۔
جعد کا اجتاع کشن رائے کے بیٹے کو بے وجہ تا گوار معلوم ہوا اور اس نے اس اجتماع
کا تمسخوا ڈا تا شروع کیا۔ تیخ میاں نے بوٹے تیل سے اُسے سمجھایا کہ کسی کے دین کا تمسخر
اڈا تا بہت تازیبا ہے، تمہیں بیا جتماع برامعلوم ہوتا ہے، ذراا ہے وین کی حالت پر نظر
ڈالو، تمہارے ہاں عبادت کے وقت سکھ بختا ہے جس کی آ داز گدھے کی آ واز کے مشابہ
ہوتی ہے۔ کشن رائے کا بیٹا یہ سنتے ہی ایک دم غصے بیس آ عیا اور بولا کہ پھر ایب اجتماع ہوا تو
تمہیں مزہ چکھاؤں گا۔ (۱)

بہرحال اس نے اپنے آ دمیوں کو حکم دے دیا کہ جب مسلمان جمعہ کی نماز کے لئے جمع ہوں تو ان کے اردگر دخوب سکھ بجاؤ۔ اس پڑمل ہوا، تا ہم تنو میاں نے مسلمانوں کو اشتعال سے بازر کھا، البتہ جماعت کا سلسلہ بدستور قائم رہا۔

كشن رائے كى دراز دستياں

اوپر جو پچھ بیان ہوا بیہ مولوی سید جعفر علی نقوی کی تحریر سے ماخوذ ہے، جن کی تمام معلو مات شنیدہ پر مبنی تھیں۔ اگر چہ یقین ہے کہ انہوں نے واقعات کی خوب چھان بین کرلی ہوگی۔ بعض انگریزوں نے ذاتی تحقیقات کی بنا پر جو پچھ کمصااس کا خلاصہ بھی یہی ہے کہ مسلمانوں میں دین داری کے فروغ پرکشن رائے تخت ناراض ہوگیا، یہاں تک کہ اس نے اپنے مسلمان کسانوں پراڑھائی روپے فی کس کے حساب سے ڈاڑھیوں کا نیکس اس نے اپنے مسلمان کسانوں پراڑھائی روپے فی کس کے حساب سے ڈاڑھیوں کا نیکس اس نور ورہ شروع کردیا۔ (۲) جہاں جاتا، مسلمانوں سے بینیکس

⁽۱) "منظوره" كالغاظ بين خوابيدر يدآنيد يدني است.

⁽۲) ہنٹر نے تکھا ہے کہ کشن دائے نے جوانچھامتی ندئ کے کنارے کا بہت بڑا زمیندارتھا، پانچ شانگ کا فیکس ہراً س کسان پرنگادیا تھا جو تتح میاں کی اصلاحی تحریک میں شامل ہوتا تھا۔ ایک ادرزمیندار نے ایک تعزید توڑ دینے پرایک فخص کواپنے جیل خانے میں قد کردیا۔ (ہمارے ہندی مسلمان حاشیر میں بھیل گؤشی۔ یہ می لکھا ہے کہ تحریک تین ملعوں میں۔ چوہیں برگذ، ندیا اور فرید پور میں پھیل گؤشی۔

وصول کرتا۔ پورنا نے بیس کی رقم جمع کر کے دہ سر فراز پور پہنچا تو دہاں تیو میاں کے ساتھی موجود تھے، انہیں زمیندار کی اس حرکت پر شخت غصر آیا اوراس کے پیادے کو پکڑ کرخوب پیا۔ کشن رائے کو پہنچر ملی تو اس نے دو تین سوآ دمی لے کر حملہ کردیا۔ بعض گھروں کولو ٹا اور ایک مسجد جلادی۔ اس طرح حالات نزاکت کی آخری منزل پر بہنچ گئے۔

زمینداراورسلمانوں دونوں نے پاس کے تھانے میں رپور میں کھوادی۔ مسلمانوں کی رپورٹ بیتی کہ زمیندارلوٹ ماراور آتش زنی کا مرتکب ہوا، زمیندار کی شکایت کا طلاحہ بیتھا کہ مسلمان کسانوں نے اس کے آدمیوں کوجس بیجا میں رکھا۔ تھانے کامحرر شخصی کیلئے موقع پر پہنچا تو زمیندارروپوش ہوگیا اور اس نے کرجولائی ۱۸۳۱ء کو برست کے مجسٹریٹ کی عدالت میں حاضر ہوکر بیان دے دیا کہ جوالزام مجھ پرنگایا گیا ہے میں اس سے بالکل بری ہوں! ور مجھے سرے سے کی واقعے کی اطلاع ہی نہیں۔ تھانیدار ہندوتھا، اس نے نقیش اپنے ہاتھ میں لی تو زمیندار کے ہندوکا رکنوں سے اس کر دواستان مضع کرلی کہ مسلمانوں نے خود مجد اور گھروں کو آگ لگا کر زمیندار کو ملزم گردانے کی وشع کرلی کہ مسلمانوں نے خود مجد اور گھروں کو آگ لگا کر زمیندار کو ملزم گردانے کی کوشش کی۔ بیمن کر تیتو میاں کے ساتھی رو پوش ہو گئے اور تھانیدار نے بہ اطمینان خاطر رپورٹ کردی کہ موقع بران کی غیر حاضری سے ثابت ہوگیا کہ اصل فعل انہیں کا تھا۔

پیچیدگی میں اضافہ

تیو میاں کے ساتھی مجسٹریٹ کی عدالت میں پہنچے، پولیس پررشوت لے لینے کا الزام لگایا اوراس کے ثبوت میں وہ گواہ چیش کرنے پر آمادہ تھے۔لیکن مجسٹریٹ نے ان کے بیان پرکوئی تو جہنہ کی۔

اصل جھڑا ہے نہ ہوا تھا کہ کشن رائے نے مختلف مسلمان کسانوں پر بقایا کے حجو نے دعوے دائر کر کے ڈگریاں حاصل کرلیں اوران ڈگریوں کے اجراء کیلئے پولیس کی

مدد لے لی غرض ہرممکن ذریعے ہے مسلمانوں وظلم و جرکا نشانہ بنادیا۔ پولیس ان کی دخمنی پر تلی بیشی تھی۔ بچسٹریٹ زمیندار کے زیراثر تھا اور مسلمانوں کی کسی شکایت پر کان نہ دھرتا تھا۔ بچبور ہوکر وہ اپیل کے لئے کلکتہ بہنچے، وہاں کا مجسٹریٹ دورے پر باقر عنج گیا ہوا تھا۔ لہذا وہ ناکام واپس آئے۔ جب حق رسی کا کوئی بھی ذریعہ باتی ندر ہاتو انہوں نے فیصلہ کر لیا کظلم کے خلاف لڑکر جانیں دے دینی جا بہیں۔

واضح رہے کہ حاکموں اور ان کے کارندوں کی روش حق وانصاف کے تمام تقاضوں کے خلاف تھی اور بنگال صدیوں تک اسلامی حکومت کے ماتحت رہ چکا تھا۔ اگریزوں نے ابتداء میں صرف دیوائی بعنی عام نظم ونس کے حقو تی اجارے پر باوشاہ دیل سے لئے تھے، بعدازاں آ ہستہ آ ہستہ اس کے مالک و مختار بن گئے تھے۔ مسلمانوں نے آگریہ مجھا کہ اُن سے حکومت لیکرخودا نہیں کو ہدنے ظلم و جربنا یا جارہا ہے تو اس کیلئے معقول و جوہ موجود تھے۔

حق وانصاف کے لئے جنگ

بعدازاں جوواقعات پیش آئے،ان کے متعلق بیا نات میں کس قدراختلاف ہے۔
اوکٹے نے لکھا ہے کہ بنجاب کے ایک درویش سکین شاہ نے تتو میاں اورا نئے ساتھیوں کو جہاد پر آبادہ کیا تھا اور سکین شاہ بی آخری دم تک اس تحریک کا روح رواں بنار ہا۔ جہاد شروع کرنے سے پیشتر رسد اور روپی فراہم کیا گیا۔ چاول کی بہت بڑی مقدار زکل بریا میں معز الدین بسواس کے پاس جمع کردی گئی۔ ۲۳ راکتو بر ۱۸۳۱ وکوتتو میاں نے گرو ونواح کے مسلمانوں کو دعوت دے کر جمع کیا، سب نے زکل بریا کے اردگرد بائس کی مضبوط فصیل بنالی،ان دفاعی انتظامات میں کئی دن صرف ہوگئے۔کشن رائے کومسلمانوں کے اجتماع کاعلم ہواتو اس نے درخواستوں کا متیجہ نکلنے سے پہلے پانچ سومسلمانوں نے ۲ رنومبر کو پورنا پر

حملہ کردیا۔ اس کا ہدف صرف غیر مسلم نہ تھے، بلکہ وہ مسلمان بھی تھے جو تنہ میاں اور اُن کے ساتھوں سے اختلاف رائے رکھتے تھے۔ پھراعلان کردیا گیا کہ ایسٹ انڈیا کمپنی کی حکومت ختم ہوگئی، اگریزوں نے بے انصافی سے بنگال پر قبضہ کر کے اسلامی حکومت ختم کی تھی، اب مسلمان اس بے انصافی کی تلافی کرائیں گے۔

مجاہدین کی سالاری کا منصب غلام معصوم نے سنجال لیا۔(۱) پھرندیا ، لوگھاٹا، جسور، رام چندرنگراور بھلی پر حملے ہوئے ۔ ۱۳ رنومبرکوشیر پور کے ایک مسلمان زمیندار کی گئے ۔ او کنلے کا بیان ہے کہ غلام معصوم نے اس زمیندار کی صاحبزادی سے جبرا نکاح کرلیا۔

نا کام انسدادی اقدامات

جس حصے میں یہ واقعات پیش آرہے سے وہ نیل کے کارخانوں کا مرکز تھا۔ ایک کارخانے کے نائب مہتم مسٹر پیرون نے تمام حالات اپنے کارخانے کے مالک مسٹر سارم کو کلکتہ لکھ بھیجے۔ ان میں کشن رائے کی تمام دراز دستیوں کو کھول کر بیان کردیا۔ آخر میں یہ بھی بنادیا کہ اگر جلد انسدادی قدم ندا ٹھایا گیا تو ہٹگامہ تخت خطرناک صورت اختیار کرلے گا۔ مسٹر شارم نے برست اور ندیا کے مجسٹریٹوں کو اطلاع دیدی۔ برست کے مجسٹریٹوں کو اطلاع دیدی۔ برست کے مجسٹریٹوں کو اطلاع دیدی۔ برست کے مسئرکا نام الیگر انڈر تھا۔ مجام بین نے غلام معصوم کی سرکردگی میں اس جمعیت کو گئست سرعسکرکا نام الیگر انڈر تھا۔ مجام بین نے غلام معصوم کی سرکردگی میں اس جمعیت کو گئست ماش دی۔ دس سپاہی اور تین برقند از مارے گئے، بہت سے ذخی ہوئے۔ الیگر انڈر بہشکل جان بچا کہ اس کے الیگر انڈر بہشکل جان بچا کہ اس کے مارک کو بین کی کاشت کرا تا تھا، تین سو جان بچا کہ کے ساتھ حملہ کیا لیکن اس نے بھی شکست کھائی۔ کارنو ہر کو بعض انگریز ہاتھیوں سے ہیوں کے ساتھ حملہ کیا لیکن اس نے بھی شکست کھائی۔ کارنو ہر کو بعض انگریز ہاتھیوں

⁽١) ہنرنے عابدین کی تعداد تمن جار ہزار بتائی ہے۔

پرسوار ہوکرنزکل بریا پہنچ ،ان کے ساتھ بھی جمعیت تھی۔ وہ بھی بسپائی پرمجبور ہو گئے۔ندیا کی عدالت ِفوجداری کا ناظر اور دو برقنداز مارے گئے ۔غرض اس جھے میں قلم ونسق بالکل معطل ہو گیا۔

شهاوت زار

آ خر کلکتہ ہے ایک بڑی فوج ہیجی گئی جس میں سوار بھی تھے اور پیاد ہے بھی۔ اس
کے ساتھ دونو پیل تھیں۔ تیو میال نے چھ سوآ دی ہمراہ لے کر سخت مقابلہ کیا۔ ان کے
بہت ہے ساتھی شہید ہوئے۔ خود تیو میال نے شہادت پائی۔ غلام معصوم اور ساڑھے تین
سوکے قریب مجاہدین زندہ گرفتار کر لئے گئے۔ او کنلے نے لکھا ہے کہ فوج کے ابتدائی حملے
میں ساٹھ ستر شہید ہوئے ، باتی لوگ بانس کی فصیل کے پیچھے چلے گئے اور مقابلہ کرتے
میں ساٹھ ستر شہید ہوئے ، باتی لوگ بانس کی فصیل کے پیچھے چلے گئے اور مقابلہ کرتے
دے ، آخر ہتھیار ڈالنے پر مجبور ہو گئے۔

سید جعفرعلی نقوی فرماتے ہیں: تیو میاں نے فوج کود کیمتے ہی ساتھیوں سے کہہ دیاتھا کہ صبر واستقامت سے شہادت قبول کرنے کا درجہ بہت بلند ہے، ہتھیار پھینک دو، صفیں باندھ کر قبلہ روہ وجا وَاور نماز پڑھو۔اکٹر مجاہدین نے ایساہی کیا۔ بعض ایک مکان میں جابیتھے بعض درختوں پر پڑھ گئے۔ تیتو میاں نے سب سے پہلے شہادت پائی۔اسکے ساتھی بھی کے بعدد گر نے شہید ہوتے گئے۔ فوج نے اس مکان کوآگ لگادی جس میں مجاہدین نے پناہ لی تھی۔ بھی اندرجل گئے جو باہر نکلے وہ شہید ہوئے یا گرفآد کر لیے گئے۔

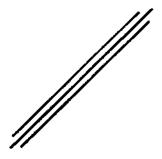
مقدمهاورسز ائيس

علی پورجیل میں گرفتار شدہ مجاہدین پرمقد مہ چلا مجسٹریٹ کی رائے بیتمی کہ ملمان واقعی مظلوم تھے، کسی نے ان کی دادری نہ کی اور بہت برا کیا۔ کیکن آنہیں حاکموں کا مقابلہ نہ کرنا چاہئے تھا۔ غلام معصوم کومقدے میں موت کی سزادی گئی ، باقی اسیروں میں سے ایک سوچالیس کومختلف المیعاد قید کا تھم سنایا گیا۔کشن رائے کے تمام نو کر چا کربھی پکڑے گئے۔ بیمعلوم نہ ہوسکا کہ اُنہیں کیا کیاسزا کیں ملیں۔

ال پورے معالمے کے متعلق کسی کا رائے خواہ کچھ ہو، کین اس حقیقت کونظر انداز نہیں کرنا چاہئے کہ حق ری کے تمام جائز وسائل سے مایوں ہوجانے کے بعد غیرت و حمیت کا تقاضا اس کے سوا کچھ نہ تھا کہ جائی قربانی پیش کی جائے۔ تیو میاں کے دل میں یہ جذبہ سید صاحب کی تربیت سے پیدا ہوا تھا۔ یہ تو می زندگی کا روثن نشان تھا۔ جن گروہوں کوعزت کی زندگی بسر کرنے کی کوئی صورت نظر نہ آئے وہ اگر عزت سے جانیں دید سیخ کیا تا تھا تھا رنہ ہوں تو سمجھ لینا چا ہے کہ زندہ رہے کا استحقاق کھو چکے ہیں۔ ہنٹر نے دید سیخ کیلئے تیار نہ ہوں تو سمجھ لینا چا ہے کہ زندہ رہنے کا استحقاق کھو چکے ہیں۔ ہنٹر نے اپنی کتاب میں صرف تیجو میاں کی مجاہدا نہ سرگرمیوں کو ابھا را۔ ان اسب کے متعلق بالکل سکوت اختیار کئے رکھا جوافسوس ناک صورت حال پیدا کرنے کے موجب ہے۔

14 A

برصغير مندمين تحريك احيائے دين اور سرفر وشانه جدوجهد كى كمل سرگذشت



حصهرسوم

(مولا ناولا يت على اورمولا ناعنايت على)



يېلا باب:

مولا ناولا بيت على اورمولا ناعنابيت على

تمهيد

ا۱۸۴ء کی طغیانی سندھ کے بعد مجاہدین کادہ مرکز بھی جاہ ہو چکا تھا، جے مولوی نصیرالدین نے تازہ رونق بخشی تھی۔ جو تھوڑے سے مجاہدین باقی رہ گئے تھے انہوں نے میراولا دعلی کو اپنا امیر بنالیا تھا، جوا یک مرتبہ مولوی نصیرالدین منگلوری کی شہادت کے بعد بھی تھوڑی دیر کے لئے منصب امارت پر فائز رہے تھے۔ مجاہدین کی تعداد بظاہر بہت کم تھی اور ساز وسامان بھی بقدر ضرورت موجوہ نہ تھا، لہذا انہوں نے جہاد فی سبیل اللہ کا جرائے توروثن رکھا، لیکن کوئی قابل ذکر اقد ام نہ کر سکے۔

اس اٹناء میں سیدصا حب کے مقرر فرمائے ہوئے دائی ہندوستان کے مخلف حصول میں دعوت و تبلغ کررہ ہے تھے ،ان میں متاز ترین حیثیت مولا ناولا بت علی عظیم آبادی اور ان کے بھائی مولا ناعنا بت علی کو حاصل ہوئی۔ سیدصا حب کے اوادت مندوں کی نظریں انہیں پرجی ہوئی تھیں۔ وہ خود از سرنو ایک پائیدار واستوار مرکز قائم کرنے کیلئے بیتاب شہد یہ ہوئی تھیں۔ وہ خود از سرنو ایک پائیدار واستوار مرکز قائم کرنے کیلئے بیتاب شہد یا ہم حسن تدبیر کا نقاضہ بیتھا کہ احوالی سرحد کا جائزہ لیاجاتا او راس کے بعد کوئی مناسب قدم اٹھایا جاتا ، سرحد کے اکابر سے ان کا نامدو پیام جاری تھا۔ جب انہیں معلوم ہوا کہ سازگار ماحول پیدا ہو چکا ہے تو اس سے فائدہ اٹھانے میں تا مل نہ کیا۔

مولا ناولا يتعلى

مولا تاولایت علی ابن مولوی فتح علی ایک متاززییری گھرانے کے چٹم و چراغ تھے،

جے عظیم آبادیں امارت اور یاست کا درجہ حاصل تھا۔ ۱۲۰۵ ہے (۱۹-۹۰) میں پیدا ہوئے۔ ''سیداحرشہید'' میں بتایا جا چکا ہے کہ کھنو میں تعلیم پار ہے تھے، جب سیدصاحب سے ملاقات ہوئی اور پہلی ہی صحبت میں نفتر دل ہار بیٹھے۔ چوں کہ دولت مندگھرانے کے فروتے، اسلئے زندگی کا عام اسلوب خاصا امیرانہ تھا۔ سیدصاحب سے تعلق پیدا ہوتے ہی مولانا کی کیفیت بالکل بدل گئی، چنانچہ وہ تعلیم کوچھوڑ کرسیدصاحب کے ساتھ درائے ہر لیل مولانا شاہ اسلیل کی جماعت میں انہیں شامل کردیا گیا۔ شاہ صاحب سے پھے کتے اور غالبًا مولانا شاہ اسلیل کی جماعت میں انہیں شامل کردیا گیا۔ شاہ صاحب کی خدمت میں گزارتے تھے۔ وقات عبادت وتعلیم کے بعد بوراد فت اپنے ساتھیوں کی خدمت میں گزارتے تھے۔ وقات عبادت وتعلیم کے بعد بوراد فت اپنے ساتھیوں کی خدمت میں گزارتے تھے۔ وقات عبادت وتعلیم کے بعد نوراد فت اپنے ساتھوں کی خدمت میں گزارتے تھے۔ وقات عبادت وتعلیم کے بعد نوراد فت اپنے ساتھوں کی خدمت میں گزارتے تھے۔ وقال سے معمولی سے معمولی مام کرنے میں انہیں عار نہیں۔

شانِللْهيت

''تذکرہ صادقہ' میں بتایا عمیا ہے کہ مولانا ولایت علی کے والد ماجد کو آن کے رائے بر یلی کہنچنے کاعلم ہوا تو اپنے ایک ملازم کو چارسور و بیدا ور ملبوسات دے کر بھیجا۔ اس زمانے میں سیدصا حب مہمانوں کیلئے ایک مکان تعمیر کرار ہے تھے۔ تمام ارادت منداور خودسیدصا حب تعمیر کے سلسلے میں مختلف کام انجام دیتے تھے۔ مولانا ولایت علی اس گروہ میں شریک تھے، جوگارا تیار کرتا تھا۔ ملازم رائے بر یلی پہنچا تو مولانا نے ایک موٹاسیاہ تہم باندھ کرتھااور گارے میں تھر ہوئے کام کر رہے تھے۔ صورت اس درجہ شغیر ہوچکی باندھ کرتھااور گارے میں تھر نے ہوئے کام کر رہے تھے۔ صورت اس درجہ شغیر ہوچکی میں کمی کہ ملازم ہم کلامی کے باوجود آپ کو پہچان نہ سکا۔ آپ کا پید خود آپ سے پو چھا۔ بہت مولانا نے جواب دیا کہ ولایت علی میں ہی ہوں تو ملازم نے اسے نداق سمجھا اور بہت تاراض ہوا۔ آپ نے کہا: بھائی! آپ کو یقین نہیں آتا تو جائے قافلے میں تفتیش بہت ناراض ہوا۔ آپ نے کہا: بھائی! آپ کو یقین نہیں آتا تو جائے قافلے میں تفتیش کر لیجے۔ جب لوگوں نے اسے یقین دلایا کہ عظیم آباد کے رئیس زادے ولایت علی بھی

ہیں تو وہ نادم ہوا۔ آپ کو گئے سے لگالیا، معافی مانکی اور آپ کی حالت و کھے کرزار زار رونے لگا۔ رقم اور ملبوسات آپ کی خدمت میں پیش کردیے۔ آپ نے انہیں و یکھا تک نہیں اور دونوں چیزیں بند کی بندسید صاحب کے حضور میں رکھ کروالیں چلے آئے۔(1) تمان

وعظ وتبليغ

مولانارائے بریلی میں تربیت پاکروطن گئے تو زندگی کا ایک ایک لمحہ وعظ وتبلیغ کے وقف کردیا۔ انہیں کی کوشش سے ان کا خاندان اور دوسر ے اعز ہوا قرباء سیدصا حب سے وابستہ ہوئے ، مثلاً مولانا کے والد مولوی فتح علی ، ان کے بھائی مولانا عنایت علی ، مولانا طالب علی اورمولانا فرحت حسین ۔ ان کے اقرباء میں سے مولانا شاہ محمد حسین ، مولوی اللی بخش ، مولانا اخر الله ، مولانا فیاض علی ، مولوی قرالدین ، مولوی باقرعلی ۔ غرض ان سے تعلق رکھنے والوں میں ایک بھی فرد ایسا باقی ندر ہا، جس نے سید صاحب کی ادادت کا حلقہ اپنی گردن میں نے ڈال لیا او ران حضرات کی قربانیاں تاریخ مجاہدین کا نہایت شاندار اور درخشاں باب ہیں۔

وینی خدمات

مولا ناولایت علی سید صاحب کے ساتھ ہجرت کر کے بغرضِ جہاد گئے تھے، لیکن جیسا کہ' سید احمد شہید' اور' جماعت مجاہدین' میں بتایا جاچکا ہے، انہیں سید صاحب نے دعوت وہلینج کی غرض سے حیدر آباد (دکن) بھیج دیا تھا (۲) جہاں وہ کم وہیش جارسال

⁽۱) "العرالمنثور معروف..." تذكرة منادق" ص: ۱۱۲

⁽۲) توارج مجیب (سوائح احمدی) میں مرقوم ہے کہ سیدصاحب نے پہلے آئیوں سفیر بنا کرزمان شاہ والی کا بل اور اس کے دزیر دوست محمد خال کے پاس بھیجا تھا۔ بیسی نہیں ، مان شاہ سید صاحب کے سرحد جانے ہے رامع صدی ویشتر معزول اور بینانی سے محروم ہو چکا تھا۔وہ پہلے ایران میں رہا پھر ہندوستان آئمیا۔ بقید جاشیہ ہو گلے صفی پر

یہ خدمت انجام دیتے رہے۔حیدرآباد میں انہوں نے جو کارنا سے انجام دیے وہ "جماعت مجاہدین" میں بھی بیان ہو چکے ہیں اور زیر مطالعہ کتاب کے ابتدائی ابواب میں بھی انگی سرسری کیفیت عرض کی جا چکی ہے، لہذا اعادہ کی ضرورت نہیں۔ بالاکوٹ میں سید صاحب کی شہادت کا واقعہ چیش آیا اور اسی اثناء میں مولانا کے والد ما جد کا انقال ہوگیا تو مولانا حیدرآباد سے بر ہان پور،سیونی، نرسکھ پوراور جبل پور ہوتے ہوئے عظیم آباد پنچ اور اصلاح عقا کہ و جہاد کا مقصد چیش نظرر کھتے ہوئے بہار، بنگال، اڑیسہ اور اللہ آباد میں وعوت و تبلیغ کامنظم سلسلہ قائم کر دیا جس کی اجمالی کیفیت ہے ۔

| علاقه | داعی |
|-----------------------------------|---------------------------------|
| چچېره بمظفر پورېزېث اوراطراف پیشه | شاه محمد حسين امام جامع عمو جيه |
| بگال | مولا ناعنا يت على |
| الأآباد | مولوي زين العابدين حيدرآ بادي |
| اژیبه (۱) | مولوی محمر عباس شدر آبادی |

طریق بیلیغ بیرتھا کدمولانا توران کے مقرر کیے ہوئے دامی ایک ایک قریے اورایک ایک موضع میں جاتے ،مسلما وں کو پابندِشریعت بناتے ،مسجدیں آباد کرتے اور ارشاد وہدایت کامستقل سلسلہ جاری کردیتے۔

مخرشته صفی کابقیدهاشید..... انگریزول نے اس کیلئے دو ہزار ماہوار دفیفی مقرر کردیا۔ اس نے لده بیانه یس سکونت افتتیار کرلی اور و ہیں ۱۸۳۵ء میں دفات پائی ۔ دوست محمد خال بھی زبان شاد کا وزیر نہ ہوا۔ سد وزئیول کی حکومت میں افراتفری ہیدا ہوئی تو پائندہ خال بارک زئی کے بیٹے افغانستان کے مختف صوبول (باشتناء ہرات) پر قایض ہو گئے تھے۔دوست محمد خال نے کابل کی حکومت سنبعال کی تھی۔ غرض مولا ٹادلا بت علی کوسفیر بنا کر کابل ہیسجنے کا واقعہ غلط ہے۔ (۱) مولوی زین العابدین اور مولوی عباس مبارز الدولہ کی نظر بندی کے بعد چلے آئے تھے۔ مولا نانے آئیس اپنے یاس فلم رایا۔ پھر دموت و آبلینے کا کام مونب دیا۔

مولانا کی کیفیت

خودمولاتا کی کیفیت "تذکرهٔ صادقه" میں یوں مرقوم ہے:

''اشاعت دین میں آپ کی انتقک کوشش غرب وشرق ، شال د جنوب کل کومحیط تھی ، مجمعوں او رمیلوں (مثلاً بہار کا چراغاں) میں بھی به غرض تبلیغ و پند پہنچتے اور نور با فوں کو کر کہ میں جا کر اور کسانوں کوان کے گھیتوں میں پہنچ کر اللہ کی اطاعت و بندگی کی ترغیب دیتے اور انکی بدز بانی اور غصوں کوشر بت کی طرح نوش کرجاتے ، آپ اپنے وور وئیر میں قربیہ بہ قربیہ فروش ہوتے طرح نوش کرجاتے ، آپ اپنے قور وئیر میں قربیہ بہ قربیہ فروش ہوتے جاتے ، اسلے اپنے مخصوص مقامات تک چنچنے میں مہینوں اور برسوں کی آپ کو در گئی۔ (۱)

تعليم اوراشاعت ِكتب

جب وطن میں مقیم ہوتے تو ظہر سے عصر تک قرآن وحدیث کا درس دیتے'' تذکر ہُ صادقہ''مظہر ہے:

ضروری اورمفید دینی کمّاول کی اشاعت کا بھی خاص اہتمام تھا، چنانچے شاہ محر آخلق سے شاہ عبدالقاور کا باتر جمہ قرآن اور شاہ آسمعیل شہید کے رسائل منگوائے اور آنہیں مطبع

(۱) "تذكره صادقة"ص:۱۱ (۲) "تذكرهٔ صادقة الص:۱۲

حینی لکھنؤ میں مجہوانے کی کوشش کی۔ وہاں مدچھپ نہ سکیں تواسیخ فلیفہ مولوی بدلیج الزمال بردوانی کواس کام کیلئے تیار کیا۔ چنانچہ مولوی صاحب موصوف نے دس ہزار میں ٹائپ کا پریس خریدااورا کٹر دینی کتابیں اس میں جھاپ چھاپ کرشائع کرتے رہے۔(1)

خدادادتا ثير

قیام وطن کے زمانے میں ہر ہفتے منگل کے دن بعد نماز مغرب اپنے مکان میں وعظ کرتے۔ ایک جانب پانچ چھ سومور تیں جمع ہوتیں ، دوسری جانب پانچ چھ ہزار مرد۔ وعظ میں خداداد تا ثیرتھی ، جوسنتا اس کی حالت دِگر گوں ہو جاتی۔ (۲)

نواب صديق حسن خال لكھتے ہيں:

"مولوی ولایت علی تنوج شی تشریف لائے۔ میرے مکان پرآئے،
اپنے اہل بیت کو واسطے ملاقات والدہ مرحومہ کے بھیجا، جامع مسجد تنوج میں چند
جمعہ تک وعظ کہا، پھر جھے سے کہہ گئے کہتم کتاب" بلوغ المرام" ضرور پڑھنا۔
میں اس وقت بارہ تیرہ برس کا ہوں گا، جو اثر سرایع میں نے وعظ مولوی ولایت
علی مرحوم میں پایا، کسی کے وعظ میں دیکھانہ سنا، ان کے پاس بیٹھنے سے دل دنیا
سے بالکل سرد ہوجاتا تھا اور دین کا جوش تیون سے دل سے اٹھتا تھا۔ (۳)

⁽۱) "تذكرهٔ صادقه مس: ۱۹

⁽۲) "تذكروكمارق" ص: ال

⁽۳) د اسقداء المسنن "ص: ۱۱- واضح رب كواب صديق حسن كارخ پدائش ۱۹ ارجادى الاول ۱۲۳۸ هـ (۳) د اسقداء المسنن "صن ۱۲ اله واضح رب كواب صديق حسن كارخ پدائش ۱۹ ارجادى الاول ۱۲۳۱ هـ (۱۲ اله الله ۱۲ ۱۲ هـ دوانه بوخ تي او ردمنان ۱۲ ۱۱ هـ من عظيم آباد سے روانه بوخ تي او ردمنان ۱۲ ۱۱ هـ من بوت اور منان ۱۲ ۱۲ هـ من بوت الله وقت من الله وقت الله وق

مولا ناولا بت علی نے گردو پیش سنت کا احیاء کردیا اور برعتیں بالکل محوکر ڈالیس، مثلاً مثلاً مثلاً مثلاً مثلاً مثلاً مثلاً مثلاً منت کتاب وسنت کے پابند ہوگئے، بری رسیس مٹ گئیں، نکاح بیوگان کا اجراء ہوا، اپنے دو بیٹوں کا نکاح دو بھینجیوں سے اس سادگی کے ساتھ کردیا کہ کسی کیلئے کوئی نیا جوڑا تیار نہ کرایا۔ سب نے پرانے کپڑے بہن دیھے تھے، جن میں بیوند گے ہوئے تھے۔

سفرجج

ای زیانے میں آپ نے جی کیا۔ پہلے خود بسلسلۃ بلیغ بنگال کا دورہ فرمایا اورعادت کے مطابق قربیہ کا کہ پنجے۔ مولوی بدلیج الزباں بردوانی کومعری سنجی کی معجد کا امام مقرر کیا۔ اسی دورے میں سورج گر ھیجی گئے، جہاں مولا ناسید خربیت مرحوم آپ کے دعظ وقصیحت سے متاثر ہوئے اور اپنی زندگی خدمت دین کیلئے وقف کی۔ پھراال وعیال کے ساتھ بہقصد حج کلکتہ سے جہاز پرسوار ہوئے۔ بمبئی پنچے قو دوماہ تک وہاں قیام رہا، پھر عرب تشریف لے گئے۔ جج کیا، شخ عبداللہ سراج محدث سے حدیث کی سند حاصل کی۔ شخ فرماتے تھے کہ مولا نانے صدیث کے لفظوں کی سند مجھ سے لی اور معانی کی سند میں نے مولا ناسے حاصل کی۔ حربین کے علاوہ آپ نے نجد بعیر اور یمن کی مولوی محد بعث حاصل کی۔ معلی سند عدیث حاصل کی۔ مولوی محد جعفر نے حضر موت ، بخا، حدیدہ ، مقط اور سواکن (سودان) جانے کا بھی ذکر مولوی محد جماز پرسوار ہوکر کلکتہ پہنچے اور معمول کے مطابق دور وسیر کرتے ہوئے وطن آئے۔ (۱) پھر جہاز پرسوار ہوکر کلکتہ پہنچے اور معمول کے مطابق دور وسیر کرتے ہوئے وطن آئے۔ (۱)

مولا ناعنايت على

مولا ناعنایت علی این بھائی مولا ناولایت علی سے دویا تین برس چھوٹے تھے۔سید

(١) سواخ اجرى طبح اول من ٢١٣٠ (٢) تذكر وصادقة من ١٢٣٠

ተላለ

صاحب سے بیعت کے بعد ان کی حالت بھی بالکل بدل گئ۔ وہ بھی سید صاحب کے ساتھ جہاد کیلئے محئے تھے،اوروہاں سے بنگال میں دعوت وتبلیغ پر مامور ہوئے ۔ضلع جیسور مں موضع حامم بور کوآپ نے مرکز بنالیا تھا، جہاں کے عاجی مفید الدین خال اور مدن خان آپ کے خاص اراوت مند تھے۔جیسور، ندیا، فرید بور، راج شاہی، مالدہ اور بوگرا آپ کی تبلینی سرگرمیوں کے خاص مرکز تھے۔سیدصاحب کی شہادت کے بعد آپ اپنے بوے بھائی مولانا ولایت علی کے زیر ہدایت کام کرتے رہے۔آپ کے متعلق بتایا عميا ہے كہ جس مقام بروسنچ اگر وہاں مجدموجود ہوتی تو سمی موز دن شخص كوامام مقرر كرويية بمبجدنه بوتى تونغمير كرادية لفاص طوريرقابل ذكرامريه ب كدامام محض نماز یر معانے اور ضروری دیلی باتیں سکھانے ہی کا ذمہ دار نہ ہوتا بلکدایے علاقے کے تمام جھڑوں کے فیطے بھی وہی کرتا۔ سید صاحب کے ارادت مندوں کا پختہ عقیدہ تھا کہ انگریزی عدالتوں کی طرف رجوع کرنے میں دل تاریک ہوجاتے ہیںاو رایمان کو نقصان پہنچا ہے۔اس طرح مولا نانے ایک صد تک نظم ونسق کامتوازی نظام قائم کرویا۔ بی حالات ہم نے اختصار أاس لئے بیان كردیے كه بيمولا ناولايت على اورمولا نا عنایت علی کے محامدانہ کارناموں کی ایک ضروری تمہید تھے۔

دوسراباب:

ہزارہ میں جہادِ آزادی

سكصول كي حكومت ميں ابترى

مولانا ولایت علی اورمولانا عنایت علی پوری سرگری ہے دعوت و تبلیغ میں مصروف تھے اور ان کی نگا ہیں اس امر برجمی ہوئی تھیں کہ وقت اور ماحول کے سازگار ہوتے ہی موزوں مقام سے جہاد کا آغاز کردیں۔ یہاں تک کہ سکھوں کی حکومت میں اہتری پیدا ہوئی اورمیدانِ عمل میں قدم رکھنے کا سازگار موقع پیدا ہوگیا۔

سکھوں کی حکومت دراصل کوئی با قاعدہ اور منظم حکومت نبھی بلکہ اسے ایک نوع کا عارضی فوجی غلبہ کہنازیادہ موزوں ہے۔ انہیں اس وجہ ہے پنجاب پر چھاجانے کا موقع مل گیا کہ یہاں کسی بھی جگہ کوئی قابل ذکر نظام موجود نہ تھا، جواسلح اورعوام دوست عزاصر کو متحد کرسکتا۔ رنجیت سنگھ کی خواہش ممکن ہے بیر ہی ہو کہ عارضی فوجی غلبے کومنظم حکومت کی متحد کرسکتا۔ رنجیت سنگھ کی خواہش ممکن ہے بیر ہی ہو کہ عارضی فوجی غلبے کومنظم حکومت کی شکل دیدے، لیکن اسکی بوری زندگی دائر ہ اقتدار کی توسیع میں بسر ہوگئی اور توسیع کی آرز و ای صورت میں بوری ہو تحق تھی کہ عسکریت کوزیادہ سے زیادہ بولگام رکھا جاتا۔ چنانچہ وہ اسلام میں فوت ہوا تو اس کے قائم کر دہ نظام کا کھو کھلا بن کسی کی نگاہوں سے او جھل نہ رہا، اس نے چائیس برس میں جو گھر و ندا بنایا تھا، جانشینوں نے چار پانچ ہی برس میں اس کی اینٹ سے اینٹ بجا کررکھ دی۔

فسادة دفساو

رنجیت سنگھ کے بعد اسکا بیٹا کھڑک شکھ حکمراں بنا۔ وہ بالکل کمز دراور بے عزم آ دمی

تھا۔ جس روز وہ مراای روز اس کا بیٹا نونہال سنگھا یک حادثے کی نذر ہو گیا، جورنجیت سنگھ کے خاندان میں سب سے قابل مانا جا تاتھا۔ پھر رنجیت سنگھ کے دوسرے میٹے شیر سنگھ نے مند حکومت سنجالی، وہ اور اس کا نوعمر بیٹا ۱۸۴۳ء میں مارے گئے اور سکھوں کے مختلف فریق بے دریغ ایک دوسرے کاخون بہانے ملگے۔ آخر رنجیت سنگھ کے سب سے جھوٹے بیٹے دلیب سنگھ کوگدی پر بٹھایا گیا۔وہ کم سنتھا اورانتظام کیلئے ایک کونسل بنادی گئی تا ہم سکھ امراء کی باہمی رزم و پیکارندر کی۔ پھر بعض دوراندلیش لوگوں نے ان کی تو جہ خانہ جنگی ہے ہٹانے کی تدبیر بیسوچی کہ انگریزوں سے لڑائی چھیزدی جائے ہکھ عمو مادنیا کے حالات ہے بے خبر تھے، اپنی قوت و طاقت پرانہیں اتنا گھنٹڈتھا کہ کسی کو خاطر میں نہ لاتے تھے۔ چنانچانہوں نے جوشِ غیظ میں انگریزی علاقے پردھاوابول دیا، بےدریے شکستیں کھا کمیں اور آخر صلح برمجبور ہو گئے۔ دوآب بست جالندھر کے علاوہ ثال مشرق کے تمام پہاڑی علاقے انگریزوں کےحوالے کیے اور تادان بھی دیا۔انگریزوں نے تشمیراور بالا کی ہزارہ گلاب شکھے ذِوَّرہ کے ہاتھ فروخت کرویا، جو جنگ ہے الگ تھلگ رہاتھا اور اگریزوں کا خیرخواہ سمجھا جاتا تھا۔ کچھ مدت بعد دوسری جنگ ہوئی جس میں سکھوں کی عملداری کانقش صفحہ ستی ہے تحو ہو گیا۔

سرحدی علاقوں میں ہنگاہے

مرکزی حکومت کی بذخمی او را ہتری کااثر سب سے پہلے اور سب سے زیادہ ان علاقوں پر بڑا جو دورا فقادہ تھے اور جہاں حکومت کی بنیادیں پوری طرح استوار نہ ہوئی تھیں۔اس سلسلے میں ہمارے موضوع کے لحاظ سے ہزارہ اور کا غان بہطورِ خاص قابل ذکر میں، جہاں کے رؤسا اور عوام سکھوں کے جبر وظلم اور قزا قانہ تحصیلات سے خت شک آئے ہوئے تھے۔ہزارہ میں ہری سکھوں بارہ سال صوبہ دار رہا۔اسکا بورادو وقل وغارت اور

خونریزی وشقاوت ہے لبریز ہے۔اس نے بعض رؤساء کوموت کی سزادیدی(۱) اوراکشر کو طاوطنی پرمجبور کرویا۔ مالیہ وصول کرنے کا طریقہ بیتھا کہ مختلف علاقوں کی نیلامی بولی جاتی، جوزیادہ رقم ویتاعلاقہ اس کے حوالے کردیا جاتا تھا، پھروہ اپنے انتظام کے دوران میں جس طرح جا ہتارتم وصول کرتا۔ (۲)

بزاره اور کاغان کے رئیسوں نے سکھوں کو خانہ جنگی میں مبتلا دیکھا تو وہ آزادی ماصل کرنے میں سرگرم کار ہوگئے۔اس سلسلے میں راجا حیدر بخش خال تھے۔ گھے ٹو رئیس خان پور، نواب خال پلال تنولی رئیس شنگوی، میر زمان خال طاہر خیلی رئیس کھلا ہٹ، غلام خان ترین، ان کے علاوہ جدون، کرڑال، دلازک نیز کاغان کے سید خاص طور پر قابل ذکر ہیں۔ زیریں ہزارہ کے رؤسانے سکھوں کی جمعیتوں کو شکست دیکر ہری پور پر قبضہ کرلیا اور وہاں کا گورزمول راج دلوالیہ حسن ابدال بھاگ آیا۔ (۳)

کشمیر کی جانب ہے دیوان ابراہیم نے کا غان پر حملہ کیا ، وہاں سیدوں نے ضامن شاہ ساکن کوائی کی سرکر دگی میں دیوان پرخوفناک چھاپا ماراجس میں وہ خود اور اسکی پوری فوج موت کے گھائے انرگئی۔ بیمقام آج تک دیوان بیلہ کے نام ہے موسوم ہے، یعنی وہ

(۱) اس سلیلے میں مجمد خال ترین کا واقعہ بڑا ہی مجرت تاک ہے۔ رنجیت سنگھ نے اس غریب کو اا ہور میں مقید رکھا تھا۔ ہری سنگھ نے قیام امن کی غرض سے اسے ہزارہ لیجانا جاہا، رنجیت سنگھ نے کہا کہ بچپین ہزار رو ہے ووقو اسے تمہار سے حوالے کروں گا۔ ہری سنگھ نے رقم وے دی چھہ خال کوزہروالا ویا اور ہزارہ کے ویبات سے اڑھائی رو ہے فی خانہ تاوان وصول کر کے بچپن ہزار کی رقم پوری کرئی۔ شایدی کسی منظم محکومت میں ایسے واقعات کا نشان کل سکے۔

(۲) بالائی بزارہ کاعلاقہ بہلے گاب شکھ ڈوگرے کے تبضے میں تھا۔ بجراس نے اس ملائے کے معاد ہے جس جمول کے قریب ایک علاقہ بہلے گاب شکھ ڈوگرے کے تبضے میں تھا۔ بجراس نے اس ملائے ہیں ہوں کے قریب ایک علاقہ لیا میں ہمرا یہ بیٹر تین لاکھ بچامی بزار پانسوستررہ بے صرف بطور مالیہ وصول ہوتے تھے الیکن سرکاری فزانے ہیں دوا کھ انگالیس بزار نوسو پینیٹیس رو بے جمع کیے جاتے تھے۔ خود میجرا یہٹ نے مصفائے تشخیص کی تو مالیے کی کل رقم ایک الکھ ساتھ اراقہ تھے۔ اس سے سمھوں کی جا برانہ تھے ہیں اور کے جاتے تھے۔ خود میجرا یہٹ نے ماندازہ ہوسکتا ہے۔

(ما حظه مواتظامي رايورث بابت ٥٠-١٨٣٩ مطيوم ١٨٥٨ م

(m) "مبزاره گزیمنز" طبع ۱۹۰۷، ص:۱۳۴،۱۳۳

مقام جهال ديوان ابراجيم كاصفايا هواتها_

كنذى مسلمانى

زیریں ہزارہ کے رؤسانے بالا نفاق سیدا کبرشاہ ستھانوی کو آزاد شدہ علاقے کا سردار درئیس منتخب کیا۔ چنانچ سیدموصوف کی ابتدائی دستار بندی ناڑہ کے مقام پر گ گئ جسے اس وجہ سے خاص شہرت حاصل ہے کہ قبا کلی شکروں نے ۱۸۲۳ء میں ہری سنگھ نکوہ کو وہاں فیصلہ کن شکست دی تھی اوروہ محض حسن اتفاق سے قل ہوتے ہوتے بچا۔ بعدازاں ہری پور کے قلع میں دستار بندی ہوئی۔ سیدا کبرشاہ کو بادشاہ کالقب دیا گیا۔ نواب خال رئیس شنگوی اور غلام خال ترین وزیر مقرر ہوئے۔ سیف اللہ خال رسالدار کومیر شش کے مہدے پر مامور کیا گیا۔ یہ انتظام چول کہ بہت تھوڑی ویر قائم رہااس لئے مقامی لوگوں میں یہ دور'' کنڈی مسلمانی'' کے نام سے مشہور ہے، یعنی وہ اسلامی حکومت جو بہت تھوڑی دیر قائم رہی ۔ (۱)

طلبإمداد

صیح تاریخ معلوم نہیں ہوکی لیکن افراتفری کا یہی زمانہ ہے جس میں سید ضامن شاہ کا غانی نے مولا ناولایت علی کو دعوت بھیجی کہ آپ تشریف لا کیں اور یہاں آغاز جہاد کے لئے جو سازگار فضا بیدا ہو چکی ہے اس سے فائدہ اٹھا کر اسلامی حکومت کے استحکام و استواری کا بندو بست کریں۔ مولا نانے اپ بھائی مولا ناعنایت علی کو بھیجنے کی تجویز کی۔ وہ اس وقت بنگال میں دعوت و تبلیغ کا فریضہ انجام دے رہے تھے۔ انہیں سرحد جانے کا بیغام ملاتو دو ہزار مجابدین ساتھ لے کرعظیم آباد پہنچ جس سے اگریزی حکومت کے کارکوں میں تشویش بھیل کی۔ مولانا ولایت علی نے مصلحت و دوراندیش سے کام لیت

⁽۱) تفهیان سیرعبدالجبارشادی" تمآب العمر ق"مین ملیکین گی جس کاذکراس سلسلے کی کتابوں میں بار ہا آچکا ہے۔ (قلمی نسخت ۲۸۰۰، ۲۷۰ نیز ہزار مَّاز نیزس ۱۳۳۳)

ہوئے جمعیت منتشر کردی اور فیصلہ کیا کہ تمام لوگ چھوٹی چھوٹی ٹولیوں میں بٹ کر کیے بعد دیگر ہے جا کیں اور سکھوں کے علاقے سے گذر نے کی اسکے سوا کوئی صورت نہ تھی۔ چنا نچہ جمادی الاخری 170 ھے (جولائی ۱۸۴۳ء) سے چارچار پانچ پانچ چھے چھآ دمیوں کی ٹولیاں روانہ ہونے لگیں اور غالبًا چار پانچ مہینے تک بیسلسلہ جاری رہا۔ ان ٹولیوں کے رکیسوں میں جن اصحاب کے اسائے گرامی نہ کور بیں ان میں مولا ناعنایت علی کے علاوہ مولا ناعبد اللہ (فرزند مولا ناولایت علی) میر اولا دعلی سورج گڑھی، جو غالبًا انتظام کمک کے لئے سرحد سے آگئے تھے ، مولوی مقصود علی ، مولوی کرم علی اور مولوی زین العابدین قابل ذکر ہیں۔ (۱)

ڈ اکٹر بیلیو کے بیان ہے بھی اسکی تصدیق ہوتی ہے۔ وہ لکھتا ہے کہ فتح خان پنجاری نے مولوی نصیر الدین منگلوری کی شہادت کے بعد بھی مجاہدین کے خلاف دشمنی کاسلسلہ جاری رکھا یہاں تک کہ مولوی میر اولا دعلی کے پاس صرف ستر استی آ دمی رہ گئے۔ ان حالات کی اطلاع ہندوستان بہنچی توعظیم آ باد ہے مولا ناعنا بیت علی کواور بہار سے میر مقصود علی کو بھیجا گیا۔ ایکے پاس رو بیا بھی خاصی مقدار میں تھا اور جنگوؤں کی جماعت بھی کم نہتی :

یوری جماعت تین سوافراد پر شمل تھی۔ وہ پانچ پانچ چھ چھ آ دمیوں کی جھوٹی چھوٹی تولیوں میں پکھلی واقع ہزارہ پہنچ جو پہلے سے منزل مقصود مقرر جھوٹی تھوٹی تھی ، یہاں میراولا دعلی اور ان کی چھوٹی سی جماعت بھی ان (مجاہدین) میں شامل ہوگئی۔ (۲)

⁽۱) اس سلسلے میں زیادہ تر حالات ایک جمل تحریرے معلوم ہوئے جوبجابدین مرکز اسمست میں میری نظرے گذری۔ (نیز طلاحظہ ہوتذکرہ صادقہ ص:۱۲۳،۱۲۲) تحریر سے میجی مترشح ہوتا ہے کہ جمادی الافری ۱۲۵۹ ہو عبرالففور کلال ، مولانا عبداللہ اور تین اور صاحبان روانہ ہوئے تھے۔ اامر مضان ۱۳۵۹ ہو کوموالات عندیت مل کے قرزند حافظ عبدالمجید کا تکاتے ہون، مجرمولاناروانہ ہوئے۔ ذی قعدہ ۱۳۵۹ ھ (نوم سام ۱۸۰۰) میں اینڈ ، ۲۰۰۰ جسم عندی معطقات پر قابض رہے۔ یعنی ۱۸۳۷ ہوتے ہوتوا ب وزیرالدوالد نے ب سے ب ب ب ب

r) بوسف زئول کے متعلق عام رپورٹ Repart on the Usuf Zais بوسٹ زئول کے متعلق عام رپورٹ

اوکنلے کابیان ہے کہ مولوی محد قاسم سندھ ہے کوائی پہنچے۔سیدضامن شاہ اوراس کا بھائی نوبت شاہ مولوی صاحب کے مرید ہوئے اور صاحب موصوف نے سیدصاحب کے نام پر آپکے خلفاء کو ہندوستان میں خطوط بھیجے کہ سیدصاحب دوبارہ ظاہر ہونے والے ہیں، اور سب کو مرحد پہنچ جانا چاہئے۔ مولوی عنایت علی نے فور آسرحد پہنچ کر سکھوں کو بالاکوٹ سے نکال باہر کیا، پھر نجف خان کہوڑی والے نے ان سے امداد طلب کی، زین بالاکوٹ سے نکال باہر کیا، پھر نجف خان کہوڑی والے نے ان سے امداد طلب کی، زین العابدین جی مولوی عنایت علی کی ہدایت کے مطابق ان (مولوی عنایت علی کی ہدایت کے مطابق ان رولوی عنایت بی کو چنا گیا تھا، کیکن انہوں نے شکست کھائی اور کمان داری سے دست بردار ہوگئے۔ (۱)

مجامدین کے کارنامے

قطعی طور پرمعلوم نہ ہو سکا کہ اس طرح مولا ناعنایت علی کتنے مجاہدین اپنے ساتھ لے جاسکے تھے، اور کن کن مقامات ہے گذرتے ہوئے کاغان پہنچ۔ بزارہ گزییٹر میں مرقوم ہے:

ہندوستانی مجاہدوں کا بقیۃ السیف گروہ یہ اعلان کرتے ہوئے کوائی (کاغان) میں جمع ہوا کہ خلیفہ سید احمد شہید نہیں ہوئے، بلکہ بہت جلد خلا ہر ہونے والے ہیں۔ شالی ہزارہ کے لوگ ان کے ساتھ ہو گئے۔ انہوں نے شکیاری، بیرکھنڈ، گڑھی صبیب اللہ خان اور اگرور کے قلعوں پر تملہ کر کے محافظ دستوں کوموت کے گھائے اتاردیا۔ (۲)

ایک مکتوب سے جوزی قعدہ۱۲۷۲ء (اکتوبر ۱۸۴۷ء) کا مرتومہ ہے، واضح ہوتا ہے کہ مولانا عنایت علی سادات کا غان اور دوسر ہے مقامی لوگوں کی امداد سے ذی المجبر ۱۲۶۱ھ (دممبر۱۸۴۵ء) میں بالاکوٹ پر قابض ہو چکے تھے۔ وہیں انہیں با قاعدہ امیر جہاد

سلیم کیا گیا۔سیدضامن شاہ کا غانی نے بھی ان کی اطاعت قبول کر لی اور آس پاس کے علاقوں کو سکھوں کے قبضے سے آزاد کرانے کے لئے زبردست جہاد شروع ہو گیا،جس کی تفصیلات آئندہ باب میں بیش کی جائیں گی۔

گلا بِسَنگھ ڈ وگرہ

مبادااو پر کے بیانات ہے سمجھا جائے کہ ظلم و جبر صرف سکھوں ہے مخصوص تھا، گلاب سنگھ ڈوگر ہ جس کے نام بالا کی ہزارہ منتقل ہوا تھا،اوروہ کا غان پر بھی قیضے کیلئے کوشاں تھا، کم جاہر نہ تھا،اس کے متعلق خودانگریزوں کے بیانات من لیجئے:

دراصل جمارے لئے اپنے نامزد کردہ (گلاب سنگھ) پرفخر کی کوئی و جہنہ تھی۔ جان لارنس کہتا ہے کہ گلاب سنگھ جائندھراور لا ہور میں عموماً متعارف تھا،
لیکن اس کیلئے ابھی تک ایک بھی شخص کی زبان سے کلمۂ خیرنہیں سنا۔ ہربرٹ ایڈورڈ زکوروزانہ گلاب سنگھ سے بات چیت کا موقع ملتا تھا، اس کا بیان ہے کہ محصاب تک جننے دہیں آ دمی ملے، گلاب شکھ ان میں سے بدترین تھا۔ بہت برا تحکراں ، بخیل اور جھوٹا۔ تیسرا گواہ جسے گلاب شکھ کے متعلق اندازے کے بہترین موقع ملی اندازے کے بہترین موقع ملی ہوتا ہے کہ اس کا نام دہشت کا بہترین موقع ملے، کہتا ہے کہ وہ طبعاً حریص اور سنگدل ہے، وہ جان ہو چھ کر اس غرض نے نہایت خوفناک ظلم وستم کا مرتکب ہوتا ہے کہ اس کا نام دہشت کا متراوف بن جائے اور کسی کواس کے اقتدار میں مزاحمت کا خیال تک نہ آ سکے۔ ستم ظریفی کی انتہا ہے ہے کہ ایسے آ دمی کو سلموں کی فوج کے بل پر سلموں کی خواہشات کے خلاف اور اس ہے بھی بڑھ کر بدنصیب رعایا کی خواہشات کے خلاف ہم و نیا کے حسین ترین ملک (سمیمرو بالائی ہزارہ) کی مندرِ حکومت پر خطاف نے والے تھے۔ (۱)

يخص تھاجس ہے جاہدين كو جہاد كاسابقہ پڑا۔

^{(1) &}quot;لأنف أف الدولارنس" الكريزي وصف باسور توسمته جداول من المام

تيسراباب:

مولا ناعنابت علی کے مجامدانہ کارنا ہے

ماخذ

اس باب میں جوحالات بیان ہوں گے،ان کا کوئی ذکر کسی مطبوعہ یاقلمی تاریخ میں موجود نہیں، صرف سرسری حالات بعض کتابوں میں مذکور ہیں۔مثلاً' ہزارہ گزینیڈ' " تذكرهٔ صادقه" ڈاکٹر بیلیو کی رپورٹ بوسف زئی کے متعلق اور ڈاکٹر ہنر کی کتاب ''ہندوستانی مسلمان''۔ مجھے حسن اتفاق ہے ایک طویل کمتوب مل گیا جو ۹ ر ذی قعد ہ ۱۲۷۲ء (۲۹ راکتوبر ۱۸۴۷ء) کا مرقومہ تھا، اس میں پورے جہاد کی کیفیت تو ذرکورنہیں البتة محرم ٢٢١ه (دمبر ١٨٣٥ ء) عيشوال ٢٢١ه (اكتوبر ١٨٣٧ ء) تك ك حالات قلمبند کردیئے گئے تھے۔ پیکتوب سرحد آ زاد ہے ہند دستان کے مختلف مرکز وں میں پہنچا ہوگا، مجھے اس کی نقل مولا نامسعود عالم مرحوم ومغفور سے ملی ،اورانہوں نے بید حیدر آباد (دکن) کے کتب خانہ آ صفیہ سے حاصل کی تھی۔افسوس کہ وہ پورے حالات ہے واقف نه تھے،للبذا اپنی کتاب ہندوستان کی پہلی اسلامی تحریک کی ترتیب میں اس مکتوب ہے کو کی فائدہ نہاٹھا سکے۔میرےعلم کےمطابق یہ پہلاموقع ہے کہاس مکتوب کےمندرجات ضروري تفصيلات كے ساتھ منظر عام برآ رہے ہيں۔ يقينا ايسے اور بھي مكتوب مندوستان آتے رہے ہو گئے اوران کاسب سے بڑاذ خبرہ علائے صادق پور (عظیم آباد) کے پاس ہونا چاہیے تھا،لیکن ان پرانگریزی دور میں ابتلاء ومصائب کی جو بحلیاں گرائی تنئیں ان میں سب کچھتاہ ہوگیا۔ کسی دوسری جگہ اب تک ان کا سراغ نہیں مل سکا، کاش ایہ یورا ذخیرہ کہیں سے دستیاب ہو سکے اور مجاہدین کی جانبازیوں کاب باب ہر لحاظ سے عمل ہوجائے۔

كرمهى يرحملهاورفنو حات

بالاکوٹ پر تبضے کے بعد مولا ناعنا یہ علی کوامیر جہاد مان لیا گیا تو انہوں نے فوج کا با قاعدہ انتظام کر کے محرم ۱۲۲۱ء میں گڑھی حبیب اللہ خال کو مخر کر لیا۔ اس کے بعد فتح گڑھ پر دھا وا بولا جو سکھوں کا ایک متحکم قلعہ تھا۔ اوائل رکتے الاول میں اس پر بھی قبضہ کرلیا۔ جب تک سکھوں کا تسلط قائم تھا اور ان کے خلاف آزادی کی کوئی تحریک جاری نہ موئی تھی، مقامی لوگ باہرین کے مطالبہ عشر کو تھر ارہے تھے۔ جب سکھوں کے اقتدار میں ہوئی تھی، مقامی لوگوں نے میں بے در بے رخے بیدا ہونے گئے اور وہ قلعوں کو خالی کردیے۔ فدکورہ ذیل مکتوب مظہر ہے:

بعد فتح قلعهٔ ندکور (قلعه فتح گره) الل دیگر قلعه جات به طور دعوت طلب نمودند - یکی گفت که اول در قلعهٔ ما آیده محاسبه کو خیره و اسباب گیرند و مرابه امن رخصت کنند - غرض به عرصه به فته عشره بست و دو قلعه ملک پکههلی و دهموز و اورش و تنول تا ملک بزاره خالی شد و توپ و شابین واسپ و خیر و بارود دسرب و سلاح و دیگر اسباب بسیار بدست غازیاں در آید - قبل ازیں اگر مجابدین از زمیندارانِ ملک مکهلی عشر طلب می کردند، به جواب می گفتند که اول فوج بادشایی را بکشید بعده عشر خواجیم داد و قبل از آل یک خرم بره نه خواجیم داد و

ترجمہ: قلعہ فتح گڑھ کی تبخیر کے بعد دوسر نے قلعوں کے ذمہ دار دعوت دے دے کر بلانے گئے۔ ایک کہتا: پہلے ہمارے قلع میں آیئے ، ذخیرے اور اسباب کا حساب لے لیجئے اور مجھے بدامن دامان رخصت کر دیجئے ۔غرض ہفتے عشرے میں بائیس قلعوں پر قبضہ کرلیا گیا۔ پکھلی ، دھمعوڑ، اورش اور تنول کا علاقہ ہزارہ تک زیر تگیں آگیا۔ تو پی ، شاتینیں ، گھوڑے، نچر، بارود، سیسہ، ہتھیار اور بہت سا دوسرا سامان مجاہدین کے ہاتھ آیا۔ اس سے بہلے مجاہدین کی اسلامی کے زمینداروں سے عشر ما تگتے تو وہ کہتے کہ پہلے سکھوں کی فوج کو نکالو، اس کے بعد ہم عشر دیں گے۔ اس کے بعد ہم عشر دیں گے۔ اس کے بعد ہم عشر دیں گے۔

مظفرآ بادير بورش

جیدا کہ پہلے بیان کیا جا چکا ہے، مرکزی حکومت میں اہتری کے باعث سکھوں کا شکنہ کوتہ ارڈھیا پر چکا تھا، اور مسلمان سردار حوصلہ پاکر مقابلے کیلئے تیار ہو چکے تھے۔ مولا ناعنایت علی نے حتی الامکان ان سب کے لئے اعانت کا بندو بست کردیا، جوان کے خطوط اقد ام سے قریب تھے۔ چنانچ ایک فوج مولوی مقصود علی کی قیادت میں سلطان حسین خاں بمباکی امداد کے لئے مظفر آباد بھی بھیج دی گئی۔ اس میں دوسومقامی سیابی شامل تھے اور تھوڑی ہی تعداد مجاہدین کی تھی۔ یہ معلوم نہیں کہ خاص مظفر آباد میں جنگ ہوئی یا اس کے آس پاس کسی خاص مقام پر ، لیکن خدا نے مجاہدین کو فتح و کا مرانی سے مرفرازی بخشی۔

فنح گڑھ میں مقابلہ

فتح گڑھ میں مقابلے کی کیفیت مکتوب میں بوں بیان کی گئی ہے: لشکر منافقان چپ وراست دامانِ کوه گرفته ومجاہدین ورمیدان مقامل نے

صدسواران کفار بودند، درعقب سواران نج بزار نشکر بیاده بودوملکیال که به ظاهر مرسواران کفار بودند، درعقب سواران نج بزار نشکر بیاده بودوملکیال که به ظاهر دم موافقت زوند نیز ده دواز ده بزار بودند و با منافقان بهم صلاح بودند که برگاه مجاهدین را شکست شود، بهدمنافقان و کفار منفق شده یک یک مجاهدرا پاره پاره کنند و نیخ از بن مجاهدین بر آرند و لشکر روسیله ازی طرف چش بود و مجاهدین

بریشت آ ں جی کے وقت نماز ظهر رسید، مجامدین نماز ظهرخواندہ مقابلہ با کفار شروع کردند۔

ترجمہ: جودود لے لوگ سموں کے ہمراہ سے ان کالشکر پہاڑ کے دامن میں دائیں بائیں کھڑا ہوگیا۔ مجاہدین سامنے میدان میں سے ،ان کے مقابل سکھوں کے نوسوسواراستادہ سے ۔ان سوراوں کے پیچھے پانچ ہزار پیادہ سکھوں کے پرے پھلے ہوئے سخے۔ جوملکی بہ ظاہر طرف داری کا دَم مجررہ ہے تھے ،ان کی تعداد بھی دس بارہ ہزار سے کم نہتی ۔انہوں نے سکھوں کے حامیوں سے مشورہ کررکھا تھا کہ مجاہدین کوشکست ہوتے ہی ال جل کران پر ہلہ بول دیا جائے اوراکی ایک مجاہدین کوشکست ہوتے ہی ال جل کران پر ہلہ بول دیا جائے اوراکی ایک مجاہدین کی طرف ہے روبیلوں کالشکر آگے تھا، اور مجاہدین اس باتی نہ رہے ۔مجاہدین کی طرف سے روبیلوں کالشکر آگے تھا، اور مجاہدین اس بحد جنگ شروع کی ۔

جنگ کی کیفیت

سکھ تعداد ہیں بھی زیادہ تھاوران کے پاس سامانِ جنگ بھی بہت زیادہ تھا۔ان کی شاہینوں اور بندوقوں کی گولیاں اولوں کی طرح مجاہدین پر ہر ہے لگیں:

چنا نچددوگونی بردست محمر عرفتانی رسید، یک گونی دست اورازخی نمود، اما نقصان استخوال نه شد ، اما نقصان استخوال نه شد ، اما نقصان استخوال نه شد ، اما نشان از دست نشانی مذکور بر زمین افزاد، ملکیال دانستند که شکست مجابدین شرد یدلیکن محمر مشان را جلد برداشت و تمامی مجابدین ورومیله یک بارگی حمله برسوارال نمودند و نعر کا الله اکبرز دند - به مجر دبله کردن ایشال حق تعالی برسوارال رعب اندا خت ، یک بارگی پشت داده بگر یختند و دور رفته ایستاد ندوول بائ خود را خوب مضبوط نموده ، باز بله برمجابدین نمودند، چول مجابدین بهم بله کردند کفار

بے استقامت شدہ پیپا شدند، بارچہارم تاب مقاومت نیاوردہ ایں قدر ہراساں شدند کہ ڈیر کو خودرا گزاشتہ دور تر دفتند۔

ترجمہ: محد عمر نشان بردار کے ہاتھ پردوگولیاں لگیں۔ ایک گوئی سے
ہاتھ ذخی ہوگیا ،لیکن ہڈی کو ضرر نہ پہنچا۔ دوسری گوئی کا زخم اگر جہکاری نہ تھا ،
لیکن نشان محمد عمر کے ہاتھ سے زبین پر گرگیا۔ مقای لوگوں نے سمجھا کہ مجاہدین
کوشکست ہوگئی ،گرمحم عمر نے جلد نشان زبین پر سے اٹھالیا۔ پھرمجاہدوں اور
روہیلوں نے ایک دم سواروں پر تملہ کر دیا اور القدا کبر کا نحرہ لگایا۔ ہلہ ہوتے ہی
خدانے سواروں پر ایسار عب ڈال دیا کہ وہ پیٹھ پھیر کر بھاگ نگے اور دور جاکر
کھڑے ہوگئے۔ وہاں سے دوبارہ جی کڑا کر سے ملہ کیا۔ اِدھر سے مجاہدین بھی
ہوئے۔ وہاں سے دوبارہ جی کڑا کر سے ملہ کیا۔ اِدھر سے مجاہد بن بھی
ہوئے۔ وہی مرتبہ مقابلے کی تاب نہ لاکراس قدر حوال باختہ ہوئے کہ ڈیرہ
چھوڑ کر بہت پیچھے چلے گئے۔

فراراورتل

سکھوں کا خیال میر تھا کہ مجاہدین مال نئیمت سنجالنے میں لگ جا کیں گے، اس وقت حملہ آسان ہوگا، کین مجاہدین نے مال نئیمت کی طرف آ نکھا ٹھا کر بھی نہ دیکھا اور آگے بڑھ کراس ٹیکری پر چڑھ گئے جو سکھوں کی فوج کے سامنے تھی، اور وہاں اپنانشان گاڑ دیا۔ سکھوں کو جب معلوم ہوا کہ مجاہدین سر پر آپنچ تو:

مت بالکل باخته بگریختند و بازسوئے پشت ند دیدند و لشکر ملکیاں کہ ہردو جانب کو ہتماش گر بود ، فتح مجاہدین دیدہ بر ڈیر و کفار افتا دند و غارت گری مال شروع نمودند و مال زائد از یک لک روپیہ بہ غارت رفت ، در کمریک سوار شصت اشر فی و مال ہزار روپیہ بود وہمیں قتم مال فراواں بہ غارت بردند، موسم برشکال بود و جاہجا کشت شالی در پیش ۔ اسپاں و بیاد و کفار از رفتن ماندہ شدند۔ ترجمہ: بالکل حوصلہ ہار کر بھاگ گئے اور پیچھے مڑکر نہ دیکھا۔ مقامی
لوگوں کا جوگر وہ دامن کوہ میں دونوں جانب کھڑالڑائی کا نظارہ کرر ہاتھا، بجابدین
کوکامیاب دیکھا تو سکھوں کے ڈیرے پرٹوٹ پڑا اور مال لوٹے لگا۔ ایک
لاکھے نیادہ کا مال لٹ گیا، ایک سوار کی کمر میں ساٹھا شرفیاں اور ایک ہزار کا
مال بندھا ہوا تھا۔ ای طرح بہت سا مال لوٹا گیا۔ برسات کا موسم تھا، ہرطرف
دھان کے کھیت تھے۔ سکھوں کے سوار اور بیادے چلتے تھک کر چورہو گئے۔
عورتوں اور مردول نے سکھوں کی میسر اسیمگی دیکھی تو اسباب اور ہتھیار چھینے کے
لئے نکل بڑے، کوئی ڈنڈے سے کسی کو مار ڈالنا، کوئی پھر مار کر گرادیتا۔ ایک گوجر نے جو
کھیتی باڑی کر رہاتھا، اسنے سکھ مارے کہ شام کے وقت ان سے چھینی ہوئی بندوقوں کا گٹھا
سریرا ٹھا کر گھر لایا:

تاده کروه بجز لاش دیگرنظرنی آید ومجامدین تا شام تعاقب آنها کردند، بعد ازاں بیموضع سلہذمقام کردند۔

ترجمہ: دل کوں تک مقتولوں کی الاشوں کے سوا کچھ نظر نہ آتا تھا۔ مجاہدین نے شام تک ان کا بیچھا کیا، پھرموضع سلہد میں تشہر گئے۔

کچھ کھو گئی کے کھیتوں میں جھپ گئے تھے، مقامی لوگ تین روز تک انہیں ڈھونڈ ڈھونڈ کر مارتے رہے۔ سکھ عموماً قوی ہیکل تھے، لوگوں کو جبرت ہوتی تھی کدان سے کیوں چھ بن ندآیا، اس جنگ کی متعین تاریخ نہیں بتائی گئی، لیکن موسم چونکہ برسات کا تھااسلے سمجھنا چاہئے کہ یہ جمادی الاخریٰ سے شعبان ۱۲۹۲ھ (مئی سے جولائی ۱۸۳۲ء) تک کا واقعہ ہے۔

او کنلے کا بیان

او کنلے کا بیان ہے کہ مجاہدین مظفر آباد پر حملے میں شکست کھا چکے تقے اور دوسرے

حملے کی تیار یوں میں مصروف تھے،اس وقت ان کے تین بڑے لیڈر تھے: ولایت علی ، عنایت علی اور مقصود علی ۔ دوسرے حملے میں سکھوں نے شاست کھائی اور وہ جنوب کی طرف پسپا ہوئے۔ بجاہدین نے شدت وسرگری سے تعاقب کیا،ان کی فتح کا حال سن کر پشھانوں کی بھی ایک جماعت ساتھ ہوگئ تھی۔ سکھوں نے مانسہرہ میں قدم جمانے کی کوشش کی ہلین دوبارہ شکست کھائی۔ غرض مجاہدین نے تھوڑے ہی وقت میں خاصے کوشش کی ہلین دوبارہ شکست کھائی۔ غرض مجاہدین نے تھوڑے ہی وقت میں خاصے بڑے علاقے پر قبضہ جمالیا، جودریائے سندھ کے بائیں کنارے کے ساتھ ساتھ ہری پور سے کاغان تک اور ستھانہ سے کشمیرتک پھیلا ہوا تھا۔ (۱)

مقامى رؤسا

مناسب معلوم ہوتا ہے کہ اس باب کوختم کرنے سے پیشتر بعض ممتاز مقامی رؤسا وخواتین کی کیفیت اختصار آبیان کر دی جائے ، جو بہطیب خاطر مجاہدین کی حمایت پر آمادہ ہوئے ، یا جنہیں حالات نے حمایت پرمجبور کر دیا۔

ا- سلطان محمد سین خال بمبا: رئیس بوئی و مظفر آباد شجرهٔ نسب سیب:

سلطان محرحسین غال بن مظفر خال ثانی (برادرسلطان زبردست خال) بن سلطان محرحسین غال بن مطفر خال ثانی (برادرسلطان زبردست خال) بن سلطان محصود خال بن سلطان میرزاشه بید بن سلطان بهیت خال ثانی بن سلطان مظفر خال اول جس نے ۱۹۵۲ء میں مظفر آ باد کی بنیا در کھی ۔ سلطان نجف خال کہوڑی والا بھی اسی خاندان سے تھا، یعنی وہ سلطان حسن علی خال بن سلطان محمود خال کے بھائی سلطان اکبرعلی خال کا فرزند تھا۔ اس خاندان کے افراد نے جا بجا جھوٹی چھوٹی سرداریاں قائم کر لی تھیں ۔ سلطان محمد حسین خال جو مجابدین کا حد درجہ مخلص رفیق تھا، سرداریاں قائم کر لی تھیں ۔ سلطان محمد حسین خال جو مجابدین کا حد درجہ مخلص رفیق تھا، مرداریاں عامد میں بمقام بیٹا ورفوت ہوا، اور اس کا بھیجا سلطان محمد برکات خال علاقہ بوئی کا

⁽¹⁾ كلكته ربويو بابت اكتوبر • ١٨٧ء ص: ٣٨٢

وارث بنا، پہ جام کیراب تک قائم ہے۔

۲- سردارمحد امین خال، خان خیل رئیس گڑھی حبیب اللہ خال: یہ سردار حبیب اللہ خال: یہ سردار حبیب اللہ خال کا بیٹا تھا، جس کے نام ہے گڑھی موسوم ہوئی۔ اس نے بھی بڑے خلوص ہے بیٹ کی اعائت کی۔ ۱۸۲۸ء میں وفات یائی۔

۳- نواب خال پلال تنولی: پیر بلند خال کافرزند تفااور رئیس شنگری کے لقب سے مشہور ہے۔ سیدصا حب کے ساتھ رہااور مجاہدین کا بھی ساتھ دیا۔ '' ہزارہ گزییر'' بیں ہتایا گیا ہے کہ اس نے مجاہدین کو ساتھ لے کر دوڑ ندی کو عبور کر کے ما تک رائے پر قبضہ کرلیا تھا۔ (۱) یہ بھی بتایا گیا ہے ، ہزارہ کے حاکم مول راج نے نواب خال کوا پلجی بنا کر صواتیوں کے پاس بھیجا تھا کہ وہ سرکشی اختیار نہ کریں، لیکن نواب خال نے حالات سکھوں کیلئے ناسازگار پائے تو قلعہ شروان پر قبضہ کرلیا۔ (۲) قلمی مکتوب سے واضح ہوتا ہے کہ جو مقامی سردار سکھوں کے لئکر کو علاقہ جدون بیں لانے کے ذمہ دار تھان میں نواب خال بھی شامل تھا۔ مجاہدین کی کامیا بی کے بعد اسے گرفتار کرلیا گیا، لیکن محمد ابین خال خال خال خال اور بعض دوسر مخلص رفیقوں کی سفارش پراس کا قصور معاف ہوگیا۔

سم - مدوخال ہندوال تنولی: بیسردار پائندہ خال دالی امب کا جھوٹا بھائی تھا۔ سیدصاحب کامعین درفیق رہا۔ قلمی کمتوب میں بتایا گیا ہے کہ بیبھی ابتدا میں مجاہدین کا مخالف تھا اور گرفتار ہوا، کیکن مخلص سرداروں کی سفارش پراسے بھی جھوڑ دیا گیا۔ پائندہ خال نے اس کیلئے پھلوہ کی جا گیرمقرر کردی تھی۔ ۱۸۷۸ء میں فوت ہوا۔

۵- سيد ضامن شاه رئيس كوائي (كاغان):اس كاشجرة نسب بيب:

ضامن شاہ بن حسن علی شاہ بن سید احمد بن عارب شاہ بن شاہ زمال بن سید جلال تر مذی ۔ یہ برابرمجاہدین کے ساتھ رہا۔ اسی نے مولا ناعنا یت علی کودعوت دے کر بلایا تھا،

⁽۱) گزیم مطبوعه که ۱۹ و ۱۳۳۰ ۱۳۳۱ (۲) گزیم مطبوعه که ۱۳۳۰ (۱۳)

اس کی امداد سے بالاکوٹ فتح ہوااور مجاہدین کو بالائی ہزارہ ہیں حکومت قائم کرنے کا موقع ملا۔ اسی نے گلاب سکھ والی تشمیر کے دیوان ابراہیم شاہ اور اس کی فوج کو بیلہ میں موت کے گھاٹ اتاراتھا، بعداز ال ضامن شاہ نے کا غان میں انگریزی مداخلت کی مخالفت کی، اس وجہ ہے ایک فوج ہمیجی گئی جس نے سادات کو گرفتار کرکے بقد میں نظر بند کردیا۔ ضامن شاہ نے غالبًا اے ۱۹ ء میں وفات پائی۔ اس کا بھائی نوبت شاہ بھی تمام مجاہدانہ سرگرمیوں میں شریک رہا، وہ غالبًا اے ۱۸ ء میں نوت ہوا۔

۲-ان کے علاوہ راجا حیدر بخش خال رئیس خان پور، غلام خال ترین، خان زمان خال طاہر خیلی، حسن خال کرڑال، راجا روح اللہ خال، راجا سر باز خال ڈھونڈ، پیرخال اور بہت سے دوسرے اصحاب کا ذکر آیا ہے، لیکن ان کے حالات معلوم نہ ہو سکے۔ ان میں ہے بعض نے سید اکبرشاہ ستھا نوی کے ماتحت آزاد حکومت کی تاسیس کے لئے کوشش کی بعض نے مجاہدین کو مدودی۔ جب حالات بالکل ناسازگار ہوگئے اور انگریزوں نے انتظامات کی باگسات کی باگس اپنے ہاتھ میں لے لی تو مختلف رئیس کے بعد دیگرے انگریزوں کی اطاعت قبول کرتے رہے۔ (۱)

 ⁽۱) اس ملیلے میں سید نظام حسن شاوصا حسب کاظمی زیارت شریف ٹھنگر سے بھی خاصی معلو مات حاصل ہوئیں۔

چوتھاباب:

اسلامی حکومت کی تاسیس

مقبوضات كى كيفيت

قلمی مکتوب مظہر ہے، فتح گڑھ کی جنگ کے بعد سکھوں پراتی ہیب طاری ہوئی کہ انہوں نے پکھلی میں دوبارہ قدم رکھنے سے توبہ کرلی۔ نوال شہر میں ان پرالی ضربیں لگیس کے مطاقہ کو دون سے بھی کا ملا دست بردار ہوگئے اور اسلامی مملکت کی سرحدنوال شہر سے سکندر پورکے قریب تک پہنچ گئی:

توپ وشاہین وشتر واسپ و ذیر و و خیمہ و مال ہائے فراواں و دیگراز جنس اسباب ہائے کا ان و دیگراز جنس اسباب خرند بسلکیاں و اگز اشت نمو دہ شد۔ متر جمعہ: سکھوں سے جوتو ہیں ، شاہینیں ، اونٹ ، گھوڑ ہے ، ڈیرے ، خیمے بہت سامال اور قیمتی چیزیں ملیس مومنوں کے قبضے میں آئیں ، باتی سامان ملکیوں کے حوالے کر دیا گیا۔

اس واقعے کے بعد علاقہ کہدون، علاقہ تول، وادی بھوگڑ منگ، وادی کونش، پکھلی بالا، پکھلی زیریں، کا نڈھی، دھموڑ، درہ کنہار وغیرہ عشر ادا کرنے پر راضی ہو گئے اور خدا کے فضل سے محاصل با قاعدہ جمع ہونے لگے۔ بعض اصحاب کو جا گیریں اور معافیاں ملیں، بعض کو انعابات دیے گئے۔

سيإه كاانتظام

قبل ازیں فوجی خدمات کے لئے تین صورتیں جاری تہیں : بعض اوگول کواں شام یا

زمینیں دیدی جاتی تھیں کہ وہ جنگ کے موقع پرساز وسامان کیکر حسب تھم جمع ہوجا کیں۔
جن سرداروں کو بڑی بڑی جا گیریں حاصل تھیں ، وہ جنگ کے وقت اپنی جا گیر ہیں سے فی
گر ایک ایک اسلحہ بند کلا لیتے تھے۔ بعض لوگوں کو حکر ال با قاعدہ ملازم رکھ لیتے تھے۔ بہ
تنوں صورتیں مجاہدین کے ابتدائی زمانے میں بھی جاری رہیں۔ قلمی مکتوب سے واضح ہوتا
ہے کہ دس ہزار کے قریب افراد جا گیرواروں کے ذریعے سے میدان میں لائے جا سکتے
ہے کہ دس ہزار روہ بلے براوراست ملازم تھے:

بدای حساب سوائے نو کرال بہ حکم خدا می ہزار نشکر موجود است ، امالشکر جرار واعمّادی ہمال است کدنو کراست .

ترجمہ: اس حساب سے نوکروں کے علاوہ بہ فضل خداتمیں ہزار جنگجو معرزوہ میں کمیکن حقیقی اور قابل اعتاد فشکروہی ہے جو برا وراست ملازم ہے۔

نظم ونسق ئى تفصيل

مجابدین نے تمام قلعوں میں حسب ضرورت فوج مقرر کررکھی تھی اور برقلعہ کی متعلقہ آ بادی کا انتظام قلعہ دار کے ہاتھ میں تھا، نیز ہر مقام پر مخصیل دار مقرر تھے، جنہیں '' دار دغہ محاصل'' کہا جاتا تھا۔ اسی طرح ہر جگہ نزانے ،اسلحہ خانے اور اصطبل کے انتظام کے لئے مختلف اصحاب مامور تھے۔ بعض اوگوں کا کام بہتھا کہ سپاہیوں کو با قاعدہ قواعد کراتے رہے۔ قلمی مکتوب سے بعض افراد کی عبدہ داریوں کا حال بھی معلوم ہوتا ہے مثلاً:

| عبده | نام |
|----------------------------------|--------------------------------|
| قلعه دار مأسهره | داروغدر بإست الله |
| داروغهٔ محاصل | حاجی گدائی رام پور بولیاں والا |
| تھانہ دار برج مانگی (علاقہ جدون) | منشی شجاع الدین |

| قلعه دار بالا كوث | رمضان خال ساكن دهنكي (عظيم آباد) |
|------------------------------------|----------------------------------|
| ·· | |
| منشى قلعه مانسهره | منشى غلام على پذييه والا |
| داروغه محصول بالاكوث | حاجی نجوظیم آبادی |
| جمعدارسا بهان درواز ؤ کلال فتح تره | ميان محرعلى عظيم آبادى |
| جعدارسپامیان خاص | حاجی ششیرخال ساکن صاحب سنج |
| محصل مال. | بهادرخال ساكن صاحب شنج |
| معلم قواعد سإبيال | ميال عبدالله عظيم آبادي |
| واروغاسلان خانه واصطبل | سراج الدين |
| ناظم حضوري وداروغة قيدخانه | ناظرر يحان الدين (۱) |
| ناظم نزانه | مياں بدرالدين بوڙھن والا |
| ناظم ليم سياه | ا كبرميال رام پوري بوليال والا |
| ىپەسالارلشكر | مولوي مقصورعلي |
| ناظم تو شدخانه | صوفی معزالدین فریدی |
| ناظم مودی خانه | ناظم فريدي |

۳.۷

یے صرف چند خدمتیں ہیں،جن کی کیفیت معلوم ہو سکی ۔ تمام مقامات پراس طرح کے انتظامات موجود تنھے۔

⁽۱) میرغالباً وہی بزرگ ہیں جن کامقد مدانبالہ ہیں بار ہا آیا۔ ہندوستان میں سرکاری ملازمت اختیار کریٹیے کے بادجود فراجی زراور فراہمی مجاہدین کا کام برابر کرتے رہ ہے۔ لیکن معلوم ہوتا ہے کہ آمییں دارو کیرکاعلم ہو چکا تھا واس کے گرفیآری سے پیشتر سرحد کیجھے کے بہنا ہروہ ہیں فوت ہوئے۔

اختساب وحدود

احتساب اورانسداو جرائم کاسلسنه بھی شریعت کے مطابق جاری کرویا گیا تھا۔ مثلاً بہرخص کیلئے لازم تھا کہ نماز باجماعت اداکر ہے، جو تخص شرقی عذر کے بغیر کوتا ہی کامر تکب ہوتا تھا اس سے جرماندلیا جاتا تھا۔ عوام سے پانچ سیر نلداور امیروں سے ایک روپید فی کس ۔ جعد کی نماز میں کوتا ہی کیلئے بھی یہی سز المیں مقرر تھیں۔ ڈاکوول کوتل کی سزادی جاتی تھی، جولوگ شادی اور نمی میں غیر شرق حرکات کے مرتکب ہوتے تھے ان سے بھی جرمانہ لیا جاتا تھا۔ جا بجا مفتی مقرر کرد یئے گئے تھے، مثلاً بالاکوٹ میں خدمت افراء پر مولوی یکی علی عظیم آبادی مامور تھے۔ درؤ کنہار میں ملا میر اسد اخوند زادہ کو افراء اور احتساب کا کام سونیا گیا تھا۔ ان کے ماتحت بہت سے علاء مقرر تھے، جود یہات میں دورہ کرتے رہتے ، بے نماز دل کو نماز کی تعلیم دیتے ۔ محد حی اخوند زادہ علاقہ کنہار کا قاضی تھا۔ کرتے رہتے ، بے نماز دل کو نماز کی تعلیم دیتے ۔ محد حی اخوند زادہ علاقہ کنہار کا قاضی تھا۔ کہ کے مقرر کررکھا تھا۔

مركزكي كيفيت

خود مولانا عنایت علی کا مرکز فتح گڑھ تھا، جس کا نام بدل کر اسلام گڑھ رکھ دیا گیا تھا۔ سات قرابینی ہروفت ان کے ساتھ رہتے تھے۔ سرداروں اور خوا نین سے جباد کے متعلق مشورے کیے جاتے تھے۔ رسالداروں یا سالاران جیش میں ہے کسی کو بلایا جاتا تودہ ایک سیائی کے ساتھ مولانا کے پاس آتا۔ کابل اور کشمیر کے ساتھ دوستانہ تعلقات قائم ہو چکے تھے۔ شخ امام الدین سکھوں کی طرف سے کشمیر کا گور نرتھا، اگر چہ اگریزوں فائم ہو چکے تھے۔ شخ امام الدین سکھوں کی طرف سے کشمیر کا گور نرتھا، اگر چہ اگریزوں نے سکھوں کی بہلی جنگ کے بعد کشمیر کو گلاب سنگھ کے ہاتھ فروخت کر دیا تھا الیکن شخ امام الدین نے ابتدا میں گلاب سنگھ کو کشمیر کا قبضہ دینے سے انکار کر دیا تھا، اور مولانا عنایت علی سے نامہ و بیام شروع کر دیا تھا، قامی کمتوب مظم ہے :

صوبه دار تشمیر شیخ امام الدین به کمال تمنا را و موافقت پیوده برائے ارسالِ خطوط جوڑی ہر کار ومقرر نموده ۔ چنانچه در مر ماه دوسه خط شیخ موصوف مضمن کلام محبت ودوستی می رسند۔

مر جمہ: تشمیر کے صوبہ داریٹ امام الدین نے دلی خواہش سے موافقت کا راستہ پیدا کیا اور ارسالِ خطوط کے لئے ہر کاروں کی جوڑی مقرر کردی۔ جنانچہ ہر مہینے اس کی طرف سے دوئتی اور محبت کے دوئین خط آ جاتے ہیں۔

نواں شہر کا قلعہ فتح ہوا تو اس پرسلامی کی تو پیں سر کی گئیں۔ شِنْح امام الدین کے پاس بی خبر بھیجی گئی تو اس نے قاصد کو بہت ساانعام دیا۔ حکومت کا پورا کاروبار کتاب وسنت کے مطابق انجام یا تاتھا۔

خراج كى تفصيلات

خراج کے پورے حالات تو معلوم نہیں ، کیکن بعض علاقوں کی رقبوں کا ذکر قلمی مکتوب میں آیا ہے، مثلاً:

| رقم | علاقه |
|-----------|------------------|
| سوله بزار | درهٔ کنبار |
| پانچ ہزار | درهٔ مجلو گر منگ |
| سات بزار | کا نڈھی |

| چېبيس بزار | ي الماني |
|-------------------|---|
| تىس بزار | علاقه ٔ جدون سالا ران |
| تىمىن بىزار | علاقه ٔ جدون حسن ز کی ومنصور |
| حياليس ہزار | مظفرآ باد |
| وس بزار | كرنا |
| بی <i>ں بز</i> ار | نندهياز |
| بی <i>ں ہزار</i> | الائي |

اس خراج میں جا گیریں شامل نتھیں ۔

يانچوال باب:

مولا ناولا بت علی کی تشریف آوری

مولا ناولا يت على كى آيد

یہ حالات تھے، جب اجا نک کارشوال ۱۲۶۲ھ (۹ر اکتوبر ۱۸۴۲ء) کومولانا ولایت علی علاقۂ مجامدین میں پہنچ گئے قلمی مکتوب مظہر ہے:

جناب حضرت مولانا بالفضل اولانا مظهر كرامات لم يزلى بمحرم اسرار حفى و جلى ، مرشد نا وامير نامولوى ولايت على صاحب ادام الله بركاته وانواره مع تمام • ابل قافله و آلات واسباب وخيل و دواب محض از فضل رب الارباب از ميان جهم اعدابه عافيت تمام به حكومت ابل اسلام جلوه افروز شده موجب حيرت خويش و برگانه وظهور آية حافظ ريگانه كشتند -

ترجمہ: خدا کی کرامتوں کے مظہر، چھپے اور کھلے بھیدوں کے جانے والے، ہمارے مرشداور ہمارے امیر مولوی ولایت علی (خدا اُن کے برکات و انوار کو دوام بخشے) اہل قافلہ، ہتھیا روں، اسباب، گھوڑوں اور اونوں کے ساتھ اہل اسلام کے دائر ہ حکومت میں جلوہ افروز ہوئے۔ بیضدا کا خاص نفتل تھا کہ وہ دشمنوں کے ہجوم سے سلامت گذر آئے، اس پر اپنے اور بیگانے ہر ایک کوجریت ہوئی اور اس واقعے کو حافظ حقیق کے نشان کا ظہور مجھا گیا۔

واقعات کی سیح کیفیت معلوم ہوتی ہے کہ مولا ناعنایت علی نے ہزارہ میں مجامدین کی رفتار کامیا بی کا اندازہ کرتے ہوئے مولانا ولایت علی کے پاس سازگار طالات ک مفصل اطلاعات بھیج دی ہوں گی اور عرض کیا ہوگا کہ آپ تشریف لے آئیں، ذنہ مولا نابنظاہر پنجاب ہی میں سے گذر کر ہزارہ پہنچے۔البتدیمعلوم ندہوسکا کہ انہوں نے بخیرت گذرجانے اور بازیرس سے محفوظ رہنے کیلئے کیا تدبیریں اختیار کیس۔

رفقاءاور مال واسباب

قلمی مکتوب کی عبارت سے ظاہر ہے کہ مولا نا کے ساتھ اسلی بھی تھے اور سواریاں بھی ، البتہ اہل قافلہ کی تفصیل نہیں بتائی گئی۔ تذکر ہُ صادقہ کا بیان ہے کہ مولا ناعنایت علی کے جانے ہے:

دوسال بعد آپ به معیت مولوی فیاض علی ومولوی یکی علی ومولوی ا کبر علی ومولوی ا کبر علی وصاحبز اؤ کلال ،مولوی عبدالله بداراد ؤ تائید ونصرت ضامن شاه بالا کوٹ کی طرف رواند ہوئے ،اور اپنے چھوٹے بھائی فرحت حسین کو یہاں پیٹنہ ہیں اپنا جانشین مقرر کر گئے اور اپنے سب عیال واطفال کو یہیں چھوڑ گئے ۔(۱)

تھوڑے ہے آدمیوں کی رفاقت عین قرین قیاس ہے۔ اس صورت میں سکھوں
کے علاقے ہے ان کا مسافرانہ گذرجانا مشکل نہ تھا، لیکن قلمی مکتوب کی عبارت ہے دل پر
بیاثر پڑتا ہے، گویا مولانا کے ساتھ خاصابر اللاوکشکر تھا۔ ممکن ہے کہ مکتوب نگار نے لکھتے
وقت احتیاط ہے کام نہ لیا ہو۔ یہ بھی ممکن ہے کہ مولانا ولا بیت علی نے ہمرا ہیوں کو چھوٹی
چھوٹی ٹولیوں میں تقنیم کر کے سکھوں کے مقبوضات سے گزار دیا ہوا درسر حد پہنچ کروہ لوگ
مولانا ہے لل گئے ہوں۔

ایک سوال میہ پیدا ہوتا ہے کہ مولا ناکس راستے سے ہزارہ میں داخل ہوئے؟ چونکہ
ان کا استقبال مانگی میں ہوا، جیسا کہ آگے چل کر معلوم ہوگا، اس لئے مجھنا چاہئے کہ وہ
(۱) تذکرۂ صادقہ میں ۱۳۳ سوائے احمدی کی تحریرے متر شح ہوتا ہے کہ مولانا عنایت علی سے تمن برس بعد مولانا
ولایت علی سے تنے طبع اول میں ۱۳۵۔ نیز او پرایک روایت کی بناء پر عرض کیا جا چکا ہے کہ مولانا عبد الله الگ روانہ
ہوئے تھے۔

حسن ابدال سے ہری پوراور حویلیاں ہوتے ہوئے آئے۔ حویلیاں سے ایک سیدهاراستہ بھی مانگلی کی طرف جاتا ہے، دوسراراستہ رجوعید، دھمتو ڑ ،نواں شہر، کا کول سے ہے۔ مانگل کا عام قدیم راستہ بہی تھا۔ یہ بتانامشکل ہے کہ ان دونوں میں سے مولانا نے کونساراستہ اختیار کیا۔

مانسهره میں ورود

تشریف آوری کی اطلاع پہلے ہے مل گئی تھی، للبذا سپاہیوں کی ایک جماعت استقبال کے لئے مانگلی بھیج دی گئی، جسے قلمی کمتوب میں اہل اسلام کی سرحد بتایا گیا ہے، یعنی مجاہدین کا مقبوضہ علاقہ وہاں سے شروع ہوتا تھا:

سپاہیاں درآ نجارسیدہ بندوق ہاسر کر دندونذ رہا پیش نظر آ ور دند۔ ترجمہ: سپاہیوں نے مولا نا کے نمودار ہوتے ہی بندوقیں جلا کیں اور نذریں پیش کیں۔

مولا نامانسمره پنجی تو و بال بھی پر جوش استقبال ہوا جامی کمتو ب مظہر ہے:
داروف ریاست اللہ صاحب کار پرداز قلعہ (مانسمرہ) مع سپاہیاں برائے
استقبال ہیروں از قلعہ آ مدہ بہ تفنگ ہاسلامی نمود ندو نذر با پیشکش آ وردند۔ برادر
حضرت مولوی مقصود علی را مع کشکر فراداں از پیادہ وسوار وشتر نال ونشاں بہ
استقبال ردانہ فرمود ند۔ مولوی صاحب موصوف ہم بیروں قلعہ مانسمرہ رسیدہ بہ
سلامی از سپاہیاں تفنگ وقر ابین وشتر نال شلک کنانید ندوازی طرف نیز بہ تھم
سیاہیاں از بالا نے قلعہ قرابین بادبندوق باسر نمود ند۔

ترجمہ: قلعہ مانسمرہ کے کار پرداز دارد غدریاست اللہ نے باہر نکل کر بندوقوں سے سلامی دی اور نذریں بیش کیں۔ مولانا عنایت علی نے مولوی مقصود علی کوسواروں اور پیادوں کے بڑے لئکر، چھوٹی تو یوں اور نشان کے ساتھ استقبال کے لئے بھیج دیا تھا۔مولوی صاحب موصوف نے بھی قلعہ مانسم ہ سے باہر سلامی میں بندوقیں، قرابینیں اور چھوٹی تو بیس سر کرائیں، نیز نذریں پیش کیس۔ جوسیاہی قلعے میں تھے،انہوں نے بھی تھم کے مطابق قرابینیں اور بندوقیں چلائیں۔

بھائیوں کی ملا قات

غالبًا ہفتے کا دن مولا نانے مانسمرہ میں گزارا ،اتوار کی صبح کوروانہ ہوئے۔مولا نا عنایت علی نے سید ضامن شاہ ساکن کوائی (کاغان) اور محمد امین خاں خان خیل رئیس گرهی کودوسوسواروں اور پیادوں کے ساتھ راستے میں استقبال کیلیے بھیج دیا تھا۔مولانا ولا یت علی لبرکوث ہینچے تو ان سرداروں ہے ملاقات ہوئی ، وہاں بھی بندوقیں چلیں اور نذریں گزرانی گئیں،خودمولا تاعنایت علی ہندوستانی مجاہدوں اورروسیلہ سیا ہوں کے ساتھ اترشیشه (۱) میں بہنچ ہوئے تھے، وہیں میدان میں دونوں بھائیوں کی ملاقات ہوئی: درال ونت مجب جلوه نور و بارش بركات از حضور رب غفور بود - از آ واز تفنگ وقرابین سیامیان ومجامدین از هر دو جانب که هزار مایودند، گوش زمینیان كرگشة _ از جموم مرد مال ملاقات بردو برادر با خود با دشوار كرديده _ آخر به جدوجهدتمام مرد مال را جدا كرده ملاقات باخود بالميسرآ مدبه بردو برادر بعداز فراغ معانقة ومصافحه باخود درميان تهميل ميدان سربه زمين تهاده تادير وظيفه شكر وسیاس رب العالمین بجا آ ور دند وتما می لشکریه بچود رفت وحمد وثنائے آ ں واہب العطيات بسياراز بسيار گفتند_ بعدازال صدياه بزار مإمرد مال به قدرليافت خود رو بروئے حضرت کلاں نذرگزار نیدند۔

⁽۱) اتر اُنے اُسرہ سے تقریبا نومیل گڑھی حبیب اللہ خال کی جانب ہے۔ لبرکوٹ مانسمرہ اور اتر شیشہ کے ورمیان

ترجمہ: اس وقت رب غفور کی جانب سے بجیب نورجلوہ گر تھا اور برکتوں کی بارش ہور ہی تھی۔ دونوں جانب ہزاروں سپاہی اور مجاہر موجود تھے، ان کی بندقوں اور قرابینوں کی آ واز سے ذین والوں کے کان بہر ہے ہوگئے۔ لوگوں کا اتا ہجوم تھا کہ دونوں بھائیوں کی ملاقات دشوار ہوگئی، آخر بردی کوشش سے لوگوں کوالگ کیا گیا اور بھائیوں میں ملاقات کی صورت پیدا ہوئی۔مصافح اور معافقے اور معافقے کے بعد دونوں بھائی اس میدان میں پیشائی زمین بررکھ کر دیر تک معافقے کے بعد دونوں بھائی اس میدان میں پیشائی زمین بررکھ کر دیر تک جہانوں کے پروردگار کافریض شکراوا کرتے رہے بشکر بھی سجدے میں گر گیا اور سب دیرتک خدا کی حدوثنا کرتے رہے۔ پھر سیکڑوں ہزاروں آ دمیوں نے اپنی سب دیرتک خدا کی حدوثنا کرتے رہے۔ پھر سیکڑوں ہزاروں آ دمیوں نے اپنی سب دیرتک خدا کی حدوثنا کرتے رہے۔ پھر سیکڑوں ہزاروں آ دمیوں نے اپنی حیث کیس۔

اسلام گڑھ میں جلوہ افروزی

جیما کہ پہلے بتایا جاچکا ہے، حکومت کا مرکز فتح گڑھ تھا، جس کا نام بدل کراسلام گڑھ رکھ دیا تھا۔ اتر شیشہ میں دو بہر کا کھانا کھایا، پھر دونوں بھائی سوار ہوئے اور اتو ارکو شام کے دفت اسلام گڑھ پہنچ گئے۔ شوال ۱۲۲۲ھ کی انعیسویں اور اکتو بر ۲۹۸ گیار ہویں تاریخ تھی۔ قلع کے دار دغہ امام خال کے حکم سے سات سات مرتبہ تو پیں چلائی گئیں، پانچ پانچ مرتبہ شاہینیں اور زنبور کیں، ایک ایک مرتبہ قرابینیں اور بزروقیں، اس کے بعد علماء، رؤسا، خوانین اور جاگیر داروں نے مولانا ولایت علی کی خدمت میں نذریں گزرانیں۔

۲۲ رشوال ۲۲ ۱۱ هـ (۱۱۷ کو بر ۱۸۳۱) کو جعد کے دن مولانا عنایت علی نے امارت کا پوراکاروبارمولاناولایت علی کے حوالے کردیا، مولاناموصوف کوچھونے بھائی کی مشقت و جانفشانی ، ملک داری اور فوج کے حسن انتظام کا پوراانداز وہو چکا تھا، اس پرائلد تعانی کا شکرادا کیا:

درمجلس جمعے بعدازگرفتن بیعت امارت به آوازِ بلندفرمودند که برادر خرورا از طرف خودرکیس جمله مجاهدین نمودم دانتظام کارو بار به دستورقد میم سیر دبراد رخر د ساختم به

م ترجمہ: جمعہ کی مجلس میں بیعت کے بعد بہ آواز بلند فرمایا کہ میں اپنی طرف سے چھوٹے بھائی کوتمام مجاہدین کا سالار بنا تا ہوں اور تمام انتظامات سابقہ دستور کے مطابق ان کے حوالے کرتا ہوں۔

تذكرة صادقه كابيان ي:

بالاکوٹ پہنچ کرمعلوم ہوا کہ اب تک مولوی عنایت علی صاحب کا رزار میں مصروف میں۔غرض مولا نا ولایت علی صاحب نے میں۔غرض مولا نا ولایت علی صاحب نے آپ کے میر دکردیااور جملہ مجاہدین نے مولا ناکے ہاتھ پر بیعت ِامارت کرلی۔(۱)

ضروری گزارش

مولا ناولا یت علی کے استقبال میں جا بجا جو خاص اہتمام کیا گیا، اس میں بادشاہوں اور حکر انوں کی شان زیادہ نمایاں ہے، حالا نکہ بجاہدین کا سارا کار و بار درویشانہ و نقیرانہ تھا جمکن ہے بیام بعض قلوب میں خلش کا باعث ہو، لہذا واضح کر دینا ضروری ہے کہ بید اہتمام نظر بظاہر امیری کی شان بلند کرنے کیلئے مناسب سمجھا گیا اور اس زمانے کے آ دمیوں کی فرہنیت اس فتم کی تھی کہ نمایش شکوہ کے بغیرامیری کی تھیتی حیثیت ان کے دل نشیں نہ ہوسکتی تھی۔ اس کے سوااہتمام کی کوئی و جہ سمجھ میں نہیں آتی۔ یہ بھی بتا دیتا جا ہے کہ خودسید احمد شہید نے ایسی کوئی نمایش اپنے لئے بھی پہند نہ فر مائی نیز مولا نا ولایت علی کہ نمایل اور مولا نا عنایت علی کی پہلی یا بعد کی زندگیوں میں بھی اس نوع کے ہنگاموں کی کوئی مثال نہیں متنی ہے۔ مولا نا کی تشریف آوری کے موقع پر اہتمام خصوصی کسی وقتی اور مقامی مصلحت کی بنایر ناگز بر سمجھا گیا ہو۔

چھٹاباب:

درهُ دُتِ کی جنگ

صورت حال

مولا ناولا یت علی کوسر صد پہنچے ہوئے پورے تمن مہینے بھی نہ ہوئے تھے کہ درہ وُ رُب کی جنگ پیش آگی جس نے مجاہدین کیلئے قیام کی کوئی جگہ باقی نہ چھوڑی اور کئی سال کی محنت سے جہاد کیلئے جوسر کز بنایا گیا تھا، وہ چھن گیا۔ جنگ کی تفصیل بیان کرنے سے پیشتر ضروری ہے کہ تمہید کے طور پر وفت کی صورت حال واضح کر دی جائے، جس کے بغیر سمجھ میں نہیں آسکتا کہ کامیا بی کیوں دفعۂ ناکا می سے بدلی اور ہزارہ میں اسلامی حکومت کی جو بنیاد بڑ چکی تھی، وہ کس و جہے معرضِ انہدام میں آئی ؟

حکومت انگلفیہ نے سکھوں سے پہلی جنگ کے بعد دوآ بہست جالندھر لے لیا تھا،
نیز سکھوں کی حکومت پرڈیڑھ کروڑ رو پیہ تاوان عا کد کیا تھا۔ چونکہ لا ہور کے خزانے میں
رو پیہ موجود نہ تھا، اس لئے قرار پایا کہ دریائے بیاس اور دریائے سندھ کے درمیان تمام
کو ہتائی علاقے بیشمول شمیرو بالائی بزارہ ایک کروڑ روپے کے معاوضے میں انگریزوں
کے حوالے کر دیئے جا کیں، باقی بچاس لا کھروپے عہد نامے کی توثیق سے پہلے یا توثیق
کے وقت نقد دے دیئے جا کیں۔ اس علاقے میں سے جو خطے دریائے راوی کے مغرب
اور دریائے سندھ کے مشرق میں واقع تھے، وہ بچھتر لاکھر دیے کے معاوضے میں گلاب
اور دریائے سندھ کے مشرق میں واقع تھے، وہ بچھتر لاکھر دیے کے معاوضے میں گلاب
منگھ ڈوگرہ کے ہاتھ فرونست کر دیئے گئے۔ ان میں جوں اور شمیر کے علاوہ ہالائی بڑارہ
بھی شامل تھا۔ سکھوں کی مرکزی حکومت میں افرا تفری اور جنگ کے دوران میں بڑارہ

کے اندر آ زادی کی دوتر یکیں جاری ہوئیں، جیسا کہ ہم پہلے بیان کر پچکے ہیں کہ ایک زیریں ہزارہ میں، جس کے نظم ونسق کیلئے سیدا کبرشاہ سھانوی کو بادشاہ سلیم کیا گیا، دوسری بالائی ہزارہ میں، جس کے سرخیل مولانا عنایت علی تھے،ادر جس کی حدیں مانگلی سے مشرق میں مظفر آ باداور شال میں کا غان تک پیٹی ہوئی تھیں۔

زریں موقع

آ زادی کی ان تحریکوں کو متحکم نتجہ خیز بنانے کیلئے قدرت نے زرّیں موقع پیدا کردیا تھا۔ زیریں ہزارہ پر سکھوں کے لئے قبضہ بحال رکھنے کی کوئی صورت باقی ندرہی تھی ، تمام رؤساوخوا نین کویفین ہو چکا تھا کہ سکھ حکومت کا شیرازہ درہم برہم ہوگیا ہے۔ بالائی ہزارہ میں گلاب سنگھ ڈوگرہ اس وقت پہنچ سکتا تھا کہ شمیر پراس کا قبضہ ہوجا تا ، وہاں کے گورنر شخ نواب امام الدین نے در بارلا ہور کی خفیہ ہدایات کے مطابق شمیرکو گلاب سنگھ کے حوالے کرنے سے انکار کردیا ، گویا بالائی ہزارہ سکھوں کے ہاتھ سے نکل چکا تھا اور گلاب سنگھ کے شمیر پر قبضہ کیے بغیر وہاں پہنچ نہیں سکتا تھا۔

صلح کے بعد اگریزوں نے ملی انظامات کی بحالی کے لئے سرگرم کوشٹیں شروع کردیں۔ایک طرف ایب صاحب کو ہزارہ بھیج دیا گیا کہ وہ نظم ونسق کی بنیادیں از سرنو استوار کرائے۔ دوسری طرف ہنری لارنس، جے در بار لا ہور میں ریزیڈنٹ کا عہدہ دیا گیا تھا،خود فوج نے کر جموں پہنچا اور وہاں سے ہر برٹ ایڈورڈ زکونو اب شخ امام الدین سے تصفیے کیلئے سمیر بھیج دیا۔ ہر برٹ ایڈورڈ ز نے ملک فتح خاں ٹو انہ کوساتھ لے لیا جونو اب امام الدین نے وہ تمام خطوط امام الدین نے وہ تمام خطوط امام الدین نے وہ تمام خطوط انگریزوں کے حوالے کردیئے ،جن میں در بار لا ہور نے ہدایت کی تھی کہ شمیر کو گلاب سکھ کے حوالے نہ کیا جائے۔ان تمام کارروائیوں کا ذمہ دار لال سکھ وزیر تھا۔غرض ہر برٹ

ایڈورڈ ز اور ملک فتح خال ٹو انہ کی کوششوں سے تشمیر گلاب شکھ کے قبضے میں آیا، لال بنگھ کےخلاف لا ہور میں مقدمہ چلا اوراہے وزارت سے علیحدہ کر کےجلاوطن کر دیا گیا۔

انقلاب إحوال

یوں گلاب شکھ کو کشمیر کے قبضے سے فارغ ہوکر بالائی بزارہ پرتوجہ کی فرصت بل گئی۔
ادھرے ایب صاحب نے مختلف خوانین کو سمجھا بجھا کر ہموار کرلیا اور زیریں ہزارہ میں
ان کیلئے جاگیروں کا بند وہست کی کے سکھوں کی حکومت بحال کردی ۔ اس کیفیت سے
فاہر ہے کہ حالات تحریک آزادی کے لئے جس تیزی سے سازگار ہوئے تھے، اس تیزی
سے ناسازگار ہوگئے ۔ اس سلسلے میں ارک ڈب کی جنگ چیش آئی ۔ انگریزوں کے زیر اثر
گلاب سکھا ورسکھوں کا رسوخ بحال ، و چکا تھا۔ خوانین ورؤساء انگریزوں ہی کی تدبیر
آرائیوں کے باعث ان کی طرف مائل ہو چکے تھے۔ نتیجہ یہ نکلا کہ میدانِ جنگ میں ان
سے جس سرگرم اعانت کی امیرتھی ، وہ پورئ نہ ہوئی اور مجاہدین کو فلکست سے سابقہ یڑا۔

ورٌ هُ وُتِ

درَ ہُ وُب کی جنگ کے بورے حالات کہیں ہے نیل سکے مختلف ذریعوں ہے جو کچھ معلوم ہوسکا وہ ذیل میں درج ہے کہیکن اسل جنگ سے پیشتر درہُ وُب کا جغرافیا کی موقع واضح سردینا ضروری ہے۔(1)

وُب، گڑھی حبیب اللّٰہ خال اور مظفر آباد کے درمیان ایک مشہور درہ ہے، جس کی بلندی تقریباً پانچ خرارفٹ ہے۔ اس کے مشرق میں تھوڑے فاصلے پر پیر چناس پہاڑہے،

(1) اس بیان کی زید میشنیده ت کے لئے میں اپنے موزید دوست سیدخلام حسن شاہ صاحب کاظمی کاممنون ہوں جو درّ کا وُبّ کے پڑوس میں مقد سرز بارت شریف مینگر رہتے ہیں اور اپنے ذوق تحقیق کے باعث پیشتر مقامی تاریخی صالات قرائهم کرتے رہتے ہیں ۔ جو ذب سے بلند تر ہے۔ اس پہاڑ کے جنوبی ومغربی دامن میں دریائے کشن گنگا کے کنارےمظفرآ بادوا قع ہے، جوآج کل آ زادکشمیرکا مرکز ہے۔ؤب کے ثال میں کوہ سری کوٹ ہے، جوسات ہزار فٹ سے بھی زیادہ اونچاہے۔ پھر بالاکوٹ کے سامنے تک یہاڑی سلسلہ چلا گیا ہے، مثلا سری کوٹ کے ثمال میں گلی گلوٹی ،اس کے آ گے پیر چیلہ، مزید شال میں نور گلی اور اس ہے متصل مکڑا پہاڑ جو بالاکوٹ کے مشرق میں ہے اور اس کی بلندی ہارہ ہزارسات سو باون فٹ بتائی جاتی ہے۔ وُتِ کے مغرب میں گڑھی صبیب اللّٰہ خاں دریائے کھار کے بائیں کنارے ہے ذراہٹ کرآ باد ہے۔ دریا کے کنارہُ مقابل پر بٹرای کا پہاڑ ہے اور گڑھی ہے ثنال مغرب میں ذمگلہ اور جابہ واقع ہیں۔ رُبّ ہے جنوب کی طرف آئیں تو لو ہارگلی پہنچ جاتے ہیں جہاں سے قدیم شاہی راستہ مظفر آ باد کو جاتا تھا۔ لوہارگل سے تھوڑ ہے فاصلے پر جنوب میں دُمشی ہے، جہاں دریائے کنھار، جس کا دوسرانام دریائے نین سکھ ہے، دریائے جہلم میں ملاہے۔

آج کل دُبِّ ضلع ہزارہ اور ضلع مظفر آباد کی درمیانی حدیر واقع ہے۔اس در ہے ے گڑھی تقریباً تین میل ہوگی اور مظفر آبادیا نجے میل ، گویا بیدایک ایبا درہ ہے جس کا مغربی درواز ہ ً ٹڑھی صبیب اللہ خال کی طرف واقع ہےاور درواز ہُ مقابل پر پہنچ کرجنوب کی طرف منہ کریں تو مظفر آبادنظر آتا ہے۔ فی الحال دُبّ جس گا وُں کی حدیست میں واقع ہے اس کا نام ڈونگ ہے۔ یاس ہی موضع تصنگر ہے جومولا ناسید سمندرشاہ چشتی " کی خانقاہ کے باعث قرب وجوار کی مشہورزیارت ہے۔اس زیارت کے متولی میرے عزیز دوست سیدغلام حسین شاہ صاحب کاظمی ہیں ۔ جب مظفر آباد ڈوگرہ راج میں شامل تھا تو ؤبّ برسم کی چوکی بنی ہوئی تھی ،اب یہ چوکی باقی نہیں رہی۔ یہ مقام پرانے زمانے میں جنگی نقط نگاہ سے براا ہم تھا۔ چونکہ تشمیر کی شاہراہ پرواقع تھا، اسلئے یہاں سے سلاطین، مشائخ، علماء و سادات، امراء اورخواص وعوام برابر آتے جاتے رہے اور اسے خاصی www.BestUrduBooks.wordpress.com

شېرت حاصل ہوگئ۔

ہزارہ گزییٹر کابیان

درّہ وُ دُبّ کی جنگ کے متعلق ہزارہ گزیٹیئر کا بیان یہ ہے کہ نواب شخ اہام الدین کو حوالگی کشمیر پر مجبور کردینے کے بعد سکھوں کی ایک فوج جو دس رحمنفوں پر مشمل تھی ، سرینگر سے مظفر آباد کے راستے بالائی ہزارہ پہنی تا کہ اس علاقے کو بھی سخر کر لے:

دیوان کرم چنداس فوج کا کما ندارتھا۔ ریزیڈنٹ لا ہور کے دو مددگار مسٹر
و بنس ایکنو (۱) اور لفٹٹ لمسڈن (۲) اس فوج کے ساتھ تھے۔ جنوری
کے ۱۸۴۷ء کو صواتوں اور ہندوستانیوں نے گڑھی حبیب اللہ سے او پر درہ وُ بُت
میں اس فوج کی ناکام مزاحمت کی۔ جنگ کے بعد صواتیوں نے گورز کشمیر کی
اطاعت قبول کر لی۔ ہندوستانی (مجاہدین) علاقہ چھوڑ کرنگل گئے، بعد از ال
سکھوں کی فوج ہزارہ کی وادیوں میں پھرنگلی اور مہارا جا(گلاب شکھ) کا قبضہ
مشکم کردیا۔ (۳)

او کنلے کا بیان

اوکنلے کا بیان ہے کہ سکھوں کی پہلی جنگ میں خالصہ فوج تباہ ہوگئی اور حکومت برطانیہ کی سر پرتی میں سکھوں کی ایک نئ طاقت کا ظہور ہوا۔ اس کی موجودگی میں مجاہدین کے لئے مقوضہ علاقوں برتصرف قائم رکھنا غیرممکن ہوگیا:

۱۸۴۷ء میں مجاہدین کی پوری فوج نے ہری پور میں مسٹرا بیکنو کے سامنے ہتھیار ڈال دیئے ،صرف میراولا دعلی مشتقیٰ رہے، جوتھوڑے سے مجاہدین کے ہمراہ -تھانہ چلے گئے۔مولوی ولایت علی اور مولوی عنایت علی کوسر کاری نگرانی

Lumsden (*)

Vans Agnew (i)

(۳) بزاره گزییز "مطبوعه ۱۹۰۸ چس: ۱۳۵

میں ان کے وطن عظیم آباد بھیج دیا گیا اور وہاں ان سے دس دس ہزاررو پے کے مخلکے لئے گئے کہ وہ جارہ ال تک شہرے باہر نہ جا کیں گئے۔(1)

بيليو كابيان

ڈاکٹر بیلیو نے لکھا ہے کہ مجاہدین کی تمام تدبیریں نا کام ہو گئیں:

سکھوں کی ایک فوج نے لفنٹ ایکنوکی قیادت میں مجاہدین کومنتشر کردیا، میر مقصود علی گرفتار ہو گئے اور انہیں قید کرکے لا ہور بھیج دیا گیا۔ عنایت علی جہاد کی زندگی کا بیر پہلا مزہ جکھ چکنے کے بعد دل شکتہ ہو گئے اور بھا گ کر عظیم آباد پہنچ گئے۔ بہت سے دوسرے مجاہدین نے بھی انہیں کی پیروی کی اور اولاد علی اعتادی دوستوں کے ایک چھوٹے سے جیش کے ساتھ اپنے سابقہ

رفیقوں سادات سے انہ کے پاس پہنچ گئے۔(۲) بعض پرانے سرکاری کاغذات کے مطابق جنزل کا بمن سنگھ مان نے ۲رجنوری ۱۸۴۷ء کولا ہوراطلاع بھیجی تھی کہ لفٹنٹ لمسڈن کی فوج مظفر آباد ہے گڑھی صبیب اللہ غان کی طرف روانہ ہوگئی ہے۔(۳) بتاریخ ۱۰رمارچ ۱۸۴۷ء ہنری لارنس ریزیڈنٹ نے جنزل کا ہمن سنگھ کوکشمیراورمظفر آباد کی خدمات کے صلے میں ایک کلواردی۔(۴)

مقامى روايات

جنگ کے متعلق مقامی روایات کا خلاصہ بیہ ہے کہ سکھوں کے درمیان باہمی رزم و

⁽۱) کلکته ربوبو، بایت اکتوبر ۱۸۷۰، ص: ۳۸۱

⁽۲) بوسف زئيول كے متعلق رپورٹ (أنگرېزى) ص: ۹۵-۹۹

⁽۳) ریزیرنت لاہور کے سیائی روز نامیجے (Polilical Diaries) از کیم جنوری ۱۸۷۸ء تا ۱۸۲۸ج ۱۸۴۸ء ص:۲

⁽٣) ريذ يُدُنث لا بور ك سياى روز نا كچ (Polilical Diaries) از يكم جنوري ١٨٧٨ء تا ٣ رمار ج ١٨٣٨ء ،

یکاراورانگریزوں ہے پہلی جنگ کےسلیلے میں جوافراتفری اور بدامنی بیداہوئی تھی،وہ اُگریزوں کی سریرت کے بعدختم ہوگئی اورخودانگریز افسر جابجا قیام امن کیلئے ^{پہنچ}ے گئے۔ اس کا نتیجہ بیہ ہوا کہ جوخوا نین درؤسا مجاہدین کا ساتھ دےرہے تھے، وہ پہلے تذبذب میں یڑے، پھر جا ممیروں کے لا کچ میں انگریزوں ہے مل گئے۔ جب محاہدین نے مظفر آباد ہے آنے والی فوج کا مقابلہ شروع کیا تو خوانین کی خفیہ ساز باز کے باعث دریائے کٹھار کی دا کیں جانب کے مختلف مقامات ہے قرابینیں اور زنبور کیں چھوڑی گئیں ۔مقصود بیتھا کے مجاہدین کومعلوم ہوجائے ،حملہ صرف مظفر آباد کی جانب سے نہیں ، پکھلی کی جانب سے بھی سکھوں کی فوج آ رہی ہے۔صواتی اور دوسرے مقامی لوگ بیدو کھتے ہی إدھراُدھر منتشر ہو گئے اور مجاہدین تنہا میدانِ جنگ میں رہ گئے۔ وہ دس رحمنفوں سے عہدہ برآنہ ہو سکتے تھےاور شکست کھا گئے ۔

سید غلام حسن شاہ صاحب فرماتے ہیں کہ ؤتب کے شال میں ایک فرلانگ پر ''باز مار''نام ایک مقام ہے اور جنوب مغرب میں بھی ایک مقام'' چڑک مار'' کہلاتا ہے، معلوم ہوتا ہے کہ ان دونوں مقاموں پرمجاہدین کےموریجے تھے۔ دُبّ کےمشرق میں زیارت شریف ٹھنگر کے حدود کے اندر ایک قبرستان ہے، جسے مقامی طور پر'' کالیال قبران' کہتے ہیں،اس لئے کہ وہاں کی مٹی قدرتی طور پرسیاہ ہے۔غالبًا بیانہیں مجاہدین کی قبریں ہیں ،جو جنگ ؤٹ میں شہید ہوئے تھے۔

لمسذن كابيان

او پر بتایا جا چکا ہے کہ سکصوں کی فوج کے ساتھ دوانگریز افسر بھی تھے:ونیس ایک نیو اور لفٹنٹ لمیڈن۔حسن اتفاق ہے ہمیں جنگ ؤبّ کے متعلق لمسڈن کا ایک خطال گیا ہے جواس نے ۲ رفر وری ۱۸۴۷ء کوراولپنڈی ہےا ہے والد کے نام انگلتان بھیجا تھا اور اس میں اپنے نقط زگاہ ہے جنگ کی پوری کیفیت بیان کی تھی۔اس کا مفاویہ ہے کہ جب گلاب

سنگھ کو کشمیر کا قیضہ دلایا جاچکا تو سر ہنری لارنس ریزیڈنٹ کومناسب معلوم ہوا کہ ایکنیو اور لمسڈن فوج لے کر ہزارہ کے راستے لا ہور جا ئیں تا کہ اس طرف بھی گلاب سنگھ اور سکھوں کے مقبوضات میں امن قائم ہوجائے۔

بارہ مولہ بہنج کران انگریز افسروں نے اگے۔ سفر کی تیاری شروع کردی ، ایک ہفتہ گاڑیوں کے انظام میں گذرگیا اور وہ بین ہزار نوج نیز چھتو ہیں لے کرمظفر آباد کی طرف چل پڑے۔ مظفر آباد بہنج کرمعلوم ہوا کہ دریائے کشن گڑگا کوعبور کرنے کے بعد قدم قدم پر لڑائی ہوگی ، اس لئے کہ سات ہزار کو ہتائی سامنے کے پہاڑوں میں مور ہے قائم کے بیٹے تھے۔ وہ خوب سلم تھا گرچہان کے پاس تو پیس نہ تھیں۔ خود انگریز افسروں کو یہ پیٹے تھے۔ وہ خوب سلم تھا گرچہان کے پاس تو پیس نہ تھیں۔ خود انگریز افسروں کو یہ پریٹانی لاحق ہوئی کہ اول سکھ فوج کے پاس گولی بارود بہت کم تھی ، اگر چہتو پوں کے گولے بہت زیادہ تھے، دوسرے افیون ختم ہو بھی تھی اور سکھ سپاہی افیون کھائے بغیر لڑنہ کے تھے۔ کمسڈن لکھتا ہے کہ مشکلات کے باوجود ہم نے پیش قدمی کا فیصلہ کر لیا اور ہرکشن سے ۔ کمسڈن لکھتا ہے کہ مشکلات کے باوجود ہم نے بیش قدمی کا فیصلہ کر لیا اور ہرکشن کر ھے (موجودہ ہری پور) میں گلاب شکھا ٹاری والے کو لکھا کہ وہ جتنی فوج فرآ ہم کر سکے ، کے کرجلد سے جلد موقع پر بہنچ جائے۔ گویا خالفوں کو دونوں جانب سے نریخے میں لے لیے کی تجویز سوچی گئی ہی۔ ہنری لارنس کو بھی پورے حالات سے آگاہ کردیا گیا۔ لیے کی تجویز سوچی گئی ہی۔ ہنری لارنس کو بھی پورے حالات سے آگاہ کردیا گیا۔

اس زمانے میں دریائے کشن گنگا کو تین گھاٹوں سے عبور کیا جاتا تھا: ایک گھاٹ قصبہ مظفر آباد کے شال میں قلعہ (ا) کے پاس تھا، دوسرا گھاٹ قصبہ کے سامنے اور تیسرا قصبہ کے جنوب میں سرائے اکبری (۲) سے متصل تھا۔ غالبًا ای گھاٹ کے سامنے آزاد کھیرکی موجودہ سکریٹریٹ تغییر ہوئی ہے۔

www.Rootl.IrduRooks.wordprose.com

⁽۱) يبهال پہلے بھی ايک قلعد تھا، موجودہ قلعدر نبير تنگه والی تشمير نے بنوايا اور اس کے نام سے بير منسوب ہے۔ اسکی سير هيال دريا بي انرنگی جيں يقمير كا سارا كام بيكار پر ہوا تھا۔ آج كل اس جيں پاكستانی فوج كا ایک بيش رہتا ہے۔ (۲) بيشش كوش برائے اكبر نے تعمير كرائی تقی، اس كاورواز ه دريا كی طرف ہے، جنو بی كوشے بيں شاہی نشست گاہتی، جسكے درواز سے پر بيتھين كتبر نصب ہے: لاالمہ الا اللہ اكبر خليفة اللّٰہ غالبًا مغل اس گھاٹ سے آتے جاتے تھے۔

کیفیت ِعبور و جنگ

ابلمسڈن کے بیان کا خلاصہ ضرور کی نصریحات کے ساتھ ملاحظہ فرمائے:

ا۔ اس نے ظاہر ریکیا کہ شائی گھاٹ سے دریا کوعبور کرےگا۔ فوج کا ایک حصہ بھی اس گھاٹ پر بھیجے دیا۔ اس کے سامنے کا رقبہ میدانی تھا اور عام لوگ اس گھاٹ سے آتے جاتے تھے۔ گھاٹ سے تھوڑے فاصلے پر ملاحول کے مکان تھے اور عموماً کشتیاں اس گھاٹ بررہتی تھیں، کیکن دل میں فیصلہ کر چکا تھا کہ جنوبی گھاٹ سے جوسرائے اکبری کے عین سامنے تھا، دریا عبور کرےگا۔

۲- اگرچہ جنوبی گھاٹ پرصرف ایک کشتی تھی لیکن کمسڈن نے مستعدی ہے کام لیک را اس کے دائیں کنارے پر پہنچا دیے اسکے را اس کام اس اس اس اس کی سات سوآ دی دریا کے دائیں کنارے پر پہنچا دیے اور انہوں نے سرائے میں قدم جما کر حفظ ووفاع کے تمام ضروری انتظامات کممل کر لیے۔ پھر۲۲ رد کمبر تک پوری فوج کشن گنگائے گزار لی گئی۔

۳- جنگی مصلحتوں کا تقاضا یہ تھا کہ جس فوج نے کو ہتانِ وُبِ میں موریے قائم کرر کھے تھے، اسے گڑھی حبیب اللہ خال کی طرف سے کوئی کمک نہ پہنچتی لے مسڈن نے رئیس مظفر آباد کے ایک بھائی (۱) کو تھم دیا کہ پانسو ہم قو موں کو ساتھ لے اور جھپ چھپا کر گڑھی حبیب اللہ خال کے آس پاس کی کئی پھٹی زمین میں جا بیٹھے۔ اگر گڑھی کی فوج کمک کے لئے حرکت میں آئے تو اس کا مقابلہ کرے اور اسے روکے۔

۳۰ صورت حال کے متعلق سکھ افسروں سے مشورہ کیا گیا تو وہ سب پیش قدمی کے حامی بھے۔ ۲۷ رومبر کی شبح کو کا بن سنگھ کی فوج کے دو کالم بنا کر انہیں آگے بوھنے کا تھا میں دیا گیا۔ تین تو پیس ان کے ساتھ کردی گئیں، بیفوج تین گھنٹے کی جدوجہد کے

⁽١) لمسدون نے اس مخص كانام نبيل كھا، كيمينيس كباجاسكاك يون تھا۔

بعد پہلے میلے پرقابض ہوگئ غنیم چوکیاں چھوڑ کر پیچھے ہٹ گیا۔

'دے خیال تھا کہ آگوئی وقت پیش نہ آئے گی، کین تین میل کا فاصلہ طے کر چکنے کے بعد پھر آٹھ سوگزی چڑھائی آگئی فنیم کی طرف سے شدید آتش باری ہورہی تھی اور سیل آتش سے گذر کر سوگز کی چڑھائی طے کرنا بہت دشوار تھا، لہذا نصف کالم کو آگے برختے کا تھم دیا گیا اور نصف کالم کوروک لیا گیا۔لیکن جن سمھوں کوروکا گیا تھا وہ بھی تھوڑی دیر کے بعد بے صبر ہوکر''وا ہے گرو'' ''وا ہے گرو'' کے نعرے لگاتے ہوئے حملہ آور ہوگئیں، ہوگئے نفنیم کی طرف سے باڑ پر باڑ آرہی تھی، سمھوں کی جانب سے تو بیں چلے گئیں، سمارادن شکش میں گذرگیا،سمھرنہ چیچھے ہٹنے پر آمادہ تھے اور ندان کے لئے آگے بڑھنے کی کوئی صورت تھی۔

۱- رات کی تاریکی میں عنیم مور پے خالی کر گیا۔ ۲۷ رد تمبر کوسکھ فوج آگے بڑھی تو عنیم دور سے آتش بازی کرتار ہا، لیکن اس نے قریب آ کر مقابلہ ندکیا۔ اس اثناء میں اطلاع ملی کہ گڑھی حبیب اللہ خال کا بھی تخلیہ ہو گیا۔ وہاں در بارلا ہور کے کارندے موجود سخے۔ انہوں نے کمسڈن یا ایکنو سے مشورہ کئے بغیر کا غانی سیدوں سے سلح کرلی ،صرف بیا قراد لیا کہ سید آ ئندہ چکن اچھار کھیں گے اور خراج اداکرتے رہیں گے۔ کمسڈن نے بہاتر اداکرتے رہیں گے۔ کمسڈن نے انہیں ''احتمانہ شرائط'' قرار دیا ہے۔

2- سکھ فوج کی روز دریائے کنہار کے کنار سے شہری رہی۔اس اثناء میں مجاہدین اورکوہتانی لوگ شکیاری کی ست میں ایک ڈھلوان پہاڑ پر جمع ہوگئے۔اس پر چڑھنے اور مقابلہ کرنے کی کوئی صورت نہتی ، آخر ایک مخبر نے بتایا کہ دہ لوگ کھانے پکانے کے لئے نیچے ایک چشے پر آتے ہیں۔لمسڈن نے چند گوجروں کور شوت دیکر ساتھ ملایا اسپنے ایک آ ومی کو گوجروں کا لباس پہنا کران کے ساتھ پہاڑ پر بھیجا اور ان کے ذریعے سے بارود کے چند پیدے پہاڑ پر رکھوا دیے ، پھر انہیں کے بعد دیگرے آگ دیدی گئی ، بارود اڑی تو غنیم نے سمجھا کہ حملہ وگیا ہے۔ چنانچاس نے یہ پہاڑ بھی چھوڑ دیا۔(۱)

" تذكرهٔ صادقة" كى روايات

'' تذکرہ صادقہ''یا''سوائے احمدی' میں اس جنگ اور اس سے پیشتر مولا تا ولا یت علی کی سرگرمیوں کے تعلق جو بچھ کھھا گیا ہے (۲) میر سے نزدیک وہ تمام تر غلط ہے، مثلاً:

ا- بیسے نہیں کہ مولا نا ولا یت علی ڈیڑھ دو برس گلاب سنگھ ڈوگرہ سے برسر پریکار
رہے، مولا نا کے سرحد پہنچنے سے تین مہینے کے اندر اندر جنگ دُب پیش آئی، جس میں
مجاہدین نے فکست کھائی۔

۲- بیامر برگز قرین قیاس نہیں کہ ولانانے گلاب سکھے کے سامنے بیشرط پیش کی ہوکہ اسے سرکادِ انگریزی کی طرح مسلمان رعایا کوشعادِ اسلامی کے مطابق اذان، ذیحہ گاؤ وغیرہ کی آزادی دے دین چاہئے۔ بیوبی غلط نہی ہے جوسیدصاحب کے تعلق مولوی محمد جعفر تھا عیر کی مرحوم یا میرزا جیرت مرحوم نے پیدا کی۔

۳- مجاہدین کے عمال کے قل عام کی بھی کوئی متندشہادت اب تک نہیں ال کی۔
۳- سید ضامن شاہ کا غانی کی بے وفائی کا قصہ بھی غلط بہی کا بتیجہ معلوم ہوتا ہے،
البتہ ظاہر ہے کہ مجاہدین کی شکست کے بعد ضامن شاہ کا غان چلا گیا ہوگا، تاہم جب تک
اگریزی فوج کا غان نہ پنچی اس نے اطاعت قبول نہ کی۔

۵- سیبھی غلط ہے کہ مولا تا ولایت علی اور مولا نا عنایت علی سید اکبرشاہ کے پاس

⁽۱) یہ تمام طالات لمسڈن آف دی گاکڈز (اکریزی) Lumsden of the Guids ہا خوذ ہیں۔ جس استہام طالات لمسڈن آف دی گاکڈز (اکریزی) ہیں۔ جس استہاری ہے جو اس کے بھائی سر پیٹر لمسڈن اور جارج ایلی نے مرتب کی، ۱۸۹۹ء بیل جھی تھی۔ اب بہت کمیاب ہے۔ لمسڈن نے جنگ کا ایک فقت بھی ویاتھا جے بیس نے شال کردیا تا کہ اس کے بیانات کو بھے بیس بھولت رہے۔

⁽۲) تذكره كمها وقد من الاستام المعالية الحري طبح أول من ١٥٥-٢١٦

صوات جانا چاہتے تھے، راستے میں انگریزی عملداری پڑتی تھی، فوجی انگریز افسروں نے گذرنے کی اجازت دے دی، بعد میں محاصرہ کرلیا گیا۔ عذر پیپیش کیا کہ فوجی افسروں کی اجازت حکومت کی منظوری سے نہ ہوئی تھی۔

واقعہ یہ ہے کہ اس وقت تک سید اکبر شاہ صوات کے بادشاہ نہ بنے تھے۔ نیز ۱۸۱۷ء میں ہزارہ اور دوسرے علاقے انگریزی عملداری میں شامل نہ ہوئے تھے۔

۲- سیہ بات بھی قرین قیاس نہیں کہ مولا نا ولایت علی اور مولا نا عنایت علی تو مجاہدین بشکر، توپ خانے اور سامانِ جنگ کے ساتھ انگریزی نگر انی میں لا ہور پہنچے، مگر اثنائے راہ میں مجاہدین کی کثیر تعداد خفیہ طور پر فرار ہوگئی اور انہوں نے میر اولا وعلی کو امیر بنالیا - میے مہم معلوم ہوتا ہے کہ میر اولا دعلی پہلے ہی نے کرنکل گئے تھے۔

مولا ناصاحبان کی مراجعت

جنگ دُبّ کے بعد مولانا ولایت علی اور ولانا عنایت علی لا ہور ہوتے ہوئے عظیم آباد چلے گئے۔'' تذکرہ صادقہ'' کا یہ بیان تعجب انگیز ہے کہ جان لارنس چیف کمشنر پنجاب نے لا ہور سے دومنزل آ گے جاکران کا استقبال کیا، داوشجاعت وی، ضامن شاہ کی بد وفائی پرنفرت کا اظہار کیا اور کہا کہ اسلحہ مع توپ خانہ حکومت کے ہاتھ فروخت کرے روہیلوں کی شخو اہ اداکردی جائے۔(۱)

حقیقت بیہ کہنا اس زمانے میں جان لارنس پنجاب کا چیف کمشنرتھا، نہ بیعلاقہ براہِ راست انگریزوں کے قبضے میں آیا تھا اور نہ وہ اقوال قرین یقین ہیں جواس سے منسوب کئے گئے۔ بیمکن ہے کہ ریزیڈنٹ نے مولانا صاحبان کی دعوت کی ہو، یا جیسا کہدرست ماناجاتا ہے ،مولوی سیدر جب علی منٹی نے ان کے اعزاز میں کھانا دیا ہو۔

⁽۱) تذكرهٔ صادقه بس: ۲۴ سوانح احمدی بس: ۲۱۵

ریزیڈنٹ کے سیاسی روز نامجول میں ۲۲ رمارج کا ایک اندراج ہیے:
داولینڈی کے کاغذات مظہر ہیں کہ ہزارہ سے ایک مولوی دوسوسیا ہیوں
کی حراست میں پہنچا، بہی شخص ہے جو ہزارہ کی سابقہ بغاوت کا قائد تھا۔ مسٹر
ایکنیو نے اسے سلامت ہندوستان جانے کا پرواند دے دیا ہے۔ (۱)
میں ہجھتا ہوں کے بیاطلاع مولا ناولایت علی ہی کے متعلق ہے۔
میں ہجھتا ہوں سے بتایا گیا ہے کہ عظیم آباد میں دونوں بھا ئیوں سے دوسال کے
نذکرہ صادقہ میں بیہ بتایا گیا ہے کہ عظیم آباد میں دونوں بھا ئیوں سے دوسال کے
لئے دوسورو پے کے مچلکے لئے گئے تھے، او کنلے نے مجلکوں کی مقدار دس دس ہزار روپے
ہتائی ہے، لیکن مدت جیار جیال سال کی بیان کی گئی ہے۔ میری تحقیقات کے مطابق صبحے یہ
ہتائی ہے، لیکن مدت جیار جیال سال کی بیان کی گئی ہے۔ میری تحقیقات کے مطابق صبحے یہ
ہتائی ہے، لیکن مدت ہوار جیال سال کی بیان کی معیاد دوسال سے زیادہ ندھی۔ اس لئے کہ
ستمبر ۱۸۳۹ء تک مولا نا آزاد ہو چکے تھے اور انہوں نے علی الاعلان ہجرت کی۔

بالا ئى ہزارہ كا تبادله

گلاب سنگھ ڈوگرہ اگر چہ بالائی ہزارہ پر قابض ہو چکا تھا، تا ہم تھوڑ ہے ہی دنوں میں اے اندازہ ہوگیا کہ قبضہ قائم رکھنا اس کے بس کا روگ نہیں۔ چنانچہ اس نے مارچ کے امری ۱۸۶ء میں درخواست کی کہ بالائی ہزارہ اس سے لیاجائے اور معاوضے میں جموں کے پاس کا علاقہ دے دیا جائے۔ سکھ در بار نے اس کی شختہ مخالفت کی اور کہا کہ بدامنی گلاب سنگھ کی غلط پالیسی کا متیجہ ہے۔ اگر وہ ند ہبی او قاف اور جا گیریں چھوڑ دے تو لوگ مطمئن ہوجا کیں۔ لیکن ہنری لارنس ریز ٹیزنٹ کی سفارش پر تبادلہ منظور کر لیا گیا، چنانچہ بالائی ہزارہ کے مالیے کی صحیح تشخیص کی گئی اور اس سے نصف مالیے کا علاقہ جموں کے پاس کلا اس سکھ کے حوالے کر دیا گیا۔

⁽۱) سای روز نایچ (اگریزی) از کیم جنوری ۱۸۴۷ ماس ۱۸۴۸ مس:۵۰

ساتوال باب:

یا بندی کی زندگی اور ہجرت

پابندی کی زندگی

اگر محلکے کا مقصد ریرتھا کہ مولانا ولایت علی یا مولانا عنایت علی عظیم آباد سے باہر نہ جا کیں یا مختلف علاقوں میں دوروسیر سے محتر زر ہیں اور دعظ ونصیحت بھی نہ کریں تو کم از کم مولانا صاحبان نے اس کا یہ مطلب نہ سمجھا۔ اغلب ہے کہ مجلکے کا مقصد ریہ ہوکہ وہ سرحد نہ جا کیں اور سکھوں سے رزم و پر کیار کا سلسلہ دوبارہ شروع نہ کریں۔

اگر مچلے میں مولانا صاحبان کو کا الله پابند کر لیا گیا تھا تو پھر بھھنا جاہئے کہ کار پردازانِ حکومت نے اس پابندی پڑمل کرانے کا کوئی خیال ندکیا۔ او کنلے کی رائے ہے کہ واقعی محلکے کی شرطیں پوری کرانے کے لئے کوئی تدبیرا ختیارندگی گئ۔(۱)

اس عہد کی زندگی کا جونقشہ تذکر ہ سادقہ میں پیش کیا گیا ہے وہ درج ذیل ہے:
اس دوسال کے عرصے میں (مولانا ولایت علی) بدستورسابق وعظ و
نصائح اور مراقبہ د مشاہدہ میں مصروف ہو گئے اور صوبجات میں واسطے ہدایت
کے دور وسیر کرنے گئے اور مبلغین کو مختلف اصلاع وصوبجات میں روانہ فر مایا
ہے۔ چنا نچہ چند ماہ کے بعد مولانا عنایت علی کو پھر ملک بڑگالہ میں روانہ کیا، مگر
جناب کو ہندوستان میں واپسی کا نہایت رنح و طال تھا، اکثر دو پیروں اور
راتوں کو زیر آسان کھڑے ہوکر اور بھی سجدے میں سررکھ کرنہایت بقراری

⁽١) كلكتدري بوبابت اكتوبره ١٨٥٥م ٢٨١

واضطراب كے ساتھاس ملك سے تكنے كى دعاءكرتے رہے .. (١)

او کتلے نے لکھا ہے کہ مولا ناصاحبان نے میراولا دعلی نے خطو کتابت شروع کردی تھی، جو سے اندھیں متعے اور پختہ ارادہ کیا تھا کہ شال مغرب میں اپنی چھنی ہوئی طاقت کی بحالی کے لئے کوئی وقیقۂ سعی اٹھانہ رکھیں گے۔(۲)

مولا ناعنايت على كاكام

او کنلے کے مقالے سے مترشح ہوتا ہے کہ مولا نا عنایت علی نے پہلے کی طرح بنگال کو اپنی سرگرمیوں کا مرکز بنالیا تھا۔ رائ شاہی کے مجسٹریٹ نے انہیں اس بنا پرضلع سے باہر نکل جانے کا تھم ویدیا تھا کہ وہ بغاوت کے شعلے بحرکاتے ہیں۔ ۱۸۵ء کے آغاز میں مجسٹریٹ کو پھراطلاع ملی کہ مولا نا عنایت علی ضلع میں مجاہدین کی بھرتی کر رہے ہیں، اس نے تفقیش کا تھم دیا تو مولا نا پہنہ چلے گئے ، تا ہم ضلع میں ان کا اثر ورسوخ بدرستور جاری رہا۔ حالات معلوم کرنے کے بعد مجسٹریٹ کو بھی یقین ہوگیا کہ وہ بے ضرر سے آ دی ہیں اور ان کی گرفتاری بالکل غیر ضروری ہے۔ اس تھم کی ایک نقل پٹنہ کے مجسٹریٹ کو بھی دی گئی۔ اور ان کی گرفتاری بالکل غیر ضروری ہے۔ اس تھم کی ایک نقل پٹنہ کے مجسٹریٹ کو بھی دی گئی۔ اس مولا نا عنایت علی کے حالات کا بہتر علم تھا، چنا نچہ اس نے مولا نا سے ایک ہزار روپ کی منانت لے لی کہ پٹنہ سے باہر نہ جا کیں ، لیکن مولا نا موقع یا کر سر صد بھاگ گئے۔ (۳)

تذکرہ صادقہ سے معلوم ہوتا ہے کہ اوائل متمبر ۱۸۴۹ء تک مولانا عنایت علی بنگال ہی میں دعوت وتبلیغ کا فریضہ انجام دے رہے تھے۔ مولانا ولایت علی سرحدروانہ ہوئے تو مولانا عنایت علی کو بھی لکھ بھیجا کہ گھر تھمرتے ہوئے سرحد چلے آئیں۔ (۴)

⁽۱) تذكرهٔ صادقه من ۱۲۵ (۲) كلكته ربوي، بابت اكتوبره ۱۸۵ مم ۳۸۴

⁽٣) كلكتەر يو يو، بابت اكتوبر • ١٨٧ء ص ٢٨٢٠ اگراس بيان كودرست بحى مان نياجائے تو • ١٨٥ و كى تارخ يقينا فلغ

ہے۔ (۳) تذکر وصادقہ بی: ۱۲۵

مستقل ہجرت

مولا ناصاحب کے مچلکوں کی میعاد غالبًا جولائی یااگست ۱۸۳۹ء میں پوری ہوئی۔ '' تذکرۂ صادقہ'' میں مرقوم ہے کہ اس میعاد کے پورا ہونے میں چند ماہ باقی تھے،مولا نا ولایت علی نے:

اینے دولت خانے کوفرش وفروش ، جھاڑ فانوس و دیگر اشیائے زینت سے خوب آ راستہ دیپر استہ کیا اور اصطبل میں عمدہ عمدہ گھوڑ نے خرید کر باند ھے اور عمدہ عمدہ رنگین کبوتر ول سے کبوتر خانہ جوادیا تا کہ لوگوں کو یقین ہوجائے کہ آپ دنیا میں خوب پھنس گئے اور اب ترک آ رائش ووطن نہ کر سکیں گے، مگر میعاد پوری ہوتے ہی اپنے چندا حباب مخلصین اور مولوی کی علی کوساتھ لے کر بیاراد کا ججرت ملک سوات روانہ ہوئے۔ (1)

بہر حال مولانا نے ۱۲۷۳ ساتھ ارشوال ۱۲۷۵ سے کی متبر ۱۸۳۹ء کو گھر بار چھوڑا اور مستقل ہجرت کے راستے میں قدم رکھا۔ مولانا کی علی (ابن مولانا اللی بخش) اور چندا حباب مولانا کے ساتھ روانہ ہوئے۔ چلتے وقت اپنے خلف اکبر مولانا عبداللہ اور مولانا فیاض علی (ابن مولانا اللی بخش) سے فرما گئے کہ سفر کا سامان مکمل کر کے اہل وعیال کے ساتھ ایک بفتے کے اندر موضع گڈھانہ میں آ کر ملو۔ پورے قافلے کے افراد کا تخمینہ دواڑھائی سوسے کم نہ ہوگا، پیھیے مکان پر صرف پانچ مردرہ گئے اور دوعور تیں۔ (۲)

مولا نا ولایت علی اس گھرانے کے فرزند تھے جو بہار کے رؤساء میں شار ہوتا تھا۔ بہت بڑی جائداد کے مالک تھے اوران کے تمام اقرباء بھی رؤسا ہی میں محسوب تھے،لیکن

⁽¹⁾ التذكرة صادقة الص: ١٢٥٥ موات يهم ادسر صدى علاقد ب، ندكده علاقد جي آج كل صوات كتيت جين ـ

⁽۲) تذکرهٔ صادقہ می: ۱۲۵ وکیلے کا بہ بیان میخ نیس کے مولانا دانا بت علی نے ۱۸۵۰ء کے اواخر میں ترکب وطن کیا۔ نیز اس نے تکھا ہے کہ اہل وعیال کے علاوہ تقریبائٹی افرادساتھ تھے۔ (کلکتر رہو ہو بابت اکو بر۱۸۷ء، ص ۲۸۲،

دیکھے عشق حق اور خدمت وین کے جذبہ صاوقہ نے کس طرح ان سے سب پھے چھڑا ویا اور اس نے سب پھے چھڑا ویا اور اس زندگی کی تؤپ دل میں پیدا کردی، جس میں تکلیفوں، اذیتوں اور پر بیٹانیوں کے سوا پھے نہ تھا۔ یہ کارنا مے صرف ارباب عزیمت انجام دے سکتے ہیں۔ مولا ناولایت علی اور ان کے اکثر اقرباء سید صاحب کے فیض تربیت سے بھینا ارباب عزیمت کا درجہ حاصل کر کیا تھے۔

منازل سفر

منازل سفر کی پوری کیفیت معلوم نہیں۔ تذکرۂ صادقہ اور سوائے احمدی میں بتایا گیا ہے کہ پہلے گڈھا نہ میں تفہرے جوعظیم آبادسے سات کوس جانب مغرب واقع ہے۔ آگئے گئے تو کونلور (دانا پوراورڈ مراؤں کے درمیان) کے رئیس حاجی امام علی نے بڑے اہتمام سے دعوت کی تیاری کی ، مولا نانے روک دیا اور فرمایا کہ ہم صرف دہ ستو کھا کمیں گئے جو آپ کے مزار عین کھاتے ہیں۔ آرہ میں چودھری ہدایت بشیر رئیس اعظم نے پڑتکلف دعوت کرنی چاہی ، اسے بھی روک دیا اور صرف محجوظی پکوائی۔ اس کے بعد غازی پور میں مولوی محد قصیح کے ہاں قیام کا ذکر ہے۔ او کنلے نے لکھا ہے کہ وہ ہر بڑے شہر میں دعوت و تبلیغ کی غرض سے خاصا وقت تھم ہرے رہتے تھے۔ اسکی تصدیق نوا ب صدیق حسن خاصا وقت تھم ہے۔ اسکی تصدیق نوا ب صدیق حسن خال کے بیان سے بھی ہوئی ہے جوابقاء آمین کے حوالے سے پہلے تقل کیا جاچکا ہے۔ اس موقع پر نوا ب صاحب نے مید مصرع مولا ناکی زبان مبارک سے من کریا دکر لیا تھا:

قيام د ہلی

قنوج کے بعدد الی میں مولانا کے قیام کا ذکر ملتا ہے۔ او کیلے کابیان ہے کہ دالی میں

⁽¹⁾ ابقاءالمين بص:۱۲

مولا ناکے وعظ بڑے شوق سے سنے گئے۔ کہا جاتا ہے کہ انہوں نے بادشاہ کے سامنے جہاد کا وعظ کہا، جس پراس نے پہندیدگی کا اظہار کیا۔(۱)

'' تذکرۂ صادقہ'' سے معلوم ہوتا ہے کہ دبلی میں تقریباً دومہینے تھہرے رہے۔ مسجد فتح پوری کے قریب ایک عالی شان مکان میں قیام کیا، جوعام شہرت کے مطابق جنات کے زیراثر خالی پڑا تھا۔ نواب زینت کل بیگم کے استادمولوی امام علی مشہور شاعر تکیم موثن خال بھی آپ کے وعظ میں موجود ہوتے۔ مولوی امام علی نے آپ سے بیعت بھی کی تھی، خال بھی آپ مولان ناکاذکر بیگم اور بادشاہ تک پہنچا اور آئیس دعوت نامہ بھیج کر قلعہ معلی میں بلایا گیا، مولانا کاذکر بیگم اور بادشاہ تک پہنچا اور آئیس دعوت نامہ بھیج کر قلعہ معلی میں بلایا گیا، مولانا کی چھڑ آدمیوں کے ساتھ قلع میں پہنچے۔ بادشاہ نے تحت سے از کر سے نواضع کی مولانا کیا۔ مصافحہ ومعانقہ کے بعد اپنے ساتھ بھایا، عطر اور پان سے تواضع کی۔ مولانا نے وعظ شروع کرتے وقت بیآ یت تلاوت کی: اِعْدَمُهُوْ آدانَّمُهُا الْحَدِوْ أُد اللَّدُنْيَا لَعِبُ وَ لَهُوْ وَذِيْنَةٌ وَّ تَفَا مُحُوّ ۔ الآیة ۔ وزیراعظم نے آپکے کان میں کہا الْحَدِوْ أُد اللَّدُنْيَا لَعِبُ وَ لَهُوْ وَذِيْنَةٌ وَّ تَفَا مُحُوّ ۔ الآیة ۔ وزیراعظم نے آپکے کان میں کہا کہ بادشاہ سلامت کے سامنے عذاب کے بیان کرنے کا دستورٹیس ، کین مولانا بے تکلف:

عذاب قبر، ہنگامہ محشر اور دوزخ کا بیان نہایت شد ومد سے اور دیگر طریقے پر بیان کرتے رہے، جس سے بادشاہ، شنبرادگان، زینت محل اور جملہ حضارِ مجلس غایت متاثر ہوکر زاروزاررو نے لگے۔ بعدوعظظفر شاہ نے فرمایا کہ میں نے بھی در باب ترک و نیا پھھ اشعار کے ہیں، آپ نے ان کے سنے کا اشتیاق ظاہر فرمایا۔ وہاں سے رخصت ہوئے، ریز فیزنٹ نے بدایمائے ظفر شاہ جملہ مکانات شاہی وموتی معبد وغیرہ کی سیر کرائی، اس کے بعد جب آپ قیام گاہ پر پنچ تو بچاس خوان کھانوں کے مطبخ شاہی سے مولوی امام علی صاحب اور مولوی مومن خاں صاحب معروف شاعر کی معرفت بہنچے۔ (۲)

⁽¹⁾ كلكته، ربويو بابت اكتوبر • ١٨٤ وص:٣٨٢

⁽۲) تذكرة صادقه بس ۱۴۲-۱۲۷ مولاناسيرعبد الببارشاه متقانوي باقى ماشيدا كل صفى ير

مولا ناستفانه ميس

رمضان کامبید قریب آگیا تھا اور بادشاہ کی خواہش تھی کہ مولا نارمضان قلعہ معلیٰ میں گزاریں تاکہ قلعے کوگ ان کے ساتھ نماز تراوی اداکریں اور وعظ سنیں ،لیکن ریڈ ٹرنٹ نے مولانا کے متعلق ایسے انداز میں پڑسش شروع کردی تھی کہ رکاوٹ کا اندیشہ لاحق ہوگیا تھا،لہٰذازیادہ تھم برنا قرین مصلحت نہ مجھا گیا اور مولانا معذرت کرکے روانہ ہوگئے۔ جمنایار پہنچ تورمضان کا جا نددیکھا۔ (۱)

بعد کے منازل کی تفصیل معلوم نہ ہوسکی۔روایتوں میں صرف یہ بتایا گیا ہے کہ کھنہ میں کچھ دن مولا نا عنایت علی کا انتظار کرتے رہے، جو ۸رشعبان ۲۲۲اھ (۱۹رجون مصردانہ ہوئے تھے۔ لیتن مولا نا ولایت علی ہے کم دبیش دس مہینے بعد عالبًا کرمحرم ۱۲۷۷ھ (۱۸۵۰ھ) کو کھنہ یالدھیا نہ میں دونوں بھا تیوں کی ملا قات ہوئی،

سوائج احدى مِن مرقوم بك بادشاه نے اشعار سنانے چاہتو مولانا نے بدآیت پڑمی: إذا قسسونی السفسوان فلاست مِن السفسوان فلاست مِن السفسوان و المستر آن پڑھا جائے ہوئا كرم كيا حاست اور جي رہونا كرم كيا حاسك) ۔

(۱) مید تذکر و صادقہ "کا بیان ہے۔ (ص: ۱۲۷)۔ مید ۲۱ اوکار مضان ہونا چاہیے، اس کے کہمولا ناشوال ۱۵ اور معنظیم آبادے رواند ہوئے تھے۔ اگر دومبینے دیلی میں قیام کیا تو دور جب کے ادائل میں و بال پینچ ہول میں ایعنی کی میں ۱۸۵۰ میں۔ -۱۸۵۵ میں۔

بعد کاسفرا سخے طے کیا۔ تذکرہ صادقہ میں بیجی مرقوم ہے کہ مولا ناولایت علی اپنے فرزند مولا نا عبداللہ سے فرما گئے تھے کہ خودمع اہل وعیال جلد جلد منزلیس طے کر کے پہنچنا اور ہمراہیوں کوچھوٹی چھوٹی ٹولیوں میں روانہ کرنا۔

اوکنلے کے بیان ہے معلوم ہوتا ہے کہ مولا ناولا بت علی اور مولا نا عنایت علی حقانہ پہنچ گئے اور النے بعض ساتھیوں کو صبل (۱) میں روکا گیا۔ آدمی نکل گئے لیکن اونٹ روک کئے گئے اور النجی ساتھیوں کو صبل (۱) میں روکا گیا۔ آدمی نکل گئے لیکن اونٹ رو یا گیا۔ لئے گئے جن پر مال واسباب لدا تھا، اور انہیں ڈپٹی کمشنر ہزارہ کے پاس چیش کردیا گیا۔ اس نے تعکم دے دیا کہ انہیں بدھا ظت مالکوں کو لوٹا دیا جائے۔ (۲) ستھانہ پہنچنے کی تاریخ اس نے تعکم دے دیا کہ انہیں برہا قاطت مالکوں کو لوٹا دیا جائے ۔ (۲) ستھانہ پہنچنے کی تاریخ کا آن خرے ۲۱ میال آخر (۱۸ رفر وری) کو پہنچے۔

⁽۱) انتہاں تربیلہ کے سامنے دریائے سندھ کے دائیں کتارے پرواقع ہے۔ ستھانہ سے اس کا فاصلہ پانچ چھیل ہوگا۔ (۲) کلکتہ ربویوں بایت اکتوبرہ ۱۸۷۶ جس ۶۸۲

آ تھواں باب:

مولا ناولا بیت علی کی وفات

سرحدی زندگی

آخری مرتبہ سرحد و پنچنے کے بعد مولا ناولا یت علی کو صرف بیں مہینے زندگی کی مہلت ملی اور ابھی وہ ابتدائی انظامات ہی میں معروف ہتے کہ رحمت الہی کی آغوش میں پنچ گئے۔ اس مدت کی سرگرمیوں کے مفصل حالات کہیں سے نبل سکے بعض سوائح نگاروں نے وہ وہارسطروں سے زیادہ بچھ نہ کھا، بعض نے بچھ کھنا جا ہا تو ایسا انداز اختیار کیا، جسے مولا ناولایت علی کے حقیقی مقصد ونصب العین سے کوئی مناسبت نبھی ۔ جس طرح بعض مخلص سوانح نگاروں نے بلاو جسید صاحب کے نصب العین کو غلط رنگ میں پیش کیا تھا، مخلص سوانح نگاروں نے بلاو جسید صاحب کے نصب العین کو غلط رنگ میں پیش کیا تھا، ای قسم کی حالت سے مولا ناولایت علی کو واسطہ پڑا۔" تذکرہ صادقہ" کا بیان ہے:

آپ (مولا نا) لوگوں کی ہدا ہت میں معروف رہے اور درسِ قرآن و احد رہے اور درسِ قرآن و احد یہ نام کیا۔ بعد ظہر درس دیتے اور فجر کو مراقبدو مشاہدہ میں لوگوں کو قوجہ دلاتے۔ چونکہ وہ ملک خود سر ہے، بغیر سپاہ گری کے وہاں رہنا دشوار ہے، اس دلاتے۔ چونکہ وہ ملک خود سر ہے، بغیر سپاہ گری کے وہاں رہنا دشوار ہے، اس

مقصو دنصب العين

ظاہر ہے کہ مولانا ولایت علی جہاد فی سبیل الله کا مقصد پیش نظر رکھتے ہوئے سرحد

(۵) "تذكرؤصادقة"ص: ١٢٧

گئے تتھے اور اس میں حسب استطاعت جہاد بالسیف بھی شامل تھا۔ گویافن حرب کی تعلیم اورجنگی قواعد بھی درس و وعظ، دعوت وتبلیغ اوراصلاحِ عقائد داعمال کی طرح اہم مقاصد میں واخل تھی۔اسنے بیرنگ ویتاسراسرتعجب انگیز ہے کہ مقامی حالات کی مجبوری اور باشندوں کی خودسری کے باعث سیاہ گری پرتو جدلا زمی ہوگئی۔سوال کیا جاسکتا ہے کہ مولا نا کے لئے درس ووعظ اور دعوت وتبلیغ کی کانی وسیع فضا وطن میں موجود نہتھی کہ اطمینان وفارغ البالی کی زندگی حپھوڑ کروہ ایک الیی سرز مین میں گئے جوان کے لئے سراسراجنبی تھی،اور جہاں کےلوگوں کی خود سری کے باعث سیہ گری میں وقت صرف کرنے کی مجبوری پیش آگئی؟ یہ فیقی اغراض و مقاصد ہے اعراض ہی نہیں بلکہ ان کی تحریف ہے۔ اگر گردوپیش کے حالات ایک بنیادی بات صاف صاف کہنے کیلئے ساز گار نہ ہوں تو اس ے متعلق سکوت اختیار کرلینا جا ہے ، کین اے غیر داقعی انداز میں **بیش کرتا ہر گ**ز مناسب نہیں۔ بذأن داعیانِ حق اور مجاہدانِ را وحریت کے حقیقی نصب العین كا اخفا ہے جنہوں نے زندگی کی ہرمتاع عزیز صرف اس لئے قربان کرڈالی کہاس نصب العین کا چراغ ہرفضا کی تاریکی میں روشن ہوجائے۔انہوں نے جس مقصد کیلئے سب پچھ کھویا تھا،اس کی آبرو قائم رکھے بغیر سیرتوں کے خاکے مرتب کرنے سے کیا حاصل ہوسکتا ہے؟

بھائيوں ميں اختلاف

اس دورکا ایک نہایت افسوس ناک واقعہ یہ ہے کہ طریق کار کے متعلق مولا ناولایت علی اور مولا نا علی اور مولا نا ولایت علی اور مولا نا عنایت علی میں اختلاف بیدا ہوا اور اس نے ایسی نازک صورت اختیار کرلی کہ مولا نا عنایت علی بھائی ہے الگ ہوکر منگل تھا نہ چلے گئے۔ بیا ختلاف بھی بعض اصحاب کے نزویک غلافہی کا باعث بنا اور سمجھا گیا کہ مولا نا ولایت علی تو حکومت انگلشیہ سے لڑنا نہ جا ہے البتہ مولا نا عنایت علی تیز طبعی اور گرم مزاجی کے باعث انگریزوں کے خلاف

جنگ پراصرار کرر ہے تھے۔ حالانکہ مولانا ولایت علی انگریزی حکومت کے دائرے سے ہجرت کرکے سرحد پہنچے تھے۔ اگر ان کے نز دیک حکومت انگلشیہ کے ماتحت رہنے میں شرعاً کوئی قباحت نہ ہوتی تو وہ وطن کی امیر اندزندگی چھوڑ کر ایسی جگہ کیوں توطن اختیار کرتے ، جہاں ان کیلئے نظر بہ ظاہر گذران کا بھی کوئی سامان نہ تھا۔ زر خیزی اور سیر حاصلی کے نقط کا ہے۔ اس سرز مین کومولانا کے وطن مالوف سے کوئی بھی مناسبت نہتی۔

وجيإختلاف

و جیا ختلاف کا تعلق اصل مقصد سے نہ تھا، صرف طریق کارسے تھا۔ مولانا ولایت علی چا ہے تھے کہ خاصی جمعیت فراہم کرلیں اور مناسب تیاری کے بعد آزادی کے لئے جنگ کا آغاز کریں، مولانا عنایت علی کی خواہش بیتھی کہ بےتو قف اصل کام شروع کردیا جائے۔ وہ نیک بیتی سے بیجھتے تھے کہ آغاز جنگ کے ساتھ ہی تیاری کیلئے بہتر اسباب مہیا ہوتے جائیں گے اور باحمیت مسلمان خود بخو دمجاہدین کی معیت ورفاقت اختیار کرنے گئیں گے۔

المب ستھانہ کے شال میں صرف چند میل پر واقع تھا، جس کے والی نواب جہاں داو خاں کی ریاست دریا کے دونوں جانب پھیلی ہوئی تھی۔ دوسرے رؤساء وخوانین کی طرح نواب جہاں دادخاں بھی انگریزوں سے وابستگی قبول کر چکا تھا، اور جیسے حالات اس وقت در پیش تھے، ان میں وابستگی کے سواچارہ نہ تھا۔ مولا ناعنایت علی اس تعلق کو بے تکلف مسلم در تھی قرار دے رہے تھے۔ اغلب ہے کہ نواب نے انگریزی دباؤ کے باتحت مجاہدین کی نقل وحرکت میں بھی روک ٹوک کا انتظام کر دیا ہو۔ مولا ناعنایت علی اس پر مزید بگڑ گئے اور اصرار شروع کیا کہ نواب جہاں دادخاں کے خلاف تادیبی کارروائی کی جائے۔ مولا تا

آ غاز کیا گیاتو مجاہدین کی مشکلات بڑھ جا کیں گی اور تنظیم جس اطمینان کی متقاضی ہے،
اس کا بھی کوئی موقع باقی ندر ہے گا ممکن ہاں سلسلے میں بیام بھی مولا تاولایت علی کے
پیش نظر ہو کہ جن سا ذات ستھانہ نے انہیں اپنے پاس تظہر ایا ہے وہ نواب جہاں داد خال
کے تر بی رشتہ دار ہیں اور اس وجہ سے بیجید گیاں بڑھنے ہی کا اندیشہ وسکتا تھا۔

ناذك صورت ِ حال

حافظ عبد المجید (ابن مولانا عنایت علی) نے بعض واقعات اختصار آلکھ لئے تھے،
ان کی تحریرات کے متفرق اجزاء میں نے اسمست میں دیکھے۔ان میں ایک اندارج سیہ ہے
کہ ۱۳۶۸ ھرکو میکری میں مولوی نادر علی نے وفات پائی۔اس روز سے بھائیوں
(مولانا ولایت علی اور مولانا عنایت علی) میں اختلاف پیدا ہوا اور سیر برابر بوھتا گیا۔ جھے
اب تک معلوم نہ ہوسکا کہ مولوی نادر علی کون تھے اور ان کی وفات کس سبب سے اختلاف
کا باعث بنی؟

ایک روایت میں ویکھا کہ بھائیوں کے اختلاف نے مجاہدین کوبھی دونکڑیوں میں منقسم کر دیا تھا۔ بنگال کے زیادہ تر مجاہدین مولانا عنایت علی کے ہم نوا تھے اور باتی اصحاب، جن میں صادق پور کے تمام اکابر (مولانا ولایت علی اور مولانا عنایت علی کے اقربا) بھی شامل تھے مولانا ولایت علی کے مسلک کو درست جھتے تھے۔اختلاف کا نتیجہ یہ ہوا کہ موقع پر پریڈ کے وقت دونوں گروہوں میں لڑائی کا خطرہ پیدا ہو گیا۔مولانا ولایت علی نے میعالت دیکھی تو دونوں کے درمیان کھڑ ہے ہوکر دعاء کیلئے ہاتھ اٹھائے اور پکار کر کہا کہ سب خدا کی بارگاہ میں صلح وامن کیلئے دعاء کریں ،اس طرح خطرہ ٹل گیا اور اس وقت مولانا عنایت علی مجاہدین کے مرکز سے اٹھ کرمنگل تھانہ چلے گئے۔ پھر غالبًا زندگی میں دونوں بھائیوں کی ملاقات نہ ہوئی۔ بیرکا رشعبان ۲۲۸ اھر (۱۲ جون ۱۸۵۲ء) کا

واقعه ہے۔اس سے بچھم پانچ ماہ بعدمولا ناولا یت علی نے وفات پائی۔

او کنلے کا بیان

اوکنلے نے لکھا ہے کہ مولا ناولا بت علی کے دل میں حکومت برطانیہ کے خلاف کینہ و عناد کے وہ جذبات موجزن نہ تھے، جن سے ان کے بھائی کا سینہ لبریز تھا۔ اول الذکر کا فہمی جوش وخروش ایسانہ تھا جوانسان کو بے قابو کر دیتا ہے اور دنیوی احتیاط کوضعف ایمان کی دلیل سمجھا جا تا ہے۔ مولا نائے موصوف وسطی ہند، دکن ، بمبئی اور سندھ میں پھر چکے تھے ۔ حکومت برطانیہ کی طاقت وقوت کا بہتر اندازہ کر چکے تھے، جو مربٹوں ، مسلمان پنڈ ارول ، امیرانِ سندھ اور سکھوں کو تباہ کر چکی تھی۔ وہ سید احمد کے ظہور ٹانی تک امن سے رہنا چا ہے تھے، اور بار بار کہتے تھے کہ بجاہدین کی جو چھوٹی سی جماعت جمع ہوگئ ہے اس سے ہندوستان کو فتح کر لینا غیر ممکن ہے:

اگرقبل از وقت کوئی قدم اٹھالیا گیا تو حکومت برطانیہ کی آتکھیں کھل جائیں گی، جاری کارروائیوں کی حقیق حیثیت کا اسے ایک مرتبہ پورااحساس ہو گیا تو وہ روپے کی آمدروک دیے گی اور اپنی رعایا کو جہاد کی حمایت سے منع کردے گی۔(1)

اوکنلے نے بیبھی لکھا ہے کہ ۱۸۵۲ء کے آغاز میں مجابدین کا قافلہ ستھاند آتا ہوا اسب کے علاقے میں لوٹا گیا۔ اس پرمولا تا عنایت علی شخت برافروختہ ہوئے اور انہوں نے اخوند بصوات نیز ساوات ستھانہ سے اسب کے خلاف الداد طلب کی۔ (۲)

⁽۱) کلکته ربویو بابت اکتوبر ۲۸۰۰ م ۳۸۳

⁽۲) کلکتدر بو بوبایت اکتوبره ۱۸۵ م ۳۹۵:

مجامدين كامركز

عموہ اسمجھاجاتا ہے کہ مجاہدیں۔ تھانہ یامنڈی میں مقیم تھے، بلا شبہ انہوں نے جومر کز بنایا تھا، وہ - تھانہ اور منڈی ہی کی زمین میں تھا، کیکن ان دونوں سے الگ تھا۔ مجھے مولانا نصیر الدین منگلوری اور مولانا نصیر الدین دہلوی کے مرکز کاعلم نہ ہو سکا، جو ۱۸۴۱ء کی طغیانی سندھ میں بہدگیا تھا، بلکہ ستھانہ، منڈی اور مجاہدین کے مرکز کی زمین بھی دس دس بارہ بارہ گز کی گہرائی تک دریا برد ہوگئ تھی۔ اس کے بعد جومرکز قائم ہوا، وہ بہلے مقام کے خلاف کنارہ دریا سے ہٹا ہوا تھا، اس سے تقریباً نصف فرلانگ شال میں منڈی کی آبادی قائم ہوئی، منڈی کے آبادی قائم ہوئی، منڈی کے آبادی قائم ہوئی، منڈی کے شال میں تقریباً ایک فرلانگ پر مجاہدین کا مرکز تھا۔

طغیانی کے بعداس جھے کی زمین پرچھوٹے جھوٹے گول پھروں کا فرش سا بچھ گیا تھا، جس میں بھی باڑی نہ ہو سے تھی ، مجاہدین نے اپنا قلعہ تغییر کرلیا تو وہ دور دور سے مٹی جھولیوں میں بھر بھر کر لاتے اور پھر یلے فرش پر بچھاتے رہنے۔ اس طرح انہوں نے محنت ومشقت سے زمین کا خاصار قبہ بھتی باڑی کیلئے موزوں بنالیا تھا۔ مولا نا ولایت علی اس قلعے میں مقیم ہوئے تھے، ان کی وفات کے بعد ۱۸۵۸ء تک مجاہدین اس قلعے میں رہے۔ جب انگریزوں نے سے انہ منڈی ادر بجاہدین کے مرکز کوتو پیں لگا کر برباد کر دیا تو پھراس مقام پرکوئی آبادی نہ ہوسکی اور آج کل بیز مین سے انہ کی حد بست میں شامل ہے۔ پھراس مقام پرکوئی آبادی نہ ہوسکی اور آج کل بیز مین سے انہ کی حد بست میں شامل ہے۔ یہ بھری عرض کر دوں کہ بجاہدین کا گزاراعو ما ان رقوں پر تھا جو ہندوستان سے مسلسل ان سے بینی رہتی تھیں۔ جب ان میں عارضی انقطاع یا التو ابو جاتا تھا تو سا دات سے ان میں عارضی انقطاع یا التو ابو جاتا تھا تو سا دات سے ان کے لئے غلہ کا مناسب انتظام کرویتے تھے۔

ستھانہ کے عقب میں جو بلند پہاڑ ہے، اس میں سے خاص ستھانہ کی زمین میں دو درے بانالے آئے ہیں۔ ایک ستھانہ کی آبادی کے شال میں سے جے عموماً منڈی یا

ستھانہ والا نالہ کہتے ہیں۔اس پر پن چکیاں بھی نصب ہیں۔ دوسرا نالہ ستھانہ گاؤں کے جنوب میں ہے جس کا نام برگ کا درہ یا تالہ ہے۔ (برگ بروزن ٹرک)۔مرکز مجامدین تهانه یا منڈی والے تالے کے قریب تھا، مجاہدین کا قبرستان اس نالے کی جنوبی ست میں ہے،اسی قبرستان میں مولاناولایت علی کا مفن ہے، لیکن اس کامتعین نشان اب سی کو معلوم ہیں۔

مولانا کی وفات

مولانا ولایت علی ابھی کوئی مجاہدانہ قدم اٹھانے نہ پائے تھے کہ۲۲ رمحرم ۱۲۹۹ھ (۵رنومبر۱۸۵۲ء) کو به عارضهٔ خناق انقال کیا (۱) اوراینے مرکز کے قبرستان میں فن ہوئے۔'' تذکرۂ صادقہ'' کے بیان کے مطابق چونسٹھ سال کی عمر پائی۔ وفات کی دو تاریخیں میرے علم میں آئیں،ایک فاری کی اور دوسری عربی کی، جوذیل میں درج ہیں:

مولانا ولايت على رہبر دين حق به ماه محرم چو شد زير خاک شدہ جاءِ سرش بہ فردوس یاک

گو از سر آه سالِ وفات

آ خری مصرع کے حساب میں جائے کی'' ہے''شامل نہیں کی گئی۔اس طرح ۱۲۷۸ بنے سر آ ولین الف کا ایک شامل کیا تو ۱۲ ۱۹ ہوئے عربی تاریخ میہ بے:

توفى بالهجرة للدين ناصر فارخ قلبي طاب غاز مهاجر (۲) 112 49

ولايت عبلي العالم المتورع وهنذا النذي قد طاب حيا وميتا

⁽¹⁾ واکثر بیلو کابید بیان غلط ہے کہ مولانا کا انتقال به عارضه بخار ۱۸۵۵ء میں موا۔ (بوسف زیول کی ربورث، اتحریزی مین ۹۲)

⁽۲) تَدْكُر وُصادقه مِن: ۱۲۸

حليه

" تذكره صادقه" من حليه يون مرقوم ب:

میانه قامت ماکل به طول، رنگ سانولا، جسم بلغی اور پرگوشت، ابرو پیوسته، دٔ ازهی اوسط در ہے کی۔(1)

مولا ناسیدعبدالببارشاہ نے ایک مرتبہ فر مایا کہ جب صوات کی سلطنت چھن گئی اور میں ستھانہ والیس آیا تو ایک صاحب ملنے کیلئے آئے ، جنہیں کشف قبور ہیں مہارت حاصل تھی ۔ میں انہیں مجاہدین کے قبرستان میں لے گیا اور مولا تا ولایت علی کی قبر کے پاس بیشا کر کہا کہ فر مائیے ، بیکون صاحب ہیں اور ان کا حلیہ کیا ہے۔ وہ تقریبا آ دھا گھنٹہ مراقب رہے، پھرا شھے تو مجھ سے کہا کہ آؤ چلیں ، معلوم ہوتا تھا کہ صاحب قبرنے ان کے ول پر گہرااثر ڈالا ۔ راستے میں مجھے بتایا کہ بیب بزرگ سرحد کے نہیں ، ہندوستان کے بیں اور ان کا درجہ بہت او نیا ہے۔ میں نے حلیہ بوچھا تو کہا کہ رنگ سانولا ہے اور بیں اور ان کا درجہ بہت او نیا ہے۔ میں نے حلیہ بوچھا تو کہا کہ رنگ سانولا ہے اور فراڑھی کے بال رخساروں پر کم ہیں ، ٹھوڑی پر زیادہ۔ غرض جو حلیہ بتایا وہ مولا تا کے فرز ندان ارجمندمولا نا عبداللہ اورمولا نا عبداللہ کے میا مشابہ تھا، الہذا بھین ہو گیا کہ فرز ندان ار جمندمولا نا عبداللہ اورمولا نا عبدالکر کم سے خاصا مشابہ تھا، الہذا بھین ہو گیا کہ فرز ندان ار جمندمولا نا عبداللہ اورمولا نا عبدالکر کم سے خاصا مشابہ تھا، الہذا بھین ہو گیا کہ صاحب کشف کا بیان درست ہے۔

ابل وعيال

مولانا کی پہلی شادی سیدمقصودعلی (ساکن لبنہ فیکھو لی ضلع آرہ) کی صاجز ادی مسات امیرن سے ہوئی تھی۔ بیہ خاتون لا دلد فوت ہوئیں۔ دوسرا نکاح حیدر آبادد کن کے ایک رئیس مرزا داحد بیک کی صاجز دی مراد النساء بیگم سے کیا۔ اس سے مولانا کے پانچ فرزند ہوئے۔ تیسرا نکاح مولوی اللی بخش کی بیوہ صاحبز ادی جمیلۃ النساء سے کیا۔

(۱) تذكره صاوقه بن ۲۰۰۰

ان سے بھی چار بچ ہوئے ،اولاد کی تفصیل ذیل میں درج ہے:

ا- مولانا عبدالله، جو جالیس سال تک مجاہدین کے امیر رہے۔ان کے مالات آئندہ بیان ہول گے۔

۲- رحمت الله، حالت طفلی میں وفات یا گی۔

۳- ہدایت اللہ، پینتالیس برس کی عمر میں فوت ہوئے، ایک فرزندیا دگار چھوڑا۔ ڈاکٹر آیت اللہ جنہیں مولوی محمد حسین ذہتے نے ولایت میں تعلیم دلوائی۔

۳- عبدالرحمٰن بيلا ولدفوت ہوئے۔

۵- مولوی عبد الکریم ،اپنے بڑے بھائی مولا ناعبد اللہ کے بعد ریمجاہدین کے امیر بنے ،ان کے حالات بھی آئندہ بیان ہوں گے۔

٢- مولوي محمد حسين ذبيح، ان كے حالات بھي موقع پر لکھے جائيں مے۔

2- شاكره،ان كى شادى مولوى عبداككيم بن مولا ناوحداللد يهولى

٨- زينب، يحين مين وفات يائي۔

٩- محرمسين بجين من دفات ياكي

تصانيف

مولانا دلایت علی کی زندگی کے بیشتر اوقات وعظ و تبلیغ اور منظیمات جہاد میں گذرے۔ ظاہر ہے کدان مشاغل کے بیشتر اوقات وعظ و تبلیغ وقت ندل سکتا تھا، تاہم انہوں نے مختلف اوقات میں اردو، فاری اور عربی کے چندرسالے بھی لکھے، جنہیں ان کے جینیج مولا ناعبد الرحیم نے مجموعہ رسائل شعد میں شائع کردیا تھا۔ مثلاً رسالہ رُدٌ شرک فاری) رسالہ گوت (فاری) رسالہ گوت (فاری) رسالہ گوت (اردو) رسالہ تبییر العسلوة (اردو) رسالہ تجر اردو) رسالہ تبییر العسلوة (اردو) رسالہ تبیان الشرک (اردو)۔

انکاعقیدہ بیتھا کہ سیدصاحب نے شہادت نہیں پائی بلکہ غائب ہو گئے اور ضرورت کے موقع پر دوبارہ ظاہر ہوں گے۔ رسالہ دعوت میں بیعقیدہ تفصیل سے بیان کیا ہے،
لیکن جیسا کہ میں 'سیداحمہ شہید' میں کہہ چکا ہوں، بیعقیدہ سیح نہ تھا اور ہمیں اکا بر کے
ماس ہی پرمتو جدر ہنا چا ہے ، لغز شوں میں ان کی بیروی نہ کرنی چا ہے ۔ مولا ناہی کی وجہ
سیدصاحب کی غیر بت کاعقیدہ علمائے صادق پور میں شائع ہوا، کیکن اس بنا پرمولا نایا
ان کے اقر باءور فقاء کی عظمت و برتری میں کوئی فرق نہیں آتا۔ اسلئے کہ بیعظمت و برتری
عقیدہ غیر بیت برنہیں بلکہ ان کے مجاہدا نہ اسلامی کا رنا موں پر مبنی ہے۔

نوال باب:

مولا ناعنابیت علی کاعهدِ امارت

ابتدائی حالات اورامارت

مولا نا عنایت علی کے ابتدائی حالات اختصار أیملے بیان ہو چکے ہیں۔سیدصاحب نے انہیں سرحدے بہ غرضِ دعوت و بلغ بن**کال بھیج دیا تھا۔** واقعہ کالاکوٹ کے بعد بھی وہ دعوت وتبلیغ ہی میں مصروف رہے۔ جب مولا ٹاسیدنصیرالدین دہلوی کے انتقال کی وجہ سے باہدین کی تنظیم کا سلسلہ بگڑ گیا اور سید ضامن شاہ کا غانی نیز بالا کی ہزارہ کے خوانین کو ا جرائے جہاد کیلئے حالات ساز گارنظر آئے تو مولا ناولایت علی نے انہیں (مولا ناعنایت على كو) سرحد بھيج ديا، و ہال جو كارنا ہے انجام ديئے ، وہ بھى تفصيلاً پہلے بيان ہو چکے ہيں۔ ان کی شانِ عزیمت کا اندازہ اس واقعے سے موسکتا ہے کہ اینے بوے بھائی کی معیت میں مندوستان سےمستقل ہجرت کا ارادہ کیا تو آپ کی والدہ ماجدہ نے موضع دوآب بورارہ بے ضلع گیا کا وثیقہ آپ کے حوالے کر دیا تھا۔ آپ نے بیروضع میں بائیس ہزار رویے میں میرمجوب علی ساکن کبوانی کے ہاتھ جے دیا اور دوسرے مواضعات ہے دست برداری کی ایک تحریرلکھ دی۔ (۱) انداز ، فرمایئے کہ خوش حالی اور فارغ البالی کے كتف مهتم بالشان سامان ميسر عظه اليكن ان ميس سے كوئى چيز انبيس راوحت ميس مجاہدانه اقدام ہےنہ روک سکی۔

يبهى عرض كيا جاچكا ہے كەطريق كار كے متعلق مولانا ولايت على سے اختلاف كى

⁽¹⁾ تَذَكَّرُ وُصاوقَ وَمِن ١٣٤٤

بناء پریمنگل تھانہ چلے گئے تھے۔ مولانا کے انقال پرمجاہدین کے مرکز میں آئے اور سب نے بالا تفاق انہیں امیر تسلیم کرلیا۔ تقریباً دو ہفتے بعد ۲ رصفر ۲۲۹ اھ (کے ار نومبر ۱۸۵۲ء) کو باور چی خانہ میں آگ گئی جس میں سب کچھ جل گیا۔ اسی زمانے میں ایک واقعہ پیش آیا جس کی وجہ سے انگریزوں کے خلاف لڑائیاں شروع ہو گئیں، اور مولانا کی زندگی کے بقیداوقات کا ایک ایک لیے لڑنے کھڑنے یا لڑائی کھڑائی کا اجتمام کرنے ہی میں تمام ہوا۔

انگريز پنجاب وسرحدميں

اپریل ۱۸۴۸ء میں دیوان مول راج ناظم ملتان نے دو انگریزوں کے قبل سے بنگامہ بیا کیا۔ جگہ جگہ سکھ فوجیں بغاوت پر آمادہ ہوگئیں، اور سکھوں سے انگریزوں کی دوسری جنگ کا آغاز ہوا، جس کی تفصیلات ہمارے موضوع سے خارج ہیں۔ سکھوں نے اس جنگ میں بھی پدر پے شکستیں کھا ئیں اور پنجاب کوانگریزوں نے اپنی سلطنت میں شامل کرایا۔

اس زمانے میں ایب بزارہ کا ڈپٹی کمشنرمقررہوا۔کاغان کے سیدائگریزی تسلط کو قبول کرنے کیلئے تیار نہ تھے۔ان کے گوجر مزارعین نے ایب کے پاس شکا بیتی کیں اور وہ این شکایتوں کو درست مان کرسید دن کا مخالف ہو گیا۔ اس کی تجویز سے کاغان پر انگریزی فوج کا حملہ ہوا اور تین فوجیں تینوں سمتوں سے بردھیں: ایک بالاکوٹ کی سمت سے، دوسری شمیری سمت سے، تیسری بھوگڑ منگ کی سمت سے۔سیداس فوج کا مقابلہ نہ کر سکتے تھے،ان سب کو گرفتار کر کے بغہ میں نظر بند کر دیا عمیا۔ اس طرح کاغان انگریزوں کے زیراثر آیا۔

دوانگریزوں کافتل

سكسول كي عهد بين مكى انظام ايها نه تفاكه كاركنول كوجز ئيات برتوجه بوقى-

اگریزوں نے ہرچو نے بڑے امرکوقاعدے اور ضابطے کے ماتحت لانے کوکشش کی۔
ابتدا میں اگریزوں نے انظامات کی گرانی کے لئے ایک بورڈ بناویا تھا، جس کے ماتحت
مختلف محکمے کام کررہ ہے تھے۔ ایک محکمہ نمک کا بھی تھا، جس کا ایک وظیفہ یہ تھا کہ انگ پار
کے نمک کو صدود پنجاب میں وافل نہ ہونے دے۔ پچھدت بعد شکایتیں تن گئیں کہ باہرکا
ممک والی امب کے ایک پار کے علاقوں میں سے ہوکر پنجاب ہینچتا ہے، چنا نچر راستوں
کی دیکھ بھال اور درآ مد کے انداد کی غرض سے محکمہ نمک کے دو افر مسر کارن
کی دیکھ بھال اور درآ مد کے انداد کی غرض سے محکمہ نمک کے دو افر مسر کارن
حدآ زادحس زئی قبیلے کے علاقے سے ملتی تھی۔ ان افروں کا یہ اقد ام انظامی بورڈ کی
مدآ زادحس زئی قبیلے کے علاقے سے ملتی تھی۔ ان افروں کا یہ اقد ام انظامی بورڈ کی
مورہ دیا تھا کہ
میں رہے یاحس زئیوں کے علاقے میں بچلے گئے ۔ صرف اتنا معلوم ہے کہ حسن زئیوں
میں رہے یاحس زئیوں کے علاقے میں بھلے گئے ۔ صرف اتنا معلوم ہے کہ حسن زئیوں

ڈپٹی کمشز ہزارہ کا ابتدائی تاثریہ تھا کہ اس قبل میں وائی امب اوراس کا وزیر بھی شامل ہیں، لیکن جب وائی امب سے مطالبہ کیا گیا کہ جو حسن زئی اس کے علاقے میں رہتے ہیں، انہیں حکومت انگلامیہ کے حوالے کردیا جائے تا کہ حکومت فدکورہ حسن زئی قبیلے پر تلائی کے لئے زور ڈال سکے، تو وائی امب نے بیمطالبہ پورا کردیا۔ گویا اپنے خلوص اور پاک دامنی کاروشن جوت مہیا کردیا۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ حسن زئیوں نے امب کے مرحدی پاک دامنی کاروشن جوت مہیا کردیا۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ حسن زئیوں نے امب کے مرحدی و یہات تباہ کر ڈالے اور دوقلعوں (چمیری اور شنگلی) پر قبضہ کرلیا۔ (۱) اور اس سے کوہ

⁽۱) واقعے کی تفصیلات میں جزوی اختلافات ہیں۔اس کا ذکر مندر جد ذیل کتابوں میں آیا ہے۔'' کوہ سیاہ سے وزیر ستان تک''از واکلی (انگریزی) ص:۳۴ تا ۳۹۔''سرصد شالی وغر بی کی مہیں''، از نیویل (انگریزی) ص:۳۵۳۲'' ہزار وگزینز' (انگریزی) مطبوعہ ۱۹۹۰ ومی:۱۷۲–۱۹۷

سياه کي پهلي مهم کا آغاز موا۔

کوه سیاه کی پہلی مہم

سرحد آزاد میں کوہ سیاہ (مقامی نام'' کالا ڈھا کا'') کوخاص اہمیت حاصل ہے۔ جسکےخلاف انگریزوں کوایئے عہد حکومت میں کئی مرتبہ میں بھیجنی پڑیں۔اسکے جنوب میں تنولیوں کا علاقہ ہے، مشرق میں اگر ور، پریاری، فیکری، نندھیاڑاور ویشی، شال میں در پائے سندھاورتا کوٹ مغرب میں دریائے سندھ۔اس بہاڑ کی ڈھلانوں پر پوسف زئی پٹھان آباد ہیں، جن میں سے تین قبیلے قابل ذکر ہیں جسن زئی، اکازئی اور چغرزئی۔ حسن زئی عیسی زئیوں کی ایک شاخ ہیں ،خودان کا قبیلہ دس چھوٹی شاخوں میں بٹا ہواہے۔ انگریزی حکومت کے سامنے اب بیسوال آیا کہ آیا والی اسب کوامداددی جا ہے یا خاموش بیٹے رہنا جا ہے۔امدادری جاتی تو آزاد بہاڑی علاقے میں فوج بھیج بغیر جارہ نہ تھا اور کچھ معلوم نہ تھا کہ کون کون سے قبیلے سن زئی کی ایداد کیلئے اٹھ کھڑے ہول گے۔ ہزارہ گزیٹیئر کے بیان کےمطابق لارڈ ڈلہوزی ان قبائل کےخلاف فوج کشی میں متامل تھا،جنہیںمستقل طور پر قبضے میں رکھنامشکل نظر آتا تھا۔لیکن اگر والی امب کی امداد میں کوئی موثر قدم نه اثهایا جاتا تو نتیجه به ہوتا که تمام سرحدی رؤساء وخوانین انگریزی مصلحتوں کی ممہداشت کے بجائے آ زاد قبیلوں سے اپنے تعلقات خوش گوار رکھتے اور پورے سرحدی علاقے میں بدامنی کے جراثیم پرورش پانے لگتے۔غور وفکر کے بعد دسمبر ١٨٥٢ء ميں تاديم مهم بھيجنے كا فيصلہ كرليا گيا۔ كرنل ميكيسن (١) كمشنر پشاوراس مهم كا سالار

⁽۱) Mackeson میکیسن بناور کے کمشنر کی حیثیت میں ۱۰ رحمر ۱۸۵۳ء کو برآ مدے میں کام کرد ہاتھا جب محتر کے ایک پٹھان عبداللہ نے اس پرقا میل نہ حملہ کیا۔ جارروز بعد سکیسن نے وفات پائی۔

جنك

اس مہم میں لیویز اور پولیس کے علاوہ سکھوں اور ڈوگروں کی جمنفیں بھی شامل تھیں اور ان کے ساتھ پہاڑی تو پیں بھی تھیں۔ والی اسب کا مشہور مقام شیر گڑھ فوج کا مرکز قرار پایا، جہاں سے اسے تین حصوں میں تقیم کر کے مختلف اطراف سے حسن زیوں پر یورش کی گئی۔ ان کے متعدد گاؤں جلادیے گئے۔ جنوری ۱۸۵۳ء میں فوج واپس آگئی۔ فریقین کا جانی نقصان زیادہ نہ ہوا، کیکن حسن زیوں کے دیہات کو بہت نقصان پہنچا اور ان کے خاکر جادہ نہ ہو گئے۔ اگر چہوہ حوالگی پر آبادہ نہ ہوئے تا ہم سمجھ لیا گیا کہ ان کے خاکر جادہ جو یا گیا۔ ان کے خاکر جادہ ویرغال انگریزی حکومت کے قبضے میں تھے آئیس رہا کردیا گیا۔ (۱)

مجامدین کے اقد امات

مولانا عنایت علی پہلے ہی ہے والی امب کے خلاف اقد امات کا فیصلہ کئے بیٹے تھے، حسن زئیوں کے ہنگا ہے ہے اس فیصلے کو جامہ عمل پہنانے کا اچھا موقع پیدا ہوگیا۔
اس میں ایک فائدہ یہ بھی تھا کہ حسن زئیوں کی امداد ہے آزاد قبائل میں مجاہدین کے لئے دلی ہمدردی کی فضا پیدا ہوجائے کی امید تھی اور ان ہے آئندہ مجاہدانہ اقد امات میں امداد لینے کے امکانات قوی ہوتے تھے۔ چنانچے مولانا نے مجاہدین کواقد ام کا حکم دے دیا اور ایک جیش نے مرکز ہے بیش قدی کرتے ہوئے عشرہ کو فلہ پر قبضہ کرلیا جو ستھا نہ اور امب کے خلاف ایک نئی سے پورش شروع ہوگئی۔

کے درمیان والی امب کے نہایت مشہورہ حکم قلعے تھے۔ گویا امب کے خلاف ایک نئی سمت سے پورش شروع ہوگئی۔

⁽۱) یہ بیان ہزارہ گزییرے ماخوذ ہے جس: ۲۷ ارس پر تفصیلات مطلوب ہوں تو ملاحظہ فرمایے واکلی کی کتاب جس: ۳۲۲ با ۱۳۷ مادر نیویل کی کتاب جس: ۲۲ تا ۲۴ ا

اگریزی فوج کوہ سیاہ کی مہم سے فارغ ہوئی تو وائی اسب کو بجاہدین کی ترکنازوں سے بھی بچانا ضروری ہوگیا۔ حسن زئیوں کے خلاف اقدام کی جوہ جبھی، وہی و جبھاہدین کے خلاف بھی اقدام کا موجب بنی۔ چنانچہ ۵؍ جنوری ۱۸۵۳ء کو وائی اسب کی ایک فوج نے شائی سبت سے بہاڑ پر چڑھ کرعشرہ وکوئلہ کے شال اور مغرب میں مور ہے قائم کر لیے۔ ۲ رجنوری کو ایک اگریزی فوج مسٹرا ببٹ کی سرکردگی میں کر پلیاں سے کشتیوں پر سوار ہوئی اور دریا پار پہنچ کر اس در سے کی طرف بڑھی جوعشرہ وکوئلہ اور مرکز جاہدین کے درمیان آ مدورفت کا راستہ تھا۔ ایک اگریزی جیش دریا کے بائیں کنار سے پرستھانہ کے ورمیان آ مدورفت کا راستہ تھا۔ ایک اگریزی جیش دریا کے بائیں کنار سے پرستھانہ کے عین سما منے مور ہے لگا کر بیٹھ گیا تا کہ وہاں سے بجاہدین کیلئے کمک نہ جیجی جاسکے۔ جب اگریزی فوج نے درمیان تھی ، قلعہ چھوڑ گئے۔ وائی اسب کاشکر نے تعاقب کیا اور تیں سے ورمیان سے کہ جاہدین نے نہ تھن دیا دوسو نے درمیان تھی ، قلعہ چھوڑ گئے۔ وائی المب کے شکر نے تعاقب کیا اور تیں سے خرہ وکوئلہ کو خالی کیا بلکہ اپنے مرکز (واقع ستھانہ) سے بھی نگل گئے۔ (۲)۔

اوکنلے نے لکھا ہے کہ جہاں دادخاں والی اسب نے مجاہدین سے مرعوب ہوکر بظاہر اطاعت قبول کر لی تھی اور مولا ناعنا بت علی ہے کہا تھا کہ عشرہ اور اسب اپنی طرف سے مجھے عطافر ماویں ، اس اثناء عیں اس نے انگریزوں سے بھی ساز باز کا سلسلہ جاری رکھا۔ انگریزی فوج نے عبور وریا کے بعد عشرہ اور ستھانہ کے درمیانی درے پر قبعنہ کرنے کی کوشش کی ، جہال دادخال نے شالی سمت میں مجاہدین کے بی نکتے کا راستہ روک دیا۔ یہ حالت دیکھ کرمولا ناعنا بر علی مجاہدین کے بڑے جھے کوساتھ لے کرستھانہ بینے سے اکی اور اخلعت وال کے بندا ول یعنی عقبی جیش مولا ناکرم علی دانا پوری کی سالاری میں پورے کا پوراخلعت وال کا چندا ول یعنی عقبی جیش مولا ناکرم علی دانا پوری کی سالاری میں پورے کا پوراخلعت

⁽۱) نیدیل کی کمآب مین:۲۷ روانلی کی کمآب بیس تفصیل درج نهین ایکن اصل واقعے کاذکرمی:۲۷ پرموجود ہے۔ (۲) ہزارہ کڑیٹے میں: ۲۷

شہادت سے سر فراز ہوا۔(۱)

حافظ عبدالمجيد كابيان

اب تک جو پچھ لکھا گیاہ ہ انگریزی بیانات پر مبنی تھا۔خود جماعت بجاہدین کی طرف سے ان حالات کے متعلق کوئی تفصیل نہ مل سکی۔مولانا عنایت علی کے صاحبزادے حافظ عبد المجیدی جن یاد داشتوں کا ذکر پہلے آچکا ہے ان سے جو پچھ معلوم ہوااس کی کیفیت فیل میں درج ہے:

فیل میں درج ہے:

ا- مجاہدین نے ۲۰ رصفر ۱۲۶۹ھ (۳۰ رد تمبر ۱۸۵۲ء) کو یعنی مولانا ولایت علی کی وفات ہے ایک ماہ تمین دن بعد علاقہ امب پرایک شبخون مارا تھا۔ میرا خیال ہے کہ اسی شبخون کے سلسلے میں عشرہ دکوٹلہ پر قبضہ کیا گیا۔

۲- ۲۳رد تمبر کود و باره ایک شبخون مارا گیا **ـ مجامدین کی جماعت کچیس جانباز و**ل پر مشتمل تقی اور طره بازخال ان کاسالار تھا۔

س- عشرہ اور کوٹلہ میں بخار نے و بائی شکل اختیار کر لی تھی۔ اکثر مجاہدین بیار ہو گئے اور لڑائی کے قابل ندر ہے، صرف بجاس نے جنگ کی اور شہادت پائی۔ ان میں مولا نا کرم علی دانا پوری (۲) اور شیر خال تنولی بھی شامل تھے۔

۳- مولا ناعنایت علی اس واقع کے بعد ناواگئی، (علاقہ چملہ) چلے گئے۔ان کا ارادہ بیتھا کہ صوات بینج کرسیدا کبرشاہ ستھانوی اور ملاعبدالغفوراخوندصوات سے آئندہ اقد امات کے متعلق مشور ہے کریں۔سیدا کبرشاہ کوصوات کے باشندوں نے ۱۸۴۷ء میں

⁽¹⁾ کلکته ربویی، بابت ۱۸۷۰ یس : ۳۹۵ – ۳۹۲

⁽۳) مولانا کرم علی کے متعلق بتایا گیا ہے کہ مجاہدین میں شامل ہونے ہے قبل وہ درزی کا کام کرتے تھے۔ دیکھنے تحریک جہاد نے آئیس معمولی حیثیت سے افعا کر کس او نجی منزل پر پہنچادیا کداس جماعت بجاہدین کی سالاری کا منعب عطا ہوا، جس نے ایک نازک موقع پر ناموس حق کی تفاظت میں بے تکلف جانیمی قربان کیس۔

ا پنا بادشاہ بنالیا تھا۔ پنجاب ریکارڈ ز آفس کی بعض تحریرات سے مترشح ہوتا ہے کہ جنوری اسلام میں تھا۔ نظب المام میں تکومت انگلشیہ کوشاہ صوات کی طرف سے حملے کا خطرہ پیدا ہو گیا تھا۔ اغلب ہے حملہ ہوجا تالیکن اخوندصا حب عموماً ایسے اقد امات کی مخالفت کرتے رہے۔

مولانا کی سر گرمیاں

حافظ عبدالمجید ہی کی یاد داشتوں ہے واضح ہوتا ہے کہ مولا ناعنایت علی نے خاصی لمبی مدت چملہ، بونیر اور صوات میں گزاری اور وہ ۱۲ر جب ۱۲۰ سام ۱۲۵ سے ۱۸۵ میں گزاری اور وہ ۱۸ در جب ۱۸۵۰ سے مولانا کا ۱۸۵۰ کواس سفر سے والیس آئے ۔ میرا خیال ہے کہ اخوندصا حب صوات نے مولانا کی امداد واعانت میں کسی گرم جوثی کا اظہار نہ کیا ۔ سیدا کبرشاہ اگر چہ باوشاہی کے منصب پر فائز تھے، لیکن صوات کی صورت حال ایسی تھی جس کے پیش نظروہ اخوندصا حب کی رضامندی اورا تفاق کے بغیر کوئی اقد ام نہ کر سکتے تھے۔

ستفانہ کے مرکز میں بیٹے کرمولانا کے لئے وسیع پیانے پرمجاہدانہ سرگرمیاں جاری
رکھنے کا کوئی امکان ندر ہاتھا، اس لئے وہ کسی ایسے مرکز کی تلاش میں ہے، جہاں سے
مجاہدین کی جعیت بڑھانے اور ان سے زیادہ وسیع علقے میں مؤثر کام لینے کا انتظام
ہوسکے۔ غالبًا اسی خیال سے مولانا نے سیدعباس رئیس منگل تھانہ کے ساتھ از سرنوعہدو
پیان کر لیے اور اس کے مقام کو مستقل مرکز بنا لینے کا فیصلہ کیا۔ چنا نچہ ستھانہ کے مرکز میں
مولانا یکی علی (ابن مولوی اللی بخش عظیم آبادی) کو مختار بنایا اورخود اہل وعیال کے ساتھ
منگل تھانہ میں منتقل ہوگئے، جوخدوفیل کے علاقے کا ایک مشہور وستحکم مقام تھا۔ پچھ دریہ
بعدمولانا ولایت علی کے اہل وعیال کو بھی منگل تھانہ ہی میں بلالیا۔ (۱)

⁽۱) تذکر قصادقہ على مرقوم بے كہ سيد عمر شاہ ،سيد عمر ان شاہ ،سيد شاہ مدار اور سيد مبارك شاہ في مجابدين سے بوفائی كى ص : ١٣٥ - بيد بيان سراسر غلا ہے ۔ سادات سقانہ في ابتداء سے آخر تك مجابدين كى اعانت برابر جارى ركھى اور اس مليلے على اپناسب كچمتاه كرايا - بوسكا ہے كہ أبيس مولانا عنايت كل سيس، باقى حاشيہ اسكام مخدير

وعوت وتنظيم

منگل تھانہ چہنچ کے بعدمولانا نے گردو پیش جہادی دعوت اور جاہدین کی تنظیم شروع کردی۔ فتح خال رئیس پنجار فوت ہو چکا تھا اور اس کے بیٹے مقرب خال نے خاندانی سرواری کا منصب سنجال لیا تھا۔ وہ خودرائے آ دمی تھا، اس وجہ سے قبیلے کے مختلف گروہ اس سے الگ ہو گئے ۔مقرب خال نے بالجبر انہیں اطاعت پر مجبور کرنا چاہا تو اختلاف نے شد یدعداوت کی صورت اختیار کرلی۔مولانا نے انتہائی کوشش کی کہ مقرب خال اور اس کے قبیلے کے درمیان صلح ہو جائے۔ خدو خیل کے دہانے پرموضع تو تالی واقع تھا، جہال کے لوگ مقرب خال کے جم قبیلہ تھے، انہیں کی ہمت و مردائی پر خدو خیل کی حفاظت موقوف تھی،مقرب خال نے انہیں سب سے بڑھ کروشن بنالیا تھا۔

مولانا نے ۲۰ رشوال ۱۲۷۱ھ (۲ رجولائی ۱۸۵۵ء) کو بمقام کن گلگی خودمقرب خاں سے ملاقات کی۔افسوس کہ بیخلصا نہ مسائی مصالحت بارآ ورنہ ہوسکیں۔تعجب خیز امر بیہ ہے کہ تو تالی کے باشندے اس شرط برصلے کے لئے تیار ہوتے تھے کہ تقرب خال مولانا اور مجاہدین سے کوئی سروکار نہ رکھے۔ بدایں ہمہ مولانا نے مصالحت میں کوئی وقیقہ معی المحانہ رکھا۔

ایک مصیبت بیچش آئی کہ خود منگل تھانہ میں ساوات کے دوگھر انوں کے مابین کشکش جاری تھی۔ایک گھرانے کا رئیس سیدعباس تھا اور دوسرے کا سید پوسف عرف متیاں گل۔ ان کے درمیان بھی وقتا فوقتا کڑائیاں ہوتی رہتی تھیں۔مولانا نے ان کا

مگذشته صفحه کابقیه حاشیه کی سرگرمیوں سے کا ملا انفاق ندہو، جیسا کہ خودمولا نا دلایت علی کونیمی انفاق ندتھا۔ بایس ہمد سادات نے ندمجاہدین کی اعانت ورفاقت میں کبھی تامل کیا اور نہ انہیں سرکز ستھا ندسے افعایا، بلکہ مجاہدین ہی کی وجہ ہے محکم یزوں نے ۱۸۵۸ء میں ستھانہ کو بر باوکر ڈالاتو سادات مہابن بہاڑ میں بمقام ملکا جا بیٹھے اور مجاہدین کو بھی ساتھ لے محتے ۔ جیسا کہ آھے چل کرواضح ہوگا۔ ان پر بے دفائی کا الزام بخت درنج افزاہے۔ اختلاف منانے کی بھی پوری کوشش کی۔ یبی زمانہ ہے،جس میں خود مولانا کے اقرباء ان سے ناراض ہو گئے اور منگل تھانہ سے ہندوستان چلے آئے۔مولانا فرحت حسین (مولانا ولا یت علی کے چھوٹے بھائی) نے مولانا کے اہل وعیال کو بھی ہندوستان بلالیا ،صرف مولانا فیاض علی (ابن مولوی اللی بخش) دہاں رہے اور وہیں وفات یائی۔

نيامر كزاور نيادائر وعمل

جب تک مجاہدین کا مرکز ستھانہ کی سرز مین میں تھا،ان کی بورشیں ضلع ہزارہ پر ہوتی تھیں ۔ منگل تھانہ پہنچنے کے بعد مولانا عنایت علی نے مجاہدین کو جس علاقے پر پورشوں کے لئے تیار کیا،وہ سمہ کا علاقہ تھا، یعن ضلع پشاور اور ضلع مروان کا میدانی علاقہ ۔او کنلے نے لکھا ہے کہ مولانا عنایت علی نے:

اینے ہمراہیوں کے دل میں انگریز کافروں کے خلاف نفرت کی آگ کے بھڑکانے میں کوئی سراٹھانہ رکھی۔ مجاہدین روزانہ قواعد کرتے بلکہ بعض اوقات دن میں دومر تبہ قواعد میں فضائل جہاد کے متعلق نظمیس پڑھی جاتیں۔ جمعہ کی نماز کے بعد بہشت کی شاد مانیوں کے بارے میں وعظ کم جاتے اور انہیں تلقین کی جاتی کے صبر واستقامت ہے اس وقت کا انتظار کرد جب برطانو کی ہند کی نینے کی موعودہ ساعت آئینے گی۔ (1)

حافظ عبد المجيد كى يادداشتول ميں بتايا كيا ہے كه ١٦ ارزيج الآخر ١٢٢ اھر ٢٦ رد تمبر ١٨٥٥ء) كومبارك خيلوں نے مولانا كى اطاعت كا اعتراف كيا۔ چھروز بعدوز يرالدين قاصدر قم لے كر پشنہ سے سرحد پہنچا۔ اواخر رمضان ١٢٢ هـ (اوائل جون ١٨٥٩ء) ميں مقرب خال نے اطاعت نامه مولانا كے پاس بھيجا۔ ١٣ ارشوال ٢١٢ هـ (١١٧ جون

(۱) کلکتہ ربو یو، بابت ۱۸۷ء، ص:۳۹۲۔ او کیلے نے نظموں کے سلسلے میں اس جہادیہ کا بھی حوالہ دیا ہے جو''سیداحمہ شہید'' میں نقل ہو چکا ہے۔ ملاحظہ ہوجلد دوم میں: ۲۵۸-۲۲۰ ۱۸۵۷ء) کومولانا مبارک خیلوں کی طلب پر نگر کی گئے۔ پھر چروڑ کی پنچے، جہاں جالیس روز تک سخت بارش ہوتی رہی۔ آخر قاسم خیل (علاقہ خذ وخیل) میں آئے۔ باشندگانِ تو تالی نے اب کے بھی مصالحت کا پیغام مستر دکر دیا، اس وجہ سے ان پر شبخون مارا گیا۔

انگريزوں کی دعوتِ مصالحت

غالبًا ۱۸۵۳ء میں انگریزوں نے ایک مکتوب مجاہدین کے نام بھیجا تھا۔ جس کا مضمون بیتھا کہ جو محص امن سے رہنا چاہے، پٹاور، ہزارہ، یوسف زئی یا راولپنڈی کے انگریزافسروں کے پاس پہنچ جائے۔ اسے ہندوستان جانے کا پرواندل جائے گا، نیز زاوِ راہ کے لئے روپے دیے جائیں گے۔ خط پہنچنے سے ایک مہینہ بعد تک بھی جو محص اس کے مطابق عمل نہ کرے گا اور وہ برطانوی رعایا ہوگا تو اُسے مفسد سمجھا جائے گا اور کم سے کم تمن مال کے لئے جڑیاں پہنائی جائیں گی۔ لیکن اہل جن میں کون اس بڑمل کرسکتا تھا؟ کون مال کے لئے جڑیاں پہنائی جائیں گی۔ لیکن اہل جن میں کون اس بڑمل کرسکتا تھا؟ کون ناواقف تھا کہ حکومت انگلافیہ کے خلاف جنگ کی سزا کیا ہوگی؟ انھوں نے انتہائی غور وفکر کے بعذ یہ راستہ افتیار کیا تھا جسے ایمان کا راستہ بچھتے تھے، اور اس سلسلہ میں ہو تم کی تکلیفیں اٹھانے پر ہم تن آ مادہ تھے۔

MOA

دسوال باب:

۱۸۵۷ء کا ہنگامہ آزادی

انگريزي فوجوں ميں دعوت جہاد

مولانا عنایت علی نے انگریزی فوجوں میں بھی دعوت جہاد کا انظام کردیا تھا، جس کی تفصیلات تو معلوم نہ ہو سکیں الیان انظام کی جھلکیاں مختلف سرکاری رپورٹوں میں نظر آتی جیں۔ مثلاً ریون شا(۱) کی رپورٹ میں بتایا گیا ہے کہ ۱۸۵۲ء میں کارفر مایان بخاب کو باغیانہ خط و کتابت کا سراغ ملا اور معلوم ہوا کہ دلی بیادہ فوج کی چھی رجنٹ مقیم راولینڈی کوراہ وفاسے مخرف کرنے کی کوشش کی گئے۔ تحقیقات پر پہتہ چلا کہ تحریک بغاوت کا مرکز عظیم آباد کا محلہ صادق پورتھا جومولا تا ولا یت علی مولا نا عنایت علی اور ان کے اقرباء کا وطن تھا۔ لارڈ ڈلہوزی نے بیر بورث و کھی کرتا کید کی کہ اہل صادق پور کی سرگرمیوں کو بہطور خاص زیر گرانی رکھا جائے۔ بچھ مدت بعد نہ کور کا الارجنٹ کے مثی محمد سرگرمیوں کو بہطور خاص زیر گرانی رکھا جائے۔ بچھ مدت بعد نہ کور کا الارجنٹ کے مثی محا حب موصوف کو کیا سرادی گئی۔

پنجاب کے پرانے ریکارڈ زمیں بھی مجاہدین کی خط و کتابت کے حوالے ملتے ہیں، اگر چدان کی مفصل کیفیت معلوم نہ ہوسکی۔

⁽۱) Raven shaw ہنر نے تکھا ہے کہ اگرای دنت بجاہدین کے خلاف اقد ام ہوتا تو نمبر سے بیادہ فوج سب سے پہلے میدان جنگ میں بھیجی جاتی۔ جو خط و کتابت ہاتھ آئی اس سے ثابت ہو کیا کہ ارسال بجاہدین کے لئے ایک ہا تا عدہ مکام استوار ہو چکا تھا۔ (جادے ہندی مسلمان ص ۴۰)

۱۸۵۷ء کا ہنگامہ

اارمی ۱۸۵۷ء کومیر تھ سے اس منگامے کا آغاز ہوا، جسے انگریزوں نے "غدر" قرار دیااورابل ملک آزادی کی جنگ قرار دیتے ہیں۔اس بنگاے نے جا بجاانگریزوں کیلیے سخت نازک حالات پیدا کردیے تھے۔مجاہدین کیلئے اقد امات کا مدیزاہی اچھاموقع تھا کیکن اتفاق کی بات ہے کہ حالات نظر بہ ظاہر جتنے ساز گار تھے بعض نا گہانی حوادث و وقائع کے باعث اتنے ہی ناساز گار ہو گئے۔مثلاً مجاہدین کواس موقع برسید اکبرشاہ بادشاہ صوات ہے گرال قدر امدادل سکتی تھی اور سید موصوف کی قیادت میں بورا سرحدی علاقہ حصول آزادی کیلئے قدم آ گے بوھاسکتا تھا،لیکن اس سے پچھدت پہلےصوات میں والی ک دیر کی سازشوں کے باعث سیدا کبرشاہ کے خلاف بغاوت کی آگ بھڑک اٹھی تھی ،جس میں ان کے بھائی سیدشاہ مدار نے شہادت یائی۔(۱) پھراا رمنی ۱۸۵۷ء کو بعنی ہندوستان میں جنگ آزادی شروع ہونے کے دن سیدا کبرشاہ نے انقال کیا اور معاملات کی باگ ڈور ملاعبد الغفور اخوند صوات کے ہاتھ میں آھئی، جنہیں بوجو وغیر معلوم آزادی کی مساعی ہے چنداں دلچیں نتھی، اور جوسیدا کبرشاہ کے فرزندسیدمبارک شاہ کی جانشینی سے بھی اختلاف رکھتے تھے۔

غرض جب تک حالات سازگارند تعے، مجاہدانداقدام کیلئے اسباب مہیا نظر آتے تھے۔ جب حالات سازگار ہوئے تو اسباب کا شیرازہ بھر گیا۔ نیکن مولانا عنایت علی نے جانبازی کی منزل میں قدم رکھا تھا تو اے ایک اہم دینی واسلای فرض سمجھا تھا، جو بہر حال اوا ہونا چاہئے تھا۔ اسباب اور ماحول کی سازگاری و ناسازگاری اس فرض پر اثر انداز نہ ہوسکتی تھی۔ مولانا کا نقطہ نگاہ زندگی کے آخری سانس تک یہی رہا اور میرے نزدیک میجے

⁽¹⁾ سيد شاهد اراد اكل رقع الاول ١٤٢١ ها عن ايك الله الله عن الدرخت زخى بوئ اور كياره روز بعد وفات بالى -

اسلامی نظلۂ نگاہ بی ہے، کہ سامان کی فراہمی یقینا ضروری ہے اور اس کے لئے برابر سعی جاری تھا۔ جاری سے انسان ہاتھ جاری رکھنی چاہئے انسان ہاتھ ہاری تھا۔ اس حقیقت میں بھی شبہیں کہ بعض اوقات صرف جوشِ عمل اور مظاہرہ کا شاری سامان کی فراہمی میں معاون بن جاتے ہیں۔

۵۵ پیاده فوج

میں متعین تھا۔ ۲۱ فرج (نیٹورانفظ ی) مردان میں مقیم تھی ادراس کا ایک حصہ نوشہرہ چھاؤنی میں متعین تھا۔ ۲۱ فرجی ۱۸۵۷ء کونوشہرہ والا حصہ سرکشی پر آ مادہ ہوگیا۔ آ دھی رات کو یہ اطلاع پشادر پہنچی جہاں مشہورا تکریز افسر ہر برث ایڈورڈز اور جان نکلسن موجود تھے۔ انہیں اندیشہلاحق ہوا کہ بینچر مردان پہنچتے ہی ۵۵ پوری کی پوری سرکشی اختیار کرلےگی اور انہیں اندیشہلاحق ہوا کہ بینچر انہوں نے صبح والے رسالے سے بھی بہ اطمینان بیٹھے رہنے کی امید نہیں ہو سکتی۔ چنانچہ انہوں نے صبح ہوتے ہی بشاور کی فوج سے ہتھیار لے لئے اور ۲۲سرمئی کو رات کے وقت کرنل چیوٹ ہوتے ہی بشاور کی فوج سے ہتھیار لے لئے اور ۲۳سرمئی کو رات کے وقت کرنل چیوٹ (Chute) ایک فوج کے ساتھ مردان روانہ ہوگیا۔ جان نکلسن سیاسی مشیر کی حیثیت میں ساتھ گیا۔

۵۵کو پشاور سے فوج کی آمد کاعلم ہو چکاتھا۔ وہ لوگ مقابلے کیلئے تیار ہو گئے سخت جنگ ہوئی جس میں ۵۵ کے ایک سوہیں افراد مارے گئے ، ڈیڑھ سو کے قریب زخمی ہوئے ، ہاقی آزاد علاقے میں پہنچ گئے ، ان میں زخمی بھی شامل تھے۔

اخوندصوات كاسلوك

یدلوگ اس غرض سے صوات بینچ کہ وہاں سے کمک لے کر انگریز وں پر یورش کریں اورخود انگریز مورخوں نے اعتراف کیا ہے کہ اگر بیمزید قوت فراہم کرے واپس آجاتے تو پنجاب كيلي سخت خطره ثابت ہوتے۔(۱) ليكن سيدا كبرشاه فوت ہو چكے تھے۔ان كى جانشينى كا معاملہ ضغطے ميں پڑا ہوا تھا اور صوات كے انتظامات كى باگ ڈورعمل حضرت اخوندصاحب كے ہاتھ ميں تھى۔ ہومزنے لكھاہے:

اگراخوندصاحب ان کی ہم نوائی اختیار کرلیتے ، انہیں ساتھ لے کروادی
پٹاور پرتر کتاز کردیتے اور کافروں کے خلاف جہاد کا اعلان فرمادیتے تو پوری
آبادی میں ندہبی جوش وحیت کے شعلے اس پیانے پر بھڑک اٹھتے کہ شاید
برطانوی سلطنت کا ڈھانچا ان میں جل کر خاک ہوجا تا۔ خوش متی سے اخوند
صاحب نے ایسا ند کیا اور انہیں اپنے علاقے سے باہر نکال دیا۔ البت ایے
رہبروں کا انظام کردیا جو انہیں دریائے سندھ کے پار پہنچاویں۔ (۲)
ان لوگوں نے اس خیال سے شمیر کا رخ کیا کہ اپنے ہندوستانی بھائیوں سے ربط و

ضبط پیدا کرنے کا موزوں ترین مقام وہی تھا۔ ضلع ہزارہ کے ڈپٹی کمشنر میجر پچر
(Becher)نے گردونواح کے تمام زمینداروں اور ملکوں کوتا کید کردی تھی کہ ان لوگوں
کوسلامت نہ گذرنے ویں۔ ان کے پاس نہ کھانے کو پچھ تھا اور نہ پہننے کو۔ پہاڑی
علاقے میں سردی بہت زیادہ تھی، ای طرح تکیفیں اٹھاتے اور مصیبتیں جھیلتے وہ کاغان
پہنچ گئے۔

سادات کاغان کی بدعهدی

معلوم ہوتا ہے کہ ہرقدم پروہ لوگ نقصان پہنچاتے رہے جنہیں میجر بچر نے مختلف

⁽۱) بعنادت ہند (اگریزی) مصنفہ ہوئر ہیں۔ ۱۳۱۸۔ باسورتھ سمتھ نے جان لارٹس کے سوائح حیات میں لکھا ہے کہ اگر ۵ھ کی سرکٹی کے انسداد میں ذراہمی تا غیر ہوجاتی تو بتیجہ خداجائے کیا ہوتا۔ مشہورڈ اکواجون خال ہماری سرحد پر پہنچ کیا تھا، اخوندصا جید موات اس کے حالی تقے اور وہ ۵ھ کے بیابیوں سے ساز باز کے بعد قلعے میں ویکھنے والا تھا۔ (جلداول میں ۱۵۵)

⁽۲) بعاوت بند (انگریزی) مصنفه بومز مین ۱۳۱۸

قتم کے لائج دے تیار کرر کھاتھا۔ جو باتی بچے انہوں نے کاعان پہنچ کر جھیارڈ ال دیے،
لیکن ساوات نے انہیں اگریزوں کے حوالے کردیا اوروہاں وہ اس نالے پر بیدردی سے
شہید کردیئے گئے جس کا نام اس وقت سے ' شہید کھ'' مشہور ہوا۔ ہزارہ کی زبان میں
ایک گیت مشہور ہے جس کے دوبند عبد البجار شاہ صاحب ستھانوی نے کتاب العبر ت
میں درج کئے ہیں، اس گیت میں جو درتے ذیل ہے: ۵۵ کے افراد کو کالے کہا گیا ہے،
میں درج کے ہیں، اس گیت میں جو درتے ذیل ہے: ۵۵ کے افراد کو کالے کہا گیا ہے،
یعنی کالی فوج کے سیابی:

| سيدال جاكية قرآن | كالے آلتھے كاگان |
|---------------------------|-----------------------|
| یے دین تے مجلّے | کالے کوڑے راہ تو مھلے |
| أبهنال سيدال جا كال وسيال | کالے آلتھے ﷺ کیاں |
| سے وین تو مُعِلّے | کالے کوڑے راہ تو پھلے |

یعنی کالی فوج کے سیابی کاغان میں اترے ،سیدوں نے قرآن پر حلف اٹھا کران سے حفاظت کے وعدے کئے۔ وہ مجاہد بے دین کا جھوٹا راستہ ترک کرکے ہے دین کا راستہ اختیار کر چکے تھے۔ کالی فوج کے سیابی وادیوں میں اتر پڑے تھے، جہال سے کسی کو ان کا سراغ نیل سکتا تھا۔ کاغانی سیدوں نے انگریزی فوج کوان کے چھپنے کی جگہیں بنادیں۔ کالے بدینی کاراستہ ترک کرے دین کاسچاراستہ اختیار کر چکے تھے۔ (۱)

⁽۱) سیدعبد البیارشاه کی کتاب العبرت تھی نیز ہم:۳۱۳-۱۳۵ سیدصاحب فرماتے ہیں کہ بعض روایات کے مطابق چنز ل بخت خاس بھی انہیں اوگوں ہیں شافی تھا جنہیں صوات سے نکالا کیا تھا۔ آئیں درہ کا نافور بند کے داست در باتے ستدھ پر پہنچا دیا کیا ۔ عبور دریا کے بعد یے کا خان پہنچ تو سادات نے آگر یزوں کو اطلاع دے کر آئیں قتل کراویا۔ وقعی سوگرفتارہ وے ، آئیس ہری ہورش کو لیوں سے ازادیا کیا۔

مزيد ہندوستانی مجاہد

سرحدآ زادیس ہندوستانی مجاہدوں کا ورودمض ۵۵ پیادہ نوج کے بقیہ آلسیف افراد
تک محدود نہ تھا بلکہ اس سے پیشتر سیدا کبرشاہ نے بھی ہندوستانیوں کی ایک فوج مجرتی
کررکھی تھی، جےسیدعبد الجبارشاہ کے قول کے مطابق، کالی پلٹن کہا جا تا تھا۔ سیدموصوف
لکھتے ہیں کہ اخوندصا حب صوات نے بہ اصراراس فوج کومنتشر کرایا تھا اور اعلان کردیا تھا
کہ اگر یہ لوگ صوات سے رخصت نہ کیے گئے تو میں خود ہجرت کر جا دُل گا۔ چنانچہ یہ بھی
الگ کردیئے گئے۔ ان کے علاوہ بھی بہت سے لوگ انگریزوں کی کامیا بی کے بعد بھا گ
کر آزاد علاقے میں بناہ گزیں ہوئے تھے، جنہیں مولا نا عنایت علی نے اپنے پاس بلالیا
تھا۔ افسوس کہ سب مولا ناکے پاس نہنج سکے۔

حافظ عبدالجیدی یادداشتوں ہے واضح ہوتا ہے کہ جب مولا نا عنایت علی کومردان میں فوج کی سرشی کاعلم ہوا اور بتایا گیا کہ وہ لوگ بھا گرصوات چلے گئے ہیں تو مولا تا نے اول گلاب خال کوشب قدر کی طرف بھیجا کہ جتنے افرادل سکیس انہیں ہمارے پاس لے آؤ۔ پھرمیاں حسن علی کوان کے پیچھے صوات جانے تھم ویا بلکدا گروراورلئی بھی اپنے آدی بھیجی دیے کہ وہاں جتنے آدی ل سکیس انہیں ساتھ لے آئیس ۔ انگریزوں کے بیانات میں بھی بتایا گیا ہے کہ تاریخی کی جنگ یادوسری چپقلشوں میں جو مجاہدین شہید ہوئے ، ان میں جم میادہ فوج کے آدی تھے۔ تفصیل جنگ ندکورہ یا دوسرے واقعات کے سلسلے میں میں کی جائے گی۔

گیار ہواں باب:

نارنجی کی جنگ

سمته يرتنبخون

سرحدی خوانین کی حالت حددرجہ عجیب وغریب اورخاصی حوصلہ فرساتھی۔ وہ جب و کیمھتے کوئی خاص خطرہ در پیش نہیں تو مولانا کے ساتھ ہو عباتے اور جب ان پرانگر بروں کا و باؤ بڑتا تو مخالفت پر اثر آتے۔ مولانا نے اس اثناء میں میدانی علاقے کے قریبی مقامات پر چھاپوں کا سلسلہ شروع کر دیا اور نارنجی کومرکز بنالیا، جو پہاڑ کی چوٹی پر بروامشحکم مقام تھا۔ (۱)

ہمیں تمام چھاپوں کا علم نہیں ، ایک روایت میں بنایا گیا ہے کہ ۲۰ جولائی ۱۸۵۵ء کو شخون مارا گیا جس میں وشن کو بہت نقصان پہنچا۔ اس میں چھ مجابدین شہید ہوئے: یعنی مجیب الرحمٰن ، حافظ پیرمحمد بنشی محسن اللہ قاضی خان محمد ، نورخاں اور حاجی عبد الرحمٰن ۔ ایک شبخون شخ جانا اور شیوہ پر مارا گیا، جس میں چالیس پوریے ہندو اور مسلمان شامل شخون شخ محمد ان کا سالارتھا، بر بہت ہے گھوڑے ، گائیں اور اسلح لوث کرلے گئے۔ مولانا اوکنلے نے لکھا ہے کہ نواکلئ کے باشندے برے متعصب اور جوشیلے تھے۔ مولانا نورو موجابدین اور ایک سوہیں سوار مرزامحمد رسالدار آفریدی کی قیادت میں وہاں بھیج نے۔ جب انگریزی فوج نے نواکلئی اور شخ جانا پر پیش قدمی کی تو سالار پکڑا گیا اور اُسے وہاں بھیج دیے۔ جب انگریزی فوج نے نواکلئی اور شخ جانا پر پیش قدمی کی تو سالار پکڑا گیا اور اُسے دیے۔ جب انگریزی فوج نے نواکلئی اور شخ جانا پر پیش قدمی کی تو سالار پکڑا گیا اور اُسے وہاں بھیج دیے۔ جب انگریزی فوج نے نواکلئی اور شخ جانا پر پیش قدمی کی تو سالار پکڑا گیا اور اُسے۔ علی کھیوں کے دائے میر ساماہ ور الوبا غراجا ہے ہیں ، وہاں

ے دادی جلد می از کر کو کا حقیق میں ۔ کوگاے نار فی تقریباً بار وسل موگا۔

میمانسی دے دی گئی۔(1)

انگریزوں کےاقدامات

انگریزوں نے خوروفکر کے بعد فیصلہ کیا کہ اس جھے میں مؤثر فوجی اقد امات کرنے چاہئیں۔ چنا نچے میجر ہے ایل واگھن (Vaughan) کوفوج دے کربھیجا گیا۔ وہ مروان سے شخ جانا پہنچا اور گاؤں کو جلا کر واپس چلا آیا۔ اس کے بعد خود مجاہدین کے مرکز یعنی نارٹی پر یورش کا فیصلہ کیا گیا۔ اس غرض سے موضع سلیم خاں میں فوج جمع ہوئی، رات کے وقت واگھن اس فوج جمع ہوئی، رات کے وقت واگھن اس فوج کے ساتھ سلیم خال سے رواند ہوکر ۲۱ رجولائی کی صبح کو نارخی کے سامنے نمودار ہوا۔ نارخی دوگاؤں تھے: ایک نیچے اور دوسرا اس سے ذرا بلندی پر۔ واگھن سامنے نمودار ہوا۔ نارخی دوگاؤں تھے: ایک نیچے اور دوسرا اس سے ذرا بلندی پر۔ واگھن ربی نے نے گوگاؤں کے گرد گھیراڈ ال لیا اور اسے تباہ کرڈ الا ایکن فوج ساری رات کوچ میں ربی تھی اور اندیشہ تھا کہ مجاہدین بری تو سے اس پر جملہ نہ کردیں، لہذا واگھن واپس آھیا۔ اس کے بیان کے مطابق تقریباً بچاس مجاہدین شہید ہوئے، جن میں زیادہ تر ہندوستانی تھے۔ (۲)

واکلی کابیان ہے کہ مولا ناعنایت علی نے علم جہاد بلند کیا تو نارنجی بیں ساڑھے چوسو مجاہدین جمع تھے:

⁽١) كلكتدريويو، بابت جولائي ١٨٤٠م. ص ٣٩٩-٣٩٩

⁽۲) نویل کی کتاب مین ۳۹- پیم

بونیر، چمله اورصوات سے روز اند کمک پینی رای تھی۔(۱)

دوسراحمليه

تقریباً دو ہفتے کے بعد انگریزوں نے نارنجی پردوسرے حملے کی تیاری کر لی۔ اس مرتبہ مختلف فوجوں ہے سوسپاہی فراہم کئے گئے ، ان کے ساتھ تو بیں اور ہاتھی بھی تھے۔ اب کے شیدہ کو مرکز اجتماع بنایا گیا۔ کیم اگست ۱۸۵۷ء کو جس کے وقت میجر وانگن اس فوج کے ساتھ نارنجی پہنچا۔ گاؤں کی شال ست جو نالہ بہنا ہے، اس کے کنارے پرتو بیں لگا کر گولہ باری شروع کردی گئی۔ پھر تین سو آ دمیوں کی ایک جمعیت کو ہدایت کردی گئی کہ مغربی ست ہے ہوکرگاؤں کے جنوب میں پہنچ جائے۔

و مری فوج کومشر تی ست ہے پیش قد می کا حکم ملا ،خود میجر وانگن نچلے گا وَں کی جُلّه مور ہے لگائے بیٹھا تھا۔ بڑا سخت مقابلہ ہوا،لیکن بالائی نارنجی پر قبضه کرلیا گیا۔مولا نا عنایت علی اس ہے پیشتر نارنجی سے نکل کرا کیے محفوظ مقام پر بہنج گئے تھے۔

ایک بھی مکان سلامت نہ چھوڑا گیا، بہت سے مکانوں کی دیواری بھی ہاتھیوں ہے مسار کرادی گئیں۔(۲)

تین آ دمی گرفتار ہوئے:ان میں سے ایک بریلی کا مولوی تھا، دوسرا چملہ کا نشان برداراور تیسراچوونڈ ا کا باشندہ تھا۔ نام کسی کا بھی معلوم نہ ہوسکا۔ بعد ازاں تینوں کوموت کی سزادے دی گئی۔ (۳)

وائلی نے بھی جنگ کی کیفیت اس طرح بیان کی ہے۔اضافہ بیکیا ہے کہ مجاہدین میں سے بہت سے آ دی مارے گئے۔مقتول میں ۵۵ پیادہ فوج کے آ دمی بھی تھے،جس

⁽۱) واکلی کی کتاب من ۲۳-۳۸

⁽r) 'اشابی ومغربی سرحدی قبائل کے خلاف مبحول کی دستاویزین' ، مرتبه بیجت اورمیسن (انگریزی) ص :۸۹

⁽٣) نوبل کی کتاب مین:۴۰۰

نے مردان میں سرکشی اختیار کی تھی۔(۱)

حافظ عبد المجید کی یاد داشتوں سے واضح ہوتا ہے: عرفہ کے دن (۳۰رجولائی کا ۱۸۵۷ء) معلوم ہو چکا تھا کہ انگریزی فوج حملے کیلئے تیار ہور ہی ہے۔ ۱۳ رجولائی کونماز عید کے بعد مولانا نے جہاد کیلئے دعوت عام کا انظام کیا اور قربیہ بہ قربیہ اطلاعات بھیج دیں۔ پھرمشیروں کے اصرار پرمولانا جھیا گئی چلے گئے، جونار فجی سے او پر ہے۔

بيليو كابيان

ڈاکٹر بیلیور آم طراز ہے کہ جب ہندوستان میں 'غدر' شروع ہواتو مولا ناعنایہ علی گئی اعلانات کے دریعے سے یوسف زئی کے تمام قبیلوں کو دعوت جہا دویئے میں سرگرم ہوگئے، کین یہ دعوت چنداں کا میاب نہ ہو تکی ۔ مئی میں سیدا کبرشاہ بادشاہ وسوات نے وفات پائی اوراس کا بیٹا مبارک شاہ جانشین ہوا، کین اسے چند ہی ہفتے بعد معزول کر کے ملک سے نکال دیا گیا۔ مبارک شاہ سخانہ پہنچا ، پھر فد وخیل میں مولا نا عنایت علی سے جاملا، وہاں انہوں نے قلعہ مردان پر قبضہ کر لینے کا منصوبہ تیار کیا، کیکن ہمارے فوجی اور انظامی افسروں کی ہوشیاری ومستعدی کے باعث اس منصوبہ پر عمل نہ ہوسکا۔ مولا نا عنایت علی نے نارنجی پہنچ کر قاصدوں کے ذریعے سے خفیہ نفیہ یوسف زئیوں کو بعناوت پر آ مادہ کرنا چاہا۔ اس معالم میں اہل نارنجی کی روش کے سبب انگریزی فوج نے انہیں سخت مزادی۔ مولا نا عنایت علی اوران کے ساتھیوں کو بہاڑی علاقے میں چلے جانے کے سوا چارہ نہ رہا۔ (۲)

⁽۱) وائلی کی کتاب مین ۵۵

⁽٢) يوسف زئيول كي متعلق عام ريورث (انكريزي)ص ٢٠ ٥٤- ٩٧

مولا ناعنایت علی کی سرگزشت

او پر بتایا جا چکا ہے کہ مولا نا عمایت علی نارنجی پر پورش سے پہلے جھپا گئی چلے گئے ہے، پھر معلوم نہیں کہ وہاں سے کہاں کہاں گئے۔ بعض روانیوں سے خیال ہوتا ہے کہ وہ پہلے وادی چملہ میں کن گلکی پہنچ گئے تھے۔ وہاں سے عالبًا اس لئے خد وخیل کے شالی مقام چنگلکی گئے کہ نئے سرے سے انگریزی علاقے پر پورشوں کا انتظام کریں۔ وہاں باغ میں مولانا کا ڈیرا تھا۔ غالبًا اسی زمانے میں موضع خلیل پر شبخون مارا گیا۔ جب خدوخیل پر انگریزوں کے قصد پورش کا حال معلوم ہوا تو مولانا چنگلکی سے دو کھاڑہ چلے خدوخیل پر انگریزوں کے قصد پورش کا حال معلوم ہوا تو مولانا چنگلکی سے دو کھاڑہ چلے گئے، جو پنجتار اور منگل تھانہ کے درمیان واقع ہے۔ شایدان کا ارادہ یہ تھا کہ منگل تھانہ کے واسک تا بیٹ میں جا سکتا تو چنگ کارخ کرلیا جو ستھانہ سے او پر بہاڑی علاقے میں آستاند داروں کے پر گئے جا سکتا تو چنگ کارخ کرلیا جو ستھانہ سے او پر بہاڑی علاقے میں آستاند داروں کے پر گئے کا ایک مشہور مقام ہے۔

سرحدي رؤساء كي منافقت وعداوت

میرا خیال ہے کہ واقعہ کارنجی کے بعد بعض سرحدی خوانمین ورؤساء کی نیتوں ہیں فتورآ گیا تھا۔ان ہیں سے اکثر کاشیوہ ہی بیتھا کہ جس فریق کوکا میاب و کیھتے اس کے طرف دار ہوجاتے۔خودا پنا کوئی مستقل ارادہ اور نصب انعین ندتھا۔ جب دنیا پرتی انسانی گروہوں کی فکر ونظر کا مرکز بن جاتی ہے اور اخلاقی یا دینی مقاصد کے چراغ سینوں ہیں گل ہوجاتے ہیں تو یہی حالت پیش آ جاتی ہے۔سرحدی رئیس خدا جانے کب ہے اس حالت میں منزور ہے کہ انہوں نے کہ حال مجاہدین حالت میں منزور ہے کہ انہوں نے اِکا وُکا مجاہدین میں شہید کر ڈالے ۔غالبًا اس خیال ہے کہ انگریزوں کوخوش کر کے انعام حاصل کریں۔ چنا نچہ حافظ عبد المجید کی یاد واشتوں میں بنایا گیا ہے کہ رئیج الآخر سے کا اواخر نوم بر

۱۸۵۷ء) میں سید یوسف میاں گل نے تین مجاہدوں کوموت کے گھاٹ اتار دیا تھا جو منڈی سے منگل تھا نہ آرہے تھے، اوران کی لاشیں ۱۳رزیجے الآخر (کیم دسمبر ۱۸۵۷ء) کو چنگلئ پہنچیں۔ بعد ازاں اس قسم کا ایک واقعہ سیدعباس رئیس منگل تھانہ کے متعلق بھی بیان کیا گیا ہے۔

مالى مشكلات كالبجوم

مولا نا اورمجامدین کیلئے زیادہ تر رقمیں ہندوستان ہے جیسجی جاتی تھیں۔ ۱۸۵۷ء کا ہنگامہ شروع ہوتے ہی انگریزوں نے دریائے سندھ کے تمام کھاٹوں اور کو ہتانی علاقے كراستوں كى مرانى كانہايت سخت انظام كرلياتھا، جس كے بعد سى قاصد كے لئے كوئى رقم سرحد پہنچاناممکن نہ رہا تھا۔ چنانچے مختلف روایتوں میں بتایا گیا ہے کہ ایک قاصد ، عطرے کا بھائی امیرارقم لے کر پینچ گیا ،لیکن ایک اور قاصد جمالا زیدہ میں گرفتار ہو گیا اور اس کے پاس چیمسورو یے کی رقم تھی۔بعدازاں میاں عبدائحی ،عطاءاللہاور حسن علی گرفتار كركتے كئے اورانہيں يابدزنجيرسالكوث بھيج ديا گيا،جن ميں سے صرف حسن على كى رہائى کا ذکرروایت میں آیا ہے۔ کچھ معلوم نہیں، دوسرے قیدیوں سے کیاسلوک ہوا۔ یہ بھی نہیں کہاجاسکتا کہ بیگرفتاریاں مولا ناعنایت علی کی زندگی میں چیش آئیں یاان کی وفات کے بعد، تا ہم ان سے داختے ہے کہ کی ۱۸۵۷ء سے کسی رقم کامولا ناکے یاس پہنچنا بےصد مشکل ہو گیا تھا۔اغلب ہے کہ ہنگاہے کے دوران میں رقمیں بھیجنے کی کوئی صورت ہی نہ رہی ہو،اس کئے کہصادق بور (پٹنہ) کے مرکزیر بہرے بٹھادیے گئے تھے، نیزمولا نااحمہ الله، شاہ محمد حسین اور مولوی واعظ الحق کونظر بند کردیا گیا تھا۔ یہی حضرات رقمیں جمع کرنے اورجھیجے کے مختار وذ مہدار تھے۔

'' تذکرہ ٔ صادقہ'' میں مرقوم ہے کہ غدر کی و جہ سے راستے پر مخطر تھے۔شہر سے باہر

نکانا دشوارتھا، املاک تہلکے میں تھے، جانوں کوامن نہتھا، پھر کیوں کرممکن تھا کہ سرحد کے فاقد کشوں کے لئے کوئی سامان کیا جاسکتا۔(۱)

غرض جنگ نارنجی کے بعدمولا ناعنایت علی کی مالی حالت بے صدخراب ہوگئ ۔ پچھ مدت تک وہ ساہو کاروں سے قرض لے کرگزارہ کرتے رہے، اس اثناء میں لشکریوں کو شخواہ بھی نہ دی جاسکی ۔اب ایک طرف بعض افراد نے مجبور ہوکر شخواہ کامطالبہ کیا، دوسری طرف ساہوکاروں نے اپنی رقموں کے لئے تقاضا شروع کردیا۔

ادائے واجہات

مولا ناکے لئے یہ براہی نازک وقت تھا۔ انہوں نے اپنی تمام قابل فروخت چیزیں

برتکلف نی ڈالیں اور سب سے پہلے ساہوکاروں کا قرضہ تارا، جورقم باتی رہ گئی اُسے اوا

کر نے کیلئے سید نجیب بنگائی نے صانت دے دی۔ بجاہدین ہیں سے پچھاوگ خورد دنوش
کی ضرورتوں سے مجبور ہوکر ادھر ادھر بھر گئے۔ قادر بخش جمعدار، اللہ بخش اور بعض
دوسرے بجاہدین کوشنرادہ مبارک شاہ اپنے حصانہ لے گیا۔ شمشیر خال نے لا ہور کی طرف
جانے کی اجازت لے لی منشی عبد الحق آروی بھی مولا نا کے تھم کے مطابق صوات چلے
کے بصرف ناصر محمد بشریعت اللہ ،عبد الغفور کا ال اور عبد الغفور خرد مولا ناکے پاس رہ گئے۔
مولا ناکے پاس ایک قیمتی مشکی گھوڑا تھا۔ انہوں نے مقرب خال رئیس کو پیغام بھیجا
کے بھوڑا خرید لے تاکہ اس کی قیمت سے واجبات ادا کئے جاسکیں۔ اس نے پچھتو جہ نہ
کہ معلوم نہ ہو سکا کہ ملاصاحب کی اس خواہش کا نتیجہ کیا نکلا۔
معلوم نہ ہو سکا کہ ملاصاحب کی اس خواہش کا نتیجہ کیا نکلا۔

⁽۱) تذكر وُصادقه بس: ۱۳۸

مصيبت درمصيبت

اس انناء میں مولانا کی بیاری بہت بڑھ گئی۔ عجیب بات یہ ہے کہ ان کا اکلوتا صاحبزادہ حافظ عبد المجید بھی بیار ہو گیا اور اس کی بیٹی شہر بانو کی صحت بھی بگڑ گئی۔ اس زمانے میں بربان الدین ، منٹی شس الدین کے بھیجے ہوئے بچھ روپے لایا۔ اُدھر حسن زئیوں نے جروڑئی میں جرگہ منعقد کیا، جس کا مقصد غالباً یہ تھا کہ مولانا کے لئے کمک کا انتظام کریں، کیکن مولانا بیاری کی شدت کے باعث جرگے میں شریک نہ ہوسکے۔ بیان کیا جاتا ہے کہ ۱۲ روپ میں اوری ۲۲ رفروری ۱۸۵۸ء) سے مولانا نے فاقد شروع کرویا تھا، یہ سلسلہ دس دن جاری رہا۔

'' تذکرہ صادقہ'' میں مرقوم ہے کہ سلسل فاقہ کشی نے حالت تباہ کردی۔ درختوں کی کونپلوں اور پتیوں پراصحاب صفہ کی سنت ادا ہونے گئی۔ چند ماہ سلسل غلے پرنظر تک نہ پڑی، اجابتیں خون آلود ہونے لگیں۔ (۱)

⁽۱) تذکره صادقه بص: ۱۳۸

بارجوان باب:

مولا نا کی وفات اور مرکز وں کی تباہی

الله يعهد كاليفاء

حافظ عبد المجید کی یاد داشتوں میں بتایا گیا ہے کہ مولا تا پر بخار کا ایسا شدید حملہ ہوا جس میں بے ہوتی طاری رہنے گی۔ اس وقت تک وہ غالبًا پر گنہ منصور جدون کے مقام نور و بانڈہ میں تھے۔ وہاں سے ان کی چار پائی اٹھا کرچنٹی کی جانب روانہ ہوئے۔ اثنائے راہ میں شرف اللہ ملا، جو پشاور سے آیا تھا۔ کوہ چنٹی کی چڑھائی پر بخار بہت تیز ہوگیا اور ہولا تانے کا غذاور قلم دوات طلب کی ، شاید کچھ کھنے کا ارادہ تھا۔ عین اس حالت میں سکرات موت کا عالم طاری ہوگیا اور کمزوری اتنی بڑھ گئی کہ لکھنے کی سکت ندر ہی۔ حافظ عبد المجید نے پوچھا کہ میں س پرچھوڑ ہے جاتے ہیں اور آپ کے بعد امیر کون ہو؟ کچھ نہر مایا اور جان جاں آفریں کے سپر دکر دی۔ تذکر کا صادقہ میں بتایا گیا ہے کہ بہ عارضہ بخار وضیق انفس بجن المومن سے جنت نعیم کور حالت کی۔ (۱) سورہ احزاب میں ہے:

مِنَ الْـمُـؤُمِنِيُـنَ رِجَسالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضَى نَحْنَهُ.

تر جمہ: ایمان والوں میں سے کتنے مرد ہیں جنہوں نے بچ کردکھایا جو عہد کیا تھااللہ سے اوران میں سے کوئی تو پورا کر چکے اپنا ذمہ۔ مولا نا عنایت علی نے یقینا اپناذ مہ بہترین طریق پر پورا کیا۔ سیح تاریخ وفات کسی

⁽۱) تذکرهٔ صادقه مِن: ۱۳۸

نے نہیں بتائی لیکن اتنا معلوم ہے کہ ۲ رشعبان ۱۲۷ ھ(۲۲ ارچ ۱۸۵۸ء) تک وہ زندہ تھے، غالبًا اس سے ایک دوروز بعد انقال کیا۔ بہ ہر حال پنجتار ، چنگلئی ،منگل تھانہ اور ستھانہ پرانگریزی پورش سے یہ چیشتر کاواقعہ ہے۔

مولانا كي شخصيت

مولانا کے جوش جمیت اور گری طبیعت کے متعلق بہت کچھ لکھا جا چا ہے، لیکن انہوں نے اللہ کی راہ میں عزیمت واستقامت کا جوظیم القدر نمونہ پیش کیا، وہ اپنی مثال آپ ہے۔ جس وقت سے سیدصا حب کے ساتھ ان کا تعلق پیدا ہوا، اپنی پوری زندگی و بی کا مول کے لئے وقف کردی۔ بنگال میں جس اعلیٰ پیانے پر انہوں نے دین کی تبلیغ فرمائی، اس کی کیفیت تفصیلاً پہلے پیش کی جا چی ہے۔ پھر وہ سا دات کا غان اور اہل ہزارہ کو لئے ماس کی کیفیت تفصیلاً پہلے پیش کی جا چی ہے۔ پھر وہ سا دات کا غان اور اہل ہزارہ کو لئے کرجس مردائی سے سکھوں کے خلاف جہاد آرا ہ ذکے وہ بھی اعاد ہے کی مختاج میں وال سے بھی خدا کی دور میں مولانا نے یہ بھی ثابت کردیا کہ خدا کی راہ میں جہاد پھولوں کی بیج میں وہ وہ ان کر چھے تھے۔ لیکن دیکھئے آخری دور میں انہیں کس درجدروح فرسا آلام ومصائب سے سابقہ پڑا۔

پید پلے نہ تھا، جوسامان پاس تھا، نیج ڈالا ،اکلوتا فرزندصا حب فراش ،اس کی پی بیار، اپنی حالت حددرجہ نازک ، برسمت دشمنوں کا بجوم ،امتحانوں اور آز مائشوں کے اس سیل بیل قدم استوار رکھنا صرف انہیں ار باب ہمت کا کام ہے، جن کے سامنے فرض بہ طور فرض موجود ہو۔ دنیوی راحتوں اور آسائشوں سے انہیں کسی نوع کا سر دکار نہ ہو، اور صرف رضائے باری تعالیٰ پرنظر ہو۔ بیمنزل بوی تھن ہے، لیکن مولانا عنایت علی نے جس شان فداکاری سے اسے مطے کیا اس کی مثالیں ہر جگہ نہیں مل سکتیں ۔ان کے سامنے صحابہ کرام گا اسوہ حسنہ تھا، جنہوں نے دین حق کی اشاعت میں اپنی جانیں بے در اپنے

قربان کردیں _ یہی اسوہ قوموں کیلئے دنیااورآ خرت میں سرخروئی کاواحد ذریعہ ہے۔

مولانا كي ايك تصنيف

کچھ معلوم نہیں ،مولا نانے تبلیغ واشاعت وین کے سلسلے میں کتنی کتابیں یارسالے کھے ہمیں صرف ایک رسالے'' بت شکن'' کاعلم ہے، جس میں تعزید داری کی حقیقت واضح کی گئی ہے۔ بداس مجموعہ رسائل میں چھیا تھا جورسائل تسعہ کے نام سےمولانا عبدالرحيم نے شائع كيا تھا۔ تقريباً دى گيارہ صفح كا ہے اوراس كى زبان بہت سادہ ہے، معمولی بر ها لکھا آ دی بھی اسے بخولی سمجھ سکتا ہے۔ اس میں حضرت امام حسین گی شہادت اور اہل بیت کے مصائب بوے پر تاخیر انداز میں بیان کئے گئے ہیں، لیکن فر ماتے ہیں کدان کے اصل اسوہ کی بیروی کرنی جاہئے، نہ کہ غیر شرعی اور غیر مناسب رسوم کو مدار کار بنایا جائے۔مولانائے موصوف نے فاری میں ایک مثنوی بھی آکھی تھی ، جس کے صرف یانج نسخ انگریزوں نے چھپوائے۔مولوی محمد یوسف صاحب رنجورجعفری (ابن مولانا یچیٰ علی) کلکته میں بورڈ آف ایگزامیزس کےصدر تھے،انہوں نے مثنوی کے بروف دیکھے۔وہ حضرت مولا ناابوالکلام آ زاد کے عزیز دوست تھے۔مولا نانے کئی مرتبہ فرمایا کہ کچھ پروف میری نظرے بھی گذرے تھے۔ایک شعراب تک یاد ہے ۔ نه با مود را زن بنگی بود کہ ایں جنگ ما با فرگی بود اس مثنوی کا ایک نسخه عالبًا نذیا آفس کے کتب خانے میں بھی ہے۔

صورت ِحال

مولانا کے سامنے صورت حال کا جونقشہ تھا اس کا کسی قدر اندازہ ان کے ایک اعلامیہ سے ہوسکتا ہے،جس کامضمون ریتھا: ۱- جس ملک پر کفارمسلط ہو جا کمیں ، وہاں کے مسلمانوں کا فرض ہے کہ متحد ہوکر کفار سے کڑیں۔

۲- جوازنه تنکیس وه ججرت کر کے کسی آزاداسلامی ملک میں پہنچ جا کیں۔

سو- ہجرت موجودہ حالات میں فرض ہے اور جولوگ ہجرت سے باز رکھنے کی کوششیں کریں، وہ منافقت کی زومیں آتے ہیں۔

۳- جولوگ ہجرت بھی نہ کرسکیں وہ حکومت سے علیحد گی پڑھل پیرا ہوں، مثلاً کسی کام میں حکومت کی مدونہ کریں، اس کی عدالتوں میں نہ جا کیں، اپنے جھگڑوں کے فیصلے کے لئے پنچائیتیں بنا کمیں وغیرہ -

کی خنیں کہا جا سکتا کہ اس تشم کے کتنے اعلامیے مولانا نے وقتا فو قتا ہندوستان بھیجے۔(۱)

ازواج واولاو

مولانا کی بہلی شادی سید محمد مسافر کی صاحبز ادی سیدہ آ منہ سے ہوئی تھی۔ بہار میں
یہ بہلی شادی تھی جو انتہائی سادگ سے شریعت کے مطابق انجام پائی۔اس خاتون سے
حافظ عبد المجید بیدا ہوئے، کچھ مدت بعداس المید کا انقال ہوگیا تو ان کا نکائے ٹانی شاہ محمد
حسین کی بیوہ صاحبز ادی سے ہوا۔ اُن سے صرف ایک لڑکی پیدا ہوئی جسکا نام ہاجرہ تھا۔
حافظ عبد المجید نے اسپنے چچا مولانا فرحت حسین سے تعلیم پائی، پھریدا ہے والد کے
ساتھ سرحد علے گئے، وہیں فوت ہوئے۔ائے دوصاحبز ادے تھے اور ایک صاحبز ادی۔

⁽۱) خودمولا تا بگال ش دموت و بلغ كاكام كرر ب تقات وه برمقام برمجدول كوآ بادكرت اور فصل خصومات ك لئے مغایتی بناویتے تھے۔

انتظام امارت

ڈ اکٹر بیلیج نے لکھا ہے کہ مولا نا عنایت علی نے چنٹی میں بہ عارضہ بخار وفات پائی،
ان کے فرزند حافظ عبد المجید کے بجائے تین آ دمیوں کومشتر کہ امیر بنا دیا گیا: ایک مولا نا
نصر الله، دوسر سے شاہ اکرام اللہ اور تیسر سے میر تق ۔ حافظ عبد المجید کواس لئے امیر نہ بنایا
گیا کہ ان کی زبان میں لکنت تھی ۔ مشتر کہ امارت میں مولا نا نصر اللہ کو دوسروں پر تقدم
حاصل تھا۔ گویا وہ اس بورڈ کے صدر تھے۔ انہوں نے ضلع پشاور کے مسلمانوں کو حکومت
مانگھیہ کے خلاف برا بھیختہ کرنے کی بڑی کوششیں کیں، لیکن حکومت نے ان کوششوں کو
کامیاب نہ ہونے دیا۔ (۱)

شاہ اکرام اللہ چند ہی روز بعد ستھانہ چلے گئے اور شاہ نورلڑی کی جنگ میں وہی مجاہدین کے سالار تھے۔مولا نا نفر اللہ ہے مراد غالبًا مولانا نوراللہ ہیں، جنہیں منصب امارت میں شریک کیا گیا تھا۔ ڈاکٹر بیلیو نے غلط نہی ہے انہیں نصر اللہ لکھ دیا۔

ايك اورشبخون

نارنجی کی جنگ میں اگریزوں کی کامیابی واکل کے بیان کے مطابق مجاہدین کے جوش وہمت پراٹر انداز نہ ہوسکی اور تین مہینے سے کم مدت کے اندرا ندرانہوں نے ایک اور شبخون مارا۔ یوسف زئی کا اگریز اسٹنٹ کمشنر (مسٹر ہارن Home) دورہ کرتا ہوا ﷺ جانا میں خیمہ زن تھا۔ مجاہدین نے خدوخیل ، نارنجی اور شیخ جانا کے باشندوں کی مدد سے اکتوبر ۱۸۵۷ء میں سخت شبخون مارا۔ ڈاکٹر بیلیو کے بیان کے مطابق مولوی شریعت اللہ شبخون مار نے والے جیش کے سالار تھے۔ اسٹنٹ کمشنر بیصد مشکل جان بچا کر بھاگا۔ اس کے ساتھوں میں سے پانچ مارے مجھے اور پوراسامان مجاہدین کے ہاتھ آیا، اس بنا پر

⁽۱) بوسف زئيول كي متعلق عام رپورت (انكريزي)

اگریزوں نے ایک زبروست تادیم مہم کی تیاری کی ، جس کامدعایے تھا کہ بجاہدین کے تمام مرکزوں کو تباہ کر ڈالا جائے ، چنانچے تقریباً پانچ ہزار(۱) کا لفکر تیار کیا گیا۔ میجر جزل سرسڈنی کاٹن (Sydney Cotton) کواس فوج کا سالار بنایا گیا۔

پنجناراور چنگلئ کی نتابی

۲۵ را پریل کو بیفوج موضع سلیم خال میں جمع ہوئی۔ تو تالی کے باشندول اور مقرب خال رکیس بنجتار کی عداوت کا حال ہم پہلے بیان کر چکے ہیں۔ تو تالی والول نے جب د کھا کہ انگریزی فوج مقرب خال کے خلاف اقدام کیلئے قریب آئیجی ہے تو انہول نے د کھا کہ انگریزی فوج مقرب خال کے خلاف اقدام کیلئے قریب آئیجی ہے تو انہول نے ۲۵ را پریل کو بہطور خود پنجتار پر ہلہ بول دیا مقرب خال تو ان کے ہاتھ نہ آیا کیکن انہول نے پنجتار کو آگ دی۔

سڈنی کاٹن نے فوج کے تین جھے کے: ایک سلیم خال میں محفوظ جیش کے طور پر مظہرائے رکھا، دوسر کے ویراہ راست پنجتار پر پیش قدمی کا تھم دیا، تیسر کے وخود ساتھ لے کر درہ در ہند کے راستے چنگلئ پنجا اور اسے تباہ کرکے پنجتار کے پاس جہا تگیر در کے کر استے سلیم خال والیس آگیا۔ پنجتار پہلے ہی جل چکا تھا، اگر بزی دستے نے وہال پانچ کر جگہ تو چیں لگا کیں اور پنجتار کی دیواروں کو مسار کر ڈالا۔ (۱) یہ مقام ۱۸۲۷ء سے کر جگہ تو چیں لگا کیں اور پنجتار کی دیواروں کو مسار کر ڈالا۔ (۱) یہ مقام ۱۸۲۷ء سے امرکز رہا تھا۔ اس کے بعد بھی مجابدین نے پچھ مدت وہاں گراری تھی۔ اس کے ممام درخت بھی کا شہر اور گیا، اس کے تمام درخت بھی کا شہر اور گیا، اس کے تمام درخت بھی کا شہر اور گیا، اس کے تمام درخت بھی کا شہر اور گیا، اس کے تمام درخت بھی کا شہر اور گیا، اس کے تمام درخت بھی کا شہر اور گیا، اس کے تمام درخت بھی کا ش

⁽۱) وائلی کے بیان کے مطابق سی تعداد جار ہزار آ ٹھ سوسر تھی۔

⁽۱) وائل كركتاب من:۵۵ ۲۸ ۲۸

عبدالحق آروى كابيان

مجاہدین میں ایک صاحب مولوی عبد الحق آ روی تھے، جو ہندوستان پرانگریزی
تسلط کے بعد ترک وطن کر کے سندھ میں مقیم ہو گئے تھے۔۱۸۴۳ء میں انگریز سندھ پر بھی
قابض ہو گئے تو مولوی صاحب نے رخت سفر باندھا اور آ زادکو ہتانی علاقے میں طرح
اقامت ڈال دی۔وہ سیدا کبرشاہ بادشاو صوات کے میرمنشی بھی رہ چکے تھے۔انہوں نے
فز و بونیر کے نام سے۱۸۲۳ء کی جنگ امیلہ کے حالات شاہنا ہے کی بحر میں لکھے ہیں۔
متمبیدات میں پنجتار ،منگل تھانہ اور ستھانہ کی بربادی کا ذکر بھی کیا ہے۔ چونکہ بیا کے چشم
دیدشاہد کا بیان ہے ،اس لئے اسے بطور خاص پیش نظر رکھنا جا ہے۔

مولوی صاحب فرماتے ہیں کہ انگریزی فوج پنجتاری طرف روانہ ہوئی تو بہت سے ملکی خوانین اس کے ساتھ تھے، مثلاً توروکا خان قاور خال، ہوتی کا خان سر بلند خال، اسلمعیلہ کاخان خوکدادخال، ہنڈ کاخان شاہ دادخال، زیدے کاخان ابراہیم خال، ان کے علاوہ سدتم کے دو خان عجب خال اور عزیز خال بھی شامل تھے۔ (۱) مقرب خال کو علاوہ سدتم کے دو خان عجب خال اور عزیز خال بھی شامل تھے۔ (۱) مقرب خال کو آگریزوں کی یورش کاعلم ہواتو اس نے اہل دعیال کو پنجتار سے نکال کر چملہ بھیج دیا، وہ خاصاعقل مند تھا، لیکن برختی آتی ہے تو عقل کے دفتر کا شیرازہ بھی بھر جاتا ہے، ہم خوموں سے اس کی دشنی ہوگئی، یہی بے اتفاقی تباہی کا باعث ہوئی۔ فرئیوں نے پنجتار کو تاہ کر ڈالا۔

کہ بر ہر سر تار انداخت نار

نه مگراشت تارے ازاں پنجار

(1)

کے خان تو روبلنداخشام میان جہاں بود قادر بنام کے خان اسما علہ خوکداد کے ہنڈ دی بودخودشاہ داد عجب خال کے بودود مجرعزیز خوانین کملی دکر جملہ نیز

خوائین مکی به جمراه او جمدکارکن حسب دلخو او او کے مان بوتی صداقت پند مسمی به تکلوق باسر بلند کے مان زیدہ سخادت نظام براجمش بود نام

غزائے بونیرتلی نسخہ میں:۲۵

سراس بمه تاربا را بسونت (۱)

جدا کرد پیوندها را ز دوخت

مولوی صاحب فرماتے ہیں کہ مقرب خال کہتا تھا کہ میرے ہم قوم خد وحیاوں نے یہ کیا کیا؟ فرنگی کے ہاتھ سے جھے کیوں بر ہاد کرایا؟ جو پچھانییں کرنا تھا، بہتر ہوتا خود کرتے۔

منگل تھانہ کی بربادی

پنجتاراور پرتگئی ہے فارغ ہوکرسڈنی کائن نے منگل تھانہ کارخ کیا۔ اس سلسلے میں بھی فوج کے تین جھے کئے: ایک کوسلیم خال میں بدو محفوظ شہرایا، دوسرے کوتادیبی کارروائی کے اختتام تک پنجتار میں شہرنے کا حکم دیا، جومنگل تھانہ سے قریب تھا۔ مقصود یہ تھا کہ کمک کی ضرورت پڑنے جلدموقع پر پہنچ جائے۔ تیسرا حصہ براوراست منگل تھانہ کی طرف بردھا۔ راستہ بڑا دشوارگز ارتھا۔ اس جیش کے نصف جھے کو دو کھاڑہ میں تشہرایا گیا۔ منگل تھانہ کے دونوں گاؤں بالکل خالی تھے، کوئی مزاحت پیش نہ آئی۔ انگریزی کی سکھرنے گاؤں اور قلعہ بندیوں کو حسب دلخواہ برباد کیا، رات وہاں گز ارک اور ۲۰ رابر بل کو بیدستہ سیم خال واپس آیا۔ (۲)

مولوی عبدالحق فر ماتے ہیں کہ منگل تھانہ میں سیدعباس کا قلعہ بہت متحکم تھا۔ بلندی میں وہ آساں کا ہمسر تھا:

| ز افرنگیال نام تا روس رفت | ز عباسیال خان و ناموس رفت |
|--------------------------------|---------------------------|
| به علم تمشز خرابش نمود | ز عباسیاں ہرچہ آباد بوو |
| وزآ نجانمود آنچه دل خواستش (٣) | كەخوڧے نە بوداز چپ وراتىش |

⁽۱) نوزائے یو نیر تلمی نسویر ۲۱ میلیشعر میں تارہے خالبا گاؤں مراد ہے۔ پنجار نام اس بنا پر رکھا گیا ہے کہ اسے یانچ گاؤں میں مرکزی حیثیت حاصل تھی بینی کھلے کئی سٹک بٹنی فورشھی ، قاسم فیل ، پنجار۔

⁽٢) والل كى كتاب من ٩١٥ ماور نيويل كى كتاب من ١١٠

⁽۳) فزائے یونیرکلمی نیز مین ۲۸:

۳۸.

تيرجوال باب:

ستفانه کی بربادی

سادات ستفانه

پنجتاراورمنگل تھاند کے بعد مجاہدین کا صرف وہ مرکز باتی رہ گیا جومولا تا ولایت علی کے وقت سے بھی پیشتر ستھانہ میں قائم تھا۔اب انگریزی فوج اس طرف متوجہ ہوئی الیکن پورش کی کیفیت بیان کرنے سے پیشتر مناسب معلوم ہوتا ہے کہ سادات ستھانہ کے حالات اختصاراً پیش کرویے جائیں۔

سادات سقانہ سیم کی ترزی غوث بونیر کی اولا دہیں سے تھے۔ جس کی شاخیس کنٹر سے سرحد کشمیر تک پورے آزاد کو بستانی علاقے میں پھیلی ہوئی ہیں۔ سقانہ اٹھارہویں صدی میں سیدضامن شاہ نے آباد کیا تھا، جوسید علی ترزی کی آٹھویں پشت میں تھے اور در بارمغلیہ کی طرف سے آبیں پکھلی میں خاصی بڑی جا گیردے وی گئی تھی۔ سیدضامن شاہ کے بعدان کے فرزندسید شاہ گل عرف شاہ جی سقانہ کے رکیس بنے ،ان کے چھ بیٹے شقہ ،جن میں سے تین لاولد ہوئے: سیداعظم شاہ ،جوسب سے بڑے میں ہوئی شہادت صوات میں کی عمر درویتی میں گذری اور کو ٹھا میں وفات پائی ،سیدشاہ مدار ،جن کی شہادت صوات میں سیدا کبرشاہ کی وفات سے بچھ مدت پیشتر ہوئی ، باقی تین بھائیوں میں سے سیدا کبرشاہ کو میا سے سیدا کبرشاہ کو امات کی وجہ سے ختم ہوگئی تو اہل صوات نے بالا تفاق آئیس بادشاہ بتالیا۔ وہیں اقد امات کی وجہ سے ختم ہوگئی تو اہل صوات نے بالا تفاق آئیس بادشاہ بتالیا۔ وہیں اقد امات کی وجہ سے ختم ہوگئی تو اہل صوات نے بالا تفاق آئیس بادشاہ بتالیا۔ وہیں اقد امات کی وجہ سے ختم ہوگئی تو اہل صوات نے بالا تفاق آئیس بادشاہ بتالیا۔ وہیں اقد امات کی وجہ سے ختم ہوگئی تو اہل صوات نے بالا تفاق آئیس بادشاہ بتالیا۔ وہیں اقد امات کی وجہ سے ختم ہوگئی تو اہل صوات نے بالا تفاق آئیس بادشاہ بتالیا۔ وہیں اقد امات کی وفت ہوئے۔ سیدعم ،سیدا کبرشاہ کی غیر حاضری میں ستھانہ کی امادہ پی

فائز ہوئے ،سیدعمران نے سیاس کاموں میں نمایاں حصہ ندلیا۔

بیسادات سیداحد شہید کے زمانے میں مجاہدین سے وابستہ ہوئے تھے، اوراس وابستگی میں بھی کوئی خلل بیدانہ ہوا۔اس سرگزشت کے ابتدائی ابواب میں بتایا جاچکا ہے کہ مجاہدین ہردورِ ابتلا میں سادات ہی کواپنی آخری بناہ گاہ بجھتے رہے۔ پائندہ خال سے آخری مرتبدا ختلاف ہواتھا تو مجاہدین ستھانہ ہی میں آگئے تھے،مولا ناولا بت علی نے بھی اس جگہ قیام بہند کیا تھا۔اب مجاہدین ہے وابستگی ہی کے باعث ان کا وطن بھی بربادی کی زمیں آیا۔

اتمان زئيوں ہے تعلقات

ستفانہ سے بالکل قریب اتمان زئوں کے چارگاؤں ہیں: آیاز ریں، آیابالا، معمل زیریں، کیابالا، معمل زیریں، کھا بالا۔ ان لوگوں سے سادات کے تعلقات عموماً خوش گوار رہے، بلکدرشتہ داریاں بھی تھیں۔ سیدعمر شاہ کی امارت ستفانہ کے دوران میں اتمان زئیوں کوشبہ ہوا کہ ستفانہ کی طرف سے ان پوعشر عائد کرنے کی تیاریاں کی جارہی ہیں۔ بیشبر اسر بے بنیاد تھا۔ چونکہ ایک مرتبہ سیدا کبر شاہ اتمان زئیوں کی رضا مندی سے مجاہدین کیلئے گزار کے انظام کرا چکے تھے، جو کم وہیش ہیں سال پیشتر کا واقعہ تھا۔ اسلئے شبہ نے یقین کی صورت اختیار کرلی۔ ایک موقع پر سیدعمر شاہ سیا ہیوں کی ایک چھوٹی می جماعت کے ساتھ کسی کام اختیار کرلی۔ ایک موقع پر سیدعمر شاہ سیا ہیوں کی ایک چھوٹی می جماعت کے ساتھ کسی کام کے سلیلے میں کھتال گئے ہوئے تھے کہ خالفین نے ان پر حملے کی تیاری کرلی۔ سیدعمر شاہ کو سیدعمر شاہ کو سیدعمر شاہ کو کے سلیلے میں کھتال گئے ہوئے تھے کہ خالفین نے ان پر حملے کی تیاری کرلی۔ سیدعمر شاہ کو سیدینے سیاستہ معلوم ہوئی تو حیران رہ گئے۔

موقع الیا تھا کہ وہ کوشش بھی کرتے تو سب کوشبہ کے بے بنیاد ہونے کا یقین نہ ولا سکتے ، ویسے بھی سرحد آزاد کی زندگی کا ماحول اس امر کا روادار نہ تھا کہ کسی مخالف گروہ کے مظاہر ہُ توت کے وقت مقابلے ہیں پس و پیش کی جائے اور اپنی طرف سے صفائی یا عذر خوابی کو مدار کا ربنایا جائے۔ سیدعمر نے رفقاء کی قلت کے باوجود مقابلے کا فیصلہ کرلیا۔ ان خوابی کو مدار کا ربنایا جائے۔ سیدعمر نے رفقاء کی قلت کے باوجود مقابلے کا فیصلہ کرلیا۔ ان

کتمام ساتھی بھر ماری کے ماہر تھے، انہوں نے تھوڑی ہی دیر بیس اتمان زئیوں کو شکست دے کراطاعت پر مجبور کردیا اور وہ ادائے مالیہ کے اقر ارنامے لکھنے پر مجبور ہوگئے۔ بین غالبًا اہماء کا واقعہ ہے۔ بیشکست برابر انمان زئیوں کے دل میں کانے کی طرح تھنگتی رہی اور وہ اس انظار میں بیٹھے رہے کہ کوئی اچھا موقع بیدا ہوتو سادات کی حکومت کا جوا کندھوں سے اُتار بھینکیں۔

اتمان زئيوں كى سركشى

اگریزوں نے پنجتاراورمنگل تھانہ کی بربادی کے بعدگر دونواح کے تمام تبیلوں سے اقرار تا ہے کہ اور کے تمام تبیلوں سے اقرار تا ہے لیے کہ وہ سادات سے انہاں نوئی پہلے سے ایسے بی کسی موقع کے منظر تھے، چنانچوانہوں نے بھی خفیہ خفیہ انگریزوں سے معاملہ طے کرلیا۔ اس اثناء میں انگریزوں کی پورش سے دو تین روز قبل اچا تک ایک واقعہ پیش آگریزوں کی پورش کے دو تین روز قبل اچا تک ایک واقعہ پیش آگریزوں کی پورش کا باعث بن گیا۔

ا ۱۸۵۱ء کی جنگ میں دو بھائی ،سرگند خاں اور جمال خان سید عمر شاہ کے حامی رہے سے ۔جمال خان کے ہاتھ سے کھتل کے ملک محبّ اللہ خان کا ایک بیٹا مارا گیا تھا۔افغانی وستور کے مطابق با قاعدہ جنگ میں قتل ہونے والے آ دمیوں کا قصاص نہ لیاجا تا تھا،البتہ جنگ کے بغیر جولوگ قتل ہوتے تھے ان کے وارث پشتوں تک قاتلوں سے انتقام لینے کے در پے رہتے تھے ۔ محبّ اللہ خان کے بیٹوں نے اس افغانی دستور کے خلاف جمال خان کوارٹ پشتوں تک محبّ اللہ خان کے مار قبل کے درمیان قبل کردیا۔سید عمر شاہ حاکم علاقہ ہونے کے لحاظ سے اس خون ناحق کا قصاص لینے کے مجاز تھے۔ محبّ اللہ خان نے میں لیا قبہ ہونے کے لحاظ سے اس خون ناحق کا قصاص لینے کے مجاز تھے۔ محبّ اللہ خان نے رحم میں التجا ہے رحم سید عمر شاہ کی ڈیوڑھی میں التجا ہے رحم سید عال کی کی کہ جیپ چا ہا اور سخانہ کرنے کر والد کا سید عمر شاہ کی ڈیوڑھی میں التجا ہے رحم سید عمر شاہ کی ڈیوڑھی میں التجا ہے رحم اللہ خان اور سید عمر والد کا کہنا ٹال نہ سکے ، تھجہ مید نکلا اس کے بیٹوں کی حفاظت کے اقرار پر مجبور کر دیا۔سید عمر والد کا کہنا ٹال نہ سکے ، تھجہ مید نکلا اس کے بیٹوں کی حفاظت کے اقرار پر مجبور کر دیا۔سید عمر والد کا کہنا ٹال نہ سکے ، تھجہ مید نکلا اس کے بیٹوں کی حفاظت کے اقرار پر مجبور کر دیا۔سید عمر والد کا کہنا ٹال نہ سکے ، تھجہ مید نکلا

کہ سرگند خال ان کا دشن بن گیا۔ جب تیاا و رکھ بل میں کوئی بھی گروہ سید عمر شاہ کی جمایت کیسیے باقی ندر ہاتو اتمان زئی گئکر تیار کر کے سادات پر چڑھ دوڑے۔ ستھانہ کے سامنے کوئی نصف میل کے فاصلے پر بال ڈھیری نام ایک پہاڑی ہے، جوتقریباً چے سوفٹ بلند موگی ، اس پر دشمن مور ہے بنا لے تو ستھانہ پر تباہی خیز گولہ باری کرسکتا ہے۔ اتمان زئیوں نے اس پہاڑی پرمور ہے لگا لئے اور گولیاں برسانے لگے۔

سيدعمر كى شہادت

سید عمرشاہ نے بیرحالات دیکھے تواسیے سواروں اور پیادوں کی ایک جمعیت دریا کے قریب سے تھاپر بورش کے لئے بھیج دی۔خودان کا بیٹاسیدمحودشاہ اورسیدا کبرشاہ مرحوم کا فرزندسیدمبارک شاہ بھی ای فوج کے ساتھ گئے۔ان کا خیال تھا کہ تھیا پرحملہ ہوتے ہی اتمان زئی بال ڈھیری کےموریے چھوڑ کراپنی حفاظت پرمجبور ہو جا کیں گے۔مشہرے ر ہیں گے تو عقب سے ان پر کامیاب حملہ ہوسکے گا۔ پہنچو یز جنگی نقط کا اسے بڑی مؤثر تھی،کیکن این فوج کیا بھیج کرسیدعمر شاہ کو خدا جانے کیا خیال آیا کہ جوشِ تہور مین پندرہ میں سواروں کو ساتھ لے کرانہوں نے بال ڈھیری کے مورچوں پر ہلد بول دیا۔ حملہ ایسا تخت تھا کہ پہلامور چہ نتح ہو گیا اور دوسرے مورجے کے جنگر بھی جگہ چھوڑ کرمنتشر ہونے لگے۔اس اثناء میں ایک کو بی سید عمر شاہ کے سینے میں لگی اور پشت کی طرف ہے نکل گئی۔ زخم کاری تھا،سیدعمرشاہ اینے بھائی سیدعمران شاہ کےسہارے بہمشکل تمام ستھانہ کی معجد میں پہنچے۔ رمضان ۲۲ اھ کی چودھویں یا چدرھویں تاریخ تھی (۳۰ رابریل ۱۸۵۸ء) دوایلانے کی کوشش کی گئی۔سیدعمرشاہ نے انکار کردیا اور کہا: میں اللہ تعالی کے حضور میں روزہ دارہی جانا پیند کرتا ہوں۔اس حالت میں جاں بحق ہوئے۔ بیانگر میزی حملے سے عار روز پیشتر کا واقعہ ہے۔ اس کا مطلب بیرتھا کہ انگریزوں کی پورش ہے قبل ہی وہ^ا شخصیت ختم ہو چکی تھی جو مقالبلے اور مزاحمت کأسب سے بڑا مرکزتھی ۔ گویا قدرت نے

انگریزوں کیلئے پہلے ہی کامیا بی کا انتظام کر دیا تھا۔ خدوخیل میں وہ اس و جہ سے کامیاب ہوئے کہ مقرب خاں کی توم اس کے خلاف تھی۔ ستھانہ میں اس وجہ سے کامیاب ہوئے كەسىدىمرشاە جارروز پىشترشىپىد ہوچكے تھے۔

عبدالحق آ روی کابیان

مولوی عبد الحق کابیان میہ ہے کہ سید مبارک شاہ کے یا وُں میں گولی لگ چکی تھی۔ سید عمرشاہ نے اپنے ساتھیوں کو تکم دے دیا کہ اتمان زئیوں پر گولیاں نہ چلا کیں اور صرف تلوار دں سے ان پر حملہ کیا جائے۔ اس حالت میں ان کے گولی لگی اور ستھانہ پہنچ کروہ فوت ہو گئے۔

بتكفين و تدفين او ساختند سننج تفكر بيرداختم تَفنگ ِ اجل برد عِقد عمر(۱) ۲۲ م ۱۲

پی از جنگ بازی به برداختند چو تاریخ ترخیل آل خواستم به من گفت ما تف بس از زود تر

انگریزی پورش

اِنگریزی فوج ۴ مرکنی ۱۸۵۸ء (۲۰ ررمضان ۱۲۷۴ه) کوستهانه کےخلاف بروهی ، کیا اور کھبل کے تمام اتمان زئی نیز دوسرے خوانین ساتھ تھے۔ ایک ہزار بچاس آ دمیوں کا ایک جیش یا نجے تو بوں کے ساتھ دریائے سندھ کے بائیں کنارے پر جاتھ ہرا۔ فوج كابوا حصه جنوبي ست سے حمله آور مواروال امب كى فوج نے شالى ست كى بہاڑيوں یر موریع قائم کر لئے۔اس سے بیشتر سادات بال بچوں کے ساتھ ستھانہ سے ملکا چلے گئے تھے، جومہابن کے اوپران کے وطن سے تقریباً پینتیس میل کے فاصلے پر ہے۔

^{ِ (}۱) غزائے بونیر قلمی نسخہ میں:۲۳-۲۳

تھوڑے سے ہندوستانی مجاہدین وہاں رہ گئے تھے اور ان کے ساتھ جدون قبیلے کے بہادروں کا ایک جھوٹا سا دستہ تھا۔ لڑائی ستھانہ کے او پراس پہاڑ میں ہوئی جسے شاہ نورلای کہتے ہیں۔ بہب اور میسن کا بیان ہے کہ ہرمجاہدیا شہید ہوایا گرفنا کرلیا گیا۔ انہوں نے جوش حمیت کا غیر معمولی مظاہرہ کیا۔ وہ بہادرانہ پیش قدمی کرتے رہے۔ سب نے نہایت عمدہ لباس پہن رکھے تھے۔ نہ کسی کے قدم میں لرزش ہوئی، نہ کسی کی زبان سے نعرہ بلند ہوا، جیپ جیا ہے جانیں دیتے رہے۔ (۱)

سیدعبدالبجارشاہ ستھانوی اور ڈاکٹر بیلیو کے بیانات سے واضح ہوتا ہے کہ شاہ نور لڑی کی لڑائی عصر کے وقت ہوئی اور دہاں کل ساٹھ مجاہد تھے۔ شاہ اکرام اللہ ان کے سالار سے جھے۔ وہ مولا نا عنایت علی کے بعد مجاہدین کے ان تین سالاروں میں سے تھے جنہیں انظام امارت کا ذمہ دار تھہرایا گیا تھا۔ مجاہدین کا دستور تھا کہ جب مقابلے کیلئے مور چ قائم کر لیتے تو پھر پیٹے پھیرنا ان کے نزدیک قرآن کے روسے جائز نہ تھا۔ وہ شوق شہادت لے کروطن سے آئے تھے اور ان کا کام میہ ہوتا کہ دشمن پر جشنی ضربیں لگا سیس شہادت لے کروطن سے آئے تھے اور ان کا کام یہ ہوتا کہ دشمن پر جشنی ضربیں لگا سیس انگاتے جا کیں، یہاں تک کہ جان جاں آفریں کے سپر دکردیں۔ ان مجاہدین کی قبریں اب تک شاہ نورلزی کی چوٹی پر موجود ہیں۔ (۲) حافظ عبدالمجید کی یا دواشتوں میں بتایا گیا ہے کہ اس لڑائی میں شاہ اکرام اللہ کے علاوہ جمعدار اللہ بخش ، نعمت اللہ اور تقریباً تمیں مجاہدین شہید ہوئے۔

حقانه کی تباہی

انگریزوں نے ستھانہ کو بے دردی ہے تباہ کیا۔ نوبیں لگا کر گاؤں مسمار کرڈ الا۔

⁽۱) نیویل کی کتاب میں:۳۱۔ واکلی کی کتاب میں:۸۰

⁽۲) کتاب العمر قالمی نسخه مین ۱۳۹۹ و یوسف: ئیول کے متعلق عام رپورث (انگریزی) مین ۱۹۸ و اکثر بیلع نے کا ایک بیلع نے کا ایک بیلو نے کا ایک تعداد جالیس کا بعد اوجالیس کا بعد

ہاتھیوں سے مجاہدین کا قلعہ تزوایا۔ ستھانہ ،منڈی اور مرکز مجاہدین کا نشان تک باقی نہ چھوڑا۔ سیدعبد البجارشاہ کے بیان کے مطابق ستھانہ کی دوآ بادیاں تھیں: ایک زیریں ستھانہ ،جس میں عام اوگ رہتے تھے۔ دوسرے بالائی ستھانہ ،جہاں سیدعمرشاہ تھے۔ بالائی ستھانہ ،جہاں سیدعمرشاہ تھے متھے۔ بالائی ستھانہ کو بارود سے اڑا دیا گیا ،سایہ دار درختوں کو بھی کا ث ڈالا گیا ،جو کث نہ سکے ان کی چھال ایک ایک فیٹ اتار دی گئ تا کہ خشک ہوجا کیں ۔ مولوی عبد الحق آروی نے اس آبادی ئے تھا۔ آروی نے اس

حقانه گو بلکه شهر حیا ست
د بند د خورند آنچه آید بدست
چو سادات باچار عادات اند
چهارم دیانت ازال جمله دال

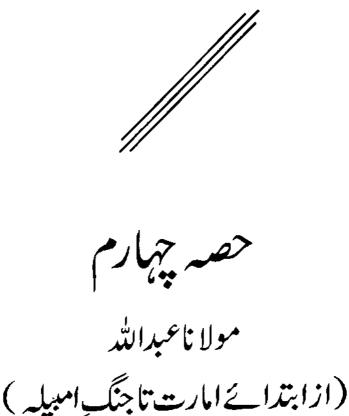
حقانه ہماں جا بہ حدِّ کیا ست درآں سیداں جملہ مہماں پرست ہماں سیداں تاجِ سادات اند دہیہ و کئی و شجاعت نشاں

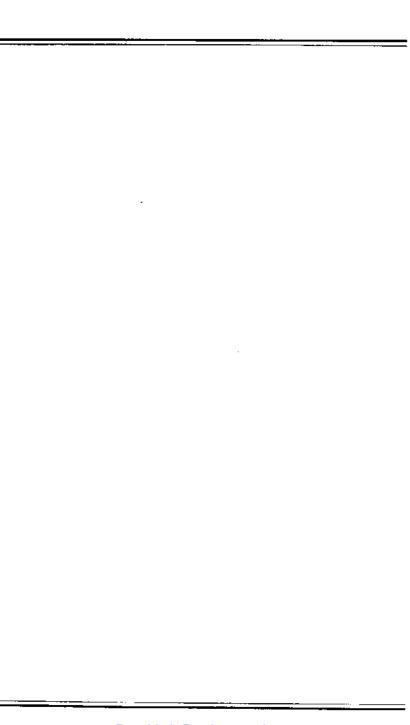
صرف تھانہ کی بربادی پر قناعت نہ کی بلکہ اتمان زئیوں سے عبدلیا کہ پھراس مقام پرسادات کو آباد نہ ہونے دیں گے۔ اندیشہ تھا کہ ممکن ہے بالائی جدون یعنی سالار اور منصورا نگریزی فوج کی مراجعت پراتمان زئیوں کو دبائیں اور سادات کی آبادی کا انتظام کرادیں، لہذاان کے خلاف بھی تادیبی اقد امات کئے گئے اور انہوں نے بھی اقر ارکرلیا کہ سادات اور ہندوستانیوں کو آباد نہ ہونے دیں گے، اور جو قبیلہ انہیں آباد کرنے کی کوشش کرے گااس کے مقابلے میں کوئی دقیقہ سعی اٹھانہ رکھیں گے۔ (1)

آخریمیں پیر حقیقت فراموش نہ کرنی چاہئے کہ سادات ستھانہ پر بیہ مصیبت صرف مجاہدین کی سرگرم اعانت ہی کے باعث ٹوٹی تھی اور اُنہیں جنٹی مالی یا جانی قربانیاں کرنی پڑیں ان کی بڑی وجہ یہی تھی کہوہ ہر دور میں مجاہدین کے رفیق ومعاون رہے۔

⁽۱) واکلی کی کتاب مِس:۸۱

برصغیر مندمیں تح یک احیائے دین اور سرفر وشانہ جدوجہدی مکمل سرگذشت





يهلاباب:

ملكااورسا دات ستفانه

مركزملكا

ستھانہ سے تقریباً پینیتیں میل کے فاصلے پرمہابن کے مغربی جھے ہیں ملکانام ایک مقام تھا، جومدت سے ساوات سقانہ کی ملکیت چلا آتا تھا، کیکن بید مقام ایک زیانے میں اخوند خیلوں کے پاس کی وجہ سے رہن کردیا گیا تھا۔ سیدا کبرشاہ نے اپنی بادشاہی کے زمانے میں رہن کاروپیاواکر کے اسے فک کرالیا تھا۔ (۱) ستھانہ کی تباہی کے بعد ساوات ملکا میں رہنے لگے اور مجاہدین کو بھی ساتھ لے گئے۔ چنانچے ستھانہ کے بعد ملکا مجاہدین کا مرکز رہااور جنگ امریکہ تک وہ ای جگہ تھے مرہے۔

مولوی عبدالحق آروی نے ' نفر وہ بنیر' میں لکھا ہے کہ ملکا میں مہا جروں کی آ مد بہت برھ گئے تھی۔ تھوڑی ہی مدت میں مرد، عورتیں ، نیچے ، بوڑ ھے اور جوان اس قدر جمع ہو گئے کہ ان کا شار مشکل تھا۔ جب بہلی آبادی میں سب کے لئے گنجائش نظر نہ آئی تو ایک ٹی آبادی قائم کی گئی جو پہلی ہے متصل تھی :

| به نضل خدا نیک بنیاد شد | بہ کم مدتے شہر آباد شد |
|-----------------------------|----------------------------|
| در آمد به چشم کسال خوش پسند | شد آن شهر را بس عمارت بلند |

(۱) حافظ عبدالمجید کی یادداشتوں میں بیان کیا گیا ہے کہ آیک موقع پرنواب وزیرالدولدوالی ٹو تک نے سامت بزاررو پے کی رقم مجاہدین کودی تھی، جس میں سے آیک ہزاررو پے آنکا کے لئے تھے۔ بید معلوم نہ ہو سکا کیآ یا بیر رقم ملکا میں مجاہدین کے لئے دی گئتھی یا مقصود بیرتھا کہ وہ آس یاس کا کوئی گاؤں ٹریدلیس۔

| ز ہر گوشہ اش نور برتافتہ | ز پائے مہاجر شرف یافتہ |
|-----------------------------|----------------------------|
| چو آباد گردید شد استوار (۱) | به بر چار سو کوه بودش حصار |

آمکا کی وسعت آبادی کی تصدیق رینل ٹیلر کے بیان ہے بھی ہوتی ہے۔ٹیلر انگریزوں
کی اس پارٹی کاسرخیل تھا جے جنگ امبیلہ کے بعد ملکا کوآ گلوانے کیلئے بھیجا گیا تھا۔
اس بیان میں بتایا گیا ہے کہ آبادی خاصی وسیع تھی، پہاڑی عمارتوں کے انداز پر الی بارکیس بنائی گئی تھیں جن میں تقریبا تین ہزار مجاہدین ساسکتے تھے۔ پاس ہی بارود کا ایک کارخانہ تھا، نیز چند دکا نیں اور دوسری عمارتیں تھیں۔ جگہ بہت محفوظ تھی، آبادی کے ارد گرمہابن کے اور خیم ٹیلوں کی فصیل کھڑی تھی۔ (۲)

بدهمى كادور

مولا تا عنایت علی کی وفات کے بعد بلکدان کی زندگی کے آخری دورہی میں مجاہدین کے نظم کا شیرازہ بھر چکا تھا، تا ہم وہ جہاں جہاں تھے، اپنے اصل مقاصد کے لئے امکانی جدو جہد میں مشغول رہے۔ بعض اصحاب مولا نا کی زندگی ہی میں واپس چلے گئے تھے، مثلاً مولا نا یجیٰ علی یااس خاندان کے بعض دوسر سے افراد، نیز مولا نامقصودعلی دانا پوری جو خاصی مدت تک راولپنڈی کے گردونواح میں دور سے کرتے رہے۔ مولا نا فیاض علی خاصی مدت تک راولپنڈی کے گردونواح میں دور سے کرتے رہے۔ مولا نا فیاض علی (برادرمولا نااحمداللہ ویجیٰ علی) کوبھی مولا ناعنایت علی سے اختلاف ہوا تھا، کیکن وہ واپس نہ ہوئے اور سرحد ہی میں وفات پائی۔ تین امیروں میں سے شاہ اکرام اللہ شاہ نورائری کی جنگ میں شہید ہو بھی تھے۔ مولا نا نور اللہ، جنہیں ڈاکٹر بیلیو نے نفر اللہ لکھا ہے، کا بل جاتے ہوئے ملاسر (وادی چملہ) پہنچ تو بھار ہوکر فوت ہوئے اور ملاسر ہی کی زمین میں محو

⁽۱) غرزوهٔ منیر اص:۳۳-۳۳

⁽۲) رینل نیلر کے سوانح حیات انگریزی میں: ۲۹۰

آرام ہیں۔ اس اثناء میں مولا نامقصود علی آپنچ۔ یہ غالبًا میر تھ میں گرفتار بھی ہوئے تھے اور اس بیاں۔ اس اثناء میں مولا نا ولایت علی اور مولا نا اور ان کے پاس سے جو کاغذات برآ مد ہوئے تھے، ان میں مولا نا ولایت علی اور مولا نا عنایت علی کے بعض اعلانات بھی تھے۔ پھر بید ہاکر دیے گئے ۔غرض مجاہدین نے انہیں امیر بنالیا۔ حافظ عبد المجید کی یا دواشتوں سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ اوائل جمادی الاخری امیر بنالیا۔ حافظ عبد المجید کی یا دواشتوں سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ اوائل جمادی الاخری محدے کے مدت بعد انہوں نے بھی برواندہ و کے تھے، اور ۱۸۲۰ میں سرحد پنچے ہوں گے۔ یکھ مدت بعد انہوں نے بھی برعارض تا ہواسیروفات یائی۔ (۱)

مولانا ولا یت علی کے فرزند ارجمند مولانا عبد اللہ اس لئے پٹنہ میں تھرے ہوئے ۔ جب سے کدان کے بچا مولانا فرحت حسین بیار ہے۔ وہ ۲۲ کا ہے میں فوت ہو گئے۔ جب مولانا عبد اللہ کو معلوم ہوا کہ مرکز مجابہ بن کے حالات چندال ولخواہ نہیں رہ ہو تو ۲۳ ررحد پہنے الآخر ۲۷ کا ہے ۱۹ رنومبر ۱۸۵۹ء کو وہ مع اہل وعیال بیٹنہ سے روانہ ہوئے اور سرحد پہنے گئے۔ مولانا مقصود علی کی وفات پر ان کے فرزند مولانا آخل اور مولانا عبد اللہ دونوں گئے۔ مولانا مقصود علی کی وفات پر ان کے فرزند مولانا آخل اور مولانا عبد اللہ دونوں اسحب امارت کے اہل سمجھے جاتے تھے اور دونوں کے حامی موجود تھے، خصوصاً مولانا اسحاق کو تمام بڑگا لیوں کی المداد حاصل تھی۔ چونکہ مولانا عبد اللہ کو جنگی امور کا وسیع تجربہ صاصل تھا، اسلئے آئیں کے نام قرعد انتخاب پڑا۔ ان کا عہد امارت کم ویش چالیس سال پر حاصل تھا، اسلئے آئیں کے نام قرعد انتخاب پڑا۔ ان کا عہد امارت کم ویش چالیس سال پر علیا ہوا ہے، اور مجاہدین کی سرگزشت کا بیسب سے زیادہ شاندار باب ہے، جس کے حالات تفصیلاً آئندہ ابواب میں بیان ہوں گے۔

سادات ِستفانه کی سر گزشت

مناسب معلوم ہوتا ہے کہ اب ساداتِ ستھانہ کی سرگزشت بھی اجمالاً بیان کردی جائے ، جوآ ئندہ مجاہدات میں جماعت مجاہدین کے سرگرم ترین رفیق ومعاون رہے۔

⁽۱) ڈاکٹر بیلع نے لکھاہے کدمولانا مقصود علی ۱۸۶۳ء کے موسم بہار یعنی شعبان یا رمضان ۱۲۷۸ھ بیر فرت ہوئے میں، ۹۹

ہم بتا چکے ہیں کہ سادات چھ بھائی تھے، جن میں سید اعظم کے صرف ایک لڑی تھی، سید اصغر اور سید شاہ مدار لاولد تھے، باتی تین بھائیوں کے نرینہ اولا وتھی، اور وہی پورے املاک کے وارث قرار بائے۔ سید اعظم کی صاحبز ادی کی شاد کی شبز اوہ مبارک شاہ (ابن سید اکبر شاہ) سے ہوئے تھی۔ سید عمر شاہ کے چار فر زند تھے: سید محود شاہ بڑے، سید شاہ سید شیر حسین اور سید شاہ میر حسین جھوٹے۔ سید عمر الن شاہ کے فرزند سید عطر شاہ سید عبد اللطیف اور سید قلندر شاہ تھے۔ سقانہ کی تباہی کے بعد سید مبارک شاہ اور سید عمر ان شاہ ملکا میں مقیم ہوگئے، لیکن سید عمر شاہ کے فرزندوں نے آستانہ داروں کے علاقے میں گبائی کواپنی آقامت کے لئے پیند کیا۔ (۱)

سيدمحمودشاه كي ملازمت

سید عمر شاہ کے ساتھ نواب جہانداد خال والی اسب کے تعلقات بہت گہرے تھے۔
انہیں خیال آیا کہ سید شہید کی اولاد کے گزارے کا کوئی معقول بندوبست نہیں رہا۔ چنانچہ
انھوں نے اپنے زیراہتمام سیدمحمود شاہ کو گھوڑوں کے ساتھ بے قاعدہ سرکاری رسالے
میں بھجوادیا۔ (۲) اس سلسلے میں شنرادہ مبارک شاہ اور سید عمران کے بچھ گھوڑے بھی شامل
کر لئے گئے۔سیدمحمود شاہ خاصی مدت تک انگریزی علاقے میں رہے۔ انہیں اپنی اور
گھوڑوں کی تنخواہ ڈیڑھ دو ہزار ماہوار مل جاتی تھی ،شنرادہ مبارک شاہ اور سید عمران شاہ

⁽۱) بیتمام حالات سیدعبدالببار شاه مقانوی کی کتاب العمرت سے ماخوذ بین میل کی انتخاب کی ایک وجدید بھی مستحجی جاسکتی ہے کہ معلاقہ مکا کے رہن کا روپید مولانا عبدالببار شاہ کے قول کے مطابق سید عمر شاہ نے اداند کیا تھا، لہذا الن کے فرزندوں کو دہاں جا ناپہندیدہ معلوم نہوا۔

⁽۲) ہیں زمانے میں وقت کے عام حاکموں اور رئیسوں کی طرح انگریزی حکومت با قاعدہ اور مستقل رسالے کے علاوہ ہے قاعدہ رسالے ہے علاوہ ہے قاعدہ رسالے ہے علاوہ ہے قاعدہ رسالے بھی بحرتی کر لیتی تھی۔ بدلوگ مستقل طازم نہ سمجھے جاتے تھے۔ بعثی عدت تک ان سے کام لینے کی ضرورت ہوتی تھی تحدید وار آدمیوں کی تخواہ دے دیا جاتا۔ بعض لوگ بحض کھوڑے طازم رکھوادیتے اور کی تحرال سے ذریعے سے ان کی تخواہیں لیستے رہنے۔

کے گوڑوں کی رقم انہیں بھیج وی جاتی تھی۔ جب اگریزوں نے یہ بے قاعدہ رسالہ تو ڑا تو سید محمود شاہ کو براہِ راست رسالداری کا عہدہ پیش کیا، لیکن انہوں نے ملازمت منظور ندکی اورا پنے گھوڑ نے فروخت کر کے واپس چلے گئے ۔ شنم ادہ مبارک شاہ کا آ دی گھوڑ ہے لے کرنظر بہ ظاہر برائے فروخت کہیں چلا گیا۔لیکن رقم شنم اور کو نہ لی (۱)سید محمود شاہ نے اور ایسا انظام کر لیا تھا کہ ان کے خاندان کو ستھانہ میں اقامت کی اجازت مل جائے اور خاندانی املاک ان کے قبضے میں آ جا کیں۔اس سلیلے میں انہوں نے حکومت پنجاب کے خاندانی املاک ان کے قبضے میں آ جا کیں۔اس سلیلے میں انہوں نے حکومت پنجاب کے پاس ایک درخواست بھی وے دی تھی۔اس اثناء میں شنم اوہ مبارک شاہ نے بہ طور خود درمری تد بیرا ختیار کر لی،جس کی تفصیل ذیل میں درج ہے۔

شنرادے کی تدبیر

شنرادے نے خودایک موقع پر بیان کیا کہ میں دوسال تک آبادی ستھانہ کی مختلف تد ہریں کرتارہا کی کوئی بھی کارگر نہ ہوئی۔ آخرایک روز لمکا سے روانہ ہوااور رات کے وقت ستھانہ پہنچا۔ اپنے خاندانی قبرستان میں جاکرساری رات دعا کی کرتارہا کہ کامیا بی کی کوئی صورت نکل آئے۔ طلوع سحرسے پہلے واپس چلا گیا۔ دل پر ایک گونہ تسکین و اظمینان کی کیفیت طاری تھی۔ جاتے ہی جدونوں کے سرداروں سے ملا۔ وہ مجھے دیکھ کر شرمائی اور انہان کر اور انہان کر خواہ کوئی صورت پیش آئے وہ انگریزوں اور انہان نرمائی کا فقت سے بے پرواہ ہوکر میری الداد کریں گے۔ اس انظام کے بعد میر ب دماغ میں ایک ایسانقٹ جمل آیا جس پرکار بند ہوکر اصل مقصد کیلئے مؤثر طریق پر جدوجہد دماغ میں ایک مضبوط مور چہ قائم کرکے کی جاسکتی تھی۔ نقشہ بیتھا کہ ستھانہ کے قریب پہاڑوں میں ایک مضبوط مور چہ قائم کرکے اردگر دوہشت پھیلادی جائے۔

⁽۱) شنرادے کو بتایا گیا کہ جورقم ملی تھی وہ انجریز وں نے اس بناء پر ضبط کر لی کہ بیا سیخص کی ہے جوانگریز وں کا دخمن ہے۔ واللہ اعلم بالصواب ۔

سری میں برزج

ستھانہ کے شال میں جونالہ منڈی یا ستھانہ کا نالہ کہلاتا ہے، اس کے اندرا یک نہایت محفوظ مقام ہے، جسے ''سری'' کہتے ہیں۔ شہرادے نے وہاں ایک متحکم برُج بنالیا، اس میں اپنے تھوڑے سے بہادر جانباز ملازموں کو متعین کردیا، کچھ مجاہدین بھی ان میں شامل ہوگئے۔

ستھانہ برباد ہو چکا تھا۔ اس کی اراضی میں آیا اور کھبل کے اتمان زئی کھیتی باڑی

کرتے تھے۔ بڑئ کے بجاہدوں نے ایک روزا جا نک ان پر پورٹ کروی اورا یک ہی ہلے
میں سات آ دی آیا کے اور بارہ آ دی کھبل کے قل کرڈالے۔ اس کے بعد مار دھاڑکا ایسا
سلسلہ شروع کیا کہ اتمان زئیوں کیلئے نہ صرف شھانہ بلکہ اس سے متصل آیا اور کھبل کی
اراضی میں بھی کھیتی باڑی کی کوئی صورت نہ رہی اور عام لوگ گھاس بکڑی وغیرہ بھی لانے
اراضی میں بھی کھیتی باڑی کی کوئی صورت نہ رہی اور عام لوگ گھاس بکڑی وغیرہ بھی لانے
سے محروم ہوگئے۔ آخرانہوں نے خفیہ خفیہ شنم اور پیدا وارا بی
سے دست بردار ہوتے ہیں، آپ اپنے مزارعوں سے کاشت کرائیں اور پیدا وارا بی
مرضی کے مطابق حاصل کرتے رہیں۔ اس طرح ستھانہ کی کل اراضی واگز ار ہوگئی ، البتہ
وہاں آبادی کا انتظام فورانہ ہوسکتا تھا، اور بے نے آبادی کو حالات کی مزید سازگاری پر

ہزارہ پرتر کتاز

ستھانہ جب آباد تھا تو اس کے علاقے میں سے گذرنے والے سوداگر سادات کو محصول دیا کرتے تھے۔ شنرادہ مبارک شاہ نے اپنی برادری کے تمام افراد سے وصول محصول کاحق لے لیا۔ اس طرح جورقم ملتی تھی وہ بڑج''سری'' کے سیامیوں اور مجاہدوں کے گزارے میں صرف کی جاتی تھی۔ تھوڑی ہی در میں پوٹھو ہار اور ثالی اصلاع پنجاب

کے بڑے بڑے ڈاکو اور مجرم اس برج میں پناہ لینے گھے۔ وہ موقع پاکر نکلتے اور دریا عبورکر کے انگریزوں کے کیمپول، چھاؤنیوں اور مراکز رسد پر چھاپے مارتے۔ سامان کے علاوہ گھوڑے، خچرلوٹ لے جاتے۔

اتمان زئیوں نے اس ڈرسے اپ مقتولین کی اطلاع بھی انگریزوں کونے دی تھی کہ شاید شنرادے سے خفیہ مصالحت کا راز فاش ہو جائے۔ اب انگریزوں نے خود باز پر شروع کی تو اتمان زئیوں نے جدونوں کو ملزم تھر ایا۔ انگریزوں نے جدونوں کی نا کہ بندی کر کے جرمانہ بھی وصول کیا اور یہ عہد بھی لیا کہ وہ 'مری' کے برج کومسار کردیں گے۔ چنانچہ الا ۱۸ء میں جدونوں نے برج مسار کردیا، تا ہم ستھانہ کی اراضی سے شنرادہ بدستور مشتع ہوتاریا۔ (۱)

سر گندخاں کافتل

 خواہش تھی کہ انگریزوں سے کہہ کرشنرادے پر بورش کرائی جائے۔ اس اختلاف کاطبعی بتیجہ بیہ ہوا کہ حامیوں نے شنرادے کوشکرکشی کی دعوت دے دی۔

شنراده مبارك اورسيدمحمود

بیصورتِ حال تھی جب سیدمحمود شاہ ملازمت سے دست کش ہوکر وطن پہنچ اور انہوں نے آبادی سقانہ کیلئے جو درخواست دی تھی ،اس کا ذکر شنرادہ مبارک شاہ سے کیا۔ شنرادے نے جواب دیا کہ ہم اپنے آزادعلاقے کے لئے انگریزوں سے امدادیا اجازت کے روادار نہیں ہو سکتے اور ہمیں توت بازوہ ہی سے اپ معاملات کی روبراہی کے لئے کوشار ، ہونا جائے ، نیز میں نے اپنے چچا کے قصاص میں سرگندخال کو مارا ،اس وجہ سے انمان زئیوں میں تفرقہ پیدا ہوا اور ایک گروہ ہماری مک کا طلب گار ہے۔اگر ہم اسے مددد کر اپنی سیادت ہمال کر سکتے ہیں تو اس کیلئے انگریزوں کے پاس کیوں جا کیں؟ نہ ستھانہ انگریزی علاقہ ہے نہ آبا اور کھیل ، غیروں کوا ہے معاملات میں تکم بنا کر ہم کب سے ستھانہ انگریزی کی علاقہ ہے نہ آبا اور کھیل ، غیروں کوا ہے معاملات میں تکم بنا کر ہم کب سکے اظریزی کی درگریزی کے تاریخ کی اور کھیل ، غیروں کوا ہے معاملات میں تکم بنا کر ہم کب سکے اظریزی کی ذری کی در کر سکتے ہیں؟

سیدمحمود شاہ کے لئے میصورت حال سراسر تعجب انگیز اور غیر متوقع تھی۔ چونکہ موجودہ منازعت کا آغاز ان کے والد ماجد کے قصاص سے ہوا تھا، لہذا پندونا پندکا سوال بھی باتی ندر ہاتھا۔ یہ کیوں کرممکن تھا کہ بھتیجا بچا کا قصاص لے اور بیٹا اسکے خلاف انگریزوں کے پاس آبادی سقانہ کی درخواسیں کرتا پھرے؟ چنا نچے سیدمحمود شاہ نے بھی ای جمویز سے انفاق کرلیا اور اتمان زئیوں پرلشکر شن کا فیصلہ ہوگیا۔ (۱)

⁽۱) سادات كم معلق زياد ورز حالات سيدعبد الجبارشاه كى كماب سے ماخوذ جي -

ملكاكى كيفيت

بیسب پچھ ہمیں اس غرض سے اختصارا لکھ دینا پڑا کہ آئندہ واقعات سے ساوات سے ساوات ہوں تھا نہ کا گر اتعلق ہے اور بیحالات پیش نظر نہ ہوں تو اندازہ نہیں ہوسکتا کہ انگریز کس وجہ سے مجاہدین وساوات کے مرکز ملکا کی تباہی کیلئے تیار ہوئے اور جنگ امبیلہ کیوں پیش آئی؟ ورنہ ہمارااصل موضوع ساوات سے شانہ کی تاریخ نہیں بلکہ جماعت مجاہدین کی سرگزشت ہے۔

ملکا کی آبادی کا تھوڑا سا حال اس باب کے آغاز میں عرض کیا جا چکا تھا، مولوی عبد الحق آروی فرماتے ہیں کہ باشاہوں کے ہاں دن میں پانچ مرتبہ نوبت بجائی جاتی عبد الحق آروی فرماتے ہیں کہ باشاہوں کے ہاں دن میں پانچ مرتبہ نوبت بجائی جاتی ہے، ملکا میں نوبتیں نہ تھیں۔ مولا ناعبد اللہ مجاہدین کے امبر ہے تو وہاں ہرگھر میں خدا کا ذکر ہوتا تھا اور اسی ذکر سے پوری آبادی معمورتھی:

| بود پنج حرف، این سخن یاد میر | چو اسلام را بر نگارد دبیر |
|------------------------------|-----------------------------|
| بنا آمدش ننج، اے نیک ظرف | مركب شد اسلام با بنج حرف |
| ره و رسم را باب مسدود بود | خود آنجا بهال پنج موجود بود |

یعنی اسلام پانچ حرفول سے مرکب ہے، اس دین حق کے ارکان بھی پانچ ہیں۔ بس یمی ارکان مدار عمل تھے۔ ان کی خوب پابندی ہوتی تھی۔ غلط اور غیر مشروع رسموں کا دروازہ بند تھا۔ پھروہاں ہر شم کا سامانِ جنگ مہیا کیا جارہا تھا، مثلاً بارود، گولے، گولیاں، تو پیس، بندوقیس، بھالے، کمان، تیر، قرابینیس، تلواریں، گنڈاسے، ڈھالیس۔ اسلی خانہ جداتھا، بزازی کا انبار جداتھا، غلے کا گودام الگ تھا۔ (1)

⁽¹⁾ الملاحظة بو"غزائے بنیر" بھی:۳۵-۳۵

دوسراباب:

آبادی ستفانه

جنگ امبیلہ کے اسباب

اب ہم جنگ امعیلہ کے بالکل قریب آپنچے ہیں۔ضروری ہے کہ اب ان اسباب و احوال پر بھی ایک سرسری نظر ڈال لی جائے جنہیں انگریزوں نے اس جنگ کے موجبات قرار دیا، حالا نکہ حق وانصاف کی بنایر اُنہیں موجبات قرار دینے کی کوئی و جہزیقی۔

ہم بتا ہے ہیں کہ انگریزوں نے ''سری'' کابر'ج جدونوں کے ذریعے سے مسار کرا دیا تھا، تا ہم شخرادہ مبارک شاہ کوستھانہ کی اراضی برعملاً قبضہ ل چکا تھا اور بر'ج جس مقصد کے لئے بنایا گیا تھاوہ پورا ہو چکا تھا۔ ابشخراد سے کی توجدد یا توں پر مبند ول تھی : اول سے کہ سید عمر شاہ کی طرح اتمان زئیوں سے مالیہ لے۔ دوم سے کہ ستھانہ بیں قلعہ بنائے اور سید عمر شاہ کی طرح اتمان زئیوں کی اطاعت کو ستھانہ بی قلعہ بنائے اور آدر تدبر کا تقاضہ یہی تھا کہ پہلے ان لوگوں کو معین ورفیق بناتا، جن کی مخالفت کے باعث ستھانہ پر یورش کا راستہ صاف ہوا تھا، نیز جنہیں انگریزوں نے ستھانہ کو بے آبادر کھنے کا فرمدار تھم رایا تھا۔

اتمان زئيول سے خط و كتابت

او پرعرض کیا جاچکا ہے کہ اتفاق سے اتمان زئیوں میں دوفریق ہوگئے تھے، جن میں سے ایک شغرادے کی تدبیروں کے لئے بڑی

سازگارتھی۔ اس نے اپ مشیروں کو جمع کیا، تمام حالات ان کے روبروپیش کرتے ہوئے ہو چھا کہ کیا کرنا چاہئے ۔ خوروفکر کے بعد بدرائے قرار پائی کہ اتمان زئیوں کے نام ایک مصالحانہ خط لکھا جائے۔ اگر اس کی بنا پر معاملات کی روبراہی کا موقع پیدا ہوجائے تو اچھا ہے، ورنہ لشکر کشی کی تدبیر کی جائے۔ چنا نچ شنراد سے نے اتمان زئیوں کے تمام اکا بر کو خاطب کرتے ہوئے لکھا کہ آپ لوگوں نے مخالفت کا فتنہ کیوں اٹھایا؟ کیا آپ کو خاطب کرتے ہوئے لکھا کہ آپ لوگوں نے مخالفت کا فتنہ کیوں اٹھایا؟ کیا آپ کو ایک ایک کے ایک کیا آپ کو مقرر کئے تھے؟ پھر میر سے بادشاہی سوات کے زمانے میں آپ کیلئے جا گیریں اورو ظیفے مقرر کئے تھے؟ پھر میر سے بچا سیدعمر شاہ امارت سے انہیں کیا۔ بہتر ہے کہ میری فیجت سنو سلوک کرتے رہے۔ میں نے بھی تبہاراکوئی نقصان نہیں کیا۔ بہتر ہے کہ میری فیجت سنو اور پہلے کی طرح رفا فت اختیار کرلو۔ اگر اس پر راضی ہوجا و تو بہت اچھا ہے، ورنہ میر سے لئے جنگ کے سواجا رہ نے د ہے گا۔

اتمان زئوں نے اس کے جواب میں شہراد ہے کی بری تعریف کی۔ لکھا کہ آپ مومنوں کے سرتاج ہیں۔ مسلمانوں کیلئے آپی ذات تکیے گاہ ہے۔ آپ کاعمل نیک ہے، دین کے خدمت گزار ہیں۔ یقینا آپ ہی سرداری کے ستی ہیں۔ ہماری غلطیاں معاف کیجئے اور ہمیں اینے خدمت گزار تصور فریائے، برابرعشرادا کرتے رہیں گے۔ (۱)

تيا، تُعبّل پرپیش قدمی

⁽۱) غزائے بنیر اص:۲۲۳۳۱

عبدالجبارشاه نے بالضریح رقم فرمایا ہے کہ جولائی کامہینداور برسات کا موسم تھا، دونوں بیانوں میں کوئی ایسا تفاوت نہیں کہ اسے بحث طلب سمجھا جائے۔ شہراد سے نے لشکر تیار کیا اور روائل سے پیشتر مجز ونیاز سے بارگاہ باری تعالیٰ میں دعاء کی:

البی اتور تظیر ہے، میں مصیبت زدہ ہوں تو جھے سہاراد ہے، میں چیونیٰ کی طرح عاجز دنا تواں ہوں، تو جھے زور وقوت عطاکر ۔ تو ہی فریادیں سنے والا ہے، تیرے سواکسی کی یاوری پر بھروسہ نہیں ۔ البی اجولوگ جھے سے سرتا بی کے بیٹھے ہیں تو ان کے دل میں ندامت کا احساس پیدا کردے تا کہ وہ پھر میرے رفتی بن جا ئیں اور رات دن میرے کار دبار کی بجا آوری میں مصروف رہیں ۔ لفکر ستھانہ کے درے میں پہنچا تو بارش کے باعث اتنا پانی آیا ہوا تھا کہ گذر نے کی کوئی صورت نہتی ، ناچار وہاں بیٹھ کر پانی کم ہونے کا انتظار کیا گیا۔ اس اثناء میں اتمان زئیوں کو لفکر کے آئیکی خبر مل گئی۔ جولوگ شنرادے کے حامیوں میں سے تھے، وہ خیر مقدم کی تیاریاں کرنے گئے ۔ جنہیں مخالفت پر اصرار تھا، وہ اہل وعیال اور سامان لے کر کستیوں میں بیٹھے اور دریا عبور کرئے تربیلہ بہنچ گئے ، جو کھئل کے سامنے انگریزی علاقے کا مشہور مقام ہے۔

سیدعبدالجبارشاہ لکھتے ہیں کہ شنراد ہے نے کھتل کے شال میں دریا کے متصل غازی شاہ کی پہاڑی پرایک قلعہ تیار کرلیا، اتمان زئی قوم نے اطاعت قبول کرلی، لیکن مخالف پارٹی کے لوگوں کے علاوہ بعض اتمان زئی ملک بھی کیا کھتل سے نکل کرتر بیلہ چلے گئے۔
یہ نبیں کہا جا سکتا ہے کہ وہ واقعی شنراد ہے کے مخالف تھے یا اس وجہ سے سراسیمہ تھے کہ انگر ہزوں نے باز برس کی تو کیا جواب دیں گے۔

انگریزوں کے پاس شکایتیں

بیان کیاجاتا ہے کہ اس زمانے میں ایک انگریز افسر وَ ورے پرتربیله آیا ہواتھا،اس

نے کیا گھتل کے پناہ گزینوں کی شکا بیتی سنیں اور حالت دیکھی تو بہت متاثر ہوا، چنا نچہ
اس نے حکومت کے پاس جور پورٹ بھیجی وہ خاصی مبالغہ آ میزتھی۔ پھرانہیں پناہ گزینوں
نے اپنی فریاد کوزیادہ موٹر بنانے کیلئے اسب بھی قاصد بھیج دیاور لکھا کہ کیا گھتل سے
فارغ ہونے کے بعد شنراوے کا پہلاحملہ اسب (۱) پر ہوگا۔ نواب جہانداد خال کا انتقال
ہو چکا تھا، ان کے فرزند نواب محمد اکرم خال کی عمر صرف تیرہ چودہ سال کی تھی۔ جن
نوگوں کے ہاتھ میں نظم ریاست کی باگ ڈورتھی، وہ نہ کورہ بالا پیغام سے اس درجہ براس
زدہ ہوئے کہ اپناسب کچھا تھا کر فکے اور دریا عبور کر کے در بند بہنچ گئے۔ انہوں نے بھی
انگریزوں کو لکھا کہ ہماری حفاظت کا بندو بست ہونا چا ہئے۔ اس طرح انگریزوں کو لکھا کہ ہماری حفاظت کا بندو بست ہونا چا ہئے۔ اس طرح انگریزوں کو لکھا کہ ہماری حفاظت کا بندو بست ہونا چا ہئے۔ اس طرح انگریزوں کو

انگریزی موقف کی حیثیت

اس حقیقت کونظرانداز نہ کرناچا ہے کہ یہ معاملہ ایسے علاقے کا تھا جومقررہ انگریزی حدود سے باہر تھا۔ وہاں مختلف قبیلے اور گروہ آپس میں جھڑ تے بھی رہتے تھے اور سلح بھی کر لیتے تھے۔ شہزادہ مبارک شاہ نے اگر آبیا کھ بآل پر پورش کی تھی تو انگریز اصولا یا اخلاقا اس میں دخل نہ دے سکتے تھے۔ نیز امب والوں کے ہراس کیلئے تو کوئی بعیداز قیاس وجہ بھی موجود نہ تھی ، تھی موجود نہ تھی ، تھی موجود نہ تھی ، تو انگر اگر کے فریادو نغال کا سلسلہ شروع کردیا گیا۔

پھرمعاملے کا ایک اور پہلوبھی تھا۔ فرض کر لیجئے کہ شنرادے کا بیاقد ام درست نہ تھا لیکن اس سے حکومت انگلشیہ کیلئے کونسا خطرہ پیدا ہوا تھا؟ انگریز صبر وخمل سے کام لیتے تو

⁽۱) یہاں اسب سے مرادامب قدیم نہیں، جو سھانہ سے تین چارمیل شال میں ہے۔ سفیاتی میں یہ مب بر باد ہو گیا تو اس کی جگہ ایک چھوٹا ساموضع بن گیااور اسب کا مرکز حکومت بلوج گرھ میں نتقل ہو گیا، جواسب قدیم سے تین میل شال میں ہے۔ ای کوعام لوگ اسب کہنے لگے۔

خط و کتابت اور نامہ و بیام کے ذریعے سے پناہ گزیوں کیلئے واپسی اور اہل امب کے لئے اطمینان و دلجمعی کا بند و بست کراسکتے تھے، لیکن انہوں نے معاملات کو گفت وشنید سے سلجھانے کے بجائے جنگ کا فیصلہ کرلیا۔ اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ وہ پہلے سے جنگ ہی کا ارادہ کئے بیٹھے تھے، البتہ انہیں انظار تھا کہ کوئی اچھا بہانہ ہاتھ آجائے، نیز کون کہ سکتا ہے کہ پناہ گزیں انہیں کی شہ پرتر بیلد نہ آئے ہوں اور اہل امب انہیں کی انگیخت پرمہاجر بن کردر بندنہ پنجے ہوں؟

ستفانه مين قلعے كي تغمير

شنراد ے نے کیا گھٹل میں دفاعی انظامات سے فراغت پائی تو ستھانہ کی آبادی پر توجہ کی، چونکہ تمام معاملات مصالحت سے روبراہ ہو چکے تھے، لہذا اس نے عفو عام کا اعلان کراد یا اور کسی کے مال کوخفیف سابھی نقصان نہ پہنچایا۔ اتمان زئی اس حسن سلوک سے بے صدخوش ہوئے۔ یہ دیکھ کرشنم ادے نے ان سے کہا کہ اب ستھانہ کی آبادی کا انظام بھی ہونا چاہئے۔ اتمان زئیوں کی تمین شاخیں ہیں: الازئی، کنازئی اور اکازئی ۔ انتظام بھی ہونا چاہئے۔ اتمان زئیوں کی تمین شاخیں ہیں: الازئی، کنازئی اور اکازئی ۔ قلع کے چار پہلوہ وتے ہیں، مناسب یہ ہے کہ قلعہ ستھانہ کے تین پہلوؤں کی تعمیر کا ذمہ یہ تین شاخیں اٹھا کمیں اور جو تھے پہلو کی تعمیر کا انتظام اہل برگ کریں، جو ستھانہ کے قریب بہاڑوں میں ایک مقام ہے۔ چنا نچھ سی تجویز کے مطابق قلعہ تعمیر ہوا اور ستھانہ کی آبادی کا بہاڑوں میں ایک مقام ہے۔ چنا نچھ سی تجویز کے مطابق قلعہ تعمیر ہوا اور ستھانہ کی آبادی کا بہاڑوں میں ایک مقام ہے۔ چنا نچھ سی تجویز کے مطابق قلعہ تعمیر ہوا اور ستھانہ کی آبادی کا بندو بست ہونے لگا۔

انگریزوں کی غلط بیانیاں

انگریزوں نے اس واقعے کے متعلق جتنی بھی کتابیں لکھی ہیں،ان سب میں صورت عال کوسراسرغلط طریقوں پر پیش کیا گیا ہے،مثلاً: 1- مجاہدین آمکا چلے سے سے ۱۸۲۳ء میں انہوں نے ستھانہ پر دوبارہ قبضہ کرلیا۔ جدونوں اور اتمان زئیوں نے رو کئے کی کوئی کوشش نہ کی ، لہٰذاا کل نا کہ بندی کی گئی ، لیکن اس سے متوقع میجہ نہ نکا۔ مجاہدین نے تعلم کھلا معا ندانہ حرکتوں کا ارتکاب شروع کر دیا۔ نمروری ہوگیا کہ مرحد کواس مصیبت سے نجات دلانے کیلئے مؤثر کوشش کی جائے۔(۱)
۲- ۱۸۲۳ء کے موسم بہار میں قبل کی دوداردا توں کی اطلاع ملی ، پھر خبر پنجی کہ مجاہدین نے یکا کیک ستھانہ پر قبضہ کرلیا ہے۔ قبائل نے نہ تھن انہیں رو کئے کی کوشش نہ کی میں بلکہ بعض نے اس قبضے کے لئے دعوت دی۔(۲)

۳- ۱۸۵۸ء میں - تھانہ کی جاہی کے بعد مجاہدین ملکا چلے گئے۔ تین سال اطمینان سے گزار دینے کے بعد آس پاس کے علاقے کا امن خلل پذیر ہوا، برطانوی مقبوضات کے حواثی پر جو قبیلے آباد تھے، ان میں ہے بھی بعض ان کے ساتھ شریک ہوگئے۔ (۳)
۲- مہم امہیلہ کا مقصدیہ تھا کہ ان مجاہدین اور آزاد قبیلوں کو سزادی جائے جو مدت سے ہمار سے سرحدی اصلاع میں چھائے مار رہے تھے۔ (۴)

۵- ۱۸۲۱ء میں مجاہدین کی تعداداتی بڑھ گئ تھی کہ حکومت پنجاب کیلئے سرحدی جنگ کے مشورے کے سواچارہ ندر ہا۔ جولائی ۱۸۲۳ء میں مجاہدین نے دیدہ دلیری سے حقانہ پر دو بارہ قبضہ کرلیا اور جارے ماتحت والی امب کو دہشت انگیز پیغامات بھیج۔ (۵) جو پچھ آپ او پر پڑھ تھے ہیں، کیا اس میں ہندوستانی مجاہدین کا کوئی ذکر ہے؟ بیٹ مجاہدین شنم ادے کے دفیق ومعاون تھے، لیکن اتمان زئیوں پرلشکر شی کا فرمددار

⁽۱) بزاره گزیشیئر بس:۱۲۸

⁽۲) واکلی کی کتاب بس:۸۱

⁽۳) نیویل کی کتاب مین ۵۰:

⁽م) جان ایُرائی کی کتاب متعانه (تمبید)

⁽۵) ہنٹر کی کتاب، ہمارے ہندوستانی مسلمان ہم: ۱۸-۹۹

صرف شنرادہ تھا اور بیلشکر شی اتمان زئیوں کی اکثریت کے حسب خواہ ش ہوئی تھی ،اور خاص اس سلسلے میں کسی کوکوئی جانی یا مالی نقصان نہ بہنچا تھا۔ ستھانہ میں قلعہ تقمیر کرانے کا ذمہ دار شنم ادہ تھا۔ کیکئے بجاہدین کو مجرم گردان لیا، اور بہتہت بھی لگادی کہ وہ والی امب کو دھم کار ہے تھے۔ بے شک وہ انگریزوں کے دشمن تھے، لیکن اس کا بیم طلب نہیں کہ بے تکاف تاریخی واقعات کا حلیہ بگاڑ تا جا کر سمجھ لیا جائے ادر کی بے مردیا اقدام کو درست ثابت کرنے کیلئے غلط بیانوں سے کام لیا جائے۔

ایک اور بیان

جنگ امیلہ کے وجوہ واسباب کی نسبت ایک اور بیان خاص تو جہ کا محتاج ہے، جو سیٹھی صاحب کے قلم سے پنجاب یو نیورٹی ہشار یکل جرئل میں شاکع ہوا تھا، اور اس کی ترتیب میں حکومت پنجاب کے پرانے ریکارڈ زیے استفادہ کیا گیا تھا۔ اس میں بعض نئ با تیں آ گئی تھیں ،مثلاً:

ا- شنرادہ مبارک شاہ اور مجاہدین نے والی کسب کو بھی ایک دعوت نامہ بھیجا تھا، جس کامضمون بیتھا کہ ہر سیچے مسلمان کوغیر مسلموں کا ساتھ چھوڑ کر دین کے لئے قربانیوں پرآ مادہ ہونا چاہئے۔

۲- مجاہدین نے ٹوبی کے انگریزی کیمپ پر ۳رستمبر ۱۸۲۳ء کو چھایا مارنے کی کوشش کی تھی۔ ملک عیسی جدون ان کے ساتھ تھا۔ لیکن انگریزوں کو پہلے ہے اطلاع ہوگئ تھی، لہذا دو جانوں کے سواکوئی نقصان نہ ہوا۔

سا- چونکدابتداء میں سادات سھانداور مجاہدین کا بیخیال تھا کدائگریز سھانہ پرحملہ کرنا چاہتے ہیں، اس لئے انہوں نے سھانہ کے سامنے دریا کے دائیں کنارے پر دفاعی موریے بنا لئے تھے۔ جب معلوم ہُوگیا کہ انگریز ملکا پر پیش قدی کے خواہاں ہیں تو اگر چہ

سادات اورمجاہدین کی بری جنگی تو ت سقانہ سے آمکا کی طرف چلی آئی ، تاہم پہلے مور چ برستورقائم رہے اور وقافو قانواگراں کی انگریز کی چوکی پر گولیاں آئی رہیں۔(۱) ہے۔ حملے کے متعلق انگریز افسروں کی تجاویز مختلف تھیں۔ رینل ٹیلر کمشنر کی رائے یہ سے کو ایک فوج جدونوں کے علاقے سے گذر کر آمکا پہنچہ ، یا وہ راستہ اختیار کیا جائے جو سے برد صے اور سقانہ کے آئی کیلئے اختیار کیا گیا تھا۔ دوسری فوج دریا کے دائیں کنارے سے برد صے اور سقانہ کے آئی بہاڑ کی دونوں ہو جیس ٹل جائیں۔ پنجاب کے گورنر کی تجویز سے مقمی کہ فوج کے دو جصے مہابی پہاڑ کی دونوں ستوں سے اس طرح برھیں کہ پہاڑ کو گھیرے میں لے لیس۔ مرکزی حکومت کا خیال بی تھا کہ ستھانہ پر توجہ بے شک مرکز رہے، لیکن فوج کا بردا حصہ منگل تھا نہ اور ملکا کی طرف ایسے انداز میں چیش قدمی کرے کہ مجاہدین برند وندی کی طرف نہ ہت سکیس۔ جنرل واکلڈ کی خواہش بی تھی کہ جو بھی طریقہ اختیار کیا جائے اس میں بجاہدین کی تباہی کا مقصد خاص طور پر چیش نظر رکھا جائے۔(۲)

⁽۱) نواگراں متعانہ کے عین سامنے دریائے سندھ کے بائیس کنارے پرواقع ہے۔ای گاؤں کے کھاٹ سے مشتی میں دریا کومیور کرکے متعانہ جاتے ہیں۔

⁽۲) منجاب يونيورخي بسناديكل جرتل بابت دمبر ۱۹۳۳ء، نيز ملاحظه موجرتل ياكستان بسناريكل سوسائن بابت اپريل ۱۹۵۳ء -

تيسراباب:

جماعت مجامدين اوراخوندصا حب سوات

ڈاکٹر بیلیو کی رپورٹ

اب آ گے بڑھنے سے پیشتر بید کھے لیزا چاہئے کہ جنگ اسپیلہ شروع ہونے کے وقت مجاہدین کی کیفیت کیا تھی۔ حسن اتفاق سے ہمیں ایک ایسا بیان مل گیا ہے جواگر چہ اجنبی بلکہ مخالف ہے، تاہم اسے پیش نظر رکھتے ہوئے سیجے نتیج پر چینچنے میں ہمیں خاصی مدول سکتی ہے۔ بیڈ اکٹر بیلیو کا بیان ہے، جس نے غالبًا ۲۲ – ۲۸۱اء میں یوسف زئی علاقے کے متعلق ایک مفصل رپورٹ پیش کی تھی۔ بیاگر چہ جنگ امبیلہ کے بعد ۲۲ ۱۸ میں چیپی، لیکن مرتب اس سے پیشتر ہوچکی تھی۔ اسلے کہ جنگ کے متعلق اس میں اشارہ تک موجود نہیں۔

عمومى كيفيت

بیلیولکھتا ہے کہ مجاہدین کی تعداد بارہ سواور چودہ سو کے درمیان ہوگی۔ بیلوگ تقریباً
سب کے سب ہندوستانی ہیں ،ان میں سے زیادہ تربنگال خصوصاً ڈھا کہ،اودھو سطی اور
شانی ومغربی صوبوں، نیز زیریں پنجاب کے ہیں۔ ان کا نصب العین یہ ہے کہ اسلام کو
ہندوستان میں از سرنو پوری شان وعظمت سے قائم کردیں۔ وہ اپنے موجودہ حلقہ کو طن
میں عین شریعت کے مطابق زندگی بسر کرتے ہیں۔ انہوں نے فوجی تنظیم اختیار کررکھی
ہے،ان کے پاس ہتھیار بھی خاصے ہیں۔ دوچھوٹی تو پیں بھی ہیں۔ (1)

⁽۱) بوسف زئول كمتعنق عام د بورث (المحريزي)ص:۹۹

سیداحد شہید نے مجاہدین کو مختلف جماعتوں میں بائٹ دیا تھا، جن کیلئے الگ الگ سالار مقرر فرمادیئے تھے۔ پھر ہر جماعت بیس بیس پچپیس پچپیس کی مکڑیوں میں منقسم تھی، جنہیں مجاہدین کی اصطلاح میں بہلے کہتے تھے۔سیدصاحب کے زمانے میں جماعتوں ک تعداد آٹھ سے متجاوز نہ ہوئی۔ ڈاکٹر بیلیو کا بیان ہے کہ مولا ناعبداللہ کے عہد میں مجاہدین کی دس جماعتیں تھیں، جن میں نو ہندوستانیوں کی تھیں اور ایک مقامی اصحاب کی۔ان کی تفصیل ذیل میں درج ہے:

دس جماعتیں

 ا- جمعیت میال عثان، جس میں ایک سومیں مجامد تھے۔ ان کے پاس میں ٹوبی دار بندوقیں تھیں ادر دس چھماتی ۔

۲- جمعیت مولوی شریعت الله، جو ڈیڑھ سومجاہدین پرمشمل تھی۔ ان کے پاس میں ٹو لی دار بندوقیں تھیں، دس چھما تی اور تو ڑے دار۔ بہلی ظانعدادید سب سے بڑی جمعیت تھی۔

۳- جمعیت عبدالغفور،اس میں ایک سوتمیں مجاہد تھے۔اس جمعیت میں تمیں ٹو بی دار بندوقیں تھیں، اور بیس توڑے دار ۔ یہ خاص مولانا عبداللہ کی جمعیت تھی، لہذا اے سرکاری جمعیت کہا جاتا تھا۔ یہ پوری کی بوری بنگالیوں پر مشتل تھی۔

۳- جمعیت قائم خال، اس میں ایک سوتمیں مجاہد تھے۔ ان کے پاس چھ ٹو لی دار بندوقیں تھیں اور بیں توڑے دار۔ مجاہدین کی میرسب سے پرانی جماعت تھی، اور اسے ''ہندی جمعیت'' کہا جاتا تھا۔ اس لئے کہ میرصرف ہندوستانیوں برشتمل تھی۔

معیت نجف خان، ایک سوتمین مجاہد۔ پندرہ ٹو لی دار بندوقیں اور میں تو ڑے دار۔ اس میں نصف بنگالی تقے اور نصف، ہندوستانی۔

۲- جمعیت نعیم الدین ،ایک سو پچیس مجامد ، پچیٹو پی دار بندوقیس اور بیس توڑے دار۔ اس میں زیاد و برکالی تھے۔

حمیت نشی طفیل الله، ایک سومجابد، دس ٹو بی دار بندوقیں اور بیس تو ژب دار۔ بینی جمعیت کہلاتی تھی۔

۸- جمعیت منثی بصیرالدین ، ایک سومجاید ، چیدٹو نی دار بندوقیں اور بیس
 تو ژ ب دار۔

 ۹ جمعیت مولوی ابراہیم ، ایک سوتنس مجاہد، چارٹو پی دار بند وقیس اور بیس تو ژے دار۔

ا- جمعیت بہرام الدین بونیری،اس میں صرف چالیس مجاہد تھے اور ان کے پاس بندوق کوئی نہتی ۔اسے دلی جمعیت کہتے ہیں،جس میں ہزارہ، بونیراور درمیانی کو ستانی علاقے کے باشند ہے شامل تھے۔(1)

تنجره

ڈاکٹر بیلیے کا بیر بیان بقینا کسی معتبر جاسوس کی فراہم کردہ اطلاعات پر مبنی ہوگا۔
سالاروں میں سے بعض آ دمی ایسے ہیں جن کا ذکر مقدمہ انبالہ میں ایک سے زیادہ مرتبہ
آ یا۔مثلاً جعدارشر بعت اللہ جورام پور بلیا کے رہنے والے تھے۔ جعدار تھیم الدین جن کا
وطن جیسور (بنگال) تھا۔ جعدار نجف خال، جو ہندوستانی تھے اور مجاہدین کو قواعد کرایا
کرتے تھے۔ جعدار میاں عثمان ساکن بنگال، جعدار مولوی ابراہیم (۲) منتی طفیل اللہ یا
طفیل علی (۳) مولوی بصیرالدین ،مولوی فیاض علی عظیم آ بادی کا دوسرا تام تھا۔ بعض ایسے
نام ترک کردیتے ہیں، جو جنگ امبیلہ کے سلسلے میں بہ طور خاص قابل ذکر تھے، مثلاً

⁽۱) بوسف زئيول ي متعلق عام ربورث (أنكريزي) ص: ١١٠

⁽٢) روكداد مقدمهُ انباله (انكريزي) من ١١٠

⁽٣) رونداد مقدمهٔ انباله (انگریزی) ص:۵۳

جمعدار ناصر محداور جمعدار کلیم الدین ،جبیبا که آھے چل کربیان ہوگا،لہذاان معلومات کو مکمل نہیں سمجھا جاسکتا۔

اس حقیقت میں کوئی شبہ نہیں کہ مجاہدین کے پاس ہتھیار زیادہ نہ تھے بلکہ سید صاحب کے زمانے میں بھی مختلف لوگ تلواروں، گنڈ اسوں اور کلہاڑیوں سے کام لینے پر مجبور ہوتے تھے۔ تاہم بیلیو کے بیان میں ٹوپی دار، توڑے دار اور چھماتی بندوقوں کی جو کیفیت بتائی گئی ہے، وہ یقیناً نظر ثانی کی مختاج ہے۔ ایک اور نکتہ قامل تو جہ ہاور وہ یہ کہ است بندوقوں کی تعداد زیادہ فرض کر لینے کے باوجود سے کتنا حیرت انگیز واقعہ ہے کہ است تھوڑے آ دمیوں نے استے معمولی سامانِ جنگ کے ساتھ طویل مدت تک برطانیہ جسی کھوڑے آ دمیوں نے استے معمولی سامانِ جنگ کے ساتھ طویل مدت تک برطانیہ جسی کشیر الوسائل حکومت کوخوفناک پریشانیوں میں جتلار کھا۔ اس سے مجاہدین کی ایمانی قوت کا اندازہ بخو بی ہوسکتا ہے۔ بیاسلامی تعلیم کا عملی نمونہ تھا، جوان بزرگوں نے مسلمانان ہند کے سامنے چش کیا۔ سوچئے کہ اگر بارہ چودہ سومسلمان بے سروسامانی کے باوجود تو سے ایمان سے کام لے کر میدل افزوں مناظر پیش کر سکتے تھے تو کروڑوں مسلمان اسلام کی یک تعلیم کے عملی بیکر بن کر کیا بہتونیوں کر سکتے تھے؟

بيليو كى غلط بيانيال

بیلیو نے اپنی کتاب میں بعض الیمی یا تمیں بھی درج کردی ہیں جو بداہتا غلط ہیں ، مثلاً وہ ککھتا ہے کہ:

ا۔ مجابدین اپنی اعلی جنگی تنظیم کی بناپر قبائل میں اپنی حیثیت بحال رکھ سکے اور وہ رویے دے کرسی ایک فریق کوساتھ ملا لیتے تھے۔

۲- ان میں اکثر ان پڑھ، صناع اور مزدور تھے، جنہیں امام مہدی کی عکر ان کی برکات کا فریب دے کر گھروں سے ہزاروں میل دور پہنچادیا گیا تھا۔ بعض مکاروعیاریا مجرم تھے، جو بھاگ کریہاں پہنچ عے تھے، البتہ بعض مکاروعیاریا مجرم تھے، جو بھاگ کریہاں پہنچ عے تھے، البتہ بعض میں مکاروعیاریا ہی جا ہے۔

خالص فديى جذب كى بنايران مين شائل بوئ تھے۔(1)

بلاشبہ بجابدین کی جنگی تنظیم کومٹالی حیثیت حاصل تھی، کیکن نہ قبائل پراٹر ورسوخ جنگی حیثیم کا جیجہ تھا اور نہ بجابدین کی سرگزشت سے اس کی تقدیق ہوتی ہوتی ہے کہ قبائل پر انہیں لا متناہی اٹر ورسوخ حاصل تھا۔ اس کے برعبس وہ ہر تازک موقع پر قبائل کے ظلم وجور کا ہدف ہنے رہے، جیسا کہ آ کے چل کر واضح ہوگا۔ ان کے پاس استے ہیے بھی نہ تھے کہ کم ہوگا۔ ان کے پاس استے ہیے بھی نہ تھے کہ کسی پٹھان قبیلے کی حرص زر کے لئے سامان تسکین بہم پہنچا سکتے۔ باتی رہا دوسرا اعتراض تو یقینا کسی جمان قبیلے کی حرص زر کے لئے سامان تسکین بہم پہنچا سکتے۔ باتی رہا دوسرا اعتراض تو یقینا کسی جماعت کے تمام لوگوں کی ذہنی سطح کیساں نہیں ہوتی۔ بعض اصحاب کے قدم سیل ابتلا ہیں ڈگرگا بھی گئے، لیکن عام بجابدین اپنے نصب انھین اور اس کے حصول کیلئے ایٹار وقر بانی ہیں برابرقائم واستوار رہے۔

اخوندصاحب سوات

جنگ امبیلہ میں اخوند صاحب سوات کو بھی بردی متاز حیثیت حاصل تھی، البذا ان
کے حالات بھی یہاں بیان کر دینا ضروری ہے۔ اخوند صاحب کا اسم گرامی عبدالغفور تھا،
یہ سوات بالا کے ایک مقام جبر کی میں ہی کا ایک آس پاس پیدا ہوئے۔ ان کے نسب کی
بحث چھیرنا غیر ضروری ہے۔ بہر حال وہ ایک غیر معروف گھرانے کے چیم و چراغ تھے۔
ابتدا بی سے طبیعت ذکر وفکر اور زہر وا تقاء کی طرف ماکل تھی۔ اٹھارہ سال کی عمر میں گھر
سے فکے، پچو مدت برم گولہ (سوات) اور گوجر گڑھی (یوسف زئی) میں رہے۔ دو ڈھیر
میں صاحبر ادہ محمد شعیب سے بیعت کی، ہنڈ کے پاس بیکی میں دریائے سندھ کے
میں صاحبر ادہ محمد شعیب سے بیعت کی، ہنڈ کے پاس بیکی میں دریائے سندھ کے
کنار سے بارہ سال ریاضتوں میں گزار سے۔ سیداحمد شہید سے بھی ملاقات کی اور ان کے
مری مشوروں میں شریک رہنے تھے۔ خادے خان رئیس ہنڈ کو اخوند صاحب سے بوی

⁽۱) بهسند زئیون کے متعلق عام رمورث (انگریزی) ص:۱۰۱

عقیدت تھی۔ سیدصاحب کے عزم بورشِ اٹک کا راز اخوندصاحب کومعلوم تھا اور انہوں نے خانِ ہنڈ کے سیدصاحب کا تخلص بیجھتے ہوئے بیراز بتادیا۔ خانِ ہنڈ نے سیحوں کو آلی از وقت خبردار کردیا۔ اٹک کے جومسلمان شہر اور قلعے کو مجاہدین کے حوالے کردینے کی تیاریوں بیں شریک سے، انہیں خوفناک سزائیں جھیلی پڑیں اور پنجاب پر کامیاب اقدام کی اسکیم ابتدائی مراحل ہی میں ناکام ہوگئی۔ اخوندصاحب کو اپنی اس نادانستہ حرکت پر اتی ندامت محسوں ہوئی کہ بیکی سے نکل کر مدت تک رو پوش رہے۔ خالبًا سیدصاحب کی شہادت کے بعد زیارت غلاماں میں ظاہر ہوئے۔ پھر پچھ دیرسلیم خال میں دے۔

امير دوست محمدخال كي امداد

الاماء میں امیر دوست محمد خال نے بیٹاور کی بازیافت کے گئے سکھوں ہے جنگ کا قصد کیا تو دوسرے دینی بزرگوں کے علاوہ اخوند صاحب سے بھی امداد کی درخواست کی۔ چنا نچے صاحب موصوف نیاز مندوں کی خاصی بڑی جماعت کے ساتھ امیر کے پاس پنچے اورامکانی مدد میں نامل نہ کیا۔ افسوں کہ امیر نے اس جنگ میں شکست کھائی۔ شکست کے بعد اخوند صاحب سوات چلے گئے ، پھر سیدو (نزدمنگورہ) میں اقامت اختیار کرئی ، جہاں ان کے گزارے کے لئے عقیدت مندوں نے زمینیں نذر کردیں۔ وہیں کی خیل جہاں ان کے گزارے کے لئے عقیدت مندوں نے زمینیں نذر کردیں۔ وہیں کی خیل کے قبیلہ کا کوزئی میں نکاح کیا ، جس سے دو بچے بیدا ہوئے ۔ کے ۱۸ میں وفات پائی۔ کے قبیلہ کا کوزئی میں نکاح کیا ، جس سے دو بچے بیدا ہوئے ۔ کے ۱۸ میں وفات پائی۔ ان کی وجہ سیدو خاص شہرت کا مالک بن گیا اور آج کل سوات کا مرکز حکومت ہے۔ اخوند صاحب کے بوتے میاں گل عبدالودود نے سوات کی بادشاہی کا منصب حاصل کیا افراب میاں گل کا صاحبز ادہ جہاں زیب سوات کا حکمر ال ہے۔

چوتھاباب:

جنگ امبیلہ کے مقد مات

بورش كافيصله

بہر حال انگریزوں نے بورش کا فیصلہ کرلیا اور اس کیلئے سرگری سے تیاریاں شروع کردیں۔ اس سلسلے کا ایک مجیب واقعہ یہ ہے کہ بورش کا فیصلہ پنجاب کے گور نر سر را برث منظمری اور گور نر جزل لارڈ ایلجن نے بہطور خود کرلیا۔ سر ہیوروز (Hugh Rose) سپر سالا رکواس مشورے میں شامل نہ کیا۔ جب اسے اطلاع دی اور اس نے بوجو و معقول تجویز سے اختلاف کیا تو اس کے اختلاف کو قابل تو جہ نہ سمجھا گیا۔

یورش کا فیصلہ کرتے ہی ایک طرف تربیلہ سے در بندتک دریائے سندھ کے ساتھ ساتھ و جیس پھیلا دی گئیں، دوسری طرف سررینل ٹیلر (Reynell Taylor) کے زیراہتمام ٹوپی اور مینئی میں شکر کا اجتماع شروع ہوگیا، جو ہیوجیمس (Hugh James) کی جگہ پشاور کا عارضی کمشنر مقرر ہوا تھا۔ اس نے تمام خوا نمین کوجمع کر کے مشور سے شروع کر دے۔

۔ ایک روز کمشنر مقامی خوانین اور فوج کو ساتھ لے کرٹو پی سے کیا کھتل کی طرف روانہ ہوا تا کہ خود حالات کا معائینہ کر ہے۔ گیارہ باڑہ سے آئے آزاد علاقہ تھا۔ بیلوگ بے خیالی سے اس علاقے میں چلے گئے۔ شہزاد ہے کے آ دمیوں نے قلعے سے آئیس دیکھا تو مقابلے کیلئے نکل پڑے۔ بید کیکھتے ہی کمشنز اور اس کے ساتھی چیچے کی طرف بھاگے۔ اسلمعیلہ کا خان آگے آگے جا رہا تھا، افراتفری میں اس کا گھوڑا دریا میں گر گیا، لیکن

شنرادے کے آ دمیوں نے اسے کوئی نقصان نہ پہنچایا۔

ستھانہ ہے ملکا

ابتدامیں اگریزی افوائ کا اجتاع دکھ کریہ سمجھا جاتا تھا کہ سھانہ پرحملہ ہونے والا ہے، کین خوانین اور قبائل سے کمشز نے جومشور ہے کیے اُن سے آشکارا ہوگیا کہ اگریزوں کی اصل منزلی مقصود ملکا ہے۔ جب اس میں کوئی شبہ نہ رہا تو شنرادے نے اتمان زئیوں کے روسا کو بلاکر کبد دیا گداب ہم ملکا جاتے ہیں، آپ لوگ اطمینان سے ہینے رہیں۔ اگر ہم زندہ رہ ہو خود آکر سارا کا روبار سنجال لیں گے، اگراپی آزادی کی جیفے رہیں۔ اگر ہم زندہ رہ گئو آپ کو حالات کے اعتبار سے جو کھ مناسب نظر آئے کرلینا، مفاظت میں مارے گئو آپ کو حالات کے اعتبار سے جو کھ مناسب نظر آئے کرلینا، ہم ایخ کے لئے لڑر ہے ہیں، غیر کا پاؤں کس کے گھر میں جم جائے تو نیکی اور حسن سلوک کی تو قع نہ رکھنی چا ہے۔ اگر انگریز ول نے ہمارے کو ہتائی علاقے پر جرا قبضہ کرلیا تو گرد و پیش کے تمام مسلمانوں کی حیثیت کمزوری اور نا تو انی ہیں چیونٹیوں کی تی رہ جائے گئے۔ (1)

اقدام کی پہلی تجویز

مولوی عبدالحق صاحب آروی نے اس سلسلے میں بعض ایسے حالات لکھے ہیں جو انگریزوں کی مرتب کی ہوئی کسی کتاب میں بیان نہیں ہوئے اور مولوی صاحب موصوف ان واقعات کے چثم دید گواہ تھے، لہٰذاسب سے پہلے یہ نئے حالات پیش کردینا مناسب معلوم ہوتا ہے۔

موصوف فرماتے ہیں: کمشنر نے ابتدا میں خوانین کواس امر پرمجبور کیا کہ جدونوں سے کہد کر ملکا تک جانے کی اجازت لے دیں۔ ٹوپی سے اوپر کا کوہتانی علاقہ سالار

⁽۱) غزوهُ نير اص ۵۵–۲۹

جدونوں کا تھااوراس سے ملاہوا ہے جانبِ مغرب منصور جدونوں کا۔ اگریزی فوجیس سالار جدونوں کے علاقے میں پہنچ جاتیں جوجدونوں کے جدونوں کے علاقے میں پہنچ جاتیں جوجدونوں کے تابع تھے۔ اس سے آ گے اہازئی کا پرگہ تھا، جس کا خان موزہ خاں وائی امب کا دوست اور مواجب خورتھا۔ اس رائے سے ملکا پنچنا نسبتاً سہل تھا۔ بہاور جدونوں کی دونوں شاخوں نے اجازت دینے سے صاف انکار کر دیا اور کہا کہ ہم غریب کا شنکار اور بے علم لوگ ہیں، کین کسی کی فوج کو اپنے علاقے میں داخل نہیں کر سکتے۔ دوسرے ہم مسلمان ہیں اور مسلمان ہوں کو برباد کرنے کا ذریعے نہیں بن سکتے، خصوصاً شنرادہ ہمارے آتا ومولا مسلمان ہوں کو برباد کرنے کا ذریعے نہیں بن سکتے، خصوصاً شنرادہ ہمارے آتا ومولا صلی اللہ علیہ وسلم کی آل ہے۔ ہم اسے اپنا سرتاج سیجھتے ہیں، کوئی اور راستہ تلاش سیجئے، حال سال قد کارخ کیا جائے گاتو ہم مقابلے پر مجبور ہوجا کیں گے۔

شنراد ہے کے د فاعی انتظامات

شنراوے نے ملکا بہنچتے ہی مولا ناعبداللہ امیر مجاہدین کے مشورے سے یہ فیصلہ کرلیا کہ سمتہ کی طرف سے ملکا آنے کے جتنے رائے ہیں ،ان سب کو نا قابل گذر بناوینا چاہئے تاکہ اگر کوئی قبیلہ انگریزوں کوراستہ دینے پر آمادہ ہوجائے تو اس صورت میں بھی ملکا پہنچنا آسان نہ رہے۔ چنا نچہ مقامی اور گردونواح کے گوجروں کو تاکید کردی گئی کہ کلہاڑے لیس اور تمام پرانے درخت کا ہے کا ہے کر جا بجاراستوں میں ڈال دیں ، نبز جہاں جہاں مناسب مجھیں خس وخار بھیلادیں۔ تمام راستوں میں گہری خندقیں کھودنے کا انتظام بھی کردیا گیا۔ غرض ضروری دفاعی انتظام اسے میں کوئی دقیقہ سعی اٹھانہ رکھا گیا۔ (1)

⁽۱) غزائے بینرجی:۷۸-۸۷

خوانین کی مجبوری

اگریزی علاقے کے خوانین کمشنر کے احکام سے سرتابی نہ کر سکتے تھے، کین ان
سب کے دل ان تدابیر پرراضی نہ تھے، جواگر پر ملکا کی تباہی کیلئے اختیار کرنا چاہتے تھے۔
پنانچہ وہ مشور دوں کے دوران میں دل کی با تیں بھی وقا فو قا کہہ جاتے تھے۔ ٹوپی کے
رئیس فضل خال اتمان زئی نے ایک روز کمشنر سے صاف کہد دیا کہ آپ اتنی بڑی سلطنت
کے مالک ہونے کے باوجود غریب کا شتکار وں کے بیچھے پہاڑ دوں میں کیوں دوڑتے
پھرتے ہیں؟ اگر آئیس برباد کر دیا تو اس میں آپ کی کونی عزت اور نیک نامی ہوگی؟ اور
اگر آپ نے شکست کھائی تو ساری دنیا میں بدنام ہوجا کیں گے۔ بہتر بہی ہے کہ ان سے
اگر آپ نے شکست کھائی تو ساری دنیا میں بدنام ہوجا کیں گرتا کیا، یک و دتا ہے کھا کررہ
اعراض کیا جائے۔ (۱) کمشنر کو بیرائے پند نہ آسکی تھی، لیکن کرتا کیا، یک و دتا ہے کھا کررہ
گیا۔ جدونوں کا انکار ان کیلئے شد بید خطرات کا موجب تھا۔ انکے متعدد دیبات انگر بزی
گولہ باری کی زدمیں تھے، لیکن وہ خطرات سے بے پرواہ وکرا نکار پرقائم رہے۔ (۲)

اقدام کی دوسری تجویز

جدون راستہ دینے پر کسی بھی صورت راضی نہ ہوئے تو کمشنر نے ٹو بی کے بجائے صوابی کو مرکز بنالیا۔ فیصلہ یہ کیا کہ ضدو نیل کے پر گئے میں سے چشکلنی ، کن گلئی اور کوتل اشرف کنڈ وہوتے ہوئے ملکا پنچیں۔ ۱۸۵۸ء کی جنگ میں انگریزی فوجوں نے پنجتار، چشکلئی اور منگل تھانہ کی جابی کے لئے یہی راستہ اختیار کیا تھا۔ خدو خیل میں سڑک کی تغییر

⁽۱) غزائے بنیر جس: ۱۳۳ - ۱۵ و کرآب العمر 3 جس: ۳۲۳

⁽۲) سیدعبد الجبارشاه صاحب نے کھاہے کہ انگریزی فوجیس تیار ہوکر جدوثوں کے دیمات کی طرف بڑھیں لیکن عین آخری وقت میں واپس ہوسکیں، اس لئے کہ جدون مقابلے پر سلے بیٹھے تھے اور تھیں چینتیس میل کا پہاڑی فاصلہ جس میں مسلسل چڑھائی تھی بلاتے ہوئے کے کہ تاقرین مسلحت نے تھا۔ ملاحظہ ہود '' کماب العمر قا'' مس ۱۹۹۵

ہمی شروع کردی، اور چھکئی میں رسد کے گودام بھی قائم کردیے، جن میں اسلح، گولی بارود کے علاوہ اطراف سے غلیجی فراہم کیا جاتا تھا۔ بجاہدین کے دستوں نے دفاع میں سے طریقہ اختیار کیا کہ جتنی سڑک بن جاتی، موقع ملتے ہی اسے توڑ دیتے ۔ ایک رات انہوں نے چھکئی پرشخون مارا، لوگوں سے کہدویا کہا گرتم انگریزوں کی رعایا ہوتے تو ہم شہمیں مجبور سجھتے ، لیکن تم آزاد علاقے کے رہنے والے ہو، پھر کیوں انگریزوں کا ساتھ دیتے ہو؟ اگر اُن کے طرف وار بنتا چاہتے ہوتو صاف صاف بتادو۔ چشکئی میں جو انگریزی کمپ تھا اسے بھی برباد کر ڈالا اور گوداموں کا جع شدہ سامان بھی لوٹ لیا۔ سید عبد الجبارشاہ فرماتے ہیں کہ اخوند زادہ معراج دین ساکن برگ خودا سشخون میں آیک علیہ اور اور اس نے مجھے واقعات کی پوری تفصیل سنائی تھی۔ اخوند زادہ کو اس شخون میں ایک دونالی رائفل ہاتھ آئی تھی، جو آب بھی موصوف کی اولاد کے پاس موجود ہے۔ (۱) مجاہدین کے چھاپوں اور اہل خد وخیل کی ناساز گار روش کا اندازہ کرتے ہوئے کمشنر کو سے جو ہر بھی ترک کرنی یودی۔

اقدام کی تیسری تجویز

اب صرف ایک راسته ره گیا اور وه دادی کهمله میں سے تھا۔ اس راستے کے سلسلے میں ضروری تھا کہ وادی کہملہ اور بونیر کے باشندوں کا تعاون حاصل کیا جاتا اوریقین دلا دیا جاتا کہ مقصوداُن پر پورش نہیں بلکہ ملکا پہنچنا اور مرکز مجاہدین کو تباہ کرناہے۔

الل چملہ کواطمینان دلا نامشکل نہ تھا،اس لئے کہ سمّہ کے اکثر رؤساءوخوا نمین کے املاک وادی چملہ میں موجود تھے،مثلا ہوتی، مردان، تورو، مایار کے کمال زئیوں، شیوہ، شیخ جاتا، نواکلئی وغیرہ کے ارژ ژوں، زیدہ، کنڈو، پنج پیر، مرغز، کھلا بٹ، صوابی، مانیری،

⁽۱) كتاب بلعمرة بص:۳۹۶

باجابام خیل، سلیم خان وغیرہ کے لوگوں کی اراضی چملہ کے مختلف دیہات میں تھیں۔(۱)
میتمام خوانین انگریزوں کے ساتھ تھے، اور وہ خود اہل چملہ کو مطمئن رکھ سکتے تھے۔ البت
بونیر کا معاملہ خاص تو جہ کا محتاج تھا، جس کیلئے کمشنر نے سدتم کے رئیس اعظم عجب خان
سے بات چیت شروع کی۔

اہل بونیر سے بات چیت

عجب خال کے جھوٹے بھائی عزیز خال کی شادی خان ڈگر کی بہن ہے ہوئی تھی ، جو
یونیر کا سب سے بڑارئیس تھا۔ اس وجہ سے عجب خال کوخوا نین بونیر احترام کی نظرول
سے دیکھتے تھے۔ اس نے کمشنر کے کہنے پرزید اللہ خال ، حبیب خال اور عصیم خال عاشہ
زئی ، احمد خال نسوزئی اور خانِ گڑ ہ کو یہ کہہ کر راضی کر لیا کہ چملہ کا انظام وہ خوا نین
کرلیس کے جن کی اراضی اس وادی میں واقع ہیں ۔ تمہاری طرف انگریزی فوج آئے گ
ہی نہیں ، پھرکیوں ندرو ہیہ لے کر چپ چاپ بیٹھے رہو؟ انگریز وادی پملہ میں سے ہوتے
ہوئے ملکا کو تباہ کردیں گے بتمہاری آزادی پرکوئی زدنہ پڑے گے۔ چنانچہ تیرہ بڑاررو بے
دے کرانہیں راضی کرلیا گیا۔ (۲)

مولوی عبدالحق آروی کیاخوب فرماتے ہیں کہ خانِ بگڑہ نے جس کا نام احمد خال تھا، حضرت احمد مجتبیٰ صلی اللہ علیہ وسلم کا راستہ چھوڑ کر فرنگی کے ساتھ دشت پیائی شروع کردی ۔ صبیب خال نے حبیب پاک صلی اللہ علیہ وسلم کی محبت کے بجائے رقیب کا دامن تھام لیا، عصیم آثم بن گیا۔

⁽¹⁾ چھلے ہیں اراضی یقینا اس غرض سے رکھی گئیں کدا کر کی موقع پر میدانی علاقہ دیشن کی بورش کا ہدف بن جائے اور مقابلہ ممکن ندر ہے تو بیاوگ میدانی علاقے سے اٹھ کر باطمینان محفوظ پہاڑی وادی ہیں جا بیٹھیں۔ پرانے زیانے میں ایسے پہاڑی مقامات برحملہ کرنا آسان ندتھا۔

⁽٢) غزائے بینریس:۸۲۲۸۰ کتاب العمر ت بس:۳۳۷.۳۲۲

خوانين كالشكر

بعض خوانین نے کمشنر کے سامنے میہ تبویز بھی پیش کی کہ ہرخان اپنی حیثیت کے مطابق کم سے کم دس سوار اور چالیس پیاد نے فراہم کر ے۔ یہ تبویز بھی منظور ہوگئی۔ اس طرح جو خاصا بڑالشکر فراہم ہوا، اسے میدانی علاقے کے مختلف مقامات پر بٹھا دیا گیا اور پھی آ دمی انگریزی فوج کے آگے آگے چور کر لئے گئے۔ (۱) فوجوں کی روانگی کے ساتھ ہی انگریزوں نے فد وحیلوں، جدونوں، اماز ئیول، مداخیلوں اور بونیر وال کے ساتھ ہی انگریزوں نے فد وحیلوں، جدونوں، اماز ئیول، مداخیلوں اور بونیر وال کے نام ایک اعلان شائع کیا، جس کا مضمون یہ تھا کہ کسی قبیلے کو کوئی نقصان پہنچانا منظور نہیں، صرف ہندوستانی مجاہدین کے مرکز تک پہنچنا منقصود ہے۔ وہاں تک سیدھا راستہ وہی ہے جو دادی جملہ میں سے گذرتا ہے۔

یبال پھرایک مرتباس حقیقت پر غور کر لیجے کہ "سری" میں بر سے بنانے یا ستھانہ کو آباد کرنے یا اتمان زیوں کو زیر تصرف لانے کا ذمہ دار شغرادہ مبارک شاہ تھا، تاہم انگریزوں نے اس سلسلے میں جواقد امات شروع کیے، ان میں مجاہدین کواولین ہدف بنالیا گیا، حالا تکہ ان تمام سرگرمیوں میں ان کی حیثیت ثانوی تھی۔ وجہ یقینا بیتھی کہ شغراد ب اور سادات ستھانہ کے خلاف کوئی کارروائی قبائل کے نزدیک پندیدہ نہ ہو سکتی تھی۔ مجاہدین چونکہ اجنبی شے اور عام پٹھانوں کو جو قبائلی ، نسلی اور غاندانی تعصبات میں ڈوب مجاہدین چونکہ اجنبی شے اور عام پٹھانوں کو جو قبائلی ، نسلی اور غاندانی تعصبات میں ڈوب ہوئے تھے، ہندوستانیوں سے کوئی خاص ہمدردی نہ ہو کتی تھے۔ ان کی نگاموں میں وہ اور خیل کی محبت کے خوگر وسیع اسلامی مصلحتوں کو بچھ بی نہ سکتے تھے۔ ان کی نگاموں میں وہ بلندی ، حوصلوں میں وہ ہمہ کیری اور دلوں میں وہ کشایش پیدا ہی نہ ہو کتی تھی جب تک بلندی ، حوصلوں میں وہ ہمہ کیری اور دلوں میں وہ کشایش پیدا ہی نہ ہو کتی تھی جب تک

⁽١) كتاب العمرة من ١٤٣٠

مجامد ين كااعلانِ جباد

اباس سلیے کا صرف ایک ضروری واقعدرہ گیا اور وہ اعلانِ جہادتھا، جوفاری زبان میں مجاہدین کے امیر مولا تا عبد اللہ اور سید عمران شاہ ستھانوی کے دستخط سے خوا نین اور افوند سوات کے نام بھیجا گیا۔اصل فاری اعلان شرل سکا، مولوی عبد الحق نے اس کے صرف مطالب نظم کیے ہیں۔نیویل نے اپنی کتاب میں اس کا انگریزی ترجمہ پیش صرف مطالب نظم کیے ہیں۔نیویل نے اپنی کتاب میں اس کا انگریزی ترجمہ پیش کیا جا تا ہے۔

حمدو شااورسلام مسنون کے بعد مرقوم ہے:

کفار کی آیک بوی فوج اس غرض ہے کیم خال ، یاروسین اور شخ جانا پنجی ہے کہ اس ملک کول و غارت کا ہدف بنائے۔ آپ کے لئے لازم ہے کہ اس املان کے دیکھنے ، ی کمر ہمت باندھ کر چملہ پنج جا کس ۔ اپ رفیقوں اور عزیدوں کو بھی اطلاع دے دیں اور انہیں تیار کر کے ساتھ لا کس ۔ ہم لوگ اپنی ہم سے میت کے ساتھ لا کس ۔ ہم لوگ اپنی ہم سے ہیں۔ آپ کو چاہئے کہ جمعیت کے ساتھ ورے کی چوٹی پر قدم جمائے ہیئے ہیں۔ آپ کو چاہئے کہ سرپٹی (۱) اور لنڈئی یعنی موضع چرتھکئی پر آ بیٹھیں اور مضبوط مور پے بنالیں۔ ان ہدایات پرکار بند ہونے ہیں آیک لحد کی بھی تا خیر نہ کریں ، اگر تا خیر ہوئی تو بدقماش کفار سارے کو ہستانی علاقے کو جاہ کر ڈالیس کے اور اے اپنی سلطنت میں شامل کرلیں گے ، خصوصاً چملہ ، بو نیر ، سوات وغیرہ کے علاقوں کو (ہرگز نہ چھوڑیں گے)۔ پھر ہمارا فد ہب اور ہمارے املاک غیروں کے ماتحت بے جائیں گے ، لہذا حب اسلام ، اصولی ایمان اور دنیوی منافع کو پیش نظر رکھتے ہوئے موقع ہاتھ سے نہ دیں ۔ کفار بڑے عیار اور دغوی منافع کو پیش نظر رکھتے ہوئے موقع ہاتھ سے نہ دیں ۔ کفار بڑے عیار اور دغوی منافع کو پیش نظر رکھتے ہوئے موقع ہاتھ سے نہ دیں ۔ کفار بڑے عیار اور دغوی منافع کو پیش نظر رکھتے ہوئے موقع ہاتھ سے نہ دیں ۔ کفار بڑے عیار اور دغوی منافع کو پیش نظر رکھتے ہوئے موئے موقع ہاتھ سے نہ دیں ۔ کفار بڑے عیار اور دغوی منافع کو پیش نظر رکھتے ہوئیں میں آ کئیں گے ۔ لوگوں پر ظاہر کریں گے کہ ہمیں تم

⁽۱) سر پی اس بیارگانام بجو چملے کو خدو خیل سے جدا کرتا ہے

ے کوئی سروکارنیں، ہمارا جھڑا صرف ہندوستانیوں ہے ہے، ہم تہمیں کوئی آزارنہ بہنچا کیں گے، بلکہ کسی کابال بھی بیکا نہ ہونے دیں گے اور ہندوستانیوں کے استیصال کے بعد واپس چلے جا کیں گے۔ ملکی معاملات میں ہرگز وفل نہ دیں گے۔ و و لوگوں کورو پے کالا کچ بھی دیں گے۔ آپ پرلازم ہے کہ ان کے فریب میں نہ آئیں، ورنہ وہ موقع پاتے ہی آپ کوبالکل جاہ کر دیں گے، دکھ بہنچا کیں گے، گونا گول ہے جو تی کاہدف بنا کیں گے۔ آپ کی ساری دولت اور پہنچا کیں گے، اور آ کچے دین کو تباہ کر ڈالیس گے۔ اس وقت کف افسوس مطلے کے سوا پھے ہاتھ نہ آئے گا۔ ہم آپ کوبطور خاص متنب کرتے ہیں۔ (۱)

اخوندصاحب کے نام خط

مولوی عبدالحق کے بیان ہے مترشح ہوتا ہے کہ عام اعلانِ جہاد کے علاوہ ایک خاص
کمتوب اخوندصا حب سوات کو بھیجا گیا تھا، جس بیں صاحب موصوف کی دین داری اور
بزرگ کاذکر کرتے ہوئے لکھا تھا کہ خدانے آپ کو دنیا میں برتری عطا کی ہے۔ فرنگ
جنگ کے ارادے سے فوج لے کر ہماری طرف آیا ہے، وہ مسلمانوں کی تخریب کے
در پیے ہے۔ در بند، تربیلہ اور امب میں بھی اس کے نشکر بیٹھے ہیں۔ والی امب اس کا
فر مانبردار ہے۔ موزہ خال امان زئی اس کے ساتھ اظہارا خلاص میں سرگرم ہے۔ ٹو بی اور
مینئی کے رئیس بھی اس کے ہمراہ ہوگئے ہیں۔ جدونوں کو پیغامات بھیجے جارہے ہیں:

| بدانی که بر تست مانند قرض | رفاقت نمودن به تو هست فرض |
|---------------------------|-------------------------------|
| شده فرض بر دین جویان مکل | نه بر تو که بر کلمگویانِ مُکل |
| به دینِ پیمبر رعایت کنید | به آل شاهراده حمایت کنید |

⁽¹⁾ بیاس اعلان کا ترجمہ ہے جواحمہ خال رئیس بجڑ ہ کے نام تھااوراس نے انگریزوں کے حوالے کیا۔

| ز درگاهِ حَق خود نیکی براست | کهای نگ و ی مومنال را سزاست |
|----------------------------------|-----------------------------|
| بس از دست ِ وثمن بگر دند تنگ (۱) | نیارند گر اہل اسلام ننگ |

اخوندصاحب نے بیکتوب پڑھ کر فرمایا۔

| چو شد شاہزادہ سرِ موسیں | دریں وقت بے شک غزامست ایں |
|-----------------------------|---------------------------|
| که مستند سادات سرازنخست (۲) | امارت به شنراده آمد درست |

⁽۱) غزائه ایم ایم ۱۰ ۵۳۲۵۲

اشعار کامغہوم ہیہ ہے کہ مسلمانوں کی رفاقت نیصرف آپ پر بنکہ تمام کلمہ گویوں اور دین جن کے خیرخواہوں پرفرض ہے۔ آپ کو چاہئے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے دین کی خاطر شنہ اوہ مبارک شاہ کی تمایت کریں۔ دین کی عزت کا پاس مومنوں کے لئے زیبا ہے۔ خدا کی بارگاہ ہے اس نیکی کی جزالے گی۔ اگر مسلمان دین کی عزت کا پاس نہ کریں مے تو دشمنوں کے ہاتھ سے خت تکلیفیں اٹھا کیں ہے۔

⁽r) ترائے بنے اس ۵۳۲۵۲

اس وقت بے شک فرہی جنگ در چیش ہے۔ شہرادہ مبارک شاہ مومنوں کا سردار ہے۔ امارت اس کی مسلم ہے ادر سادات مبلے بن سے سرداری کے منصب پر فائز سطے آتے ہیں۔

بإنجوال باب:

جنگ امبیله (۱)

وادیؑ چملہ

یوں اس جنگ کا آغاز ہوا، جوعلاقہ سرحدیس انگریزوں کے خلاف سب سے بوی جنگ تھی۔ اسکے حالات بیان کرنے سے پیشتر وادی جملہ کی سرسری کیفیت بتادینا ضروری ہے، جس میں اسبیلہ گاؤں واقع ہاورا کی وجہ دافلے کا دروازہ ' درہ اسبیلہ' کہلاتا ہے۔ چملہ ایک نہایت زرخیز اور سرسز وادی ہے، جو پہاڑوں سے محصور ہونے کے باعث بہت محفوظ ہے۔ بیزیادہ سے زیادہ چودہ بندرہ میل لمی ہوگی اور چارمیل چوڑی۔ باعث بہتی ہے، جس کا نام چملہ ہاور وہ وادی کے مغربی گوشے سے شروع ہوکر مشرقی گوشے سے شروع ہوکر مشرقی گوشے ہے، جو ہونیر کوسیراب کرتی ہوئی آتی ہاور انجام کا در بیائے سندھ میں گرتی ہے۔

 خاصی بڑی فوج کوروک سکتے سے خود وادی میں کل باکیس گاؤں ہیں،ان میں سے بیشتر
ان قبائل کے مملوکہ ہیں، جو بوسف ذکی کے میدانی علاقے میں رہتے ہیں۔ پھواہل بونیر
کی ملکیت ہیں مثلاً امبیلہ گاؤں۔ میدانی علاقے کے لوگوں نے اس وادی میں ملکتینیں
غالبًا اس لئے ضروری مجھی تھیں کہ جب کوئی قومی دشمن میدانی علاقے پر دھاوا بولٹا تو یہ
لوگ بال بچوں کولیکر محفوظ مقام پر آ بیٹھتے۔ بڑے بڑے گاؤں یہ ہیں: مرپی کے ساتھ
ساتھ لالو، کوگا، سر ہا، تنول، ڈھیری، کریا، خزنی، نیج میں امبیلہ، ناواگئ، جنگی، ڈھیری،
وادی کے جنوب مشرق میں اصل مہابن بہاڑ ہے جس پر ملکا واقع ہے۔ ملکا ہی پر جملہ جنگ امبیلہ کا اصل مقصد تھا۔ چملہ کے جنوب میں خد وخیل واقع ہے۔ صرف کوہ سرپی کی دیواردونوں کو جدا کرتی ہے۔

انگریزوں کی پیش قندی

اب ہم سب سے پہلے جنگ امہیلہ کے متعلق وہ حالات بیان کریں گے جوانگریزوں نے مرتب کیے بیان کریں گے جوانگریزوں نے مرتب کیے یاان کی فراہم کی ہوئی معلومات کی بناء پر مرتب ہوئے ۔حسن اتفاق سے ہمیں اس بارے میں ایک مکی مصنف کی کتاب بھی لگئی ہے، جو تمام حالات کا عینی شاہد تھا، یااس نے ہرچھوٹا بڑاوا قعدان لوگوں کی زبان سے سنا تھا جنہوں نے جنگ میں نمایاں حصہ لیا۔انگریزوں کے بیان کر دہ حالات پیش کرنے کے بعد ہم ان ملکی مصنف کی کتاب کے مطالب تفصیلاً قلمبند کریں گے ،اس طرح خوانندگانِ کتاب کو تمام حالات کا صحح انداز ہ ہوسکے گا۔

اگریزی بیانات سے معلوم ہوتا ہے کہ فوج کے ہراول دستے نواکلئی میں جمع ہوئے تھے الیکن بڑی فوج کا مقامِ اجتماع صوابی تھا ،اورانگریزوں کی انتہائی کوشش میتھی کہ قبائل کو پیش قدمی کے راستے کا قبل از وفت علم نہ ہوسکے۔ گویا تیاری میں اخفا کا مقصد بہ طور خاص پیش نظر رکھا گیا تھا۔ ۱۸ اراکٹو بر ۱۸۲۳ء کو بڑی فوج جزل چیمبرلین کی سرکردگی میں صوابی سے روانہ ہوئی۔اس کا ابتدائی رخ درہ در بند کی طرف تھا کیکن تھوڑی دور جا کراس نے رخ بدلا اور پرمولئی کا قصد کرلیا، نواکلئی والی فوج بھی پرمولئی پہنچ گئی اور درے میں پیش قدی شروع ہوگئی۔(۱)

جنكى اسكيم اورمشكلات

جنگ کی ابتدائی اسکیم میتی کہ کرنل وائلڈ (Wilde) کا دستہ سے پہلے چملہ بہتنج کر رائے کی ویکھ بھال کا انتظام کرلے گاتا کہ فوج وادی میں پنچے تو اسے ملکا کی جانب پیش قدمی کرنے میں انتظام نہ کرنا پڑے۔ لیکن بیاسکیم اس وجہ سے ملتوی کرنی بڑی کہ در سے کے سفر میں بالکل غیر متوقع اور سخت مشکلات پیش آئیں ، جتی کہ ۲۰ را کتو برکی کہ در سے کے سفر میں بالکل غیر متوقع اور سخت مشکلات پیش آئیں ، جتی کہ ۲۰ را کتو برکی آدھی رات تک بار برداری کا ایک بھی جانور وقع پرنہ پہنچ سکا۔ ایک رکا وٹ میہ پیش آئی کہ تقریباً اڑھائی سو بو نیر یوں نے جا بجامور ہے قائم کر لیے اور پیش قدمی کرنے والی فوج پر آئش باری شروع کردی۔ چنانچہ در سے ہی میں ایک مقام پرفوج کا کیمپ قائم کر کے چوکی بہرے لگا دیے گئے۔

اب واضح ہو چکا تھا کہ جملہ میں سے گذرتے ہوئے ملکا پینچنا اتنا سہل نہیں جتنا ابتداء میں سجھ لیا گرو بہاڑ پرجمع ہونے لگے۔ ان کی ابتداء میں سجھ لیا گیا تھا۔ آ ہتہ ہونیر کے قبائل گڑو بہاڑ پرجمع ہونے لگے۔ ان کی موجودگی میں چیش قدمی کا مطلب سے ہوتا کہ وہ کسی وقت بھی حملہ کر کے فوج کی راو مراجعت منقطع کردیتے اوراس کے لئے بچاؤکی کوئی صورت باقی ندرہتی۔

⁽۱) فوج کی تفصیلات نیویل اور واکلی کی تمایول میں دیکھی جاسکتی ہیں۔ ہنر نے ''ہمارے ہندوستانی مسلمان'' کے حواثی میں بتایا ہے کہ بازگر ہوئی ہیں۔ ہنر نے اند ، ایک ہزار ایک سو بچاس بیاد ہ فوج تھی ، ووسوسوار ، دوسواتی توپ خانہ ، ایک ہزار کا جیش سول کمشنر کے ماتحت تھا اور تیرہ تو ہیں تھیں۔ اس کے علاوہ در بند ، تربیلہ ، ٹو پی ، ایبٹ آ باد ، رستم ، مردان وغیرہ میں بھی فوج مقیم متنی ۔ (ص۲۲) ۔ مقامی خوانین کے دستول کا شارئیس ہوسکتا۔

نظراسته كي تجويز

عجابدین اور ساوات ستھانہ نے قبائل کے نام جواعلان بھیجا تھااس نے پور کے آزاد علاقے میں آگ لگادی تھی اور ہر خطے سے لوگ جوش وفاع میں محافی جنگ ہو پہنچنے گئے سے علاقہ سمتہ کے خوانین انگریزوں کے زیر اثر تھے۔ چملہ و بونیر کے جن خوانین کو روپ دے کررام کرلیا گیا تھا وہ بھی چاہتے تھے کہ انگریزوں کا مقصد پورا ہوجائے ،لیکن انہیں ہم قو موں کی مخالفت کا حوصلہ نہ تھا اور انگریزوں سے ملتے بھی تھے تو حد درجہ خفیہ دفیہ ملتے تھے تاکہ کسی پر یہ جمید کھل نہ جائے۔ چنانچہ چملہ وبونیر کے جو نمائندے دفیہ ملتے تھے تاکہ کسی پر یہ جمید کھل نہ جائے۔ چنانچہ چملہ وبونیر کے جو نمائندے ہوئی راستہ چھوڑ کر جنوبی راستہ اختیار کرنا جا ہے۔ وہ بہاڑوں کے بی میں سے جاتا ہے اور بہاڑوں کے بی میں سے ملکا بہنچا تا ہے۔ انگریزوں کیلئے بیراستہ اختیار کرنا بہت مشکل تھا۔ اندیشہ تھا کہ ان کی فوج بہاڑوں بی میں تباہ ہوجاتی۔

بہر حال رکاوٹ پیدا ہوگئ۔ اگر فوج واپس بلالی جاتی تو انگریزوں کی ہوا اُ کھڑ جاتی اور قبائل کے حوصلے بڑھ جاتے ۔ آگے بڑھنے کی بہ ظاہر صورت کوئی نہتی۔ رک جانے کا بتیجہ یہ نکلا کہ قبائل کے جیش زیادہ جوش وخروش ہے جمع ہونے لگے اور حالات کی ظہالے خطہ نازک ہے نازک تر ہوتے گئے۔

مجامدین وسادات کے انتظامات

مجاہدین وسادات کو جب یقین ہوگیا کہ انگریز دادی پھلہ ہے ہیں قدمی کا فیصلہ کر چکے ہیں تو انہوں نے جنو بی ست کے نراب کیے ہوئے رائے درست کرادیے ،اس لئے کہ ادھر سے یورش کا ندیشہ نہ رہا تھا۔ چملہ کی جانب کے تمام ضروری مقامات کی حفاظت کا بندوبست کرلیا۔ پچھون جسریٹی کے مختلف مقامات کی حفاظت کے لئے متعین کردی۔ باقی فوج لے کر امیر مجاہدین اور شنرادہ مبارک شاہ گرو پہاڑ پر آبیشے، جہاں بونیر، سوات، دیر، باجوڑ، کنٹر وغیرہ کے قبائل اشکر جمع ہور ہے تھے۔ انگریزوں کوسب سے بڑھ کر اندیشہ سے تھا کہ کہیں اخوند صاحب سوات مجاہدین کا ساتھ دینے کے لئے تیار نہ ہوجا کیں۔ بونیر وسوات یا دوسر نے خطول اور میدانی علاقے میں ان کا اثر ورسوخ بہت نیادہ تھا۔ اخوند صاحب ہمہ گیر قبال کود کھے کر خاموش نہ بیٹھ سکتے تھے۔ چنا نچہ وہ بھی موقع پر بہنچ گئے اور ان کی وجہ سے قبائلی جوش وخروش میں مزید تندی اور تیزی بیدا ہوگئی۔

حفاظتی موریے اور لڑائیاں

انگریزوں نے کیمی کی حفاظت کیلئے دائیں بائیں کئی مور جے بنار کھے تھے،جن میں سے دوبطور خاص قابل ذکر ہیں: ایک کیمی کے دائیں جانب کا مور چہ،جس کا نام انگریزوں نے'' کیلے کامور چہ' (Crag Piquet) رکھا۔ دوسرا بائیں جانب کا مور چہٰ، جو'' آشیانہ تحقاب'' (Eagle's Nest) کے نام ہے موسوم تھا۔۲۲ را کو برکو انگریزی فوج کاایک دستہ وا دی میں اتر کر کریا تک گیا جوتقریباً گیارہ میل کے فاصلے پر ہے۔ واپسی میں اہل بونیر نے اس برح لمہ کیا اور بچاؤ کیلئے انگریزی رسالے کو پیش قدمی کرنی پڑی'' فیلے کے موریے'' اور'' شیانۂ عقاب'' ہر بار بار شدید خونر بز لڑائیاں ہوئیں، یہال تک کد دنوں موریح تین تین مرتبه انگریزوں کے ہاتھ سے نکے اور سخت جدو جہد کے بعد انہوں نے دوبارہ ان پر قبضہ کیا۔انگریزی کیمپ پر بھی بار باریورشیں ہوئیں۔ جب جزل چیمبر کین کو یقین ہوگیا کہ آ سے بڑھنامشکل ہےتو تیمی کیلئے در ہے میں زیادہ او نچی جگہ تجویز کر کے فوج کو وہاں منتقل کردیا گیا۔ قبائلی پورشوں میں انگریز ں كاسخت نقصان موا بلكه ايك موقعه برقوجيس وابس بلالينه كي تجويز كممل مو چكي تنمي مجروسيع مصلحتوں کے پیش نظرملتوی کردیا ممیا۔ایک بورش میں خود جزل چیمبرلین بھی بری طرح

زخی ہوگیا۔ آخراہ فوج کی کمان چھوڑ کرعلاج کیلئے واپس آٹاپڑ ااور میجر جزل گارووک (GARVOCK)نے سیدسالاری کامنصب سنجالا۔

انگریزی سیاست کی کامیابی

ادھر جنگ جاری تھی اُدھر انگریزی سیاست بدستور قبائل میں تفرقہ انگیزی کی کوششیں کررہی تھی۔ وقبائل کی تربیت ایس نہتی کہ وہ زیادہ دیر تک جنگ جاری رکھ سکتے۔ کشکش جننا طول کیلاتی گئی قبائل میں انتشار کے امکانات اسنے ہی برھتے گئے۔ کمشز نے ان حالات سے فائدہ اٹھا کر اپنی سرگرمیاں بہت تیز کردیں اور مختلف حیلوں بہانوں یا رشوتوں سے بعض قبیلوں اور بڑے بڑے خوانین کو ہم نوابنالیا۔ ان کے سامنے شرطیں یہ پیش کیس کہ کسی کو نقصان پنچانا مقصود نہیں صرف اتنا کافی ہے کہ ہندوستانی مجاہدین کو مکا سے فکال دیاجائے اور اس آبادی کو ہرباد کرنے میں مدودی جائے۔ چنانچہ کی قبیلاس پر طوفان جوش وخروش سے اٹھا تھا وہ ٹھنڈ اپر نے کا گریزوں کے خلاف نبرد آنے مائی کا جو طوفان جوش وخروش سے اٹھا تھا وہ ٹھنڈ اپر نے کا گا۔ جزل گارووک نے محارد ممبر کوفوج کے دوجیش تیار کے اور لالو پر تبضہ کر لینے کے بعدا سے جلادیا۔ وہاں سے امبیلہ پریورش کی۔ کے دوجیش تیار کے اور لالو پر تبضہ کر لینے کے بعدا سے جلادیا۔ وہاں سے امبیلہ پریورش کی۔ یہ گاؤں بھی خلایا۔ ان کامیا بیوں نے قبائل کوسلح پر آمادہ کردیا۔

صلح

قبائل کی استقامت کاسب سے برا مرکز حضرت اخواند صاحب سوات تھے۔ اگریزوں نے ان سے بھی بار باراپیلیں کیس کہ خونریزی کے امتداد سے بچھ حاصل نہ موگا۔ حکومت انگلفیہ کے وسائل بہت وسیع ہیں، مزید نو جیس آ جا کیں گی اور قبائل ان کامقابلہ نہ کرسکیں گے۔ قبائل میں ایک گونہ پھوٹ پڑ چکی ہے، اس لئے کہ بعض خوانین ابتداء ہی سے انگریزی علاقے کے ہم قو موں کے ساتھ ساز باز کیے بیٹھے تھے۔ انہیں صرف عوام کے بے بناہ جوشِ خالفت نے دم بخو دکر رکھا تھا۔ جب انہوں نے دیکھا کہ جوش شعنڈا پڑر ہاہے تو اپنی سرگر میاں تیز کردیں اور خود حضرت اخوند صاحب کو بھی یہی مناسب نظر آیا کہ ملکا کی تابھی یابرائے نام تابھی و بربادی پر راضی ہوجا کیں۔ گفت وشنید کے بعد قرار پایا کہ اہل بونیر پیچھے ہٹ جا کیں ، ان کے خوانین میں سے بعض انگر بز افسروں کی موجودگی میں ملکا کو تباہ کردیں اوراس اثناء میں باقی خوانین لطور برغال اگریزوں کے یاس دہیں۔

چنانچہ ۱۹رومبر کو چند انگریز افسر اور تھوڑے سے سپاہی خوانین، یونیر اور بعض دوسرے رئیسوں کی ایک جماعت کے ہمراہ ملکا گئے اور اپنا مقصد پورا کر کے ۲۲ رومبر کو واپس آ مجئے۔اس کے ساتھ ہی انگریزی فوج کی مراجعت شروع ہوگئی۔

انگریزوں کا انداز ہ ہے کہ اس جنگ میں دوسواڑتمیں افر ادابل فوج مقتول ہوئے، چھسوستر مجروح ،قبائلی مقتولین ومجروحین کا انداز ہ تین ہزار کیا گیا۔(1)

مزيد تفصيلات

رینل ٹیلر کی سوانے جیات میں بتایا گیا ہے کہ مندرجہ ذیل انگریز افسر ملکا گئے تھے، رینل ٹیلر ،کرنیل ایڈئی ،کرنیل اے ،ٹیلر، میجررابرٹس(۲)،میجر جانسٹن اورلیفٹینٹ کارٹر۔ ان کے ساتھ کچھ پٹھان سپاہی تھے، پچھ سکھ اور پچھ گور کھے۔ ۱۹ردیمبرکو روانہ ہوئے شدید بارٹن کے باعث کریا میں رکنا پڑا۔ پھر چلے تو معلوم ہوا کہ امازئی قبیلے کے

⁽۱) نیویل کی تماب ۱۲ سام ۱۲ سان بنگ کے طالات کے لئے طاحظہ جودائلی کی تماب می ۱۲۸۳ استان بیا کی تماب می ۱۲۸۳ سان میں اکتاب میں ۱۲۸۳ سرال کی تماب ۱۳۳۰ سرال کی تماب ۱۳۳۰ سرال کی تماب ۱۳۳۰ سران میں اکتاب میں اکتاب میں ۱۲۸۳ سرال کی تماب ای موضوع پاکھی گئی ہے۔

 ⁽۲) بعد می فیلڈ مارش لارڈ را برٹس۔

لوگراست بیل جمع مور ہے ہیں اور انہوں نے خد وحیاوں کو بھی امداد کے لئے بلالیا ہے۔

اس کا مطلب صاف الفاظ بیل بی تھا کہ مزاحت کا سروسامان کرلیا گیا ہے۔خوائین ہوئیر نے نامہ و بیام سے انہیں ہموار کرلیا۔ ۲۱ رد ممبر کی ضبح کو ملکا پہنچ کر مکانوں کو آگ لگائی گئی۔ اماز ئیوں کی خواہش اورکوشش بیتی کہ ملکا کی آبادی کے ایک جھے کو آتش زنی سے بچالیں تاکہ دوسر نے قبیلوں کے روبرو دعوی کر سکیس۔خود انہوں نے اپنا حصہ محفوظ رکھا اورا سے گزند سے بچالیا۔ رینل ٹیلر جو پوری کا رروائی کی تحمیل کا فر مہدارتھا، کوئی حصہ محفوظ کو جھوڑ نے پر راضی نہ ہوا۔ سدم کے خان محمد عزیز خال نے اس کی خواہش پوری کردی، محموز نے بیاری جلادی گئی۔ (۱)

⁽۱) رینل ٹیلر کے سواغ حیات (اگریزی،ص ۱۸۹-۲۹۱)۔ اس سلسلے میں مقامی اصحاب کے بیانات آ گے آئیں م

چھٹاباب:

جنگ امبیله (۲)

مقامی بیان

اب ہم اس مرقع کا خلاصہ پیش کرتے ہیں جو جنگ اسبیلہ کے متعلق مولوی عبدالحق آروی نے ''غزائے بینے'' کے نام سے منظوم صورت ہیں مرتب کیا تھا۔ جیسا کہ پہلے بیان کیا جا چکا ہے وہ جنگ اسبیلہ کے عینی شاہد تھے۔ چوں کہ اس جنگ کے حالات تنصیلا جمع کردینے کا ادادہ کر چکے تھے اسلئے یقین ہے کہ انہوں نے شرکائے جنگ سے مل کرتمام واقعات کے متعلق خوب چھان بین کرلی ہوگی۔ لہذواان کے بیانات کی صحت میں تا مل کی وجہ ہیں۔ ان سے کم از کم مجاہدوں اور قبائیوں کا نقطۂ نگاہ سامنے آجائے گا اور اگریزی بیانات کو بالقابل رکھ کر صحیح صورتِ حال پر چنچنے میں کوئی دفت ندرہے گی جیسا گریزی بیانات کو بالقابل رکھ کر صحیح صورتِ حال پر چنچنے میں کوئی دفت ندرہے گی جیسا کہ آگے چل کرواضح ہوگا۔ مولوی صاحب موصوف نے قبائیوں کے کمزور پہلونمایاں کہ آگے چل کرواضح ہوگا۔ مولوی صاحب موصوف نے قبائیوں کے کمزور پہلونمایاں کہ آگے چل کرواضح ہوگا۔ مولوی صاحب موصوف نے قبائیوں کے کمزور پہلونمایاں کہ قبائیوں کے کمزور پہلونمایاں کے چیش کردہ حالات زیادہ سے زیادہ متند کرنے میں مداہنے ہیں۔

باره جوانوں کی مردانگی

وہ فرماتے ہیں کدانگریزی فوج نے درے میں پیش قدی شروع کی تو عجب خال

رئیس سدم کے بھائی عزیز خال (۱) نے اہل اسمیلہ کے پاس خفیہ خفیہ پیغام بھیج دیا تھا کہ
اپنی تھاظت کا بندوب سے کرلو۔ایبانہ ہو کہ بے خبری میں مارے جاؤ۔ اکثر لوگ گھر باراور
بال بچوں کو سنجا لئے میں مصروف ہوگئے۔ دس بارہ نو جوان دوسروں کو اطلاع دیے بغیر
کوتل پر بینی گئے جو اسمیلہ سے دواڑھائی میل کے فاصلے پر ہوگا تا کہ اگریزی فوج
کاراستہ روک لیں۔ جائم فن رات تھی (۲) انہوں نے موزوں جگہیں تجویز کرکے
مور پے بنا لیے۔ جب انگریزی فوج ندومیں آگئ تو ایک دو گولیاں چلاتے ہی ہر جوان دور
پہاڑ کے چے چے واقف تھے۔ کمال یہ کیا کہ ایک دو گولیاں چلاتے ہی ہر جوان دور
نوجوانوں نے ایسی کیفیت پیداکردی کہ غنیم کو معلوم ہوکہ کی سوآ دی گھات میں بیٹھے
نوجوانوں نے ایسی کیفیت پیداکردی کہ غنیم کو معلوم ہوکہ گئی سوآ دی گھات میں بیٹھے
بیں۔ اس حصہ میں گھنا جنگل تھا اور نوجوانوں کو ایک مور چے چھوڑ کر دوسرے میں جانے
بیں۔ اس حصہ میں گھنا جنگل تھا اور نوجوانوں کو ایک مور چے چھوڑ کر دوسرے میں جانے
کیلئے کوئی دفت پیش نہ تی تھی ۔ جن تک مقابلہ جاری رہا۔ روشتی ہونے گئی تو یوگ والی کو ایک

ىيىلى با قاعدەلژائى

اس اثناء میں دولت زئی اورنوری زئی بونیر یول میں سے ستر اسی آ دمی اس گلی میں پہنچ گئے جو پھلہ اور بونیر کے درمیان آمد وردنت کا راستہ ہے۔ جنوبی سمت میں کوگا کی جانب رژ ژ قبیلے کے نوجوانوں کا ایک دستہ آگیا۔انگریزی فوج کے تیرہ سوار جن میں سے چار انگریز سخطلا یہ گردی کے سلسلے میں کوگا پہنچ۔گاؤں والوں نے کوئی مزاحمت نہ کی

⁽۱) میدہ بی عزیز خال ہے جوریٹل ٹیلر کے بیان کے مطابق خوانین کے اس کروہ بیس شامل تھا جے انگریز افسروں کے ساتھ ملکا کوجلانے کیلئے بیجا گیا تھا۔ اس سے انداز ہ ہوسکتا ہے کہ خوانین کی دوڑ ٹی کا کیا حال تھا، وہ انگریز وں کا ساتھ دینے پر بھی مجبور تتے ادران کے دل اپنے ہم قوموں اور ہم وطنوں کی درومندی ہے بھی خالی ندتھے۔

⁽۲) تقویم سےمعلوم ہوتا ہے کہ جمادی الاولی کی چھٹی یاسا تویں تاریخ تھی کو یا ان نوجوا نوں نے رات کے ابتدا کی حصر میں جا بجامور ہے قائم کر لیے تھے۔

کین وہ داپس ہوئے تو ان پر ہرطرف سے آتش باری شروع ہوگئ۔ انگریزی تو پیس بھی ہوئے کارآ گئیں اور پورامیدان آگ اور دھوئیں کے بادلوں سے ڈھک گیا۔ بونیر یوں میں سے تین حقیقی بھائیوں نے تلواریں علم کیں ، بھل کی تیزی سے انگریزی فوج کے قلب پرحملہ آور ہوئے اور تینول شہید ہوگئے۔ باپ نے بیسنا تو دہ بھی جگر بندوں کی پیروی میں لڑتے ہوئے شہادت سے سرفراز ہوا۔ اس گھرانے کی مردائی دوسروں کیلئے مشعل راہ بن گئی، جو آتا وہ ولیری سے حملہ کرتا اور غنیم کو مار کرخود شہادت پاتا۔ اس طرح بہت سے قبائلی شہید ہوئے لیکن انگریزی فوج کو پسپائی پر مجبور کردیا اور ذاتی شجاعت کا ایسا نمونہ پیش کیا کہ جو بھی یہ کیفیت دیکھنا جانبازی پر آمادہ ہوجاتا۔

تمشنر کی تدبیریں

اب انگریز کمشر نے خوا نین پر زور ڈالناشر وع کیا کہ وہ جملہ سے جر گے بلا کیں اور کار برآری کی کوئی صورت پیدا کریں ۔ چنا نچہ کوگا اور سر بائے تین ملک یعنی ملا خاں ، عبداللہ اور فیروز پہاڑ کا چکر کاٹ کر خفیہ خفیہ کمشر کے پاس پہنچ اور اپنی ارادت واطاعت کا اظہار کرتے ہوئے صاف صاف کہ دیا گہم مجور ہیں ، کچونہیں کر سکتے ۔ اگر اہل بونیر کاساتھ نہ دیں تو ایک دن میں تباہ کر دیے جا کیں ۔ کمشر نے آئیں بہت یقین دلایا کہ ہمیں نہ اہل چملہ سے کوئی کا وش ہے نہائل بو نیر سے ، نہی کے علاقے پر قبضہ کرنا چا ہیں ہیں ۔ کوئی ایبا راستہ بتا دو کہ ہم ملکا پہنچ جا کیں ۔ اے برباد کرکے واپس چلے جا کیں بین ۔ کوئی ایبا راستہ بتا دو کہ ہم ملکا پہنچ جا کیں ۔ اے برباد کرکے واپس چلے جا کیں جیسا کہ بتایا جا چکا ہے ، بیر راستہ اختیار نہ کیا جا سکتا تھا ، اس لئے کہ حد در جہ خطر ناک تھا ۔ کوئی بوی فوج بھاری ساز وسامان کے ساتھ اس راستے سے جانہ کئی تھی اور تھوڑ ہے آدی کوئی بوی فوج بھاری ساز وسامان کے ساتھ اس راستے سے جانہ کئی تھی اور تھوڑ ہے آدی کوئی بوی فوج بھاری ساز وسامان کے ساتھ اس راستے سے جانہ کئی تھی اور تھوڑ ہے آدی میں مارے جا کیں گے ۔ اس اثناء میں کمشر نے تو اندیشہ تھا کہ بہاڑ وں ہی میں مارے جا کیں گے ۔ اس اثناء میں کمشر نے خوا نین کومیدانی علاقے میں جگہ جگہ متعین کردیا تا کہ رسد بہم رسانی میں رکا وٹ

پیدانہ ہو، نیز میدانی علاقے سے مجاہدین کو کمک نیل سکے۔ چنانچہ رحمت خال خشک ابن طاؤس خال اور محدز مان خال بو پلر فی ممر کا وئی میں متعین ہوئے۔ امیر خال، خو کداد خال اسلمعیلہ ، ابرا ہیم خال زیدہ ، مہابت خال توروکو شیر درے میں مامور کردیا گیا۔ شہداد خال رکیس ہوتی کو پرموئی بھیج دیا گیا۔ عجب خال اور عزیز خال کو خوانین بونیر سے بات چیت کیلئے اینے یاس رکھا۔

شنرادہ اور مجاہدین کے انتظامات

امیر عبداللہ رئیس بجاہدین اور شنرادہ مبارک شاہ نے بھی جلد سے جلد دفاعی انتظامات کر لیے۔ چنا نچے ایک جماعت اس راستے کی حفاظت کے لئے بشمادی جولالو سے ملکاجاتا تھا۔خود بڑے فشکر کو لے کرمیدان میں پہنچ گئے اور کاٹ گلہ کے مقام پرڈیرے ڈالے۔ وہاں چملہ ، بونیر اور دوسرے مقامات کے قباکیوں کو بلاکر جنگ کے متعلق مشورے کیے۔ فیصلہ بیہ ہوا کہ انگریزی فشکر کے مقابلے پر جو درے میں مقیم تھا، تین طرف مور ہے قائم کر لیے جائیں اور ایک ایک مور ہے میں مختلف قبیلوں کے آ دئی بیٹے جائیں۔ چنا نچے سید شاہ محود (ابن سید عمر شاہ سے انوی) سیداعظم اور سیدیوسف (ساکنانِ ناوائی) کو جدونوں، شاہ مور ہے قائم کو اور عیسیٰ ذکیوں پر سردار مقرر کر کے انگریزی فوج کے دائیں جانب کوہ لالو پر بٹھا دیا گیا۔ اہل ہو نیر میں سے عائش ذکی، گدائی ذکی اور بیٹی ایک انگریزی فوج کے سامنے مور ہے قائم کر کے جم گئے۔ سلار ذکی، نوری ذکی، دولت ذکی اور چنز ذکی اور چنز ذکی اور چنز زکی سنجال لیا۔ بچاہدین سامنے کاٹ گلہ میں مقیم رہے۔ ان کے لئے روٹی ملکا سے آتی تھی اور بعض اوقات وہ لوگ کی کھکھائے سے بغیر بی گزارہ کر لیتے تھے۔

د وسرى لژائى

قبائلیوں کی بہادری اورغیرت وحمیت میں قطعاً کوئی شبہ نہ تھا، کیکن ان میں دو

-خرابیان تیں ایک میرکدوہ منظم جنگ کی تربیت سے نا آشنا تھے، دوسر یعض موقعوں پر بهادری کی نمائش میں بہترین جنگی مصلحتوں کو بھی نظر انداز کرجاتے ہے۔ چنانچہ غزوہ بونیر کی دوسری جنگ میں ای خرابی کے باعث انہیں خاصا نقصان ا**ٹھانا پڑا۔** پھر زئی دیر ے میدانِ جنگ میں پنجے تھے اور پہلی جنگ میں شریک ندہو سکے تھے،البذا آئے تو جوش تہور میں سویے سمجھے اور بات چیت کیے بغیر حملہ کر دیا، یہاں تک کدان سر دارانِ لشکر سے بھی مشورہ نہ کیا جوکوہ لالو کی جانب کے مورچوں میں مقیم تھے، اور جن کی امداد کے بغیر چغر زئیوں کاحملہ نتیجہ خیز نہ ہوسکتا تھا۔اس جنگ میں انگریز وں کابھی سخت نقصان ہوااور پغرزئیوں پر بھی شدید ضرب گئی۔کوہ لالوکی جانب جود سے مقیم تنے وہ اچا نک تیاری کے بغیر چغرزئیوں کی امداد کے لئے تکلنے پرمجبور ہو گئے ۔ گھمسان کارن پڑا جس میں سیداعظم ساکن ناوا گئی نے شہادت یائی۔کوہ لالوکی وو چوٹیاں ایک دوسری کے بالقابل واقع ہیں ان میں سے ایک چوٹی پرمجاہدین سیدشاہ محود کی سرکر دگی میں ڈیٹے رہے لیکن دوسری چوٹی براگریز قابض ہو گئے۔اس طرح کیمی کے دائیں جانب انگریزوں کی دفاعی بوزیش بہتر ہوگئی۔اس کے بعد کم وہیش آٹھ نہایت خوفنا کے لڑائیاں ہوئیں جن میں ہے بعض کی کیفیت ہم سرسری طور پر بیان کریں گے اور آخری لڑائی کے حالات تغصیلاً بتا کیں گے، اس کئے کہ وہ براہِ راست مجاہدین سے تعلق رکھتی ہے۔

اخوندصاحب سوات كى طلى

اخوند صاحب سوات کو پہلے ہی طلاع بھیجی جا چکی تھی ،اب قبائل کی طرف سے
تاکیدی خطوط ان کے پاس پہنچ، چنانچد انہوں نے نفیر عام کا اعلان کردیا اور تھم دے
دیا کہ ہر مخف ہتھیا راور کھانے پینے کا سامان ساتھ لائے ، نیز جلد سے جلد موقع جنگ پر پہنچ
جائے۔اخوند صاحب کے رفیقوں میں عبد الرحمٰن کا بلی معروف برد پانے بابا "بہت مشہور
مقرر تھا۔ دہ جہاں تقریر کرتا آگ لگادیتا۔اخوند صاحب سید شریف سے اٹھے اور منگورہ

پہنچ کر پچھ دیر قیام کیا۔ وہیں جعد کی نماز اداکی، خطبہ دعوتِ جہاد پر شمل تھا، جس میں صاف صاف اعلان کردیا کہ اگرانگریزاس علاقے پر قابض ہو گئے قبیں ہجرت کرجاؤں گا۔ وہاں سے اٹھے تو ہری کوٹ ہوتے ہوئے مقام جنگ پر پہنچ گئے، ان کی وجہ سے دور دور تک قبائل میں حرکت پیدا ہوگئی۔ مولوی عبد الحق آروی نے ایک ایک قبیلے، اس کی شاخوں اور خوانین کا مفصل حال کھا ہے۔ میں وہ تفصیلا بیان کروں تو ان کے لئے ایک مستقل کتاب درکار ہوگی۔

تيسري لزائي

اخوندصاحب کی آمد سے پیشتر انگریزوں نے ان مور چوں کی توسیع پر توجہ کی جو
کیمپ کے بائیس جانب واقع تھے۔ چنانچہ انگریزی فوج مختلف پلٹنوں بیں تقسیم ہوکر کوہ
گرو کے غازیوں پر حملہ آور ہوئی۔ ان میں یونیر کے غیور جانباز بہادر مقابلے کیلئے موجود
سے ، مثلاً پایندہ خال ، مندے زے خال ، ویوان شاہ ، قبط شاہ وغیرہ ۔ انہوں نے شدید
مقابلہ کیا۔ خود بھی بڑا نقصان اٹھایا لیکن انگریزی پلٹنوں کا بھی صفایا کردیا۔ ان غازیوں
میں ایسے لوگ بھی تھے جن کے پاس آلواریں تک نہ تھیں اور انہوں نے خار دار درختوں
میں ایسے لوگ بھی تھے جن کے پاس آلواریں تک نہ تھیں اور انہوں نے خار دار درختوں
سے موٹے موٹے ڈنڈے کا ان لئے تھے۔ اس اڑائی میں بچلی نورخال ، بابوزئی اور ملاغلام
حسین نے بھی بڑی بہادری دکھائی ۔ غازیوں میں ایک صاحب علیم شاہ تھے جن کا رنگ
بیحد سرخ وسفید تھا اور آئکھیں نیگلوں ۔ سرسری نظر میں وہ انگریز معلوم ہوتے تھے۔ ایک
جندوستانی مجاہد نے آئیس انگریز سمجھ کر چیھے سے تلوار کا وارکیا۔ جلیم شاہ نے زخی ہوجانے
جندوستانی مجاہد نے آئیس انگریز سمجھ کر چیھے سے تلوار کا وارکیا۔ جلیم شاہ نے زخی ہوجانے
کے باوجود اس مجاہد کو بے تکلف معاف کر دیا۔ انگریزی فوج اپنا مقصد حاصل نہ کرسکی
اور اہل بونیر نے مقابلے پر اپنے مور سے شخام کر لیے۔ (۱)

⁽¹⁾ غزائے بیرتلمی نوم ۱۳۸ - ۱۳۹ ۔ یو اشیان تحقاب کی مختلف از ایوں میں سے قالباً پہلی ال الی کی کیفیت ہے۔

اخوندصاحب كى تشريف آورى

اخوند صاحب تشریف لے آئے تو آپ نے امبیلہ کی مجد میں قیام اختیار کیا۔
وہیں امبر الجاہدین مولانا عبداللہ اور شہرادہ مبارک شاہ نے آپ سے ملاقات کی ۔
صاحب موصوف اعلانِ عام کر چکے تھے کہ بیج وہلیل ،مسواک اور کلے کے ذکر سے کہیں
ہڑھ کرآئے بیضروری ہے کہ دخمن کا مقابلہ کرو۔عصاح چوڑواور تلوار ہاتھ میں لو۔اس اعلان
ہے قبائل ہیں ایک عام حرکت پیدا ہو چکی تھی۔

مولوی عبدالحق فرماتے ہیں کہ مولا ناعبداللہ نے اخوندصاحب کی خدمت ہیں چہنچتے ہی انتہائی ول فگاری سے عرض کیا: سب سے پہلے میر سے عقائد من لیجئے تا کہ میرافد ہب آپ پرواضح ہوجائے۔ چنانچہ عقائد من لینے کے بعداخوندصاحب نے کہا کہ اب اور کسی شئے کی ضرورت نہیں۔ میں آپ کو اپنا فرزند سجھتا ہوں اور ہر حال میں آپ کا خیر خواہ رہوں گا۔ محبت سے بغل گیر ہونے کے بعد فر مایا کہ آج میر سے اور آپ کے ناموس پر جملہ ہواہے ، ہمارا فرض ہے کہ مکر اگر یزوں سے جنگ کریں۔

| که لائق به توشد بدین دست برو | یمان مولوی را امارت سپرد |
|-------------------------------|-----------------------------|
| پویند پیشت صغیر و کبیر | بگفتش توہتی بہ ہر سر امیر |
| تو ہر دم بہ علم خدا باش و بس | نه میچد سرِ خود ز تکم تو کس |
| كدور جنگ دارى تو آلات چست | ازال برتو آمد امارت درست |
| دعا گوئے باشم کہ ہستم فقیر(۱) | ترابس به ہر باب کردیم امیر |

⁽۱) غزائے بنیرص ۱۳۲ یوری کیفیت کے لئے ملاحظہ ہوس ۱۳۸ – ۱۳۳ ا

اشعاد کامفہوم ہیے کیمولا ٹاسے قرمایا: آپ سب کے امیریں ، آپ کے علم سے کوئی سرند پھیرے گا۔ آپ خداکے عکموں پر چلتے رہیں ، آپ کی امارت اس بناء پر درست ہے کہ آپ جنگ کے سروسامان سے بخو بی لیس ہیں۔ ہیں نے آپ کوامیر مانا۔ ہمی تو فقیر ہوں اور صرف وعاء کرنامیر اکام ہے۔

ساتوان باب:

جنگ امبیله (۳)

عزم شبخون

اخوند صاحب کی تشریف آوری کے بعدان قبائل کے تازہ وَ م اشکر آگئے جودریائے سندھ کے کنارے پر مقیم تھے۔ اُنہیں کوہ لالو پر عیسیٰ زئیوں کی شکست کا حال معلوم ہوا تو اس واغ کودھونے کے لئے فی الفورز بردست مجاہدانہ اقدام پر آمادہ ہوگئے۔ چنانچہ باہم مشورے سے قرار پایا کہ انگریزی لشکر پر تین طرف سے شخون مارا جائے۔ ایک طرف سے سوات کے اکوز فی برھیں، جن میں کنارہ سندھ کے لوگ بھی شامل ہوں۔ دوسری طرف سے ہوائی برقین مجتمع حملہ آور ہوں۔ تیسری طرف سے مجاہدین کے دوجیش پیش طرف سے ہوانچہ یہ فیصلہ کر کے حضرت اخوند صاحب سے منظوری کی اور تمام لوگ تیاری کر کے اپنے ڈیروں میں مقیم ہوگئے۔

اکوزئی اوران کے ساتھی آوھی رات کے بعد اٹھے اور چھپ چھپا کر انگریزی مور چول کے قریب پھپا کر انگریزی مور چول کے قریب پہنچ گئے۔ اُنہیں جملے کیلئے اس امر کا انتظار تھا کہ ہندوستانی مجاہدین اپنی قرابینیں داغیں۔ دریتک کوئی آواز ندآئی تو وہ مجھے کہ شخون کی تجو پر شاید ملتوی ہوگئ ہے، چنا نچہوہ چپ چاپ پیچھے ہے اور رات کی تاریکی میں اپنے ڈیروں پر پہنچ گئے۔ اس اثناء میں مجاہدین کے دوجیش نجف خال جمعد اراور قائم خال جمعد ارکی سالاری میں تیم سے نماز فجر اداکر کے جملہ آور ہوئے اور ان کی قرابینوں کے شور سے پوری وادی گونج

اٹھی۔قرابینوں کی آواز سنتے ہی اکوز کی اوران کے ساتھی بھی نعرے لگاتے ہوئے شیروں کی طرح میدانِ جنگ میں اتر آئے۔ان میں سے الیاس خال، ممارہ خال، یوسف خال اورفضل خال سب سے پہلے انگریزی مور چول میں پہنچے۔

چوتھی لڑائی

ان بہادروں نے بری مردائی سے اڑائی شروع کی۔ قائم خال جمعدار الرتے الرتے شہید ہوگیا۔ نجف خال کی یہ کیفیت تھی کہ جس طرف رخ کرتا دشمن کی صفیں چیرتا ہوا گھس جاتا اور اُنہیں درہم برہم کر دیتا۔ آخر وہ بھی شہید ہوگیا۔ باتی قابل ذکر شہداء میں سے حاجی خال بامی خیل اور نور عالم مؤذن سیدو کے نام بتائے گئے ہیں۔ صلاح الدین میال خیل ساکن سقانہ بخت زخی ہوا۔ سپیدہ سحر نمودار ہونے پر باقی لوگ واپس چلے گئے۔ خیل ساکن سقانہ بخت زخی ہوا۔ سپیدہ سخر نمودار ہونے پائی۔ اس شخون میں اہل ہونیر مجاہدین میں سے ایک ایک نے میدانِ جنگ میں شہادت پائی۔ اس شخون میں اہل ہونیر نے اپنا وعدہ پورانہ کیا اوروہ چپ چاپ آرام کی نیندسوتے رہے۔ یہ بھی معلوم نہ ہوسکا کہ اس وعدہ خلافی کا سبب کیا تھا۔ (۱)

ایک ہراس آنگیز آواز

چوتھی لڑائی کے بعد فریقین کے موریے بدستورایک دوسرے کے مقابلے پر قائم رہے۔ایک روز اچا تک کوہ گڑو کی چوٹی سے کسی نے پکار کرکہا کہ لوگو! اپنے آپ کو بچاؤ انگریزی فوج درے سے نیچا ترنے کا فیصلہ کر چکل ہے اور بڑے ساز وسامان سے حرکت میں آگئی ہے۔ بیآ واز سنتے ہی تمام قبائل سراسیمہ وار بھاگ نکلے۔ تھانہ کے چند خوا نمین نے امدیلہ پہنچ کرا خوندصا حب کو بھی ساتھ لیا اور بونیر کی جانب کے درے میں پہنچ گئے۔ گویا امدیلہ اور آس یاس کا علاقہ بالکل خالی ہوگیا۔

⁽۱) غزائے بنیر (قلمی نسخه)ص۱۵۳-۱۵۰_

میراخیال ہے کہاس آ واز کا انظام اُن خوانین نے کیا ہوگا جو اگریزوں کے ساتھ سے اور خفیہ خفیہ خفیہ استے ہم قو موں سے بھی گفت شنید کرتے رہتے تھے۔ اغلب ہے وہ اہل بونیر میں سے بعض رؤساء کو ہم نوابنا بھے ہوں اس وجہ سے بونیر یوں نے وعد اُشخون کی خلاف ورزی کی اور اس پر پردہ ڈالنے کیلئے یہ آ واز خاصی کارگر ثابت ہوئی۔ اس سے قبائل کی بے ترتیبی روز روشن کی طرح آشکارا ہے۔

امیر المجاہدین مولانا عبداللہ، شہزادہ مبارک شاہ، سید شاہ محمود اوران کے ساتھی بدستورا ہے مور چوں میں ڈ نے رہے۔ اہل ہونیر نے اخوندصا حب کواں لئے گلی میں بھایا تھا کہ اگر ہزوادی جملہ میں سے ملکا تک کاراستہ ما نگتے تھا دراخوندصا حب گلی میں ہوں گے تو اُدھر کارخ نہ کریں گے اور ہونیر محفوظ رہے گا۔ مولانا عبداللہ نے اخوند صاحب کے پاس پیغام بھیجا: فرما ہے اب ہمارے لئے کیا تھم ہے؟ ہم تو اپناسرخداکی راہ میں قربان کرنے کیلئے ہندوستان سے آئے ہیں۔ وہمن کے مقابلے سے کیوں چیچے میں قربان کرنے کیلئے ہندوستان سے آئے ہیں۔ وہمن کے مقابلے سے کیوں چیچے ہیں۔ اگر آج ہٹ جا کیں تو کل خداکو کیا مندوکھا کیں گے۔خداکی راہ میں جان دے دیاسب سے بڑی نیکی ہے۔ سرکی کیا پرواہ ہے یہ بھی تو ای کا دیا ہوا ہے نا؟ اخوندصا حب نے جواب میں کہلا بھیجا کہ آپ بالکل درست فرماتے ہیں انیکن یہلوگ تھر برنہ سکے اور چند خوا نین کے سواسب بھاگ نکلے۔ پس آپ بھی ہمارے پاس آ جا کیں۔ چنانچہ مولانا اور خوا نین کے سواسب بھاگ نکلے۔ پس آپ بھی ہمارے پاس آ جا کیں۔ چنانچہ مولانا اور خوا نین کے سواسب بھاگ نکلے۔ پس آپ بھی ہمارے پاس آ جا کیں۔ چنانچہ مولانا اور خوا نین کے دامن کوہ میں مور پے قائم کر لیے اورا طمینان سے مقابلے پر جم گئے۔ (۱)

خانِ دِيرِاوراً نَكْريز

اس اثناء میں غرقن خال والی و مرینے بھی اخوندصاحب کے پاس پیغام بھیجا کہ میں ہمہتن تیار ہوں، استفسار کی ضرورت اس لئے پیش آئی کہ ویراورسوات میں مدت سے

⁽۱) غزائے بنیر (قلمی نبخہ)ص:۱۵۰-۱۵۵

لڑا کیں ہوتی رہی تھیں اور وائی ویرکواندیشہ تھا کہ شایدا خوندصا حب اس کی آمدکومناسب نہ سمجھیں۔ اس دوران ہیں اگریز کمشنر نے اخوندصا حب کولکھا کہ آپ کیوں اوگوں کو ناحق قت مہت ہوئی ہے، بیغریب لوگ توپ وتفنگ کا مقابلہ خبیں کرسکتے ۔ آپ درویش ہیں گوش نشینی اختیار فرما کیں اور ہم صرف ان مجاہدین کو ملکا خبیں کرسکتے ۔ آپ درویش ہیں گوش نشینی اختیار فرما کیں اور ہم صرف ان مجاہدین کو ملکا سے نکالنا چاہتے ہیں جن ہے آپ کو بھی ہمیشہ اختلاف رہا۔ اخوندصا حب نے اس کے جواب میں لکھوایا کہ بے شک آپ ہوئے ذور آور ہیں، لیکن آپ سے بھی بالاتر ایک عادل اور تو ی ہستی موجود ہے، جس نے اصحاب فیل کوابا بیلوں سے تباہ کرایا۔ فرعون کو غرق کیا ۔ نمر ودکو چھر سے ہلاک کرایا۔ بے شک میں فقیر ہوں لیکن آپ کیوں فقیروں پر بار بار چڑھائی کرتے ہیں، یے طرق میل آپ کی شان حکومت کے سراسر خلاف ہے۔

مختلف لژائياں

ساتھ ساتھ ناتھ نفیرعام کا سلسلہ جاری رہا یہاں تک کہ آزاد علاقے کا کوئی بھی قبیلہ میدان جنگ ہے باہر نہ رہا او رہا جوڑ کے بہادر بھی آپنچے۔ انہوں نے اور دوسر کے عازیوں نے پانچو یں چھٹی اور ساتو یں لڑائی میں عظیم الثان کارنا ہے انجام دیے۔ مثلاً میاں کئی کے ثناء اللہ اور خوا جعلی ، جندول کے عباس فال نے ایک لڑائی میں صرف اپنے ہم قوموں کی مدد سے انگریزوں کا مور چہ چھین لیا اور اتنا سامان غنیمت ہاتھ لگا کہ غازی اسے اٹھانہ سکے۔ ایک بہاور نے جوثی شجاعت سے کمٹل توپ کے منہ میں ٹھوں دیا۔ ایک لڑائی میں او ھیڑ عمر کی ایک خاتون کے کارنا ہے ویکھ کر بڑے بڑے بہادر آگھشت بدندال رہائی میں او ھیڑ عمر کی ایک خاتون کے کارنا ہے ویکھ کر بڑے بڑے بہادر آگھشت بدندال موڑی تھوڑی دیرے بعدا کی ایک حصہ فلست کھا کر بھاگا اور ایک ٹیلے پر چڑ ھے لگا ، لیکن تھوڑی تھوڑی دیرے بعدا کی ایک تھے جھے ہوتا گیا۔ چھا گریز بیابی درخوں کے تھوڑی تھوڑی دیرے بعدا کی ایک آئی گرکر کرختم ہوتا گیا۔ چھا گریز بیابی درخوں کے جھنڈ میں ایک بوے پھر کے بعدا کی ایک آئی گرکر کرختم ہوتا گیا۔ چھا گریز جول گرام نام ایک

مقام ہے جہاں کا باشندہ غلام می الدین بے خبری سے ان میں جاشائل ہوا، وہ سب اس سے لیٹ گئے ۔غلام می الدین نے بخرکا سہارا لے کر انہیں لاتوں سے بیچے ہٹادیا، پھر ساتھیوں کوآ واز دیکر بلایا، انہوں نے سیا ہیوں کوموت کے گھاٹ اتارا۔ سب سے زیادہ خون اس لؤائی میں بہا جے مولوی عبدالحق نے جنگ اسمبلہ کی چھٹی لڑائی قرار دیا ہے۔ غزن خاں وائی دیر بھی فوج لے کرآ گیا۔ لیکن عجیب بات یہ ہے کہ اس کی آمد عجابہ بن کوکوئی فائدہ نہ پہنچاسکی ، بلکہ وہ خود بددل ہوکر واپس جلا گیا۔ اس اثناء میں انگریزوں کے ھائی خوانین نے اہل ہونیرکو ہموار کرنے کا سلسلہ جاری رکھا۔ انگریز کمشنر اپنی چالوں میں کامیاب ہوا۔ قبائل آہتہ آہتہ رخصت ہونے گے اورخوداکا ہر کو بھی احساس ہوگیا کہ سے کہ وار کورا کی راستہیں رہا۔

اصل مصيبت

اصل مصیبت وہی تھی جس کا ذکر اِن صفحات میں بار بارآ چکاہے، بیعن قبائل غیر منظم سے ،ان میں جمیت وشجاعت کی کی نہتی ، لیکن وہ زیادہ دیر تک جم کر مقابلہ جاری ندر کھ سکتے تھے۔ اگر چہ مختلف خوانین نے بہتو شدغازیوں کے لئے لنگر جاری کردیے تھے۔ مثلا تھانہ کے خوانین محمر، حبیب، غلام ، اسلم ، میر محمر، عباس خاں ، آصف خاں ، مؤسند خاں ۔ مثلا تھانہ کے خوانین محمر، حبیب، غلام ، اسلم ، میر محمر، عباس خاں ، آصف خاں ، سمت خاں ، مونیار ہے خاں ، مہر اللہ خاں ، مقد خاں ، سعادت ، زرداد خاں ، ماسم خاں ، سمت خاں ، سونیار ہے خال ، مہر اللہ خاں ، قدرت علی شاہ وغیرہ ۔ لیکن وسیح منصوبہ بندی کے بغیرات خوانیز کے لئے کھانے پینے کامستقل انتظام مشکل تھا۔ پھران خوانین میں کوئی تظیمی صلاحیت نہتی ، اگر صلاحیت ہوتی تو وہ آسانی سے ایسابند وبست کر لیتے کہ پندرہ ہیں جزار کا لئکر مستقل موقع پر موجودر ہتا ۔ اسٹے لشکر کے خورد دنوش کا انتظام مشکل نہتھا ، یہ دخمن کوروک سکتا تھا اور قبائلیوں کے کاروبار میں کوئی خلل نہ پڑتا ۔ خاص طور پر قابلی غورا مربی

ہے کہ قبائل میں صحیح دینی تعلیم نہ تھی،جس کے لئے سیداحمد شہید نے کوشش شروع کی تھی، لیکن خود غرض خوانین نے اسے کامیاب نہ ہونے دیا۔

غرض وہ لوگ وقتی طور پر جوش میں آجاتے تے ادردیٹی صداؤں سے متاثر بھی ہوتے تھے لیکن ستفل دین اورقو می کاموں کیلئے جس تربیت کی ضرورت تھی وہ ان میں موجود نہ تھی۔ نتیجہ بید نکلا کہ قیمتی جانی قربانیوں کے باوجود وہ انگریزوں کی مزاحمت میں بعقد یہ آرز دکامیاب نہ ہو سکے اور انگریز بالکل ابتدائے کار میں مصالحت کی جوشرطیں پیش کررہے تھے اب اکثر لوگ انہیں کی طرف مائل ہونے گئے۔ جوخوا نین انگریزوں کے ساتھ تھے وہ بھی اپنے نقط کہ نگاہ کی اشاعت کرتے رہتے تھے۔ جن خوا نین نے انگریزوں سے ساتھ تھے وہ بھی اپنے نقط کہ نگاہ کی اشاعت کرتے رہتے تھے۔ جن خوا نین نے انگریزوں سے سے روپیہ لے رکھا تھا وہ بھی سرگرم کارتے ۔ تمام اسباب ومحرکات نے مل کر انگریزوں کے مقاصد کی تعمیل کا سامان فرا بھی کردیا۔

آمھواں باب:

مجامدین کی شانِ جانبازی

انتشاركي كيفيت

قبائل میں انتظاری سرسری کیفیت ہے ہے کہ اہل ہونیر کے متعلق ای وقت سے گوناگوں وسوے پیدا ہونے گئے تھے جب انہوں نے اسیلہ کوچھوڑ کر چملہ اور ہونیر کے درمیان درے میں مور پے لگائے تھے۔ اس کا مطلب ہے: انتظوں میں بیتھا کہ وہ اصل مقصد (چملہ سے انگریزوں کا گذرنا) سے دست بردار ہو بیکے ہیں یا کم از کم اس سے چنداں دلچی باتی نہیں رہی ، اور اب سرف بیچا ہے ہیں کہ انگریز ہونیر کارخ کریں تو ان سے لڑیں۔ وہی سب سے پہلے میدان جنگ میں اترے تھے۔ اسیلہ انہیں کی مکلیت تھا، باتی قبائل کی حیثیت ان کے معاونوں اور ہدردوں کی تھی۔ مالک ملکیت سے بردا ہوجا کی تو ان کے معاون کب تک قائم و استوار رہ سکتے ہیں۔ چنانچے صواتی اور دوسرے قبائل میں چھے بیتے گئے ،صرف جالم بین اور سادات سے انگری و آئی رہ گئے۔ اور دوسرے قبائل میں چھے بیتے گئے ،صرف جالم بین اور سادات سے انہ باتی رہ گئے۔

اميرالجابدين كافيصله

اب تنہا امیرالمجاہدین پر پیش قدمی کی ذمہ داری آپڑی ۔انہوں نے اپنی جانباز جماعت میں سے سوسو کی درجمعیتیں منتخب کیں۔ایک کاسپدسالار ناصرمحمودکو بنایا، دوسرے کا کلیم اللہ بن کو،اور تھم دیا کہ وہ راہ حق میں قربانی کاعملی نمونہ ان ہزاروں مسلمانوں کے سامنے چیش کریں جو باوجود کٹر تے تعداد میدان چھوڑ کرا لگ، ہورہے تھے۔واضح رہے کہ یہ شجاعت ومردائی کی نمائش نہ تھی ،اس کا معایہ بھی نہ تھا کہ دنیا پرواضح ہوجائے کہ جاہدین اپنے امیر کے تھم پرکس طرح جانیں وے دینے کیلئے تیار رہتے ہیں۔اصل غرض بہتی کہ شاید قربانی کا عملی نمونہ ان مسلمانوں ہیں اسلامی جانبازی کا جذبہ بیدار کرے جو تمانائیوں کی حیثیت میں پہاڑکی اونچی دیوار پر کھڑے تھے۔زبانی دعوت کا وقت نہ تھا عملی دعوت کا موقع آگیا تھا،امیر الجاہدین نے اس کا بھی انتظام کردیا۔امعیلہ کے میدان میں راوح کے کا موقع آگیا تھا،امیر الجاہدین نے اس کا بھی انتظام کردیا۔امعیلہ کے میدان میں راوح کے کا دوت کی خاک کے ذر دن ،کوہ گڑو کے بھروں اور قریبی جنگل کے درخوں کو گویائی کی قوت عطا کردیت تو وہی یہ خونجاں داستان احسن طریق پرسا سکتے ہیں۔

تقر مراور دعاء

امیرالحابہ ین نے ان دوسو جانباز دل کوانگریز دل کے بناہ توت کے مقابلے میں کھڑا کر کے تقریر کی کہ بھا ئیو! ہرمجاہد کاجسم زخوں سے لالہ زار بن جانے والا ہے، لیکن تم جانے ہوکہ ہمارے چمن کی یہ بہار ہمیشہ تازہ رہے گی۔ دشن جنگ کیلئے آیا ہے اس کے مقابلے سے ہمنا ہمارے لئے گناہ ہے۔ تمہارے جسموں کا ایک ایک کھڑا بھی کٹ جائے تو مقابلے سے ہمنا ہمارے لئے گناہ ہے نے زیبانہیں ہتم جس آزمائش میں پڑنے والے ہو پرواہ نہ کرو، دشمن کو چیٹے دکھانا ہمارے لئے زیبانہیں ہتم جس آزمائش میں پڑنے والے ہو اس کی ہولنا کیوں سے میں ناوا تف نہیں ہمکن تمہیں معلوم ہے کہ لو ہا جب تک آگ میں پڑھلے نہیں بن سکتے۔

اس کے بعد حضرت امیر نے بارگاو باری تعالی میں دعاء کی کہ البی تو جہانوں کا کارساز ہے تیرے ہاتھ میں کی پناہ نہیں ڈھونڈ تے ۔ زوراور توت تیرے ہاتھ میں ہے، ہم ناچیز سکین کیا کر سکتے ہیں۔ تو غریبوں اور بیکسوں کا مددگار ہے، تیرے سواکسی سے یاوری کی امید نہیں۔ اس جنگ میں صرف تیری مدددرکار ہے، بیجا بم مغیں باندھ کر کھڑے

ہو گئے ہیں، تو ہی اپنی رحت سے انہیں زور اور قوت بخش سکتا ہے۔ تو نے مومنوں کیلئے نفریب الوطن فریب الوطن فریب الوطن فریب الوطن میں ہوئے عطا کر، میں ال خریب الوطن میں سول کو تیرے حوالے کرتا ہوں۔ بیسب تیری راہ میں جان کی قربانی پیش کریں گے۔ اگر مکی فوج ہمار اساتھ دینے کے لئے تیار نہیں تو ہمیں کیا پر داہ ہے؟ اس کا رزار میں فقط تو ہمارا مددگارہے۔

پھر مجاہدین سے خطاب کرتے ہوئے کہا: بھائیو!اللہ تعالیٰ تمہارا مدد گار ہو ، وہی پاک ذات تمہارے لئے کافی ہے۔میری طرف سے سلام قبول کرویتم اس میدان میں رہ کروہ فرض بجالا ؤجو خدانے تمہارے ذہے عائد کر رکھاہے۔

تمام جاہدوں نے سلام کا جواب دیتے ہوئے کہا کداگرہم سے کوئی خطا سرزدہوئی ہوتو معاف فرماد یجئے۔ امیر نے بہ آ واز بلند کہا کہ میں نے خدا کیلئے ہر خطا معاف کردی تم بھی میری خطا وُں کو معاف کردو۔ یہ کہتے ہوئے باقی ساتھیوں کو لے کر امیر صاحب ذرا بلندی پر جا کر کھڑ ہے ہو گئے۔ ملکیوں میں ہے بھی کوئی میدان میں باتی ندر ہا، صرف دوسوکی یہ جماعت باتی رہ گئی جس کی حق آ کینی اس میدان میں آ فاب عالم تاب سے بودہ کردرخثال تھی۔

حشرآ فري منظر

مجاہدین اگر چددشن کے مقابلے پر بہت تھوڑ نے تھے تا ہم وہ سیسہ پلائی ہوئی و ہوار کی طرح استوار کھڑ ہے تھے۔ اگریزی فوجیس نمودار ہوئیں تو مجاہدین نے پہلے ایک باڑ ماری، پھر ہرطرف ہے تو پیں اور بندوقیں آگ اگلے گئیں۔ پورامیدان دھوئیں سے تیرہ وتار ہوگیا۔ مجاہدین نے کمواری علم کیں اور دشمن برثوث پڑے۔ ان کی مثال وہی تھی جیسے پردانے شع پرگرتے ہیں۔ مولوی عبدالحق لکھتے ہیں۔

| برد خویشتن را به میدان جنگ | نه ترسد مجامد نوپ و تفنگ |
|--------------------------------|--------------------------|
| فرامش كند شخق كار را | چو بلیل کند قصد گلزار را |
| بوزد شِ خویش دیوانه وار | چ بيند رڼې څخ پروانه زار |
| كه آكه نه از ذوق بروان | تو ديوانه گونيش ديواند |
| بکوشد به مال و سراندر جهاد (۱) | خدا بركرا ماية عقل داد |

بہ ہرحال مجاہدین نے راوحق میں اس طرح جانیں دیں کداخوندصاحب سوات کوتل پر بیٹھے اس منظر کی تاب ندلا سکے اور بے قرار کی سے ادھر اُدھر دوڑنے گئے۔ ہر ایک سے کہتے کہ جا دَاوران بہادروں کی ایداد کرو کبھی ہاتھا اُٹھا کردعاء کرتے ہے

اللي بده فتح اسلام را الله كبن غرق نصم بدانجام را

کیکن ان ہزاروں غیور مسلمانوں میں سے کسی کو بھی امتحان گاہ میں پہنچ کر جانبازی کا حوصلہ نہ ہوا، البتہ شنج ادہ مبارک شاہ اٹھا اور اپنے بھائی سید شاہ محمود سے بات چیت کر کے اپنے ملازموں کے ساتھ میدانِ جنگ میں چلا گیا۔ چونکہ سارا میدان دھوئیں کے تاریک بادلوں میں مستور تھا اس لئے بچھ پنہ نہ چلنا تھا کہ کس کا کیا حال ہوا۔ شنج اوہ سید محمود محفوظ رہے، البتہ مجابدین سب کے سب شہادت سے سر فراز ہوئے۔ افسوس کہ اس بے مثال قربانی سے دھوت جہادکومؤثر بنانے کی جوغرض پیش نظر تھی وہ پوری نہ ہوئی، تاہم مجاہدوں نے اپنے خون حیات سے امبیلہ کے میدان میں جونقش مرتم کیا تھا وہ زبانہ کی گردش سے نے اپنے خون حیات سے امبیلہ کے میدان میں جونقش مرتم کیا تھا وہ زبانہ کی گردش سے

⁽¹⁾ علاجرتوب اور بندوق سے بھی نہیں ڈرتا، وہ ہرخوف سے بے پرواہ ہو کرمیدان جنگ میں پنچا ہے۔ بلبل جب باخ کا تصدکرتی ہے وہ برخق میں کا گئی ہے۔ باغ کا تصدکرتی ہے وہ برخی بعول جاتی ہے۔ پروانٹی کا رخ روش دیکھا ہے تو اسے تو اسے دیوانہ ہا ہے تھے تعلما آگاہی میں۔ خواد بتا ہے وہ بوانہ ہے۔ اس لئے کہ پروانے کوش سے بھے تعلما آگاہی میں۔ خواجے عمل ایس سے مندائی میں جواد کے لئے کوشاں رہتا ہے۔

بمیشه کے لئے محفوظ ہو گیااورانشاء الله تا قیامت محفوظ رہے گا۔

انگریزوں سے بات چیت

خان دیراورائل بونیرہمت ہار کے تھے، باتی قبائل پر بھی افسردگی طاری ہو پھی تھی، باتی قبائل پر بھی افسردگی طاری ہو پھی تھی، البندا یہی بہتر سمجھا گیا کہ بات چیت سے معاملہ طے کرایا جائے۔ چنا نچہ تمام خوا نمین کی رائے اوراخوندصا حب کی رضا مندی سے بیقر ارپایا کہ انگریزوں کے پچھآ دی نمائندگانِ خوا نمین کے ساتھ ملکا جا ئیں اورا یک دو مکان جلا کروائیں آ جا ئیں۔ شہرادہ مبارک شاہ نے یہ کیفیت دیکھی تو صبر وضبط سے کام لیتے ہوئے پچھے نہا ، البتدا ہے بچاسید عمران شاہ کو جنہیں ملکا کا منتظم بنایا گیا تھا بوری کیفیت لکھ بھیجی کہ بال بچوں اور ضروری سامان کو محفوظ مقام پر پہنچا دیں۔ امیر المجاہدین نے مولوی فیاض علی کے نام اس مضمون کا خط ارسال کردیا۔

ملكا كاجلا ياجانا

مشہوریمی ہے کہ ملکا کے ایک دوم کان جلائے محتے ۔ انگریزوں کا بیان ہے کہ پوری آبادی کو برباد کیا گیا۔ سیدعبد البجارشاه فرماتے ہیں:

ملکا ہماری اپنی ملکیت ہے اورہم کو سیجے علم ہے کہ ایک گھریا چھیر بھی نہ جا یا گیا۔ جن اہل ہونیر نے انگریزوں کو فاتح بنانے بیں بزی امداد دی تھی وہی مانع ہوئے۔ وہ کہتے تھے کہ ملکا کا جانا ہماری ذلت ہے۔ ایک کوشمے کے شہتے کو آگ سے جھلنے کی کوشش کی گئی اُسے بچالیا گیا اور انگریزی فوج ملکا تک جاکر واپس آگئی۔

مجامدين كاانتظام

پخرزئی قوم کا ایک ملک باشم علی خال اخوند صاحب سوات کا تخلص مرید تھا۔

صاحب موصوف نے امیر المجاہدین کا ہاتھ ہاشم علی خال کے ہاتھ میں دے کرفر مایا بدیری المانت ہے، اس کی خیانت کومیری خیانت سمجھنا۔

چنانچہ ہاشم علی خاں نے پرگنہ پھر زئی میں بدہال کی طرف گلونو بوڑی (کشت کل یا پھولوں کا کھیت) نام ایک گاؤں مجاہدین کیلئے وقف کردیا، جہاں انہوں نے کئی سال گزارے۔زخمی مجاہدین کوبھی وہیں پہنچانے کا انتظام کردیا گیا۔

مخنج شهيدال

شہداءکومیدانِ جنگ ہی کے ایک گوشے میں دنن کیا گیا۔ امبیلہ گاؤں کے پیچھے چیڑ کے درختوں کا ایک جھنڈ ہے اُسی جگہ مجاہدین کا قبرستان ہے۔ کہتے ہیں کہ انجیر کے درخت کے پاس ایک بوی ڈھیری ہے، جسے تنج شہیداں سجھنا چاہئے۔

| دو لک آفریں بہ ہر مرد یاد | در آل دائره سر مجابد نهاد |
|------------------------------|----------------------------|
| سوئے قبلہ می شد بہ حکم مجید | چو قبلہ نما بد سر ہر شہید |
| به خون شهیدال چو گلنار شد(۱) | تو گوئی کہ آل کشت گلزار شد |

جس مقام پر اخوند صاحب سوات کا قیام تھا وہاں ایک بچی مسجد بنادی گئی تھی۔ موجودہ حکومت سوات نے اس جگدایک پختہ اور شاندار مبجد تعمیر کرادی ہے۔

امبیلہ کی جنگ میں کم وہیش چارسومجاہدین جاں بحق ہوئے۔ان میں دوسووہ تھے جنہوں نے ناصر محمد اور کلیم الدین کی سالاری میں تنہا انگریزی توت کا مقابلہ کیا۔سید عبدالمجبارشاہ حقانوی نے ان کی کیفیت بیان کرتے ہوئے لکھاہے کہ بیلوگ صابروشا کر

(۱) مجاہدوں نے اس میدان میں اپنے سرقر بان کردیے۔ ہرصا حب عوصلہ پردونا کھ بارآ فریں ، ہرشہید کاسر قبلے کا پید وے دہاتھا۔ شہادت کے بعد خدا کے تھم سے ان سب کے سرقبلد رو ہو گئے۔ وہ میدان گلز اربن گیا ،شہیدوں کے خون نے اُسے انا رکے چھولوں جیسا بنادیا۔ 779

برونت ذكر خدا ملى مشغول رہتے تھے۔ان كے بہرے دارا يك دوسرے كوآ واز دية تو ايسے انداز ميں 'سبحان الله ''كافعره بلندكرتے كہ جو يفعره سنتااس كادل ترب اٹھتا۔ دوسرا پہرے دارجواب ميں كہتا' المحمد الله ''تيسرا پكارتا' يو حمكم الله ''چوتھا جواب ديتا' بهديكم الله''۔

یہ جماعت ذات باری تعالی کے عاشقوں کی جماعت تھی۔ان کی سب سے بڑی آرزو پیتھی کہ خداکی راہ میں قربان ہوجا نیں۔اگر کسی کومیدانِ جنگ میں شہادت کی عزت نہائی تو دہ اے اپنی کم نصیبی سمجھتا۔ یہ قتی جوش کا معاملہ نہ تھا بلکہ إِنَّ اللّٰهِ بْنُ الْمَنُو الْنُمُ السنَفَ الْمُوا کے مطابق انہوں نے اسی دھن اور شوق میں اپنی عمریں گزار دیں اور ہر قتم کے مصائب بہ طیب خاطر قبول کر لیے۔مثال غربت،مسافرت، بھوک، سردی، گری، زمین پرسونا، ضروریات زندگی ہے محروم رہنا وغیرہ۔

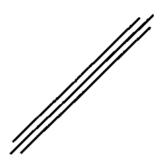
لشكرون كامعامله

اندازہ کیا گیا ہے کہ چیمبرلین کے ساتھ کل سات ہزار فوج تھی ،لیکن مقامی بیانات سے واضح ہوتا ہے کہ دس ہزار کیلئے حسن ابدال کے پاس کیمپ تیار کیا تھا۔انگریزوں کے حامی خوانین وقبائل کے لئنگر اُن کے علاوہ تھے۔ ہنٹر نے ایک نوٹ میں قبائل لئنگر کی تعداد بچاس اور ساٹھ ہزار کے درمیان بتائی ہے۔سیدعبد الجبارشاہ ذاتی معلومات کی بنا می ہنٹر کے تخینے کو ناورست قرار ویتے ہیں۔

ذیل میں وہ نقشہ درج کیاجاتا ہے جس سے ہنٹر اور سیدعبد البجبار شاہ کا اندازہ واضح ہوتا ہے۔

| | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | · | |
|-------------------------|---------------------------------------|----------------|----------|
| سيدعبدالجبارشاه رصحة | ہنٹر کا تخمینہ | نامقبيله | نمبرثنار |
| كالمحيح تخيينه | | | |
| تین ہزار | ووبزار | حسنزئي | 1 |
| سواہزار | ایک ہزار | اکازئی | ۲ |
| تين ہزار | جار ہزار | مدّاخيل | r |
| ל גלים הקאנ | و بره برار | امازگی | ۴ |
| پانچ ہزار | <u>چ</u> ار ہزار | جدون | ۵ |
| اڑھائی ہزار | دو پرار | خدّ وخيل | ч |
| عاربزار | چھ ہزار | چزز کی مع موسی | 4 |
| <u></u> | | خيل وغيره | |
| باره بزار | بارهبرار | قبائل بونير | ۸ |
| تین ہزار | تنين ہزار | ابل باجوز | 9 |
| تين ہزار | دوبزار | رانی زئی | 1+ |
| دس بزار | چھ ہزار | ائل دِي | 11 |
| سوله بزار | دس بزار | قبائل صوات | ır |
| 4610 × | | ۵۳۵۰۰ | ميزان |

برصغير مندمين تحريك احيائے وين اور سرفر وشانه جدوجهد كى كمل سرگذشت



حصہ پنجم

ہندوستان کےاندر مقدےاور قیدیں



يبلاباب:

عظیم آباد کے نین خاندان

تين خاندان

عظیم آباد کے تین خاندان تھے جن کے زیادہ تر ارکان سید احد شہید سے وابستہ ہوئے ،اوران اصحاب نے وابستگی کے تقاضوں کو جس للہیت اوراخلاص سے پورا کیا اور جیسی عظیم الثان قربانیوں کی توفیق بارگاوالہی سے پائی آسکی کوئی مثال ہمارے دَورِزوال کی تاریخ میں نہیں ملتی ۔ تینوں خاندانوں کوعظیم آباد میں اوّل درجے کی امیری کارتبہ حاصل تھا، وہ سب کے سب پشتوں سے انتہائی فارغ البالی اورراحت و آسائش کی زندگیاں بسر کررہ ہے تھے،لیکن سیدصاحب سے وابستگی کے بعدان سب کے طرز حیات بیں بنیادی تغیر پیدا ہوگیا اور انہوں نے اپنا سب کے ھالندگی راہ میں جہاد کیلئے وقف کردیا۔ ان کی کیفیت ذیل میں درج ہے:

1- شاہ محمد حسین بمو ہید کا خاندان جو حضرت عباس عمر رسول الله صلی الله علیہ وہلم کی نسل ہے تھے، ان کے تھوڑ ہے سے حالات ' جماعت بجابدین' میں درج ہو پہلے ہیں۔

9- مولوی اللی بخش کا خاندان جس کا سلسلہ نسب حضرت رسول اکرم صلی الله علیہ وسلم کے پچیرے بھائی حضرت جعفر طیار سے ماتا ہے۔ اس بزرگ کے فرزندوں نے ہندوستان میں دعوت و تنظیم جہاد اور فراہمی کر رومجابدین کے اہم کام جس اعلی پیانے پر انجام دیے دہ اپنی مثال آپ ہیں۔ بعض افراد میدان جہاد کی جانفشانیوں میں بھی حصہ دار ہے۔

۳- مولوی فتح علی کا خاندان جن کاسلسلۂ نسب حضرت زبیر عم رسول اکرم صلی الله علیہ وسلم سے ملتا ہے، مولا ناولا بت علی اور مولا نا عنایت علی انہیں کے فرزند تھے، جن کے مجاہدانہ کارنا مے گذشتہ صفحات میں پیش کیے جا چکے ہیں۔امیر المجاہدین مولا نا عبداللہ بھی اسی خاندان سے تھے اور جماعت کے مجاہدات کی باگ ڈور مولا نا ولا بت علی کے وقت سے زیادہ تر اسی خاندان کے ہاتھ میں رہی۔اس کے جو افراد میدانِ جنگ میں شریک نہ وسکے وہ اپنے طن میں عظیم کا کام انجام دیتے رہے۔

انسانوں کے بھیس میں فرشتے

آپ میدانِ جنگ کی سرگرمیوں کا تھوڑا سا حال ملاحظہ فرما چکے ہیں، اب یہ د یکھنے کے خطیمی سرگرمیوں کے سلسلے میں کارفر ماؤں کو کن کن مشکلات ومصائب سے سابقہ پڑا۔
اس راستے کی صبر آزمائیاں شدت ووسعت میں میدانِ جنگ کی صبر آزمائیوں سے کم نہ خصیں۔ بلکہ میں کہوں گا کہ آتش باری اور شمشیر زنی کی گرمی ہنگامہ میں جان دیدینا اتنا مشکل نہیں جتنا مصائب لا متنا ہی ہے جوم میں گھل گھل کراور کڑھ کڑھ کرزندگی کے اوقات گزارنا مشکل ہے۔ ان مجابدوں کے خاندان، گھر باراور جائیدادیں جاہ ہوئیں، انہوں نے جیلوں کی تاریک کو گھر یوں اورا ٹھمان کی جھیا تک وحشت نا کیوں میں دن بسر کیے، ایک دوسر سے سے دائمی مفارقت بھی تبول کرلی، یہاں تک کہ چینے می ہمائیوں کو عالم غربت میں قبروں کی کیجائی بھی نفید بنہ ہوئی، تاہم ان کی جمین عزبیت پر بھی شکن نہ پڑی اور میں قبروں کی کیجائی بھی نفید بنہ ہوئی، تاہم ان کی جمین عزبیت پر بھی شکن نہ پڑی اور ان کے بائے استقامت میں بھی کرزش نہ آئی۔ لاریب وہ انسانوں کی شکل میں فرشتے سے جو ہماری بگڑی ہوئی تقدیر بنا نے کے سلسلے میں ایک صحیح عملی نمونہ پیش کرنے کی غرض سے اس دنیا میں آگئے تھے۔

بيمثال اخلاص

بہت کم خاندان ہیں جنہیں بیک وفت وعوت و تنظیم جہاد اوراجرائے جہاد کی سعادت نصیب ہوئی۔سیدصاحب دونوں میدانوں کے بگانہ شہسوار تھے۔عظیم آباد کے ان تین فاندانوں نے کم وبیش ایک صدی تک دونوں کام سنجالے رکھ اورالی قربانیاں خوش دلی ہے کیں جن کا تصور بھی ہمارے عہد میں قلوب برلرزہ طاری کردیے كے لئے كافى ہے۔ پھر يةربانياں اس حالت ميں كيس، جب ان كيلي كسى بھى حلقے سے صدائے حسین کی امید نہ ہوسکتی تھی، بلکہ ہر فرد حکومت انگلفیہ کے خلاف جہاد کا نام سنتے ہی منزلوں دور بھا گیا تھا، اور بجاہدین سے برائے تام تعلق کیلے بھی تیار نہ تھا۔ البذا ان بزرگوں کے خلوص اور للہیت میں سے کلام ہوسکتا ہے جنہوں نے جان بر کھیل کر گھٹا ٹوپ اندهیرے میں امید کے چراغ روثن کیے۔اسلامیت کی بحالی او رملک کی آزادی کے لئے جدوجہد کے ہزاروں واعی جارے زیانے میں پیدا ہو گئے اوران کی ستائش میں اہل قلم نے سکروں صفحات سیاہ کیے الیکن ان میں سے کتنے ہیں جوان بزرگوں کی برابری کادم بھر سکیں، جنکے ذکر ہے ذیل کے صفحات زینت یار ہے ہیں۔ پہلے ان میں ہے بعض کے حالات اختصارا من کیجئے جنہیں مختلف دائروں میں کارفر مائی یا کارکردگ کی سعادت نعيب ہوئی۔

مولا نااحمه الله

آپ مولوی اللی بخش جعفری کے خلف اکبر تھے۔۱۲۲۳ھ (۱۸۰۸ء) میں پیدا ہوئے۔ والد نے احمد بخش نام رکھا تھا،سیدصاحب سے وابستگی پیدا ہوئی تو انہوں نے احمد اللّٰدنام تجویز فر مایا۔ دینی علوم دوسرے اسا تذہ کے علاوہ مولا ناولا بت علی سے حاصل کیے، بہت ذہین ادر ذکی تھے،فہم وفراست میں دیگانہ مانے جاتے تھے، وقت کے رکیس ہونے کے باوجود بہت ملیم الطبع منگسر المز اج اورصاحب مروت تھے۔ آپ کی شادی شاہ محمد حسین نمو ہید کی بڑی صاحبز ادی سے ہوئی تھی۔ حکام کی نظروں میں بھی بہت معزز تھے۔ ۱۸۵۷ء کے ہنگا ہے میں ولیم ٹیلر کمشنر عظیم آباد نے انہیں شاہ محمد حسین اور مولوی واعظ الحق کوتقر یبا تین مہینے کے لئے سرکٹ ہاؤس میں نظر بندر کھا تھا۔ حکامِ بالاٹیلر کی اسے مشنری سے مشعنی ہونا پڑا۔ چنا نچاس نے عظیم اس حرکت پراتنے ناراض ہوئے کہ اسے کمشنری سے مشعنی ہونا پڑا۔ چنا نچاس نے عظیم آباد ہی میں وکالت شروع کردی۔

مولا نااحمدالله کی گرفتاری اور سزایا بی میں ٹیلر کی دیرینه عداوت کو بھی خاص وخل تھا۔
مولا ناکوا گرچہ خاندانی اوراعتقادی روابط کی بنا پرتح یک مجاہدین سے برابر ولچیسی رہی،
لیکن تظیم کا عملی کام انہوں نے صرف اس وقت کیا جب ان کے بھائی مولا نا کی علی گرفتار
ہو گئے اور بیددت چند مینے سے زیادہ نہ تھی، تا ہم حکومت نے انہیں گرفتار کیا اور جھوٹی شہادتوں کی بنا پر پہلے ضبطی جائیداد اور بھائی کی سزادی، پھر آخری سزاجس دوام بہ عبور دریا ہے شور میں بدل دی۔ تفصیلات آگے آئیں گی۔

مولا نافياض على

مولانا احمد الله کے جھوٹے بھائی تھے، انہیں سے دری کتابیں پڑھیں ۔مولانا ولایت علی سے حدیث کی سندلی، ۱۸۳۱ھ بیں مولانا کے ساتھ سرحد گئے، جنگ ؤ ب کے بعد انہیں کے ساتھ واپس آئے، فن سبہ گری بیں بھی مہارت تامہ حاصل تھی ۔ دوبارہ سرحد چلے گئے۔ جنگ امبیلہ کے وقت میں موجود تھے، غالبًا گلونو بوڑی میں وفات پائی۔ آپ کی شادی شاہ محمد سین تمو ہیہ کی دوسری صاحبزادی سے ہوئی تھی، اولادکوئی نہ ہوئی، آپ کی شادی شاہ محمد سین تمو ہیہ کی دوسری صاحبزادی سے ہوئی تھی، اولادکوئی نہ ہوئی، اولادکوئی نہ ہوئی، اولادکوئی نہ ہوئی، این بحولی سے بھائی مولانا احمد اللہ کے فرزند مولانا اشرف علی کو متنی کرئیا تھا، ان کے حالات الگ بیان ہوں گے۔

مولا ناليجيٰ على

مولا نااحراللہ کے تیسر ہے بھائی تھے اور ان سے دس برس چھوٹے تھے۔ علم وضل، زہد و تقوی اورایٹار و قربانی میں انہیں خاندان کاگل سرسبد سجھنا چاہیے۔ وہ خاصی مدت تک سرحد میں بھی رہے، واپس آئے تو وعوت و تظیم جہاد کا پوراا نظام اپنے ہاتھ میں لے لیا اور آزادی کے آخری سانس تک اس کام کیلئے وقف رہے۔ انبالہ کے مقدے میں جے انگریزوں نے وہا بیول کا سب سے سے انگریزوں نے وہا بیول کا سب سے سے انگریزوں نے وہا بیول کا سب سے برا مقدمہ قرار دیا تھا، مولا نا یکی علی سب سے سے برا مقدمہ قرار دیا تھا، مولا نا یکی علی سب سے سے برا مقدمہ قرار دیا تھا، مولا نا یکی علی سب سے سے برا مقدمہ قرار دیا تھا، مولا نا یکی علی سب سے سے دوام برعبور دریا ہوئی پھر آخری سر اصبی دوام برعبور دریا ہے شور میں تبدیل کردی گئی۔

متفرق اصحاب

اس خاندان کے بعض دوسر ہے اصحاب کی کیفیت ذیل میں درج ہے: ۱- مولوی اکبرعلی: بیمولا ٹا احمد اللہ کے سب سے چھوٹے بھائی تھے۔ مجاہدین کی اس جماعت میں شامل تھے جوسید احمد شہید کے ہمراہ سب سے پہلے جہاد کے لئے گئی تھی۔ سرحد میں بعارضۂ ہیضہ و بائی وفات یائی۔

۲- حکیم عبدالحمید: مولانا احمد الله کے فرزندار جمند تھے۔ یہ مولانا کی سزایا لی اور خطیم عبدالحمید: مولانا احمد الله کے فرزندار جمند تھے۔ یہ مولانا کی سزایا لی اور خطی کے اور نئے سرے سے زندگی شروع کی علم وفضل میں کمال حاصل تھا۔ مولانا سیدسلیمان ندوی آئیس'' خاقائی ُ ہند'' کہا کرتے تھے۔ طب میں وہ ممتاز ورجہ حاصل کیا کہ امراء وراجگان بہ منت وخوشامد انہیں بلایا کرتے تھے۔

سولوی عبدالقد برعرف اشرف علی: یه بهی مولانا احد الله کفرزند تھے۔

چونکہ مولا نافیاض علی نے انہیں متنی کرلیا تھااس کئے ان کے ساتھ سرحد چلے گئے۔ واپس آکر نام بدلا اور مختلف فنون حاصل کیے۔ بنارس کالج میں ریاضی کے اسٹینٹ پروفیسر رہے۔ '' اودھا خبار'' لکھنو کی ایڈیٹری بھی کی ، کچھ مدت بہاول پور میں ہیڈ ماسٹر رہے۔ پھر جونا گڑھیں پرنسل مقرر ہوئے ، انجام کارباندہ کے اسکول میں ہیڈ ماسٹری کر کی تھی۔ سابقہ سرگرم سیاسی زندگی مدت العمر ان کیلئے پریشانی کاباعث بنی رہی۔ ۲۸ راکتو برسافہ مرکزم سیاسی زندگی مدت العمر ان کیلئے پریشانی کاباعث بنی رہی۔ ۲۸ راکتو بر مالاحد

۳۷- مولانا محرعیسی عرف امجدعلی: بیمولانا یجی علی کے فرزند تھے۔ابتدائی زندگی سرحدی مجاہدات میں گذری۔واپس آکرنام بدلا اورعلوم میں وہ کمال حاصل کیا کہ اپنے عہد کے میگانہ علاء میں شار ہونے گئے۔علی گڑھ کالج اوراللہ آباد کالج میں عربی کے پروفیسر دے۔ حکومت نے مثم العلماء کا خطاب دیا۔ ۲۲ رنومبر ۱۹۲۱ء (۲۱ رربیخ الاول ۱۳۲۰ه) کوانقال کیا۔

0- مولا نامحر یوسف رنجوری: مولانا یجی علی کے چھوٹے فرزند تھے۔حصولِ علم کے بعد کلکتہ بورڈ آف ایگرام زکے چیف مولوی مقرر ہوئے۔آئکھیں خراب ہوجانے کے باوجود کلکتہ یو نیورٹی نے آپ کی علیحدگی منظور نہ کی۔ ارجون ۱۹۲۳ء (۲۲رشوال ۱۳۳۱ھ) کو بہوت ظہرا تقال کیا۔ انہیں خان بہادر اورشمس العلماء کے خطابات حاصل تھے۔

۲ - مولانا عبدالرحيم: مولوی فتح علی کے خاندان میں سے اکثر اصحاب کے حالات بیان کیے جائے ہیں، یہاں صرف اتنا بناہ ینا چاہئے کہ مولانا ولایت علی کے ایک معالی مولوی طالب علی تھے جو مجاہدین کی پہلی جماعت میں سیدصا حب کے ساتھ سرصد سے اور چنگئی میں وفات یا گی۔ایک بھائی مولانا فرحت حسین تھے جنہیں بعض بیانات

میں فرحت علی کہا گیا۔ یہ ۱۳۷۷ھ یا ۱۳۷۵ھ میں فوت ہوئے۔ ان کے فرزند مولا تا عبدالرجیم بھی انبالہ والے مقد مے کے بوئے ملزموں میں تھے۔ یہ ۱۳۵۳ھ (۱۳۵۳ فومبر ۱۸۳۷ء) کو پیدا ہوئے۔ وطن میں تعلیم پائی کم وبیش اٹھارہ سال جزائر انڈیان میں گزارے جن کی تفصیل آئندہ بیان ہوگی۔ واپس آکر جج کیا اور ۲۲ راگست ۱۹۲۳ء (۱۰رزی الحجر ۱۳۲۴ھ) کو بانوے برس کی عمر میں فوت ہوئے۔

ے۔ حافظ عبدالمجید: مولانا عنایت علی کے اکلوتے فرزند تھے، پوری زندگی سرحد میں گزاری ادروہیں فوت ہوئے۔

دوسراباب:

مقدمهُ انباله (۱)

دعوت وتبليغ

ہندوستان کے مختلف حصول میں سید احمد شہید کے زمانے سے دعوت وتبلیغ کا کام جاری تھا۔جس میں اصلاحِ عقا کہ واعمال کےعلاوہ پیلقین بھی کی جاتی تھی کہ دوسرے فرائض وارکان کےساتھ جہاد^{بھ}ی اسلام کاایک بہت بڑارکن ہے۔جہاد کیلئے **آ وی** بھی فراہم کیے جاتے تھے اور روپی بھی۔ جب پنجاب میں *سکھو*ں کی عملداری ختم ہوئی اور ان کی جگہ انگریز آ گئے تو جماعت ِمجاہدین کا تصادم براہِ راست ان سے ہوا، اور ہندوستان کے اندر کام کرنے والوں کیلئے اک گونہ نازک صورت ِ حال پیدا ہوگئ ۔ مجھے تفصیلی کیفیت معلوم نہ ہو سکی لیکن خیال ہے وہ سمجھتے ہوں گے کہ دعوت وتہبیہ ُجہا داہم اصلاحی فرائض میں داخل ہےاور جب تک جس طوراس فرض کوانجام دینے کاموقع ملے تامل نہ ہونا جا ہے۔ ممکن ہے بعض داعیوں کا تاثر یہ ہو کہ مجاہدین ہندوستان میں نہیں بلکہ آزاد علاقے میں ريح بين اورانهين حسب استطاعت رقمين بهنجانا ياشيفت گان جهاد كيلئے سرحد يبنجنے كا انتظام کردیناجرمنہیں(۱)انگریزوں نے ابتداء میں اس طرف چنداں توجہ نہ کی۔ جب ویکھا كه مجامدين خاصا خطره بن سكتے ہيں تو كاوش شروع ہو أن كه انہيں الدادكہاں سے متى ہے؟ چوں کہ سارا نظام! بتداء ہے خاص مصلحتوں کی بنا پر خفیہ رکھا گیا تھا اس لئے کسی کو

⁽¹⁾ لبعض مقد مات میں ماخوذ مجاہدین ہے وکیلوں نے دفاع میں یمی طریق استدلال افقیار کیا تھاا درسر کاری دعوے کو از رویئے تعزیرات بے بنیاد قرار دیا تھا۔

صحیح سراغ نیل سکا اور بلا ثبوت دارو گیر کا ہنگامہ برپا کردینے کیلئے کوئی وجہ جواز نیھی، اگرچہ بعد میں ذکی الحس انگریز افسروں نے اسے ایک ہیبت انگیز سلسلے کی شکل دیدی۔

غر"نخال

ہوتی مردان کے دیہ کمال زئی کا ایک پٹھان غرق خان (ابن جدن خال) سوار
پولیس میں سار جنٹ تھا اور کرنال کے ضلع میں اسے مقرر کیا گیا تھا۔ مئی ۱۸ ۲۳ء میں اسے
چار آ دی پیدل جاتے ہوئے ملے جن کی وضع قطع درویشوں کی تھی ، ان کے رنگ زیادہ
سانو لے تھے اور ڈاڑھیاں چھوٹی چھوٹی ۔ غرق خان خال نے سمجھا کہ ہونہ ہویہ بنگالی ہیں۔
اسکا اپنا بیان ہے کہ میں نے ہوتی مردان اور شیخ جانا میں ایسے متعدد آ وی دیکھے تھے۔ (۱)

د نخرت خال نے پوچھان کہاں سے آئے ہو' انہوں نے بتایا' مکا سے
ادراب ہم تھا بیر منٹی محمد جعفر سے ملیں سے ، پھر آئے تکل جائیں سے ، مہینے دو
مینے کے بعدلوٹیں سے۔''

انہوں نے غزن خاں ہے کہا کہتم بھی نوکری چھوڑ دوا ور ہمارے ساتھ چلنے کیلئے تیار ہوجاؤ، وہاں بہت بڑی جنگ ہونے والی ہے۔

غزن خال انہیں گرفتار کر کے پائی پت کے تھانے میں لے گیااور ایک رپورٹ تیار
کی جس میں بنایا گیا تھا کہ بدلوگ حکومت کے دشمن ہیں۔ وہ ہر چند کہتے رہے کہ ہمیں
چھوڑ دو۔ اگر روپیہ چاہتے ہوتو ہم تھائیسر سے دلادیں گے کیکن غزن خال نے انہیں نہ
چھوڑ ا۔ جب وہ مجسٹریٹ کے سامنے چیش ہوئے تو عدم ِ ثبوت کی بنا پر انہیں رہا کردیا
گیا۔ (۲) بھینا ان کے خلاف کوئی ثبوت چیش نہ کیا جا سکتا تھا اور چیش نہ ہوا۔ صرف ایک

⁽۱) روئیداد مقدمها نباله (انگریزی)ص ۱۳۳۳

⁽۲) مقدمه مسراسلین اسشنت کمشر کے رو برو پیش جواتھا۔ صاحب موصوف نے ۱۸ ارمی ۱۸ مو کو کم لکھا: "مچھان بین کے بعدواضح ہوا کہ بیرچار آ دی معمولی مسافر ہیں، البذا أنسیس رہا کرنے کا تھم دیاجا تا ہے۔"

غزن خال کابیان تھا کہ وہ ملکا ہے آئے ہیں اور دومہینے کے بعدوالیں جا کیں گے ، تنہااس بیان پرانیس سزاندی جاسکتی تھی۔

غرتن كاكيبنه

غڑن خاں کوان کی رہائی پر بخت غصر آیا۔ دل میں کینے اور انتقام کی آگ بھڑک اٹھی اور دہ مسلمانوں کے اس دینی نظام کو آگریزوں کی خاطر برباد کرنے کیلئے تیار ہوگیا، جو بیچارگی کی حالت میں ہزار محنوں اور مشقوں سے بنایا گیاتھا۔ چنانچہ اس نے فور آ اپنے بیٹے فیروز کو جوجزہ خال میں مقیم تھالکھا:

تم ملکا چلے جاؤ وہاں ایک شخص اخوند زادہ عبداللدر بتاہے، اس کی مسجد میں جا کر تھم جا واوراس کے ذریعے سے بوری معلومات حاصل کروکہ جماعت مجاہدین کو کہاں کہاں سے مدولتی ہے؟

غرن کا اپنابیان ہے کہ میر ابیٹا فیروز میر ہے تھم کے مطابق ملکا گیا اور دس روز وہاں تھم رار ہا۔اس زمانے میں بنگالی ستھانہ پر پیش قدمی کی تیاری کررہے ہتھے۔ فیروز اُن کے ساتھ ستھانہ اور کھیل گیا۔ پوری معلومات حاصل کر کے وہاں سے اپنے وطن حمزہ خال لوٹا۔(1)

غرض فیروز یہ اطلاع لایا کہ قرابینوں ، رائفلوں اور مجاہدین کو بین کے کا فرصہ وار محمد جعفر تھائیسری ہے۔ بجاہدین امازئی کے مملکوں مددخاں اور موزہ خال کے پاس بینج تھے تو نخر یہ جتایا کرتے تھے کہ مندوستان میں بہت بڑے بڑے آ دمی ہمارے دوست ہیں ، اس سلسلے میں محمد جعفر کانام لیا کرتے تھے جسے وہاں خلیفہ کہاجاتا تھا۔ گویا وہ کوئی بہت بڑا (۱) روئیداو مقدمہ انبالہ (انگریزی) میں ۱۳۵۔ غزن کا شارہ بنا ہراس یورش کی طرف ہے جوشنرادہ مبارک شاہ نے کمیل پرئ تھی۔ اس بورش میں باہدین یقینا شال تھ لیکن ان کی تعداد مقال کھی کا کا مراس کے مقالے میں بہت کمی میں بہت کمی میں بہت کمی میں بہت کمی ہوئی میں بہت کمی۔

نوّاب تفا_(۱)

یوں غربی خاں اوراس کے بیٹے کی رپورٹ نے پہلی مرتبہ مجاہدین کی تنظیم کاراز فاش کیا۔ سوار پولیس کے افسران کپتان موز کی (MOSELY) نے رپورٹ انسپکڑ جزل پولیس کے پاس بھیجی اور ضلع انبالہ کے سپرنٹنڈنٹ بولیس کپتان پارسنز (Parsons) کواس سلسلے میں مزید تحقیقات کا تھم ملا۔

مولوي محمر جعفر كابيان

مولوی محرجعفر تھائیسری نے اپنی کتاب'' کالا پانی'' کے آغاز میں جو کچھ بیان کیا ہے۔ اسے متر شح ہوتا ہے کہ یہ واقعہ غالبًا جنگ اسبیلہ کے بعد پیش آیا، حالانکہ جنگ اسبیلہ اس وقت شروع بھی نہ ہوئی تھی اور غزین خال کی انتقامی جدو جبد کا آغاز جنگ جھٹر نے ہے کم وبیش پانچ مہینے پہلے ہو چکا تھا۔

مولوی صاحب فرماتے ہیں کہ غزت خال نے ۱۲۸ جمادی الآخر ۱۲۸ مرادی الآخر ۱۲۸ مرادی الآخر ۱۲۸ مرادی الآخر ۱۲۸ مرادی الرابیہ واقف ہوکر اور الدیمی وقت میں اپنی دنیوی بھلائی کاموقع جان کرایک بردی لمی چوڑی اور تفصیلی کیفیت فیر خواہانہ بحضور صاحب ڈپٹی کمشز کرنال کے حاضر ہوکر میں تجری کی کہ یہ جنگ جو ہندوستانی مجاہدین کے ساتھ سرحد پر ہور ہی ہے،ان لوگوں کو محرج عفر نم بردار تھائیسری روپیاور آ دمیوں سے مدودیتا ہے۔(۲)

ظاہر ہے کہ کیفیت جھوٹی نہتھی ،اگر چیفڑن خاں نے وہ اپنی دنیوی بھلائی کے لئے پیش کی تھی۔

غزن خال میر کیفیت پیش کر کے ڈپٹی کمشنر کے بنگلے سے نکلا اور مولوی محمد جعفر کے

⁽۱) روئيدادمقدمدانبالد (أكريزي) من ١٩٥٥-

⁽٢) كالاياني المعروف تواريخ عجيب ص: ٢

ایک دوست نے اس راز سے آگاہ ہوکراپنے ایک ملازم سنی قاداسے بہطور افسوس ذکر کردیا۔ قادامولوی صاحب کا ہمسامیہ اور خیرخواہ تھا، دہ انہیں بروقت آگاہ کرنے کی غرض سے فوراً تھا عیر روانہ ہوگیا۔ چول کہ رات ہوگئ تھی اور مولوی صاحب کے گھر کے دروازے بند تھ لہذا اس نے سوچا کہ منج کو خبر کردول گا۔ عین ای رات کپتان پارسنز پولیس کی خاصی بردی جمعیت کیکر تلاثی کیلئے مولوی صاحب کے مکان پر پہنچ گیا۔ گویا قادا نے جس غرض سے سفر کی مشقت اٹھائی تھی وہ پوری نہ ہوئی۔ تج ہے مقدرات کوکوئی ٹال نہیں سکتا۔ (۱)

تلاشى

کپتان پارسز نے مولوی صاحب کے مکان کو چاروں طرف سے گھر لیا۔ پھر انہیں جگا کر خانہ تلاش کے دارنٹ دکھائے۔ سوئے اتفاق سے مولوی صاحب نے چھ گھنے پیشتر جماعت بجابہ بین کے روپے کے متعلق ایک مرموز خط محمد شفیع ٹھیکیدار انبالہ کے نام لکھا تھا جسے موصوف" بالکا بجرا ہوا خط" قرار دیتے ہیں۔ یہ خط ان کی بیٹھک میں موجود تھا۔ انہوں نے چا ہا کہ کپتان پہلے گھر کے اندر کی تلاش لے لے تاکہ اس خط کو ضائع کر دیئے کی مہلت مل جائے۔ کپتان نے اصرار کیا کہ پہلے بیٹھک کی تلاشی لی جائے گی۔ اس کی مہلت مل جائے۔ کپتان نے اصرار کیا کہ پہلے بیٹھک کی تلاشی لی جائے گی۔ اس غرض سے دودر داز دس کا کھلوانا ضروری تھا، جوآ دمی اندر سور ہے تھے ان میں سے مولوی صاحب نشی عبد الغفور کوآ واز دی کہ بہر نشنڈ نٹ صاحب تلاشی کے لئے کھڑے ہیں دروازہ جلد کھول دو۔ مقصود بیتھا کہ شی صاحب متنبہ ہو کر خط ضائع کر دیں۔ وہ گھرا ہٹ میں اشارہ نہ بجھ سکے دروازہ کھلاتو وہ خط مل گیا جو اصطلاحی لفظوں میں چند ہزار انشر فیاں روانہ کرنے کے ذکر پر مشمل تھا۔ پچھاور خط بھی طے منشی عبد الغفور ساکن گیا (بہار) اور

⁽۱) كالاياني المعروف تواريخ مجيب ص : ٢ كيتان كانام Parsons تعا.

ایک بنگالی عباس کوہمی پولیس گرفتار کرکے لے گئی۔مولوی صاحب کی گرفتاری کے وارنٹ نہ تھ لہذان سے کوئی مزاحمت نہ کی۔(۱)

ابل عظيم آباد كاسراغ

مولوی محمد جعفر تھائیسری کے یہاں سے جو خط بکڑا گیا تھا اس میں مکتوب الیہ کا نام شیخ شفاعت علی مرقوم تھا اور پیة محمد شفیع ٹھیکیدار میانمیر کا درج تھا۔ جس کا مکان صدر بازار انبالہ میں تھا۔ چنانچے انبالہ میں محمد شفیع کے مکان کی اور میانمیر میں اس کی دکان کی علاثی بھی ہوگئے۔ کپتان بمفیلڈ (۲)وکیل استغاثہ نے اپنی تقریر میں بیان کیا:

اس ا ثناء میں ایک اور ذریعے ہے بھی متنداطلاع مل چک تھی کہ تھانہ جانے والے آدمی محمد جعفر کے پاس تفہرتے ہیں اوروہ مجاہدین کو مالی امداد پہنچا تا ہے (۳) چنا نچہ کپتان پارسنز کومولوی محمد جعفر کی گرفتاری کا تھم دیدیا گیا۔

پارسنز تھا غیر پہنچا تو مولوی صاحب وہاں سے غائب ہو چکے تھے جس کی تفصیل آگے بیان کی جائے گی۔ تھا نیر کی تخصیل ، تھا نہ اور ڈاک خانہ پیلی میں تھے، وہاں کے پوسٹ ماسٹر نے ایک خط چیش کیا جوعظیم آباد کے محی الدین کی جانب سے تھا غیر کے عبدالغفور پیروخال کے نام بھیجا گیا تھا۔ مولوی محمد جعفر کے مکان سے جوخط ملا تھا اس میں تسبیحوں کے لئے چیم ہزار سفید دانے (۴) اور تین سوسرخ دانے بھیجنے کا ذکر تھا۔ بیپلی والے خط میں یہ بتایا گیا تھا کہ میال جینی کوظیم آباد سے سفیدا ورسرخ دانے دے کر بھیج دیا تھیا ہے۔ یوں خفیہ سازبازی ایک اور کڑی بل گئی اور عظیم آباد میں بھی تلاشیوں کا سلسلہ

⁽١) كالاياني ص:٥٠٨

BAMFIELD (r) مولوی جم جعفری کتاب میں اے دکھفیل لکھا حمیا ہے۔

⁽٣) روئيداد مقدمهانباليس:٣٣

⁽⁴⁾ بعد میں معلوم ہوا کہ سفید دانوں ہے مرادرویے میں ادرسرخ دانوں سے اشرفیاں۔

جاری کردیا میا۔

مولوی جعفر کا فراراور گرفتاری

تلاشی کے بعد یولیس واپس جلی گئی تو مولوی محمر جعفر نے سو جا کہ ثبوت مل گیا ہے اور اب بیاؤ کی کوئی امیز نہیں ہو عق ہے، البذا بہتریہ ہے کہ بھاگ کر کسی محفوظ مقام کی طرف نکل جاؤں۔وہ اعتراف کرتے ہیں کہ''نامردی ہے جان بچانا مناسب جانا''اگرچہوہ حراست میں نہ تھے لیکن مختلف لوگ ان کی نقل وحرکت کوتا کئے اور جاسوی پر مامور تھے۔ انہوں نے اپنی والدہ اور اہلیہ سے مشورے کے بعد فرار کا فیصلہ کرلیا۔ ۱۲ رومبر ۱۸ ۲۳ مورہ بیلی گئے اور تخصیل اور تھانے میں ان کے دوست موجود تھے،سب نے رائے د**ی کہ خو**د ا نبالہ جا کر دریافت کرنا جا ہے کہ اصل معاملہ کیا ہے۔ چنا نچہ وہ شام کے وقت گھوڑے پر سوار ہوکر بہ ظاہرانبالہ کی طرف روانہ ہوئے ،گمرانی کرنے والوں نے سمجھ لیا کہ وہ واقعی ا نبالہ جار ہے ہیں الیکن مولوی صاحب اینے ول میں فیصلہ کر بیکے تھے۔ تاریکی ہوگئی تو سڑک چھوڑ کراس جگہ پہنچے جہاں والدہ، بیوی نیچے اورا پنے بھائی محمود سے آخری ملاقات کرنی تھی۔رات کے ایک بجے ایک عمدہ بمبلی میں بیوی اور بچوں کوکیکرروا نہ ہوئے۔ یانی پت بہنچ کر انہیں رخصت کردیا ، بہلی چلانے والے سے کہا کدمیرے بچوں کو یانی پت میں چھوڑ کر جمنا یار چلے جانا ^مکسی مخص کو ہمارا پین*د* نہ بتانا ، بہلی اور بیل خود ل**ے لی**نا۔ مولوی صاحب دہلی ہینچے اورمیاں نصیرالدین سوداگر کی کوشی میں مقیم ہوئے جہاں حسینی تھانیسری اورسینی عظیم آبادی تھہرے ہوئے تھے۔ان کے ساتھ 'عبداللہ' نام کا بھی ا کی شخص تھا جس کا تیجے نام آ گے چل کر' دمعظم سر دار' ' ثابت ہوا۔ سینی عظیم آبادی اور معظم سرداراشرفیاں کیکرآئے تھے۔(۱) مولوی محمد جعفر نے یہ اشرفیاں حسینی تھامیسری کے

⁽۱) معظم سردار نے گوائی دیتے ہوئے بتایا کہ میرے کرتے میں ایک طرف چمیانو سے اور دوسری طرف ستاک اشرفیاں کی ہوئی تعیس جینی کے کرتے میں غالبًا ایک سواشرفیاں تعیس۔ (روئیداد مقدمدا نبالہ مین ۵۵)

حوالے کیں کہ جس طور بھی ممکن ہوا نہیں مجاہدین کے بیت المال تک پہنچادو۔خور حینی عظیم آبادی او رمعظم سردار عرف عبداللہ کولیکر شکرم میں علی گڑھ روانہ ہوگئے۔ پارسنز تھائیم بہنچا تو مولوی صاحب کے کم عمر بھائی محر سعید کو مار پیٹ کر فرار کا پورا حال معلوم کرلیا۔ بوں وہ مولوی صاحب کے تعاقب میں دبلی سے علی گڑھ پہنچا اور اُنہیں گرفتار کر کے واپس لے آیا۔

مزيدگرفتاريان

اس اثناء میں محمد شفیع تھی یدار، اس کا طازم منٹی عبدالکریم اور بعض دوسر اسحاب بھی گرفتار ہو چکے تھے ۔عظیم آباد میں مولانا احمد اللہ، مولانا یجی اور مولانا عبدالرحیم بھی معرضِ احتساب بیس آئے۔ کپتان پارسنز ، ظلیم آباد کے کلکٹر اور بعض دوسر انسروں کی معیت میں ۱۲ سرشعبان ۱۲۸۰ھ (۲۲ برجنور ۱۲۸۶ء) کومولا نا احمد اللہ، مولانا یجی وغیرہ کے مکانوں کی تلاثی کے لئے آیا۔ پولیس نے مکانوں کا احاطہ کرلیا۔ مولا نا احمد اللہ کلکتہ کئے ہوئے تھے۔ مولا نا احمد اللہ کلکتہ کئے ہوئے تھے۔ مولا نا یجی علی سے تقریباً آٹھ گھنٹے ہو چھ کھے ہوتی رہی۔ پھروہ لوگ چلے کئے سرا برجنوری کو بدلوگ دوبارہ آئے۔ کتابوں اور خطوں کوخوب دیکھا بھالا اور پھی کا غذات ساتھ لے گئے۔ مولانا یجی علی سے لئے دی ہزار رو بے کی نفذ ضانت طلب کی، کاغذات ساتھ لے گئے۔ مولانا بھی عبدالحمید نے کیا۔ مولانا عبدالرحیم اوران کے جس کا انتظام مولانا احمد اللہ کے فرزند حکیم عبدالحمید نے کیا۔ مولانا عبدالرحیم اوران کے بعد مولانا بچی کی صفانت بھی منسوخ کرکے آخیس گرفتار کرلیا۔ ۲۲ بر رمضان ۱۲۸۰ھ (۵۰مارچ ۲۲ بر رمضان ۲۸۰ھ (۵۰مارچ ۲۲ بر رمضان ۲۰ کا اللہ بھی جو یا۔

مجاہدین کے سلسلے میں دعوت وبلیغ اور تنظیمات کے ایک بہت بڑے اور فعال کارکن قاضی میاں جان ساکن کمار کھلی (ضلع پنبہ بنگال) تھے، جن کی عمراس وقت ساٹھ کے لگ بھگ ہوگی، انھیں بھی گرفتار کر کے انبالہ پہنچادیا گیا۔ دہلی سے بصیرالدین اور علاء الدین تاجران جفت بھی گرفتار کر لیے گئے، ان کے ذریعے سے بھی ہنڈیاں بھیجی جاتی تھیں۔

حینی تفانیسری کی گرفتاری

مولوی مجرجعفر نے حینی تھائیسری کواشرفیال دے کردالی سے روانہ کردیا تھا۔ وہ بے جارہ بڑی احتیاط سے روانہ ہواتا کہ رقم مجاہدین کے باس پہنچا دے۔ وہ یکے میں سوار ہوکرکرنال سے امرتسر جارہا تھا۔ راستے میں بیپل کے نائب تحصیلدار قاسم علی اور برکت علی سار جنٹ نے اے گرفآر کرلیا۔ نائب تحصیلدار نے اپنے بیان میں کہا کہ میں تھائیسر میں مختلف مکانوں کی تلاثی کے بعد بیپلی پہنچا تو بیٹنس کے میں سوار تھا اور پردے چھوڑ بہوں ۔ مقالی کا تاثی کے بعد بیپلی پہنچا تو بیٹنس کے میں سوار تھا اور پردے چھوڑ بہوں ۔ وہ مسلمان تھا اس لئے سمجھ میں نہ آیا کہ یہ کیوں اشنان کیلئے تھائیسر گیا؟ چنا نچہ اسے گرفآر کرلیا گیا۔ اس کی بغل میں دوروئی دار صدریاں تھیں۔ وہ ذرا بوجہل معلوم ہوئی ہوئی تھی۔ اسے گرفآر کرلیا گیا۔ اس کی بغل میں دوروئی دار صدریاں تھیں۔ وہ ذرا بوجہل معلوم ہوئی ہوئی تھی۔ انہوں کے یاس تر بین روپے تھے۔

اسيرول كےمصائب ادراستقامت

گرفتاری کے بعدان بزرگوں کوانگریزوں نے جوشِ انتقام میں جوتکیفیں دیں،ان
کی پوری کیفیت معلوم نہ ہوسکی ۔ بیوفت کے نہایت معزز اورخوش حال افراد تھے،لیکن ان
کے ساتھ دوسلوک روار کھا گیا جومعمولی حیثیت کے اخلاقی مجرموں کے متعلق بھی خلاف حق وانعماف سمجھا جائے گا۔ مثلاً مولوی مجمد جعفر کے حالات کا سرسری نقشہ ملاحظہ فرمائے۔ گرفتاری کے بعد انھیں ایک تنگ وتاریک کونٹری میں بند کیا گیا۔ کھانے کو دوروٹیاں اور تھوڑ اساساگ ملا۔ روٹیوں میں ایک چوتھائی ریت اور میں شامل تھی۔ساگ

میں موٹے موٹے وضل تھے، جنمیں چبانا بھی دشوار تھا۔ علی گڑھ سے شکرم میں دہلی کی طرف روان ہوئے و جھکڑی اور طوق بہنا یا گیا تھا۔ طوق میں ایک اور زنجیرڈ ال کراس کا ہر اایک مسلح سپاہی کے ہاتھ میں دے دیا گیا تھا۔ کپتان پارسنز اور ایک انسپکڑ پولیس مولوی صاحب کے دائیں بائیں بھرے طمنچ لے کر بیٹھے۔ نہ کھانے کو پچھودیا، نہ بینے کو۔ رائی صاحب کے دائیں بائیں بھرے طمنچ لے کر بیٹھے۔ نہ کھانے کو پچھودیا، نہ بینے کو۔ رائی میں نماز تیم کر کے اشاروں سے اداکی جاتی رہی۔ دہلی میں انھیں سیر نٹنڈنٹ پولیس کے بنگلے کے ایک تہ خانے میں رکھا گیا۔ وہاں سے کرنال اور کرنال سے انبالہ پنچی، جہاں تینوں (مولوی محمد جعفر، مینی عظیم آبادی اور معظم سروار) کو علیحدہ علیحدہ بھائی کی کوٹھریوں میں بندگیا گیا۔

خوفناك سزائين

مولوی صاحب فرماتے ہیں کہ کپتان پارسز سپر نٹنڈ نٹ اور کپتان ٹائی

(TIGHE) نے کہا کہ سب کچھ بتادو۔ ہیں نے جواب دیا، جھے کچھ معلوم ہیں۔اس کے

بعد زدوکوب شروع ہوئی، یہاں تک کہ مولوی صاحب مارکھاتے کھاتے گر پڑے۔ وہ

فرماتے ہیں کہ یقین ہوگیا، یہ مجھے زندہ نہ چھوڑیں گے۔ میرے ذے رمضان کے کچھ

دوزے باتی تھے۔ کچھ کھائے ہے بغیر روزے رکھے شروع کر دیئے۔ دوسرے دن

زدوکوب کے بعد مجھے ڈپٹی کمشز کے بنگلے پر لے گئے۔ چاپلوی سے کہا کہ سب کچھ

بتادہ جہیں سرکاری گواہ بنا کر دہا کردیں گے اور بڑا عہدہ بھی دیں گے۔ میں نے انکارکیا

تو پھر مار پیٹ شروع ہوئی می می کے آٹھ بجے سے رات کے آٹھ بجے تک بارہ گھنے

زدوکوب جاری رہی۔ افطار کا وقت آیا تو میں نے بنگلے کے درخت کے پیتے تو ڈکرروزہ

کھولا۔(1)

⁽١) يتمام تفيلات مولوي مجرجعفري كتاب"كالاياني" عاخوذيي-

سوچے! ہم میں سے کتنے آدی ہیں جو راہِ خدا میں اس قتم کی تکلیفیں صابرانہ برواشت کر لینے کا تصور بھی کر سکتے ہیں؟ ان بزرگوں نے بیتمام تکلیفیں ایسے وقت میں اٹھائیں جب ملک کی پوری فضا اگریزی تسلط کے شادیانوں سے معمورتی اور ایک بھی طلق سے صدائے جسین واعانت بلند ہونے کی امید نہتی ۔ للہیت اور اخلاص کے ان مقدی افراد نے سید احمد شہید کی جاری کردہ تح یک کے دامن میں پرورش پائی تھی۔ اس مقدی افراد نے سید احمد شہید کی جاری کردہ تح یک کے دامن میں پرورش پائی تھی۔ اس سے اندازہ ہوسکتا ہے کہ بیتح کیک اس سرز مین میں اسلامیت کی کیسی عجیب وغریب تربیت گاہتی۔

تىسراباب:

مقدمهانباله (۲)

ملزمين

مقدمه ابتداء میں کپتان ٹائی ڈپٹی کمشنر کی عدالت میں پیش ہوا۔ مندرجہ ذیل اصحاب ملزم منصے۔

ا- میخ محر شفیع تھیکیدار، جو مختلف جیھاؤنیوں میں فوجوں کو گوشت فراہم کرنے کا فرمدار تھا اور جس کی جا کداد بچاس لا کھ سے کم نہ تھی۔ بیسید احمد شہید کے خلص مرید شخ محمد تقل کا برا اصاحبر ادو تھا، شفاعت علی اس کا دوسرا نام تھا۔

7- مولوی محمد جعفر تھانیسری، ان کے والد کا نام میال جیون تھا۔ ذات ارائیں، عمر مقدے کے وقت اٹھا کیس سال کے قریب تھی۔ تھانیسر میں نمبر دار تھے۔ عرائض نولیی، اورا سٹامپ فروثی بھی کرتے تھے۔ معلوم ہوتا ہے کہ تجارت اورزمینداری کا کاروبار بھی خاصا وسیج تھا۔ مجاہدین کے کام کے لئے ان کا نام'' پیرو خال' تھا۔ بعض بیانات کے مطابق یہ کام کے لئے ان کا نام' کیرو خال' تھا۔ بعض بیانات کے مطابق یہ کام کے بنگا ہے میں بھی چندساتھیوں کولیکر انگریزوں کے خلاف لڑنے کی غرض سے دبلی گئے تھے۔

سا- مولانا بحیٰ علی جعفری عظیم آبادی ،مقدمے کے وقت ان کی عمر عالبًا سینمالیس سال تھی ۔مجاہدین کے کام کے لئے ان کانام' ومحی الدین' تھا۔

۳ - مولا ناعبدالرحيم ،مولوي فرحت ُحسين كَ فرزنداورمولا ناولايت كـ بيتيج، عظيم آباد كے رئيس _مقد ہے كے وقت ان كى عمرا تھائيس سال كى تھى _ ۵- میان عبدالغفار ،مقدے بین انہیں مولا نا عبدالرجیم کاملازم ظاہر کیا گیا۔ اغلب ہے کہ وہ ابتداء میں ملازم ہول کیکن اپنے حسن عمل اور جوشِ ایمان کی وجہ ان کا درجہ اتنا بلند تھا کہ ایک روایت کے مطابق عظیم آباد کے وہ تمام بزرگ جوسید صاحب سے وابستہ تھے، انہیں سیدی میاں عبدالغفار کہا کرتے تھے۔

۲- قاضی میاں جان، ساکن کمار کھلی (ضلع پنبہ) بینہایت متناز کارکن تھے اور جیسا کہ آگے چل کرمعلوم ہوگاان کے متعدد عرف تھے۔

2- عبدالكريم انبالوى، عمر پينيتس جال بيشخ محمد شفيع كامخنارتها اور شيخ كى بھانجى سے اس كا نكاح بھى ہو گياتھا۔

۸- عبدالغفور بن شاہلی خال ساکن ضلع شاہ آباد (ایک روایت کے مطابق ساکن ہزاری باغ) عمر پچیس سال ۔ بیتھائیسر میں مولوی محمد جعفر کے ہاں مقیم تھا۔

9 - حینی ابن محمد بخش ، عمر پجیس سال ، ساکن تقامیسر بیمولا ناعزایت علی کے عہد میں شریک جہاور ہا، پھرا ہے جماعتی کام کے سلسلے میں مولوی محمد جعفر کا معاون بنادیا گیا۔
10 - حینی ابن میکھو ساکن عظیم آباد، عمر پنینیس سال بیملزم نمبراا کا ملازم تھا۔
11 - الہی بخش ابن کریم بخش ، بیصاحب مولا نا احمد اللہ کے مختار تتھے اور ارسال زر زیادہ ترانبیں کے ذریعے ہے ہوتا تھا۔ ان کا ابنا کا روبار بھی تھا۔

ابتدائي كارروائي اورخوفنا ك مصائب

کپتان ٹائی کی عدالت میں عالبًا ایک ہفتہ کارروائی جاری رہی۔ مقصود بہتھا کہ ابتدائی چھان بین کے بعد ملزم سیشن سپر دہوں۔ چنانچے موصوف نے الزامات، گواہوں اور وٹائقی شہادتوں کی تفصیل مرتب کی اور تمام ملزموں کوسیشن سپر دکر دیا۔اس اثناء میں مقدے کے گواہ پیدا کرنے کا خاص اہتمام کیا گیا۔مثلًا شِخْ محد شفیع سے حقیقی بھائی محد فیع

کو پھائی کی دھمکی دیگر گواہ بنالیا گیا۔ مولوی محمد جعفر کے بھائی محمد سعید کو بھی مار پیٹ کر سرکاری ڈھب کی گواہی دینے پر آمادہ کرلیا گیا۔ جس روز مقدمہ پیش ہونے والا تھا محمد سعید نے ایک سپاہی کے ذریعے سے مولوی محمد جعفر کو پیغام بھیجا کہ مار پیٹ کی بناء پر مجبور ہوگیا ہوں، اب میں عدالت میں اپنے بیان سے انکار کر دوں گا۔ مولوی صاحب نے کہلا بھیجا کہ اس سے پچھ فاکدہ نہ ہوگا تم پر صلف دروغ کا مقدمہ چلے گا اور سخت سزا ہوگا۔ میری رہائی صرف تمہارے بیان پر موقوف نہیں، تم بھی قید ہوگئے توضعیف والدہ دو ہرا صدمہ برداشت نہ کرسکے گا۔

عباس نامی جس بنگالی لائے کو مولوی محمد جعفر کے مکان سے گرفتار کیا گیا تھا اسے بھی پولیس نے حسب منشاء ایک بیان سکھا دیا۔ جب ملزموں کے روبرواسے بیان وینے کیلئے کہا گیاتو مولوی محمد جعفری صورت دیکھتے ہی وہ سب پچھ بھول گیا۔ پولیس اسے واپس لے گئی اورا تنامارا کہ وہ فوت ہوگیا۔ پارسنز نے مشہور کر دیا کہ وہ بیاری سے فوت ہوگیا۔ (۱) مولا ناعبدالرجیم فرماتے ہیں کہ جن کو تھریوں میں ہمیں بند کیا جاتا تھا ان میں سے ہر کو تھری پانچ فٹ لبی اور چارف جوڑی ہوگی۔ جھست بہت بلند او پر ایک جھوٹا سا بر کو تھری نہایت تک و تاریک تھی۔ شب وروز میں ایک باراس کا دروازہ کھا تا اس دفت ایک جمعدارا ورتین سپاہی آتے۔ ان کے ساتھ ایک بادر چی ہوتا جس کے ہاتھ میں دوروٹیاں اور دال ہوتی۔ ساتھ بی مشک میں پانی ہوتا اور ایک بھٹی جو گملا میں دوروٹیاں اور دال ہوتی۔ ساتھ جی مشک میں پانی ہوتا اور ایک بھٹی جو گملا میں دوروٹیاں اور دال ہوتی۔ ساتھ کوزے میں پانی ڈل دیتا اور بھٹی صاف آلملار کہ جاتا۔ (۲)

⁽۱) "تذكره صادقه" من بيك به واقعد صدرالدين كوفي آيام : ١٠ - بيتي نيس بصدرالدين كي كوابي با قاعده بولى ـ

⁽۲) "تذكروصادقة"ص: ۵۰

ملزموں کی سیجائی

ڈپٹی کشنر کی عدالت میں پیش ہو کر ملزموں نے نماز کی اجازت ما تکی ، ندلی تو وہ عین دورانِ مقدمہ میں تیم کر کے بیٹے ہوئے اشاروں سے نماز پڑھ لیتے۔ جب تک مقدمہ فرخی کی کھر یوں میں بند تھے۔ جب فرخی کمشنر کی عدالت میں تھا تمام ملزم الگ الگ پھانسی کی کو تھر یوں میں بند تھے۔ جب مقدمہ سیشن سپر دہوا تو ان سب کو حوالات میں اکٹھا کردیا گیا۔ مدت کے بعد دوست اکتھے ہوئے تو اپنی تمام مصببتیں اوراذیتیں بھول گئے۔ ہمولوی محمد جعفر اکثر میہ شعر برھتے۔

پائے درزنجیر پیشِ دوستاں بدکہ بابیگا نگال در بوستال مولوی صاحب موصوف فرماتے ہیں کہ ہم سب مولا نا یجیٰ علی کی صحبت کو ننیست سیجھتے ہے، مگر بیخ محمد شفیع اور عبد الکریم کسی قدر کشیدہ خاطر رہتے ہے:

عَلَى آيَ شَقِّ كَانَ لِلْهِ مَصْرَعِىٰ يُهَادِكَ عَلَى آوْصَالِ شَلْوٍ مُمَزَّعِ(١) لَسْتُ أَبَالِي حِيْنَ أَفْتَلُ مُسْلِمًا وَذَلِكَ فِي ذَاتِ الْوَلَهِ وَإِنْ يُشَآء

قانونی امداد

شخ محرشفیج نے ابتدائی عدالت ہی میں پہلے ایک اگریز وکیل مقرر کرلیاتھا جس کا نام

د تذکر وَصادقہ میں جانسن (JOHNSON) بتایا ہے۔ پھرمسٹر گڈآل (GOODALL)

کوسات ہزاررہ بے پرمقرر کرلیا سیشن کی عدالت میں گڈآل صاحب ہی محرشفیج اوراس

کفشی عبدالکر یم کے مقد ہے کی پیردی کرتے رہے۔ باقی ملزموں نے شروع میں کوئی
وکیل مقرر نہ کیا ہیشن کی عدالت میں مولا ناعبدالرجیم نے گڈآل صاحب کی معرفت کلکت

سے مسٹر پلاوڈن (PLOWDEN) کو بلوایا۔ اکیس ہزار روپے فیس مقرر ہوئی، قیام و
طعام اور سواری کاخرج اس کے علاوہ تھا۔ پلاوڈن صاحب مولا ناعبدالرجیم اورمولا نامیکی علی

کے علاوہ سینی تھائیسری ، سینی عظیم آبادی ، اللی بخش اور عبدالغفاری طرف سے بھی پیروی

کرتے رہے۔ مولوی محرج مقرتھا عیسری نے خودا سے مقد مے کی پیروی کی ، قاضی میاں
جان اور عبدالغفور کے متعلق کچھ معلوم نہ ہوسکا کہ انھوں نے بیروی کا کیا انتظام کیا۔

پلاؤڈن صاحب کلکتہ ہے انبالہ پنچ تو اپن مؤکلوں سے ملاقات کی درخواست دی جے ہر برٹ ایڈورڈز (HERBERT EDWARDES) کمشنر اور سیشن جی نے نامنظور کردیا۔ جو ڈیشل کمشنر لاہور کے پاس ایپل کی گئی تو وہ بھی نامنظور ہوئی، آخر پلاؤڈن صاحب نے یہ مسئلہ گورز کے پاس چیش کیا، وہاں سے منظوری آئی تو صاحب موصوف نے مؤکلوں سے ل کر وکالت نامے پر دستخط لیے اور پیروی کی تیاری شروع کی۔ اس جس وو ہفتے لگ گئے۔ اس دوران میں پلاؤڈن صاحب کا خرج ملزمول کے داس دوران میں پلاؤڈن صاحب کا خرج ملزمول کے ذمے پڑا۔ اس سے بیاندازہ بھی ہوسکتا ہے کہ مقدمے میں ذمہ دار آئکر پر افسروں کی روش کس درجہ معاندانہ تھی، حکومت کی طرف سے استخابے کی پیروی کپتان بمفیلڈ کے روش کس درجہ معاندانہ تھی، حکومت کی طرف سے استخابے کی پیروی کپتان بمفیلڈ کے

(۱) "كالا پانى" ص ١٩٠١٩ - جب بى سلمان باراجاك تو جميے كچھ بردائيس كدالله كى طرف ميرالوناكى بحى كروث جو اور بيسب الله كى راو بى بود جا بي بوسيده اور كلز كار ساعضائية جم من بركت اور باليد كى عطاكرد ، ذميحى،اسشنك تمشنر بار كلے اس كامعاون تھا۔

بلاؤدُن صاحب کے اعتراضات

ملزموں کے خلاف مقدمہ دفعہ ۱۲ اتعزیرات بند کے ماتحت چلایا گیا تھا۔استغاثہ بیہ تھا کہ ستھانہ اور ملکا کے ہندوستانی مجاہدین حکمرانِ برطانیہ کے دشمن ہیں اور اس کے خلاف جنگ کر چکے ہیں۔ملزم برطانوی رعایا ہیں، لیکن ان کے ذریعے سے مجاہدین کورو پے اور قبگ کر چکے ہیں۔ملزم برطانوی رعایا ہیں، لیکن ان کے ذریعے سے مجاہد وفا واطاعت کی آدمیوں کی امداد ملتی رہی۔اس طرح انہوں نے دانستہ اور غدارانہ اس عہد وفا واطاعت کی خلاف ورزی کی جورعایا کے ہرسچے اور وفا دار فرد کے دل میں اپنے حکمر ال کیلئے موجز ن رہنا جا ہے۔(۱)

پلاؤڈن صاحب نے پہلااعتراض بیکیا کہ شہادت میں بتایا گیاہے کہ طرموں نے غیر کمکی دشمنانِ حکومت برطانیہ کے اقد امات دشمنی میں امداد کی یا اسکے لئے کوشش کی۔ یہ جرم دفعہ الا افتر برات ہند کے ماتحت نہیں آتا۔ ندکورہ دفعہ صرف ان اقد امات جنگ کے بیش کی اور دفعہ صرف ان اقد امات جنگ کے بیش کی اور دو کے ہو برطانوی رعایا، برطانوی علاقوں کے اندر حکومت کے خلاف میں لائے۔ سیشن جج نے بیاعتراض مستر دکردیا تو پلاؤڈن صاحب نے دو مرااعتراض پیش کیا اور دہ سیکہ میرے چھمو کلوں میں سے پانچ کے خلاف اس عدالت میں مقدمہ نہیں چل سکن، انبالہ ڈویژن کی عدالتیں لفنٹ کورنر ہنجاب کے ماتحت ہیں اور میرے پانچ موکل عظیم آباد کے دہنے والے ہیں جولفٹٹ کورنر ہنگال کے ماتحت ہیں اور میرے پانچ موکل عظیم آباد کے دہنے والے ہیں جولفٹٹ کورنر ہنگال کے ماتحت ہے۔ ضابطہ فو جداری کی دفعہ از کا سے مطابق جرائم کی تحقیقات یا تو ان اصلاع میں ہوئی جا ہے جہاں ان کا ارتکاب ہوایا ان اصلاع میں جوانی ان کا خت شرکت اندر کا بیا عزاض بھی مستر دکردیا۔ اور عام نے کی کیفیت بھی یہی ہے۔ ہر برث ایڈورڈ زنے بیاعتراض بھی مستر دکردیا۔

⁽١) "روتيواد قدمان إله "م: ١١

چوتھاباب:

مقدمهانباله (۳)

استغاثے کی شہادتیں

کبتان پارسنز کے علاوہ استفاقے کی طرف سے بہت ی شہاد تیں پیش ہوئیں جن میں جماعت مجاہدین کے بعض کارند کے عظیم آبادہ انبالہ، وبلی ، ریواڑی وغیرہ کے مہاجن، محاعت مجاہدین کبیر داراور بعشیار نے بھی شامل تھے۔ ان سب کی تفصیلات بتائی نہیں جاسکتیں، کبین جمن شہادتوں کو دارو گیر میں نمایاں حیثیت حاصل ہے انکی کیفیت ذیل میں درج ہے:

ا حثمان علی بن حاجی نیم الدین ساکن اوجھا پورضلع چوہیں پرگنہ (بنگال) اس گواہ نے جماعت کے متاز کارکنوں میں سے منٹی ریجان الدین ناظر عدالت جیسور، مولوی میزان الحق (غالبًا میزان الرحن و ھاکہ) حاجی مفیض الدین (چوہیں پرگنہ) منٹی سید عبدالحق کا ذکر خاص طور پرکیا ہے۔

۲- معظم سردار بن برکت الله ساکن چاند پور (بنگال) اس نے مولوی ابرا ہیم بن حاجی نصیر الدین ساکن پلاس پور (چاند پور سے چارکوس) معین الدین اور قاضی غیاث الدین کا ذکر کیا۔
 الدین کا ذکر کیا۔

سو- قاضی مرادعلی بن شیخ و جیدالدین ساکن چوکری بور (ضلع پنبه بنگال) بیرگواه قاضی میال جان کا بھائی تھا، جن حالات میں اس نے گواہی دی ہوگی وہ محتاج تصریح نہیں۔

۲- لال محدساكن كمر كرهى (عظيم آباذ)-اس كواه في عبدالهادى اور بيب الله

كاذكركيابه

۵- عین الدین بن روش (لالدسرائے ڈھا کہ)اس نے میزان الرحمٰن ، قادر بخش اوروز برچمہ کا ذکر کیا۔

۲- سلیم الدین بن مهرالله (اسلام پورضلع و ها که)اس نے میزان الرحمٰن طفیل
 الله یاطفیل علی،خدا بخش اورنجیب الله کا ذکر کیا۔

ے۔ صدرالدین بن جبّو (بھاگل پورضلع مالدہ) اس نے بصیرالدین، حاجی محمر، عبدالعلی درزی (لال کرتی انبالہ) کا ذکر کیا۔

ان کے علاوہ غلام اکبرین مکنگ غازی (گنانہ گڑھی بنگال) محمدر فیع (برادرشخ محمہ شفیع) حکیم محمد تقی بن فرید بخش (گنگوہ) طالب علی نائب مخصیل دار پیملی، غلام محمد ڈپٹی انسپکڑیولیس اورغزن خال (ہوتی مردان) کی شہادتیں خاص طور پر قابل ذکر ہیں۔

شهادتون كانقشه

زیادہ ترشہادتیں ایک تھیں جن کا مذعا بیتھا کہ ملزموں کے خلاف دعوت و تبلیغ کرنے یارو پیداور آ دی تھیجنے کے الزامات کو تقویت پنچے ۔ بعض افرا دنے تیجے یاغلط بیان کیا کہ وہ اپنے وطن سے نکل کر عظیم آ باد تھہرتے ہوئے مولانا بیلی علی ،مولوی محمد جعفر ، شخ محمد شخ یا ان کے کارندوں کی امداد سے ملکا پنچے ۔ پھر موقع پاکر وہاں سے بھا گے اور انگریز افسروں کی امداد سے وطن واپس آئے۔ ملزموں کے وکیل تمام گواہوں پر سخت جرح کرتے کی امداد سے وطن واپس آئے۔ ملزموں کے وکیل تمام گواہوں پر سخت جرح کرتے رہے۔ شخ محمد شفیع کی طرف سے کمسریٹ کے دوائگریز افسر بھی پیش ہوئے ، ایک کپتان اوگلوی (CGILVIE) ڈپٹی اسٹنٹ کمیسری جزل، دوسراکر الل ریڈی (REDIB) ڈپٹی محمد کی جزل، دوسراکر الل ریڈی (REDIB) ڈپٹی محمد کی جزل، ان دونوں نے بیان کیا کہ شخ محمد شفیع کا انتظام رسد بھیشہ صد درجہ سلی بخش مہیسری جزل، ان دونوں نے بیان کیا کہ شخ محمد شفیع کا انتظام رسد بھیشہ صد درجہ سلی بخش مہیسری جزل، ان دونوں نے بیان کیا کہ شخ محمد شفیع کا انتظام رسد بھیشہ صد درجہ سلی بخش مہا۔ افسراس کے کام سے اس قدر مطمئن شفے کہ گرفتاری کے بعد بھی ٹھیکہ اس کے نام

ركها_ايكماحب في يمي بنايا كه كومت كمتعلق اسكي خيالات الجصي بائ سكة-

مقدمے کی عمومی کیفیت

ملزموں کے بیانات زیادہ مفصل نہ تھے۔مولوی محد جعفر لکھتے ہیں کہ مولا نامحہ یجی ا علی تو دکیل مقرر کر کے روپیہ برباد کرنے پر راضی ہی نہ تھے، بلکدا گر دوسر بےلوگ ان کونہ روکتے تو اپنے نیک اعمال کا اقبال کرنے کو تیار تھے۔ مگر ان کی طبیعت پھے ایسی سید می اور بے عذر تھی کہ جب ان سے مختار نامے پر دستخط کرنے کو کہا گیا تو اس پر بھی وستخط کرد ہے۔ (1)

مقدمہ یقینا ہے بنیاد نہ تھا، سب لوگ مجاہرین کی امداد میں حسب حیثیت سرگرم رہے،لیکن ان الز مات کا قانونی ثبوت فراہم کرنامشکل تھا۔ جوشہادتیں فراہم کی گئیں ان میں بناوٹ اور سکھانے پڑھانے کاعضر خاصا غالب تھا۔

مزوں کے بیانات کے بعد پہلے گذآل صاحب نے شیخ محمد شفیع اور ختی عبدالکریم کی طرف سے ایک لمبی تقریر کی ، جوروئیدا دومقد مد کے پینتالیس صفحات میں سائی ہے۔ اس کے بعد مسٹر پلاؤڈن نے تقریر کی جوروئیداد کے تئیس صفحات میں آئی۔ آخر میں بمفیلڈ نے دونوں تقریروں کا جواب دیا۔ اس حقیقت میں کوئی شبہیں کہ گذآل اور پلاؤڈن نے الزامات کے بے بنیاد ٹابت کرنے میں کوئی دقیقہ سعی اٹھانہ رکھا۔ لیکن حکومت وانگلامیہ سخت سزاؤں کا فیصلہ کرچکی تھی الہٰ ذاریس میں بے نتیجہ دبی۔

فيصله

ہر برٹ ایڈورڈ زنے جو فیصلہ لکھاوہ روئیداد کے ایک سوپانچ صفحات پرمشمل ہے۔ اس میں بھی مخالف وموافق شہادتوں پرمفصل بحث کی۔ ساعت مقدمہ کے دوران میں (۱) ''کلایاٹ'' م:۱۱ حکومت نے حسب قاعدہ جاراسیسر بھی مقرر کردیے تھے، جن میں سے دو ہندو تھے اور دو مسلمان ۔ مولوی محمد جعفر فرماتے ہیں:

سیشن ج نے چاروں اسیمروں ہے کہا کہ اپنی رائے لکھ کر چیش کرو۔ ہم
نے دیکھا کہ بیچاروں اسیمراس وقت بھی ہماری شکلوں کود کھے دیکے کرآنسو بھر بھر
لاتے تھے اور دل ہے ہماری رہائی کے خواہاں تھے، گر جب صاحب جج
اور کمشنر کی رائے کو ہماری سزا پر مائل پایا تو مارے ڈر کے انہوں نے بھی لکھ
دیا کہ ہمارے نزدیک بھی جرم مندر جہ فرد قرار دادائن پر ٹابت ہے۔ (۱)
ہمر برٹ ایڈورڈ زے فیصلے کی اجمالی کیفیت ذیل میں درج ہے:

ا- شخ محد شفیع، سزائے موت مع ضبطی کہائیداد ۔ لاش گورستان جیل میں فن کی

۳- مولانا یکی علی ،سزائے موت معضبطی جائیداد۔لاش گورستان جیل میں دفن کی
 مائے۔۔

۳- مولوی محمد جعفر تھائیسری ،سزائے موت معضبطی جائیداد۔

٣- مولا ناعبدالرجيم جبس دوام به عبور دريائي شورم صبطي جائيداد

۵- قاضی میاں جان جبس دوام به عبور دریائے شور مع صبطی جائیداد۔

٧- ميان عبدالغفار جس دوام بعبور دريائے شور معضبطی جائيداد_

2- منشى عبدالكريم جبس دوام به عبور دريائي شورمع ضبطي جائيداد_

۸- عبدالغفور جس دوام بعبور دریائے شور معضبطی جائیداد۔

٩- اللي بخش جبس دوام بعبوردريائي شورم صبطي جائيداد

ا- حسين عظيم آبادى جبس دوام به عبور دريائي شورم عنبطى جائيداد.

^{ِ (}۱) "كالايانى" ص:۳۳

ا- حسینی تفانیسری جس دوام بیمبور دریائے شور معضبطی جائیداد۔

صرف منی عبدالکریم اور حینی تھا عیسری کے متعلق ہربرٹ ایڈورڈ زنے لکھا کہ قانو نا مخبائش ہوتی تو ان کی سزا کم کروی جاتی، نیز ہر طزم کے سلسلے میں تصریح کی کہ اسیسر بالا تفاق اسے مجرم قرار دیتے ہیں۔لیکن جن حالات میں اسیسروں نے بیرائے دی اس کی کیفیت او پر پیش کی جا چکی ہے۔

ہر برٹ ایڈورڈز کے سوائے حیات اس کی بیوی نے دو جلدوں میں لکھے تھے۔
دوسری جلد میں مقدمہ انبالہ کے فیصلے کو'ایک نہایت اہم سیاسی کام' قرار دیا گیا ہے۔
لیکن جو حقائق اس سلسلے میں پیش کیے جاچکے ہیں ان سے ظاہر ہے کہ کام کی حیثیت پھے
بھی نہ تھی۔ بلا شبہ ملز مین علی قد رِمرا تب مجاہدین کی امداد کرتے رہے مگر جن شہادتوں کی
بناء پراس مقدمہ کو خاص اہمیت دی گئی ، ان میں سے زیادہ تر بے سرو پا اور بناؤئی تھیں۔
پھر ان شہادتوں کی وجہ سے ملزموں کو جو خوفنا ک سزا کیں دی گئیں ان پرحق وانصاف
ہمیشہ خون کے آنسو بہائے رہیں گے۔ بیعدل نہ تھا، سرا سرجوش انتقام تھا۔

جوڈیشل کمشنرکے پاس اپیل

ہر برٹ ایڈورڈ ز کافیصلہ ۱۸۲۴ء کوصادر ہواتھا۔ پلاؤڈن اورگڈ آل نے مزید فیس لے کر جوڈیشل کمشنر پنجاب کی عدالت (۱) میں اپیل دائر کر دی۔ اس زمانے میں رابرٹس (ROBERTS) جوڈیشل کمشنر تھا۔ اس نے بھی اڑسٹھ صفحے کافیصلہ لکھا جس میں مولوی محمد جعفر اور شیخ محمد شفیح کی سزائے موت کو جس دوام بہ عبور دریائے شور میں بدل دیا۔ اس لئے کہ بیسزایجی علی اور جعفر جیسے لوگوں کے لئے پیمانسی کی موت کے مقابلے میں زیادہ تلخی وناخوش گوار ہوگی۔ (۲)

⁽¹⁾ بنجاب میں چیف کورٹ اس کے بعد قائم ہوا، پھراے ہائی کورث کا درجہ دیا گیا۔

⁽٢) روسُدِادمقدمها نباله ص:٥٠٤

مزیدلکھا کہ سب کے جرمول کا درجہ ایک جیسانیں۔ یکی علی، قاضی میال جان اور عمر جعفر تھائیسری کا جرم اول در ہے کا ہے، ان کی جائیدادیں ضرور ضبط کی جائیں اور جم شفیع دوام کی سز ابھی پوری دی جائے۔ یعنی معافی وغیرہ نہ ہو۔ عبدالرجیم، اللی بخش اور جم شفیع کے جرم کا درجہ ذرا کم ہے، آئیس حسب دوام میں ضرور یکھر عایت دی جائے۔ البتہ جائیدادوں کی ضبطی لازم ہے۔ عبدالغفار اور عبدالغفور کے جرم درجے میں اور بھی کم ہیں، جائیدادوں کی ضبطی لازم ہے۔ عبدالغفار اور عبدالغفور کے جرم درجے میں اور بھی کم ہیں، انہیں قید میں مزید رعایت دی جائے۔ ان سے کمتر درجہ عبدالکریم اور حینی عظیم آبادی کا ہے اور سب سے کم درجہ سینی تھا جسیری کا۔ آخر میں تمام کا غذات نفٹنٹ گورنر پنجاب کے سامنے پیش کردیے تاکہ دہ آخری آٹھ قید یوں کے معالم پرمرحمت کے نقطۂ نگاہ سے عور فرما کیں۔ یہ فیصلہ مری سے ۲۲ راگست ۲۲ ماء کوصا در ہوا۔

معلوم ہوتا ہے کہ لفٹنٹ گورز کو بھی آخری نیطے میں خاصاولت لگا،اس لئے کہ جن تین بزرگوں کو بھانسی کا حکم سنایا تھا اُن کی سزاعمر قید میں تبدیل ہونے کی اطلاع انہیں ۱۲ر تمبر ۱۸۲۴ء کولمی۔

بإنجوال باب:

قيداور كالايانى

ذمه دارافسرول كاز درتعصب

مولوی محمد جعفر لکھتے ہیں کہ جس روز سزا کا حکم سنایا جانے والا تھا ہر برث ایڈورڈ ز نے میری طرف مخاطب ہوکر کہا کہ:

'' تم بہت عقل مند ، ذی علم اور قانون داں ہو۔اپنے شہر کے نمبر دار ہو ، رئیس ہو، لیکن تم نے اپنی ساری عقل مندی اور قانون دانی کوسر کار کی مخالفت میں خرج کیا۔ اب تہمیں پھانی دی جائے گی ، جائداد ضبط ہوگی ، تمہاری لاش بھی تمہارے وارثوں کونہ ملے گی اور تہمیں پھانی پر افکا ہواد کھے کر مجھے بہت خوشی ہوگی۔''

میں نے جواب دیا:

جان دینااور لینا خدا کا کام ہے۔ آپکے اختیار میں نہیں ، وہ رب العزت
قادر ہے کہ میرے مرنے سے پہلے آپ کو ہلاک کردے۔اس جواب باصواب
پروہ بہت خفا ہوا مگر بچانی کا تھکم دینے سے زیادہ وہ میرا کیا کرسکتا تھا۔(۱)
مولوی محمد جعفرا ٹھارہ سال کالے پانی گزار کرواپس آگئے۔ ہر برٹ ایمدورڈ زاس
فیصلے سے چارسال بعدد کمبر ۱۸۲۸ء میں فوت ہوگیا۔ عجیب بات بیہ ہے کہ مولوی صاحب
موصوف کے بیان کے مطابق کپتان پارسنز پاگل ہوکر رائی ملک عدم ہوا۔

⁽١) "كالاياني" ص:٣٣٠٣

ምለም

راوخداکے جانباز

مولوی صاحب کہتے ہیں: پھانی کا حکم سکر میں اتنا خوش ہوا کہ ہفت اقلیم کی سلطنت مل جانے پر بھی اتنی مسرت نہ ہوتی ۔ مولانا کی علی بھی نہایت بشاش تھے، البتہ شخ محمد شفیع کے چہرے کارنگ بدل گیا۔ اس روز تماشائی بہ کثرت کچہری کے احاطے میں جمع تھے اور اکثر زار زار روتے تھے، یاؤم بخو دساکت کھڑے تھے۔ مولوی صاحب فرماتے ہیں: پارسنز میرے نزدیک آکر کہنے لگا'' پھانسی کے حکم پر تہہیں رونا چا ہے اشنے خوش کیوں بود؟''میں نے جاتے جواب دیا:

شہادت کی امید پر (خوش ہوں) جوسب سے بردی نعت ہے ہم اس کو کیاجانو۔''(۱)

جیل خانے پہنچتے ہی چانسی والے متیوں قیدیوں کو الگ الگ کوٹھریوں میں بند کردیا۔ تنگ و تاریک کوٹھریاں،شدیدگری کاموسم،ایک ہی رات میں مولوی محمر جعفر کے قول کے مطابق جہنم کانمونہ سامنے آگیا۔ دوسرے ہی دن خود بخو د تار کے ذریعے سے حکم پہنچ گیا کہ بھانی والے قیدیوں کورات کے وقت میدان میں باہر سلایا کرو۔

جیل والوں کی پیشکش

جیل خانے کے دلی کارکن یعنی وارڈ راور سپاہی ان بزرگوں کے بیحد معتقد ہوگئے، خصوصاً مولا نا بچیٰ علی کے جو ہر لخط تو حید اور عمل صالح کا وعظ فرماتے رہتے تھے۔ ان کی کوٹھری کے سامنے سکھ سپاہی آ جاتا یا ہندو سپاہی ،تھوڑی ہی دیر میں ہرایک پرید کیفیت طاری ہوتی کہ کھڑاروتار ہتا۔ (۲)

ایک رات سب محافظ باہم صلاح کر کے آئے اوران نتیوں بزرگوں سے کہا کہ آپ

(۱) "كالاياني" ص ٢٥ تذكر وصاوقته ص:٥

یہاں سے بھاگ جا کیں ہم پربہ جرمِ غفلت مقدمہ چلے گا اور سزا ہوجائے گی، ہم اسے بھاگ ہیں گے، لیس کے مین آئی جائے گی۔ تینوں نے ان لوگوں کے حسن نیت اور ہمت کاشکر بیدادا کیا اور ان کیلئے دعاء کی، مگر کہا کہ بھا گیس کے نہیں، خدا چھڑائے گا تو چھوٹ جا کیں گے۔ مولوی محمج جعفر نے یہ بھی کہا کہ اس کی مرضی نہتی تو میں بھاگ جانے کے باوجود علی گڑھ سے پکڑا آیا۔ اب دوبارہ الی حرکت نہ ہوگی۔ (۱)

ابتلاء بالائے ابتلاء

سوئے اتفاق سے قید بوں میں بخارنے وہا کی صورت اختیار کرلی اور اس میں بہت سے قیدی نذرِ اجل ہو گئے۔ قاضی میاں جان نے بھی جو بہت بوڑھے تھے اس وہا میں وفات یائی۔مولوی محمد جعفر لکھتے ہیں:

مرنے سے ایک روز پہلے انہوں نے خواب دیکھا تھا کہ ایک جواہر نگار تخت آسان سے اتر ااوراس پر پٹھا کر انہیں آسان پر لے مگئے۔ضعف اور کبرئی کے باوجود بڑے ہی صابراور مستقل مزاج تھے۔ (۲)

اس وبا میں مولانا کی علی ایک مہینہ تخت بھار ہے۔ اللی بخش یا گل ہوگیا اوراس کی گرون پر پلستر لگائے گئے۔ میاں عبدالغفار بھی بھار ہوگئے۔ مولانا عبدالرحیم ابنی مشقت بھی پوری کرتے دو پہراورشام کوایک ایک گھنٹے کی چھٹی ملتی تو ہیتال جا کر بھاروں کی بھی خبر لیتے کسی کے کپڑے ملوث ہوجاتے تو انہیں دھود ہے۔ مولوی محرجعفر بھی تخت بھار ہوئے ، اگریزی دواؤں سے انہیں افاقہ نہ ہواتو اگریز ڈاکٹر نے خود مولوی صاحب کی تجویز کے مطابق سیب، بھی کے مرب، بغشہ انار کے شربت اور مفرح دوائیاں منگوائیں۔

انھیں دنوں میں مولوی محمد جعفر کی والدہ ماجدہ کو سانی نے کا ٹا او روہ فوت

⁽١) كالاياتي ص:٢٨٠١٧

⁽٣) كالاياتي ص:٢٨

ہو گئیں۔(۱)وہ بڑی جائیداد کی مالک تھیں جلیل القدر فرزند کی سزا کے بعدان کی زمینیں اورمکان چھن گئے۔اس انقلاب احوال سے ان پر جوگذری ہوگی وہ محتاج بیان نہیں۔ خدا جانے وہ کہاں سوتی ہوں گی اور کس حالت میں وقت گزارتی ہوں گی ،لیکن دنیا کی تکلیفیں کتنی ہی شدید ہوں بہر حال عارضی ہیں۔ یا ئیداری صرف آخرت کی زندگی کو ہے جو حسن عمل اور راوحق میں تکالیف وشدا کداد برصبر کا ثمرہ ہے۔ وہ مرحومہ یقینا زیادہ سے زياده نواب كىستحق تقيس ـ

مشقت اوراس ميں شخفيف

پیانسی کی سراحبس دوام میں بدلی تو ان بزرگوں کے سراور ڈ اڑھی مونچھ مونڈ کر انہیں منڈی بھیٹر کاسابنادیا عمیا۔مولا نایجیٰ علی ڈاڑھی کے کٹے ہوئے بال اٹھا کر کہتے تھے: ''افسوس نەكرتو خدا كى راە ميں پكڑى گئى اوراس كى خاطر كائى گئى۔''

انباله جیل کاواروغه نبی بخش، نائب داروغه رحیم بخش اور دوسر در یی ابل کار اِن بزرگوں کے دلی معتقد اور خیرخواہ تھے، کیکن انگریز سیرنٹنڈنٹ کے خوف سے بہطورخود رعایتی برتاؤنه کر سکتے تھے مولوی محم جعفر کابیان ہے کہانہوں نے تینوں (یجیٰ علی شفیع اورجعفر) کوکا غذکو شخ کے کام برلگایا جومشقت کاسب سے زیادہ سخت کام تھا۔" تذکرہ صادقہ'' میں ہے کہ مولا نانچیٰ علی رہٹ چلانے کے کام پرنگائے گئے تھے اور تمازتِ آفاب میں بیمشقت کرتے کرتے آپ کے پیشاب میں خون آنے لگاتھا۔ دوتین دن بعدخودسيرنٹنڈنٹ نے شیخ محد شفیع اورمولانا يجيٰ علي كوسوت كھو لنے كے آسان كام پرلگاديا اورمولوی مجمد جعفرے کہا کہ ردّی کاغذیھاڑی چاٹر کرچوبتے میں ڈالتے رہا کرو بلکہ یہ بھی کہدویا کداس روی میں تمہارے ہاتھ کے لکھے ہوئے کاغذیمی ہوں گے،ایناول بہلانے

⁽۴) كالاياتي ص: ۲۸

کوانہیں بھی پڑھتے ہی رہو۔

مجيب الدين تخصيل دار

انبالہ جیل کے قید یوں میں مجیب الدین تحصیل دارساکن نارنول بھی تھا، جے رشوت ستانی کے جرم میں سرا اموئی تھی۔ غالبًا فرپٹی کمشنر کے ایماء پراس نے مقدمہ سکازش کے بعد اسیروں کو درغلا کر سرکاری گواہ بنانے کی کوششیں شروع کردیں۔ انگر بزوں نے مجیب الدین سے وعدہ کرلیا تھا کہ اگر وہ اس کوشش میں کا میاب ہوجائے گا تو سزائے قید معان کر کے اسے دوبارہ تحصیل دار بنادیا جائے گا۔ مولوی محم جعفر کو یہ حالات معلوم ہوئے تو اپنے ساتھیوں کو سمجھانا شروع کیا کہ ہماری و نیا تو خراب ہوگئی اب آخرت کو کیوں برباد کرتے ہو؟ مجیب الدین نے یہ حالات و کھے تو ذمہ دارا نگریز افسر سے کہددیا کہ جب تک تحمہ جعفر ، مولانا کی اور کیا علی موجود ہیں کوئی کوشش کا میاب نہیں ہوگتی۔ چنانچے مولوی محمہ جعفر ، مولانا کی علی اور میاں عبد الغفار کو دوسر سے قیدیوں کے ہمراہ لا ہور بھیجنے کا فیصلہ کرلیا گیا۔

بعداز ان مجیب الدین کی کوششیں کامیاب ہوئیں، پینے محد شفیع ہنٹی عبدالکریم، الہٰی بخش سوداً گر او ربعض دوسرے اصحاب سرکاری گواہ بننے پر آبادہ ہوگئے۔ انہیں کے بیانات کی بناء پرمولا نااحمداللہ کوسزا ہوئی اور انہیں کی شہادتیں بعدے مقد مات کو کامیاب بنانے کا ذرایعہ بنی رہیں۔

اللعظيم آبادكوترغيب

مولانا عبدالرحيم كواس لئے انبالہ جیل میں رکھا گیا كه شایدان كے ذريعہ ہے كھ كام نكل سكے۔ وہ خودا ہے امتحانوں میں سے ایک امتحان بہ بتاتے ہیں: كمشر صاحب وڈی كمشر صاحب كی خواہش ہوئی كہ بہ ذريعہ كمترین مولوی عبداللہ ساكن افغانستان سے پيغام مصالحت كيا جائے كہ جن سے بمقام امبیلہ وغیرہ سرکار سے جنگ ہوئی تھی اوروہ اس کمترین کے پچپاڑاد بھائی تھے۔(1)

مولانانے پھنہیں بتایا کہ پیغام مصالحت مولانا عبداللہ کو بھیجا گیایا نہ بھیجا گیا، بھیجا گیا، بھیجا گیا، بھیجا گیا تھا ہوں ہے گیا تھا ہوں ہے گیا تھا ہوں ہے گیا تھا ہوں ہے گیا تھا ہوں ہوئی تھی کہ مولانا عبداللہ کو راضی کر کے واپس بلالوتو نہ سرکار کی طرف سے تجویز پیش ہوئی تھی کہ مولانا عبداللہ کو راضی کر کے واپس بلالوتو نہ صرف صبط شدہ جائیدادیں بحال کردی جائیں گی بلکہ چھلا کھی نئ جا گیردی جائے گی۔ الل عظیم آباد نے جس طرح طوفانِ تربیب بیس ایمان کی کشتی محفوظ رکھی تھی اس طرح صرم ترغیب سے بھی قطعاً متاثر نہ ہوئے۔

يحيى على عبدالغفاراورجعفر

سیقیوں بزرگ دوسرے قید یوں کے ساتھ انبالہ سے پیدل روانہ ہوئے۔لدھیانہ کھلور، جالندھر او رامرتسر کے راستے لا ہور پنچے۔ پورے سفر میں ان کے بیڑیاں اور جھکڑیاں پڑی ہوئی تھیں۔ چند مہینے لا ہور سنٹرل جیل میں گزارے، پھر میل کے ذریعہ سے ملتان اور دہاں سے کشتی میں سوار ہوکرکوٹوی پنچے۔ وہاں سے دوبارہ ریل میں سوار کر کے کراچی پنچا دیے گئے۔ وہاں بھی تھوڑی دیر تھم رے رہے، پھر باد بانی جہاز میں بمبئی کے کراچی پنچا دیے گئے۔ وہاں بھی تھوڑی دیر تھم رے رہے، پھر باد بانی جہاز میں سوار گئے اور پچھ مدت تھا نہ جیل میں گزاری۔ ۸ر تمبر ۱۸۲۵ء کو بمبئی سے جمنا جہاز میں سوار بوئے اور چونتیس روز کے سفر کے بعد اار جنوری ۱۸۲۷ء کو بورٹ بلیئر (جزیرہ انڈیان) پہنچے گئے۔

مولا ناعبدالرحيم

مولا ناعبدالرجيم نے مزيد كچه وقت انباله ميس كز اركرايك سال آخه مهينے كى مدت

⁽۱) تذكرهٔ صادقه ص: ۲۸

لا ہور جیل میں گزاری۔ اُنہیں ضیق النفس کاعارضہ تھا۔ اس اثناء میں یہ عارضہ بہت تکیف دیتارہا۔ وہ بھی ریل میں ملتان ، وہاں سے شتی میں کوئوی ، پھر ریل میں کرا چی اور وہاں سے دخانی جہاز میں بہنگ ہے۔ بہبئ سے انڈ مان تک کاسفر شخت مصیبت خیز تھا۔ وہ فرماتے ہیں کہ تمام قید یوں کو جہاز کے نچلے حصہ میں ایک جنگلے کے اندر بند کر دیا گیا تھا۔ سیلون کے قریب پنچ تو ہر قید کی کو پہلے دوران سرکا عارضہ شروع ہوا پھر قے اور دست جاری ہوگئے ، نہ وہ بیچارے خود غلاظت صاف کر سکتے تھے نہ جہاز والوں کو صفائی کا پچھ خیال تھا:

ای میں شب وروز رہنا پڑتا تھا۔ میں اپنی نماز بنج وقتی ای نجس حالت میں بلاوضوو تیم کسی طور پراوا کر لیتا تھا۔(1)

خدا کی رحمت سے نیبی تائید کی ایک صورت پیدا ہوگئ۔ جہاز کا ایک خلاصی بخت بیار ہوا۔ کپتان کے پاس دوا کیں تھیں لیکن ڈاکٹر کوئی نہ تھا، محافظ پلٹن کا جمعدار شیخ قاسم مولا ناعبدالرجیم کوخواندہ محف سجھ کران کے پاس آیا، کیفیت بیان کی اور آئیس کپتان کے پاس آیا، کیفیت بیان کی اور آئیس کپتان نے دواؤں کی پاس لے گیا۔ مولا ناطب ہے آگاہ تھے، مریض کی حالت دیمھی، کپتان نے دواؤں کی الماری کھول دی۔ مولا نانے دوائیس سونگھ سونگھ کررفن بیدانجیر کی شیشی نکالی۔ اس میں الماری کھول دی۔ مولا نانے دوائیس سونگھ سونگھ کررفن بیدانجیر کی شیشی نکالی۔ اس میں سے ایک تولد کیکر سونف اور پود سے کا تھوڑ اھوڑ اعرف شامل کیا اور مریض کو پلا دیا۔ تھوڑ ی بی دیر میں اسے افاقہ ہوگیا۔ جمعدار نے مولا ناکسلئے کپتان کی منظوری سے اپنے قریب قیام کا انظام کرلیا اور اس کے باس سے کھانا ملنے لگا۔

طوفان کے باعث جہاز تیکس دن کے بجائے ایک مہینہ اور اکیس دن میں پورٹ بلیئر پہنچا۔

^{(1) &}quot;تذكرة صادقة" ص:١٦٢١، ١٦٤

سرکاری گواہوں کی حالت

مقدمہ انبالہ کے کل گیارہ قیدی تھے، جن میں سے قاضی میاں جان انبالہ ہی میں فوت ہو چکے تھے رمولانا یکی علی بمولانا عبدالرحیم ، مولوی محد جعفر اور میاں عبدالغفار انٹر مان پنچے ، وہاں کے سوائے ایک مستقل باب میں بیان ہوں گے، باتی قید یوں میں سے زیادہ ترسرکاری گواہ بن محلے تھے۔ان کی کیفیت اختصار آیہیں بتادین جا ہے:

ا - پینن محرشفیع: پیاس لا کھ کی جائیداد ضبط ہوگئ۔ سرکاری گواہ بن جانے کے بعد اسے رہا کردیا گیا۔ جائیدادواپس نہ ملی۔ ۱۸۲۵ء اور ۱۸۷۱ء کے مقدمات میں اس نے گواہی دی کل دوسال قیدرہا۔

۲-عبدالکریم: ڈیڑھ سال قیدرہا، پھر مختلف مقد مات میں اس سے شہاد تیں لی گئیں۔ ۲-عبدالغفور: اس کی قید لفشٹ گورنر نے گھٹا کر جس دوام کے بجائے دس سال کردی تھی۔اے ۱۸۷ء کے مقدے میں یہ بھی سرکاری گواہ تھا۔

۴-مینی تفامیسری:۱۸۷ء کے مقدمے میں سرکاری گواہ بنا بکل سات سال قیدر ہا۔ ۵-مینی عظیم آبادی: دس سال قیدر ہا ۱۸۷ء کے مقدمے میں اس نے بھی شہادت دی تھی ۔

۲- الهی بخش: به بھی سرکاری گواہ بن گیا تھا،مولا نااحمراللہ خال کے خلاف شہادت دی اور قید کی سزامعاف ہوگئی۔

يشخ الكل مياں نذبر حسينٌ

یہاں یہ جی عرض کردینا چاہئے کہ اس مقدے اور مولانا احمد اللہ والے مقدے میں جس کا ذکر آئندہ باب میں آئے گا ، شیخ الکل میاں نذیر حسین محدث و بلوی بھی بدف ابتلاء بنے میں صاحب مرحوم اہل حدیث کے سرتاج متے۔ اہل حدیث اور ' و با بیول''

کومتر اوف سمجھا جاتا تھا۔ مخبروں نے میاں صاحب کے خلاف بھی شکا پیش حکومت کے پاس پہنچا ئیں۔ ان کے مکان کی تلاثی ہوئی اور بہت سے خط پائے گئے جو ہندوستان کے مخلف حصوں سے آتے تھے۔ ان میں یا تو مسکلے پوچھے جاتے تھے یا مختلف وین کابوں کے مخلق دریافت کیاجا تا تھا۔ میاں صاحب ؓ ہے پوچھا گیا کہ آپ کے پاس اسے خط کیوں آتے ہیں؟ انہوں نے بے تکلف جواب دیا کہ بیسوال محط جھیجے والوں سے کرناچا ہے نہ کہ مجھ سے دایک خط میں مرقوم تھا کہ ''نخبۃ الفکر''اصول حدیث کی ایک کتاب) بھیج دیجئے رمجے ہے۔ ایک خط میں مرقوم تھا کہ ''نخبۃ الفکر''اصول حدیث کی ایک کتاب) بھیج دیجئے رمجے نے کہا کہ بینا تو ملال تے ہیں۔ میاں صاحب نے بیسا تو جلال میں تو گئے اور فرمایا:

نخبۃ الفکر کیا، توپ ؟ نخبۃ الفکر کیا، بندوق؟ نخبۃ الفکر کیا، گولہ بارود؟ (۱)

بہر حال آپ کو دہلی ہے راولپنڈی لے گئے اور وہاں کم وہیش ایک سال جیل خانے
میں نظر بندر کھا۔ وو آ دی ساتھ تھے، ایک میر عبدالغنی ساکن سورج گڑھ جو بڑے عابد و
زام بزرگ تھے۔انہوں نے جیل خانے ہی میں وفات پائی۔میاں صاحب نے خود جہیز
وتھین کی اور نماز جنازہ پڑھائی۔ دوسرے صاحب عطاء اللہ تھے جنہوں نے اس زمانے
میں پوری صحیح بخاری سبقا سبقا پڑھی اور قرآن مجید بھی حفظ کرایا۔ میاں صاحب نے
سرکاری لائبریری سے کتا بیں منگوانے کی اجازت لے لی تھی اور ان کا بیشتر وقت مطالع

راولپنڈی میں مجاہدین کے متعلق بہت سے کاغذات جمع کردیے گئے تھے، جن میں سے اکثر فاری میں متھے۔ شخص العلماء مولانا محرحسین آزادان کاغذات کی جانج پڑتال پرلگائے گئے تھے۔ وہ بھی دیر تک راولپنڈی میں مقیم رہے۔ ووق کے دیوان کی ترتیب

⁽١) المحيات بعدالممات يعنى ميان نزير سين كرموان حيات ص: ٨٣٨١

انہوں نے وجیں شروع کی تھی۔میاں نذیر حسین کے خلاف کوئی الزام پایہ ثبوت کو نہ بیٹی ہے۔ سکا تو تقریباً ایک سال کے بعد انہیں ابتلاء سے نجات لی۔

میاں صاحب کے صاحبزادے مولانا سید شریف حسین کے ایک کمتوب سے واضح ہوتا ہے کہ چیمبرلین صاحب تحقیقات پر مقرر ہوئے تھے، پہلے چند آ دمی دہلی آئے اور میاں صاحب سے مجاہدین یاان کے معاونین کے متعلق ہو چھا۔ انہوں نے جواب دیا کہ مجھے کچے معلوم نہیں۔ پھر چیمبرلین کے حتم سے انہیں بٹاور طلب کیا گیا۔ میاں صاحب بھاور پہنچ تو معلوم ہوا کہ چیمبرلین راولینڈی چلا گیا۔ چنا نچے میاں صاحب کوراولینڈی آ نا پڑا۔ اس اثناء میں چیمبرلین کسی سرکاری کام کے سلسلے میں انبالہ گیااور وہاں فوت ہوگیا۔ میاں صاحب اس کے قائم مقام کے انتظار میں راولینڈی ہی میں ضہرے رہے۔ قائم مقام کے انتظار میں راولینڈی ہی میں ضہرے رہے۔ قائم مقام نے انتظار میں راولینڈی ہی میں ضہرے رہے۔ قائم مقام نے میاں صاحب کی ابتلاء پر پانچ مہیئے گذر مقام رہے میاں صاحب کی ابتلاء پر پانچ مہیئے گذر خفا ہوا۔ یہ خطاس زمانے میں کھا گیا تھا جب میاں صاحب کی ابتلاء پر پانچ مہیئے گذر کے تھے۔ (۱)

⁽۱) مكاتيب تذريه من:۲۲۰

چھٹاباب:

عظيم آباد كاببلامقدمه

مولا نااحمه الله

مولا نا احمد الله کے ابتدائی حالات پہلے بیان ہو چکے ہیں۔ وہ اپ علم وضل ، زہد وتقدس ، نہم و تد ہر او ربلند عیشتی کے باعث بہت معزز ومحرّم مانے جاتے تھے۔ اس حقیقت میں کوئی شہنیں کہ انہیں و بنی مقاصد وعزائم سے گہری دل بنگی تھی ، کوئی نہیں کہہ سکتا کہ ان کے دل میں تحریک جہاد کے لئے زیادہ سے زیادہ ترثیب موجود نہ تھی ، لیکن سے می واقعہ ہے کہ انہوں نے ہراہ راست تحریک کی تنظیم میں قطعا قابل ذکر حصہ نہ لیا تھا ، اس کی وجہ یہ نہ تھی کہ حصہ لینے کی ضرورت محسوس نہ کی ، صرف بدوجہ تھی کہ ان کے بھائی اور عزیز قطر یہ اس کے حسب تحریک میں سرگری سے شریک ہو چکے تھے اور انہوں نے تنظیم و اجرائے جہاد کے ختاف ذمہ دارانہ مناصب سنجال رکھے تھے۔

ان حالات میں مولا نا احمد اللہ کے لئے بہی مناسب تھا کہ جائیداد کی تگرانی اورد کھے بھال میں گےر ہیں تا کہ اہل خاندان کی عام ضرور توں کے انتظام میں خلل واقع نہ ہو۔
بیان کیا جاتا ہے کہ انہوں نے صرف تھوڑی دیر کے لئے تنظیم کا کام سنجالا تھا جب ان
کے بھائی مولا تا بچی علی مقدمہ انبالہ کے سلسلے میں گرفتار ہو چکے تھے۔ گویا جس حد تک عملی
سرگرمیوں کا تعلق ہے، مولا نا احمد اللہ کے خلاف جومقدمہ قائم کیا گیا وہ حددرجہ کمزور تھا،
لیکن حکومت کے دل میں بزرگانِ عظیم آباد کے خلاف آیک خاص جذبہ عماد بھڑک اٹھا تھا
اور وہ جاہتی تھی کہ سید احمد شہید کے عقیدت مند خاندانوں میں سے کسی کو بھی ابا ہج اور

تاکارہ بنائے بغیر نہ چھوڑ ہے۔ مولا تا احمد اللہ اپنے ممتاز اوصاف کی بنا پرسب سے بڑھ کر تو جہ کامرکز بنے ہوئے تھے۔ ان کے خلاف زبردست گواہ پیدا کر کے ایک خوفناک مقدمہ قائم کیا گیا۔ اس سلیلے میں دھمنی کی آگ کو ہوا دینے کا زیادہ ترکام ولیم ٹیلر نے انجام دیا، جسے ۱۸۵۵ء میں مولا تا احمد اللہ کی نظر بندی کے باعث کمشنری کے عہدے سے استعنی وینا پڑا تھا اور وہ عظیم آباد ہی میں وکالت کررہا تھا۔ (۱)

مقدمے کی کیفیت

اس مقدے کی مفصل روئداد کہیں ہے ندال سکی ۔ ہمیں صرف اتنا معلوم ہے کہ مقدمہ انبالہ کا فیصلہ ہو چکا تو حکومت مولا نا احمد اللہ کی سزاد ہی ہیں سرگرم ہوئی ، گرفتاری کے بعد انہیں سب ہے پہلے مسٹر منرو (MUNRO) منصر مجسٹریٹ کی عدالت میں پیش کیا گیا۔ پھر حسب دستوران کا مقدمہ مسٹر اینسلے (AINSLIE) سیشن جج کے سرد ہوا۔ شخ محرشفیج ہنشی عبد الکریم اور الہی بخش سودا گراسیر انِ مقدمہ انبالہ کے علاوہ ولیم ٹیلر موا۔ شخ محرشفیج ہنشی عبد الکریم اور الہی بخش سودا گراسیر انِ مقدمہ انبالہ کے علاوہ ولیم ٹیلر کی کوششوں سے مقامی آدمیوں نے بھی مولا نا کے خلاف گواہیاں دیں۔ مولا نا مسعود عالم مرحوم لکھتے ہیں:

ا نے مقد ہے کی ساری کارروائی اور فیصلدراتم کی نظر سے گذر ہے ہیں۔ پورامقدمہ بنایا ہوامعلوم ہوتا ہے۔خود حکام کواس بات کا اقرار ہے کہ البی بخش (ملزم انبالہ) کی شہادت کے بغیر مولا تا احمد اللہ کی سزایا بی مشکل تھی۔ (۲)

⁽۱) جرال بھی ایٹیا تک موسائی کے ایک مضمون میں بتایا گیا ہے کہ جب مولانا انداللہ کے مکان کی حاقی کی گئی تو انہوں نے سات سوآ دی جمع کر لئے تھے اوروہ مجسل یٹ کے مقابلے کے لئے تیار تھے۔ (جلد چہاردہم می:۳۵۱) لیکن میرے نزدیک سولانا کی عام روش کو ایکی بنگامہ جوئی ہے کوئی مناسبت ندیمی اور بیسراسرافتر ام ہے جو کس نے مولانا کو مجمع بابت کرنے کے لئے وضع کیا۔

⁽٢) بندوستان كى پلى اسلائ تحريك اطبع دوم عن ١٣٢١١٣١ باقى حاشيدا كلي صفر ير

مولا نا احد الله ك فرزندار جمند علامه حكيم عبد الحميد في اس ابتلاء كم متعلق" شهر آ شوب' کے نام سے ایک مثنوی کھی تھی جس میں بتایا گیا ہے کہ مولا ناسے ایک سال پیشتر ان کے چھوٹے بھائی محمہ یخیٰ علی کوانبالہ میں سزا ہو چکی تھی۔رمضان ۱۲۸ا ھے کہ آخری تاریخ (۲۷ فروری ۱۸۲۵ء) کومولا تا کے لئے سزا کا تھم صادر ہوا۔معلوم ہے کہ پہلے مبلی حائداد كے علاوہ بھانسي كى سزاكا فيصله سنايا كيا بھراہے صبس دوام ميں بدل ديا كيا۔ (١) '' تذکرۂ صادقہ'' میں مرقوم ہے کہ مولانا کی گرفقاری کے وقت جوانگریز عظیم آباد میں ججی کے عہدے بر مامور تھا وہ نہایت منصف مزاج ،عادل او رئیک طینت تھا۔ حاسدوں نے سمجھا کہ جب تک مدجج رہے گا مقدمہ سرسبر نہ ہوگا۔ چنانچہ اسے بدلواکر دوسراجج مقرر کرایا گیاجومولا ناکے مزاج اور طبیعت سے بالکل ناواقف تھا۔

مولا نا كاصبر واستنقامت

حكيم عبدالحميدصا حب فرمات جي كداال شهريس سي كي لوك مولانا ك خلاف سرگرم عمل رہے۔

ہم چناں نام زنگی کافور زان کیے دل سیاہ و نامش نور به مراتب ازان کد و خربه وان دگر رایش گاو و تن فربه

مولا نا کو چیانسی کا حکم سنایا گیا تو ان بر قطعاً کوئی پریشانی طاری نه ہوئی، بالکل یہی كيفيت مولا نايجي على كي بهوني تقي:

..... گذشته خد کا بقیدهاشیه ۱۳ سلط مین مولانا نے مسر کاک برن کمشنر کے مراسلے بنام بیکریٹری حکومت بنگال مرقومہ ۱۲ مرک مام کا حوالہ دیا ہے۔ بقینا الی بخش جیسے ملص کارکن کامولانا کے خلاف کوائی دینے کے لئے تاربوجا تابوای افسوی ناک تھا، خصوصا اس بناء پر کہموالا ناموصوف نے موالا نامجیٰ علی کی طرح کیمی تحریک میں سرمرم

نه کے دیدہ برجبین شال چیل نور ایمال زروئ شال روش کوو صبر و در استقامت فرد نه ملول از اجل نه شاد از زیست نه در تیخ و تفک غم و وسوال رنگ بردار صبغة الله اند مر دن کس به جز تصور نیست که نوشتد تیم صبس دوام قربت و جلائے وطن مردہ خواندن خلاف ضابطہ است صبس دائم بود خلیفہ موت

روزیهم قصاص ظلم قری تار نمرود پیش شال گلشن بر دو در خوبی و سلامت فرد خلق از حالی شال به بوانجی است نه به دل شال زدار بیم و براس نه برستندهٔ زر و جاه اند ساغر زندگی اگر پر نیست ساغر زندگی اگر پر نیست ماغر زندگی اگر پر نیست دور از خانمال جدا از زن تاکه جال را به جیم رابطه است بم چنال ماندلیک صدمهٔ فوت بم چنال ماندلیک صدمهٔ فوت

جائداد كى شبطى

مصیبت محض یہ نہ تھی کہ ان بزرگوں کو عبس دوام کی سزا ہوئی۔ یہ قید کی تکلیفیں صابرانہ برداشت کر سکتے تھے لیکن جائیدادوں کی ضبطی کے باعث ان کے بال بچے بے خانماں کردیے گئے تھے، اور ان کیلئے نہ کہیں سرچھپانے کو جگہ تھی، نہ گزارے کا کوئی انظام تھا، نہ ان میں سے کوئی بالواسطہ یا بلا واسطہ مین وشریک جرم سمجھا جا سکتا تھا۔ مسٹر راون شا (RAVENSHAW) نے اپنی رپورٹ میں لکھا ہے کہ عظیم آباد کے مسلمانوں نے منقولہ جائیدادوں کی بولی نہ دیے پراتھاتی کر لیا تھا، بدایں ہمہ جوش انتقام میں لاکھوں کی جائیدادوں کی بولی نہ دیے گئیں۔ ۱۹۳۹ء میں یعنی نیلا می سے کم وہیش پچھپتر سال کی جائیدادوں کی کیفیت وریافت بعدھاجی پورے دیماتی صلفے کے مبرمسٹر بدرائحن نے ان جائیدادوں کی کیفیت وریافت

ک تھی، جواب میں کرشن بلہھ سہائے نے جو کچھ بتایا، اس کا خلاصہ ذیل میں درج ہے۔ حاسد دغیر منقولہ:

| روپيي | آنہ | پائی | | |
|-------|-----|------|------------------|---|
| PPANI | | • | مولا ناعبدالرجيم | _ |
| k+.4+ | ۴ | • | مولا نا يجيٰ على | ٢ |
| ۵۸۷۷۲ | ۴ | • | مولانااحدالله | ٢ |
| 252.5 | ٨ | • | ميزان | |

جائيدادمنقوله:

| روپي | آنہ | پاک | | |
|-------|-----|-----|------------------|---|
| rmr | | 10 | مولا ناعبدالرحيم | _ |
| מחר | • | ٠ | مولانا يحيٰ على | ٣ |
| 1012 | ır | 9 | مولانا احدالله | ٣ |
| mmd4. | 19 | 19 | ميزان | |

واضح رہے کہ جائمیدا دمنقولہ میں متیوں بزرگوں کی کتابیں ، مکانوں کا فرنیچر ، یکے گھوڑے ،سنہری اوررو پہلنے زیور ، پالکیاں وغیرہ نہایت بیش بہاچیزیں شامل تھیں اور یہ چیزیں بہت زیادہ قیمت کی تھیں پھر ان کے مکان مسمار کرادیے گئے اور ان کے محلے صادق پور کا احاطہ بلد بیظیم آباد کو دے دیا گیا۔اس میں وہ جگہ بھی شامل تھی جے'' قافلہ'' کہاجا تا تھا،اس لئے کہ وہاں مجاہدین اور جماعت کے کارکن تھہرا کرتے تھے۔(ا) وہاں کہاجا تا تھا،اس لئے کہ وہاں مجاہدین اور جماعت کے کارکن تھہرا کرتے تھے۔(ا) وہاں اسلام اللہ کے کہاجا تا تھا،اس لئے کہ وہاں مجاہدین اور جماعت کے کارکن تھہرا کرتے تھے۔(ا) وہاں کہاجا تا تھا،اس لئے کہ وہاں مجاہدین اور جماعت کے کارکن تھراکر دی گئی ہے۔

بلدىيى عمارت قائم موئى _

اہل وعیال کی بے بسی

عید کے دن اہل وعیال کومکان سے نکال دیا گیا۔ تکیم عبدالحمید فرماتے ہیں:

 چول شب عید را سحر کردند صبط و تاراج جمله مال و متاع بیر ما بود آه جرم سخت من نه تنها که که جمر بیم تن با (مین اکیلانه تعابله جمراه بهت لوگ شے احمدالله بود مجمم شاه راحمدالله عکومت کا مجرم سبی مایئه عیش ساز ماتم شد (حاری زندگی کا سرمایه ماتم کا سامان بن گیا زنده بودم و لیک مرده صفت (یقینا می زنده تمالیکن مالت مرددل کی کاتی

حکیم صاحب طبابت کرتے تھے اور انہوں نے مستقل دوا خانہ قائم کرر کھا تھا، وہ بھی پورے کا بور امع ادو بیشبطی میں آگیا۔ گویامعمولی روزی کا سامان بھی ختم ہوگیا۔

عاجز از اکساب و وجدِ معاش بی ابی دوزی پیداکرنے سے مردم ہوگیاتھا) دست بشکستہ بائے در زنجیر ولم از زخم زخم غم قاش (میرا دل زخوں سے کلاے کلاے تھا بستہ از چار سو در تدبیر

(١) ذرانقور يجيئ كرعيد كرن أنعين نكالا كيااوركسي كوسوئي تك الفان في اجازت في ا

باتھاڑ نے ہوئے اور یاؤں زنجروں میں مکڑے ہوئے)

(جارول طرف سے تدبیر کے دروازے بند تھے

فرماتے ہیں کہ جوسامان ضبط ہوااس میں نادر چیزیں اور پار چہ جات تھے۔سب میرد مدکر درنج کتابوں کا تھا:

رفت ور دست حرف ناخوانال ناخواندہ لوگوں کے باتھ بڑگئیں) مال یغما کرا عزیز بود كەلوث كامال كن لوگول كوعزيز ہوتاہے) دل بے رحم و دولت مفت است مال مغت ول ہے رحم) باغ ما و منازل دلچیپ باغ اور عده مكان) که به سمیتی بود عدیلش کم جن کی مثال زمانے میں کم لیے گی) روز وشب مشتغل به درس علوم رات دن علم بر صنے میں مشغول رہتے تھے) بیل زن کرده منهدم نیکسر بلیح والوں نے کے قلم ڈھادی) که مر اشیشه در جگر بشکست کہ میرے مگر میں شیشہ گڑے کھڑے ہوگیا) یاک رفتند چون خس و خاشاک

كتب لمت ملماناں (ملمانوں کی ندہبی کمامیں داند ایں ہرکہ باتمیز بود (صاحب تميز جانا ہے راست گوینده این مثل گفت است (می کہنے والے نے بید مثل کمی ہے اشتر و قبل و گاه استر و اسپ (اون باللمي كاكي، خچر، محورث آن بنابائے شامخ و محکم (وه بلند و مضبوط عمارتیس اندر آں خانہ طالباں چو نجوم (ان عمارتوں میں طالب علم ستاروں کی طرح جمله دبوار و سقف و خانه و وَر (تمام د بواری، چھتیں،مکان اور دروازے آن ممارت نه تخردتر بشكست (وه ممارت ريزه ريزه نه بيوني، کېزا جا يخ خانه را آل جماعت سفاک

محویااس میں جو کچھ تھاوہ خش د خاشاک تھا ﴾

(ظالموں نے گھر کواس طرح صاف کردیا

آخر میں اپنے آپ کو صبر کی تلقین کرتے ہیں، خدا کی بارگاہ میں دعاء کی ہے کہ تو زمانے کا کارساز اور مالک ہے۔ تو نے حضرت ابوب کو مصیبتوں سے رہا کیا، حضرت بعقوب اور حضرت بوسف کو ملادیا:

نہ جز ایں بیج مدّعا دارد اس کے سوا کوئی آرزو نہیں) اس کے سوا کوئی آرزو نہیں) مین مین کی مدّعا دارد مین کی مد می کاردو کائزانہ بنادے کو دیدار میں کاردو کی میں کاردو کی کاردور کاردور کی کاردور کی

از تو روز و شب این دعاء دارد
(مین بھی رات دن تھے سے دعاء کرتا ہوں
رنج را مائی نجاتم کن
جورنج میں نے اٹھائے ہیں آئیس میری نجات کا
مجتبع ساز و خانہ آبادم
(ہم کو اکٹھا کردے گھرکو آباد کر

کی معلوم نہیں کہ مولا نا احمد الله عظیم آباد ہے کب انٹر مان گئے۔ صرف اتنامعلوم ہے کہ دہ مولا نا بھی علی مولا نا عبد الرحیم ، میاں عبد الغفار ادر مولوی محمد جعفر ہے بہت پہلے مار جون ۱۸ ۲۵ ءکو دہاں بہنچ گئے۔

ساتواں باب:

مالدہ اور راج کل کےمقد ہے

مركز عظيمآ باد

بلا شبہ مجاہدین کو مدد بہنچانے والوں کے خلاف سخت دارو گیرشروع ہوگئ تھی ،انبالہ اور عظیم آباد کے مقدمول میں ملزموں کو حدورجہ مول انگیز سز اکیں دینے کا مقصد یبی تھا که تمام کارکنوں پر ہراس طاری ہوجائے اوروہ امدادی کا مچھوڑ دیں کیکن معاملہ مسلحت کا ند تھا، بیتھا کہ جوکام دین میں اصو کی و بنیادی لحاظ سےضروری ہےاہے بہر حال انجام یا نا چاہئے ،خواہ کتنی ہی مشکلات پیش آ جا کیں۔اس وقت مسلمانوں میں ایسے غیور وجسور افراد بہت کم رہ گئے تھے جو حکومت کی دارو گیرے بے پرواہ موکر بیفرض انجام دیے ر ب، تاہم ہرمرکز کوسنجالنے کیلئے مردان کارسامنے آتے رہے۔مثلاً مولانا احدالله کی مر فقاری اور سزایا بی کے بعد مرکز کوسنجا لنے والا کوئی ندتھا، اس کام کا بیڑ امولا تا مبارک علی نے اٹھالیا۔اس بزرگ کاوطن حاجی پور (ضلع مظفر بور، بہار) تھا اوروہ غالبًا مولانا ولایت علی یا مولا نا فرحت حسین ہے بیعت ہوئے تھے۔ بیعت کے ساتھ ہی اپناوطن مالوف چھوڑ كر تنظيم ميں امداد كے لئے عظيم آباد ظهر سے مولانا امسعود عالم فرماتے ہيں: ''عجیب قیامت کا سال تھا۔ان حالات بیں مولوی مبارک علی صاحب نے جان جو تھم میں ڈال کر تنظیم جماعت کا کام اینے ہاتھوں میں لے لیا اور ایک عرصے تک اپنا فرض حسن وخونی کے ساتھ انجام دیتے رہے۔مقد مات

سازش کی پیروی میں انہوں نے مولوی محمد حسن صاحب ذبیج کا ہاتھ بٹایا۔(۱) بالکل یمی کیفیت دوسر مرکز ول کی تھی۔

ہنٹرکابیان

اس امر کی تقد یق ہنٹر کے بیان سے ہوتی ہے وہ لکھتا ہے:

" الم ۱۸ ۱۳ اور سازش سے عہدہ برآ ہونے کے لئے حکومت کوایک خاص محکمہ جاری رہی اور سازش سے عہدہ برآ ہونے کے لئے حکومت کوایک خاص محکمہ قائم کرنا پڑا ۔ بیسطریں میر دقلم کرنے کے وقت ' وہا ہوں'' کی دیکے بھال کرنے اور انہیں جائز حدود کے اندرر کھنے پرصرف ایک صوبے میں جو پچھ خرچ ہور ہا ہو وہا تا ہے کہ ایک ایسے برطانوی ضلع کے دیوانی اور فوجداری انتظامی مصارف کے لئے کفایت کرے جس کی آبادی پورے اسکاٹ لینڈ سے ایک مصارف کے لئے کفایت کرے جس کی آبادی پورے اسکاٹ لینڈ سے ایک تہائی ہو فقنداس درجہ پھیل چکا تھا کہ بعد چلانا مشکل تھا، انسداد کا کام کہاں سے شروع کیا جائے ہرضلع کامرکز (تنظیم مجاہدین کامرکز) ہزاروں کنیوں میں ہے جوائی اور بدامنی پھیلاتا ہے ۔ناظم مرکز کے خلاف امکانی شہادت آئیں لوگوں سے مل سکتی ہے جواسکے ہاتھ پر بیعت کر چکے ہیں، اگلی کیفیت سے کہ لوگوں سے مل سکتی ہے جواسکے ہاتھ پر بیعت کر چکے ہیں، اگلی کیفیت سے ہے کہ ایٹ مرشد کاراز فاش کرنے کے بچائے مرجانے وتر جیح دیں گے۔ (۲)

مركز مالده

مرکز مالدہ کی بنیاد ہنر کے بیان کے مطابق ۱۸۴۰ء کے لگ بھگ پڑی تھی ۔اس بیان کامفادیہ ہے کہ مولانا ولایت علی کے ایک خلیفہ عبدالرحمٰن لکھنوی ضلع مالدہ میں

⁽۱) ہندوستان کی مہن**ی اسلامی تر یک بلیع** دوم ص: ۱۰۸،۱۰۷ اوپر بتایا جاچکا ہے کہ مولوی تحریسان ق^{سیع} مولانا ولایت علی کے سب سے **چیوٹے صاحبز اوے تھے۔**

⁽۲) بندوستانی مسلمان انگریزی ص ۹۳:

تشریف لائے۔ انہیں حالات سازگار معلوم ہوئے تو ای ضلع کے ایک گاؤں میں مدت کلی سفرے رہے۔ ایک مقامی خاتون سے شادی کرلی اور مدرس کی حیثیت میں کام کرتے رہے۔ گاؤں میں چھوٹے چھوٹے زمیندار رہتے تھے، ان کے بیچے مولوی عبدالرحمٰن کے پاس تعلیم پانے لگے۔ بالفاظ ہنر مولوی صاحب برے پر جوش اور پر تاخیرا نداز میں لوگوں کو جہاد کی دعوت دیتے اور ان سے با قاعدہ اعانتی رقیس وصول تاخیرا نداز میں لوگوں کو جہاد کی دعوت دیتے اور ان سے با قاعدہ اعانتی رقیس وصول کرتے۔ سال برسال جمع شدہ رقیس اور فراہم شدہ آدی اس غرض سے عظیم آباد تھیج دیتے کہ آئیں سرحد میں پہنچانے کا انتظام کردیا جائے۔ (۱)

مولوي اميرالدين

مولوی عبدالرحمٰن کے ماتحت رقیس فراہم کرنے والوں میں ایک صاحب رفیق منڈل تھے جن کے متعلق ہنر نے تکھا ہے کہ آئیس فراہم شدہ رقم کا ایک چوتھائی حصہ حق مخصیل کے طور پر ملنا تھا۔ رفیق منڈل نے مدت تک کام بے ظلل جاری رکھا، ۱۸۵۳ء میں اس کے متعلق شبہات پیدا ہوئے ، تلاشی لی گئی تو ایسے خطوط برآ مد ہوئے جن سے علی اس کے متعلق شبہات پیدا ہوئے ، تلاشی لی گئی تو ایسے خطوط برآ مد ہوئے جن سے ثابت ہوتا تھا کہ مرکز مجاہدین سے اس کا تعلق ہے ، چنا نچہ اس کی گرفتاری عمل میں آئی۔ تھوڑی دیر بعد اس نے رہائی پائی اور جماعتی کارو بارا ہے فرزند مولوی امیر الدین کے حوالے کردیا۔ (۲)

مولوی امیر الدین نے انتہائی سرگری سے کام جاری رکھا، اور بجاہدین کے لئے آ دی فراہم کرتے رہے۔ صرف ان کی گرفتاری پریہ کام زکا۔ ہنٹر کابیان ہے کہ مولوی صاحب

⁽۱) ہندوستانی مسلمان انگریزی جس:۵۱

⁽۷) ہندوستانی مسلمان 'انگریزی بص: ایم۔ مولانامسعودعالم نے فدا جائے کس بناپر کھودیا کہ ہنر نے مولوی امیر الدین کوعبدالرحمٰن کافرزند بتایا ہے، حالا تکداس نے مولوی صاحب کورفیق منڈل ہی کافرزند بتایا ہے۔ 'منڈل' بنگال وبہار جس غالباً وہی معنی رکھنا ہے جود کن اور وسط ہند عین 'فیل'' کے اور ہمارے یہال' ممیرواڈ' کے ہیں۔

کاصلقہ کار پورے ضلع الدہ کے علاوہ متصلہ اصلاع میں سے مرشد آباد اور راج شاہی کے بعض حصوں پر بھی مشتمل تھا۔ دریائے گنگا کے دونوں کناروں اور اس کے جزیروں میں بسنے والے مسلمان مولوی امیر الدین کو بہت عزت واحترام کی نظر سے دیکھتے تھے۔ بیبتانا مشکل ہے کہ مولوی صاحب نے کل کتنے آدمی فراہم کیے، لیکن مجاہدین کی ایک چوکی کے علیہ میں سے کم وہیش دس فیصد موصوف ہی کے علقے سے گئے تھے۔

فراجمي زر كے طريقے

ہنٹر لکھتا ہے کہ مولوی امیر الدین چار ذریعوں سے روپی فراہم کرتے تھے۔

ا- زكوة كى تمام رقيس ان كى خدمت ميں پيش كى جاتى تھيں۔

۲- صدقات کا پورارو پیان کے پاس آتاتھا۔

سا - عیدالفطر کے موقع پرمسلمان به طور فطرانہ جو کچھ دیتے ہیں وہ بھی مولوی صاحب بی کے یاس جمع ہوتا تھا۔

۳- ان تین ذریعوں کے علاوہ مولوی صاحب نے عکم دے رکھا تھا کہ ہرگھر میں کھانا پکاتے وقت کنبے کے ہر فردی طرف ہے ایک ایک مٹھی چاول الگ رکھے جا کیں اور ہر جمعہ کو جمع شدہ جنس اس شخص کے حوالے کردی جائے جو گاؤں سے رقمیں وصول کرنے کاذمہ دار ہو۔(۱)

ظاہرہے کہ اس طرح لوگوں کورو پیریاجنس دیے میں چنداں تکلیف محسوس نہ ہوتی تھی اور تھوڑی تھوڑی رقمیں یاجنس جمع ہو کرمعند بدامداد کی شکل اختیار کر لیتی تھیں۔ ویہاتی مخصیل داروں پر بڑے تحصیل دارمقرر تھے جوسال بحرمیں کم از کم ایک مرتبہ ضرور پورے علقے کا دورہ کرتے تھے۔ اس طرح وعظ وتبلیغ کا کام بھی انجام پاتا تھا اور لوگوں میں

⁽۱) ہندوستانی مسلمان احمریزی چس: ۲-2m

خدمت دین کا جذبہ بھی تازہ رہتا تھا۔ ہٹر نے لکھاہے کہ مولا ناولایت علی ، مولا ناعنایت علی اور مولوی صاحب علی اور مولا نافیاض علی بھی مولوی امیر الدین کے پاس قیام کر پچکے تھے اور مولوی صاحب کا اصل وطن نارائن بور تھا۔ (1)

راون شاکے بیان سے معلوم ہوتا ہے کہ رفیق منڈل کے تین صاحبز اوے تھے ایک مولوی امیر الدین، دوسرے مولوی شکور محمد جومجاہدین بیس شامل ہوگئے تھے، تیسرے صاحب زادے کا پورا حال معلوم نہ ہوا ،کین ریم معلوم ہے کہ اس نے مضافات میں تبلیغ و تخصیل کا انتظام سنجال لیا تھا۔ (۲)

مقدمه مالده

مولوی امیرالدین اوران کے رفیقوں کا رازمولا نا احمد اللہ کے مقدمے میں فاش ہو چکا تھالیکن خاصی دیر تک ان کے خلاف کوئی قدم نہ اٹھایا گیا۔ بیز مانہ غالباً تحقیق وتفتیش میں بسر ہوا۔افسوں کہ اس مقدمے کی رو کداد نہ اس کی۔ہم صرف بیجانتے ہیں کہ مولوی امیرالدین پنبہ میں گرفتار ہوئے ،ان کے خلاف بغاوت کا مقدمہ دائر کیا گیا جہس دوام بہ عبور دریائے شور اور شبطی املاک کی سزا ملی۔ مارچ ۱۸۷۲ء میں وہ انڈ مان پنجے مزید حالات دوسرے بزرگول کی سرگزشتہ اسیری کے سلسلے میں بیان ہوں گے۔

مقدمهراج محل

مقدمه کالدہ کے فوراً بعد ابراہیم منڈل ساکن اسلام پور (نواح راج کل) (۳) کے خلاف مقدمہ قائم کردیا گیا۔ یہ بزرگ بڑے غیور، دین دار تھے۔ بزرگانِ عظیم آباد

⁽۱) ہندوستانی مسلمان انگریزی میں:۸۷ ۵۰۷

⁽۴) ہندوستان کی پہلی اسلام تحریک طبع دوم میں:۵۳ ا

⁽٣) راج كل ببلط الدويس تفا كرمرشدة باديش هم موكياءة ج كل سنقال بركديس شامل ب

سے ان کا تعلق تھا۔ رائی محل کے پورے علاقے بیں ان کے تقوے، دین داری اور جوش میں سے اسلام کی دھاکہ بیٹی ہوئی تھی۔ یقین ہے کہ یہ جماعت بجابدین کا کام بڑی سرگری سے کرتے ہوں گے لیکن نہ اسکی تفصیلات معلوم ہیں نہ مقدے کی روئدا دہار سامنے آئی، صرف اتنامعلوم ہے کہ ابراہیم منڈل کو اکتوبر الماء میں جبس دوام بیجور دریائے شور اور ضبطی الملاک کی سرز اہوئی تھی۔ البتہ انہیں انڈ مان نہ بھیجا گیا۔ کچھ بیس بتایا جاسکتا کہ اس کی وجہ کیا ہوئی۔ مولا تامسعود عالم کے بیان کے مطابق رسالہ اشاعت النہ میں مرقوم ہے کہ ابراہیم منڈل کو لارڈلٹن کے تھم سے ۱۸۵۸ء میں رہاکر دیا گیا تھا ان کا انتقال موجودہ صدی کے اوائل میں ہوا۔ ان کا پوتا زندہ ہے اور ایسے لوگ بھی موجود ہیں جنہوں نے ابراہیم منڈل کو دیکھا تھا۔ اسلام پور اور اس کا نواجی علاقہ آج بھی دین داری اور اظل قی برتری کے لحاظ سے ممتاز ہے۔ حکومت کی طرف سے مسٹر او کنلے نے داری اور اظل قی برتری کے لحاظ سے ممتاز ہے۔ حکومت کی طرف سے مسٹر او کنلے نے مقدمہ کالدہ اور مقدمہ کرائی میروی کی تھی۔ (۱)

⁽۱) مندوستان کی میل اسلام تحریب ۱۵۳۰ - ۱۵۹

آتھواں باب:

عظیم آباد کا دوسرامقدمه (۱)

أفخرى بزامقدمه

مجاہدین کے خلاف آخری بردامقد مدا ۱۸۷ء میں بمقام عظیم آباد دائر ہوا۔ اس میں سات ملزم تھے: پیرمحد، امیر خال، حشمت داد خال (۱) ، مولوی مبارک علی ، مولوی تبارک علی (ابن مولوی مبارک علی) ، حاجی دین محداد رامین الدین ۔ ان میں سے مولوی مبارک علی کے پچھے حالات پہلے بیان کیے جا بچے ہیں ، مولوی تبارک علی کے خلاف بیالزام تھا کہ وہ مولا نا عبداللہ کے ساتھ جنگ امبیلہ میں شریک رہے اورایک دستے کی کمان اُن کے ہاتھ میں شریک رہے اورایک دستے کی کمان اُن کے ہاتھ میں شریک رہے اورایک دستے کی کمان اُن کے ہاتھ میں شریک رہے اورایک دستے کی کمان اُن کے ہاتھ میں شریک رہے اورایک دستے کی کمان اُن کے ایم خال اور حشمت داد خال کے حالات آگے بیان ہوں گے۔

اس مقدے کی ابتدائی ساعت مسٹر باربور (BARBOUR) منصرم جوانک محسٹریٹ کی عدالت میں کیم مارچ اکام او کوشر وع ہوئی۔ ۱۹۲۷ مارچ کوملزموں پر فرد جرم عائد کر کے انہیں سیشن سپرد کیا گیا۔ کیم مگ سے مقدمہ کی ساعت مسٹر پرنسپ عائد کر کے انہیں سیشن سپرد کیا گیا۔ کیم مگ سے مقدمہ کی ساعت مسٹر پرنسپ (PRINCIP) جج نے شروع کی۔ حکومت کی طرف سے آیک سوچھتیں گواہ تھے، لیکن ایک سوتیرہ چیش ہوئے اور چھالیس آ دمیوں نے ملزموں کی طرف سے شہادتیں دیں۔ بچ میں کھودیر کے لئے ساعت ملتوی بھی ہوتی ربی عالبًا اے ۱۸ میں مقدے کا فیصلہ ہوا۔

⁽¹⁾ انبیں عام لوگ حتم داد خال لکھتے ہیں مجھے نام حشمت داد خال ہے۔ ان کے مفصل حالات آئندہ باب میں بیان ہوں ہے۔

حشمت دا دخال اوراميرخال

حشمت دادخال اورامیرخال دونول خانان میوات میل سے تھے۔حشمت دادخال بن نجف خال قصبداندور خصیل تجارہ ریاست الورکا تھااور بابر کے مشہور تریف حسن خال میواتی کے اخلاف میں سے راجا جلال خال کی نسل میں سے تھا۔ ۱۲۵۰ھ (۱۸۳۵ء) میں اس نے حبیب اللہ خال خانزاوہ ساکن محلّہ سلطان تیج عظیم آباد کی شرکت میں چر سے میں اس نے حبیب اللہ خال خانزاوہ ساکن محلّہ سلطان تیج عظیم آباد کی شرکت میں چرال خال خال میں اس خوال نے اس زمانے میں جہان خال کے ساتھ مل کر معلیم آباد کے محلّہ عالم تیج میں ایک خوب صورت مجد تھیم کر ائی جواب تک حشمت دادخال کی معجد کہلاتی ہے

كلكته ميں مركز تجارت

۱۹۵۵ء میں جہان خال کا انقال ہو گیا اور اس کے جیے امام علی خال نے ناتجر بے کاری ہے آ ڈھت کا کارو بار تباہ کرلیا۔ حشمت داد خال، امیر خال اور زور آ ور خال (۱) نے اس کر کلکتہ میں اپنی آ ڈھت قائم کرلی۔ پہلے ایک گودام کرائے پرلیکر کام چلا یا بعد میں اپنا گودام بنالیا اور ایک خوب صورت سدمنزلہ کوشی محلّہ کولوٹو لہ میں تغییر کرائی، جس پر کثیر رقم خرج ہوئی۔ یہ ۱۲۷ھ (۵۳ – ۱۸۵۳ء) میں تکمیل کو پینی ۔ امیر خال زیادہ تر و ہیں رہتا تنالیک عظیم آ بادی سکونت بھی ترک نہ کی، کار د بار بہت تر تی کر گیا اور یہ لوگ نامی گرامی سودا کرین گئے۔

١٢٢١ه (٢٠-١٨٥٩ء) من حشمت دادخال نے عج كيا۔ واپس آكركاروباركى

⁽۱) زورآ درخال بھی بہت بڑا تا جرتھا ہے ٹرھت میں اشتر اک سے علادہ امیرخال کی عظیم آباد دالی دکان کا ناظم و کارندہ بھی تھا، نیز اس نے بھا مجبور جیل پور، گورکھپور وغیرہ میں دکا نیس قائم کررکھی تھیں۔ ۱۲۸۱ھ (۱۸۲۵ء) میں وفات پائی۔

الگ شاخ بھی قائم کرلی۔عظیم آباد کے گردونواح میں چڑے کے بہت سے گودام بنالیے اور مشتر کہ آڑھت کے علاوہ کلکتہ میں اپنی جدا گانہ آڑھت کا سلسلہ بھی شروع کردیا۔ ۱۲۸۱ھ (۱۸۲۴ء) میں زور آور خاں کا انقال ہو گیا۔ اس کے بعد حشمت داد خاں اور امیر خاں کے خلاف مقدمہ دائر ہواجس کی تفصیلات آئندہ بیان ہوں گی۔

داستانِ ابتلاء

امیر خال پراہلاء کا آغاز ۱۸۲۳ء کے مقدمہ انبالہ سے ہوا تھا، اس لئے کہ اہل عظیم
آباد کی ہنڈیوں میں سے ایک ہنڈی امیر خال کی دکان کے ذریعے سے بھی آئی تھی،
چنانچہ کپتان پارسنز کلکتہ گیا تو اس نے امیر خال کی دکان کی تلاثی بھی لی۔(۱) کہتے ہیں
کہ خان موصوف کو گرفتار بھی کیا گیا تھا۔ یہ امریقینی ہے کہ اس کا مشی مصاحب علی اور
شریک کارزور آور خال مقدمہ انبالہ کے گواہوں میں شامل تھے۔

امیر خان اور حشمت داد خان کی دین داراند زندگیون کو پیش نظر رکھتے ہوئے دائو ق سے کہا جاسکتا ہے کہ انہیں مجاہدین کی تحریک سے دلی ہمدردی ہوگی اور یقینا مالی امداد میں در ایخ ندکر تے ہوں گے، کیکن عملی امداد کا کوئی شوت نہیں ملتا۔ البتہ بیدواضح ہے کہ دہ بہت بوے تا جر تھے یہاں تک کہ انہیں کروڑ پی قرار دیا جا تا تھا۔ اس لئے انگریزوں کے علاوہ مختلف قوموں کے دیسی تا جربھی انہیں اچھی نظروں سے ندد کیھتے تھے۔ میرا خیال ہے کہ ان کے خلاف رپورٹیس ہوتی رہیں، یکا کی انہیں • ارجولائی ۱۸۹۹ء کو ہفتے کے دن ایک بہج بعد دو بہر بڑگال ریگولیشن ۱۸۱۸ء کے ماتحت گرفار کرلیا گیا۔ گرفاری کے لئے دو پولیس افسر آئے : اول مسٹر برچ (BIRCH) ڈپٹی کمشنر پولیس کلکتہ ، دوم مسٹر ریلی پولیس افسر آئے : اول مسٹر برچ (BIRCH) دیٹی کمشنر پولیس کلکتہ ، دوم مسٹر ریلی

⁽١) روئدادمقدمها نباله ص:٣١

کاکوئی سب بتایا۔ عجیب امریہ ہے کہ گرفتار کرتے ہی خان صاحب کوایسٹ انڈین ریلوے کے اشیشن ہاوڑہ پر لے گئے جو کلکتہ کی عدالتوں کے دائر ہ اختیار سے باہر تھا۔ (۱) حشمت دادا خال کو بھی اس ریگولیشن کے ماتحت بتاریخ ۱۲ رجولائی بیس گرفتار کیا گیا پہلے اسے کلکتہ سے عظیم آباد لے گئے پھر دیلگا جیل پہنچادیا جو عظیم آباد سے تین میل کے فاصلے پر ہے۔ (۲)

امیرخال کی پریشانی

امیر خال کو ہاوڑہ ہے گیا لے گئے جہاں ۲۷ راگست ۱۹۹ء تک رکھا گیا۔ اس وقت اس کی عمر پچھپتر سال تھی۔ ریل کاسفر تیسر ہے در ہے میں کرایا گیا، جیل میں اس کے قیام کے لئے ایسا کمرہ تجویز کیا گیا جس کی حبیت کھپریل کی تھی اوراہے مال گودام کے طور پر استعال کیا جاتا تھا۔ امیر خال کے قیام کے وقت بھی اس کمرے کے دو تہائی جھے میں رہتے بھرے ہوئے تھے۔ پھر اسے علی پور جیل میں ختقل کر دیا گیا، وجہ گرفتاری میں رہتے بھرے ہوئے تھے۔ پھر اسے علی پور جیل میں ختقل کر دیا گیا، وجہ گرفتاری دریا فت کرنے کی تمام کوششیں ناکام رہیں۔ اور آخر جولائی میں صرف اتنا بتایا گیا کہ گورنر جزل با جلاس کونسل کے تھم سے گرفتاری میں آئی ہے اور وارنٹ دکھانے کی اجازت نہیں۔ برچ کے جواب کامفادیہ تھا کہ'' رانی کے تھم'' سے امیر خال کو گرفتار کیا گیا۔ (۳) نہیں۔ برچ کے جواب کامفادیہ تھا کہ'' رانی کے تھم'' سے امیر خال کو گرفتار کیا گیا۔ (۳)

⁽۱) روئمداد برداو بالی مقدمه (انگریزی) ص۳:۳

⁽۲) روئىداد برداو بالى مقدمه (انگريزى) ص: ۱۳

⁽۳) بیتمام حالات مسٹر اینے (Ainstey)وکیل امیر خال کی تقریر سے ماخوذ ہیں چوہٹیس کاریس کے سلیلے میں موصوف نے مسٹر نارمن چیف جسٹس کی عدالت میں کی۔ ملاحظہ و ' براو ہائی مقدم' 'ص:۳۳ تا۲

نوال باب:

عظیم آباد کا دوسرامقدمه (۲)

مبیس کارپس کی درخواست

مجبورہ وکر امیر خان اور حشمت دادخان کی طرف سے تین کارپس کی درخواسیں کا کلتہ کی عدالت میں دی گئیں۔ اس ملسلے میں اسیروں کی طرف سے تین متاز وکیل پیش ہوئے: اول مسٹر اینسٹے (۱) جسے اس کام کیلئے بمبئ سے بلایا گیا تھا۔ مقدے کی پیرو کی زیادہ تر اسی نے کی۔ دوم مسٹرا گھرام (۲) جس کی وکالت کی آمدنی اس زمانے میں ایک لاکھ ماہانہ ہے کم نتھی۔ سوم مسٹرایوانز (۳) جس نے کوئی تقریرنہ کی۔ مقدے کی ساعت کیم اگست ایمان کے میں وکالت کی تامیر خان اور حشمت دادخان کے حالات گرفآری اور اسیری پیش کے جن سے سلے میں اس امر پر زور دیا کہ ملک کے حالات گرفآری اور اسیری پیش کے جن سے سلسلے میں اس امر پر زور دیا کہ ملک کے دائور سے اعلان کے بعد تمام ہندوستانیوں کو و بی حقوق آزادی حاصل ہیں جن سے وکٹوریہ کے اعلان کے بعد تمام ہندوستانیوں کو و بی حقوق آزادی حاصل ہیں جن سے

⁽۱) بیخس انیسویں صدی کے مشہوراتگریزوکاء یس سے تھا، کچو دت کلکتہ یس رہا، پھر بہتی بیس بزی کامیابی حاصل کی ، چند سینے بائی کورٹ کا جج بھی رہا۔ اراگست ۱۸۷۳ء کو بہتی میں وفات یائی۔ سواخ نگارول نے تکھا ہے:

^{&#}x27;' تیز مزاجی کے باعث معاصرین ہے اکثر اس کے جھکڑے رہیج تھے کیکن اندیس کاریس کے مقدے میں اس نے جو طویل آفریرس کیس ، دومتا نت اور فقابت ہے لہر پر جھیں''۔

⁽٣) EVANS - يداكر يز ١٨٤٤ = ١٨٩٩ و تك كورز جزل كوسل كالمبرد بإ - البرث بل ك مباحث كوشم كرني من اس في الا معدليا تعا-

اگریزانگلتان میں مستفید ہیں، لہذاان حقق سے تعرض سراسر غیر منصفانہ ہے۔
اس کے بعد کئی روز تک ایڈوکیٹ جزل کی تقریر جاری رہی جس میں قابل ذکر صرف دوامور تھے، اول یہ کہ ہندوستانیوں کومساوی درجہ حاصل نہیں ۔ دوم یہ کہ ان میں غربی جنونی موجود ہیں جو بعاوت بھیلاتے ہیں، انہیں کو'' وہائی'' کہا جاتا ہے۔ پھر مسٹر ایسٹے نے طویل تقریر میں سرکاری وکیل کی ایک ایک دلیل ردگی اور ثابت کردیا کہ امیر خال اور شمت داد خال کی گرفتاری سراسر غیر منصفانتھی۔

مسٹرانگرام کی تقریر

۱۹ راگست کی ساعت میں مسٹر انگرام نے ایک نہایت پڑتا ٹیر تقریر کی جس میں قانونی نظائر پیش کرنے کے علاوہ فرمایا:

"جناب والا! فرض سیجے کہ آپ برطانوی پارلیمن کے مبر ہیں۔ فرض سیجے کہ آپ تالی اٹلی میں سفر کررہے ہیں اور آپ کومیلان کے قید خانے و کیھنے کا موقع ملا ہے، تو فرض سیجے کہ آپ وہاں ایک معزز قیدی ہے دو چار ہوتے ہیں جے دوستوں مجبوں اور قانونی مشیروں ہے الگ کردیا گیا۔ اس کا کاروبار ہیاہ کرا دیا گیا، اور اس کے معاملات بربادی کی آخری منزل پر پہنچ گئے۔ خور فرما ہے ، جناب والا! آپ کی روش کیا ہوگ؟ یقینا آپ اس پورے معاطے کو ماری مہذب دنیا میں نشر کریں گے۔ میں جناب والا! حتی اقرار کرتا ہوں کہ امیر خال کے مقد مے اور حکومت ہندی جمافت کو انگلتان کے جبے جبے میں نشر کروں گا جو آتھیں اوار یو(ا) کے مصائب پر آنسو بہا چکی ہیں وہ امیر خال

⁽۱) یا تلی کا ایک بحب وطن شاعرتها جوآسر یا کے خلاف آزادی کی جنگ کرتا ہوا کرفتار ہوا۔ آسر یا والوں نے اسے قید میں بخت تکلیفیں دیں۔ گلیڈسٹون کوسیاحت اٹلی کے دوران میں اس کے حالات معلوم ہوئے جنہیں اس نے خوب نشر کیا ، بول گلیڈسٹون بی کی کوششوں سے اسے دہائی لی۔ انگرام نے شال اٹلی باقی حاشیہ اسکی صفحہ پر

کے مصائب پر بھی روئیں گی۔اوار یو بھی بمبائے تاریک نہ خانوں ہے باہر نہیں کلتا اگر مسٹر کلیڈ سٹون کی انسانیت پرورکوششیں بروئے کار نہ آئیں۔ جناب والا!اگریز قوم سے مطالبہ کیا جائے گا کہ وہ امیر خال کے مقدے کے متعلق اپنا فتو کی صاور کر ہے، کیا اس باب میں کوئی شبہ ہے کہ وہ فتو کی کیا ہوگا؟ میانہیں حروف اور انہیں آتشیں الفاظ میں لکھا جائے گا، جنہوں نے آشوری بادشاہ کی روح پر پڑمردگی طاری کردی تھی۔فتو کی میہ ہوگا: ولیم گرے اور بادشاہ کی روح پر پڑمردگی طاری کردی تھی۔فتو کی میہ ہوگا: ولیم گرے اور زائل کی دم ترازو میں تو لے گئا ور بورے نیا ترین قانون کی حرمت زائل کی دم ترازو میں تو لے گئا ور بورے نیا ترین۔

فيصلهاور دوسرى درخواست

جیباکہ یقین تھا مسٹرجسٹس نارمن نے ۱۹راگست ۱۸۷۰ء کوہیس کاریس کی دونوں درخواسیس نامنظور کردیں، گویا فیصلہ امیر خال اورحشمت دادخال کے خلاف ہوا۔
اسی دن مسٹر اینسٹے نے دونو ل کیلئے صانت کی درخواسیس دے دیں۔ ۸رسمبر کو ان درخواستوں کی ساعت ہوئی، فیصلہ بھر خلاف صادر ہوالیکن اس سے بیشتر مسٹر اینسٹے عدالت کواطلاع دے چکا تھا کہ اس نے امیر خال اورحشمت دادخال کی طرف سے سر ولیم گرے اور لارڈ میو کے خلاف برطانیہ میں دومقدے دائر کردیے ہیں۔ بھی نہیں کہا جا سکتا کہ ان مقدمول کے سلسلے میں کیا کارروائی ہوئی۔ میراخیال ہے کہ پہلے حکومت ہند ان دونوں بزرگوں کوئسی قانونی کارروائی کے بغیر ہی نظر بندرکھنا چا ہتی تھی۔ جب دیکھا سے داس میں کامیابی کی امیر نہیں انجھالیا گیا۔

^{.....} محذشت سخی کا بقیدهاشید اور میلان کے جیل خانوں کا ذکرای لئے کیا تھا کہ وہ گلیڈ سٹون کے ذریعے معلومات اوراسیری کی رہائی کے لیے مرکزم کوششوں کا ذکر منظر عام پرلا ناجا بتا تھا۔ وہ خودامیر خال اور مشمت دادخال کے متعلق انہیں سرگرمیوں کا عزم کیے بیٹھا تھا جو گلیڈ سٹون نے اوا بریوکی رہائی کے لئے افتیار کی تھیں۔

⁽¹⁾ وليم كرے بركال كالفشك كور زفغا اور لارة ميوكوز جزل ..

آخري فيصله

اس مقدے میں بھی اینسے اورانگرام امیر خان اور حشمت داد خان کی طرف ہے پیروی کرتے رہے۔ بیان کیا جاتا ہے کہ ایک موقع پراینسٹے کو جمبی جانا بڑا تو اخبار ''انے کم مشت میں''میں بیلکھ دیا گیا کہ اپنسٹے فیس کی کمی کے باعث بدول ہوکر چلے گئے۔ موصوف نے اس جھوٹی خبر کی تر دید کرتے ہوئے مقد مے کوسرا سرشرمناک بتایا۔ (۱) مسٹر پرنسپ سیشن جج کوساعت کے دوران میں بے ضابطگیوں کاعلم ہو چکا تھا۔ انہوں نے بعض بے ضابطگیوں کی تصریح بھی کی۔حشمت داد خاں اور پیرمحد کے خلاف کوئی مات ثابت نه ہو کی ،للبذا ۴ مرجولائی اے ۱۸ اے کوانہیں اسلئے رہا کر دیا گیا کہ با**دی النظر** میں وہ بےقصور ہیں۔ باقی یانچ ملزموں کومعمول کےمطابق حبس دوام بیعبوردریائے شور اورضطیٰ جائیداد کی سزادی گئی۔ حالاں کہان کا کوئی خاص جرم ندتھا۔خصوصاً امیر خاں کو اس سزائے دوسال پیشتر بے دجہ ہدنپآ زار بنایا گیا تھا۔

مالد

اميرخان اورمبارك خان

اس کے بعد امیر خاں کے دارثوں نے اس کی رہائی کے لئے بوی کوششیں کیں۔ ان کا کار و بارگرفتاری کے زمانے میں تباہ ہو چکا تھا ، جائیداد فیصلہ ئیز ا کے بعد ضبط کر لی گئی تھی، پھراس کبیر السن بزرگ کو قید میں رکھنے کی کون سی وجہ ہوسکتی تھی؟ افسوس کیہ لار ڈمیو کی حکومت کسی درخواست ہے متاثر نہ ہوئی ۔ صرف اتنا ہوا کہ امیر خال کوانڈیان نہ بھیجا گیا۔مولوی مبارک علی بھی انڈیان نہ بھیجے گئے اوروہ بیجار ہے ہندوستان ہی میں بحالت اسپری حال بحق ہوئے ۔امیر خال کے متعلق ایک بیان سے معلوم ہوتا ہے کہ

(۱) ان کے اصل الفاظ سے تھے:

THE SHAMEFUL CASE MISCALLED WAHABI ENGUIRY

۱۸۷۸ء میں انہیں رہا کرویا گیا۔(۱) ایک بیان میں ان کی رہائی کی تاریخ ۹ ۱۸۷ء بتائی گئی ہے جوغلط ہے۔(۲)

اميرخال كى وفات

گرفتاری کے وقت امیر خال کی عمر پھیٹر سال بتائی گئی تھی۔ رہائی کے وقت وہ کم و بیش پہاس سال کے من کو بیٹنی چکا ہوگا۔ دس سال اس نے خت تکلیفوں میں بسر کیے، البذا صحت بہت بگڑ چکی ہوگی، تاہم صاحب عزیمت مسلمان کی طرح رہا ہوتے ہی اس نے اپنا کارو باراز سرنو شروع کر دیا، لیکن زمانے کی نیرنگیاں ملاحظہ ہوں۔ کارو بار شروع کیے چند ہی روز ہوئے تھے، اس نے مسجد کے نزد یک ایک مکان کرایے پر لے لیا تھا، مغرب چند ہی روز ہوئے تھے، اس نے مسجد کے نزد یک ایک مکان کرائے پر لے لیا تھا، مغرب کے قریب اوائے نماز کیلئے اپنے مکان سے آ ہتہ آ ہتہ مسجد کی طرف جارہا تھا کہ ایک گوڑا گاڑی تیزی سے آئی اوراس سے نکرائی، صدمے سے یہ بچارا گر بڑا، ناک سے فون جاری ہوگیا۔ بحالت غشی اٹھا کر مکان پر پہنچایا گیا، نیم ساعت بعدای حالت میں وفات پائی۔ ساری ہوگیا۔ بحالت غشی اٹھا کر مکان پر پہنچایا گیا، نیم ساعت بعدای حالت میں وفات پائی۔ ساری قعدہ ۱۲۹۵ھ (۸رنو مبر ۱۸۵۸ء) تاریخ تھی اور جفتے کا دن۔ ملکتہ میں میت کوشل دیکر بذر بعدر بل عظیم آباد لے گئے اور وہاں ایک باغ میں وفن کیا۔

تاريخ وفات

مولوی واحد علی صاحب نے طویل تاریخ وفات مکھی جس میں حادثے کی تفصیلات بھی بیان کردیں۔اسے بہطوریادگار ذیل میں درج کیاجا تاہے:

وانی به کلکته چیاں پیش آ مدامر نا گزیر میرد بداز آن درشهر بااند دبگیں بیرد جوال

⁽١) رساله اشاعت السن جلدنبرا بيواله ابندوستان كي بيلي اسلامي تحريك من ١٦٤٠

⁽٢) "جرال رائل اين كك سوسائن" بهيئ جلد اعلى ١٤٥٠ بدواله" بندوستان كي بيلي اسلامي تحريك" ص ١١٤٠ -

ایں واقعہ،ایں حادثہ گردیدواقع ٹا گہاں مرضم كني لفظ امير ا مهربال بالفظ خال بېرنمازازآل مكال منگام مغرب شدروال درشاہرہ از اتفاق آمد کے گردوں دواں برياشد ازهر حارسو مثكامه أشور وفغال ديدندحالش اين چنين بردند باز اندر مكال ہم دیدہمی شدة م بدم خون است از بنی رواں ناجار دخت عمرشال بربسة شدسوئ جنال تاياد ماند بعدازين تاريخ سال فوت شال زال بعدشداز جان ودل مصروف در تجهيرآن

خواندہ نمازِ میش خلق خدائے دوجہاں تا آنکه آخر نغش شال برر بل گردیده روان ببر گرفتن آمدند آل نعش هر پیرو جوال زال جانباده بریانگ آورده اندر بوستان بس وفن اندر بوستال كردند باآه و فغال آبادر ضوال وجنال جنت مقامش شديدا<u>ن</u> ذى قعدرا چول شنبه شدېم سيز ده تاريخ او لینی امیر نامور،می دانی نام نامیش بعدازر مائی خانهٔ بگرفت نزدمجدے طےراومسجدی نمود آہتہ آں عالی منش ضربے چو برسرزال رسیدا فناد برروئے زمیں خویش وملازم زین صدا برسوشتا بان آمدند تانیم ساعت درغشی ماندند بے ہوش دحواس نام كه رسيداً ل وقت كوءا نسان مجبوراست از و س کس گفت از واحد بگو تاریخ سال عیسوی واحد بکفتا:روحِ اورفتہ سوئے خلد بریں

۸۷۸اء

دادند چون غسل و کفن بر دند در متجدش خویش وعزیزال بم چنال درپینه بیرول خاسته واحسرتا چول رمل برانٹیشن یٹنه رسید بمراه تغش آنجاشده مجمع زخوليش واقربا کردند ادا بارِ دگر این جا نمازنعش را تاريخ ببجري واحداز كروبيان يرسيد وكفت

حشمت دا دخال کی و فات حشمت دادخال نے بھی رہائی کے بعد اپنا کارو بار از سرنو درست کرلیا۔اس نے امیر خال سے پچھ مدت پیشتر ۵رجمادی الا دلی ۱۲۹۴ھ (۸رمئی ۱۸۷۷ء) کوسفر آخرت اختیار کیا۔ تاریخ وفات بیہے:

نورِ ایمال به خان حشمت داد بے ہمه شد و جان شیریں داد سالِ تاریخ آل بہشت آباد شکر آل منعے کہ او بہ عباد پس ازال وقت آخری چو رسید یک ہزار و دو صد نود و جار

altar

اس کے صاحبز ادے عبداللہ خال نے ۲ رشوال ۲۹۵ اھ(۲۹ رسمبر ۱۸۷۸ء) کو وفات یائی۔اس کی وفات کا مادہ کارخ''یغفر ہ''ہے۔(۱)

دوسرے مقدمہ عظیم آباد کے باقی اسپروں میں سے صرف مولوی تبارک علی کے حالات معلوم ہیں جوسر گزشت انڈ مان کے سلسلے میں بیان ہوں گے۔

نارمن برجمله

آخر میں اتنا اور بتادیتا چاہئے کہ تمیس کارپس اور دوسرے مقد مات میں جس چیف جیف جیف جان نارمن نے خلاف فیصلے صادر کیے تھے اس پرایک صاحب عبداللہ پنجا بی نے احاطہ عدالت میں قاتلانہ جملہ کیا اور ۲۱ رحمبر اے ۱۹ کو نارمن صاحب نے وفات پائی یتحقیقات پر معلوم ہوا کہ عبداللہ د ماغی خرابی کے عارضے میں مبتلا تھا۔ ہنر نے اپنی کتاب کے (ص ۱۹۸) پرای واقعے کی طرف اشارہ کیا ہے ، لیکن اس کے باوجوداسے میانی کی سزادی گئی۔

⁽¹⁾ حشمت داوخال اورامیرخال کے بیدحالات امرقع میوات اسمعنفدشرف الدین خال ساکن ساخفا واژی متلع محوژ کا دَل سے ماخوذ ہیں ۔ میہ جمعے پرونیسرمحرسلیم صاحب دواخات جمید مینواب شاہ سے ملے، جن کے لئے موصوف دلی شکر میر کے مستق ہیں۔

دسوال باب:

سرگزشتانڈمان (۱)

تمهيد

راوح کے ان مجاہدوں کو گرفتاری ہفتیش اور مقد ہے کے دوران میں جن خوفنا ک مصائب سے سابقہ پڑا، ان کی سر سری کیفیت گذشتہ ابواب میں پیش کی جا چکی ہے، بلکہ وہ حالات بھی بتائے جاچکے ہیں جو سزا کے بعد انڈ مان چہنچنے تک پیش آئے، تاہم ان کی مصیبتیں بہیں ختم نہ ہو کی بائڈ مان میں قید کی مدت بھی بیشتر پریشانیوں ہی میں گذری، مصیبتیں بہیں ختم نہ ہو کی مواد نے افقاد کو ناگز براور من اللہ بچھتے ہوئے ہجوم مشکلات کے باوجود زندگی باطمینان گذار نے کے سامان پیدا کر لیے۔ بیدور ابتلاء پہلے دور کاضم مہے، باوجود زندگی باطمینان گذار نے کے سامان پیدا کر لیے۔ بیدور ابتلاء پہلے دور کاضم مہے، خاطر قربانیوں کی بید فونچکاں داستان تا بہ عدامکان کمل ہوجائے۔

جزائرِانڈ مان

انڈ مان بحر ہند میں چھوٹے بڑے ایک ہزار جزیروں کا مجموعہ ہے، جو کلکتہ سے
سات سوائٹی میل جنوب میں ،رنگون سے تین سوساٹھ میل جنوب مغرب میں ، مدراس
سے سات سو چالیس میل جنوب مشرق میں اور سیلون سے اتن ہی دور مشرق میں واقع
ہیں۔ان جزیروں کی عام تقنیم ہے ہے: انڈ مان کلاں اور انڈ مان خورد، انڈ مان کلاں پانچ
ہیں۔ جزیروں پر مشممتل ہے ، شالی انڈ مان ، وسطی انڈ مان ، جنو بی انڈ مان بارا تا نگ اور

رٹ لینڈ ۔ اردگرد کے چھوٹے جزیروں کا شارنہیں ہوسکتا۔ انڈ مان خورد ان کے جنوب میں ہے۔ مزید جنوب میں جزائر تکو بارشروع ہو جاتے ہیں۔ انڈ مان کلال کے مختلف جزیرے سرسری نظر میں ایک دوسرے سے ملے ہوئے معلوم ہوں گے، کیکن اصل میں ان سب کو تنگ آبنا کیں ایک دوسرے سے جدا کرتی ہیں۔

ان جزیروں ہے متعلق ابتدا میں خوفناک افسانے مشہور تھے۔ تمبر ۸۹ء میں پہلے پہل انگریزوں نے ان میں اسپروں کی نو آبادیاں قائم کرنے کا ارادہ کیا۔ چنانچہ لفٹنٹ بلیئر وہاں کچھ قیدی لیکر گیا، جس کے نام پر جزیرے کا دارالحکومت پورٹ بلیئر موسوم ہوا، لیکن ۴۷ کاء میں خرانی آب وہوا کے باعث بیآ بادی ترک کردی گئی۔

المحاء میں یہاں اسپروں کی جونوآ بادی قائم ہوئی وہ بھی پورٹ بلیئر ہی کے آس پاس تھی ،جس کا موقع اور کل خوب بجھ لینا جا ہے ۔جنوبی انڈ مان کی مشرق سمت میں ایک کھاڑی دور تک اندر چلی گئی ہے اور اس نے زمین کی ایک سات میں لمبی تنگ نائے بنادی ہے۔ یہی پورٹ بلیئر ہے۔ اس کھاڑی کے دہانے پر ایک جزیرہ ہے جس کا نام روس آئی لینڈ ہے۔ اندر جا کر تھوڑ نے تھوڑ نے فاصلے پر جزیرہ تھے تھم اور جزیرہ وا تیر (افعی) واقع ہیں۔ کھاڑی کے دونوں بازوؤں پر نوآ بادی کے مشہور مقامات ہیں مثلاً جنوبی بازو پر ایپرڈین ، نوئنکس بے ، ہوو ، نیوی بے دغیرہ ۔شالی بازو پر ہوپ ٹاؤن ۔ یہ مقامات ہم نے اس کئے بتادیے کہ آئندہ جا بجاان کا ذکر آئے گا۔

آبادی کا دوسرادور

1021ء کے ہنگامہ عظیم میں جن لوگوں کوطویل قید کی سزائیں ملیں ، وہ اصلاً سیاسی قیدی ستھے، کیونکہ انھوں نے ملک کی آزادی کیلئے جہاد کیا تھا ، یا کہد لیجئے کہ ان پر الزام میہ تھا۔ حکومت مناسب نہ مجھتی تھی کہ انھیں عام جیل خانوں میں رکھے۔ ڈریہ تھا کہ مباداان

کے خیالات سے دوسرے قیدی متاثر ہوں، لہذا فیصلہ ہوا کہ جزائر انڈ مان کواز سرنو آباد کیا جائے اور ۱۸۵۷ء کے قیدی وہاں بھیج دیے جا کیں۔ اس حقیقت کوخوب پیش نظر رکھئے کہ انڈ مان کی آب وہوا اور زمین ، نو آبادی کے قیام کیلئے حد درجہ ناساز گارتھی اور اس کا تجربہ ہو چکا تھا۔ تا ہم حکومت نے ۱۸۵۷ء کے قیدیوں کو وہاں بھیجنے کا فیصلہ کیا۔ جس کا مطلب صاف الفاظ میں بیتھا کہ حکومت ان کے متعلق انتقامی روش پر کار بندتھی۔ آگر چہ وہ قیدی تھے اور دور ان قید میں ان کی صحت اور جان کی حفاظت حکومت کے فرائف میں داخل تھی ، تا ہم وہ اس فرض سے بالکل بے برواہ ہوکر انھیں الی جگہ بھیجنے میں متامل نہ داخل تھی ، تا ہم وہ اس فرض سے بالکل بے برواہ ہوکر انھیں الی جگہ بھیجنے میں متامل نہ ہوئی جس کا ماحول ، جس کی آب وہوا اور فضا صد درجہ معزصت بلکہ بناہ کن تھی۔

اس سلسلے میں ملک کی بعض نہا یت عظیم الشان شخصیتیں انڈ مان پہنچیں ، جن میں سے اکثر کودوبارہ وطن عزیز کی زیارت نصیب نہ ہوئی۔ مثلاً مولا نافضل جن خیر آبادی یا نواب ممول جو واجدعلی شاہ کی بیٹم حضرت محل والدہ برجیس قدر کے نائب تھے اور اور ہیں انگریزوں کے خلاف مسلسل لڑائیاں کر چکے تھے۔ وہ ۱۸۶۱ء تک انڈ مان میں رہے۔ پھر مراوک کے انگریز فرمانروا کی طلب پر انھیں بعض دوسرے اسیروں کے ہمراہ وہاں بھیجے دیا مراوک کے انگریز فرمانروا کی طلب پر انھیں بعض دوسرے اسیروں کے ہمراہ وہاں بھیجے دیا گیا۔ وہیں انھوں نے وفات پائی۔ بعض ممتاز اسیروں کے نام آئندہ ضمنا آ جا کیں گے۔ گیا۔ وہیں انھول نے وفات پائی۔ بعض ممتاز اسیروں کے نام آئندہ ضمنا آ جا کیں گے۔ کوئی الزام عائدنہ تھا ، یا جو سر غذہ تسمجھے جاتے تھے۔

قيدمين امتياز

اس سلسلے کا ایک عجیب واقعہ یہ ہے کداگریزوں نے قیدیوں میں امتیاز برابر باقی مکا، یعنی عام اہل ملک سے نہایت غیر ہمدر دانہ برتاؤ ہوتا تھا، لیکن گوروں یا دلیی

عيسائيون كوبهت الحجي حالت مين ركهاجا تاتفا مولوى محمر جعفر لكهي بين:

غدر ۱۸۵۷ء کی بدولت بیسیوں راجے اور نواب اور زمیندار بمولوی مفتی، قاضی، ڈپٹی کلکٹر بمنصف بصدرامین بصدرالصدور، رسالدار، صوبیدار، معدار، وغیرہ وہاں قید ہیں، گر وہ معزز ہندوستانی جننگیین بھی جن کے آھے سیکڑوں ہزاروں نوکر تھے بوجہ سیاہ پوست اور جنم ہند کے دوسرے چوڑ ھے پھاروں کی طرح موٹا جھوٹا کھانا پکاتے اور عام لوگوں کے ساتھ سخت مشقت کرتے۔ گر یور پین گورے بلکہ اکثر دو غلے کا لے کلوٹے بھی فقط بوجہ شرف کوٹ چنلون یا کلمہ عیسائی کے پلٹن کے گوروں کے برابر کھانا کپڑا پاتے۔ ایک علیدہ بنگلیاان کے رہے کو ایک نوکر بلا تخواہ ضدمت کو۔ (1)

مولوی صاحب نے ۱۸۷۹ء کا ایک عبرت انگیز واقعہ بتایا ہے: جگن ناتھ پوری کا ایک راجہ کس سلسلے میں قید ہو کر کا لے پانی پہنچا۔ چونکہ اس کا رنگ کالا تھا، اس لئے عام جماروں کے ساتھا کھانا پا تا اور مشقت کرتا۔ نازک مزاجی کے باعث مشقت نہ ہو گئی تو بید کی سزاملتی۔ وہ چندروز بعد تکلیفیر، اٹھا تا اٹھا تا فوت ہوگیا۔ اُنھیں دنوں اور ھا ایک بید کی سزاملتی۔ وہ چندروز بعد تکلیفیر، اٹھا تا اٹھا تا فوت ہوگیا۔ اُنھیں دنوں اور ھا ایک کرنا جس کا نام لیے شعب تھا دہاں پہنچا تو اے گوروں کے ساتھ عمدہ کھانا ملنے گا۔ ایک علیحہ وہ مکان، پانگ اور عیش و آرام کا پوراسا مان اس کیلئے مہیا ہوگیا اور ڈپٹی کمشنر کی پجبری میں اے مکرک بنا دیا گیا۔

خود ملکی قید یوں میں بھی حکام نے اپنی مرضی سے انتیاز ات قائم کرر کھے تھے۔ یہ مقام تھا، جہاں ان بزرگوں کو زندگیوں کا خاصا بڑا حصد گزار نا پڑا، جن میں سے بعض دنیوی کھا ظ سے وقت کے امراء تھے۔ علقہ حوصلہ اور شانِ عزیمیت کے اعتبار سے آتھیں انسانیت کے گلہائے سرسبہ بجھنا چاہئے۔

اب آپ ان میں سے ایک ایک بزرگ کی اسیری کے حالات ملاحظ فرمائیں۔

⁽۱) "كالايانى" من:20-0

مولا نااحمدالله

مولانا ئے مدوح ۱۵رجون ۱۸۹۵ء کوظیم آباد سے پورٹ بلیمر پنچے تھے۔ گویا جماعت بجاہدین کی اعانت کا فرض انجام دینے والوں میں سے انڈ مان کینچنے میں مولانا کو سب پر سبقت حاصل ہوئی۔ اس زمانے میں سیدا کبر زمان (۱) اکبر آبادی چیف کمشنر انڈ مان کے میر منٹی تھے۔ انھوں نے مولانا کے حالات اور بلند حیثیت سے پوری آگا ہی حاصل کر کی تھی، چنانچہوہ چیف کمشنر سے اجازت لے کرمولانا کو اپنے مکان پر لے گئے، جوروس آئی لینڈ میں تھا۔ پھر پاس ہی ایک اور مکان کا انتظام کر دیا اور چیف کمشنر کی جوروس آئی لینڈ میں تھا۔ پھر پاس ہی ایک اور مکان کا انتظام کر دیا اور چیف کمشنر کی امیری کے بہری میں اپنے ماتحت ترجے کا کام مولانا کو سونپ دیا۔ اس طرح ان کی امیری کے ابتدئی یا نج سال قدر سے اطمینان سے گذر گئے۔

ہندوستان کا وائسر اے لار ڈیمیوانڈ مان کے دورے میں ایک مسلمان قیدی کے ہاتھ مارا گیا تو تمام متازمسلمان قیدی ہوں پراگریزوں کا عمّا ب ازسرنو نازل ہوا اوران کے متعلق عام بدخلی بھیل گئے۔اس وجہ ہے اکثر مسلمان قیدیوں کوصدر سے نتقل کر کے دور افقادہ جزیروں میں بھیج دیا گیا۔ چنانچ مولانا کو وائیر آئی لینڈ (۲) میں تبدیل کر دیا گیا، جہال عموماً بوڑھے اور کمرور آ دمیوں کور مناجاتا تھا۔ محکمہ طبابت میں محرری کا عہدہ آپ کو دیا،جس کی تخواہ راش کے علاوہ دس روپے ماہواری تھی۔ بہتال کے قریب ایک مکان دیا،جس کی تخواہ راش کے علاوہ دس روپے ماہواری تھی۔ بہتال کے قریب ایک مکان

⁽۱) مولا ناعبدالرجیم نے لکھا ہے کہ سیدا کبرز مان نہایت شریف اور بری خوبوں کے آ دی تھے۔ہم سب لوگوں کے ساتھ جو بعد کووہاں کنچتے بیلے میے ،ایک نگاومبر بانی رکھتے اور عبت والفت رکھتے '' تذکر وَصادقہ''ص:۴۹۔

بیقلعد آگرہ کے فوجی محکے میں میری نشق تھے۔غدر میں حصہ لینے کی بنا پہیں سال قید کی سزا ہوئی۔اغد مان میں قید پوری کر کے آگرہ آئے۔۱۹۰۴ء میں وفات یائی۔

⁽۲) وائیر کے لفظی معنی ہے افعی ، جیما کہ پہلے عرض کیا جاچکا ہے۔ یہ جزیرہ کھاڑی کے اعدد واقع تھا۔ بوڈن ککوس (BODEN KLOSS) نے لکھا ہے کہ اس کو ' دوز خ' کا نام وے دیا عمیا تھا اور یہاں نہایت خون ک تیدی دیکھیا ہے۔ NICOBAR & SIN THE ANDAMAN (ص۲۵)

قیام کیلئے اور ایک ملازم خدمت کے لئے دیدیا گیا۔ مولا ناسرکاری کام انجام دینے کے بعد زیادہ وفت قرآن مجید کی تلاوت، نماز اور ذکر ودعاء میں صرف کرتے یا اپنے رفیقوں کو تو حید اور نیک عملی کی تلقین فرماتے۔ آپ کے ساتھی قید یوں نیز پولیس اور پلٹن کے آدمیوں میں سے تقریباً ہرخص مومن موحد، پابند صوم وصلو قاور تبجد گزار بن گیا۔ (۱) مولانا عبد الرحیم آب کراقہ المیں سے تھی دو مہنے میں الکے مرتبہ آب سال

آخری دوراوروفات

قید کی تکلیف، اقربا سے علیحدگ، آب وہوا کی ناسازگاری، غذا کی ناموافقت اور تقاضائے س سے مولانا کی طبیعت بہت کرور ہوگئ تھی۔ جب مولانا عبد الرجم نے اجازت لے کراپنا کاروبار شروع کردیا اور ایبرڈین میں دکان کھول کی تو وہ مہینے میں پندرہ میں روپے بالالتزام مولانا کی خدمت میں چیش کردیتے تاکد آپ اپنے لئے اچھی غذا کا انظام بخوبی کرسکیں، لیکن مولانا طبعی عالی ہمتی اور سخاوت کے باعث اپنی تخواہ کی قم اور یہ رقم خفیہ خفیہ خوبی کرسکیں، لیکن مولانا طبعی عالی ہمتی اور سخاوت کے باعث اپنی تخواہ کی قم اور یہ مقاب خوبی کی اجازت ما گئی جونا منظور کردی گئی۔ ان کے لئے کاروبار کالاسنس ماصل کرنے کی کوشش کی گئی، وہ بھی ناکام رہی۔ ہر طرف سے مجور ہوکر مولانا عبد الرجیم فاصل کرنے کی کوشش کی گئی، وہ بھی ناکام رہی۔ ہر طرف سے مجور ہوکر مولانا عبد الرجیم نے التجاکی کہ مولانا سے باس رات گزار نے کی اجازت دیدی جائے تاکہ بیاری میں ان کی خدمت انجام پائے۔ اس اثناء میں وہ روز اندا پی جائے قیام لیمنی ایبرڈین سے مولانا کی پاس وائیرآئی لینڈ جاتے اور کسی طرح ایبرڈین سے ایک کوس کا فاصلہ بیدل طرک کے پاس وائیرآئی لینڈ جاتے اور کسی طرح ایبرڈین سے ایک کوس کا فاصلہ بیدل طرک کے پاس وائیرآئی لینڈ جاتے اور کسی طرح ایبرڈین سے ایک کوس کا فاصلہ بیدل طرک کے پاس وائیرآئی لینڈ جاتے اور کسی طرح ایبرڈین سے ایک کوس کا فاصلہ بیدل طرک کے پاس وائیرآئی لینڈ جاتے اور کسی طرح ایبرڈین سے ایک کوس کا فاصلہ بیدل طرک کے پاس وائیرآئی لینڈ جاتے اور کسی طرح ایبرڈین سے ایک کوس کا فاصلہ بیدل طرح کے پاس وائیرآئی لینڈ جاتے اور کسی طرح کا بیبرڈین سے ایک کوس کا فاصلہ بیدل طرح کی کوس

^{(1) &}quot;تذكرهٔ مبادقة" ص: ٥٠

ندی بے سے کتنی پرسوار ہوتے ، جہاں سے دائیرآئی لینڈ ایک کوس تھا۔ پھر اتر کرمولانا کے مکان پر بینچتے ۔ دن بھر ان کی خدمت کرتے اور شام کو دالیس آجاتے۔ بڑی رو دکد کے بعد چودھویں روزید درخواست منظور ہوئی۔

مولاناعبدالرحيم كے بيان كے مطابق آپ كو بخارتھا۔ زيادہ تربہوش رہتے تھے۔
وہ چودھويں روزعمر كے وقت آپ سے رخصت ہوكر واپس آنے گئو آپ كو بہ ظاہرا چھا
پايا۔ ہوش وحواس درست تھے۔ اُھيس تقوئ ، ابتغاء مرضات اللہ اور مصائب ميں صبر
واستقلال كى وصيت كى۔ اپنے اقربا ميں ہے مولانا محد صن كے متعلق رضامندى كا اظہار
فر مايا۔ اى رات آٹھ بجے كے قريب آپ بجن دنيا كوچھوڑ كر داخل خلد بريں ہوئے۔ ذى
الحجبہ ۱۲۹۸ھى اٹھا كيسويں تاريخ تھى (۱۲ رنومبر ۱۸۸۱ء)۔ غشى كى حالت ميں بھى ذكر اللہ
جارى رہتا۔ نمازكاس قدر دنيال تھا، گويا ہروت تحريد بندھار ہتا اور نماز پڑھاكر۔ تے۔

تتكفين وبدفيين

مولانا عبدالرجیم پہلے آپ کے مکان پر پہنچ گئے، پھر مولوی محد جعفر ، میاں عبدالغفار ،
سیدا کبرز مان ، مولوی محمد جان اور بعض دوسرے حضرات تشریف لے آئے۔ سب سے
پہلے بیکوشش کی گئی لدان کے برادر صغیر مولانا کی علی کے پہلو میں (روس آئی لینڈ میں)
وفن کیا جائے ، لیکن حکام نے اجازت نددی۔ چنانچہ آپ کوڈنڈ اس پائٹ میں سمندر کے
کنارے آیک ٹیلے پر جہال اور بھی چند قبری تھیں ، آخری نیند سلا دیا جمیا۔ مولانا عبدالرجیم
کلصتے ہیں کہ وہ مقام صدور جہ وحشتنا ک نظر آیا۔ ایک طرف جنگلی درخت آسان سے با تھی

کرتے تھے، دوسری طرف سمندر کی موجیس پہاڑ کی مانند آ کر جزیرے سے فکراتی تھیں:

الی حالت میں ہم لوگ ایے وُریٹیم کو، ایسے لعلِ شب چراغ کو، ایسے
یا قوت احرکوا ہے ہاتھوں میں دباکر آ وسر دبحرتے ہوئے ، باچشم کریاں دول
یا قوت احرکوا ہے ہاتھوں میں میں دباکر آ وسر دبحرتے ہوئے ، باچشم کریاں دول

بریال اپنی اپنی جگہوں پروایس آئے۔(۱)

الله الله الله الله الله الله نیازی که جس بزرگ نے زندگی کا ایک ایک لید حصول رضا میں صرف کیا،اس کی آزمائش کا دوروفات پر بھی ختم نه ہوا۔ اقبال کیا خوب کہہ گئے ہیں:

مقامِ بندگی دیگر،مقامِ عاشقی دیگر نوری بجده می خوای زخا کی بیش از آل خوای

مولوی محمد جعفر لکھتے ہیں کہ مولا ناجب بہت نجیف ہو گئے تو اپنی حالت زار کے پیش نظرا پنے بیٹے مولوی محمد یعتین کو بلا کر ملا قات کرنی چاہی ۔ مولوی صاحب کلکتہ میں تھیم سے اور چار پانچ دن میں پورٹ بلیئر پہنچ سکتے تھے، لین حکومت نے اجازت نددی ۔ گو یا مولا نا ان رعایتوں سے بھی محروم رہے جو عام قید یوں کو حاصل تھیں ۔ مولا نا کے ملازم کا نام عبد الواحد تھا۔ اس نے بتایا کہ آخری وقت میں آئکہ کھول کر الا اللّٰه یا حالات المملك کہا اور مرد ہوگئے۔ (۲)

تاريخ وفات

مولوی محمد ایوب خال رام بوری مقیم جزیره نے مولانا کا قطعه کاریخ لکھا۔ چندشعر ذیل میں درج ہیں:

احمدالندروال گشت به صددل شادان بسسفتهٔ گشت تصبیش سفر جاودان رایی کملک بقاگشت ز دار گذران اعمادش جمد هر دم به نصوص قرآن

چوں ازیں دارِ فناجانب باغے رضواں مشش وہفتادین عمر شریفش بودند بست وہشتم شبے بوداز مدذی حجمۃ کداو اعتقادش بداحادیث نبی از ہمد میش

⁽۱) "تذكرهٔ صادقهٔ اس:۵۵

⁽۲) "كالاياتى"ص:۸۳،۸۲

بمدم مروف عبادت بمد صرف عرفال دخل المخلد بفرمود بهال دم رضوال ١٢٩٩هـ

س تسعه زا حادش بگرفتم پیش آل ر ہاکشتن مومن از بجن دنیا۔

مقیم جزیرہ بہ تھم نصاریٰ زدنیائے دوں شد بہ فردویِ اعلیٰ رہا گشتن مومن از بجن دنیا(ا) مومن از بجن دنیا(ا) ہمدزہدہ مہ تقویٰ وہمہ صوم وصلوٰۃ سال تاریخ وفاتش زنفکر جستم

مه قربا نبه تمای ومحرّم اقرب مولانامحرسعیدنے برجسته فرمایا: قطعه تاریخ بیہے:

چو مردِ خدا مولوی احمد الله شب ماه ذی حجهٔ وبست مشمّ به تاریخ فوتش ندا کرد باتف

مولانا يجي على

مولانا یکی علی انبالہ سے لاہور، ملتان ، کراچی ، جمبئی وغیرہ ہوتے ہوئے اارجنوری الا ۱۸۲۹ء کوانڈ مان پہنچے تھے۔ سیدا کبرز مال میر منشی نے انھیں بھی اپنے پاس روس آئی لینڈ میں رکھا۔ اس طرح مولا نا احمد اللہ اور مولا نا یکی علی بھی ہوگئے۔ مولا نا یکی علی بھی اپنے کی ملی ہی اپنے کی ملی ہی اپنے کی ملی ہی اپنے کی ملی کی طرح فرصت کے اوقات قرآن وحدیث پڑھانے یالوگوں کو نیک کاموں کی تلقین کرنے میں گزار دیتے ۔ تقریباً دو سال بعد آپ بیار ہوگئے اور حسب قاعدہ ہیتال میں ڈاکٹری علاج ہونے لگا۔ مولا نا عبد الرحیم اس ز مانے میں گھاٹ پرمحرر تھے۔ میتال میں ڈاکٹری علاج ہونے لگا۔ مولا نا عبد الرحیم اس ز مانے میں گھاٹ پرمحرر تھے۔ انھوں نے مولانا کی خدمت کیلئے رخصت طلب کی ، تھم ہوا کہ بارہ بجے سے تین بج تک کام کیا کریں تا کہ دوسر نے نشی کو کھانا کھانے کی فرصت مل جائے۔ مولانا دوران علالت

⁽۱) دونون تاریخین " تذکرهٔ صادقه "ص:۵۲ پر بین اوردفات کا آخری قطعه سوار اُاحری میس بے س: ۲۲۵

یں یادِخدااورمبروشکر میں معروف رہتے۔جولوگ حزاج پڑی کیلئے آتے ،انھیں برابر پند وہیجت فرماتے۔ کو یاامر بالمعروف کا فریضہ زندگی میں ایک کمھے کیلئے بھی ترک ندکیا۔

وفات

علالت کی عام کیفیت ایسی نیتی که ان کی زندگی کے متعلق تشویش پیدا ہوتی عربهی ت کھے زیادہ نہ تھی۔ان کے بڑے بھائی مولانا احمد اللہ بھی دن میں دومرتبہ و کھنے کیلئے آتے۔ چونکہ مکان نشیب میں تھا اور مبتال بلندی برواقع تھا، لہذا مولانا کوآنے جانے میں بری تکلیف ہوتی مولاناعبدالرحيم فرماتے ہيں: میں تین بجے سپتال پہنجاتو مولانا يجيٰ على كى طبيعت الحجيى تقى _ به اطمينان نما زعصراداك، حاربيج يكاكي زبان ميس لكنت پیداہوئی اورطبیعت مجر من فی از اکثر نے دوادی جوحلق سے فرونہ ہوئی فورا مولا نااحمداللہ کی طرف آ دمی دوڑا یا گیا،وہ بھی آ گئے ۔عجیب بات یہ ہے کہ یانی کا گھونٹ بھی حلق سے ینچے نداتر تا تھا، تا ہم زبان پر ذکر اللہ جاری تھا اور ہوش بجا تھے۔مولا ناعبد الرحيم نے سر مبارک زانو بررکالیا۔اس حالت میں چندمنٹ بعدروح پر فتوح تفس عضری سے برواز كر كئي شوال ١٢٨ ١١ ه كي چھبيسويں تاريخ تھي (٢٠ رفروري ١٨٦٨ء) يويا مولانانے 🖊 انڈیان میں دوسال ایک مہینہ اور نو دن گزارے ۔ بیدوفت بڑے اطمینان سے بسر ہوا ، اسلئے کہان کے براد رِ مَرم (مولا نااحمہ اللہ)جلیل القدر بھا نجے (مولا ناعبدالرحیم)اور رفیق یاس تھے۔

تكفين وبدفين

میت کو میت ال ہے مکان پر لے گئے ۔سیدا کبرزماں نے چیف کمشنر ہے اجازت الے کرتمام جزیروں میں اعلان کر دیا تھا کہ جولوگ تکفین وقد فین میں شریک ہوتا جا ہیں،

آ جائیں۔ چنانچے مسلمانوں کے علاوہ ہندوبھی موقع پر پہنی گئے کل شرکاء چار پانچ ہزار
سے کم ندہوں گے۔ کئی مرتبہ نماز جنازہ پر بھی گئی اور انھیں روس آئی لینڈ میں سپر دِ خاک
کردیا حمیا۔ اللہ اکبر اقدرت نے عالم وجود میں بھیجا توعظیم آباد کے ایک امیر گھرانے کی
آخوش محبت میں جگہ دی ہمین پوری زندگی صرف عشق حق میں مصببتیں اٹھاتے اٹھاتے
اتمام کو پہنچادی اور اس سرز مین میں وفن ہوئے جس کا تصور بھی بھی ان کے د ماغ میں نہ
گذرا تھا۔ تا ہم ان کی عزیمت ہردور میں ہرمصیبت سے بالکل غیرمتاثر رہی۔ تے ہے:
زیشہ شیر ممشیر ممش رقص کناں بایدرفت
کا نکہ شدکھنے اونیک سرانجام افقاد
مولوی احمد کمیر بھلواروی نے تاریخ وفات کھی:

عالم و زابد محدث بود راه ملک وصال حق پیود عود عرقش پیش قدسیال افزود رضه فرمود(۱)

چونکہ کی علی ستودہ خصال روحِ پاکش گذاشت مسحب سِ تن گشت راضی خدائے پاک ازو ہاتھ سالِ او ز روئے الم

كمال استقامت

اندُمان ﷺ کے بعد مولانا کوخاندانی مکانوں کے انبدام کی خبر ملی تو اپنی اہلیہ کوایک خط لکھا، جس میں اس واقع پر ولی قلق کا اظہار کیا۔ ساتھ ہی فرمایا کہ رات کو حضرت رسالت ما بسلی اللہ علیہ وسلم کی روحِ انور سے لقاء کا شرف حاصل ہوا۔ حضور نے آیات کریہ سسہ وَ مَشِید المطابع ِیْنَ ٥ اللّٰذِیْنَ إِذَ آاَصَابَتُهُمْ مُصِیْبَةٌ قَالُوْ آلِاللهِ

⁽۱) "تذكرة صادقة"ص: ٩٩

وَإِنَّ آلِكَيْهِ رَاجِعُونَ ٥٠ تلاوت فرمائي -اس مكاشف كے بعدول بالكل مطمئن موكيا - آخر ميں فرماتے ہيں:

نام نشان دارِ فنا کے ڈبا چکے جوگی ہوئے ہیں محرمِ اسرار کے لئے جملہ فر زندان وخان ومان من (۱)

دریائے عشق خالق ہر دو جہاں میں ہم کفنی گلے میں ڈال کے تسمہ کمر کے نیج اے خدائے من، فدایت جان من

سیدصاحب کے دوبارہ ظہور کاعقیدہ بہت پختہ تھا بلکہ دورِ ابتلاء میں فرمایا کرتے تھے کہ ظہور کا وقت بہت قریب آگیا ہے اس لئے کہ نیاز مندوں کی مصبتیں شدت کے آخری درجے پر پہنچ گئی ہیں۔رحمہ اللّٰد تعالیٰ۔

⁽۱) "بندوستان کی کہلی اسلائ تحریک" من:۱۸۵،۱۸۳

گیار ہواں باب:

سرگزشت ِانڈ مان (۲)

مولا ناعبدالرحيم

پہلے اور دوسرے مقدے کے قیدیوں میں سے مولانا عبدالرجیم سب کے بعد انڈ مان پنچ تے۔ سیّدا کبرز ماں نے انھیں بھی مولانا احداللہ اور مولانا کی علی کے مکان میں شہرایا۔ پھر گھاٹ پرمحرزی کی اسامی مل گئی، جس کی تخواہ چھرو ہے ماہوارتھی۔ سید انشاءاللہ ساکن باندہ مولانا عبدالرجیم کے رفیق کا رہتے، بیفدر کے سلسلے میں انڈ مان پہنچ تے اور بہت ضعیف ہو گئے تھے۔ مولانا ان کی بھی مدد کرتے رہے۔ تین سال کے بعد مولانا کو کسٹریٹ کے محکمے میں تبدیل کر دیا گیا۔ پھریہ بندوبست کے محکمے میں مامور ہوگئے۔ اس اثناء میں ایک ووکاندار سے مل کر تجارت بھی شروع کردی، جس میں چارسو رو ہے کافائدہ ہوا۔ بیرتم انھوں نے ایک دوست کے پاس امانت رکھ دی تاکہ خود آزادانہ کا رو بارکی اجازت لے لیں تو بیرو بیراس المال کا کا م دے۔

لارڈمیو کے قبل پرمعز زمسلمان قیدی ہدف عتاب بے تو مولا ناکوبھی مرکز ہے ایک دورا فقادہ مقام پر بھیج دیا گیا۔ ان کے چھوٹے ماموں مولا نا بیٹی علی فوت ہو چکے تھے۔ بڑے ماموں مولا نا احمد اللہ ہوگئے ۔ جس انگریز افسر کے ماتحت انھیں لگایا گیا، وہ صد درجہ درشت مزاج تھا۔ مولا نانے انتہائی مستعدی سے کام کیا تو وہ بہت خوش ہوا۔ اس کے جسم پر ہہ کھڑت سیاہ داغ پڑ گئے تھے۔ اگر چہوہ ڈاکٹر تھا، کیکن اپنی اس بیاری کا علاج نہ کرسکا۔ خانساماں نے اسے بتایا کہ مولا ناکے پاس اس مرض کی دواہے۔

چنانچهاس کی فرمائش پرمولانانے ایک خاص ترکیب سے روغن لوبان کشید کر کے اسے دیا، جس کے استعمال سے داغ دور ہو گئے۔اس وجہ سے وہ مولانا پراور بھی مہر بان ہو گیا بلکہ اس دوا کوسر کاری دواخانے میں رکھنے کی اجازت ما تکی جواس وجہ سے نہل کی کہ اس طرح ایک قیدی کااعز از وقت کے تمام ڈاکٹروں پرفائق ہوجاتا۔

كاروباركي اجازت

مقررہ مدت بوری کر کے مولا نانے کاروبار کی اجازت لے لی اوراس غرض سے تمیں رویے میں ایک مکان بھی خرید لیا ہیکن انھوں نے جوروپیدایک دوست کے پاس بطورامانت رکھ چھوڑا تھا،وہ اتفا قاس ہے ضائع ہوگیا اور جلد ملنے کی کوئی امید نہ رہی، عالانکہای کے بھروسہ پر کاروبار کی اجازت لی تھی۔ چونکہ سب لوگ انہیں ،مولا نااحمد اللہ اوردوس سے ساتھیوں کو حسن عمل کی وجہ ہے بہت محتر مسجھتے تھے،اس لئے بعض دوستوں کو حادثے كاعلم ہوا تو انھوں نے يانچ سورو بے كاسامان مبيا كرديا اور كہا كه آہسة آہسة ال کی قیمت اداکردی جائے۔ بعدازاں لوگ اپنی امانتیں مولانا کے پاس رکھنے لگے۔ بیاس شرط پرروپیدر کھتے کہ کاروبار میں لگادیں گے اور رویے والے کوجتنی رقم کی ضرورت ہو، یندرہ دن پیشتر اطلاع دے دے تا کہ فراہم کرلیا کریں۔اس طرح ان کے یاس دس بارہ ہزارروپیے جمع ہو گیا اور انھوں نے وسیع پیانے پر تجارت شروع کردی۔مولا نا احمد اللہ کے جھوٹے فرزندمولوی محمدیقین کوعظیم آبادے کلکته بلا کراپناا یجنٹ مقررکردیا۔ یانج فی صد سمیشن میں مولوی صاحب کو دیتے بعض دوسرے تاجروں نے بھی موصوف ہی کو اپنا ا یجنٹ بنالیا اور کم وہیش سوریے ماہوار کی آمدنی انھیں ہونے گئی۔ کارو بار کی وسعت کے پیش نظرمولا نا عبدالرحیم نے اپنے فرزندمولوی عبدالفتاح کوبھی انڈیان بلالیا۔وہ ببدرہ مہینے وہاں رہ کرناساز گاری آب وہوا کے باعث واپس چلے گئے۔

ربإئى

لارڈ لارنس گورنر جزل نے مولانا کی اپیل پرجس دوام کا تھم منسوخ کر دیا تھا اور تاصدور حکم کانی انڈ مان میں رکھے جانے کا فیصلہ صادر کیا تھا۔ مولانا کی اہلیہ کی طرف سے لارڈ ربن کے پاس رہائی کی عرضد اشت پیش ہوئی اور لارڈ موصوف نے نہ محض انھیں بلکہ انڈ مان کے ان تمام قید یوں کورہا کر دیا، جنہیں اعاث مجاہدین کے سلسلے میں سزائیں دی گئ تھیں۔ چنا نچہ مولانا کی جمادی الاولی ۱۳۰۰ھ (۱۰ رمارچ ۱۸۸۳ء کوتقریا موائیس سال کے بعد وطن پہنچ ۔ ان کے خاندانی مکان منہدم کرا کے جگہ بلدیہ کے حوالے کی جاچی تھی، جس پر بازار اور بلدیہ کی محادت بن گئ تھی، یہاں تک کہ خاندانی قبرستان کا بھی نشان باتی نہ رہا تھا۔ اہل وعیال محلّد نہو ہیہ میں مقیم تھے۔ بیٹنہ پہنچنے کے قبرستان کا بھی نشان باتی نہ رہا تھا۔ اہل وعیال محلّد نشو ہیہ میں مقیم تھے۔ بیٹنہ پہنچنے کے دوسرے دن اپنے مکانوں کی جگہ پہنچ اورنقث یک قلم منقلب نظر آیا تو وہاں کھڑے ہوکر انتہائی درد سے بیشعر بڑ ھے:

ف ابسادهم بتفرق لايجمعُ كان الزمان بهم يضرّ وينفعُ كنّا اليك من المعادل نفزعُ بقى الّذين حياتُهم لاتنفعُ(١)

يا منزلاً لعب الزمان باهله ان اللذين عهد تهم بك مرّةً اصبحت تفزع من يراك وطالما ذهب الذين يعاش في اكنافهم

فرماتے ہیں کہ میں نے مراجعت پرشہرکارنگ ڈھنگ، حال چلن،لباس، پوشاک اور

(۱) تذکرہ صادقہ ص: ۱۷۹-۱۷۹ مول نامسعود عالم مرحوم نے ان اشعار کا مغیرہ اردوییں یوں اوا کیا ہے: اے وہ منزل! جس کے رہنے والے زیانے کی دست بڑ دکا شکار ہوئے اور انھیں اس طرح منتشر کر دیا گیا کہ پھر جمع ہو نے کی آو تع نہیں ۔ وہ جنسیں بھی تیری آغوش میں آسودہ حال دیکھا تھا، زیاندان کے سہارے نقع نقصان پہنچا تا تھا۔ جو تجھے اب دیکھا ہے گھر ااٹھتا ہے۔ بھی میں حالت تھی کہ شکلات سے گھر اکر ہم تیری آغوش میں پناہ ڈھونڈ تے تھے۔ ووہ لوگ تو گذر مے جن کے ساید میں زیرگی مزندگی تھی۔ اب وہ باقی رہ مجے ہیں، جن کی زندگیاں کی بھی کام کی نہیں۔ كلطرزمعاشرت بدلاموا بإياتور باكى برحددرجدافسوس موا

کاش میں بھی اس جزیرے (انڈیان) کا بیوندز مین ہوجاتا تو بدروزِ حشر اپنے دونوں ساتھیوں (مولا نااحمہ اللّٰہ اورمولا نا یکیٰ علی) کے ہمراہ محشور ہوتا۔ (1)

باقی حالات

عظیم آباد یہ پنچ ہی سر نندند ند پولیس نے پابندی عائد کر دی تھی کہ ہر مہینے کی پہلی تاریخ کو کچھری میں حاضری کھوایا کریں اور بلا اجازت شہر سے باہر نہ جائیں۔ جب کہیں جائیں تو جائے قیام کی متعلہ چوکی یا تھانے میں اطلاع بھیج دیا کریں۔سات برس تک یہ پابندی قائم رہی۔ بعداز اس صرف ملک سے باہر جانے کے لئے اجازت ضروری قرار دی گئی حالانکہ اس زمانے میں باہر جانے کے لئے پروانڈ راہداری لینے کا دستور نہ تھا۔مولانانے پہلی حالانکہ اس زمانے میں باہر جانے کے لئے پروانڈ راہداری لینے کا دستور نہ تھا۔مولانانے پہلی مرتبہ اسمالھ میں جج کیا۔ ارذی الحجہ اسمالھ (۱۳۲ راگست ۱۹۲۳ء) کو قبل مغرب تقریباً نو سے برس کی عمر میں وفات پائی۔ "تذکرہ صادق" جس کا دوسرا نما اللد المنبور فی تو اجم اہل صادق فود " ہے، انھیں کی مرتب کی ہوئی ہے۔ کیم محدشریف فخری نے تاریخ وفات کی :

اميرم مولوی عبدالرجيم آه! وصال از مرگ آل فرمود ناگاه ز انوارش گرفت راه ممراه به جز نام خدا الله الله به زد در جنت الفردوس خرگاه امام پاک دال تشريف برد آه ازی کا خِ مجازی شد به جنت چو شد بهشاد و نه از عمر پاکش به بود آن مشعل بیت بدایت دم آخر نبوده بر زبانش مرا کرده امیر بند ماتم به تخری پیر ملهم گفت سالش به تخری پیر ملهم گفت سالش

⁽¹⁾ تذكرهٔ معاوقه ص: ۸ یا – ۱ ی

مولانا ابوالکلام آزاد بھی مولانا عبدالرحیم ہے ملے تھے، فرماتے تھے کہ میں ایک مرتبہ پٹنہ گیا اور مولوی مظہر الحق بیرسٹر کے مکان پر تشہر اتو مولانا عبدالرحیم نے پیغام بھیجا کہ ملنے کے لئے آنا چاہتا ہوں۔ چنانچہ وہ آگئے اور پچھ دیربات چیت کرکے چلے گئے۔ دوسرے دن میں ان کی ملاقات کے لئے گیا۔ بہت بوڑھے ہوگئے تھے۔

مولوى محمد جعفر

مولوی محمد جعفر نے ۱۸رزی الحجہ ۱۲۷۸ در ۱۷ ارجون ۱۸۲۲ء) سے اپنے حالات لکھے شروع کیے تھے، یہ تلاشیوں میں حکومت کے ہاتھ آئے اوران کا خلاصہ مقدمے کے دوران میں بھی پیش ہوا۔ ہنٹر نے بھی وہ خلاصہ اپنی کتاب میں درج کیا ہے۔ان حالات ے واضح ہوتا ہے کہ مولوی صاحب کی ولادت ١٨٣٥ء کے لگ بھگ ہوئی۔وس سال کی عمرتک کوئی تعلیم نہ یائی _ بارہ سال کے ہوئے تو ان کے والدمیاں جیون کا انتقال ہوا۔ اس وقت ان كالحجمونا بها كي محمد سعيد صرف حير مهينے كا قعابه چرخود بخو رتعليم كا شوق پيدا ہوا۔ کچھ کتا ہیں پڑھ کرع ائض نویسی شرع کی ۔تھوڑی ہی مدت میں پیکمال حاصل کرلیا کہتمام عرائض نولیں اور وکیل قاعدوں، ضابطوں اور قانونوں میں ان سے مشورے لیتے۔ تھانيسر ميں خاصى بۇي جائىداد بىداكرلى - ١٨٥٥ء كے ہنگا ہے ييں وه دس باره جم مشر بول کوساتھ لے کرآ زادی کی جنگ کیلئے وہلی پہنچے۔ جب انگریز دہلی پر دوبارہ قابض ہو گئے اور قومی تحریک کے لئے کامیانی کی کوئی امید باتی ندر ہی توحیب جاپ واپس چلے آئے اور معمول کےمطابق اپنا کام شروع کردیا۔ یانی بت میں شادی کی ،گرفتاری کے وقت ان کے دو بیٹے تھے اور ایک بٹی _ بڑا بٹیا ان کی اسیری کے زمانے میں فوت ہوگیا ۔ چیوٹا بیٹا، بٹی اور پہلی بیوی ان کی رہائی کے دفت زندہ تھے۔

انڈ مان کی زندگی

جیسا کہ بتایا جاچکا ہے، وہ اار جنوری ۱۸۲۱ء کومولانا کیجیٰ علی اور میاں عبد النفار کے ہمراہ انڈ مان پنچے تھے۔ جہاز سے اتر تے ہی سیدا کبرز مال کی کوشش سے چیف کمشنر کی سیجہری میں'' محرر سیکشن وار''یا'' نائب میر منشی''مقرر ہوگئے۔ایک گھر رہنے کواورایک نوکر خدمت کول گیا۔ جہاں چاہتے رہے اور جہاں چاہتے جاتے ، روک ٹوک مطلق نہ تھی۔(1)

اپی اہلیہ کودطن سے بلانے کی کوشش کی ،اس میں ناکام رہ تو ایک کشمیری فاتون سے نکاح کرنیا جوایک بلائے تا گہائی میں پیش کر بہ حالت قیدائڈ مان پنجی تھی ، یہ بیوی ۲۰ مرابر بل ۱۸۲۸ء کوفوت ہوگئی۔ بھر انھوں نے دوسری مرتب الموڑہ کی ایک برہمی سے نکاح کیا ،جس غریب کو فائدانی عدادت کے باعث بے وجہ ایک تل میں ملزم گردان کر کالے بانی کی سزا ولوادی گئی تھی۔ مولوی صاحب نے اسے حلقہ بگوش اسلام بنایا۔اس نکاح سے آٹھ ہے ہوئے ۔وہ اکیلے انڈ مان گئے تھے، رہائی پاکر واپس ہوئے تو ایک بیوی اور آٹھ ہے کی کنوا فرادان کے ہمراہ تھے۔ان کی بوری مزت قید ملازمت میں گذری بیوی اور مرضیاں اور انہلیں لکھنے مور پر بچھ تجارت بھی کر لیتے تھے۔ ذاتی کوشش سے انگریزی سیمے کی اور مختلف انگریز افروں کو عرضیاں اور انہلیں لکھنے افروں کوارد و پڑھانے گئے۔اس زمانے میں سرکاری ملازموں کو عرضیاں اور انہلیں لکھنے کی ممانعت نبھی خود فرماتے ہیں:

میں نے عرضی وا بیل انگریزی زبان میں لکھنے شروع کر دیے تھے، جس میں علاوہ تر قئ استعداد علمی کے ہزاروں روپے کا فائدہ بھی مجھ کو ہوا۔ یہی دو پیٹے بعنی معلمیٰ صاحبان اور عرائض نولی تھے، جن میں مجھ کوسور پے ماہوار سے کم

⁽I) "كالاياتى*"من:*44

ندماتا تھا۔ چونکہ میرے سوا وہاں کوئی مسلمان انگریزی خوال ندتھا، میں نے بڑے بڑے مقدّ مات اہل اسلام میں ان کو بڑی بڑی مدد دی اور بوی بوی آفتیں اور آلام مسلمانوں پرسے ٹلوادیے۔(1)

لکھتے ہیں کہ دورانِ قیام اعد مان میں تین مرتبہ نہایت خوفناک حوادث سے محض بفضل اللی محفوظ رہا۔ ایک مرتبہ عید قربان کے موقع پرانھوں نے بیل ذرج کیا تھا، اس وجہ سے بعض ہندو قیدی ان کے سخت وشمن ہوگئے اور ایک سے زیادہ مرتبہ مقد مات میں الجھانے کی کوشش کی ۔ خاصی مدّت روس آئی لینڈ میں گزاری ۔ لارڈ میو کے قل کے بعد انھیں بھی دوسرے مقامات پر بھیجا گیا۔ مثلاً بچھ مدّت ہم ومیں گزاری ۔

رہائی

انھوں نے رہائی کے لئے کئی کوششیں کیں جو کا میاب نہ ہو گیں اور ایک مرتبدا پنے ابھتے کو بھی انڈ مان بلانا چاہا ہیکن درخواست منظور نہ ہوئی ۔ فرماتے ہیں۔ چنانچہ سرد میں خیال بیدا ہو گیا تھا کہ ہم جلدر ہا ہو کر ہندوستان جانے والے ہیں۔ چنانچہ سرد میں ان کی میں خیال بیدا ہو گیا تھا کہ ہم جلدر ہا ہو کر ہندوستان جانے والے ہیں۔ چنانچہ سی ان کی کہ انگہ کا تکم صادر ہو گیا اور ساطلاع سب سے پہلے پانی پت میں ان کی کہ بیلی ہوی کو ملی میں میں ہیٹے رہو کی اور سے اطلاع سب سے پہلے پانی پت میں ان کی کہ بیلی ہوی کو ملی ہے کہ انڈ مان والی اہلیہ کی رہائی کے انتظار میں ہیٹے رہاورخود انڈ مان میں تھہرے رہنے کی اجازت لے لی۔ اس اثناء میں اپنا سامان فروخت کیا۔ مکان کو وقف کر کے مجد بنا دینا چا ہتے ہے، ڈپٹی کمشز نے اسے منظور نہ کیا۔ ۹ رنوم سام ۱۸۸ وکوستر و سال دس مہینے کے بعد انڈ مان سے روانہ مولوی ہوئے۔ جہاز پر علی رضا نام کا ایک مشہور تا جر ان کی خدمت تو اضع کرتار ہا۔ ۱۳ ارنوم مولوی

⁽۱) "کالایالی"ش:۵۵

عبدالرؤف کے پاس چینا پاڑا میں دوروزمقیم رہے۔ پھراللہ آباد، کان پور علی گڑھ، سہارن پور ہوتے ہوئے ۲۱ رنومبر ۱۸۸۳ء کو رات کے نو بجے انبالہ چھاؤنی کے آئیشن پر پہنچ گئے۔ ۱۲ روسمبر ۱۸۲۳ء کو تھائیسر نے فرار ہوئے تھے۔ پچھیم ہیں سال کے بعد دوبارہ وطن میں آزادی کی زندگی نصیب ہوئی۔ ایک بڑے کئیے کے علاوہ آٹھ ہزار روپے نقد ساتھ لائے تھے۔

بعدكےحالات

بعد کے حالات تفسیلاً معلوم نہیں۔ رہائی کے وقت مولوی صاحب کا ایک شاگر د
کیتان ممیل انبالہ چھاؤئی میں ڈپٹی کمشز ھا۔ اس نے آپ کو لکھا کہ اگر میرے پاس رہتا

پند کریں تو صانت دے کر حکومت سے اجازت لے سکتا ہوں۔ یہ مناسب قیام کا خدا
ساز انتظام تھا۔ مولوی صاحب نے اس سے پورا فا کدہ اٹھایا۔ ممیل نے ان کے لئے ہیں
رویے ماہاند اپنی طرف سے مقرز کر دیے۔ ہمیں روپ اٹھیں بعض دوسرے اگریزوں کو
پڑھانے سے مل جاتے تھے۔ جب تک ممیل انبالہ چھاؤئی میں رہا، مولوی صاحب کوکوئی
تکلیف نہ ہوئی۔ اس کا جادلہ ہوگیا تو ان پر پابندیاں بڑھ تکئیں، لیکن فروی ۱۸۸۸ء میں
حکومت نے خود بخو دتمام پابندیاں اٹھادیں۔ وہ مختلف شہروں میں جاتے آتے رہے۔
مسلمان ان کا بڑا احر ام کرتے تھے۔ مولا ناسید عبد الحی رائے بریلوی نے ۱۸۹۵ء میں
دبلی ، پانی پت ، سر ہند، انبالہ، دیو بند، کنگوہ وغیرہ کا سفر کیا تھا تو وہ انبالے میں مولوی صاحب کی
جعفر کے مکان پر بھی گئے تھے، لیکن اس وجہ سے ملا قات نہ ہوگی کہ مولوی صاحب کی
دونر پیشتر کھر نولہ (ریاست پٹیالہ) کیلے سے تھے۔ (۱)

غالبًا ١٩٠٥ء ميں وفات يائي۔ ان كے فرزندار جمند مولوي محمد اساعيل وكيل انباليہ

⁽١) ارمقان احباب (رسالدمعارف مارچ١٩٣٩م)

1902ء کے فساد میں غیر مسلموں کے ہاتھ سے شہید ہوئے۔

تصانيف

متفرق رپورٹوں یا مجموعہ ہاضوابط کے علاوہ مولوی محمد جعفر نے تین کتابیں کھیں، جن کی مختصری کیفیت ذیل میں درج ہے:

ا - تاریخ عجیب: بیر جزائرانڈ مان کی تاریخ ہے، جس میں جزیروں کی جغرافیائی تفصیلات کے علاوہ ان کی آباد کاری کی کیفیت عہد بہ عہد بنائی گئی ہے۔ کتاب کے آخر میں ان تمام زبانوں کی بول چال کا مختصر سامر تع درج کر دیا ہے، جوانڈ مان میں بولی جاتی تحصی، مثلاً اردو، عربی، فاری، ترکی، ساحلی، پشتو، تمرانی، بلوچی، سندھی، کوباری، مرہٹی، بگالی، بری، چینی، تشمیری، پنجابی وغیرہ۔ اس سے اندازہ ہوسکتا ہے کہ مولوی صاحب نے قیام انڈ بان کے زمانے میں وہاں کی تقریباً تمام بولیاں سیکھ لی تقیس ۔ یہ کتاب حکومت کی منظوری ہے کے ۱۸۱ء میں مطبع نول کشور نے چھائی تھی۔ اب بہت کم یاب ہے۔

۲- تواریخ عجیب: یه کتاب زیاده تر "کالا پانی" کے نام ہے مشہور ہے۔ اس میں مولوی صاحب نے اپنی گرفتاری، مقد ہے، قید، سفر انڈمان ، اسیری کی زندگی اور رہائی کی پوری سرگزشت بیان کی ہے۔ ضمنا اپنے رفقاء کے حالات بھی بیان کر دیے ہیں۔ چھوٹی سی کتاب ہے اور دو تین مرتبطع ہو چکی ہے۔

سا- سوائح عجیبہ: یہ سید احمد بر بلوی اور ان کے اکا بر خلفاء کے حالات پر مشتل ہے۔ پہلی مرتبہ ۱۸۹۵ء میں مطبع محتبائی سے شائع ہوئی تھی۔ بعد از ان اس کے دوایڈیشن جھیے ۔ اس کتاب کی حقیق حیثیت کے متعلق 'سیدا حمد شہید' میں بحث ہو چکل ہے۔ اس کی ضرورت نہیں۔ اعادے کی ضرورت نہیں۔

لا بوری احدی جماعت کے متاز رکن ڈاکٹر بٹارت احمد مرحوم نے ایک مرتبہ جھ

ے ذکر کیا کہ وہ انبالہ میں مولوی محمد جعفر سے ملے تھے، جب مولوی صاحب فاصے بوڑھے ہو گئے تھے۔ ڈاکٹر صاحب فرماتے تھے کہ دین کے متعلق انھوں نے جتنی باتیں کیس، خاص درد اور سوز سے لبریز تھیں۔ رخصت کے وقت دعاء کی ۔وہ بھی بڑی بی پڑتا ثیرتھی۔

باقى اصحاب

اسیرانِ انڈ مان میں سے تکم رہائی کے دفت مندرجہ ویل حضرات زندہ تھے:

ا - میال عبد الغفار: ساکن عظیم آباد جومقدمهٔ انبالہ میں ماخوذ ہوئے تھے۔
مولانا کیلی علی اور مولوی محمد جعفر کے ساتھ الرجنوری ۱۹۲۹ء کو انڈ مان پہنچے۔ مارچ
۱۸۷۲ء میں انھوں نے درخواست دیکرا بنی المیداور دولڑکوں کواپنے پاس بلالیا تھا۔ رہائی
کے بعد وہ اہل وعیال کے ساتھ عظیم آباد واپس آئے اور ۱۳۳۳ ھے(۱۵-۱۹۱۳ء) کے لگ

۲- مولوی امیر الدین: انھیں مقدمہ مالدہ میں صبیب دوام اور منبطی جائیداد
کی سزا ہوئی تھی۔ مارچ ۱۸۷۲ء میں انڈ مان پہنچ۔ اس وقت تک نے قانون جاری
ہو چکے تھے۔ ان میں قید یوں کیلئے وہ رعایتیں باقی نہ رہی تھیں جن سے پہلے قیدی مستفید
ہوتے رہے تھے ،الہذا مولوی صاحب کو مدّ ت تک سخت مشقت کرنی پڑی ۔ پھر وہ
مدرسے میں معلم مقرر ہو گئے۔ ۳رمارچ ۱۸۸۳ء کومولا تا عبدالرجیم عظیم آبادی اور میاں
عبدالغفار کے ماتھ مہندوستان روانہ ہوئے۔ بعد کے حالات معلوم نہ ہوسکے۔

سا۔ مولوی تبارک علی: اُنھیں عظیم آباد کے دوسرے مقد سے میں طبس دوام اور شبطی ُ جائداد کی سزا ہوئی تھی۔ان کے دالد ماجد مولوی مبارک علی قید ہی میں فوت ہو چکے تھے۔مولوی تبارک علی کو بھی انڈ مان میں ابتدا میں سخت مشقت کرنی پڑی۔ پھر اشیشن محرر ہو گئے اور ماہو کر ۲ مرارچ ۱۸۸۳ء کوانڈیان سے روانہ ہوئے۔

مم-میال مسعود کل یا مسعود خال: بیضلع بوگرا(۱) (بنگال) کے رہنے والے عصر مولا نامسعود عالم کے بیان کے مطابق ۲۰ ۱۸ء میں گرفتار ہوئے تھے۔ (۲)

ان کے مقد مے کا حال بالکل معلوم نہ ہوسکا کیکن پیقینی ہے کہ ۱۸۸۳ء میں رہا ہوکر ۲۸ رابر مل کوانڈ مان سے رہگر ائے وطن ہوئے۔

۵-ابراجیم منڈل: مقدمہ راج کل کےسلیے میں ان کا ذکر آچکا ہے۔مولوی محمد جوہ ابراجیم منڈل: مقدمہ راج کل کےسلیے میں ان کا ذکر آچکا ہے۔مولوی محمد جعفر،ابرخال، تبارک علی اور امیر الدین کی گرفتاری ایک بوڑھے اور ضعیف محض ابراہیم منڈل کو اسلام پور میں (گرفتار کیا کیا) اور اپنے معمولی اور پرانے کو اہول سے جو جاہا گوائی دلواکر بے جاروں کو

اس سے مترشح ہوتا ہے کہ ایراہیم منڈل کو بھی کالا پانی بھیجا گیا تھا۔مولا نامسعود عالم نے ۱۹۳۷ء میں لکھا تھا کہ ایرائیم منڈل کے انقال کو چالیس پینتالیس سال گذر چکے ہیں۔(۴) کو یاوہ موجودہ عیسوی صدی کے آغاز تک زندہ تھے۔

اورجوامحاب كرفمار ياتيدموئ وان كمتعلق بجوعلم ندموسكا

محور نرجزن كاتقكم

کالے بانی روانہ کیا۔ (۳)

آخریں اتنا اورعرض کردیتا جاہے کہ 'وہائی' اسرانِ انڈمان کی رہائی کے سلسلے میں حکومت ہند کے محکمہ واضلہ کی طرف سے ۱۱رجنوری۱۸۸۳ء کومندرجہ ذیل اعلان

⁽١) " تذكرهٔ مادق" بين اي" جوزا" لكما كياب _ (ص ١٤٤)

⁽۲) ہندوستان کی بہلی اسلامی تحریک ص:۱۲۹-۱۷۰

⁽۳) مندوستان کی میلی اسلامی تحریک ص:۱۶۹-۱۷۰

⁽٣) متدوستان كى بىلى اسلاى تحريب ص: ١٥٥

بغرض اطلاع عوام شاكع هواتها:

مقدمہ کے تمام پہلوؤں پر کائل غور دخوض اور حکومت بنگال وحکومت بنگال وحکومت و بنگال وحکومت و بنگال وحکومت و بنگاب سے مشورہ کے بعد گور نرجزل بہا جلاس کونسل نے فیصلہ صادر فر مایا ہے کہ جن لوگوں کو سلطنت کے جڑم کی بنا پر صب ووام بہ عبور دریائے شور کی سزا ہوئی تھی اور وہ بنوزیہ سزا بھگت رہے جیں ، انھیں اب رہا کر کے گھر ول میں آنے کی اجازت وے وی جائے ، البت انھیں پولیس کی جمرانی قبول کرنی ہوگی نیز مقامی حکومتیں ان کی بود و مائد پر جو بابندیاں عائد کرنا مناسب سمجھیں ، وہ لاز مامنطور کرنی پڑیں گی۔ (۱)

یہ بتانامشکل ہے کہ اس فیصلے پر پہنچ اور اسے نافذ کرنے میں کون کون سے فوری محرکات بروے کار آئے۔ لیکن ہم جانتے ہیں کہ' وہابیت' کا ہو اہندوستان میں کھڑا کرنے کے ذمددار چندائگریز افسر تھے جن میں سے ولیم ہنٹر کوسب سے بڑھ کرنمایاں حیثیت حاصل ہوئی اور اس کی کتاب' ہمارے ہندوستانی مسلمان' مدت تک حکومت کی پالیسی کا بنیٰ بنی ربی۔ جب سرسید احمد خال مرحوم اور بعض دوسرے اصحاب نے اس ' ہوتے' کو بالکل بے بنیاد ثابت کر دیا تو ارباب اختیار کی دائے میں تغیر پیدا ہوا۔ اس طمن میں سب سے مؤثر اور نتیجہ خیز مساعی سرسید مرحوم ہی کی تھیں۔

تاريخ

مولوی محمد جعفر تھا نیسری نے ان اسیرانِ مظلوم کی رہائی کا ایک قطعہ تاریخ بھی درج کیا ہے بعنی :

كه بودند ابل علم و فضل باهر

تے چند از عظیم آباد پٹنہ

⁽١) سول ايند ملتري كز ف لا مور مورنده ارجنوري ١٨٨٣م

چو شد تهم دوام هبس صادر ربا گشتند باتی مانده آخر کد دارد بر رعایا رجم وافر مراجیت خوشے آمد به خاطر کد باشد در فن تاریخ مابر ربا گشتند اسیرانِ جزائر سنین عیسوی از شعر ظاہر (۱)

بر ایشیال باعبور بحر پر شور ازیتال چند کس مردند در قید بخکم والسرائ قیصر بهند چو کر دم فکر تاریخ ربائی نظیرش کم تواند یافت آل کس پس از طول زمن الحمدللد حروف صد بیان سال جحری

⁽¹⁾ سوائح احمدي طبع اول ص: ٢٢٥

بار ہواں باب:

لاردميوكاقتل

لارذميو

جابدین اسلام وآزادی کے زمانہ اسیری کا ایک اہم واقعہ ہندوستان کے وائسرائے لارڈ میوکائل ہے، جوانڈ مان میں ہوااوراس وجہ سے ہمار ہے جاہدوں کی اسیری کا دور بھی امتداد پذیر ہوا، اوران پر بختیاں بھی ہڑھ گئیں۔ مثلاً جن رعایتوں سے وہ مستفید ہور ہے سے ، چھین کی گئیں اور آخیں مرکز سے اٹھا کر الگ الگ دور دور علاقوں میں بھیج دیا میا، ملکہ یہ کوشش بھی کی گئی تھی کہ انھیں قتل کے الزام میں الجھا کر حد درجہ تخت سزائیں دی جائیں۔ چونکہ اس واقعے کو بھی ان کی اسیری سے اک گونہ تعلق ہے، لہذا اسے بھی یہاں جائیں کر دینا جا ہے۔

لارڈ میو ۱۸ ۲۹ء میں ہند وستان کا گور نر جنرل اور وائسر ائے مقرر ہوکر آیا تھا۔
دوسرے معاملات کی طرح اسے انڈ مان میں بھی اصلاحات جاری کرنے کا خاص خیال
تھا۔ چنا نچہ اس نے ایک نیا مجموعہ ضوابط مرتب کرایا، جسے ۱۸۵ء سے نافذ کر دیا گیا۔ پھر
اسے خیال آیا کہ خود انڈ مان کو دیکھیے اور تمام حالات کا جائزہ لینے کے بعد وسیع پیانے پر
اصلاحات جاری کرے۔ چنا نچہ وہ کلکتہ سے رکھون گیا اور دہاں سے ۸رفر وری ۱۸۵۲ء کو صبح کے وقت انڈ مان پہنچا۔ لیڈی میو کے علاوہ متعدد اصحاب اس سفر میں اسکے تمراہ تھے۔

جزيے كادوره

اعثر مان چینے کے ساتھ ہی چیف کمشنر نے اطمینان دلا دیا کدوائسرائے کی حفاظت

كتمام انظامات بخوني كركئ محي مين مثلا:

ا مشقتی قیدیوں کو تھم دے دیا گیاہے کہ ان میں سے کوئی بھی کام پرسے غیر حاضر نہونے یائے۔

۳- پولیس کی گارد وائسرائے کے دائیں بائیں اور آگے پیچےرہے گی۔گاردکے ہرسابی کی بندوق بھری ہوگی۔

سا- جن جزیروں میں زیادہ تھین مجرم رہتے ہیں،ان میں پولیس کے علاوہ مسلم فوج بھی دائسرائے کی حفاظت پر مامور ہوگی۔

غرض وائسرائے اکیس ضرب توپ کی سلامی کے بعد جہاز سے اترا۔اس نے مختلف مقامات دیکھے۔قید ہوں کے زنانہ اور مردانہ میتال بھی ملاحظہ کیے۔ بعض بارکوں کا بھی معائمینہ کیا۔ جزیرے میں ریل جاری کرنے کے متعلق بھی گفتگو کی۔ دو پہر کا کھانا چیف کمشنر کے ساتھ کھایا۔ مولوی مجم جعفر چشم دید حالات بیان کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ راستہ چلتے وقت پولیس کے آدمی جب وائسرائے کے بہت نزدیک ہوجاتے اور قید یوں کو ذرا دور ہٹا تے تو وائسرائے اس پر ناراضی کا اظہار کرتا۔ خود مولوی صاحب بعض اوقات وائسرائے سے اپٹر انچھونے کی نوبت آھاتی۔ (۱)

قيد يول كى خوشى

چیف کمشنرادرانسران آباد کاری نے پرانے قید یوں کو یقین دلایا تھا کہ دائسرائے کے تشریف لے جاتے ہی اچھے چال چلن والے اسپرانِ بعناوت اور دوسرے قیدی رہا کردیے جائیں گے۔اس وجہ سے پرانے قیدی بہت خوش تصاورا پنے آپ کورہاشدہ

⁽۱) تاریخ مجیب ص: ۲۰

سیحفتے تھے۔ کسی کواندازہ نہ تھا کہ تھوڑی ہی دیر میں ایک ایسا حادثہ پیش آ جائے گا، جونہ تھن اس خوشی ہی کوشتم کردے گا، بلکہ نئ مصیبتوں کا پیش خیمہ بن جائے گا۔

انڈ مان میں سال اور ساکھو کے علاوہ ایک لکڑی ہوتی ہے، جبکا رنگ خون کی طرح سرخ ہوتا ہے۔ جبکا رنگ خون کی طرح سرخ ہوتا ہے۔ وہ نہا بیت پا کدار ، خوش نما اور خوشبود ار ہوتی ہے۔ ان لکڑیوں کیلئے ایک آ را محمر بھی بنادیا گیا تھا۔ وائسرائے نے اسے بھی دیکھا اور وہاں اس عجیب وغریب لکڑی کا ایک بڑا تختہ ملا حظہ کیا جس سے انجام کاروائسرائے کا تابوت بنایا گیا۔ (۱)

ماؤنث ہیریٹ کامعائینہ

ایک گفته دن باقی ره گیا تھا۔ پرائیویٹ سکریٹری کا اصرار تھا کہ اب باقی دورہ اگلے روز پر ملتوی کرکے جہاز پرتشریف لے چلیں۔ لارڈ میونے کہا کہ ابھی دن باقی ہے، شعنڈ ا اور سہانا وقت ہے۔ ماؤنٹ ہیریٹ کو (۲) دیکھ لینا چاہئے۔ جہاں ایک سیٹوریم بنانے کی تجویز تھی۔ چنا نچہ اس کی سواری کے لئے ایک یا بوحا ضرکر دیا گیا۔ نصف چڑھائی پرجا کر وائسرائے نے اصراد کیا کہ میں پیدل چلوں گا اور ساتھیوں سے کہا کہ جوچا ہے یا بو پرسوار ہو جائے۔ مونٹ ہیریٹ پر وائسرائے دیر تک غروب آفتاب کا تما شاد یکھا رہا اور اس نے اسے کہا کہ گھا۔ نے اسے کہا دیا تھا۔ نظارہ میں نے عربح کھی نہیں ویکھا۔

قاتلانهمله

واپسی کے وقت اندھیرا ہونے لگا تھا، وائسرائے اوراس کے سابھی راستے کا تین

⁽۱) تاریخ عجیب ص: ۵۰

⁽۲) جنوبی اندمان کی مشہور پہاڑی ہے، جس کی بلندی ۱۱۹۳ فٹ ہے۔ اس کا نام اندمان کے ایک عاکم کرنیل نائنلر (۱۸۱۲ء-۱۸۷۳ء) کی بیوی HARRIET کے نام پر رکھا گیا تھا۔ سب کا بیان ہے کہ بیر جگہ برلخاظ آب و ہوا بہت خوشگوار ہے ہوئی ای کے قریب واقع ہے۔

چوتھائی حصہ طے کر چکے تو مشعلوں والے بینج گئے ۔ مولوی محمد جعفر لکھتے ہیں کہ اس وقت سات بجے تھے:

لارڈ صاحب بہا در بل ہوپ ٹاؤن پر پہنچ۔ وہ مشعل والے لارڈ صاحب صاحب کے آگے، پر نشنڈ نٹ صاحب اور پرائیویٹ سکریٹری لارڈ صاحب کے داہنے بائیں اورایک لفٹنٹ اورایک کرنیل فریکیٹ گلاس گیو (جس جہاز پر لارڈ میوآئے ہے) کے تعوز نے فاصلے پر پیچھے کی طرف لارڈ صاحب بہادر کے وابنے بائیں چلا تھے اور سلح گاردفری پولیس کالارڈ صاحب سے پیچھے پاؤں سے پاؤں ملاتا ہوا چاتا تھا۔ لارڈ صاحب بہادر نے مع پرائیویٹ سیکرٹری کے آہتہ آہتہ چل کر گھاٹ کی سیڑھیوں کی طرف جاکر بوٹ بیس اترنا جاہا۔ اس وقت یک بیک لارڈ صاحب بہادر کی طرف جاکر بوٹ بیس اترنا جاہا۔ اس اور جب اس طرف دیکھا تو معلوم ہوا کہ لارڈ صاحب کی پشت پرکوئی ہاتھ مع اور جب اس طرف دیکھا تو معلوم ہوا کہ لارڈ صاحب کی پشت پرکوئی ہاتھ مع چھری کے دارکرر ہاہے اورایک آ دی لارڈ صاحب کی پشت پرچٹا ہوا ہے۔ دی بارہ آ دی ایک دم اس شخص پرگر پڑ ہے۔ ارجن قیدی نے پکڑ کرچھری اس کے ہاتھ سے چھین لی۔ افرا تفری میں شعلیس گل ہوگئی تھیں۔ پرائیوٹ سیکرٹری نے قیدی کو ہاتھ سے چھین لی۔ افرا تفری میں شعلیس گل ہوگئی تھیں۔ پرائیوٹ سیکرٹری نے قیدی کو ہاتھ سے چھین لی۔ افرا تفری میں شعلیس گل ہوگئی تھیں۔ پرائیوٹ سیکرٹری نے قیدی کو ہاتھ سے چھین لی۔ افرا تفری میں شعلیس گل ہوگئی تھیں۔ پرائیوٹ سیکرٹری نے قیدی کو ہاتھ سے چھین لی۔ افرا تفری میں شعلیس گل ہوگئی تھیں۔ پرائیوٹ سیکرٹری نے قیدی کو

وائسرائے کی وفات

لارڈ میوضرب کھا کرسمندر میں گرگئے۔ جب دیکھا تو وہ گہرے پانی میں کھڑے اپنا منہ صاف کرر ہے تھے۔ پرائیوٹ سکریٹری ہے کہا'' مجھے ضرب لگائی گئی، کیکن کچھ فارنہیں، ضرب معمولی ہے' ممدوح کوگاڑی پر بٹھا دیا گیا جو بل پر کھڑی تھی۔ مشعلیں دوبارہ روشن کی گئیں۔ اس وقت دیکھا کہ ان کی پشت پر کوٹ کٹ کر ایک چھید ہو گیا ہے، جس میں سے پر نالے کی طرح خون بہتا ہے۔ اسے رومالوں سے بند کرنے کی کوشش کی گئے۔ وہ ایک دومنٹ تک جب جاپ بیٹے رہے۔ پھران کے باؤں لڑ کھڑائے اور پیچھے کی طرف گریڑے۔ آہتہ ہے کہا:''میراسراو پراٹھاؤ''ساتھ ہی ختم ہو گئے۔

جہاز پر پہنچا کرڈاکٹروں نے دیکھاتو کہا کہاب ہرکوشش بے سود ہے۔ دوکاری زخم مونڈ ھے کے پاس سے شروع ہوکر سینے تک چیرتے چلے گئے تھے۔ان میں سے ایک بھی جان لینے کے لئے کافی تھا۔

شيرعلى قاتل

قاتلانة تمله شیر علی قیدی نے کیا تھا، جواصلاً تیراہ کا آفریدی تھی۔ کمشنر پشادر کے سوار اردلیوں میں بھرتی ہوا۔ اس کے خاندان کی دوشاخوں میں مدت سے شدید عداوت چلی آتی تھی اور جھکڑوں میں دونوں شاخوں کے بہت سے آدی مارے جا چکے تھے۔ شیر علی کو بھی گھر والوں کی طرف سے بار ہا بلاوے آئے کہ آواور دشمنوں سے بدلہ لو۔ ایک مرتبہ اے خبر ملی کہ دشمنوں میں ہے ایک پشاور آیا ہوا ہے۔ چنانچہ وہ اٹھا اور پشاور کے ایک باغ میں اس نے دشمن کوئل کردیا۔ (۱)

اس برقل کا مقدمہ قائم ہوااور ۱۳ ماپر بل ۱۸۹۵ء کو پھانی کا تھم سایا گیا، کیکن چونکہ
اس کا عام چلن اچھا تھا، جنگ امپیلہ میں بھی وہ شریک رہا تھا اور انگریزوں کی خدمات
انجام دی تھیں، لہذا سزائے موت کو عبس دوام بہ عبور دریائے شور میں بدل دیا گیا۔
۱۸۲۹ء سے اس نے دل میں فیصلہ کرلیا تھا کہ کسی بڑے انگریز کو قبل کرے گا۔وہ اکثر
ووزے رکھتا، تخواہ اور مزدوری سے جو کچھ تی رہتا، مہینے دو مہینے کے بعداس کا کھانا پکا کر
مسکینوں میں تقسیم کر دیتا۔ نیک کرداری کے باعث وہ بہت ممتاز ہوگیا تھا اور نگراں بھی
اس کی زیادہ دیکھ بھال نہ کرتے تھے۔شقتی قیدیوں کے لئے اسے تیام بنا دیا گیا تھا۔

⁽¹⁾ ملاحظہ ہورٹیل ٹیلر کے سوانح حیات۔انگریز ک_ص:۲۵۸-۲۵۲ ٹیلر نے بیدھالات لارڈ میو کے قبل کے بعد ۱۳ رفر دری ایم ۱۸۷ء سے کندن نائمنر میں شائع کرائے تھے۔

جرم کی تفتیش

اگریزوں کو یقین تھا کہ شیرعلی کا یہ فعل گہری سازش کا بتیجہ ہے۔ چنانچہ اسلسلے میں ڈپٹی کمشنر پولیس کلکتہ کے علاوہ لالہ ایٹوری پر شاد کو تفتیش کے لئے بھیجا گیا۔ آخر الذکر مقد مات سازش خصوصاً مقد مدا نبالہ اور پہلے مقدمہ عظیم آباد میں کارکر دگی کے باعث سورج گڑھ میں ڈپٹی کلکٹر بن چکا تھا۔ ان لوگوں نے متاز قیدیوں کو الجھانے کی بڑی کوشش کی بلیکن کامیانی نہ ہوئی۔

خود شریطی کے متعلق بیمعلوم ہوا کہ وہ دن بھر گھات میں رہائیکن حملے کا موقع نہل سکا ، نا امید ہوکر وہ ماؤنٹ ہیریٹ پر جا بیضا۔ گویا تقدیم خودا ہے موقع پر لے گئی۔ بے شک بڑا شدز ورتھا۔ ایک موقع پر بھاری بیڑی اور جھکڑی تو ڈکراس نے بتی بجھائی اور گورے پہر بدار کی تقین چھین کر اسے زخی کر دیا ،لیکن دیکھنے میں بہت وہلا پتلا اور بدروتھا۔ خیال میں بیہ بات نہ آئی تھی کہ لارڈ میوجیسے طویل القامت اور بھاری بھر کم محتص پر وہ حملہ سکے گا۔ جب اس سے بوچھا جاتا کہ حملہ کس کے ایماء سے کیا ؟ جواب دیتا: خدا کے حکم ہے۔

بچانسی کی سزا

غرض اس پرمقدمہ چلا اور بھانس کی سز اہوئی۔منظوری کے بعد بھانسی دینے لگے تو اس نے بلندآ واز سے کہا:

میں نے جب اس کام کاارادہ کیا تھا تو اپنے تیک مردہ سجھ لیا تھا۔مسلمان بھائیو! میں نے تہارے دغمن کو مار ڈ الا۔اب تم شاہد رہو کہ میں مسلمان ہوں اور کلمہ پڑھا۔دو دفعہ کلمہ ہوشیاری سے پڑھا۔ تیسری بار پھانسی کی رتبی سے گلا گھٹ کر پوراکلمہ ادانہ ہوا۔ یوں لارؤمیو کے آسے ایک مہینہ چارروز بعد اامرارج ۱۸۵۳ وکواسے بھائی دی گئے۔ کہتے ہیں کہ ۱۸۵ء میں جیف جسٹس نار کن پر قاتلانہ مملہ ہوا تھا تو لارڈ میوکو بھی خبر دار کر دیا گیا تھا اور حفاظت کے بڑے انتظامات کر لئے گئے تھے، لیکن خود لارڈ میو مسکراتے ہوئے کہتے کہ مارنے والے کو بیا نظامات روک نہیں گے۔(۱) اس واقعے کی وجہ سے مجاہدین کومزیددس سال قید میں بسر کرنے پڑے۔

⁽۱) برمالات مولوی محرجعفری" تاریخ جیب" ہے اخوذ ہیں (ص ۲۵-۸۲) جواس واقع کے پینی شاہد ہے۔ مولوی صاحب نے بعض خوفاک بے انصافیوں کی طرف بھی اشارہ کیا ہے۔ مثلاً وہ لکھتے ہیں کہ جیند اشاہ نام ایک سر بعثلی فقیر الارمبر ۱۸۵۸ موضل رائے پر لی سے بہ جرم ترخیب بغاوت چودہ برس کی سزایا کرانڈ مان آیا تھا اورا ہے ۱۲ رومبر کور با موجونا جا ہے تھا گئیں" تاریخ جیب" کی ترتیب تک وہ رہانہ واتھا۔ لارؤمیوکوسلمانوں کاوشن غالباس لئے کہا کہ اس کے حدید می مسلمانوں کاوشن غالباس لئے کہا کہ اس

تير ہواں باب:

نظام عمل اورا صطلاحات

غلطنبى اورغلط بيانى

دعوت ربلیغ کے متعلق بچھ تفصیلات گزشتہ ابواب میں پیش کی جاچکی ہیں،انھیں دوہرانے کی ضرورت نہیں۔ یہ بھی بتایا جاچکا ہے کہ روپیاک کن ذریعوں سے اور کس کس طریق پرجمع کیا جاتا تھا۔ یہال سب ہے پہلے ایک غلطفہی کا از الدکر دینا چاہیے،جس میں بعض اصحاب نیک نیتی ہے مبتلا ہوئے۔اس کا سرچشمہ ڈاکٹر ہٹر جیسے متعصب ہق ناشناس اور خدا ناترس انگریز وں کی مسلسل ومتواتر غلط بیانیاں تھیں، یعنی سمجھ لیا گیا تھا کہ جماعت مجاہدین کے داعی عوام کورات دن جہاد بالسیف کی تلقین کرتے رہتے ہیں۔ جہاں جاتے ہیں ان کا خاص مشغلہ یمی ہوتا ہے کہ مسلمانو س کو بداطا کف الحیل عسا کر مجابدین میں بھرتی کر کے سرحد پہنچا دیں ، جہال ہے سراجعت بوجوہ بہت دشوارتھی _مقدمہ انبالہ کے بعض گواہوں نے اینے بیانات میں بہجی کہا کہ وہ سرحد سے واپس آنے کے آرز و مند تھے ہیکن نگرانی ایس بخت وشدید ہوتی تھی کہ دیر تک واپسی کی کوئی صورت نہ بنی۔ حقيقت حال يرنظرركهي جائة واعيول كالصل كام بيرتفا كهمسلمانو سكودين هقه کے پابند بنا کیں۔انکی زندگیاں شریعت کےسانچے میں ڈھالنے کیلیے ضروری معلومات بم پہنچاتے رہیں اور جو جوعقیدے یا اعمال یا سمیس خلاف اصول اسلام ہوں، اخیس ترك كرادير -البيته وه يم بمي متاتے تھے كه جهاداى طرح ايك اہم اسلام علم ہے جس طرح نماز، روزه، زکوق، تج یا دوسر بے اسلامی احکام ہیں۔ یہ بھی ضرور بتاتے ہوں گے کہ اس میں کہ غیر مسلموں کے تسلط سے ہندوستان دارالحرب بن چکا ہے، اس لئے کہ اس میں اسلامی واجبات واحکام کی تجیل آزادانہ نہیں ہوسکتی۔ بعض احکام کی بجا آوری سے یقینا تعرض نہیں کیا جاتا، تاہم یہ برائے نام آزادی مسلمانوں کی توت وطاقت اور حکم واختیار کا بتیجہ نہیں بلکہ حاکموں کی مصلحت شناسی اور اجازت بخشی کا بتیجہ ہے۔ حاکم جس وقت حاجی، اسے ختم کر سکتے ہیں۔

حوصله سوزتغير

گویا وہ لوگ اسلامیت کے چند تقاضوں نہیں بلکہ تمام تقاضوں کو پورا کرانے کے لئے کوشاں تھے۔ان میں سے ایک ضروری تقاضا جہاد کا بھی تھا۔ ہنٹر وغیرہ نے ای کو مرجع ومحور طاہر کرنے کی کوشش کی نتیجہ یہ ہوا کہ صورت حال کے متعلق عوام کے خاصے بورے طبقے میں غلط ہنمی پیدا ہوگئ، پھر مختلف لوگ اضے اور انھوں نے اپنے اسلوب فکر کے مطابق جہاد کی قدرہ قبہت گھٹانے یا ہندوستان کواس کے دائر کا عمل سے نکا لئے کی کوششیں شروع کر دیں۔جو حضرات جہاد کے معتقد تھے،انھوں نے ایک ججیب محتاط راستہ اختیار کیا یعنی امام جہاد کے شرائط پر حددر جدز ور دیا اور بالآخر صاف کہد یا کہ آئی م

اس طرح سیرصاحب کی جماعت کے داعیوں اور کارکنوں کی جانباز اندکوششوں کے ایمان افروز نتائج مٹا دیے گئے ، جن کیلئے انھوں نے دنیوی زندگی کی تمام راحتیں، اطمینان ودلجمعی کے تمام سامان اور فارغ البالی کے تمام وسائل بے دریغ قربان کیے تھے۔ جن زہرہ گدازمشکلات میں بیکارنامہ انجام پایا تھا، ان کا نصور بھی جمارے مجمد کے دعویدارانِ دعوت شاید ہی کرسکیں۔

خالفانہ مساعی کا دائرہ اتنا وسیج ہوگیا کہ اس کا حصر مشکل ہے، مثلاً کہیں اختلاف عقائد کا فتندا تھایا گیا، کہیں سیّد صاحب کی جماعت کے کارکنوں کارشتہ اہل نجد سے جوڑا گیا اور اہل نجد کے متعلق غلط بیانیوں کے جوطو مار قرنوں میں تیار کیے جا چکے تھے، ان سب کوسید صاحب کی جماعت کے سر پر چک دیا گیا۔ کہیں اسبابِ جہاد میں موشگا فیاں کرتے کرتے معاملہ اس منزل پر پہنچا دیا گیا کہ اس تھم کے وجود اور عدم میں کوئی فرق نہ رہا۔ آخر میں بعض لوگوں نے جہاد کی حیثیت ہی منقلب کردی۔

بیند بھولیے کدان تمام مختف الاشکال مسائی کو حکومت انگلفید کی خاص سر پرستی حاصل رہی۔ اکثر مسلمانوں کو فریضہ جہاد ہے نئے نکلنے کی بہل اور بد مشقت راہیں ل گئیں تو وہ ان راہوں پر چل نظے۔ اس طرح اصل مقصد ہی کا تحصیں کوئی احساس ندر ہا۔ اسلامی فکر ونظر میں بیخوفٹا کے تغیر بڑا ہی حوصلہ سوز اور ہمت فرسا تھا۔ اگریہ فتنے ندا شختے یا ندا تھائے جاتے تو یقیناً سید صاحب کی جماعت کے داعیوں کی کوششیں مسلمانوں کو قرنوں پہلے آزادی کی منزل مقصود پر پہنچا دیتیں اور ہماری بیداری کی تاریخ جنگ فرنوں پہلے آزادی کی منزل مقصود پر پہنچا دیتیں اور ہماری بیداری کی تاریخ جنگ طرابلس سے کم دبیش سواسوسال پیشتر شروع ہوتی۔

ايك مثال

ہنٹرنے اپنی کتاب میں ایک واقعد لکھا ہے، جس کا خلاصہ یہ ہے کہ ایک بوڑھا آدی سرکٹ ہاؤس میں پیپل کے نیچے بیٹھا ہوالوگوں کو وعظ سنار ہاتھا اور کہدر ہاتھا کہ محرم کامہینہ قریب آرہا ہے، ہم لوگ اس موقع پر نئے کپڑے پہنو گے، حالانکہ اس قتم کی تمام ہاتیں خدااوراس کے رسول ہاک صلی اللہ علیہ وسلم کے نزدیک ناورست ہیں۔

اس بوڑھے واعظ کی سواری کا ایک یا بوتھا، جسے چرنے کیلئے چھوڑ دیا گیا تھا اور اس کے یاؤں میں گھاس کا رسّا بندا ہوا، دواس کے ساتھی تھے۔وعظ کے بعد اس نے تھوڑی دریآرام کیا۔ پھروہ اپنے ساتھیوں کو لے کر دوسری جگہ چلا گیا۔

وعظ سننے کے بعد سامعین نے مختلف رائیں ظاہر کیں۔ایک بولا: پیخف ہمارے
باپ دادا کی قبروں پر چراغ جلانے سے روکتا ہے۔ دوسرے نے کہا: یہ ہماری لڑکیوں کی
شاد یوں پر باج گا ہے اور ناچ رنگ کا مخالف ہے۔ تیسرے نے بیرائے ظاہر کی کہ یہ
مخص قرآن مجید سے داقف ہے اور کتاب پاک نے ہمیں یہی تھم دیا ہے کے صرف خدا کی
عبادت کی جائے۔ چوتھا اٹھا اور بے تکلف کو یا ہوا: بھائیو! یہتو" وہائی" ہے۔

آگر ہم رنگ آمیز یوں سے قطع نظر کر لیس تو اس واقعہ سے کیا ثابت ہوتا ہے؟ ہید کہ ایک مسکین واعظ نے مسلمانوں کو بری رسموں اور غیر شرعی مشغلوں سے بازر کھنے کی کوشش کی ، ند کسی سے پچھے مانگا، ندلیا۔اسی طرح وہ جابجا وعظ کہتا بھرتا تھا۔

یمی بے فرضاند و تو تبلیغ تھی، جے ہنر جیسے اوگوں نے سالہا سال تک ہو اہنائے رکھا۔ لطف مید کہ ندا سلام کے متعلق صحیح معلومات چیش نظر نہ تھیں، ندبیہ پائے تھا کہ وہا ہیت کیا شئے ہے، بلکہ سید صاحب کی جماعت کے لوگوں کو'' وہائی'' قرار دینا ہی جہالت کی ایک برترین مثال تھی الیکن ہمارا مقصد غلط بیانیوں کی تر دید نہیں بلکہ ہم جماعت کے نظام وعوت کی مختصری کیفیت پیش کرنا جا ہے ہیں۔

نظام دعوت

ہمارے سامنے نظامِ دعوت کا کوئی مرتب مرقع موجود نہیں،البتہ مختلف کارکنوں کی سر مرمیوں کے سلسلے میں جا بجا جو بچھ بیان ہوا،اسے سامنے رکھ کرایک معقول اور زیادہ سے زیادہ قرین صحت خاکہ تیار کیا جاسکتا ہے مثلاً:

ا- مختلف اصلاع میں دعوت وہلیغ کے مرکز قائم تھے۔ ہرضلع کو ہولت وکار کے لحاظ سے مختلف کروں میں بانٹ کر جا ہجا المحت مراکز بنادیے گئے تھے۔

۲- گاؤں سب سے چھوٹا پونٹ تھا اور شاید ہی کوئی گاؤں ہو جہاں مرکز نہ بنا دیا گیا ہو۔ بعض روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ بڑے بڑے دیہات میں تحصیل اموال کی غرض سے دود ومرکز قائم کردیے گئے تھے۔

۳- دعوت اصلاح اور فراہمی سر مایہ کے علاوہ ہر مرکز کے ذینے ایک ضروری کام یہ تھا کہ اپنے علقے کے تمام مقد مات کا منصفانہ فیصلہ کرے تاکہ جماعت کے کسی آ دمی کو سرکاری کچھر یوں میں جانے کی ضرورت پیش نہ آئے۔ اس انتظام کے بدیمی فوائد کا انداز ہ فرئے:

ا۔ غیرمسلم حکومت قائم ہوجانے کے باوجودمسلمانوں کے لئے اسلامی اصول اور قوانین کےمطابق فیصلے کرالینے کانظام مہیّا کردیا گیا۔

ب- غیراسلامی قانون کی براوراست تابعیت ادراس کے شمن میں حصول مقاصد کے غیراسلامی وسائل اختیار کی ضرورت جماعت کے سیراسلامی وسائل اختیار کی ضرورت جماعت کے سیراسلامی اقد ارکی عزت وعظمت برقر اررہتی تھی۔
طرح قلب میں اسلامی اقد ارکی عزت وعظمت برقر اررہتی تھی۔

ج۔ افرادِ ملت زندگی کے عام کاروبار میں صرف اپنوں ہی سے وابسۃ رہتے تھے۔ غیروں سے وابستگی یاان پرانحصار کا کوئی امکان پیدانہ ہوسکتا تھا۔

۳- نظام جماعت کے استحکام اور مقد موں کے فیصلوں کے لئے مساجد کی آبادی ضروری تھی۔ چنانچ بتمام دیمات میں مجدول کی آبادی کا خاص اجتمام کیا جاتا اور ان میں ایسے امام رکھے جاتے جودعوت وتبلغ کے فرائض بھی بوجہ احسن انجام دے سکتے اور فصل خصومات کے گراں قدرو ظائف سے بھی عہدہ برآ ہو سکتے۔

۵- جھوٹی چھوٹی تبلیغی کتابیں یا اصلاحی رسائے بکٹرت لکھے اور شائع کیے گئے۔ اس سلطے میں شاہ آئمعیل شہید کی'' تقویت الایمان' یااس کاضمیم'' تذکیرالاخوان' کے علاوہ سیداولا دھن قنوجی ، مولوی خرم علی بلہوری ، مولانا ولایت علی ، مولانا عنایت علی

اور بیبیوں دوسرے بزرگوں کے چھوٹے جھوٹے رسالے بہطورِخاص قابل ذکر ہیں۔
اکثر رسالوں اور کتابوں کی زبان اتن سبل ہوتی کہ معمولی ار دوخواں بھی ان سے مستفید
ہوسکتے ۔بعض اصحاب نے ضروری مسائل کوظم کردیا تھا، جسے یا دکر لینا بہت آسان تھا۔
جا بجا چھا بے خانے قائم کر دیے گئے تھے جن میں اس شم کی کتابیں متواتر چھائی جا تیں
اور دو دو چار چار چیے میں مل جا تیں۔ دین خدمات کے علاوہ ان کے ذریعے سے اردو
زبان کی جوخدمت انجام یائی وہ کسی تشریح کی مختاج نہیں۔

'' قافله''

مولا ناولایت علی اوران کے اخوان واعز ہ کی برکت سے عظیم آباد دعوت و تبلیغ اور فراہمی مجاہدین وسرمایہ کا سب سے برا مرکز بن گیا تھا۔ اس لئے وہاں داعیوں اور مجاہدوں کی آمد کا سلسلہ برابر جاری رہتا۔ بعض لوگ روپیہ لے کر آتے ۔ بعض شائقین جہاد کی چھوٹی چھوٹی ٹولیاں لاتے ، روپ اور مجاہدین کو بہ آرام و حفاظت سرحد پہنچایا جاتا۔ بعض لوگ دعوت و تبلیغ کی تربیت حاصل کرنے کے لئے آجاتے۔ اہل عظیم آباد نے جاتا۔ بعض لوگ و میں ایک وسیع مقام الگ کردیا، جہاں مہمان بھی تھم تے ہے، وعظ بھی ہوتے سے اور درس کا سلسلہ بھی جاری تھا۔ اس کا نام ہی ' قافلہ'' پڑگیا تھا۔ (۱)

یہ قابل یادگار مرکز ۱۸۲۵ء تک قائم تھا۔ جب بزرگان عظیم آباد کی جائیدادیں ضبط ہوئیں تو ان کے مکانوں کے علاوہ'' بھی منہدم کرادیا گیا اور اس کی جگہ بلدیدی عمارتیں بن گئیں۔اب کوئی شخص پہلی حالت کا تصور بھی نہیں کرسکتا۔اس عمارت کا ایک خاکہ مقدمہ انبالہ میں چیش ہوا تھا۔ بیں اسے شائع کررہا ہوں تا کہ موجودہ اور آئندہ نسلیں

(۱) معلوم ندہوسکا کہ اس کانام' ٹافلہ' کیوں رکھا گیا۔ ایک و جاتو بیدن ہن آئی ہے کہ بیدمقام چونکہ مجاجرین کے قافول کے لئے وقت مقاس کے اللے وحمال اور ماتھی مر قافلوں کے لئے وقت تقاس لئے اسے قافلہ کہنے گئے جمکن ہے بید وجھی ہوکہ سیدصاحب کے اہل وحمال اور ماتھی مر صدے ٹونک پہنچ بیٹے تھے تو جو جگہ ان کے قیام کے لئے تجویز ہوئی تھی اسے' قافلہ' بی کہتے تھے۔ اغلب ہے کہ اہل مظلم آباد نے وہی نام پہند کر لیا ہو۔ اس مقام کونه بھولیں جس کی فضا کم وہیش تمیں سال تک ذکر حق اور دعوت دین کی صداؤں سے معمور دہی۔

اصطلاحات

ان بزرگوں نے مصالح اخفا کے بیش نظر مختلف افراد وامکنہ اوراشیاء کے خصوص نام یا مصطلحات مقرر کر لئے تھے جنھیں جماعت کے خاص کارکنوں کے سواکوئی نہ بجھتا تھا۔ خطوکتا بت میں عموماً یہی اصطلاحی نام استعال کیے جاتے تھے۔

مقدمہ انبالہ میں جو گواہ ہیں ہوئے ، ان میں سے بعض کی شہادتیں مصطلحہ اساء ، ی کی توضیح پر شتمل تھیں۔ اس توضیح کے بغیر ان تحریرات و مکا تیب کی حقیقی حیثیت آشکارانہ ہو کتی تھی ، جو تلاشیوں کے دوران میں مختلف اصحاب کے مکانوں سے برآ مدہوئے تھے۔ پیش کردہ الزامات کو ثابت کرنے کے لئے مصطلحات کی توضیح بھی ضروری تھی۔

میراخیال ہے کہ تمام گواہ ان اصطلاحات سے براہِ راست واقف نہ ہو کتے تھے۔ پولیس کو کہیں سے پچھ سراغ مل کیا تو اس کے مطابق گواہوں سے شہادتیں ولا دی گئیں۔ مولا نامسعود عالم مرحوم نے لکھا ہے کہ راون شانے اپنی رپورٹ میں اصطلاحات کی فربنگ درج کردی تھی۔(1)

میں نے مختلف اصحاب کے موسومہ مکا تیب کا مطالعہ وِنت نظر سے کیا تو یہ حقیقت بروئے کارآئی کہ اصطلاحات میں مکتوب الیہ کے پیشے کا خاص لحاظ رکھا جاتا تھا۔ مثلاً وہلی کے تاجر النِ جفت کو جو خط بیسیج جاتے تھے، ان میں عموماً جو توں کا ذکر ہوتا تھا، کیکن قرینہ پیش نظر رکھتے ہوئے بھی ان سے مجاہدین مراد ہوتے تھے اور بھی روپے ای طرح جب کسی کتب فروش کے ذریعہ سے ہنڈی بھیجی جاتی تھی تو ''روپوں' کے لئے'' کتابوں'' کی اصطلاح استعال کی جاتی تھی۔

⁽١) مندوستان كى بىلى اسلاق تحريك ص:١٢٣

اسائے رجال

سب سے پہلے مختلف کار فرماؤں اور کار کنوں کے فرضی یا مصطلحہ اساء کی فہرست درج کی جاتی ہے:

> مصطلحدنام مولانا يجيٰ على عظيم آبادي محى الدين مولا نافياض على عظيم آبادى بصيرالدين(١) مولا ناعبدالله(اميرالحابدين) بالوصاحب شفاعت على محدثيغ فمليدار رحيم بيك مولا ناعبدالرجيم عظيم آبادي مولوی محرجعفرتھائیسری يبروخال غلام قادر عبدالقادر مولا نااحمرالله عظيم آبادي احرعلی (۲) روح الثد محداحسان معظمهم وأد عمداللد محدشا كرءعدالرحن بعيدالله خال قاضى مياں جان عبدالغني عبدالغفور

بعض لوگوں نے سرحد سے واپس آ کرنام بدل لیے تقے مثلاً محمد عیسیٰ (ابن مولانا کیمٰ علی) نے یہاں آ کراپنانا م امجد علی رکھااور عبدالقدیر (ابن مولانا احمداللہ) نے انثر ف علی۔ بعض عہدوں کے ناموں کی بھی اصطلاحیں مقرد کر لی تھیں مثلاً :

⁽١) مولا نامسعود عالم في اس عام كو الشيرالدين و قرارديا على في جهال ديكما (بعيرالدين على ديكما-

⁽٢) مولا نااحمدالله كالياصل نام تعارسيد صاحب في بيعت كيعدان كانام احمدالله قرادديا-

منیب امام نائب امیر

امكنه واشياء

اشیاءوامکند کے باب میں جو بچھ معلوم ہوسکا،اس کی کیفیت بھی ملاحظ فرمالیجے:

مصطلحہ تام اصلی مقام یا شئے

تا فلہ(۱) رگروٹوں کا جیش

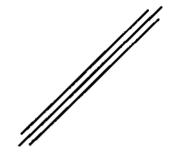
بڑا گودام جاہدین کے سرحدی مرکز ، ملکا یا ستھانہ
چھوٹا گودام عظیم آباد (پٹنہ)
مقدمہ جنگ
مقدمہ جنگ
مقدمہ نیادی تعالیٰ فیاری تعالیٰ دائے بابلوری دانے یابلوری دانے دوبے اور ہنڈیا ل

سرخ پرندے اشرفیاں

جیدا که عرض کیا جا چکا ہے، اصطلاحات موقع اور حالات کے مطابق وضع کر لی جاتی تھیں۔ مثلاً محرشفیع نے فوجوں کو گوشت مہیا کرنے کا تھیکہ لے رکھا تھا اور وہ گائے بیل وغیرہ خرید تار ہتا تھا۔ جب اس کے خط میں مجاہدین کا ذکر کیا جا تا تھا تو ''سانڈ'' کی اصطلاح استعال کی جاتی تھی۔ بعض تحریرات میں مجاہدین کو ''مسافر''' بیو پاری' اور ''خدمت گار'' کہنے کا ذکر بھی آتا ہے۔

⁽۱) پہلے عرض کیاجا چکا ہے کہ بیاس مکان کا بھی نام تھا جو ال عظیم آباد نے جماعتی سرگرمیوں کیلئے وقف کررکھا تھا۔

برصغير مندمين تحريك احيائے دين اور سرفر وشانه جدوجهد كى كمل سرگذشت



حصہ حصہ (جنگ امبیلہ سے آخرتک)



يهلاباب:

مجامدین برقبا ئلیوں کی بورش

مجامدين اورسا دات ِ ستھانه

جنگ امیلہ کے سلسلے میں بتایا جا چکا ہے کہ جامدین کیلئے خودا خوندصا حب سوات نے چغر زئیوں کے علاقے میں قیام کا انتظام کر دیا تھا اور زخیوں کو بھی وہاں پہنچا دیا تھا۔ سادات سقانداس کے بعد بھی ہمیشہ جاہدین کے ہمدرداور خیرخواہ رہے۔ مجاہدین نے بھی ان سے حسن علائق کا سلسلہ برابر قائم رکھا، تا ہم تمیں پینیٹس برس سے ان کے درمیان دائر ہ جہاد میں اشتر اک وتعاون اور یکجائی و یک جہتی کی جوصورت چلی آرہی تھی وہ جنگ وائر ہ جہاد میں اشتر اک وتعاون اور یکجائی و یک جہتی کی جوصورت چلی آرہی تھی وہ جنگ امیلہ کے بعد قائم ندر ہی، اس لئے کہ قیام گاہیں الگ الگ ہو چکی تھیں اور بعدِ مکانی کا جید یہی ہوسکتا تھا کہ ان کی وقتی سرگرمیوں میں بھی پہلے کی سی بجہتی باقی ندر ہی۔

سرحدی اکابر نے مصالحت کیلئے جوشرطیں انگریزوں سے طے کی تھیں بدابہ ان اس بھی یہ غرض مخفی تھی کہ بجابہ ین اور ساداتِ ستھانہ ایک دوسرے سے بالکل الگ ہوجا ئیں اور ان کے درمیان ال جل کررہنے یا ایک و دسرے کی مدد کیلئے بروئے کار آنے کا کوئی امکان نہ رہے۔ اس میں مجابہ بن اور سادات دونوں کیلئے نقصان کے صریح پہلو موجود تھے۔ مجابہ بن کو ہر نازک حالت میں سادات کے پاس قیام کیلئے جگہ ل کتی تھی اور جو حالات ہم بیان کر چکے ہیں ، ان سے صاف واضح ہے کہ سرحد آزاد کے جس طبقے نے منائے وعواقب سے بالکل بے پرواہو کر مجابہ بن کو سینے سے لگائے رکھاادراس عزیر تعلق کی پاسداری میں اپناسب کچھ قربان کردیا ، وه صرف ساداتِ ستھانہ تھے۔ جس جنگی قوت پر پاسداری میں اپناسب کچھ قربان کردیا ، وه صرف ساداتِ ستھانہ تھے۔ جس جنگی قوت پر پاسداری میں اپناسب کچھ قربان کردیا ، وه صرف ساداتِ ستھانہ تھے۔ جس جنگی قوت پر پاسداری میں اپناسب کچھ قربان کردیا ، وه صرف ساداتِ ستھانہ تھے۔ جس جنگی قوت پر

سادات حقانہ ہر حال میں کامل اعتاد کر سکتے تھے، وہ مجاہدین کی قوت تھی۔ دونوں کی علیحدگی کا متیجہ یہ ہوا کہ مجاہدین کوسادات حقانہ علیحدگی کا متیجہ یہ ہوا کہ مجاہدین کوسادات حقانہ مجاہدین جیسے جانباز وں سے محروم ہوگئے۔ آئندہ دونوں کیلئے قدم قدم پر پریشانیاں پیدا ہوئیں اورایک دوسرے کیلئے زیادہ سے زیادہ اخلاص و مجت کے باوجود باہم عملی امداد کی کوئی تد بیرند بن تکی ۔اغلب ہے کہ اگر بزوں کوہی معاہدے کے اس پہلوکا پوراا ندازہ ہو۔

كرنل وائلي كابيان

کرتل واکلی نے لکھا ہے کہ مجاہدین علاقہ چفر زئی کے علاقے میں پچھ دیر مقیم رہے جو علاقہ بونیر کی مشہور ندی برندو کے شال میں واقع ہے، لیکن وہاں ان کیلئے امن واطمیتان کی صورت پیدانہ ہو سکی ،اس لئے کہ ان کے میز بان یعنی چفر زئی افغان اکثر افراج کی دھمکیاں دیتے رہے تھے:

معلوم ہوتا ہے کہ ۱۸۷۸ء میں وہ (مجاہدین) علاقہ چفر زئی سے اٹھ کر باج کے واقع ہوتیر میں نتقل ہو چکے تھے۔ یہیں اپر میل ۱۸۷۸ء میں فیروز شاہ ان سے آ ملاجود پلی کے آخری بادشاہ کا فرزندتھا۔ (۱)

بونیر میں ہندستانی مجاہدین کی موجودگی اخوندصاحب کیلئے ناخوش گوار تھی ،لہذااس نے اپنے ہم مشر بوں کو ترغیب دی کہ مجاہدین کو خارج کردینے کا

(۱) شنرادہ فیروزشاہ ایوظفر بہادرشاہ کا فرزندندتھا، جیسا کہ وائلی نے تکھا ہے۔ بلکہ چیرا بھائی تھا۔ یعنی بیشاہ عالم عائی کا پوتا اورشنرادہ تاظم بخنت برادیوا کبرشاہ ٹانی کا فرزندتھا۔ ۱۸۵۹، میں جج کے لئے چلا گیا تھا۔ اس کی واپسی کے وقت "فعدد" شروع ہو چکا تھا۔ داستے ہی میں شغرادے نے ایک فوج کی کمان سنبال لی اور دیر بیک آگریزوں کے فلاف لاتا رہا۔ جب انگریز برن سرحوث تان پردوبارہ مسلط ہو گئے تو شغرادہ آزاد علاقے میں چا گیا۔ ۱۸۹۸ء میں بجابدی کے پاس پہنچا ۔ عالباً بید فیال کر کے کہ استے تھوڑ ہے آدمیوں سے انگریزوں کے فلاف مؤثر اقد ام نہ کیا جا سے گا، وہ چلا گیا۔ بعد کی دے البائی ہوئے ہوا۔ دوسری بید زندگی کے متعلق دور وایتیں ہیں: ایک بید کہ اس نے ترکتان میں سکونت اختیار کرلی اور وہیں فوت ہوا۔ دوسری بید زندگی کے محمد معلقہ چلا گیا اور وہاں ۱۸۹۵ء میں وفات بیائی۔

فیصلہ کرلیں۔ اس فیصلے کا نتیجہ یہ لکلا کہ جاہدین جن کی تعداد تقریباً سات سوتھی،
عجلت سے ملکا چلے گئے، جہال وہ اپنے پرانے مکان دوبارہ تقمیر کرنے گئے۔
ان میں سے بعض کو آ گے چل کر بونیر میں آبادہ و نے کی اجازت ل گئی لیکن اخوند صاحب کے خلاف ساز شوں کا سلسلہ جاری رہنے کے باعث اخراج کا اخوند صاحب کے خلاف ساز شوں کا سلسلہ جاری رہنے کے باعث اخراج کا حکم دوبارہ نافذ کر دیا گیا اور انھیں شدید نقصان پہنچا کر جرا ملک سے باہر نکال دیا گیا۔ چنا نچہ انھوں نے پہلے چنر زئیوں کے پاس چناہ کی ، پھر بلوتی چلے دیا گئے۔ وہاں سے تاکو ف نظل ہو گئے۔ انجام کا رحسن زئیوں کے علاقے میں پہنچے اور بلوتی کے قریب میدان میں کچھ زمین پٹے پر لے لی۔ وہاں وہ پہنچے اور بلوتی کے دیا۔ دیا گ

حقيقت ِحال

(۱) "واکلی کی کمّاب"ص:۱۰۵-۲۰۱

مجاہدین کے مراکز ہے متعلق وائلی کا بیان فی الجملہ درست معلوم ہوتا ہے ہمیکن بونیر ہے اخراج کا معاملہ تھوڑی ہی تفصیل کا محتاج ہے

اخوندصا حب صوات کیلئے مجاہدین ہے گئش کی بظام کوئی وجہ موجود نہتی ۔ صاحب موصوف کا اصل مرکز صوات تھا۔ بونیر کے بیشتر قبیلے انھیں مقدس بزرگ مانتے تھے۔ مجاہدین نے کوئی روحانی مندقائم نہ کی تھی کداخوندصا حب ہے رقابت کا سوال بیدا ہوتا، پھر یہ کوئرتسلیم کیا جاسکتا ہے کہ مجاہدین اخوندصا حب کے خلاف سمازشیں کرر ہے تھے؟ البتہ ملا صاحب کو ٹھا عرف حضرت جی اور اخوندصا حب کے درمیان اک گوندر بخش مدت سے جلی آتی تھی۔ چونکہ ملا صاحب بھی وقت کے عظیم القدر روحانی بزرگ تھے اور وہ بونیر وصوات کے مختلف علاقوں میں دورے کرتے رہتے تھے، اس لئے باہمی کشکش کے ممکنات موجود تھے۔ مل صاحب کا روحانی تعلق سیّداحہ شہید سے تھا۔ ہندوستان میں

سیدصاحب کے تمام نیاز مندوں پر مقد مات کے سلسلے میں'' وہابیت'' کی تہمت لگ چکی تھی۔ اس کی صدائے بازگشت سرحد میں بھی پہنی اور اخوندصاحب کے حلقہ اثر میں مل صاحب کے متعلق الیمی باتیں کہی جانے لگیس جن سے بیظا ہر کرنا منظور تھا کہ ملا صاحب کوٹھا بھی'' وہائی'' ہیں۔

ملاً صاحب جب دورے پر نکلتے تھے تو ہر گاؤں کے لوگ انھیں پاکلی میں سوار کر کے عقیدت مندانہ خودا ٹھاتے ہوئے اپنے ہاں لے جاتے تھے۔انھیں اخوندصاحب کے حلقہ کاثر کی بات چیت اور الزامات کاعلم ہوا تو دورہ کرتے ہوئے اخوندصاحب کی قیام گاہ سیدو شریف پہنچے اور موصوف ہے کہا:

آپ کی مجلس میں مجھ پر اعتقادی اور ندہبی تہمت اور الزام لگایا جاتا ہے۔ بیس اس لئے آیا ہول کہ آپ اپ مریدعلاء کو بلواویں اور میں ان کے روبرو الزامات کی تحقیق کیلئے اپنے آپ کو پیش کروں۔ اگر مجھ پرشر می الزام ثابت ہوتو شاہت ہوتو سزا دی جائے یا تو بہ قبول کی جائے۔ اگر کوئی الزام ثابت نہ ہوتو بدگوئی اوراقبامات کاسلسلہ بند کردیا جائے۔ (1)

اخوندصاحب نے جواب دیا کہ نہ جھے کی بدعقیدگی کا شبہ ہے، نہ جھے اتناعلم ہے کہ آپ سے بحث و فدا کرہ پسند ہے، نہ بین کمیس میں آپ سے بحث و فدا کرہ پسند ہے، نہ بیز بہاہے کہ میری مجلس میں آپ کے خلاف اعتراضات والزامات معرض بحث میں آپیں۔ جولوگ ایسی باتیں کہتے ہیں، مجھے ان سے کوئی سروکا زنہیں۔ (۲)

فتنے کا آغاز

سیدعبدالجبارشاہ نے عکمرانی سوات کے زمانے میں اس واقعے کی پوری چھان بین

^{(1) * &}quot; تناب العمرة " مصنفه سيّد عبد البجبار شاه (قلمي نسخه) ص ٢٣٣٠

⁽٢) "كتاب العمرة" مصنفه سيّد عبد البيارشاه (قلمي نسخه)ص:٣٢٣

ی تھی۔اس کا نتیجہ بید نکلا کہ ملاصاحب عرف حضرت جی کے خلاف فتنہ مخالفت اٹھانے کا اصل ذمہ دار علاقہ کی خیل کے ایک گاؤں در دیال کامعمر قاضی تھا،جس کی عمر فریڑھ سو سال کی ہو چکی تھی اور سیدعبد الجارشاہ نے خود پوری کیفیت اس کی زبان سے سی -

قاضی نہ کور نے بتایا کہ میں اخوندصاحب کا مرید تھا، لیکن سوات اور سمّہ کے اکثر لوگ مل صاحب کے ارادت مند تھے۔ بیصورت حال مجھے بڑی نا خوشگوار معلوم ہوتی سمّی میں نے ایک روز اخوندصاحب سے کہا کہ صوات، سمّہ ، ہشت گراور پیٹاور کے علاء کا استاد میں ہوں ، جوآپ کا مرید ہو چکا ہوں ۔ میرے لئے اپنے وطن میں کسی اور کی بیروی برداشت کر ناممکن نہیں اور ایسی تدبیروں سے کام لے سکتا ہوں کہ ملا صاحب کوشی بدنام ہوجا کمیں ۔ اخوندصاحب بہلے تو اس پرراضی نہ ہوئے۔ جب میں نے اصرار کیا اور افسی بھی ایک طرح کا التی میٹم دیدیا تو مان گئے۔ چنانچہ میں نے ملا صاحب کے خلاف ' وہا بیت' کا فتندا شایا۔ دو ہزار عالموں کو لے کرکوشا کا رخ کیا۔ عالموں کو با جا بام خلاف ' وہا بیت' کا فتندا شایا۔ دو ہزار عالموں کو لے کرکوشا کا رخ کیا۔ عالموں کو با جا بام خیل میں بھیا دیا جو کوشا سے تریب ہے۔ اپنے شاگر دوں کا ایک وفد ملا صاحب کی پاس خیس میں بھیج دیا۔ انعوں نے بچھ موال کے ، جن کے جوابات کو بگاڑ کر میں نے علاء کے سامنے بیش کیا اور ملا صاحب کی وہا بیت کا فتو کی ابیت کا فتو کی ابیت کا فتو کی ایک دور میں ایک علاء کے سامنے بیش کیا اور ملا صاحب کی وہا بیت کا فتو کی ایک دور میں اور دیا۔ (۱)

اس افتراکی اصل بنیاد بیتھی کہ ملا صاحب سید احمد شہید کے مرید تھے۔سید صاحب، شاہ آملعیل اور ان کے رفیقوں کے خلاف' وہابیت' کا فتویٰ ہندوستان کے بعض علماء صادر کر بچکے تھے۔

ملآ صاحب پر بورش

غالبًا ١٩٨٢ ه (٢٧ - ١٨٦٥ ء) كا واقعد بكر ملا صاحب معمول كرمطابق يونير

⁽۱) كتاب العمرة (تلى نسخ)من ٢١٠١-١١٨

گئے ہوئے تھے۔ وہاں کے دولت زئیوں میں سے باری خیل فرقہ ان کا بہت معتقد تھا۔
اخوندصا حب کے ارادت مندوں نے اس وقت تک ملا صاحب کے ظلاف ' وہا بیت'
کی آگ اس شد ت سے مشتعل کردی تھی کہ صوات و بو نیر کے لئکر جمع ہوکران کے اخراج
کیلئے جا پہنچے۔ یہاں تک کہ ملا صاحب کے ساتھ باری خیل فرقے کو بھی جلا وطنی کی سزا
دے وی گئی۔ ملا صاحب بو نیر سے اٹھے اور چملہ سے گذرتے ہوئے موضع چروڑی چلے
گئے جو اماز کیوں کا مشہور مقام تھا۔ مخالف لئکروں نے تعاقب کرتے ہوئے چروڑی کا محاصرہ کر لیا اور ملا وال نے اماز کیوں کے خلاف بھی وہا بیت' کی تہمت تراش کر جہاد کا فتوی دے دیا۔

اہل حق کی بے بسی اور عزیمت

امازئی تعدادیس بہت کم ہے اور تنہا پورے بونیر وصوات کا مقابلہ نہ کر سکتے تھے،
لیکن ان کی افغانی غیرت بینگ بھی گوارا کرنے کیلئے تیار نہ تھی کہا ہے معزز اور مقد س مہمان کو مخالفوں کے حوالے کر دیں یا کی دباؤ کے ماتحت اپنے گھروں سے نکال دیں۔ موزہ خال رئیس چروڑی اور جبّا رخال نے خود ملا صاحب کی خدمت میں حاضر ہوکر صاف صاف عاف عرض کر دیا کہ نہ مقابلے کی طاقت ہے، نہ کی تدبیر سے آپ کو محفوظ طریقے بر باہر نکال سکتے ہیں۔ ملا صاحب نے فر مایا کہ دعاء کیلئے ہاتھ اٹھاؤ۔ دیر تک دعاء میں مشغول رہے۔ پھر فر مایا کہ اگر بارہ غیورا فر اواخلاص سے جانی قربانی پرآ مادہ ہوجا کیل قوب بیمورو ملخ کا سافشر شکست کھا جائے گا۔ یہ سنتے ہی سادات منگل تھانہ ہیں سے سیّد جبار بیمورو ملخ کا سافشر شکست کھا جائے گا۔ یہ سنتے ہی سادات منگل تھانہ ہیں سے سیّد جبار اور ان نے بھائی نے سب سے ہملے اپنے آپ کو قربانی کیلئے پیش کر دیا۔ تھوڑی ویر میں نومز یدغیورا فراد سامنے آگئے بیکن بارہ کا عدد ہورانہ ہوا۔ یہ گیارہ جا نباز باہر نکلے تو چارسو نومز یدغیورا فراد سامنے آگئے بیکن بارہ کا عدد ہورانہ ہوا۔ یہ گیارہ جا نباز باہر نکلے تھوڑی ویر میں نومز یدغیورا فراد سامنے آگئے بیکن بارہ کا عدد ہورانہ ہوا۔ یہ گیارہ جا نباز باہر نکلے تو چارسو کے قریب اماز تی جوان ان کے ساتھ ہو گئے۔ ان رور سے تملے کیا کہ صوات دیونیر کا لشکر

تکست کھا کر بھا گا۔امازئیوں نے میلوں اس کا تعاقب کیا اور مل صاحب براطمینان چروڑی ہے اٹھ کرکو ٹھا پہنچ مجئے۔(۱)

مجابدين كےخلاف اقدام

جب سيّد صاحب عانتساب كى بناء برملًا صاحب كے خلاف "و مابيت" كالزام لگ چکاتھا تو مجاہدین اس سے کیونکر محفوظ رہ سکتے تھے، درآ ل حالیہ وہ براو راست سید صاحب کی جماعت سمجے جاتے تھے اور ان کی دین تحریک کی تاسیس ہی سید صاحب نے فر مائی تھی؟ چنانچہ چروڑی کے محاصرے سے پہلے یاس کے بعد مجامدین کو بھی نکال دینے کا فیصله کرلیا گیا اور بہت بڑالشکراُن کےخلاف حرکت میں آیا۔ بتایا جا چکا ہے کہوہ گلونو بوژی (علاقہ چفرزئی) میں رہتے تھے۔اس گاؤں سے تھوڑی دور باہر ایک گلی یا تکنائے دو بہاڑوں کے درمیان تھی جس ہے گذر کر گلونو بوڑی جاتے تھے۔اس کا نام گل بد بال تعا-امير الحابدين مولا ناعبدالله كوخالفانه اقدام كاعلم بواتو انهول نے ايك جمعداركو پیاس مخاہدین کے ساتھ گلی بدیال میں بٹھا دیا،اس لئے کے مملد آوروں کی آمد کا وہی راستہ تھا۔ان مجاہدین نے حفاظتی موریے قائم کر لئے۔ مخالفین گلی کے قریب پہنچے تو جعدار نے الميس روكا - خالفين نے تلوارین نكال ليس - بيد كيھتے بى مجاہدين نے قرابينوں سے كرابيس ماریں اور کشتوں کے بیٹتے لگادیے۔تمام مجاہدین گلی ہی میں شہید ہو گئے ہمکین مخالفین کو اتنا نقصان پینی چکاتھا کہ انھیں قدم آ مے بڑھانے کی ہت نہ پڑی۔(۱)

ستيد عبدالجبارشاه كابيان

سید عبد الجبار شاہ ستھانوی کتاب العمرت میں اس خوفناک جنگ کا ذکر فرماتے

⁽١) "اكتاب العمرت" من ١٥٥٥ جهال بونيروموات كالشكرندي سكتا تعاس لئ كدكوفها أنكريز ك علاقي من تعا-

⁽۱) "کتاب العمرت"مس:۴۶٪

ہوئے لکھتے ہیں، سرحدی علماء نے جب دیکھا کہ چند کالے کالے دیلے پتلے ہندوستانی راستہ روکے بیٹھے ہیں تو ایک دم ان کی غیرت جوش میں آگئی:

عوام کوتھم دے دیا کہ 'الندا کبر' کہہ کران ہے دینوں کو مارو۔ یہ تم کو مجاہدین کے گھر لوٹے سے روک رہے ہیں، حالا نکہ دہ (مجاہدین) کیمیا گر ہیں۔ ان کے گھر سونے چاندی سے بھرے پڑے ہیں۔ بس پھر کیا تھا ایک دم صواتی اوران کے طرفدار بونیری ہمارے جاہدوں پڑفوٹ پڑے وہ ہجے مومن شخے۔ سب قرابین کے ہتھیار سے مسلح تھے۔ جمعدار نے تھم دیا اور جاہدین پینتر ے بدل بدل کراور قرابین میں چالیس پچاس گولیاں ڈال کرنشکر کے ہجم کواڑا نے لگے۔ پانچ چھ سونشکری ڈھیر ہوگئے۔ مکل نشکروں نے چاروں طرف کواڑا نے لگے۔ پانچ چھ سونشکری ڈھیر ہوگئے۔ مکل نشکروں نے چاروں طرف سے بچاس نفوس کو بچم کر کے بھی مارکھائی۔ پھر دور سے تو ڑے دار بندوتوں سے بچاس نفوس کوشہید کر کے راستہ آزاد کرالیا۔ مگر پھرکون ان بہادروں کا سونا چاندی لوشنے جاتا۔ سب نے پوچھا کہ آگے ایسے جانباز کتنے ہیں؟ لوگوں نے کہا ہزار بارہ سو خاتا۔ سب نے پوچھا کہ آگے ایسے جانباز کتنے ہیں؟ لوگوں نے کہا ہزار بارہ سو نفری ان کی ہے۔ بس میہ سنتے ہی سب واپس ہوگئے۔ (۱)

ؤ مەدارى كا مسئلە

ابسوال بیر بیدا ہوتا ہے کہ حضرت ہی صاحب بعنی ملا صاحب کو تھا اور جماعت کام بین کے خلاف ہنگامہ بیا کرنے کی ذمہ داری کس پرعا کد ہوتی ہے؟ سیدعبد البجار شاہ نے ذاتی تحقیقات کی بناجو پچھ لکھا ہے، اس سے واضح ہے کہ اس فتنے کا اصل بانی قاضی در دیال تھا۔ اس لئے حضرت اخوند صاحب کے انکار کے باوجود مخالفت کی آگ سلگائی اور اسے ہوا دینے میں کوئی کسر اٹھا نہ رکھی۔ لیکن یہ بھی حقیقت ہے کہ حضرت اخوند صاحب قاضی کی باتوں سے متاثر نہ ہوتے تو یہ معاملہ نازک صورت اختیار نہ کرتا، یہ بھی صاحب قاضی کی باتوں سے متاثر نہ ہوتے تو یہ معاملہ نازک صورت اختیار نہ کرتا، یہ بھی

ممکن ہے کہ قاضی نے حضرت اخوند کے سامنے اس مسئلے کو زیادہ سے زیادہ بڑی صورت میں پیش کر کے حسب منشا کا رردائی کی گنجائش بیدا کر لی ہو۔ یعنی واقعی یقین دلایا ہو کہ ملا صاحب اور مجاہدین کا عقیدہ خلاف بشریعت ہے۔ ہندوستان میں بیمیوں علاء نیک نیتی سے یہی سمجھتے رہے۔ البتہ فلا ہر ہے کہ ان کی رائے غلاقی اور اس سے جو نیتیج نکلے وہ حد درجہ الم خیز اور غم انگیز ہے۔

ضرورى تصريحات

یہاں یہ حقیقت بھی واضح کردین چاہئے کہ گلی بدہال اور گلونو بوڑی بہت قریب ہیں ان کے نزدیک بی ٹارا ہے۔ اس وجہ ہے بعض اوقات گلونو بوڑی کی اقامت کو ٹبارا کی اقامت سے تبیر کیا جاتا ہے۔ چنانچہ میں نے جب مولا نارجت اللہ مرحوم امیر المجاہدین سے پرانے واقعات کے متعلق بات چیت کی تھی تو وہ گلونو بوڑی کے قیام کو ٹبارا بی کا قیام قرار دیتے تھے۔ میر ہے استفسار پر انھوں نے گلونو بوڑی ، بدہال اور ٹبارا کی جغرافیائی حثیت واضح فرمائی۔ گلی بدہال کی لڑائی کو پالنگ کی لڑائی بھی کہا جاتا ہے، اس لئے کہ جیشت واضح فرمائی۔ گلی بدہال کی لڑائی کو پالنگ کی لڑائی بھی کہا جاتا ہے، اس لئے کہ پالنگ بھی یہاں سے بالکل قریب ہے۔ امیر رحمت اللہ نے فرمائی : خالفین کالشکرا تنازیادہ تھا کہ ڈگر سے میدانِ جنگ تک آ دمی ہی آ دمی نظر آتے تھے۔ بایں جمہ جماعت مجاہدین بین سے بچاس جانباز وں نے اس ٹل کی دل پر ایسی ہیں جہ جماعت مجاہدین بین سے بچاس جانباز وں نے اس ٹلٹی کی دل پر ایسی ہیں جدیا کے کہ وصلہ نہ ہوا۔

مجامدين كانقلِ مكان

اس واقعے کے بعدمجاہدین نے گلونو بوڑی کی سکونت ترک کر دی اور وہ پلوی چلے گئے ۔ ظاہر ہے کہ ملکا میں ان کی مدتِ قیام سات سال بنتی ہے(۱۸۵۸ء-۱۸۲۳ء)۔ایک روایت کےمطابق تین سال انھوں نے گلونو بوڑی میں گز ارے۔ (۱۸۲۸ء-۱۸۲۷ء)۔

سيدعبدالجبارشاه فرماتے ہيں:

وہ لوگ گلونو بوڑی سے بونیر دالوں کے حملے کے بعد نکل کرعلاقہ چخرز لَی میں بہتام ڈب سرچلے گئے۔ دہاں سے بھی کسی حادثہ ناموافقت کی وجہ سے حسن زکی قبیلے میں آھے اور لمباعرصہ یہاں ان کا قیام قلعہ پلوی میں ۱۸۸۸ء کک رہا۔ (۱)

ڈ بسر کابل گرام کے پاس ہے۔امیر رحمت اللہ فرماتے تھے کہ یہاں مجاہدین نے جوقلعہ بنایا تھااس کے کونوں پر برج تھے۔

(۱) * " کاب العر ت" الکی توی ۱۳۲۹

ضميمه

اس سلسلے میں ایک چیز باقی رہ گئی۔ یعنی مولا ناخلام رسول مرحوم عرف مولا ناعبداللہ
(قلعہ میہاں سنگھ والے) نے حضرت اخوند صاحب صوات اور حضرت ملا سید امیر صاحب کوشا دونوں کو دیکھا تھا اور دونوں کی صحبت میں وفت گز اراتھا۔ دونوں بزرگوں کے متعلق ان کے بیانات ذیل میں درج ہیں۔

واضح رہے کہ مولانا غلام رسول مرحوم خود وقت کے بہت بڑے عالم، مصلح اور ولی اللہ تھےاوران کے بیانات خاص تو جہ کے ستحق ہیں:

ار حفرت اخوندصا حب صوات:

ا۔ مولانا ئے محترم جس زمانے میں کسب فیض کے لئے اہل اللہ کے جویاں تھے،
اس زمانے میں کسی سے حضرت اخوندصا حب کی تعریف ٹی بنور اصوات روانہ ہوگئے:
اخوند صاحب سے ملاقی ہوئے، آپ فرماتے کہ اخوند صاحب بڑے
زاہد، عابد متقی ہیں، لیکن سنت سے ناواقف۔(۱)

۲۔ مولا ناسید عبداللہ غزنوی مرحوم کو کتاب وسنت کی پیروی کی بناء پر افغانستان کے چن ناشناس ملا وک کے شور وشغب کے باعث وطن سے نکلنا پڑا تو صوات میں آگئے ہیں۔
تھے۔مولا ناغلام رسول لکھتے ہیں:

آپشہرے نکال دیے گئے۔ بلوائے عام آپ کے سر پر ہوگیا اور ملک سوات (صوات) میں آکرا قامت اختیار کی۔اخوند عبد الغفور صاحب جوز ہد ور یاضت میں متاز تنے اور مجد دیے قادریہ کے طریق اور صوم الدہر کے ساتھ دم بحرنے والے، پہلے تو نہایت عمدہ مرقت کے ساتھ پیش آئے اور دلدی

(١) سواغ حيات (سوانح مولا ناغلام رسول)ص: ٣٨

ودلداری کی۔ آخر الامر جب آپ (مولانا عبدالله غزنوی) کے حاسدوں کا نوشتہ آپ کے پاس بہنچالو بلاتحقیق مرقت کا دامن تھنچ لیا۔ پکھ مدت وہاں رہ کر حضرت سید میرصا حب کو تھا والوں کے پاس تشریف لائے۔(۱)
ب۔ حضرت مل صاحب کو تھا:

مولاناغلام رسول حضرت ملاصاحب کی خدمت میں پہنچ تو فرماتے ہیں کہ آخیں دیکھتے ہی قدر ہے تسکین ہوگئی۔سلسلہ بیعت دریافت کیا تواضوں نے فرمایا: میں بیعت شدہ سیّد احمد صاحب بریلوی ، مرشد مولوی اساعیل صاحب شہید کا ہوں۔مجھ کو آخیں سے فیض حاصل ہے:

جیے دوبارہ زندگی حاصل ہوگی۔ پڑمردگی جاتی رہی۔ اتناسر ورہوا کہ دنیا
و مافیہا بھول گیا حضرت صاحب میری طرف دیکے دیکے کے کرچران ہوتے تھے
کہ یہ عجیب استعداد کا آدی ہے۔ میرے چراخ میں رمق باقی تھی۔ روغن
ڈالا گیا، جومراڈھی وہ برآئی حضرت کا فیض مثل موج دریا تھا، کوئی بھی خال
نہیں جاتا تھا۔ جو طقے میں بیٹھ جاتا، یک بارگی اس کے تمام لطائف جاری
ہوجاتے ہے جا جا اوّل اس کے
ہوجاتے ہے جا با اوّل اس کے
عیوب سے اس کو مطلع کر کے پھر بیت کرتے۔ آپ کے وظائف مطابق سنت
عیوب سے اس کو مطلع کر کے پھر بیت کرتے۔ آپ کے وظائف مطابق سنت

⁽۱) سوانع عرى مولوى عبدالله الغزنوي ص: ۲۸

⁽٢) سواخ حيات من ٣٩-١٨

دوسراباب:

کوه سیاه کیمهمیں

اگرور میں فوجی چو کی

آزاد قبائل اطمینان سے بیٹھے تھے، کین حکومت انگلفیہ اپنے اثر واقد ارکا دائرہ برحانے کیلئے کوئی نہ کوئی فتنہ اٹھاتی رہتی تھی۔ چنانچہ نومبر ۱۸۲۷ء میں اگر در کے مشہور مقام اوگی میں ایک فوئی فتنہ اٹھاتی رہتی تھی۔ چنانچہ نومبر ۱۸۵۵ء میں اگر در کے مشہور مقام اوگی میں ایک فوئی ضرورت ۱۸۵۳ء کے بعد چیش نہ آئی تھی۔ آزاد قبائل اس چوکی کا مطلب یہی بھھ سکتے تھے کہ حکومت آ ہستہ آ ہستہ انھیں زیراثر لانے کیلئے تد ہیروں کا جال پھیلا رہی ہے۔ چنانچہ ان میں بے چنی پیدا ہوئی۔ وائلی کا بیان ہے کہ ۳۰ رجولائی ۱۸۲۸ء کو پانچ سو کے ایک لفکر نے اس چوکی پر ہلہ بول دیا۔ اس فکر میں آس باس کے تمام قبیلوں کے آدمی موجود تھے، جتی کہ پریاری کے سیندوں نے بھی اس میں برقد رتناسب ھتہ لیا۔ (۱) '' ہزارہ گزییڑ' کے بیان کے مطابق سیندوں نے بھی اس میں برقد رتناسب ھتہ لیا۔ (۱) '' ہزارہ گزییڑ' کے بیان کے مطابق میں جوانوں نے جم کرمقابلہ کرلیا اور بہت ساسامان بھی اٹھا کر لے گئے۔ (۲)

حکومت کوشبہ ہوا کہ بیحملہ عطامحہ خال رئیس اگر ورکی انگیفت پرکیا گیا ہے۔ چنا نچہ لفٹنٹ کرتل رادنی (ROTHNY) فوج لے کراس رجولائی کو آدھی رات کے وقت ایبٹ آباد سے اوگی وارد ہوا۔ گویا اس نے بیالیس میل کا فاصلہ پجیس گھنٹوں میں طے کرلیا۔ ۲ راگست کو والی امب کی فوج موقع پر پہنچ گئی۔ رئیس اگر ورکو گرفتار کر کے ایبٹ آباد

⁽۱) "واکلی کرتاب" ص:۳۶ (۲) "بزاره گزیشمز" ص:۱۹۹

بھیج دیا گیا اور خود کرتل رادنی وہال بیٹھا رہا، اس لئے کہ دادی اگر ور میں شدید بے چینی کے آثار نمایاں تھے۔ اس اثناء میں زبرست اقد امات کا فیصلہ کرلیا گیا۔ مختلف چھاؤنیوں سے فوجیں طلب کرئی گئیں۔ بریکیڈ بیئر جز وائلڈکواس مہم کا سپدسالا رمقرر کیا گیا۔ مہم کے آغاز تک قبائل لشکر برطانوی علاقے کے بائیس گاؤں جلا بھیے تھے اور ان کی بورشوں میں چونسٹھ آدمی مقتول و مجر دح ہو کیکے تھے۔

کوه سیاه کی دوسری مهم

اس مہم کے لئے جونوج جمع کی گئی، وہ ساڑھےنو ہزار افراد پر مشتل تھی۔مہاراجہ سمیرنے بھی بارہ سوآ دمی انگریزی فوج کی اعانت کیلئے سرحد پر بھیج دینے تھے،اگر چہان سے کوئی کام ندلیا گیا۔

اتنی بڑی فوج کے اجتماع کا اثر یہی ہوسکتا تھا کہ مختلف طبقات پر ہیبت طاری ہوجاتی چنا نچے فیکری اور تندھیاڑ کے بعض حسن زئیوں اور صواتیوں نے مصالحت پر آمادگی کا یقین ولا ویا، البتہ چخر زئیوں ، اکا زئیوں ، دیشی اور تاکوٹ کے صواتیوں اور پر یاری سیّدوں سے مقابلہ در پیش رہا۔ متندا طلاعات سے ظاہر ہوتا ہے کہ ہندوستانی مجاہدین اس مہم میں قبا کلی لشکروں کے معلون بنے رہے، بلکہ دوران کشکش میں وہی تھے، جھوں نے ہرمقام برجانباز اندمقابلہ کیا۔

انگریزی فوج دوحصوں میں منتسم تھی ،ایک عقبے کا سالار کرئل برائث (BRIGHT) اور دوسرے کا واٹھن (VAUGHAN) تھا۔ اسراکتو برکو دونوں جیش مختلف سمتوں سے بو سے اور تین روز میں ان تمام مقامات پر قابض ہو گئے ، جہاں سے کوہ سیاہ اور اس کے نواحی علاقے میں جرسمت کامیاب اقد امات کے جاسکتے تھے۔ چندروز میں باتی قبیلوں نے بھی صلح کرنی۔ پھر انگریزی فوج پر یاری ، نیکری اور نندھیاڑ میں سے گذرتی ہوئی (سرگزشته مجاهدین)

والبس آگئی۔اس بوری مہم مص صرف ایک ناخوش گوارواقعہ پیش آیا، یعنی پریاری سیدوں نے انگریزی فوج کی ایک عقبی تکڑی پرحملہ کیا، جس کی سزامیں ان کا ایک گاؤں جلادیا عمیا۔۲۰ را کتوبر کو فوج انگریزی علاقے میں واپس آگئی۔اس مہم میں انگریزوں کے مقتولین ومجروحین کی کل تعداد صرف چوتیس تھی۔(۱)

تحفكش كاامتداد

انگریزی فوج کشی اگر چینظر بظاہر کامیاب رہی تھی تا ہم اس سے عام حالات میں كوئى خوش آئندتغير پيدانه بوااور كفكش كاسلسله بدستور جاري ريا_مثلاً:

ا۔ جولائی ۲۹ ۱۸ء میں اگرور کے دوگاؤں ، برجاراور کل ڈھیری جلائے گئے۔

۲_ اگست ۱۸۶۹ء میں جسکوٹ برحملہ ہوا۔

س۔ سراکتوبر ۱۸ ۱۹ ماء کوایک انگریزی جیش نے اکازئیوں کا ایک گاؤل شہوت تباہ کرڈ الا اور اعلان کردیا کہ حکومت کی اجازت کے بغیراس گاؤں کوآباد نہ کیا جائے۔

٣ ـ ٩ رايريل ١٨٥ ء كواكازئيول في برچار برحمله كيا-

۵۔ ۱۵؍ ابریل کو اکا زئیوں اور خان خیل حسن زئیوں نے سنجل بٹ جلادیا۔

غرض دونوں جانب ہے مخالفانہ سر گرمیاں جاری تھیں۔ قبا نکیوں کوموقع ملتا تو وہ انگریزی علاقے پر جھایے مارتے۔انگریزی فوج اٹھتی تو قبائلیوں کی فصلوں اور آبادیوں کو تباہ کرتی۔ ۱۸۷ء میں حکومت کو احساس ہوا کہ خان اگر ورکو بے وجہ معزول کیا گیا تھا۔ چنانچہاس کی ریاست بحال کردی گئی۔اکا زئیوں کو چونکہ شہتوت گاؤں آباد کرنے کی ممانعت بھی،اسلئے وو وقا فو قاائر بزی علاقے میں انتقامی اقدامات کرتے رہتے تھے۔

(۱) "بزاره گزییز" ص: ۱۷۱-۱۷۱ نیز داللی ادر نیول کی کمایس

۱۸۷۵ء میں ان سے آخری تصفیہ ہو گیا۔

فساوة دفساد

۱۸۷۵ء میں عطامحہ خال رئیس اگر ور نے دفات پائی اور اس کا بیٹا گو ہر خال جائشین ہوا۔ پہلے وی بیٹا گو ہر خال جائشین ہوا۔ پہلے ویر بعد حسن زئیوں اور اگر ور یوں کے ایک خان احمالی خاں کو ویشن فیروز خال نے بھائی ہاشم علی خال کو ویشن فیروز خال نے بھائی ہاشم علی خال کو مد احمال کو اس بنا پر تل کر دیا کہ وہ بھی احمالی خال کے ایک وی احمالی خال کے بھی احمالی خال کی بھی احمالی خال کے بھی احمالی خال کی بھی احمالی خال کے بھی احمالی کے بھی کی کے بھی کے بھی کے بھی کی کے بھی کی کے بھی کے بھی کے بھی کے بھی کے بھی کی کے بھی کی کے بھی کے بھی کے بھی کے بھی کی کے بھی کے بھی کے بھی کی کے بھی کی کے بھی ک

عطامحمر خال مرحوم رئیس اگر در کے تعلقات اپنے پچیرے بھائی اللہ دادخال سے نہایت تاخوش گوار تھے۔ بیدعدادت ان کی ادلا دکو بھی میراث میں لمی۔ اللہ دادخال کے بیٹے عبداللہ خال کو اگر در کے چھ گاؤں بنے پر ملے ہوئے تھے۔ علی گوہر خال نے وہ پٹا منسوخ کر انا چاہا۔ عبداللہ خال اپنے مرکز دل بوڑی سے لکلا اور آزاد قبائلیوں کی امداد کے کراس نے اگر در کے دیہات پر متعدد چھاپے مارے۔ حکومت نے اس کا مشاہرہ صنبط کرنے کے علادہ اسے مددد سے والے قبائل کی نا کہ بندی کر لی۔ اس طرح تادیبی اور انتخامی کارروائیوں کا ایک نیاسلسلہ شروع ہوگیا۔

عجیب امریہ ہے کہ ہاشم علی خال کے ایک چھاپے کے سلسلے میں چھان بین کرتے ہوئے کار کنانِ حکومت کو محسوس ہوا کہ یہ چھاپا خان اگرور کے ایما سے مارا گیا ہے۔ چنانچہ خان کومعزول کرکے لاہور میں نظر بند کردیا گیا۔ حسن زئیوں اور پریاریوں کے خلاف زیادہ شدیداقد امات کی تجویزین زیغورا آگئیں۔

دوانگریزافسروں کافتل

۸۱رجون ۱۸۸۸ء کو ایک نیا حادثہ پیش آیا، جو حکومت کے لئے زبردست فوجی اقد امات کا بہاند بن گیا۔ اس کی کیفیت سے :

میحرینی (URMSTON) اور کپتان ارسٹن (URMSTON) ساتھ فوجیوں اور انیس جوانان پولیس کے ہمراہ اوگی سے روانہ ہوکر ہر چار کے فیلے پر پڑھے۔ سرکاری بیانات میں بتایا گیا ہے کہ وہ گردونوا ر کے علاقے کا اندازہ کرنا چاہتے تھے۔ مقامی روایت یہ ہے کہ وہ شکار کھیلنے کے لئے نکلے تھے۔ بہر حال مقصد خواہ کچھ ہو، ریوڑ چرانے والے گوجروں نے ان پر گولیاں چلائیں۔ سرکاری بیانات میں بتایا گیا ہے کہ ان پر محلہ انگریزی علاقے میں ہوا، لیکن ان پہاڑوں پر کوئی ایسی واضح حد بندی موجود نہ تھی، جس سے مجھا جا سکتا کہ انگریزی علاقہ ختم ہوکر قبائلی علاقہ شروع ہوگیا ہے۔ بندوقوں کی آواز من کر بہت سے لوگ جمع ہوگئے۔ اس پر میجر بٹی نے اپنے ساتھیوں کو والیسی کا تھم دے دیا۔ ایک حولدار ذخی ہوگیا، جو انگریزی جعیت کے تھی ھے میں تھا۔ میجر بٹی اور کپتان دیا۔ ایک حولدار ذخی ہوگیا، جو انگریزی جعیت کے تھی ھے میں تھا۔ میجر بٹی اور کپتان ارمسٹن اے بچا کر ساتھ لا نے کیلئے لوئے اور دست بدست لڑائی میں دونوں مارے دارمسٹن اے بچا کر ساتھ لانے کیلئے لوئے اور دست بدست لڑائی میں دونوں مارے گئے۔ مشہور کردیا گیا کہ پریاری سیداور خان خیل حسن زئی (بہ قیادت ہاشم علی خال) بھی بندوقوں کی آواز سن کر کا لفانہ حملے میں شریک ہوگئے تھے۔

بہرحال چندروز بعد حسن زئی ،ا کا زئی اور پریاری سیّدخاصی بڑی تعداد میں کوہ سیاہ کے ٹیلوں پرجمع ہو گئے ۔ ۲۷ رجون ۱۸۸۸ء کوعبداللہ خاں (بن اللہ داد خاں) بھی میدان (نز دیلوس) سے ایک سومیس ہندستانی مجاہدوں کو لے کرآ گیا۔(۱)

کوه سیاه کی تیسری مهم

اس طرح کوه سیاه کی تیسری مهم کا آغاز ہوا۔ انگریزوں نے اس کیلئے بھاری فوج جمع کی جس کی تحداد سرسری انداز ہے کے مطابق بارہ ہزار سے کم نہ ہوگی۔ اس کے ساتھ چوہیں تو پین تھیں۔ میجر جزل میکوئین (MCQUEEN)کواس کا سپرسالار بنایا گیا۔

⁽۱) "بزاروگزییز"می: ۱۲۸–۱۸۸

تورواوركوٺ كئي كى لژائى

اس لڑائی کے متعلق نیویل اور واکل نے جو حالات بیان کیے ہیں، وہ اتنے مختصر ہیں کہان سے اس کی اہمیت کا انداز ونہیں ہوسکتا۔(۱)

'' ہزارہ گزیٹیئر'' کابیان ہے کہ قبائلی شکرتو رو کے شال مشرق میں کوئی آٹھ سوگز کے فاصلے پر ایک نارے قدم جمائے کھڑا تھا۔ اس کی دائیں جانب وریا تھا اور بائیں جانب پہاڑجس کی و ھلانوں میں انھوں نے مور بے قائم کر لئے تھے۔ کو یاغنیم ان کے خلاف پیش قدمی کرتا تو اس پر تین طرف سے ہلاکت یا آگ بر سے لگتی۔ مجاہدین ہمی اس قبائلی لشکر میں شامل تھے لیکن ان کی صبح اور معین تعداد کا علم نہ ہوسکا۔ بیلا ائی ایک

⁽١) نوبل كى كتاب من ٩٨-٩٨ اوروائل كى كتاب من ٨٠-٥٥_

ندی کے کنارے ہوئی تھی۔ ایک روایت کے مطابق ندی اور آس پاس کے جنگل میں پھر آدی چھپے ہوئے تھے۔ ایک ناظر کا چیٹم دید بیان ہے کہ ڈیڑھ سو آومیوں نے ندی اور درختوں سے نکل کرانگریزی فوج پر پورش کی:

راکل آئرش رجمنٹ نے بڑے استقلال کے ساتھی نہایت چالا کی اور جلدی سے تثمن پر گولیوں کی بارش شروع کی ،جس سے تنیم کارخ پلٹ گیااور اکثر ول نے اپنے آپ کوندی میں کرادیا۔ چونکہ پانی عمیق تھا بہت سے افغان غرق ہوگئے۔ بعض مارے گئے ۔ (۱)

''ہزارہ گزییر'' سے معلوم ہوتا ہے کہ انگریزی فوج نے بڑی تو پوں اور کلد ارتو پوں
کی آتش باری کے بعد غنیم پر حملہ کیا۔ دوسر بے لوگ اِدھر اُدھر منتشر ہو گئے لیکن مجاہدین
مقابلے پر قائم رہے۔ وہ تلواریں لیکر نکلے اور بجل کی تیزی سے انگریزی فوج کی طرف
بڑھے، کیکن ایک ایک کر کے گولیوں سے شہید ہوتے رہے۔ صرف تیرہ بچے جو دریا کے
قریب ایک جنگل میں کچھ دیر بعد موت کے گھاٹ اتارہ نے گئے۔

غالبًا يهى موقع ہے، جب انگريزوں نے ''گسيلنگ گن ''استعال كى۔ اسے کلد ارتوپ مجھنا چاہيے جو گئيلنگ ان کے خزانے کلد ارتوپ مجھنا چاہيے جو گئيلنگ نام كے ايك موجد نے بنا كى تھى۔ اس كے خزانے ميں بديك وقت ڈيزھ سوكارتوس مجرد ہے تھے گھراس كا منظيم كى طرف كر كے ايك چرخ زور سے پھراد ہے تھے اور اس سے على الاتصال گولياں نگلتی رہتی تھيں غنيم كے حملے كورو كئے كے لئے يہتو پر بہت كارآ رتھی۔ (۲)

⁽۱) جنگ کوہ سیاہ سست سے کتاب میجرنواب افسر جنگ نے مرتب کی تھی جو بعد میں سرافسر الملک ہے اور دولت آصفیہ میں سیسالار کے عہد سے پر مامور ہوئے۔افسر جنگ کوایک مشن میں شامل ہونے کیلئے بھیجا گیا تھا جو کا ہل جار ہا تھا۔مشن رک گیا اور افسر جنگ کوہ سیاہ کی تیسری مہم میں شریک ہو گئے جو اُن دنوں چھڑ تی تھی۔ جنگ کے بعد حید رآباد پانچ کرانھوں نے یہ کتاب مرتب کردی جودار الطبع سرکار عالی میں چھپی ۔

⁽۲) جنگ کوه سیاه ص:۳۴-۳۵

جانى نقصان

نیویل رقمطراز ہے کہ:

اس میدان میں بعدازاں اٹھائ نشیں گن گئیں ،جن میں ہےاڑ تالیس نعثیں ہندوستانی مجاہدین کی تھیں۔(۱)

میجرافسر جنگ کابیان ہے:

دوسرے دوز جھاڑیوں میں انچاں نعثیں اور ندی کے کنارے چیبیں اور انتالیس پھروں میں اور چھایک پہاڑ پردکھائی دیں۔ ندی میں کس قدر ڈو ہے، ان کا شار معلوم نہیں ہوا۔ (۲)

گو یا جونعشیں انگر میزوں کومل سکیس ، وہ ایک سوہیں تھیں ۔

تاہم اس سے بینہ مجھا جائے کہ اس موقع پرانگریزوں کا کچھ نقصان نہ ہوا۔ان کے بوے افسروں میں سے صوبیدار میجر چر سنگھ اور کپتان بیلی مارے گئے۔متعدد افسر زخمی ہوئے ،مثلاً لقنٹ کلیو کی گردن میں گولی گئی اور مونڈ ھے میں رہ گئی۔ کپتان راؤ فرڈ کی چھاتی میں بائیں طرف گولی کا زخم تھا۔ کرنیل کروک شینک بھی زخمی ہوا، جو در بند والے کالم کا سالارتھا۔ (۳)

غرض اس لڑائی میں انگریزوں کی کا میابی صرف اعلیٰ آتش بار اسلحہ کی فراوانی پر موقوف تھی۔امیر رحمت الله مرحوم اس لڑائی کو توروکنڈوہ کی جنگ قرار دیتے تھے۔ان کا بیان تھا کہ کم ومیش پانسومجاہدین شہید ہوئے۔ بی تعداد اس بناء پر قرین صحت مانی جاسکتی

⁽۱) نیویل کی کتاب ص: ۹۸

⁽۲) جنگ کوه سیاه ص:۳۳

⁽۳) ملاحظه بوكوه سياه صفحات: ۳۹،۳۵،۳۵،۳۷،۳۷،۳۵،۳۵ سيايي مجى خاصى تعداد عن مارى محتره اگر چدال كى ايورى كيفيت معلوم ندموكل _

________ ہے کہ پوری مہم کے قباللیوں اور مجاہدین کے شہداء بر شمثل ہوگ ۔

بعد کے حالات

کونکٹی پر قبضے کے بعداگریز آ کے بر صاورانھوں نے دریا کے مشرقی کنارے نیز دریا اور کوہ سیاہ کے درمیانی علاقے میں متعدد مقامات جلائے۔ مثلاً کنٹر، کناری، نلی، سیری اور کن دریا کوعور کر کے مغربی کنارے پر پلوی اور میدان میں مجاہدین کے قلعاور آبادیاں جلا کیں۔ ہزارہ گزییٹر میں بتایا گیا ہے کہ جاہدین نے غلے اور گھاس کے جو عظیم الثان ذخیر نے فراہم کرر کھے تھے، وہ بھی ہر باد کردیے گئے۔ امیر رحمت الله فرماتے تھے کہ ہم نے اہل وعیال کو بلوی سے نکال کر بانگیرہ ہم جے دیا تھا اور خود کا ہل گرام چلے گئے۔ نیویل رقمطراز ہے:

الارا کو برکو دریائے سندھ کے دائیں کنارے میدان میں ہندستانی چونیوں کا مرکز جاہ کردیا گیا۔گزشتہ چالیس سال میں اگریزی فوجوں سےاس بدنام گروہ کے تصادم کا میہ پانچواں موقع تھا اور پہلے کی طرح اٹھیں مجبود کیا گیا کہ اپنام کرکسی اور چگہ بنائیں۔(1)

قبائلیوں کا عام شیوہ تھا کہ وہ ابتدا میں بہت جوش وخروش دکھاتے تھے،لیکن جم کر مفاہد نہ کر سکتے تھے۔ چنا نچہ ۱ ارا کتوبر کوا کا زئی اور ۱ ارکوسن زئی انگریزوں کی پیش کروہ شرا لط ملح مانے کیلئے تیار ہو مکتے اور مجاہدین مقابلے پر تنہارہ گئے۔ پھر پر یاری سیّدوں اور شکری والوں نے بھی انگریزوں کی اطاعت قبول کرئی۔

افسر جنگ نے ایک عجیب قصد لکھا ہے لیعنی یہ کہ جاہدین اور دوسر تے تبیاوں کا ایک وفد حضرت اخوندصا حب صوات کے صاحبز اوے کے پاس بھی گیا کہ انگریزوں کی فوج (۱) نعیل کی کتاب من ۹۹ ہے نویل نے پہلے جارمو تھے یہ بتائے ہیں:۱۸۵۳ء میں عشر اور کوئلی، ۱۸۵۷ء میں نارفی، ۱۸۵۷ء میں المحلاء میں المحل ہمارے ملک کی طرف آ رہی ہے اور مسلمانوں کو لازم ہے کہ جہاد کیلئے تیار ہوجا کیں۔ صاحبزادے نے باتفاق علاء جواب دیا کہ انگریز تمہارے ندہبی معاملات میں دخل نہیں دیتے ہمجدیں مسارنہیں کرتے ، ہزرگوں کے آٹار کونہیں چھیڑتے۔ پھران کے خلاف جہاد کیوں کرجائز ہوسکتا ہے؟

ان کی فوج کشی کا سب یہ ہے کہتم لوگ ان کے علاقوں میں چوریاں کرتے ہو۔ پچھلے دنوں بوجہان کے دوسرداروں اور پچاس آ دمیوں کو مارڈ الا۔(۱)

اغلب ہے کہ افسر جنگ نے بیسب باتیں ذمہ دار انگریز افسروں سے سی ہوں، لیکن ظاہر ہے کہصا حبز ادے اور علماء کا جواب سرا سر غلط اور نا درست تھا۔

چوتھی مہم

مهه اء کی جنگ کے بعد صلح کی ایک شرط بیہ طے ہوئی تھی کہ قبائلی لوگ ان انگریزی فوجوں یا افسروں کوکوئی آزار نہ پہنچا کیں گے، جو انگریزی اور قبائلی علاقے کے درمیان بڑے پہاڑ پر جا کیں آ کیں گے۔ اس میں سرئیس بنانے کی کوئی توضیح نہ تھی۔ حکومت انگلشیہ نے مارچ ۱۸۹۰ء میں اگرور سے کوہ سیاہ کے ٹیلوں تک کئی سرئیس بنانے کا فیصلہ کرلیا اورا کتو بر میں ایک لشکر جزل میکوئن کی سالاری میں اوگی بھیج دیا۔ مقد عابی تھا کہ بیہ لشکر کوہ سیاہ کی چوٹی تک جا کر انگریزی تسلط کاعلم نصب کرد ہے۔ قبائلیوں کو انگریزوں کی لشکر کوہ سیاہ کی چوٹی تک جا کر انگریزی تسلط کاعلم نصب کرد ہے۔ قبائلیوں کو انگریزوں کی بدع بدی بہت ناخوش گوار معلوم ہوئی۔ چنانچہ ہاشم علی خاں کے بھائی سکندرخاں نے پچھ خان خیل حسن زئی اور اکا زئی جع کیے اور بر چار پہنچ کر انگریزی کیمپ پر آتش بازی کی۔ علی خان خیل حسن زئی اور اکا زئی جع کیے اور بر چار پہنچ کر انگریزی کیمپ پر آتش بازی کی۔ یہ کیفیت د میکی کومت نے پھرایک مہم میجر جزل ایلی (ELLES) کی سرکردگی میں تیار کی ۔ اس کے لئے بھی در بند اور اوگی میں فو جیس جع کی گئیں، جن کی تعداد چھ ہزار تین سوکے۔ اس کے لئے بھی در بند اور اوگی میں فو جیس جع کی گئیں، جن کی تعداد چھ ہزار تین سوکے۔ اس کے لئے بھی در بند اور اوگی میں فو جیس جع کی گئیں، جن کی تعداد چھ ہزار تین سوکی۔

⁽۱) جنك كوه سياه ص: ۸۲-۹۰

تھی۔ان فوجوں کے ساتھ اٹھارہ تو پیس تھیں۔

بارچ۱۹۹ء میں اس مہم کا آغاز ہوا۔ اکا زئیوں اور حسن زئیوں نے کوئی قائل ذکر مراحمت نہ کی۔ اگریزی فوجوں نے ان کے علاقے پامال کر ڈالے۔ ہاشم علی خال چنر زئیوں کے علاقے میں بھاگ گیا۔ 'نہزارہ گزیٹیر' میں بتایا گیا ہے کہ صرف ایک جگہ شد ید مزاحمت سے سابقہ بڑا، جہاں اہل بونیر ،جدون ، ہندوستانی مجاہدین اور بعض ورسرے قبیلے چنر زئی کے علاقے میں اور اس پہاڑ پرجمع تھے، جوعلاقہ حسن زئی اور بونیر کے درمیاں واقع ہے۔ صورت حال میں سخت الجھاؤ پیدا ہونے کا اندیشہ لاحق ہوگیا تھا۔ اس اجتماع کے درمیاں واقع ہے۔ صورت حال میں سخت الجھاؤ پیدا ہونے کا اندیشہ لاحق ہوگیا تھا۔ اس اجتماع کے بعض حصر متعدد مقامات پراگریزی فوجوں سے متصادم ہوئے۔ اس سلسلے میں غازی کوٹ کی لڑوئی خاص طور پر قابل ذکر ہے، جہاں ہندوستانی مجاہدین کے ایک میں غازی کوٹ کی شب کوڈوگروں کی چوکی پر جانباز اند جملہ کیا ، لیکن وہ شدید نقصان اٹھا کر بسیا ہو گئے۔ (۱)

واکلی رقمطراز ہے کہ عازی کوٹ دریائے سندھ کے بائیس کنار سے پرواقع ہے۔ یہ
ایک چھوٹا سام کا وُں ہے، جہاں نمبر چار(۴) سکھ رجمنٹ کی ایک چھوٹی سی کمپنی موجودتھی:
ایس چھاری کو تین ہج صبح ہندوستانی مجاہدوں کی ایک بوی جماعت
اس پرجملہ آور ہوئی ہے سکھ رجمنٹ اور ۳۲ پایو نیرز نے جلد کمک موقع پر پہنچادی
اور دشمن خت نقصان اٹھا کر ہیا ہوگیا۔ (۲)

⁽۱) "بزاره گزیلیم "من:۱۸۱ (۲) واکلی کی کتاب من:۵۰

⁽r) واکلی کی کتاب ص:۵۰

امیر رحمت الله مرحوم نے بالضرح بتایا تھا کہ اس مہم میں مجاکوٹ (بیوں کا پہاڑ)، غازی کوٹ اور دیدل کماچ پر سخت لڑائیاں ہوئیں، لیکن ان کی کوئی تفصیل اس مرحوم ہے معلوم نہ ہوئی۔

صلح

جنگ المبیله کی طرح اس جنگ کے سلط میں بھی قبائل جا بجا جمع ہونے گئے تھے۔ اگریزی حکومت نے ایک طرف ان قبائل کو یقین دلایا کہ سمی کو نقصان پہنچا نامنظور نہیں، دوسری طرف کمکی فوجیس طلب کرلیس۔ آخر قبائلیوں نے غیر مشروط اطاعت کا اقرار کرلیا۔ حسن زئیوں، اکازئیوں مد احیلوں، پریاری سیّدوں اور چفر زئیوں نے عہد نامه لکھ کردے دیا، جس کی دوشرطیس خاص طور پر قابل ذکر ہیں:

ا۔ قبائل بھی اس امر کے روادار نہ ہوں گے کہ ہاشم علی خاں ان کے درمیان آئے اورآ باد ہوجائے۔

۲۔ معاہد قبائل میں سے کوئی بھی ہند دستانی مجاہدین کواپنے ہاں مرکز بنانے کے لئے میگہ نہ دے گا۔

امیرر حت الله کے بیان کے مطابق اوپر بتایا جاچکا ہے کہ جاہدین نے اہل وعیال کو مرکز کی تباہی سے پیشتری با تکیرہ و بھیج دیا تھا۔ وہ فرماتے تھے کہ ہم لوگ بھر گلونہ بوڑی یا بٹارا میں بچومدت رہے۔ جب صواتیوں اور اہل بونیر سے پھر کھکش کی صورت پیدا ہوئی تو دوسری جگہ مقل ہونے کا انتظام کیا گیا، اس کی تفصیل آئندہ باب بیس ملے گی۔

سادات ستفانه

اتمام بیان کی غرض سے اختصار أی بھی بتادینا جا ہے کہ جنگ امبیلہ کے بعد سادات و است است اللہ میں ہیں ہے دوستیاں صددرجہ متاز تھیں: ایک سے دوستیاں صددرجہ متاز تھیں: ایک

شنراده مبارک شاه ، دوم سیدشاه محمود بن سید عمر شاه شهید شنراده ملکا بی میں رہتا تھا وہ شعبان ۱۲۸۹ و سمبر ۱۸۷۱ و ۱۸۷۱ و سمبر ۱۸۷۱ و ایک شادی میں شرکت کیلئے ناوا گئی میں اور ان کی شادی میں رکھتا تھا۔ غالبًا ایک (وادی چمله) گیا ہوا تھا۔ خالبًا ایک ملازم سے کہا کہ پستول خالی کرلاؤ ۔ ملازم سے تمام گولیاں نہ نکل سکیں اور اس نے پستول شنرادہ صاحب کو دے دیا جو ایک شخص سے باتوں میں مشغول تھے۔ انھوں نے پستول من شنول تھے۔ انھوں نے پستول ران پر کھلیا اور باتوں میں منہمک رہے۔ میں اس اثناء میں پستول کو جھٹکا لگا اور وہ چل ران پر کھلیا اور باتوں میں منہمک رہے۔ میں اس اثناء میں پستول کو جھٹکا لگا اور وہ چل سے سیاتیں سال کی عمرتی ۔

سیدشاه محودای الل دعیال اور بھائیوں کے ساتھ گبائی میں رہتے تھے۔ پھر وہ در کو سے اند میں (ستھانہ میں (ستھانہ میں (ستھانہ میں (ستھانہ میں (ستھانہ میں (ستھانہ میں کردیا جہاں شخرادہ مبارک شاہ نے برج بنایا تھا بعنی سیری میں۔ ان کی پچھ جد کی زمین با تکمیرہ میں تھی جہاں سے فصلانہ لینے جاتے تھے۔ دہاں بعض لوگ اس وجہ سے مخالف بن محمود نے بن محمد کہدت تک ان زمینوں کے حاصلات سادات کو ندر ہے تھے اور سیدشاہ محمود نے بیجدی مکیت بحال کرائی تھی۔ رمضان ۱۳۹۵ھ (۲ر تبر ۱۸۷۸ء) کو اچا تک دشمنوں نے انھیں با مکیرہ ہیں شہید کرڈ الا۔ صرف چونیس سال کی عمقی۔ اس طرح خاندان کے دوروشن چراخ مگل ہو گئے اور ان کے بعد سادات ستھانہ پر جوآفتیں نازل ہوئیں ان کی اجمالی کیفیت آھے چال کر بیان کی جائے گی۔

تيسراباب:

مولا ناعبدالله كالآخرى وَور

انكريزول كاجوشِ انتقام

بلا شبہ مجابدین انگریزوں کے خلاف جہاد ضروری سی محت تھے، لیکن گزشتہ مہموں کی سر كزشت سے صاف واضح موتا ہے كدانموں نے مجى پیش دى نہى جھڑے ہيشد قبائل سے ہوتے رہے۔ مجاہدین دفاعی کارروائیوں میں برابرشریک رہے۔ ایکے بنیادی عقیدے اور قبائل سے عہد تعاون کا تقاضا یہی تھا،لیکن غور سیجئے کہ انگریز ہمیشہ انھیں ہرملائے سے فارج کرانے کی کوششیں کرتے رہے۔ یہ نکتہ فاص توجہ کا مختاج ہے کہ وبى كيول برموقع برجوشِ انتقام كامرف بنته تنهي الكى مخلف وجهيس ذبن من آتى بين ـ میلی اورنہایت اہم وجدریہ ہے کہ مجامدین ہندستان کو انگریزی تسلّط سے آزاد کرانے کے عكم دارت _ اكر جدان كى تعداداتى نتمى كدائكريزول جيسى وسع الاقتد ارحكومت كوان ے کوئی خاص خطر**ہ ہوتا، لیکن دہ آزادی کا ایک نش**ان تصاوران کی مثال ہزاروں حریت طلب ہندوستانیوں کی حمیت کے لئے مہمیز بن سکتی تھی۔انگریزوں کے نز دیک آزادی کی اس تحریک کود بائے رکھنے کی معجم تدبیریمی تھی کہ مجاہدین کوزیادہ سے زیادہ نشانہ آزار بنایا جا تا۔ دوم قبائل میں جنگی **صلاحیت موجودتی ، اگر** چینظیم کوئی ندتھی۔ بجاہدین قبائل کومنظم مجمى كريكتے تضاور انھيں بہترين سياي وند ہبي مقاصد كيلئے لزاہمي سكتے تنے لاہذا انگريزوں کااولین معابیتما که نیس کہیں جین سے بیٹے اور نظیمی کام کرنے کاموقع ندل سکے۔

نے مرکز کی تلاش

ا۱۹۹۱ء کی جنگ کے بعد مجاہدین کوشن زئیوں ،اکا زئیوں، مذاخیاوں وغیرہ کے علاقوں سے نکال دیا گیا تو وہ نئے مرکز کی تلاش میں نکل پڑے۔ سیدعبد البارشاہ نے لکھا ہے کہ امیر المجاہدین مولانا عبد اللہ خود الماز کی قبیلے کے پاس پہنچے اور کہا کہ ایک گاؤں امجاد ہے کہ امیر المجاہدین مولانا عبد اللہ خود الماز کی قبیلے کے پاس پہنچے اور کہا کہ ایک گاؤں امجاد ہے کہ المیر المجاہدین کے اور اجاد ہے کی قم با قاعدہ اداکرتے رہیں گے۔ امازئیوں کے تعلقات ان دنوں اپنے ہمسا ہے مبارک خیلوں سے خوش گوار نہ تھے، وہ مجاہدین کو ایک گاؤں و سے دینے کیلئے تیار ہو گئے ،کیکن شرط یہ پیش کی کہ جب ہمیں کی افغان قبیلے سے لڑائی کی نوبت آئے تو مجاہدین کالشکر ہمار سے ساتھ شامل ہو۔ اس صورت افغان قبیلے سے لڑائی کی نوبت آئے تو مجاہدین کالشکر ہمار سے ساتھ شامل ہو۔ اس صورت کے مسلمانوں کی باہمی لڑائیوں میں ہم کسی کا ساتھ نہیں دے سکتے بلکہ ان لڑائیوں کورو کئے کی انتہائی کوشش کریں گے ، البتہ حربی کافروں سے جنگ ہوتو ہم مقدمة آگویش بین کر

مبارک حیلوں سے درخواست

امازئیوں سے فیصلہ نہ ہوسکا تو امیر صاحب مبادک جیلوں کے پاس پہنچے۔ شنم ادو مبارک شاہ اور شنم ادہ سید محمود حوادث کا شکار ہو چکے تھے۔ امیر صاحب نے شنم ادہ مبارک شاہ کی شاہ کے فرزندا کبرسید فیروز شاہ کے پاس بھی پیغام بھیجا کہ مبارک جیلوں سے ٹیلوائی کا گاؤں اجارے پر لینے میں امداد دی جائے۔ چنا نچے سید فیروز شاہ نے اپنے بھائی سید کاؤں اجارے پر لینے میں امداد دی جائے۔ چنا نچے سید فیروز شاہ نے اپنے بھائی سید بہادر شاہ کوامیر صاحب کے پاس بھیج دیا۔ اتفاق یہ کہ مبارک جیلوں نے بھی ولی ہی شرط بیش کر دی۔ انھوں نے کہا کہ ہم تو سب سے کمزور ہیں، خود کھی کسی پر حملہ نہیں کیا، دسرے زور آور قبیلے ہم پر حملہ کرتے رہتے ہیں۔ دفاعی جنگ میں تو ہمارا ساتھ ضرور دینا

چاہیے۔اگر بیشرط منظور نہ ہوتو ہم کوئی جگہ نہیں دے سکتے۔گویا امیر صاحب کو مبارک حیلوں سے بھی مایوں ہونا پڑا۔

بارگاوالبی میں دعاء

سید بهادرشاہ کہتے ہیں کہ اس حالت میں امیر صاحب نے آسان کی طرف رخ کرکے بوے عجز سے کہا:

"اعظیم الثان آسانوں کے بنانے اور قائم رکھنے والے خدا! تیری راه میں اب تک خلوص نیت کو ہاتھ سے نہیں دیا۔ صبر ادر رضا بدقضا کا دامن نہیں جیوزا، مر اب تو تیری زمین بر جکه بی نبیس ملتی۔اب توبی بتا، میں کہاں جاؤں؟ تیری زمین پر است والے وجھے اپنے پاس ر کھنے کے لئے تیار نہیں'۔ یہ دعاءار دو میں تھی ۔ سید بہا درشاہ کابیان ہے کہ قبا مکیوں میں سے کوئی ار دونت مجھتا تما ، صرف میں نے اسے مجمام مبارک خیلوں کا جرگدار دوزبان سے تونا آشنا تھا البنداس نے انداز سے معلوم کرلیا کہ امیر صاحب دعاء کررہے ہیں۔ موصوف کی آنکھوں سے آنسو جاری تھے۔ہم لوگ ایک و هری کی بلندی پر بیٹے تھے،جس کی ایک جانب نالہ جاری تھی۔ بدردناک الفاظ امیرصاحب کی زبان سے فکے توعین اس وقت سب کوایک جھٹکا سانگا۔ایبامعلوم ہوا کہ شدید زلز لے کا جھٹکا تھا۔ بے شک وہاں مبھی مبھی زلز لے آ جایا کرتے تھے، کیکن یہ جھٹکا بالکل غیر معمولی تھا۔ گاؤں سوا سوڈیڑھ سوگڑ کے فاصلے پر ہوگا۔اہل جر کہنے سمجھا کہ گاؤں میں بچھ مکان ضرور کر گئے ہو نگے۔ چنانچہ ایک آ دی کو خبرلانے کیلئے دوڑایا۔اس نے واپس آ کر بتایا کدوبال کسی کو جھٹکامحسوس بی تبیس موا۔

ٹیلوائی کافیملہ

تمام حالات برخور كرنے كے بعد مبارك حيلوں كويفين بوكيا كريہ جھنكا امير

صاحب کی دعاء کا کرشمہ تھا۔ چنانچ انھوں نے وہیں بیٹے بیٹے فیصلہ کرلیا کہ خدا کے ایسے نیک اور جن پرست بند ہے کو ناراض کر نا فضب کا موجب ہوگا۔ ٹیلوائی کا گاؤں خودمنت ساجت سے امیر صاحب کو اجارے پر دیدیا۔ چنانچہ تمام مجاہدین وہیں آ بے۔مولانا عبداللہ کی حیات مبارک کے باقی اوقات اس جگہ بسر ہوئے۔ (۱) بیمقام اس وجہ سے محی امیر صاحب کو بہت پند تھا کہ اس بیس فلہ فاصل پیدا ہوتا تھا اور پانی کی کوئی کی نہیں۔ مولانا عبدالرجیم عظیم آبادی نے لکھا ہے کہ سرحد آزاد بیل ہرگاؤں کے مالک کوایک جھوٹا سالشکرر کھنا پڑتا ہے، ورنہ وہاں کا قیام آپس کے نفاق وشقاق اور مخالفت ومعاندت جوٹا سالشکرر کھنا پڑتا ہے، ورنہ وہاں کا قیام آپس کے نفاق وشقاق اور مخالفت ومعاندت دی ۔ حاسدوں نے یہ کہنا شروع کیا کہ وہ سلطنت برطانیہ سے مقابلے کا ارادہ رکھتے دی ۔ حاسدوں نے یہ کہنا شروع کیا کہ وہ سلطنت برطانیہ سے مقابلے کا ارادہ رکھتے ہیں۔ حالا نکہ وہ صرف اس غرض سے سرحد گئے تھے کہ کھن آزادا نہ زندگی بسر کریں اور کی

بلاشہ وہ آزاد رہنا چاہتے تھے۔ یہ بھی درست ہے کہ تھوڑی سی جمعیت سے وہ انگریزی حکومت کوشکست ندد ہے سکتے تھے، لیکن ان کا اصل مقصداس کے سواکیا تھا کہ جمعیت فراہم کریں اور ہندوستان کو انگریزوں کے تسلط سے نجات دلا کیں؟ وہ صرف تنہا آزاد ندر ہناچا ہے تھے، بلکہ سب کو آزادی کی فعت سے شاد کام دیکھنے کے خواہاں تھے۔ مولا ناعبدالرحیم نے امیر المجاہدین کے حقیقی مقاصد پر پردہ ڈالنے کی جو کوشش کی اس کی ضرورت نہ تھی اور جس تحریر سے مجاہدین کے نصب العین پرضرب لگے، وہ کی شکل میں بھی زیبانہیں سمجھی جاسکتی۔

⁽١) ريتمام حالات سيرعبد الجبارشاه كى كتاب العمرت عدما خوذ جي عن ومتهم، المسم

⁽٢) "تذكرهٔ صادقه "ص: ١٣٨

سرحدة بوريند

حکومت ہند نے افغانستان اور ہندوستان کی درمیانی سرحد تعین کرنے کیلئے ایک کمیشن جزل ڈیورینڈ کی سرکر دگی میں امیر عبدالرحمٰن خال فرمانروائے افغانستان کے پاس بھیجا تھا اس کی مطے کر دہ حداب تک سرحد ڈیورینڈ کے نام سے مشہور ہے۔امیر عبدالرحمٰن خال دل سے اسے قبول کرنے کیلئے تیار نہ تھا، کیکن اگریزوں کی مخالفت بھی نہ کرسکتا تھا۔اسے یقین تھا کہ سرحد تعین ہونے کے بعد جوآ زادعلاقہ انگریزوں کی طرف جلا جائے گا، وہ انگریزی حلقہ کرشمجھا جائے گا اور انگریز آ ہستہ آ ہستہ اسے اپنی سلطنت میں شامل کرلیں گے مجبور ہوکراس نے حد بندی کے معاہدے پردسخط کردیے۔اس کے بعد انگریزوں نے باقاعدہ حد بندی شروع کر دی، جس سے آزاد قبائل میں تشویش بعد انگریزوں نے باقاعدہ حد بندی شروع کر دی، جس سے آزاد قبائل میں تشویش واضطراب کی ایک عام لہر دوڑگئی۔

۱۸۹۵ء میں ترکی اور بیونان کے درمیان جنگ ہوئی تھی اور عام مسلمان اس امر پر بے حد پریشان تھے کہ بور پی حکومتیں ترکی کی مرکز کی اسلامی سلطنت ہضم کر لینے کے در پی ہیں۔ سرحدی ملآؤں نے بالکل بجا پر و پیگنڈ اشروع کر دیا کہ انگریز ہندوستان سے باہر اپنے معاندانہ مقاصد پورے کر رہے ہیں اور آزاد قبائل کے سرداروں کو وظفے دے دے کر خاموش رکھنا چاہتے ہیں۔ اس طرح وہ بہاطمینان باہر کے مسلمانوں کو خاصا نقصان بہنچالیں گئو آزاد قبائل کی آزادی بھی محفوظ ندر ہے گی۔

بعض غلط اطلاعات بھی پھیلائی گئیں۔اس طرح مل ملا کرسر حدا آزاد میں ایک ایسے ہنگاہے کا انظام ہو گیا جسے نیویل نے اپنی کتاب میں''نہایت خوفناک'' قرار دیا ہے۔ (۱)

^{(1) &}quot;نول كى كتاب" ص:٢٠٩ ـ ادريقيناايها بمد كيرجوش بيبلي بهى بيدانه بواتها ـ

۹۸-۹۷ء کی جنگ

اضیں حالات نے سرحد کے مختلف حصوں میں معرکہ آرائی کے سامان فراہم
کردیے، جن میں سب سے برو حکر خونریز جنگ ملا کنڈ میں ہوئی۔ بونیر کے آیک ملا سعداللہ خان اس جنگ میں پیٹی پیٹی بتھے۔ وہ عام طور پر''سرتو رفقی' یعنی مستانہ فقیر کے لقب سے مشہور تھے۔ ملا صاحب ہڈ ا نے مہمندوں کے علاوہ تیراہ کے آفرید یوں ، وزیر یوں اور مسعود وں تک میں جہاد کا زُبردست جوش پیدا کردیا، جس کے شعلے نین سال تک بھڑ کتے رہے۔ اس موقع پر مولا ناعبداللہ امیر المجابدین نے بھی اعلانات شائع کیے اور مقاصد جہاد کو ہر ممکن تقویت پہنچائی۔ ملا صاحب ہڈ اان غیور حضرات میں سے تھے جو زندگی کی آخری سائس تک ہر ممکن ذریعے سے آگریزوں کے خلاف جہاد کی آگ کو ہوا دیتے رہے۔ وہ اخوندصاحب صوات سے فیض یاب تھے اور خودان کے اراوت مندوں میں جاجی صاحب تر تگ زئی اور ملا صاحب سنڈ ا کے جیسے لوگ شائل تھے۔ ان حضرات کی تدبیروں کے متعلق کسی کی رائے خواہ بچھ ہولیکن ان کی غیرت وجمیت اور جوشِ اسلامی کی تدبیروں کے متعلق کسی کی رائے خواہ بچھ ہولیکن ان کی غیرت وجمیت اور جوشِ اسلامی کی تاری جیس ایک لیے کے لئے شبہیں ہوسکتا۔

مولانا سیدعبد الجبارشاہ حقانوی بھی اس جنگ میں مجاہدین کی طرف سے شریک ہوئے تھے۔ وہ خاندان کی تنہا امیدگاہ تھے اور ان کی والدہ وعمتہ کسی حالت میں بھی انھیں خطرے کے سی مقام پر بھیجنے کیلئے آبادہ نہ تھیں، لیکن رضائے الہی کے خیال سے انھول نے کوئی رکاوٹ پیدانہ کی۔ اسی موقع پر سیّد موصوف امیر المجاہدین مولانا عبد الله اور ان کے بھائی مولانا عبد الله اور ان کے بھائی مولانا عبد الله اور اس وقت تو روسک میں مقیم تھے۔

مجاہدین نے بڑی جانبازی سے مقابلہ کیا، کین اعلیٰ در ہے کے آتش باراسلہ کے سیر عبد المجارشاہ کا بیان سامنے ان کی جانبازی کچھ کام نہ آئی۔ چنانچہ وہ شکست کھا گئے۔ سیر عبد المجارشاہ کا بیان ہے کہ جس مور ہے پرشد بدترین جنگ ہوئی ، اس میں خود میں موجود تھا۔ مقابلہ چھ ہج

صبح شروع ہوااور بارہ بجے کے بعد تک جاری رہا۔ اس میں کوئی شبہیں کہ توپ خانے کی آتش باری نے قبائلیوں میں بہت ایتری پھیلائی۔ بو نیر شروع میں پسپا بھی ہوئے۔ وہ صرف پندرہ سوتھے اور مقابلے پراگریزی لشکر دو ہزار سے زیادہ ہی تھا۔ اس کے ساتھ تو بیں بھی تھیں اور رسالہ بھی:

پچاس ساٹھ سے زائد سوار ، انگریزوں کی تعثیں اٹھالے جانے میں مارے گئے ، جو بالکل مجھ سے ساٹھ یاستر گزکے فاصلے پر تھے۔اس موقعے پر مارا صرف ایک نشانی حملہ کرتا ہوا مارا گیا۔ باتی سب اس گھمسان سے سلامت نکل آئے ، جن میں ایک میں بھی تھا۔ (۱)

سیدصاحب بیجی لکھتے ہیں کدائگریزوں نے اپنے مقتول سپاہیوں کی تعداد کم بتائی ہے۔ نیویل نے اپنی کتاب میں اس جنگ کامفصل نقشہ پیش کیا ہے۔ (۲) انگریزی فوج ملا کنڈ اور چک وَرہ سے فارغ ہوکر یونیر بھی پینی اکین ہمیں ان تفصیلات میں جانے کی ضرورت نہیں جنصیں جماعت مجاہدین کی سرگرمیوں سے براہ راست کوئی تعلق نہیں۔ یہ تفصیلات اس عہد کی عمومی سیاسی سرگزشت کاحقہ ہیں۔

درهٔ خیبرگی سر گزشت

اگریزوں کے عہد حکومت میں درہ خیبر سے باقاعدہ آمد ورفت کا آغاز ۱۸۷۸ء سے ہوااور ۱۸۸۳ء سے باقاعدہ سڑک بنی۔ بیسڑک درہ اور آس پاس کے مختلف قبیلوں نے اگریزوں سے گران قدر رقمیں لے کرخود بنائی تھی اور وہی اس کے مختلف حصوں کی حفاظت کے ذمّہ دار بنے تھے۔ بیمندرجہ ذمیل قبیلے تھے:کو کی خیل، ملک دین خیل، زخہ خیل اور شنواری،لیکن بعض لوگ ایسے بھی تھے جنھوں نے مخالفت کا سلسلہ جاری رکھا اور

⁽١) شبادت التفلين جلداة ل تلى نسخر ص بههم

⁽۲) "نويل كاب"م:۳۳۳-۲۳۸

اگریزوں سے تعاون تبول نہ کیا۔ ان میں سے ملک دین خیل کا ایک مردار کمال خال بطور خاص قابل ذکر ہے۔ وہ انتہائی مردائی اور شجاعت سے کام لے کر وقا فو قاحلے کرتا رہا، چنا نچا ایک موقع پرائگریزی رسالے کا ایک پکٹ کاٹ کرر کھ دیا صرف ایک سوار زندہ نج کرنگل سکا۔ پھر کمال خال نے رسالے کی ایک چوکی پر حملہ کیا۔ کمشنز کا سامان کو ہائ جار ہا تھا، راستے میں اس پر چھا پا مارا اور پوراسامان لے کرنگل گیا۔ انگریزوں نے اس کی گرفتاری کے لئے دو ہزار رو پے کا انعام مقرر کیا تھا۔ کمال خال کے ایک قبائل و شمن نے اس کو اس جواں مردکوا چا تک گوئی کا نشانہ بنایا اور وہ شہید ہوگیا۔ قاتل انعام لینے کے لئے بشاور بہنچا تو اسے جواب ملا کہتم نے سرکاری اعلان کی بناء پرنہیں بلکہ اپنی دشنی کی بناء پراسے مارا ہے، لہذا اانعام کے سنحق نہیں سمجھے جا سکتے۔ وہ ناکام واپس گیا۔ کمال خال کا بھائی اس کی تاک میں بیٹھا تھا اور راستے ہی میں اسے موت کے گھا نہ اتار دیا گیا۔ کا مارا سے بیا ہوں اس کی تاک میں بیٹھا تھا اور راستے ہی میں اسے موت کے گھا نہ اتار دیا گیا۔ کا مہائی میں تیراہ اور آس یاس کے علاقے بھی میدانِ کا رزار بنے ، لیکن ان لڑا نبوں سے بحام بین کا براہ وراست کوئی تعلق نہاں کی تاک رزار بنے ، لیکن ان لڑا نبوں سے بیا ہیں۔ (۱)

وفات

مولانا عبداللہ نے ٢٥ رشعبان ١٣٠ه (٢٩ رنوم ١٩٠٦ء) كو وفات پائي ۔ تقريباً چوہتر سال كى عمر ہوئى ۔ ہوش مندى كى زندگى كا ايك ايك لحد رضائے بارى تعالى كے مطابق راوحق ميں جہاد كرتے ہوئے صرف كيا۔ وہ اس مجاہد كير كے فرزند تھے، جس كا خاندان بہار كے ممتاز امراء ميں شار ہوتا تھا۔ مولانا كى والدہ حيدر آباددكن كے ايك رئيس مرز اواحد بيك كى صاحبز ادى تھيں، ليكن مولاتا نے نه ددھيال كى اميرى سے كوئى فائدہ الله ايا، نه نضيال كى رياست سے ۔ سب بھے چھوڑ كر انتہائى تكليفوں ، مصيبتوں اور پريشانيوں ميں دن گر ارے، اس لئے كہ حصول رضا كا راستہ يہى تھا۔ اس ہمت وعز بميت

⁽١) ملاحظه بويونفي صاحب كي كتاب" آزاد پلهان"

کے ہزرگ ہرقوم کے لئے عزّت وہرتری کا بہترین سر مایہ ہیں۔افسوس کہ ہم ان کے حیات آموز کارناموں کو گلدستہ کطاق نسیاں بنا چکے ہیں ۔مولانا کی قبر ٹیلوائی ہی میں ہے۔ میں اس کے قریب پہنچ گیا کہکن چڑھائی کے باعث گاؤں میں نہ جاسکا۔

ازواج واولار

مولا ناعبداللہ کا پہلا تکاح مولا نا فرحت حسین (عم تکرم) کی صاجز ادی مساۃ صالحہ ہے ہوا۔ بیخاتون مولا ناعبدالرجیم ہاخوذ مقد مہ انبالہ کی حقیقی بہن تھیں۔ان سے تین صاجز ادیہ ہوئے: (۱) عبدالقد وی (۲) مطبع اللہ اور (۳) امان اللہ عبدالقد وی مرحد آزاد میں بہت محترم مانے جاتے تھے۔انھوں نے پوری زندگی دعوت و تبلیغ میں گزاردی اور مولا نا کی وفات سے صرف چار مہینے بعد ذی قعدہ ۱۳۲۰ھ (فروری ۱۹۰۳ء) میں فوت ہوئے۔مطبع اللہ اور امان اللہ کے فرزند کے بعد دیگر سے امارت کے منصب پر فائز ہوئے۔ان کا ذکر آگے آئے گا۔ پہلی اہلیہ کی وفات کے بعد مولا نا نے دوسرا نکاح سرحد میں کرلیا تھا۔اس خاتون سے صاحبز ادہ عبدالستوح بیدا ہوا۔ مولا نا کا عہدامارت تقریباً چاہیں سال پر پھیلا ہوا ہے اور جماعت مجاہدین کی سرگزشت کا یہ عہدامارت تقریباً چاہیں سال پر پھیلا ہوا ہے اور جماعت مجاہدین کی سرگزشت کا یہ نہایت شاندار باب ہے۔

سادات ِستفانه کے حالات

یہال سادات ستھانہ کے حالات بھی اختصار أبیان کروینے چاہئیں:

ا۔ پہلے بتایا جا چکا ہے کہ شہزادہ مبارک شاہ ایک اندو ہناک حادثے ہیں شہید ہوئے اورتید شاہ محمود نے ایک معاندان کے ہوئے اورتید شاہ محمود نے ایک معاندگرہ ہ کے ہاتھوں اچا تک شہادت پائی خاندان کے بہی روثن چراغ تھے۔ شہزاد سے بال بچ ملکاہی میں مقیم رہے۔ سیدشاہ محمود کے ہال وعیال کومرحوم کے چھو نے بھائیوں نے سنجال لیا اور وہ درہ ستھانہ کے اندر مقیم تھے۔ وعیال کومرحوم کے چھو نے بھائیوں نے سنجال لیا درہ ہوستھانہ کے اندر مقیم تھے۔ حالی امب کا اس خاندان سے قریبی رشتہ تھا، خصوصاً سیّر عمر شاہ اور سیّدشاہ محمود

ے ذاتی تعلقات بہت گہرے تھے۔ سیّر شاہ محود نے والی امب پرایک احمان بھی کیا تھا یعنی عشرہ کے قریب اپنی خریدی ہوئی زمین بوقف والی امب کے حوالے کردی تھی، جس سے اسیکے مقاصد کو تقویت پہنچی تھی۔ والی امب نے اب چاہا کرسیّد شاہ محود کے بال بچوں اور بھا ئیوں کے بہاطیمینان ستھانہ میں اقامت اختیار کر لینے کا بندو بست کرد ہے، چوں اور بھا ئیوں کے بہاطیمینان ستھانہ میں اقامت اختیار کر لینے کا بندو بست کو دسیّد شاہ محمود کے بچوں یا بھا ئیوں کوکوئی علاقہ نہ تھا، شمرادہ مبارک شاہ کے فرزندسیّد فیروز شاہ کے محمود کے بچوں یا بھا ئیوں کوکوئی علاقہ نہ تھا، شمرادہ مبارک شاہ کے فلاف اگریزوں سے محدود جہنے تیز مزاج اور بطور خود ستھانہ کی پوری اراضی پر قابض ہوجانے کا خواہاں ہے، فیروز شاہ طدور جہتے مزاج اور بطور خود ستھانہ کی پوری اراضی پر قابض ہوجانے کا خواہاں ہے، فیروز شاہ طدور جہدونی رشتوں سے بالکل بے پردا ہوکر چھاپوں کا سلسلہ شروع کر دیا، جن میں سیّد قریبی خونی رشتوں سے بالکل بے پردا ہوکر چھاپوں کا سلسلہ شروع کر دیا، جن میں سیّد مرف ایک شیر خوار بچہ باتی رہ گیا، جنی ابتدائی تربیت کیا (نزد کھیل) میں ہوئی۔ پھر تعلیم صرف ایک شیر خوار بچہ باتی رہ گیا، جسی ابتدائی تربیت کیا (نزد کھیل) میں ہوئی۔ پھر تعلیم ابتدائی تربیت کیا (نزد کھیل) میں ہوئی۔ پھر تعلیم ابتدائی تربیت کیا (نزد کھیل) میں ہوئی۔ پھر تعلیم ابتدائی تربیت کیا (نزد کھیل) میں ہوئی۔ پھر تعلیم ابتدائی تربیت کیا (نزد کھیل) میں ہوئی۔ پھر تعلیم ابتدائی تربیت کیا (نزد کھیل) میں ہوئی۔ پھر تعلیم

سر میدموصوف کی زندگی کا ابتدائی دور صددر جدوردانگیز اورالم ناک تھا، لیکن خدا نے اپنی رحمت سے ان کیلئے ترقی و تعالی کے عجیب وغریب اسباب فراہم کردیے۔ چنا نچہ وہ ریاست امب کے وزیر اعظم بے۔ دواڑ ھائی سال صوات کے بادشاہ رہے، ستھا نہ کی از سرنو آبادی کا انتظام آتھیں نے کیا اور خاندان کے تمام جھڑ وں کومٹا کر جمعیت و یکجائی کا وندو بست بھی کر دیا۔ نیز انھوں نے متعدد تھا نیف کھمل کیں، جن میں چار پانچ ایسی ہیں مخدوب نیز وائن ترزیند کوئی نہیں۔ کہ سرحد کے متعلق مفضل تاریخی معلو مات کا ان سے بہتر اور گران ترخزیند کوئی نہیں۔ سیّد فیروز شاہ فوت ہوگیا تو اس کے بھائیوں اور بچول نیز خاندان کے دوسر سے افراد کو بھی سیّد عبدالجبار نے اپنی سر پرسی میں لے لیا۔ (۱)

⁽¹⁾ افسوس كداس كما ب كى طباعت كدوران دومهى رائى عالم بقاء بوت.

چوتھاباب:

مولا ناعبدالكريم

ابتدائی زندگی

مولانا عبداللہ کے بعد مولانا عبدالکریم مجاہدین کے امیر منتخب ہوئے۔وہ آٹھ نو
سال کے تھے، جب اپنے والد ماجد مولانا ولایت علی کے ہمراہ سرحد پنچے تھے۔(۱) نیج
میں ایک مرتبہ ہندوستان واپس آگئے تھے، جب مولانا عنایت علی امیر مجاہدین تھے اور
غاندان کے متعددافرادکوان سے اختلاف بیدا ہو گیا تھا۔ ۱۲۸۱ء میں مولانا عبداللہ کے
ہمراہ ووبارہ سرحد گئے۔پھر ان کی زندگی کا ایک ایک لمحہ وہیں بسر ہوا۔ جنگ امہیلہ
سے ۹۸ – ۱۸۹۷ء کی جنگ تک نیز بعد کی تمام مہموں میں برابر شریک رہے۔ تبلیغی اور
شظیمی مقاصد کے لئے وہ سرحد کے مختلف حصوں میں پنچے۔ایک روایت سے معلوم ہوتا
ہے کہ ایک مرتبہ میاں گئی (باجوڑ) بھی گئے تھے، جہاں خاصی دیر مقیم رہے۔

بہر حال مولا نا عبداللہ کے بعد وہ امیر مجاہدین بنے تو خدا جانے کیا حالات پیش آئے کہ تھوڑی ہی دیر میں آھیں ٹیلوائی چھوڑ کر نئے مرکز کا انتظام کرنا پڑااور وہ اسمست میں مقیم ہوگئے ، جہاں اب تک جماعت ِمجاہدین موجود ہے۔

⁽۱) حافظ عبدالمجید (ابن مولانا عنایت علی) کی جو یادداشتی اسمست میں بیری نظر سے گذریں،ان میں مولانا عبدالکریم کی تاریخ پیدائش ۱۲۵۷ھ بتائی گئی ہے۔ایک اور روایت سے معلوم ہوا کدان کی پیدائش ۱۳۵۵ھ میں ہوئی۔ببرحال والد کے ساتھ سرحدآتے وقت مولانا کی عمرآ ٹھ نوسال یاوس گیارہ سال کی ہوگی۔

الشمسين

اسمت برندوندی کے عین کنارے پر واقع ہے، جو بونیر نے کلتی ہے اور کو ہستانی علاقے کے نتیمی مقامات سے گذرتی ہوئی چملہ ندی سے ال کر دریائے سندھ عمل کرتی ہوئی چملہ ندی سے ال کر دریائے سندھ عمل کرتی ہوئی چملہ ندی سے ال کر دریائے سندھ عمل کرتی ہے، بعنی اسمت کے مقام پر اردوز بان کے حرف '' کی شکل اختیار کرلی ہے، یعنی اسمت کی زمین میں واخل ہونے تک بیندی پہاڑ کی دود یواروں کے درمیان چلی آرئی ہے۔ ' د 'کے درمیائی گوشے پر بینجی کرایک دیوار درایجھے ہے۔ گئی ہے اوراس نے آبادی کے لئے تھوڑا ساخلاء پیدا کر دیا ہے۔ موڑ سے گذر کر تھوڑی دور پر پھر دونوں پہاڑی دیواریں بہلے کی طرح اس قدر قریب آگئی ہیں کہ ندی کے طاس کے سواان میں کوئی فصل باتی نہیں رہا۔

اسمت کی آباد کی ای درمیانی خلامیں ہے، آبادی کے آس پاس جوز مین قدرے ہموار ہے اس میں جمیق باڑی ہوتی ہے۔ اس کے جنوبی حضے میں قبرستان ہے۔ آبادی ندی کی سطح سے تقریبا دوسوف کی بلندی پر ہوگی۔ چونکہ ندی میں زور کا پانی بہت کم آتا ہے اس کے کناروں کی زمین میں بھی مجاہدین جھتی باڑی کر لیتے ہیں اور انھوں نے پچھ کی اس کے کناروں کی زمین میں بھی مجاہدین جھتی باڑی کر لیتے ہیں اور انھوں نے پچھ کھیل والے درخت بھی لگا لیے ہیں۔ اسی حصے میں بن چکیاں بھی ہیں۔ قبرستان سے بیچے ایک میدان ہے، جہاں مجاہدین ایک زمانے میں باقاعدہ پر ٹید کیا کرتے تھے۔ غالبًا اب میں کرتے ہیں۔ ندی میں زیادہ پانی اُسوقت آتا ہے جب بارشوں کا زور ہو، ورنہ عمو مأبارہ پیدرہ گربی کے عرض میں یانی بہتا ہے، حالانکہ پوراطاس ڈیڑھ دوسوگر سے کم نہوگا۔

آبادی کی کیفیت

آبادی کے مکان بہاڑی علاقوں کی طرح درجہ بدرجہ اوپرینیچ ہیں۔ تمام مکان دوسوسے کم نہ ہوں گے۔ بیخنلف حصوں میں بے ہوئے ہیں مثلاً: ا۔ ان کسانوں کے گھر جو کھیتی باڑی کرتے ہیں اور مجاہدین میں شامل نہیں، یہ مقامی لوگ ہیں۔

۲۔ عیال دارمجابدین کے گھر۔

سو۔ مجاہدین کی ہارکیس جومختلف جماعتوں کے ناموں سےموسوم ہیں۔

۳- محور ون اور خچرون کے اصطبل_

۵۔ اسلحفاند۔

۲۔ غلّے کا گودام جس میں کمئی، جو، گندم اور جا ول کے لئے الگ الگ کوشمیاں بنی ہوئی ہیں۔

مِرْخَصْ کُوخُواه وه عام س**پابی ت**ھایار کیس کیساں مقد ار میں جنس ملتی تھی _

جانور کرمیوں میں آس پاس کی پہاڑیوں پر چرکر بیٹ بھر لیتے ہیں۔ سردیوں کے
لیے گھاس کاٹ کرخٹک کرلی جاتی ہے۔ پوری آبادی کے گردایک دیوار پھنی ہوئی ہے،
جس میں دودروازے ہیں۔ ایک بڑا دروازہ جس سے عام لوگ آتے جاتے ہیں، یہ
جنوبی حصے میں ہے۔ دوسرا چھوٹا دروازہ جوعیال دار بجاہدین کے مکانوں کے پاس کھلٹا
ہے، اس کارخ شائی سمت میں ہے۔ آبادی سے بہرلیکن اس سے متصل بڑے وروازے
کے پاس سادہ کی مجد ہے۔ اس کے سامنے ایک مکان ہے، جہاں باہر سے آنے جانے
والے مسافر تھم ہے ہیں۔ آبادی کارخ مشرق کی طرف ہے اور پشت کی طرف اس سے
پہاڑی دیوار قدر یخا بلند ہوتے ہوتے پہلی حالت پر پہنچ گئی ہے۔ شال مغرب میں
پہاڑے ساتھ ساتھ پگڈنڈی پر چلتے چلتے آبادی سے تقریبا ایک میل باہر نکل جا کیں تو
پہاڑے ساتھ ساتھ پگڈنڈی پر چلتے چلتے آبادی سے تقریبا ایک میل باہر نکل جا کیں تو
پہاڑ کے ساتھ ساتھ پگڈنڈی پر چلتے جلتے آبادی سے تقریبا ایک میل باہر نکل جا کیں تو
پہاڑ سے دو چشے نگلتے ہیں، جن کا پانی بہت اچھا ہے۔ پینے کا پانی ایک چشے سے لیتے
ہیں، دوسرے چشے پرعمو ما نہاتے ہیں، لہذا اس کے پاس مسل خانہ بنادیا گیا ہے۔
پہاڑ میں اسمست غار کو کہتے ہیں، چونکہ اس جگہ پہاڑ ہیں کئی چھوٹے بڑے۔

غار ہے ہوئے ہیں ، شایدای وجہ سے مقام کا نام اسمست پڑ گیا۔ ویسے بھی پہاڑوں کے درمیان اس مجلہ کی حیثیت ایک بڑے غار کی ہے۔ یہ پرانے اوضاع جنگ کے لحاظ سے خاصام حکم تھا۔ موجودہ زمانے کے اسلحہ نے اس کی محفوظیت باتی نہیں چھوڑی۔

مجامدين كى عام كيفيت

مولانا عبدالکریم نے بیمرکز ۱۹۰۲ء میں قائم کیا تھا۔ آج کل کی کیفیت پیش نظر رکھ کر پچاس پچین سال پہلے کے حالات کا اندازہ کرنامشکل ہے۔ بیامرمختاج بیان نہیں کہ مرکز جہاد ہی کی غرض سے قائم ہوا تھا اور اس میں جسمانی راحت کے سامان کم تھے، لیکن میں اب وہوا خاصی خوش گوار ہے۔ مجاہدین کی کوششوں سے سنریوں کی کاشت بھی ہونے گئی۔

آبادی میں ہندوستان کے تمام حصوں کے باشندے موجود تھے۔زیادہ تر مجاہدین بنگال اور بہار کے تھے۔ان لوگوں کی بے نفسی کا بیام تھا کہا ہے وطن کے متعلق کسی کو پچھے نہ بتاتے تھے بلکہ بعض اصحاب اپنے نام بھی بدل لیتے تھے تا کہ تعلقین کوکسی ذریعے سے سپچے معلوم نہ ہو سکے اور وہ اطمینان سے رضائے باری تعالیٰ کاحق ادا کرسکیس۔

ایک صاحب سے ملاقات ہوئی، جن کے والد بنگال سے آئے تھے اور سرحد میں شادی کر کی تھی، لیکن انھوں نے اولا وکوا ہے اصل وطن کے متعلق بھی پھی نہ بتایا تا کہ ان کے ول میں اہل وطن سے تعلق پیدا کرنے اور واپس جانے کا کوئی امکان نہ رہے۔ ایک بنگالی امیر کا ذکر سنا جو بہت بڑا زمیندارتھا، دومر تبہ حج کر چکا تھا۔ ہرسال ہزاروں رو پے مجاہدین کی خدمت کے لئے بھیجنا تھا۔ پھرا جا تک کھر بارچھوڑ کر اسمست پہنچ گیا۔ ہروقت مجاہدین کی خدمت کے لئے بھیجنا تھا۔ پھرا جا تک کھر بارچھوڑ کر اسمست پہنچ گیا۔ ہروقت میں دعاء اس کی زبان پر ہتی تھی کہ ایس جگہ موت آئے جہاں اجنبی افتد ارکا سابیاتک موجود نہوں، چنا نچہ وہ اسمست بی کی آغوش میں آخری نیندسویا۔

عهدامارت

مولا ناعبدالکریم کے عہد امارت میں چھوٹی جھوٹی گششیں ضرور ہوئی ہوں گی، جن
کی کوئی تفصیل ہمیں معلوم نہیں ہوسکی، لیکن اس زمانے میں ملک کے اندر خاصی سیاسی
بیداری پیدا ہوچکی تھی اور ہر قابل ذکر طبقے کی آرز ویتھی کہ ملک اجنبی تسلط کے داغ سے
پاک ہوجائے۔ گویا سیّداحمد شہید اور ان کے رفقاء ومعتقدین نے جس مقصد کا چراغ سوا
سوسال پیشتر جلایا تھا، اس کی روشنی عام ہونے لگی تھی۔ وہ کیفیت ندر ہی تھی کہ در دمندوں
کا ایک گروہ تنہا اسلامیت و آزادی کے لئے ہرتئم کی قربانیاں کرتار ہے اور عوام کو خبر ہی نہ
ہوکہ کیا ہور ہا ہے، یا جولوگ حالات سے کسی قدر واقف ہوں، ان کے قلب بھی اجنبی
عکومت کے خوف سے اس درجہ مرعوب ہو گئے ہوں کہ فدا کا رانِ راوحق و آزادی کے
مائے سے بھی دور بھا گیں۔

ہندوستان کے مسلم عوام میں جوشِ حمیت کی پہلی لہر ۱۸۹۵ء کی جنگ یونان وترکی کے دوران میں اٹھی ،ای وقت سے ہمہ گیرا حساس کا آغاز ہوا کہ یور پی طاقتیں مختلف حیلوں بہانوں سے مسلمانوں کی آخری بوی سلطنت کو نتم کر دینے کے دریے ہیں، جو کم وہیش چارسوسال سے حاصلِ خلافت ہونے کے باعث ہمہ گیر عقیدت کا مرکز چلی آتی تھی۔ نیز اس کو خدمت حرمین شریفین کی سعادت حاصل تھی۔ پھر سیاسی بیداری کا دائر ہ ہرابر پھیلٹا اور وسیع ہوتارہا۔ اس کی شدئت بھی لحظ براحتی گئی۔

پے بہ پے ایسے واقعات پیش آتے رہے، جن سے ان شعلوں کو ہواملتی رہی۔ اب صورت حال بیر نہتی کے امیر المجابدین کو مختلف ذریعوں سے کام لے کر امداد حاصل کرنی پڑتی بلکہ خود عام مسلمان حصول آزادی کے جوش میں ان مراکز سے وابستگی پیدا کرنے کے لئے کوشاں تھے، جن سے تحریک آزادی کوتقویت پہنچ سکتی تھی۔ اس سلسلے میں مجاہدین کامر کزسب سے پہلے آتا تھا،اس لئے کہوہ سواسوسال سے اسلامیت و آزادی کا علمدار چلا آتا تھا۔ نیز وہ ہندوستان سے بہت قریب تھا بلکہ اس کے حواثی پر داقع تھا۔

روابط كى توسيع

پوری تفصیل معلوم نہ ہوسکی ہیکن اس حقیقت میں کوئی شبہیں کہ ہندوستان میں مجاہدین کی امداد کے لئے متعدوا سے مرکز بن گئے جو پہلے موجود نہ ہے ،ان میں روپاور جانزاز آدمیوں کوفرا ہمی کیلئے سرگری سے کام ہوتا تھا، ان کے ذریعے سے سیکڑوں افراداور ہزاروں روپ سرحد آزاد میں پہنچتے ہے۔اس کام کی تفصیل کتاب کے اس حقے میں بیان ہوگی جو ملک کی اندرونی سرگرمیوں سے متعلق ہے۔ یہاں صرف یہ بتانا مقصود ہے کہ مولا ناعبدالکر یم کو انکے دائر ہ کار کے لحاظ سے روپ اور مجاہدوں کی قلت غالبًا بھی محسوس نہ ہوئی، اگر چہا تفاقات کی بناپر اضیں کوئی قابل ذکر کارنا مدانجام دینے کاموقع نمال سکا۔ ہوئی، اگر چہا تفاقات کی بناپر اضیں کوئی قابل ذکر کارنا مدانجام دینے کاموقع نمال سکا۔ سے ان طاقتوں کے لئے وقف تھیں جواگرینوں کے خلاف برسر پریارتھیں ۔اول اس سے ان طاقتوں کے لئے وقف تھیں جواگرینوں کے خلاف برسر پریارتھیں ۔اول اس سے ان طاقتوں کے لئے وقف تھیں جواگرینوں کے تسلط سے نجات حاصل کرنے کی مہل ترین صورت یہتی کہ وہ جنگ میں شکست کھاتے اور شکست کی تمام صیبتوں کا ہدف بنتے جن کا ہدف وہ مدت یہ یہ کہا ہم ہندگو بناتے رہے۔

دوسری وجہ بیتھی کہ سلطنت عثانیہ انگریزوں کی مخالف طاقتوں میں شامل تھی اور مسلمان سلطنت عثانیہ کو اس سلطنت عثانیہ کی نہایت بیش بہامناع سمجھتے تھے کہ وہ آخری بردی اسلامی سلطنت تھی اور اس سبب ہے بھی کہ وہ منصب خلافت کی حامل تھی اور اس سبب ہے بھی کہ وہ منصب خلافت کی حامل تھی اور اس خربی تقدیں کا درجہ حاصل تھا۔اس زمانے میں مولانا عبد الکریم کو ہندوستان کے مختلف حلقوں ہے متحکم روابط بیدا کرنے کا موقع مل گیا۔

مندوستانی لیڈروں ہے تعلّقات

مسلمانوں میں بہت سے سیاسی لیڈر بروئے کارآ کیکے تھے،جن میں ہے بعض کو بلندم كزي حيثيت حاصل تقى _ مثلاً مولا نامحم على بمولا ناشوكت على مسيح الملك حكيم اجمل خان، ڈاکٹر مختاراحمہ انصاری اور مولا نا ابوالکلام آزاد۔ باقی لیڈروں کی عام حیثیت سیاسی تقی بیکن مولا نا ابوانکلام آزاد نے''الہلال'' کے ذریعے سے قرآنی دعوت کا سلسلہ ایسے دل پذیرانداز میں شروع کیاتھا کہ وہ سیاس لیڈر ہونے کے علاوہ وقت کے بگانہ دینی رہنما بھی سمجھے جاتے تھے۔اورآ زادی وطن کی تحریک میں اُٹھیں سبقت کا وہ مقام حاصل تما، جوعوام کی نظروں میں کسی دوسرے لیڈر کو حاصل نہ تھا۔ مجاہدین کے روابط اگر چہ سب سے تھے ہمیکن مولانا ابوالکلام مخصوص دینی حیثیت کے باعث متناز ترین در ہے یر فائز تھے۔ چنانچیمولا ناعبدالکریم ہرضروری معالمے کے متعلق مولانا آزادہی سے مشورہ لیتے رہتے تتے اور جب کوئی اہم ضرورت پیش آتی تھی تواپنے خاص قاصد کو بھیج کراس کی تکیل كانتظام كراليتے تھے۔مثلاً ايك موقع برمجام ين كوقابل ڈاكٹر كي ضرورت پيش آئي ،مولا نا آ زادکو بیاطلاع ملی تو انھوں نے اپنے نیاز مندوں میں سے ایک ایسے نو جوان کو بھیج دیا جو ڈاکٹر**ی ک**قعلیم کے تمام مراحل طے کر چکا تھا،اگر جہاس نے آخری سندنہ لیتھی، چنانچہوہ مدت تک مجابدین کے پاس رہا۔ پھر کابل چلا گیا اور وہاں سے ہندوستان وابس آیا۔

وفات

مولانا عبد الكريم في ٢٥ ررئيج الاقل ١٣٣٣ه (اارفروري ١٩١٥ء) كو بروز بنج شخ مولانا عبد الكريم في ٢٥ ررئيج الاقل ١٣٣٣ه والار في اورويي دون الله من المست مين وفات پائي اورويين وفن بويئ وي ووي دون الله وقت المست على اورمولانا عبد الله ره المنظم مولانا عنايت على اورمولانا عبد الله ره تجلي منظم الله ورثم مولانا عبد الله من المندام المن المارت كاوه مقدس دورخم موليا، جس كى ابتداسيدا حد شهيد سع موئي تمى و

بعد میں جوسلسلہ شروع ہوا، وہ سیاسی اور نہ ہی لحاظ سے خاصا مختلف اور قدر نے فروتر تھا۔ خواہ یہ بچھ لیا جائے کہ جس فضا میں مولا ناعبد الکریم نے تربیت پائی تھی، وہ بعد کے لوگوں کومیسر نہ آسکی، خواہ یہ بچھ لیا جائے کہ گردو پیش کے حالات میں خاصا تغیر پیدا ہو جائے کے باعث وہ طریقے بدل بچکے تھے، جن پرمولا ناعبد الکریم اور انکے بیشر وکار بندر ہے۔

اولا داورخا ندان

مولانا عبدالكريم كاصرف أيك صاحبر اده محد صن (۱) تقا، جوان كى زندگى بى ميں فوت ہوگيا۔ جيسا كه پہلے بتايا جا چكا ہے، ان كے بوے ہمائى مولانا عبدالله كے چار صاحبر ادے تقے، جن ميں سے ايك مولانا عبدالقدوس كو ياغستان ميں انتہائى ہردلعزيزى حاصل تھى اور انھوں نے ذى قعدہ ١٣٠٠ه (جنورى ١٩٠١ء) ميں وفات پائى (٢) مولانا عبدالسقو ح بھى فوت ہو چكے تھے۔ صرف دو بنيوں كى اولا د باقى تقى۔ امان الله كے فرزندمولانا دمولانا رحمت الله اور مطبح الله كفرزندمولانا نعمت الله، آخرالذكر بالا تفاق امير منخب ہوئے۔ ان كے حالات آئندہ ابواب ميں بيان ہوں گے۔ يہاں اتنا تنادينا چاہے كہ مولانا مطبح الله (ابن مولانا عبدالله) كى بعض تصانف كا بھى علم ہوا، مثلاً:

- (۱) اربعين في ماعلى الأمير والتابعين
- (٢) احاديث استقامت بعد الجرة
 - (٣) اربعين في فضل الجهاد
- (^{ہم}) دارالفتن ہے ہجرت واجب ہے۔

⁽١) محد حسن كى تاريخ ولادت ٢٠٠١ هـ (٨٩ - ١٨٨٨ء) ب، تاريخ وفات معلوم ند بوكى_

⁽۲) ان کاایک صاحبزاده عبدانتین تماه جوایک سال بعد یعنی ۱۳۴۱ هدیش فوت موایه

يانجوال باب:

اميرنعمت الله

مسلك ميں تبديلي

جبیا که گذشته باب میں عرض کیا جا چکا ہے،امیر عبدالکریم کی وفات پر نعمت الله (بن مطیع الله بن امیر عبدالله) جماعت بجابدین کے امیر منتخب ہوئے ، جارے سامنے جو بیانات آئے ہیں،ان سے داضح ہوتا ہے کہ اسکے عہد میں انگریزی حکومت کے متعلق مسلک میں تغیررونما ہو گیا۔اس سے تمام خلص متوسلین کے دلوں میں خلش پیدا ہوگئی اور وہ بچھنے کیے کہ جماعت بجاہدین اپنے اصل فرائض ووظا نف کی راہ سے ہٹ گئی ہے۔ تبدیل مسلک کی کئی شہادتیں موجود ہیں بھٹلا ۲۱–۱۹۲۰ء میں یہاں جماعت عامدین کے بعض کارکنوں برمقد مہ قائم ہوا تھا،جس کے تفصیلی حالات آ کے چل کر پیش ہوں گے۔اس میں مختلف اصحاب نے تبدیلِ مسلک کاعذر پیش کرتے ہوئے جماعت کا كاروبارترك كردين كااعتراف كيا-ايك صاحب في خودم كزمجامدين مين بيني كرامير نعمت الله سے دریافت کیا کہ آیاواقعی آپ نے انگریزوں سے سلح کرلی ہے؟ امیر نے بتایا کسلے تونہیں کی، البتہ ایساانظام کرلیا ہے کہ انگریزی حکومت کے کارندے مجاہدین کے لئے رویبیلانے ، لے جانے والوں کو تک نہ کریں ، تاہم امیر نعمت الله کے مقربین میں سے جولوگ حقیقت ِ حال ہے آگاہ تھے،انھوں نے علیحد گی میں منتفسر کو یقین دلا دیا کہ امیرنے واقعی سلح کر لی ہے۔اس کے ثبوت میں بیرواقعہ پیش کیا گیا کہ شاہ امان اللہ

خال نے دو ہم پنجاب بہنجانے کی غرض سے بھیجے تھے۔امیر نعمت اللہ نے ایک بم اپنے

پاس رکھالیا اور دوسرے کے ارسال کا انتظام ایسے طریقے پر کیا کہ انگریزی کارکوں کو بروقت علم ہو جائے۔ چنانچہ یہ بم راستے میں پکڑا گیا اور منزلِ مقصود تک نہ پنج سکا۔ گویا ارسال کے ساتھ اس کے پکڑوانے کا انتظام خودامیر موصوف نے کیا۔ (ا)

صلح کی سرگزشت

اس سلسلے میں نہایت اہم اور متند معلومات سیّدعبدالجبار شاہ ستھانوی کی اس کتاب سے مل گئیں، جس میں انھوں نے صوات کی یا دشاہی کے حالات رقم فرمائے ہیں۔وہ کھتے ہیں کہے 191ء میں دوبڑے واقعات پیش آئے تھے۔

ا۔ مجاہدین میں سے بعض حصرات نتھیا گلی کے علاقے میں مقیم تھے،انھوں نے ریو نیو کمشنر کی کوشی سے سامان لوٹا۔والی امب نے اپنے اثر ورسوخ سے کام لے کریہ پورا سامان واپس کرادیا۔

۲۔ ای گروہ کے بعض افراد نے نتھیا گل کے علاقے میں دوگورے سپاہوں یا افسروں کو گولی سے ہلاک کر دیا۔ بیلوگ ریاست امب میں سے گذر کر جارہے تتھے۔والی ریاست نے انھیں گرفتار کر کے انگریزی حکومت کے حوالے کر دیا۔

ان واقعات کی وجہ ہے انگریزی حکومت نے مجاہدین کے خلاف دار وگیر کے انظامات بہت شخت کردیئے۔ ویسے بھی پورپ میں جنگ چھٹری ہوئی تھی۔ جرمنی اور ترکی کا ایک وفد کا بل میں بیشا تھا تا کہ امیر حبیب اللہ خان کو ہم نوا بنا کر ہندوستان پر حملہ کراد ہے۔ اس وجہ ہے بھی سرحد آزاد میں آنے جانے والے آدمیوں کی شدید گرانی ہوتی تھی۔ اس دور میں مجاہدین کے دوکارندے ہندوستان سے دس ہزاررو پے کے قریب رقم لے جاتے ہوئے کیڑے گریا۔

⁽۱) پہ ۱۹۴۱ء کے مقد مے کے طزم مستری ابراہیم وزیرآ بادی کا بیان تھا، جو تحقیق احوال کے لئے اسمست سکتے تھے۔

⁽٢) رولك ربورك من مرقوم بكرمارج ١٩١٤ من ووركالي سلمان كرفار باتى عاشيدا كلي سخد ب

بیرقم بحق سرکار صبط ہوئی اور کارند ہے گرفتار کر لیے گئے،اس واقعے کاطبعی نتیجہ یہی ہوسکتا تھا کہ جماعت مجاہدین میں انگریزوں کے خلاف بخت اشتعال پیدا ہوتا۔ چنانچہ انھوں نے انگریزی علاقے پر پورشوں کا فیصلہ کرلیا۔سا واست ستھانہ سے ان کے دیم پینہ تعلقات تھے،لہذا اس باب میں سیّد عبد الجبار شاہ سے بھی مشورہ ضروری سمجھا گیا، چنانچہ امیر فعمت اللہ نے اس غرض سے مولوی عبد الو باب سندھی کوصوات بھیج دیا۔سیّد عبد الجبار شاہ نے فرمایا کہ اعتدال کا مسلک نہ چھوڑ ناچا ہے۔

میں ملاکنڈ ایجنسی کی معرفت اصل حقیقت گورنمنٹ برطانیہ پرظا ہر کردیتا ہوں، چونکہ سرجارج (۱) روس کمیل مجھ سے ذاتی طور پر ناراض ہے، البذا جب میں اپنی طرف سے یہ حالات سادوں، تب آپ لوگ نواب سرصا جزادہ عبدالقیوم پراپنی طرف سے ایسی ہی مشورہ طلمی کا اظہار کریں ۔اصلیت سے وہ واقف ہو چکا ہوگا، اس لئے ان کی وساطت کوردنہ کرےگا۔ آپ کے قیدیوں اوررویے کو واپس دیدےگا۔ (۲)

سيدعبدالجبارشاه كامكتوب

چنانچیسیدعبدالببارشاہ نے بہطورخودایک مفصل خطاسشنٹ پولٹیکل ایجنٹ چک مختصف خطاسشنٹ پولٹیکل ایجنٹ چک مختصفی کا بقیہ مائیں ہے۔ مختصفی کا بقیہ مائیں ہے۔ یہ باہدین میں شریک سے ایکن انھیں اپنے اپنے اپنے ضلعے سرمایہ فراہم کرنے کے لئے ہندوستان بھیجو یا گیا تھا۔

(سدیش ممینی کی ربورث ۱۹۱۸ء انگریزی ص ۱۷۵)

(۱) سیاس زمانے میں صوبہ سرحد کا چیف کمشز تھا۔ اے پٹھانوں میں بہت ہرد تعزیزی عاصل تھی اور انگریزی حکومت مرحدی معاملات میں اس کی رائے پڑ کمل کرتی تھی ۔ سیّر عبد الجبارشاہ کامد عابی تھا کہ دوس کمیل صوات کی بادشاہ ہی ۔ سیّط میں میرا مخالف ہے ماکر براو راست اے تکھوں گا تو وہ جوش مخالفت کے باعث میری رائے کے خلاف ممل سلیط میں میرا مخالف ہے میں کا دوسا جزادہ عبدالقیوم کی طرف ہے بھی اس کی تاکید ہوگی تو روس کمیل مان جائے گا۔

(٣) شهادت الثقلين ،حقه دوم جلمي نسخ ص ١٩٨٧_

درہ کے نام بھیجا، جس میں بجاہدین کی پوری سرگزشت اختصار آبیان کی۔ ساتھ ہی بتایا کہ زمانہ نازک ہے، ایسے اسباب موجود ہیں جو مجاہدین کو آباد ہ بنگ کرنے کے محرک ہوسکتے ہیں اورا گر جنگ چیزگئ تو اندیشہ ہے کہ دوسرے عناصر بھی ساتھ ہوجا کیں گاور حکومت کے لئے سرحد میں ایک نئی مصیبت کھڑی ہوجائے گے۔ مجاہدین کا گزارہ اسی رقم پر ہے جو ہندوستان سے وقا فو قانی بینچی رہتی ہے۔ بیرقم چھن چکی تھی، وہ لاز ما برا تھیختہ ہوکر مخالفا نہ اقد المات کریں گے اور نفیرِ عام کی صورت میں ہزاروں آ دمی اور ان کے ساتھ ہو جا کمیں گے۔ مناسب یہی ہے کہ ان کی ضبط شدہ رقم واپس کردی جائے اور ان کے ہوجا کیل کردی جائے اور ان کے قیدی چھوڑ دیے جا کیں۔ بیمشورہ صاحبز ادہ سرعبدالقیوم کی طرف سے بھی روس کیل کے یاس پیش ہوا۔ سیّرعبدالعبار شاہ فرماتے ہیں۔

میں نے ۱۲رجون ۱۹۱۵ء کو یتر کیک کی تھی اور معلوم نہیں کتنے ہفتے یا مہینے بعدوہ سارے مجاہد قیدی بھی رہا ہو گئے اور صلح کا وہی مجوزہ وعدہ بھی ہوگیا۔ صبط شدہ روپے کے علاوہ غالبًا دس ہزار روپیہ سالانہ بھی روس کیپل نے امیر نعت اللہ کودلوایا۔ (1)

صحيح صورت ِ حال

ان تفصیلات سے سب کو اتفاق ہو یا نہ ہو، کیکن اس میں شبہ ہیں کہ مصالحت یا مفاہمت کی کوئی نہ کوئی صورت پیدا ہو چکی تھی۔اغلب ہے امیر نعمت اللہ کا خیال یہی ہو کہ اس طرح ہندوستان سے مالی امداد حاصل کرنے میں کوئی دفت پیش نہ آئے گی اور جو مجاہدین ان کے پاس تھے،وہ قلت تعداد اور بے سروسا مانی کے عالم میں کوئی ہڑا کارنامہ انجام نہ دے سکتے تھے، ہوسکتا ہے بیرائے میں خلوص پر مبنی ہو، تا ہم ظاہر ہے کہ اصل معاملہ مجاہدین کی تعداد یا سروسامان کا نہ تھا، پیشتر جو دّور گذر بھے تھے،ان میں بھی معاملہ مجاہدین کی تعداد یا سروسامان کا نہ تھا، پیشتر جو دّور گذر بھے تھے،ان میں بھی

⁽۱) شهادت الثقلين حصد دوم قلمي نسخص ٢٩٧٧ -١٩٥٨ م

جماعت ِمجاہدین بہلحاظ شار بارہ چودہ سوسے بھی نہ بڑھی تھی اورا ننے جانباز بہتر سے بہتر سروسامان کے ساتھ بھی ہندوستان کے دامن سے تکومی کا دھبّہ نہ دھو سکتے تھے۔

اس معاملے کا دوسرا پہلویہ تھا کہ جماعت بجاہدین ایک سوسال سے ایک خاص مقصد اور خاص نصب العین کی حامل چلی آتی تھی۔ کروڑوں کی آبادی کے اس وسیع جنگل میں جوکراکورم سے راس کماری تک پھیلا ہوا تھا، جماعت بجاہدین کے سواکون ساگروہ تھا جواجنی حکومت کی پر چھا کمیں ہے بھی بیزارو تنفر ہوتا ؟ امیر نعمت اللہ کے مجوزہ انتظام سے مجاہدین کے لئے اک گونہ سہولت کا بندوبست تو ضرور ہوگیا ہوگا،لیکن اس طرح اس محاہدین کی آبروکیا باتی رہ سکتی تھی جس کے لئے ہزاروں غیور جانباز سرحدی کو ہستانوں فصب العین کی آبروکیا باتی رہ سکتی تھی جس کے لئے ہزاروں نے ور جانباز سرحدی کو ہستانوں میں اپنا خون حیات بے در لیخ بہاتے رہے۔ ہزاروں نے اہل وعیال اور اعزہ وا قارب سے دائمی مفارقت گواراکی اور ہندوستان کے طول وعرض سے بے شاررو پہیے ہرسال سرحد پہنچتارہا۔

مركز چركنڈ

امیر عبدالکریم اورامیر نعمت اللہ کے عہد میں جماعت بجابدین کے لئے ملک بھرکے اندروسیع پیانے پرکام ہوا۔ اس عہد میں میرے اندازے کے مطابق پنجاب کو نمایاں تقدم حاصل رہا، جو مجابدین کے علاقے سے بہت قریب تھا، حالا نکہ پہلے بہاں سرگری ممل کا کوئی خاص شوت نہیں ماتا، اس زمانے میں مولانا عبدالرحیم، جو سرحد آزاد میں محمد بشیر کے اختیاری نام سے مشہور عاکم ہوئے، اسمست بنچے اورانھوں نے پورے یاغستان میں مرکز اسمست کے ماتحت شاخیس قائم کرنے کا قطعی فیصلہ کرلیا۔ چنا نچے سرحد شمیر سے وزیرستان تک ہرموز وں مقام پرچھوٹے جھوٹے مرکز قائم کردیے گئے، جن کے مجابدین کا وظیفہ بین تھا کہ آس یاس کے قبائل میں جہاد کی روح تازہ رکھیں اور وقا فو قا آنگریزی کا وظیفہ بینھا کہ آس یاس کے قبائل میں جہاد کی روح تازہ رکھیں اور وقا فو قا آنگریزی

علاقوں پر حملے کراتے رہیں۔ اگر چہان حملوں ہے کوئی بڑا مقصد حاصل نہ ہوسکتا تھا، تا ہم ایک ہدیمی فائدے ہے کسی کوا ٹکارنہیں ہوسکتا اور وہ یہ کہ انگریزی حکومت جنگ بورپ کے محاذوں کے علاوہ سرحد پر بھی تو جہ جمائے رکھنے کے لئے مجبور ہوتی ، نیز ان حملوں سے ہندوستان کی انقلانی تحریک کو یقینا تقویت پہنچتی ۔

ان میں سے چمرکنڈ کا مرکز باتی رہ گیا، جے مولا نامحمد بشیر کی وجہ سے الیی شہرت حاصل ہوئی کہ جماعت مجاہدین کا اصل مرکز بھی اس کے سامنے ماند پڑ گیا۔اسمست کا نام شاید گنتی کے اصحاب کومعلوم ہو، چمرکنڈ کا نام ہرا یک کی زبان پرتھا۔اس مرکز کے مفضل حالات آئندہ بیان ہوں گے۔

امیر نعمت الله بی کے زمانے میں لا ہور کے کالجوں میں سے طلبہ کی ایک جماعت مرکز مجاہدین میں پینچی ، وہ سب سے پہلے افغانستان گئے۔ پھر بعض وہاں سے روس یاتر کی گئے ، بعض واپس آ کر جماعت مجاہدین میں شامل ہو گئے۔ان کے مفصل حالات موقع پر لکھے جائیں گے۔ نیز سرحد کے طلبہ وہاں گئے۔ان کے علاوہ عام مہاجرین کی تعداد چار یا پنچ سوسے کم نہ ہوگی ، جونہ سب کے سب وہاں رہے اور نہ عہد ہجرت نباہ سکے۔

مختلف لزائيان

امیر نعت اللہ کے عہد میں بہت ی جھوٹی جھوٹی لڑائیاں بھی ہوئیں، جن میں سے رستم اور چک درہ کی لڑائیاں خاص طور پر قابلِ ذکر ہیں۔ رستم کی لڑائیوں کا سلسلہ حاجی صاحب تر نگ زئی کی تحریک پر شروع ہوا تھا اور مجاہدین نے ان میں سرگرم حصہ لیا تھا۔ (۱) ان کی خبریں جماعت کی طرف سے بلیٹن کی شکل میں شائع ہوتی رہیں۔ ایک بلیٹن اتفاق سے جھے لگیا، جس کے اقتباسات ذیل میں درج ہیں۔

⁽۱) مولوی عبدالرزاق کے بیان سے متر شح ہوا کدان اڑا ئیوں میں سب سے براحصہ واقعی مجاہرین کا تھا۔

ا۔ ۵رشوال ۱۳۳۳ه (۱۱راگست ۱۹۱۵ء) کو بجابدین بندوستانی سرحد برطانیہ میں گس گئے اور ایک پہاڑی پرمورچہ بندی کر کے مقیم ہوئے۔ یہ پہاڑی موضع سرخوئی سے ایک میل کے قریب واقع ہے اور تیرہ میل سلطنت برطانیہ کے اندر۔اس مقام سے قلعدر سم اور کیمپ آٹھ میل پر ہیں اور دن کونظر آتے ہیں۔

۲۔ ۹ رشوال ۱۳۳۳ھ (۲۰ راگست ۱۹۱۵ء) کی شب کو مجاہدین نے کیمپ رستم پر جملہ کیا۔ کیمپ سے برابر مدافعا نہ تو پول اور بندوقوں کے فیر ہوتے رہے ۔....رستم کے باشندوں نے خبر دی کہ برطانیہ کے زخمی سولہ ڈولیوں ٹیں مردان کوروانہ کیے گئے۔گھوڑ دں ،اونٹوں اور خچروں کا بہت نقصان ہوا۔

س۔ ۱۱رشوال ۱۳۳۳ھ(۲۲راگست ۱۹۱۵ء) کی شب کو مجاہدین نے بھر حملہ کیا۔ مدافعت میں بہت سرگرمی سے تو پیں اور بندوقیس تمام رات جلتی رہیں۔ رستم کے باشندوں کی زبانی معلوم ہوا کہ جالیس ڈولیاں زخمی سپاہیوں کی مردان گئیں۔

۳۔ ۱۹۱۵ رشوال ۱۳۳۳ رو (۲۳ راگست ۱۹۱۵ء) کی شب کومجاہدین نے چرحملہ کیا اور جاہا کہ کیمپ میں گھس جا نمیں الیکن چاروں جانب تاروں کا جنگلا لگا ہواتھا اور خندقیں کھودی گئی تھیں ،اس شب کی جنگ میں ایک انگریز افسر مارا گیا۔

۵۔ ۱۳۳۳ه (۲۵ راگست ۱۹۱۵ء) تمام رات بارش ہوتی رہی، نو بج دن کو برطانیہ نے پانچ ہزار فوج ، دورسالوں اوراکیس تو پوں کے ساتھ اچا تک تین جانب ہے مجاہدین پر حملہ کیا۔ مجاہدین نے جانبین کی پہاڑیاں پکڑلیں اور گولہ باری ہونے گی۔ نو بج سے مج چار بج گئے۔ آخر میں ایک کرنیل مارا گیا۔ فوج فرار ہوکر قلعہ رستم میں پناہ گزیں ہوئی۔ اس جنگ میں کوئی اہلِ ملک (مقامی) شریک نہ تھا۔ مجاہدین کے وس شہید اور چھ زخی ہوئے، برطانیہ کے تقریباً چھسومقتول اور زخمی ہوئے۔

اس سلیلے کے تمام بلوین ہاتھ آجاتے تو سرحدی الرائیوں کے متعلق ایک مفصل و متنددستاویز تیار ہوجاتی۔

امير کی شہادت

امیر نعمت اللہ نے ۱۹۱۷ء میں انگریزوں ہے اک گونہ مصالحت کا جوانتظام کرلیا تھا،
اس کی وجہ سے صرف مجاہدین ہی میں افسر دگی پیدا نہ ہوئی بلکہ ہندوستان کے اندر جولوگ فراہمی زرا ور تیاری محاہدین میں گئے ہوئے تھے، ان میں سے بھی اکثر اس ورجہ متاثر ہوئے کہ انھوں نے اعانت سے وست کشی اختیار کرلی مجاہدین میں اکثر لوگ ایسے تھے جو نہ صرف اعزہ واقارب سے منقطع ہوئے تھے بلکہ دنیوی اظمینان و فارغ البالی کی امیدوں کے بھی تمام چراغ گل کر چکے تھے۔

جب انھیں امیر کی مصالحانہ روش میں کی خوشی آیند تغیر کی تو قع نہ رہی تو ایک نوجوان نے موصوف کوختم کر دینے کا فیصلہ کر لیا۔ اس کا خیال بھینا یہ ہوگا کہ یہ رکاوٹ دور ہو جائے گی تو جہاد کیلئے بہتر بین صور تیں نکل آئیں گی۔ اس نو جوان کا اصل نام عبدالرشید اور اختیاری نام محمد بوسف تھا۔ وہ ایک خوش حال گھرانے کا چشم و چراغ تھا اور اس کے واللہ غالبًا ضلع مردان میں مدارس کے انسکٹر تھے۔ محمد یوسف نے شاید بی۔ اے تک تعلیم پائی تھی۔ وہ ان چودہ طلبہ میں سے تھا جو لا ہور سے اسمست پہنچے تھے۔ پہلے اپنے رفقاء کے ہمراہ کا بل چلا گیا، جہاں امیر حبیب اللہ خاں کی حکومت نے ان سب کو گرفتار کرے قید میں ذال دیا۔ پھروہ رہا ہوا تو مولا نامجہ بشیرا سے کا بل سے اپنے ساتھ یا غستان میں لے میں ذال دیا۔ پھروہ رہا ہوا تو مولا نامجہ بشیرا سے کا بل سے اپنے ساتھ یا غستان میں لے میں ذال دیا۔ پھروہ رہا ہوا تو مولا نامجہ بشیرا سے کا بل سے اپنے ساتھ یا غستان میں کے ساتھ دوروں

یں شریک رہا، پھر امیر نعمت اللہ نے اسے اپنا معتد خصوصی بنا لیاراس نے بتاری ۲۲ رشعبان ۱۹۳۹ھ (۱۹۲۸ء) بردز یک شنبہ چاشت کے وقت امیر نعمت اللہ کوشہید کر ڈالا ۔ تفصیل یہ بتائی گئی کہ امیر مرحوم اپنے مردانہ مکان کی حجبت پر بیٹھے تھے بقیر کے سلسلے میں کوئی ہدایت دینے کے لئے اٹھے اور ایک طرف کو آگے آگے چل پڑے۔ یوسف ان کے پیچھے تھا۔ اس نے لکا کیک پستول نکالا اور امیر کے سر پر دویا تمن مرتبہ فائر کیے۔ امیر گرے اور اس وقت جال بحق ہوگئے۔ شہادت کے وقت ان کی عمر پینتا لیس سال کی تھی بینتا لیس سال کی تھی بینتا لیس سال کی تھی۔

یوسف بہاطمینان نیجے اترار کچھنہیں کہا جا سکتا کہ کیا کرنا جاہتا تھا۔ آیا اس کی خواہش بیتھی کہ جماعت کواکٹھا کرکے نئے امیر کے انتخاب و بیعت کا انتظام کرائے یاوہ اسمت سے نکل کرکمی ایسے علاقے میں پہنچ جانا جاہتا تھا، جہاں اس پر ہاتھ نہ ڈالا جاسکتا۔ لیکن مکان کے حن میں مختلف لوگوں نے فائروں ہے اسے آ نافانا فتم کردیا۔

مولا نامحمه بشير كے متعلق شبهات

مولا نامحمہ بشیراس وقت چرکنڈ کی طرف سرحد آزاد میں تنظیم کا کام کررہے تھے۔
چونکہ انھیں محمہ یوسف سے خصوصی تعلق تھا، اس لئے جماعت کے محتلف آدمیوں کے دل
میں سو بطن پیدا ہوا کہ دہی واقعہ قتل کے حقیقی محرک ہیں۔ انھیں امیر مرحوم کی فاتحہ خوانی
اور نئے امیر کی بیعت کے سلسلے میں اسمست آنا تھا۔ خیر خواہوں نے مشورہ دیا کہ نہ جا کیں
مبادا ان پر خواہ مخواہ قتل کا مقدمہ قائم کر دیا جائے۔ انھوں نے فر مایا کہ نہ اپنے متعلق سوء
طن کار وادار ہوسکتا ہوں اور نہ آپ لوگوں کے مشورے پڑمل کر کے سو بطن کو یقین کے
در جے پر پہنچادینا میرے لئے مناسب ہے۔ چنانچہ وہ بے باکا نہ اسمست گئے اور مطالبہ
کیا کہ سب سے پہلے بوری چھان بین کر لی جائے۔ اس طرح انھوں نے خود محقیقاتی

کمیٹی مقرر کرائی۔ جب وہ ہر لحاظ سے بری الذمہ ثابت ہوئے تو سے امیر کی بیعت ک۔ خودمولا نامحد بشیرنے کابل میں اس واقعے کا ذکر کرتے ہوئے مجھے بتایا کہ بوسف بہت ہی جوشیلانو جوان تھا۔اسلامیت اورآ زادی کےعشق میں وہ ہرقر پانی کے لئے تن تنہا تیارر ہتا تھا۔بعض کارکنانِ جماعت نے امیرصاحب کے حالات اس کے سامنے ایسے انداز میں بیان کیے کہ اسے اشتعال آحمیا۔ مولانا فرماتے تھے کہ پوسف کے سامنے صورت حال کو اشتعال انگیز انداز میں پیش کرنے والے اصحاب میں ایک مولوی فضل الہی بھی تھے۔معتدخصوص کی حیثیت میں اسے غالبًا ایسی با تیں معلوم ہوگئی ہوں گی ،جن ہے دوسروں کے بیانات کی تقیدیق ہوتی تھی۔مولوی عبیداللہ نے ۱۹۲۱ء کے مقد ہے میں،جس کا ذکرا ٓگے آئے گا، بیان کیا تھا کہ اکتوبریا نومبر ۱۹۱۹ء میں مولوی فضل الہی کے مکان بروز برآ باد میں انگریزوں ہے امیرصاحب کی سلح کاذ کر ہواتھا، نیزیہ کہ جو چندہ بھیجا جاتا ہے، مجاہدین برصرف نہیں ہوتا، پھرخود مولوی عبید الله اسمست مینیج اور امیر صاحب ہے بیسوال کیا۔انھوں نے اعتراف کیا،صرف ظاہرداری کی صلح کی ہے تا کہ جو چندہ ہندوستان سے آتا ہے اس میں رکاوٹ پیدا نہ ہو،کیکن امیر کا تب (سکریٹری) لیٹی پوسف نے علیحد گی میں بتایا کدامیر کا یہ بیان سیح نہیں ، دراصل اس نے صلح کر لی ہے ، عیش میں بڑ گیا ہے اور جہاد کا کام ترک کردیا ہے۔

غضے اور رنج کا ہوا سبب بیتھا کہ مسلحت آمیز مصالحت کے باعث ندصرف جہاد کے کام میں رکاوٹ پیدا ہوئی تھی بلکہ ہندوستان کے اندرنظامِ اعانت کا سلسلہ بھی درہم ہورہا تھا۔ بہر حال حقیق اسباب خواہ کچھ ہوں اس رتجدہ صورت حال میں امیر صاحب کی جان بھی گئی، جو بہت ہو ہے کارناموں کی صلاحیت رکھتے تھے اور ایک پرخلوص نوجوان کی زندگی بھی ختم ہوئی جو ملت کے اہم مقاصد میں بدر جہا بہتر خد مات کا موجب بن سکتا تھا۔

امیرصاحب کے شائل وخصائل

مولوی محمطی مرحوم قصوری کابل سے نکل کر یا عنتان چلے گئے تھے تو چرکنڈ ہوتے ہوئے اسمت بھی پہنچ تھے۔ انھوں نے امیر نعمت اللہ کو بہت قریب سے دیکھا تھا ، لکھتے ہیں:

مرحوم ایک بھاری بھر کم ،خوب صورت ،وجیہ اور دراز قامت جوان تھے۔ گفتگو ہیں نہایت شائستہ ،تین اور سنجیدہ۔ بڑے زیرک اور مردم شناس آدمی تھے۔ ان کے خطبات خاصے دل نشین ہوتے تھے ،خوب صورت برشی ہوئے اور کی تھے۔ ان کے خطبات خاصے دل نشین ہوتے تھے ،خوب صورت برشی کا قدیم ہوئی ڈاڑھی ،سر پرخوب سھرے پے رکھتے تھے۔ لباس پٹنداور یو، پی کا قدیم غرارہ لمبااور تکمہدارصدری پہنتے تھے۔ سر پر عمامہاور ہاتھ میں نفیس چھڑی۔ (۱) مولوی صاحب فرماتے ہیں کہ مسلمان امراء ومشائخ کی طرح وہ عورتوں کے بے صد شوقین تھے۔ ایک حافظ صاحب کو اپنی جگہ امام مقرر کر رکھا تھا۔ بھی بھار مہد ہیں حد شوقین تھے۔ ایک حافظ صاحب کو اپنی جگہ امام مقرد کر رکھا تھا۔ بھی بھار مہد ہیں تشریف لاتے تو ایک بندوق بردار امیر صاحب کو زنان خانے میں پہنچا کروا پس آتا اور خود نماز اور خود نماز اور کی تھے۔ کہ ایک کے اور خود نماز اور کی تاز دارا کرتا۔ (۲)

بعض دوسر مے خلص کارکنوں کے بیانات سے بھی ان امور کی تقعد بی ہوتی ہے (۳)
لیکن میر بھی واقعہ ہے کہ امیر نتمت اللہ بڑے اچھے خصائص کے حامل تھے۔ انگریزوں سے
مصالحت کے باعث رائے عامہ میں ان کے متعلق انقلاب پیدا ہوا، ورندامید تھی کہ ان کا
عہد جماعت کے لئے بہت خوش گوار ہوتا۔

عافظ عنايت الله صاحب (خطيب جامعه الل حديث مجرات) اكتوبر ١٩١٥ء مين

⁽۱) مشاهدات کابل و یاغستان ص ۱۰۸ (۲) مشاهدات کابل و یاغستان ص ۱۰۸

⁽٣) مثلاده بانات جو منتقب اصحاب في ١٩٢١ و كمقد مع يمن ديد ان كاذكرة محرة عام كا

اسمست گئے تھے اور عیدِ قربان کی نماز امیر نعمت الله کی افتدا میں پڑھی تھی۔ انھوں نے دوبا تیں بطور خاص محسوں کیں ، اقل یہ کہ مرہم پٹ کے لئے کوئی قابلِ ذکر انتظام موجود نہ تھا، دوسرے یہ کہ خاندانِ امارت کے سب اصحاب متابل تھے، مقامی لوگ بھی شادیاں کر لیتے تھے، کین ہندوستانی مجاہدین عموماً تجرد کی زندگی بسر کرتے۔ حافظ صاحب نے ان دونوں باتوں کے متعلق امیر صاحب کو توجہ دلائی ، گرکوئی اطمینان پخش جواب نہ ملا۔

اولاد

امیر نعت الله کی شادی ان کے عمحتر ممولا نا امان الله کی صاحبزادی عکیمن بانو ہے ہوئی تھی ، جو ان کے جانشین امیر رحمت الله کی حقیق بہن تھی۔ تین صاحبزاد بے یادگار چھوڑ ہے ، برکت الله ، صبغت الله اور آیات الله ۔ امیر کی وفات کے وقت تینول بہت چھوٹے تھے۔ بوے صاحبزاد بے برکت الله کا نکاح امیر رحمت الله کی وختر رضیہ ہے ہوا ، ان کے بوے بیٹے کا نام نور الهدی ہے۔ آھے چل کرجماعت بجامدین نے ''الحرض' اور ''ادر ''الجامد'' کے نام ہورالهدی ہے۔ آھے چل کرجماعت بجامدین کا نام بطور مدیر کھاجا تا تھا۔

چھٹاباب:

کابل میں ترکی اور جرمن وفیر

جرمنوں کی امیدیں

جرمنوں میں جب سے بی خیال بیدا ہوا کہ وہ سلطنت برطانیہ کی جگہ لے لیں اور اپنے تجارتی وسیا کی روابط کو عالمگیر بنادیں ،اس وقت سے وہ ہندوستان کی سیاسی سرگرمیوں کوجمی اپنی خاص امید گاہ سیجھنے لگے تھے۔تقسیم بنگال کے بعد یہاں وہشت انگیزی کا خاصا خطرناک وور شروع ہو گیا تھا۔اسے چین نظر رکھتے ہوئے جرمنی کے مشہور جرنیل اور مصقف فان برن ہارڈی نے اواء میں لکھا تھا کہ امید ہے، بنگال کے ہندوجن کی سیاسی مصقف فان برن ہارڈی نے اواء میں لکھا تھا کہ امید ہے، بنگال کے ہندوجن کی سیاسی سرگرمیاں عالم آشکارا ہیں،اپنے مسلمان ہم وطنوں سے اتحاد کر لیں۔ان عناصر کے اتحاد سے ایک ایسا خطرہ صورت پذیر ہوجائیگا جوانگلستان کے تسلط کی بنیادیں ہلاسکتا ہے۔

حریت برست ہندوستانیوں نے امریکہ اور پورپ کے مختلف ملکوں میں بیٹھ کر قراد گی وطن کے لئے کوششیں شروع کردی تھیں۔ان میں سے لالہ ہردیال ایم۔اے ک

آزادگ وطن کے لئے کوششیں شروع کردی تھیں۔ان میں سے لالہ ہردیال ایم۔اے کی ازادگ وطن کے لئے کوششیں شروع کردی تھیں۔ان میں سے لالہ ہردیال ایم۔اے کی مندر پارٹی''کو خاصی شہرت حاصل ہوئی۔ پہلی جنگ پورپ کے آغاز پرایک شخص چمپا کرمن ہلآئے زیورچ میں مقیم تھا۔اس نے جرمنی میں ایک انجمن قائم کی،جس کا نام''انڈین نیشنل پارٹی''رکھا۔لالہ ہردیال ایم۔اے،مولانا برکت اللہ بجو پالی، ڈاکٹر تارک ناتھ داس، چندرا کے چکرورتی، ہرمبالال گیتا وغیرہ اس میں شریک ہوگئے۔ یہ جرمنی کی وزارتِ خارجہ سے وابستہ تھے۔ان کی سرگرمیوں کے مفضل حالات پیش نظر موضوع سے خارج ہیں۔

ہندوستان میں ہنگاہے کی تدبیریں

پہلی جنگ بورپ کے دوران میں جرمنوں کی خواہش یہ تھی کہ کسی تدبیر سے ہندوستان میں ہنگامہ بیا کر دیں تا کہ انگریز ہندوستان سے باطمینان سیاہ بھرتی کرکے ہیرونی محاذ وں پر بھیجنے کے بجائے خود وہاں کے ہنگاہے میں الجھ جا کیں۔اس مقصد کے لئے دومنصوبے مرتب کیے گئے۔ایک بیدکہ ان بنگالیوں کوزیادہ سے زیادہ اسلحہ پہنچادیے جا کیں جو دہشت انگیز سرگرمیوں میں مشغول تھے۔ بیمو ما ہندو تھے اور اِن کا اثر درسون بھی ہندوؤں ہی تک محدود تھا۔ دوسرامنصوب بیتھا کہ افغانستان سے ہندوستان پر مملہ کرادیں نیزیا عنتانی قبائل کے لئے فوجی تربیت اور اسلحہ کا انتظام کردیں۔اس طرح ہندوستان کی شالی ومغربی سرحد برخوز مربی شکل کی طرح ڈال دیں۔

بنگال میں اسلحہ پہنچانے کی کوشش

بنگال میں اسلحہ پہنچانے کے منصوبے کولبائی عمل پہنانے کا کام بناویہ، بنگاک اور شنگھائی کے جرمن تو نصلوں سے متعلق تھا۔ چنا نچے انھوں نے فیصلہ کیا کہ ایک جہاز میں تمیں ہزار بندوقیں، بے شار کارتو س اور دولا کھروپیہ بھیجا جائے اور یہ جہاز طبح بنگال کے ان جزیروں میں ننگر انداز ہو، جونوا کھالی کے قریب میکھنا دریا کے دہانے پرواقع ہیں۔ بنگالیوں کی انقلائی پارٹی نے فیصلہ کرلیا کہ جہاز کے پہنچتے ہی ہتھیار اپنے کارکنوں میں تقسیم کردیں۔ ان ریلوں کے تمام کیل تو ژویں، جو مختلف صوبوں سے بنگال پہنچتی تھیں۔ اس طرح بنگال کو باقی ہندوستان سے منقطع کر کے اس پرقابض ہوجا کیں۔ پھر جرمنی سے فوجوں اور اسلحہ کی بہم رسانی با قاعدہ شروع ہوجائے۔

جرمنوں نے عالبًا تین مرتبہ اسلحہ پہنچانے کی کوشش کی ہلیکن سوءِ اتفاق سے متیوں کوششیں نا کام رہیں۔اس اثناء میں سازش کا سراغ مل گیا اور وہ بنگالی گرفآر ہو گئے یا مارے گئے، جو اسلحہ اتر وانے کے ذمتہ دار تھے۔انگریزی حکومت نے بورے ساحلی علاقے میں ایسے انتظامات کردیے کہ کوئی جہاز ہندوستان تک پہنچ ہی ندسکتا تھا۔ایک جہاز میں تھوڑ اساسامان آیا، ووراستے ہی میں پکڑا گیا۔(۱)

تنجره

بیمنصوبہ بلی افر تجویز بھی خام تھا اور اس کے لئے جو تنظیمات کی گئیں وہ بھی سراسر ناقص تھیں۔ سمندروں پر برطانوی بیڑے کو جو تسلّط حاصل تھا اسے پیش نظر رکھتے ہوئے اسلحہ سے بھراہوا جہاز پہنچا یا ہی نہ جاسکتا تھا۔ اگر جہاز پہنچ بھی جاتا تو خفیہ خفیہ اسلحہ کی اتن بری مقدارا تاری نہ جاسکتی تھی۔ منصوبہ کا میاب ہوجا تا تو جب بھی بیس تیس ہزار بندوقوں اور ریوالوروں سے بچھ نہ بنتا۔ سرسری ہنگا مہتو ضرور پیدا کیا جاسکتی تھا، لیکن بیامید نہ ہوسکتی تھی کہ مظم جنگ کرنے والوں کی بڑی جماعت مہیّا کی جاسکے گی۔ بشہا نقلا بیوں میں بڑے برے جانباز موجود تھے، لیکن ان کے نام انگلیوں پر عنے جاسکتے تھے۔ آخیس میں بڑے بوئے جانباز زیادہ تعداد میں نہ ل سکتے تھے، حقیقت یہ ہے کہ جرمنوں پر اضطرار کی حالت طاری تھی اور وہ نتائج کی طرف سے آنکھیں بندکر کے صرف اس کوشش میں گئے میدانوں حالت طاری تھی اور وہ نتائج کی طرف سے آنکھیں بندکر کے صرف اس کوشش میں گئے سے دوسری طرف منتقل ہو غرض یہ منصوبہ اصلا بھی غیر موثر تھا اور اسے پورا کرنے کے سے دوسری طرف منتقل ہو غرض یہ منصوبہ اصلا بھی غیر موثر تھا اور اسے پورا کرنے کے سے دوسری طرف منتقل ہو غرض یہ منصوبہ اصلا بھی غیر موثر تھا اور اسے پورا کرنے کے سے دوسری طرف شتقل ہو غرض یہ منصوبہ اصلا بھی غیر موثر تھا اور اسے پورا کرنے کے لیے تھیک تھیک کوششیں بھی نہ ہو کیاں۔

ترکی اور جرمن مثن

اس سے بدر جہازیادہ معقول وموقر منصوبدہ ہی کا تعلق افغانستان اور یاغستان (ا) برمن کوشنول کی تنصیات کے لئے ملاحظہ ہوسدیش کمیٹی کی دبورٹ م ۱۱۹–۱۲۵ سیعام طور پردولٹ دبورث کمیٹی کی دبورٹ میں ۱۱۹–۱۲۵ سیعام طور پردولٹ دبورث کمیٹی کی دائورٹ میں مشہور ہے۔

سے تھا۔اسے کا میاب بنانے کے لئے جرمنوں اور ترکوں کا ایک وفد کا بل پہنچا۔فان ہمن میں اور تیصر جرمنی کا نمائندہ تھا۔کاظم بے ترکی وفد کا تاکہ تھا، جے سلطان محمد خامس عثانی نے بحشیت خلیفۃ المسلمین ابنا نمائندہ بنا کر بھیجا تھا۔ان کے ساتھ کچھ ہندوستانی اصحاب بھی تھے،مثلاً راجا مہندر پرتاپ،مولاتا برکت اللہ بھو پالی (۱) کچھ فوجی افسر بھی تھے،مثلاً راجا مہندر پرتاپ،مولاتا برکت اللہ بھو پالی (۱) کچھ فوجی افسر بھی تھے،جنمیں یا غستان میں عسکری تربیت کی غرض برکت اللہ بھو پالی (۱) کچھ فوجی افسر وں میں ترکوں کے علاوہ پھان بھی تھے، جوفرانس کے جساتھ لے لیا گیا تھا۔فوجی افسر وں میں ترکوں کے علاوہ پھان بھی تھے، جوفرانس کے جساتھ دیا گئا کہ جرمنوں کے باتھ اسر ہوگئے تھے یا جرمنوں کے ہاتھ اسر ہوگئے تھے۔نمائندہ قیصر کا وظیفہ سے تھا کہ امیر حبیب اللہ خال والی افغا نسان کوآلات واسلی ہوگئے اورز رومال کی زیادہ سے زیادہ المداد کا یقین دلائے۔

خلیمۃ المسلمین کے نمائندے کی ممتاز حیثیت ندہی تھی وہ افغانستان کے امیر، وہاں
کے باشندوں اور یا عستانی قبائلیوں کی ندہی اور دینے حمیت کو بیدار کرنا چاہتا تھا۔ یا عستان
میں منظم ترین جماعت بجاہدین کی تھی ، جودینی اور سیاسی دونوں حیثیتوں کی حامل تھی اور جو
مجاہدا ندسعی کو کم سے کم وقت میں زیادہ کا میاب بناسکتی تھی۔ میمشن اپنے مقصد میں
کامیاب ہوجا تا اور والی افغانستان انگریزوں کے خلاف اعلانِ جنگ کر کے ہندوستان پر
حملہ کر دیتا تو کی خیبیں کہا جا سکتا کہ نتیجہ کیا نکاتا ، لیکن اس حقیقت میں شبہیں کہ اس وقت
ہندوستان میں نوجی توت گیارہ ہزاریا بندرہ ہزار سے زیادہ نہتی اور افغانوں یا یا عنستانیوں

⁽۱) مولانا اصلافق پور کے باشند ہے تھے، بسلسلہ تعلیم بھو پال سے ،اس لئے بھو پالی مشہور ہوئے ، فود بھی اپنے آپ کو بھو پالی لکھتے تھے۔ قرآن مجیدادر سحاج ستھ کے حافظ تھے۔ بہبئی ہیں میٹرک تک انگریزی پڑھی پھر بلنے اسلام کے جوثل میں انگلستان چلے سے ، دہاں ہے امریکہ پنچے۔ ٹوکیو ہو نیورٹی میں اردو کے پردفیسر رہے۔ بر مقام پر بہلنے اسلام، مسلمانوں کی تنظیم اور آزادی وطن کے لئے کوشاں رہتے تھے۔ امیر صبیب اللہ خال نے آخی بداصرار اپنے پائی رکھا، پھرروس چلے سے بینن ان کی بڑی عزت کرتا تھا۔ وہاں سے جرشی، فرانس ادر سوئٹر راینڈ میں رہے، آخر کملی فورنیا جا کروفات یائی۔

کواسلیل جاتے تو یقینا یہاں حدورجہ نازک صورت حال پیدا ہوجاتی۔اب اس پوری داستان کی حیثیت محض' کاشکے'' کاشکے'' موجود ہیں:

يك كاشك بودكه بهصد جانوشتدايم

افغانستان كى فضا

اس وقت افغانستان کی فضامشن کی کامیا بی کے لئے سازگار نہتی ۔ صبیب اللہ خال مرحوم فرما فروائے افغانستان طبعًا بھی عزم و ہمت کا آ دمی نہ تھا نیز اس نے اپنی زندگی کا سانچااس نوع کا بنالیا تھا کہ کسی ایسے اقد ام کی چنداں امید نہ ہو سکتی تھی جس میں ہرقد م پر محنت ، مشقت، جفائشی ، جا نبازی یا چرچل کے تاریخی الفاظ کے مطابق ''خون' اور ''آنسوؤں'' کو قبول کے بغیر چارہ نہ تھا۔ بے شک اس اقد ام کے ساتھ افغانستان کے لئے بہتری کی تو قعات وابستہ کی جا سکتی تھیں ، اس کے علاوہ صرف ہندوستان ہی نہیں بلکہ پورے ایشیاء کو انگریزوں کے تسلّط سے نجات دلا دینے کے امکانات بھی موجود تھے ، لیکن لیسے منصوبوں کو وہ بی جو انمر دکا میاب بنا سکتے ہیں جو :

ياتن رسد به جانال يا جال زتن برآيد

کے مسلک پڑمل پیرائی کے خوگر ہوں ،عشق اور بوالہوی میں فرق وامتیاز کا مقام یہی ہے۔غالب کیا خوب کہ گیاہے:

ہا رقیباں ہم فینم، اما دعویٰ گاہ شوق مردن است از ماوزیں جنس گرانجان زیستن جہاں زندگی کی محبت مقاصد پر غالب آجائے ، وہاں کسی اقدام سے **گراں قدرنتا** کج کی امید کیوں کر کامیاب ہو کتی ہے؟ امیرحبیب اندخال کے بھائی سردارنفرالندخال کے دل میں اگریزول کی خالفت کا جذبہ موجود تھا، نیکن وہ بچارا تنہا کیا سکتا تھا۔ مولا نامحد بشیر نے امیر سے بات چیت کرکے اسے ایک حد تک ممل وحرکت پرآمادہ کرلیا تھا، بلکہ دہ امیر کے لئے آزاد قبائل کے سرداروں اور ملاؤں سے بیعت نامے بھی حاصل کرلائے بتے تاہم پورے معاطے کی حشیت الی تھی جیسے کی کو ہزور تھینے کراندر سے باہرلانے کی کوشش کی جائے تھوڑی دیر تک امید بندھی رہی کہ کاروبار حب مزاد ہور ہا ہے، پھر یکا یک آیسے اسباب بیدا ہوگئے تک امید بندھی رہی کہ کاروبار حب مزاد ہور ہا ہے، پھر یکا یک آیسے اسباب بیدا ہوگئے لئے وقف ہوگئی۔

اقدام کی شرط

امیر ہندوستان پر حملے کے لئے تیار ہوا تو اس نے یہ شرط پیش کردی کہ حملے سے پہلے انڈین بیشنل کا نگریس سے معاہدہ ہو جانا چا ہے اوراس کام کے لئے مولا نامجمعلی یا اجمل خال یا پنڈ ت موتی لال نہرویا اس پایے کے سی دوسر سے ہندوستانی لیڈرکوکا بل آنا چاہیں۔ (۱) پیشرط اصولاً ہرا عتبار سے معقول اور درست تھی۔ اگر ہندوستان کی کوئی الی جماعت امیر کا ساتھ دینے پر ہمہ تن آ مادہ نہ ہوجاتی ، جسے یہاں کی بہت بڑی اکثریت کا اعتاد حاصل ہوتا تو افغانوں کا ہراقد ام خطرناک پیچید گیوں کا باعث ہوسکتا تھا، کیکن ظاہر ہے کہ اقل دورانِ جنگ میں الی کوئی شرط امیر کی خواہش کے مطابق پوری نہ ہوسکتی تھی۔ دوم الی شرطوں کی جمیل پر وسیع جنگی اقد امات کو موقوف رکھنا سراسر غیر معقول تھا، البت میدانِ عمل میں اتر نے اور کام کا ایک حصہ پورا کر لینے کے بعد حسب صوابد ید معاہدے میدانِ عمل میں اتر نے اور کام کا ایک حصہ پورا کر لینے کے بعد حسب صوابد ید معاہدے کے جاسکتے تھے۔ سوم مقصد یہ نہ تھا کہ افغانستان ہندوستان پر قابض ہو جائے۔ مقصد

⁽۱) مشاہرات کا بل دیاغت ان ۳۳_

صرف بین ها که مندوستان کیلئے آزادی کا بندوبست مو جائے اور آزاد مندوستان افغانستان کیلئے بدر جہازیادہ مفید موسکتا تھا۔

حكومت موقنة كاقيام

اس زمانے میں متعدد ہندوستانی کابل پنچ ہوئے تھے، جو مختلف ذریعوں سے امیر کورکت میں لانے کیلے کوشاں تھے، مثلاً مولا نامحر بشیر جو جماعت مجاہدین کے وکیل اور نمائندے تھے۔ مولوی محمطی قصوری جنھوں نے صرف مقاصد اسلامیت وآزادی کو بیش نظر رکھ کر حکومت افغانستان کی ملازمت اختیار کی تھی۔ مولا ناعبید اللہ سندھی جنھیں حضرت شخ الہندمر جوم نے جہاد آزادی کو تقویت پہنچانے کی غرض سے کابل بھیجا تھا۔ مولا ناعبید اللہ کے علاوہ مولا نامنصور انصاری اور مولا ناسیف الرحمٰن بھی اسی مقصد کیلئے بھیج عبید اللہ کے علاوہ مولا نامنصور انصاری اور مولا نا سیف الرحمٰن بھی اسی مقصد کیلئے بھیج عبید اللہ کے علاوہ مولا نامنصور انصاری اور مولا نا برکت اللہ بھوپائی خود وفد کے ساتھ آئے شے نیشنل کانگریس سے معاہدے کی کوئی شکل بنتی نظر نہ آئی تو ان اصحاب نے سوچا کہ ہندوستانیوں کی ایک عارضی حکومت بنالینی چا ہے اور وہ افغانستان سے معاہدہ کر کے امیر حبیب اللہ خال کو ہندوستان پر جملے کی دعوت دیدے۔

اس عارضی حکومت میں راجا مہندر پر تاپ کوصدر بنایا گیا۔مولا نابر کت اللہ بھو پالی وزیراعظم مقرر ہوئے۔مولوی تصوری کووزارت خارجہ کا منصب سونیا گیا۔مولا نامحمہ بشیر کو وزارت دفاع پر مامور کرنے کے علاوہ یا عنتان سے لشکر تیار کرنے کا ذمددار بنادیا گیا اور حملے کی ایک منظم اسکیم تیار کرلی گئی۔(۱) مولا ناعبید الله فرماتے ہیں کہ حکومت موقتہ میں

⁽۱) مشاہدات کابل و یاعتان ص ۱۳۳ مرحوم عبدالرحمٰن صدیق نے جومشر تی پاکستان کے عارضی گورز بھی رہے تھے کھاہے کداس سے پیشتر آیک عارضی حکومت برلن میں بھی قائم ہوئی تھی ،جس میں مولا نابرکت اللہ کو وزیر خارجہ بنایا ممیا تھا۔ نیز جرمن اور ترکی وفد عراق ایران کے رائے آیا تھا۔ ایک مقام پر معلوم ہواکہ ثال سے روک فوجیس اور جنوب سے انگریزی فوجیس بزدوری جیں اور بچ میں فاصلہ اس قدر کم رہ کیا ہے کہ وفد سے باقی حاشیدا محلے صفحہ پر

ہندوستانیوں کے علاوہ ترک اور جرمن بھی شریک تھے۔(۱) میہ بات سجھ میں نہ آئی کہ ترکوں اور جرمنوں کی شرکت کس لحاظ سے مناسب تھی؟

منصوبةتم

امید کی کلیاں پھر شکفتہ ہوگئیں۔امیر نے کارگاہ اسلخہ کے تمام انگریز ملازموں کو برطرف کر دیا۔ یہ پہلا قدم تھا۔اس ا ثناء میں انگریز بھی مرگرم عمل رہے۔انھوں نے ایک بہت بڑے پیرکوہم نوابنالیا، جسے افغانستان میں وسیع اثر ورسوخ حاصل تھا بلکہ خود امیر نے عالبًا دعائے خیر کیلئے ہندوستان پر حملے کے منصوبے کا امیر بھی ای کا معتقد تھا۔امیر نے عالبًا دعائے خیر کیلئے ہندوستان پر حملے کے منصوب کا ذکر کیا۔ پیر نے کہا کہ تھہرو، میں تمن دن بعد استخارہ کرنے کے بعد جواب دوں گا۔ چوتھے روز بتایا کہ ہندوستان پر حملہ افغانستان کیلئے جابی کا موجب ہوگا۔ (۲) اس کے باتھ ہی سب پچھنم ہوگیا، گویامشن کامیاب ہونے کی کوئی صورت باتی ندر ہی۔ ساتھ ہی سب پچھنم ہوگیا، گویامشن کامیاب ہونے کی کوئی صورت باتی ندر ہی۔ کہاجا تا ہے کہ اس کارکردگی کے صلے میں انگریز دل نے پیرصاحب کو پچاس لا کھ روٹے دیا ورا میر صبیب اللہ خال کو آٹھ کروٹر دو بے کالا کے دیا گیا۔ (۳)

من شدستی کا بقیہ عاشیہ افغانستان نہ پہنچ سے گا۔ مولا نا برکت اللہ نے کسی رہبر کی امداد کے بغیر صرف ستارول کو و کھے و کھے کر رہنمائی کی اور رات کی تار کی میں خطرناک ضنے سے وفد کو تکال لائے۔وہ ساتھ نہ ہوتے تو وفد مجمی افغانستان نہ پہنچ سکنا۔ (ملاحظہ بورسالہ 'اردو' بابت جولائی ۱۹۳۱ء۔مولانا برکت اللہ پرمقالہ)۔

راجا مبندر پرتاپ کے بیان کے مطابق وہ خود اس وقت تک کے لئے صدر مقرر ہوئے جب تک کاتکریس حکومت نہ بنا لے مولا نابر کمت اللہ وزیر اعظم اور مولا نا عبیداللہ سندھی وزیردا خلہ بنائے محتے۔ (میری داستان حیات انگریزی ص ۱۵)

(۱) كابل مس سات سال بس ۲۱ -

(۲) مشاہدات کابل و یاغشتان ص ۳۳۷_افسوں کدمولوی صاحب نے اس پیرکا نام نییں تکھااور ایسے معاملات میں قیاس آرائی قطعاً غیر مناسب ہے مولا نا عبید اللہ سندھی کے ایک بیان ہے معلوم ہوتا ہے کہ بید معنزت صاحب چالود ماغ تیے جنعیں اس کام کیلئے مکہ معظمہ ہے بالیا کمیا تھا۔ (مولا ناعبیداللہ کی ڈاتی ڈائری)

(٣) مشاہدات کابل دیاعتان ص ٣٥۔

اگر بید درست ہے تو اس پر تعجب نہ ہونا چاہیے۔ ساڑھے آٹھ کروڑ روپے استے
بڑے کام کے مقابلے میں کوئی حیثیت نہ رکھتے تھے۔ اگر افغانستان حملہ کردیتا اورلڑائی
چھڑ جاتی تواس سے بدر جہازیادہ رقم حفظ ودفاع کی تدبیروں میں صرف ہو جاتی ، جانی
نقصان اس کے علاوہ ہوتا۔ بی بھی غیر اغلب نہ تھا کہ ہندوستان انگریزوں کے ہاتھ سے
نکل جاتا اور گزشتہ جالیس سال کی تاریخ بالکل دوسرے رنگ میں کھی جاتی۔

مولا ناعبيداللدكابيان

مولا ناعبیداللدمرحوم نے جرمن اور ترکی مشن کی ناکامی کے بعض دوسرے پہلوؤں پر بھی روشنی ڈالی ہے۔مثلاً:

ا۔ جرمن اور ہندوستانی ممبر آپس میں یجہتی قائم نہ رکھ سکے، جوالی مہمات کے لئے ضروری ہے۔

۲۔ ہندوستانی ممبر ساراالزام جرمنوں پرتھو ہے تھے، جرمن ممبر شکایت
 کرتے تھے کہ برلن اوراستنبول میں جوہنر باغ دکھائے گئے تھے،ان کاعشر عشیر
 بھی یہاں نظر نہیں آتا۔

س مشن كاج مقصدها،اس كيمطابق تيارى ندى كى ـ

س۔ مولانانے راجامہندر پرتاپ کوبعض کوتا ہیوں کی طرف متوجہ کیا تو انھوں نے کہا کہ جرمن چانسلر نے بھی توجہ دلائی تھی اور میرے لئے آسانی پیدا کرنی جا ہی تھی بگر میں نے خلاف شان سمجھ کرانکار کر دیا۔ (۱)

ان امور پر بحث کی ضرورت نہیں ، بنیادی چیز وہی ہے جس کا ذکر او پر آ چکا ہے، یعنی امیر حبیب الله خال کی بے عزمی اور تن آسانی۔ اگر یہ چیز حاکل نہ ہوتی تو نہ جرمنوں اور ہندوستانیوں میں اختلاف پیدا ہوتا اور نہ دو ایک دوسرے کو المزم قرار دینے کیلئے مصطرب ہوتے۔

⁽۱) كابل شرسات سال بريه ١٣٠٥

مولانا عبید اللہ نے میکھی فرمایا کہ راجا مہندر پرتاپ دراصل ہندو مہا ہجا ہے وابستہ تھے۔وہ صرف اس غرض سے ساتھ آئے تھے کہ اگر افغانستان جرمنی اور ترکی کے اتحادیس شامل ہونے کا قصد کر ہے تو اسکی اطلاع پنڈ ت مدن موہن مالوی کو ہوجائے ، نیز جہاں تک ممکن ہو ہندوستان کی سرحد سے افغانی حملے کی مصیبت کو ٹالا جائے اور جو پوزیشن امیر افغانستان کی ہووہی مہارا جانیال کو دلائی جائے۔

ممکن ہےمولا نا کا تاثر بالکل درست ہو،کیکن اس صورت میں سیح راوعمل بیھی کہ وفد کوافغانستان لایا ہی نہ جاتا ، کہد دیا جاتا کہ افغانوں سے کوئی تعلق پیدا ہی نہ کرنا جا ہیے اور ریہ بہت آسان تھا۔خور وفد کو افغانستان لا کرنا کام واپس لے جانا راجا مہندر پرتاپ یا سن دوسرے ہندو کارکن کیلئے باعث عزت نہ تھا۔مولا نانے تو بیجی لکھ دیا ہے کہ برگن کی''انڈین نیشنل یارٹی''نے اپنی ہندوتحریک کو ہندوستانی تحریک کا رنگ دینے کی غرض ے مولانا برکت اللہ کو برائے نام اس میں شریک کرلیا تھا،کیکن مولانا برکت اللہ اتنے ساده لوح ند من كدايين مندور فيقول كي فرقه ريتي كيليندام فريب برده بننا گوارا كريليت . مولانا ایک اورمقام برفرماتے ہیں کہ وفدامیر صبیب اللہ کو جنگ میں شامل کرنا عابتا تھا اور امیر کوانگریزوں نے بہت ہی مراعات کی امید دلار تھی تھی ، نیز ارکان وفد کے سامنے کوئی تسلی بخش پروگرام ندتھا اور امیر کا باہمی اختلاف سب باتوں پرمشز اد ہوا۔ مستقتبل ہند کے متعلق ہمارے نظریات چونکہ مشن کے ممبروں سے بوری طرح نہ ملتے تھے، اس لئے ہمیں در بار میں جلدی بڑھنے کا موقع مل گیا۔حکومت نےمشن کےممبروں کوآ خری جواب دینے سے پہلے ہمیں ان سے ملنے کے سامان بہم پہنچادیے اور اس طرح ان کے خواب کو مختلف تعبیرات سے پریشان کرنے کی کوشش کی گئی۔(١)

⁽۱) '' کابل میں سات سال' 'ص ۲۰ اس کا مطلب صرف بیہ ہوسکتا ہے کہ ہندوستان کے متعلق مولانا کا نظریہ چونکہ دفعہ سے مختلف تھا، البقد امیر افغانستان کی نظروں میں مولانا کا اعتبار بڑھ گیا اور انھوں نے اپنے نظریے کی بنا میرار کان وفعہ سے طلقاتی کیس تو ان کا منصوبہ درہم برہم ہو گیا۔ موالانا زندہ ہوتے تو اپنے اس ارشاد کی تشریح فریاتے زاب اسے بھکل موجودہ قبول کر لینے کے سواچارہ نہیں۔

اعلانات جہاد

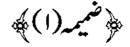
فان بهن تیگ تو ناکام واپس چلاگیا، کین خلیفة المسلمین کے نمائندے محمد کاظم بے نے مسلمانوں کے مختلف گروہوں کیلئے اعلانات جباد مرتب کرادیے تھے جن پرمحمد کاظم کے علاوہ مولا نا برکت اللہ نے بھی شخ الاسلام ترکیہ کے وکیل کی حیثیت میں وستخط کیے تھے۔ تمام اعلانات تو نیل سکے الیکن جو اعلان باشندگان یاغستان کیلئے تیار کیا گیا تھا، وہ ان کا غذات میں لگیا جومولا تامحہ بشیر نے ۱۹۳۳ء میں بیمقام کائل میرے حوالے کیے تھے۔ چونکہ اس میں یاغستان کے بعض متفرق واقعات کا بھی ذکر ہے اور اس کی فاری میں بھتانی وافعانی انداز نمایاں ہے، اس وجہ سے خیال ہوتا ہے کہ خود مولا نامحہ بشیر اور بعض دوسرے یاغستانی کارکن اس کی ترتیب میں شریک رہے۔ بیدایک اہم تاریخی دستاویز ہے، جے موجودہ وآئندہ نسلوں کیلئے بہطور یادگار مخفوظ رہنا چا ہے۔ لہذا میں نے دستاویز ہے، جے موجودہ وآئندہ نسلوں کیلئے بہطور یادگار مخفوظ رہنا چا ہے۔ لہذا میں نے اسے ضمیمہ کباب کے طور پرمع ترجمہ شامل کتاب کردیا ہے۔

ضروري تضريحات

اس اعلان میں بعض یا غستانی واقعات کی طرف اشارے ہیں، جن کے متعلق سرسری توضیح ضروری ہے۔ خیری بے ایک ترکی افسر سے جنھیں یا غستانی قبائل کی تنظیم اور عسکری تربیت کیلئے بھیجا گیا تھا۔ جو طلبہ فروری ۱۹۱۵ء میں بھرت کرکے گئے تھے، ان میں ایک صاحب محمد حسن بھی تھے، جو ضلع سیالکوٹ کے رہنے والے تھے۔ بعد از ال انھوں نے ''محمد بعقوب''نام اختیار کر لیا اور اب اس آخری نام سے معروف ہیں۔ وہ بھی کا بل سے خیری بے ہمراہ آئے تھے، بعض مواجب خوروں نے انگریزوں کے ایماء سے ان پر جملہ کرادیا، جس میں یا غستان کے ایک ملا عبد انجلیم شہید ہوئے، وہیں کے ملا

سیدا کبرنے تا دیباً مجرموں کے گھر جلوادیے اوران کا مال واسباب لٹوادیا۔

دوسرا قابلِ تصریح واقعہ نواب دیر کا ہے۔ دیری ہمسایہ ریاست جندول کا رئیس عمراخاں مدت العمر انگریزوں سے لڑتا رہا۔ اس کے جیئے عبدالمتین خال نے ضرورت کے وقت نواب دیرے مدد مانگی۔ نواب موصوف نے مدد میں تامل نہ کیا، کین جندول کو عاصبوں سے آزاد کرا کے عبدالمتین خال کے حوالے کرنے کے بجائے خوداس پر قابض عوالیا۔ اس تصرف کو بھی اسلامی نقط کا گاہ سے نازیبا قراردیا گیا ہے۔



بىم الله الرحمٰن الرجيم حامدًا ومصليًا ومسلّمًا

اعلانِ مقدّسِ دینی بهامالی بیشانستان

(قبائل ساكنه ميانِ افغانستان ودريائے سندھ)

استقلال کی دعوت

برادران وین اکنول فرصت بے بہا خدا وندتعالی بے شارزانی فرمودہ است کہ ملش دوصد ہاسال میسرنی شود۔ اگر شاقدر سے دست ویارہ بحببانیدی توانید کہ ایں ملک وسیج را (کہ میانِ دریائے اٹک وافغانستان واقع است) بہ کم زحمت بدست آوردہ کیک سلطنے مستقل اسلامی قائم نمائید و بدونِ مزاحمت کے بادولت ہائے دنیا علاقہ کیا ہی وتجارتی وعلمی پیدا کنید و درجمایت خلیفہ سیّد کسیان السلطان المعظم بودہ درآ بندہ از آسیب انگلیس ایمن شوید و بہ مدو المرسلین السلطان المعظم بودہ درآ بندہ از آسیب انگلیس ایمن شوید و بہ مدو علائے قداز دارالخلافت اولا دِخودرا بزیو بعلوم وفنون آراست درمیدانِ ترق و تم دوشِ اقوامِ متمد نہ ومترقیہ گروید ونسل ہائے آ بندہ شادردارین محود العافیہ ومسعودالعاقب باشند۔ وقی ذالک فلیتنا فیس المتنا فیسون۔

ترجمہ: وین بھائیوالی وقت خدانے آپ کونہایت فیمی مہلت عطاکی ہے،جس کی نظیر صدیوں میں نہیں ملتی۔ اگر آپ ذرا ہاتھ پاؤں ہلائیں تو ممکن

ہے کہ اس وسیع ملک کو جو دریائے اٹک اور افغانستان کے درمیان واقع ہے،
تھوڑی ہی زحت سے قبضے میں نے آئیں۔ وہاں ایک متعقل اسلامی سلطنت
قائم کرلیں اور کسی کی رکاوٹ کے بغیر دنیا کی سلطنق سے آپ کے سیاس،
تغارتی اور علمی روابط پیدا ہو جائیں۔ اس طرح آپ رسولوں کے سرتاج
(صلعم) کے خلیفہ سلطان معظم کی جمایت میں آجائیں اور آیندہ انگریزوں کے
گزند سے محفوظ ہو جائیں۔ علمائے حق کی مددسے آپ اپنی اولا دکو دار الخلافت
میں علوم وفنوں سکھا سکیں گے اور متمدن و ترقی یافت قوموں کے دوش بدوش تمدن
و ترقی کے میدان میں گامزن ہو سکیں گے۔ آپ کی آیندہ سلیس دونوں جہانوں
میں کا میاب و نیک بخت ہوں گی اور چاہیے کہ رغبت رکھنے والے اس کی
خواہش کرس۔

جنگ اورانگریزوں کی پریشانیاں

آں فرصت زریں ایں است کہ انگلیس کہ دھمنِ اسلامیاں خصوصاً
وشرقیاں عموماً جست ، از سرسال دریں جنگ عالمگیر گرفتار بودہ لکو کھا نفوں
انگلیسی نثر ادا ضائع کر دہ است و جمد لفکر ہائے اودر ملک فرانس واطالیہ و بلقان
ومعرو عراق عرب دو چار جنگ ہائے جولناک وخوز یزمی باشند، ہر ماہ ضا تعات
لفکر انگلیسی ہزار ہامی رسد ۔ اکنوں مسئلہ کمک رسانیدن بہ ایں میدان ہائے
جنگ ہم دشوارشدہ است ۔ ملت انگلیس از صدمات ونقصانات ایں جنگ
بجان آ مدہ است وقوت جنگی انگلیس روز بروزکم می شود ۔ امادولت برکی ودولت
جرمن ورفیقانِ ایشاں مظفر ومنصوری شوند، وملک ہائے زر خیز و بہنا مثل بلجیم
ویولینڈ وسرویا ورومانیا و مانگلیس ورفیقائش از شکست ہائے بردس فقو حات شاں
روز افزوں است ۔ الحقر انگلیس ورفیقائش از شکست ہائے بردس فقو حات شاں
وفت میں ودر باخد ہمت و سراسر در ماندہ شدہ اند ولیکن جرمنہا وترکان و

اطرشها وبلغار بااز فتح و فيروزئ تازه يتازه قوي دل وبلند حوصله ومجسم بال بستند _

ترجمہ: بیسنبری موقع ہے۔ آگر بردسلمانوں کے خصوصاً اور اہل شرق کے عمو اُدشن ہیں۔ وہ تین سال سے عالمگیر جنگ میں الجھے ہوئے ہیں۔ ان کو قوم کے لاکھوں افراد ضائع ہو بھے ہیں۔ ان کے شکر فرانس، اٹلی، بلقان، مصر اور عرب میں خوفناک وخونر ہز جنگ سے دو جار ہیں۔ ہرمہینے ان کے ہزاروں آدی ضائع ہوتے ہیں۔ اب خدکورہ بالا میدان ہائے جنگ میں کمک پہنچانا بھی مشکل ہوگیا ہے۔ ان صدموں اور نقصانوں کے باعث اگر بر قوم کی جان پر آئی ہے۔ ان کی قوت روز بروز کم ہور ہی ہے، لیکن سلطنت ترکی نیز حکومت برمنی اور ان کے حلیف ہرمیدان میں کامیاب و بامراد ہیں۔ بلجیم، پولنیڈ، ہرمویا، رون میں ان کی فتو صات روز افروں ہیں۔ مختمر سے کہ اگر براور ان کے ساتھی مرویا، رون میں ان کی فتو صات روز افروں ہیں۔ مختمر سے کہ اگر براور ان کے ساتھی شکستیں کھا کھا کر شکستدل ہو ہے ہیں۔ ان کے بدن زخموں سے چور ہیں۔ وہ شکستیں کھا کھا کر شکستدل ہو ہے ہیں۔ ان کے بدن زخموں سے چور ہیں۔ وہ ہمت ہار ہے ہیں ہیں، لیکن فتح وظفر کے باعث جرمنوں، ترکوں آسٹر ویوں اور بلغاریوں کے دل قوی اور حوصلے بلند ہیں اور وہ سرایا امید ہیں۔

حصول مرام كابهترين وفت

دریں چنیں حالت پریشان وخطرناک انگلیس اگر قبائل حدودیہ متفق شدہ یکبارگ از شال تا جنوب صرف جملہ ہائے غارت گری آغاز نمایندواز جنگ بزرگ احتر از کردہ شبخونہاو جملہ ہارابرتمام وسعت حدود بلا انقطاع مجری دارند، در چند ماہ لشکر انگلیس را آل جانب دریائے انک خواہند رائد واثر ایں جملہ ہائے متواتر برحدود درہمہ میدان ہائے جنگ زود ظاہر شود و تکست انگلیس محقق گردد۔ وقتیکہ انگلیس فکست یافت ،خلیفہ معظم بدا تفاق دولت ہائے متفقہ در مجلس صلح برائے حکومت متحدہ پھانستان سنداستقلال وآزادی حاصل کردہ برگونہ مدوخواہد فرستادیمن بعد کے رایارائے مدافعت در ملک پٹھانستان نہ خواہد بود۔

برآ زخواب اکنوں وفت تو سخت تنگ است ایں لخظ گرنیا بی تیرت شداز انامل فرصت چونو بہائے دوعم شخص وقو ہے یک باررفتہ نایڈمٹل شاب زائل۔

ترجہ: اگراتگر بروں کی اس پریشان اور خطرناک حالت میں سرحدی
قبائل متفق ہوکرشال سے جنوب تک بہ یک وقت غارت گرانہ حملوں کا آغاز
کردیں، بردی جنگ سے بچے رہیں اور پوری سرحد پرشبخونوں اور چھالوں کا
نا نتا باندھ دیں تو چند ہی مہینوں میں آگریزوں کے فشکر کو دریائے اٹک کے پار
پہنچاویں گے۔ جنگی میدانوں پرمسلسل حملوں کا اثر جلد ظاہر ہو جائے گااور
اگریزوں کی فلست میں کوئی کسر باتی نہ رہے گی۔ جب انگریز فلست کھا
جا کیں گے تو خلیفہ عظم مجلس ملح میں اپنی دوست حکومتوں سے تحدہ پٹھانستان
جا کیں گے قو خلیفہ عظم مجلس ملح میں اپنی دوست حکومتوں سے تحدہ پٹھانستان
کے لئے استقلال و آزادی کی سند حاصل کرلیں سے اور ہرقتم کی مدد پہنچا کیں
گے۔ اس کے بعد کسی کو پٹھانستان میں انزائی کا یا داندر ہے گا۔

تواب خواب سے بیدار ہو، وقت بہت نگ ہے۔ اگر اس وقت بھی نہ جا گے گا تو تبار کی سے ہا گے گا تو تبار کی سے ، جا گے گا تو تبار کی کی ہے ، گفتوں اور قوموں کی زندگی میں وہ ایک بار جلی جائے تو پھر نہیں آتی ،جس طرح گزرا ہوا شاب دوبارہ نہیں لوشا۔

تر کوں کی شیر دلی

برادران دین! زیاده از سدسال می شود که برادران دین شاازتر کال لکوکها درعد د جان و مال خویش را براه خداشار کرده درمیان ماسته بورپ و آسیاو افریقه دوش بدوش باحلیفان خویش دادِمر دانگی داده اندو جویر شجاعت وشیر دلی رااظهار نموده نیک نامی جادید حاصل کرده اندوی کنند_اماشا اے آفریدیهاوسواطیهاو دیگر قبائل ما نندز نال خاندشیں شده بچگان ترکی رایتیم وزنان عثانی را بیوه شدن می بینید دشارانه غیرت ِاسلامی و ندعرتِ مروت برجنبش می آید۔

ترجمہ: دین بھائیوا تین سال سے زیادہ مدت ہو چک ہے کہ تہار سے ہم فدہب بھائی ترک لاکھوں کی تعداد ش اپنے جان و مال خدا کے لئے قربان ہم فدہب بھائی ترک لاکھوں کی تعداد ش اپنے بیائے اور افریقہ کے میدانوں میں اپنے ملیفوں کے بہلو بہ پہلومردائی کی داد دیتے ہوئے شجاعت وشیر دلی کے جو ہر آشکارا کیے جی اور ہمیشہ کی نیک نامی حاصل کرئی ہے اور کر رہے ہیں، لیکن آپ اے آفرید ہو، صواتی اور دوسرے قبیلوں دالوا عورتوں کی طرح اپنے گھر آپ اے آفرید ہو، مونے کا تماشاد کھے میں بیٹھے ہو، ترک بچوں کے بیتم اور عثمانی عورتوں کے بیوہ ہونے کا تماشاد کھے رہے ہو۔ کیا آپ کو غیرت اسلامی حرکت میں نہیں لاتی اور آپ کی رگ مرقت نہیں کو تری کی بیرہ ہوتے کا رگ مرقت نہیں پورکتی ؟

خیری بے پرحملہ

وعجب ترای که سے چنداز بے ناموسال زیرریاست زمان خال ازخدا ورسول علی می که سے چنداز بے ناموسال زیرریاست زمان خال ازخدا ورسول علی می آید و برائے اعانت ، عمله آورد و ملا عبدالحلیم مرحوم و مغفور داشهید ممودند ازیں زیاد و تر سواد الوجہ فی الدارین نی تواند شد بدنام کنند و کونا ہے چند اماز سے سعادت علائے کرام وخصوصاً جناب ملا سید اکبر (۱) که آل بدکارال را بہ سوختن خانها کے شمال وگرفتن مال تاوان به یاداش کیفرنا فرجام بدکارال را بہ سوختن خانها کے شمال وگرفتن مال تاوان به یاداش کیفرنا فرجام

⁽۱) یوه بی بزرگ بین جنیس داکلی نے سرحد کی ملاؤں بیل' آگ کالوکا'' قرار دیا ہے۔ (کوہ سیاہ سے دزیرستان تک انگریزی میں: ۲۷۸)

شاں رسانیدندو نیز نام نامی قبیلہ کو کی خیل ماننداسم منور محسودومہند برائے دوام بر جریدۂ عالم ثبت شد۔ مردم کو کی خیل البتہ سز اوار نام آفریدی ہستند ودر عق شاں ایں اشعار القاشدہ است ہے

آفریدی دلاور نزد علی خیبر برغربیان مربرچون برق آسان است حبوطن بمیں است بردائلی چنیں است میں است بایں کاردینیان است

باید که برمزار ملاعبد الحلیم شهید تاریخ واقعه شهادش نصب شورتا در قرون آتیه یادگار بماند .

ترجمہ: عجب بات ہے کہ زمان خال کی ریاست کے چند بے نگ وناموں افراد نے خدا، رسول اور مومنوں سے شرم نہ کرتے ہوئے عالی جناب خیری بے پرحملہ کیا، جوتر کول کی جلیل القدر قوم کے فرزند ہیں اور اسلامی بھائیوں کی اعداد کے لئے یہاں پنچے ہیں۔ان لوگوں نے ملا عبدالحلیم مرحوم کو شہید کرڈ الا۔اس سے بڑھ کر دونوں جہانوں کی روسیابی کا سامان کیا ہوسکتا ہے؟ بدنام کنندہ کونا سے چند علاء کرام کے لئے بیام کتنی خوش نصیبی کا باعث ہے کہ انھوں نے اِن بدکاروں کے گھر جلائے ،ان سے مالی تاوان وصول کیا۔

اس طرح انھیں کی فرکر دارکو پہنچایا۔اس سلسلے میں جناب ملا سیدا کبر خاص طور پر قابل ذکر ہیں۔ قبیلہ کو کی خیل کا نام بھی محسودوں اور مہندوں کے روشن نام کی طرح دین کے دفتر میں شبت ہوگیا، بے شک کوئی خیلوں کے دفتر میں شبت ہوگیا، بے شک کوئی خیلوں کے لئے آفرید یوں کا مام زیبا ہے، بیاشعاران کے تی میں القاء ہوئے۔

دلاور آفریدی در و خیبر کی علی معجد کے نزدیک پیٹے دکھانے والے مغربیوں کے لئے آسان سے گرنے والی بجلی بن گئے۔ حب وطن کا تقاضا بی ہمردانگی اس کا نام ہے ،خدا کا تھم بی ہے اور اہل وین ایسے ہی کارنا ہے انجام دیتے ہیں۔ ضروری ہے کہ مل عبدالحلیم شہید کی لوح مزار پر ان کی تاریخ شہادت کندہ کی جائے تا کہ آنے والے زبانوں کے لئے یادگار ہے۔

قبائل عرب اور قبائل سرحد

اے مسلمانانِ پنمانستان! بحدالله شاخودرامسلمان پندار بدولیکن حالت موجوده شابه حالت قبائل عرب درجابلیت قبل از اسلام می ماند به شام ظهورخاتم النبیین (صلعم) ملک عرب مسکن قبائل چا درنشیں وکوچری و پراگنده بود - چنا نکه امروز حالت قبائل شااست، آن قبائل عرب مدام در جنگ با جمی مشغول بودند چنا نکه شانیز درخانه جنگی مبتلائید، آن قبائل عرب حکومت نتظم و با قانون نه داشتند بشابیم نه دار بد ایشان قطاع الطریق بودند، شانیز راه برید امااز فیف الفاس طیب نبویه حالت بدویت عرب بدنیت مبدل گشت، آن قبائل پراگنده الفاس طیب نبویه حالت بدویت عرب بدنیت مبدل گشت، آن قبائل پراگنده جودشته انسمالله مؤمن وجود آند فی از جمه موئین برادراند) مسلک شده یک استوار کرد. زکو قبیت المال اساس مادی و بشتیانی برائ عمارت اجتمائی استوار کرد د زکو قبیت المال اساس مادی و بشتیانی برائ عمارت اجتمائی مشتری جهاد فی سبیل الته ترای و د بی بدا کرد. تا دری مسلمانان را برائ مشتری جهاد فی سبیل الته تر به بخدید و تج بیت الله برائ اقوام اسلامیه جمه دنیا را اطرا شحاد سیاس و تجارتی و د بی بدا کرد.

جمله خلائق آل زمال از جبل مش مردگال انفاس آل روح و روال به دمید شال جانے به تن برد ود زیشال جابلی، فرسوده زیشال کابلی بخشود شال را عاقلی، بخشید شال ملک زمن کرده براگنده بیم، زال ساخت قومے مختشم کیک رهن کرده رین

ترجمه: اے پٹھانستان کےمسلمانو! خدا کاشکرہے کہتم اینے آپ کو مسلمان سجھتے ہو،کین تمہاری موجودہ حالت اسلام سے پیشتر دورجاہلیت کے عرب تبیلوں کی سی ہے۔حضرت خاتم النیسین صلح کے طہور مبارک کے وقت عرب خیمه نشین ،صحرا گرداورمنتشر قبائل کامسکن تھا۔تمہارے قبیلوں کی حالت بھی آج یہی ہے۔ عرب کے قبائل ہمیشہ باہم اوستے رہتے تھے ہم بھی خانہ جنگی میں مبتلا ہو ،عرب قبیلوں کی کو کی منتظم اور قانو نی حکومت نتھی بتہاری حالت بھی یمی ہے۔وہ ڈاکے مارتے تھے بتمہارا کام بھی لوث مار ہے۔لیکن حضرت رسول اکرم صلعم کے انقاس یاک کی برکت سے عرب کی بدویت مدنیت میں بدل گئی،وہ بھمرے ہوئے قبیلے(سب مومن بھائی بھائی ہیں) کے رشتے میں یروئے گئے اور ایک روحانی جمہوری حکومت وجود میں آگئی ، دیکھویا نج وقت کی نمازسب میں برادری اور برابری کے احساسات پختہ کرتی ہے۔زکوۃ وبیت المال ملت کی اجماعی عمارت کے لئے مادی بنیاد اور مالی پشتیرانی کے ضامن میں۔روزے کے ذریعے سےمسلمانوں میں جہادنی سبیل اللہ کیلئے مشقت برداشت کرنے کی عادت کی ہوتی ہے۔بیت اللہ کا حج دنیا بھر کی مسلمان قوموں کے درمیان تجارتی ،سیاس اور دینی را بطے پیدا کرنے کا ذمہ دار ہے۔ اس زمانے کے سب لوگ جہالت کی وجہ سے نمر دوں کی مانند تھے، رسول اکرم صلعم کے انفاس باک روح بن کران کے بدنوں میں دوڑ گئے۔ حضور نے ان کی جہالت کے داغ دھوڈ الے،ان کی کا بلی مثادی۔ان کوعقل بخشی اورز مانے بھر کی حکومت دے دی۔ بھرے ہوئے اجزا کو اکٹھا کرکے حضورنے ایک عالی شان توم بنادی اور ایک دوسرے کے ساتھ محبت کے رشتے على وه سب بندھ محمرے _

عربوں کی کایابلیٹ

حالات ملاحظه فرمائید که جناب رسالت مآب چگونه قلب بیئت این قبائل و شید عرب نمود، چول قبائل پیرا مون کمه قصد بلاک پینجبر نموده بینجبر کمه راگز اشت و بدید بیند منوره رفت، دواز دبم رقیج الاول بدید بیند منوره رسید و در ماه راگز اشت و بدید بیند منوره رفت، دواز دبم رقیج الاول بدید بیند منوره رسید و در ماه رمضان یعنی بهفت ماه بعد یک بیرق برائع مم خود حمزه رضی الله عنه درست کرده بنائع جهاد نی سبیل الله نها دو در مدت ده سال قیام آنخضرت در مدین غز وات بعنی جنگ بائع بینی بنگ بائع بینی بنگ بائع بینی بنگ بائع بینی بنگ که نیخ مرد داشت بست و بشت شمرده اندوسرید بائد آنخضرت را بعنی بنگ که بینی بنگ که بینی خود تشریف داشت در ند غز وه با بازشن محوید به از بست و بشت و با بازشن ما مشد مقابله دشمن تمام شد مقابله دم مقابله دشمن تمام شد مقابله دم مقابله دم مقابله در نمام شد و سال مین با متارکه مصالحه باعدم مقابله دشمن تمام شد -

ترجمہ: حالات پرغور کرو، جناب رسالت آب نے کس طرح عرب کے وحثی قبائل کی کایا بلٹ کررکھ دی۔ جب کھے کے اردگرد کے قبیلے حضرت پنج برصلع کو (خاک بدوبن) قبل کررکھ دی۔ جب کھے اور سات ماہ بعد رمضان کے کرد سینے جلے گئے۔ ۱۲ رہ بنج الاول کو وہاں پنچ اور سات ماہ بعد رمضان کے مہینے میں اپنے بچا حضرت جزہ کے لئے ایک جمنڈ ابنا کر جہاد فی سمبیل اللہ کی بنیاد وال دی۔ مدید منورہ کے دہ سالہ قیام میں آنحضرت جن لڑائیوں میں بنگوں فیس شریک رہان کی تعدادا تھا ہیں بنائی جاتی ہو اور سریے بینی جن جنگوں کیلے لشکر بیمیع چھپن تھے۔ جن اٹھا کیس جنگوں میں حضور صلعم بنگس نفیس شریک رہان میں نو میں دعمن سے جن اٹھا کی نوبت آئی۔ باتی یا توصلح ہوگئ یا التوالے جنگ پرمعالمہ طے ہوگیا ، یاس ہے۔ مقابلے کاموقع ہی نہ آیا۔

دعوت كار

آخرین سرید ۲۲ راه صفرسال یاز دیم بجری بدریاست اسامه بن زیددر حالت مرض الموت خود جانب جبل دبل روان فرموده دواز دیم ریخ الاول گوئیا دو بفته بعد جناب سید الکونین از دارفانی به ملک جادودانی رحلت نمود - تفکر باید کردن که ذات ختمی آب باعباوت و بزار باامورمعاشرت و سیاست و تفاوت در مدت ده سال بشاد و چهارغز وه و سرید را بهم اداره نمود - بمین فعالیت و چست کاری و بیدارمغزی بود که ون ایز دی در ده سال جریان تاریخ بشریت را تبدیل کردوراست است: ان لیس لملانسان الاماسعلی -

ترجمہ: آخری مرتبہ ۲ رصفراا ہو آخضرت نے مرض الموت میں ایک الکتر اسامہ بن زید کی سرکردگی میں بھیجا۔ ۱۲ سرزج الاول کو کو یا دو ہفتے بعد سید الکونین صلعم اس جہان فانی سے بمیشہ قائم رہنے والی دنیا کونشر بف لے گئے۔ سو چنااورغور کرنا چاہیے کہ حضرت بغیر صلعم نے دس سال کی مدت میں عبادتوں اور ہزاروں سیاسی ہمعاشرتی اور قضائی معاملوں کے باوجود چوراسی جنگوں کا انتظام بھی فرمایا۔ بہی کارکردگی ، بہی چستی اور مستعدی ، بہی بیدار مغزی تھی جس نے خدا کی مدوسے بشریت کی تاریخ کے دھارے کا رخ بدل ڈالا۔ بھی انسان کے لئے بچھیں مگراسی قدر کہ دہ کوشش کرتا ہے۔

راومل

اے مسلمانان بھانستان! کنوں وقت آمد کہ بہ پینیم علیہ السلام اقتدا خمودہ ہمہ قبائل را بہ سلک اشحاد سیاس بیار بد۔ از ہمہ قبائل وکلا راانتخاب کردہ کے حکومت متحدہ تشکیل بدہید۔ لاشک ہرقبیلہ در امور داخلیہ آزادخواہد ماند، اما در معاملات بادولت بائے خارجہ حکومت متحدہ جواب دہ باشد۔ دریں امر را در زمان جریان این جنگ عالمگیر به اتمام رسانیده و به اتفاق رائے جناب خیری بیک صاحب یک سررشته و منصوبه برائے جمله عموی قبائل درست کرده بر انگلیس حمله بائے غارت گری و جہادی آغاز کدید ، و چیش از انعقاد معظم سنداستقلال جانب دریائے افک رابه دست آرید تا شارا ہنگام سلح از خلیفه معظم سنداستقلال بامد جرگونه حاصل شود ۔ اختلافات بارید شیعه وی وغیره رافراموش کرده جمه اللی قبیله برادرشوید۔

شو مجتمع چو پروی برآبه چرخ رفعت چول دره شو پریشان خاکت اگر مکان است شیعه و بم دبابی آخر مطبع قرآل از جنگ تو نصاری سلطان ایل جبان است نور خرد بداری، حیوال صفت چرائی مکن بر دیگران است مکن ترا برآنچه ممکن به دیگران است انسان خلیفه حق، حاکم به ملک فطرت برق و بخار و دریا او را ز خادمان است اور شکل و نقل د بجد اجرام علویه را ور شخل و نقل د بجد اجرام علویه را عبود که عقل پایش میزان آسان است(۱)

ترجمہ: اے بٹھانستان کے مسلمانو!وقت آگیا ہے کہ تمام قبیلے بیغیر اسلام علیہ السلام کی پیروی میں سیاس اتحاد بیدا کریں۔ تمام قبیلوں سے وکیل اور نمائندے نتخب کر کے ایک متحدہ حکومت بنائی جائے۔ بلاشبہ تمام داخلی امور میں ہرقبیلہ آزادرہے کا الیکن بیرونی ملکوں سے تعلقات وروابط کے باب میں

⁽۱) ان شعرول میں جواسقام میں ، و کسی تفریح کے عماج نہیں۔

حکومت متحدہ جواب دہ ہوگی۔اس کام کوموجودہ جگہ عالمگیری کے دوران میں پورا کرلواور جناب خیری ہے کے اتفاق رائے سے تمام قبائل کے لئے ایک منصوبہ بنا کرا گھریزوں پرغارت گرانہ چھاپوں اور جہاد کا آغاز کردو صلح ہونے سے پیشتر دریائے اٹک کے اس پار (سمت سرحد) کی زمین قبضے میں لے آؤ تاکہ آپ کو خلیفہ معظم کی طرف سے استقلال کی سنداور ہرشم کی مدول سکے۔ تاکہ آپ کو خلیفہ معظم کی طرف سے استقلال کی سنداور ہرشم کی مدول سکے۔ شیعہ تی وغیرہ کے پرانے اختلافات بھلادواور تمام قبیلے بھائی بھائی بھائی بن جاؤ۔ تم پرویں ستاروں کی طرح جمع ہوجاؤاور بلندی کے آسان پر پہنچو،اگر ذروں کی طرح بھرے رہو گے تو خاک سے سواتم ہارا کوئی مکان نہ ہوگا۔ شیعہ ہو یا والی آخرسب قرآن کے فرماں بردار ہیں۔

مسلمانو اجمہاری خانہ جنگی کا بہتجہ ہے کہ نصاری اس جہان کے حکمران بن گئے جمہیں خدا نے عقل عطا کی ہے، پھر حیوانوں کی خصلتیں کیوں لئے بیٹھے ہو۔ جو دوسروں کیلئے ممکن ہے تمہارے لئے کیوں ممکن نہیں؟ انسان خدا کا خلیفہ ہے، وہ اس کا نئات کا حاکم ہے بچل، بھاپ، دریا اس کے خادم ہیں۔ انسان بلندی پرنظر آنے والی ستاروں کی شکل نقل و حرکت اور ایک دوسرے سے دوری کا انداز و کرتا ہے، اس کی عقل آسان کی تراز و ہے۔

نواب ديراورخان جندول

ازاستماع این خبر که جناب نواب صاحب دیراول عبدائمین خان ابن عمرا خان را مدونموده در بدست آور دن ملک موروثی اومونق شد، اما پس ازال خود غاصب شده بر ملک جندول متصرف گشت در عالم اسلامی بیجانے پیدا شد و مسلمانان صادق رادل فگار گردید زیر اکه مسلمان چگونه مرتکب چنیں خلاف وعدگی شود قرآن مجید فرماید لیسس بامانیکم و لاامانی اهل المکتاب من یسعیمیل مسوءً ایسجون به (قانون الهی) نه حسب خوابمش شاست (ا مسلمانان) و نه حسب خوابش مردم کتاب (بهودونساری) بلکه قانون اللی این است جرکه بدی کند پاداش بدی یابد-باید که نواب صاحب دیراز عادت نفاق توبه کرده به دوست و برادردینی خودایفائے عهد کند و بامسلمانان قبائل متفق شده متوقع فقوحات عظیمه شود-

ترجمہ: یہ خبر من کرعالم اسلامی میں بیجان پیدا ہوا کہ نواب دیر پہلے عمراخال رئیس جندول کے بیٹے عبدالمتین خال کا مددگار بنا اور اس کے موروثی ملک کو دوسرول کے قبضے ہے آزاد کرانے میں کامیاب ہوگیا، لیکن بعد میں خود عاصب بن کر جندول پر قابض ہوگیا۔ سچ مسلمانوں کے دل اس واقعے سے نرخی ہو گئے ،مسلمان کس طرح ہوں وعدہ شکنی کامر تکب ہوسکتا ہے؟ قرآن مجید کا ارشاد ہے کہ اے مسلمانو! نہ تو قانون اللی تبہاری خواہش کے تابع ہے اور نہ اہل کتاب یعنی یہود ونصاری کی خواہش کے تابع ہے کہ جوکوئی برائی کرےگا، اس کی نزایا نے گا، چا ہے کہ نواب دیر نفاق سے تو بہر کے اپنے برائی کرےگا، اس کی نزایا نے گا، چا ہے کہ نواب دیر نفاق سے تو بہر کے اپنے فوجات کا امید وارست سے عہد نباہے اور مسلمانوں کے ساتھ ہو ، کہ بوی فقوطات کا امید وارست

علماءاورملآ ؤن يسابيل

اے علائے کرام وملاً بانِ عظام کہ دارث نی علیہ السلام ہستید بہ دو دستور پیغیر صلع بہ دقت معلفت شوید نخستیں این است کہ بنیاداسلام بردور کردن وشمنی ازمیانِ خلائل و پیدا کردن اتحادمیانِ قبائل نهاده شود چنا نکه قرآن شاہداست: واذکو وانعسمت الله علیکم اذکستم اعد آءً فالف بین قبام اسکم (یاد بکنیدانعام خدارا کہ برشامبذول کردہ ہنگامیکہ شادشن بودید ۔ پس ادورمیان داہا کے شاافت بیدا کرد) دو میں این است کہ چوں اخوت دین

میان مسلمین ورابطدا تعادمیان قبائل استوارشد، جناب پینیم بر خلاف دشمنان خدا در رسول و بدخوابال انسانیت جهاد وغزا آغاز کرد نتیجه ای دودستور العمل چنال شد که سلمانال دارائ عالم گردیده ،حسب فرمان واجب الا ذعان فقد کان لکم فی د سول الله اسوة حسنة شارا بم باید که بای دواصول قدیم متمسک شده قبائل را به سلک اتحاد کشیدو بردشمنان خدا حمله آورشده پنهانستان را ملک مستقل به سازیدوقبائل را برائ دوام از آسیب انگلیس ایمن نمائیدو عندالند والرسول ماجور وعندالناس مجوب کردید

ایں جائکتہ وطن پروری ہم موجود است ،درایا مصلح انگلیس وروس نے گزاشتند کہ مسلماناں متفق شوندو ہمیشہ تخم خلاف ونفاق میانِ ایشاں می کاشتند ۔اکنوں ایں دشمنان وین خود در بلا مبتلا اند۔مارا باید کہ ازیں فرصت استفادہ کنیم وغفلت ازیں فرصت غداری بوطن واہل وطن خواہد بود

مشمارمردكال راحبٍ وطن نه باشد، نك پشر بمان است، لعن خدا برآنست، الملهم انسصومن نصودين محمد واجعلنا منهم، واحذل من خذل دين محمد ولا تجعلنا منهم آئين!

مرجمہ: اے معزز عالمواور جلیل القدر ملاؤ! آپ لوگ نبی علیہ السلام کے وارث ہیں۔ حضرت پنجبر صلعم کے دود ستوروں پر بطور خاص توجہ کیجے: اول یہ کہ آن کہ آئیں کی دشنی رفع کر تا اور قبائل کو متحد کردینا اسلام کی بنیاد ہے جسیہا کہ قرآن کو اور جب میں دشن شق ہیں کواہ ہے: یاد کروخدا کا انعام جوتم پر نازل ہوا ، جب تم آپس میں دشن شق ، پس اس نے تمہارے دلوں میں محبت پیدا کردی۔ دو سراد ستوریہ کہ جب مسلمانوں کے درمیان اتحاد کا رابط مضبوط ہو کے درمیان اتحاد کا رابط مضبوط ہو گیا تو جناب پنجبر کے دشمان خدا اور رسول اور بدخوا ہانِ انسانیت کے خلاف جہاد شروع کردیا۔ ان دودستوروں کا نتیجہ یہ ہوا کہ مسلمان جہان کے مالک بن

مے ،اس ارشاد کے ہموجب کدرسول اللہ کی پیروی بیس تمہارے لئے نیک نمونہ ہے، آپ لوگوں کو بھی چاہیں دو پخت اصول پر مضبوطی سے جم جائیں۔ قبیلوں کو انتحاد کے دشتے میں پروئیں۔ خدا کے دشنوں پر تملہ آ ورجوں، پھانستان کو ایک مستقل ملک بنا کیں اور قبیلوں کو بھیشہ کے لئے انگر یزوں کے آسیب سے محفوظ کردیں۔ اس جگہ وطن پروری کا تکت بھی موجود ہے۔ مسلم کے اوقات میں انگر یز اور دوس مسلمانوں کو انقاق کا موقع ندویے شے اور بھیشدان کے درمیان مخالفت ونفاق کا آئے ہوئے رہے تھے۔ اب بیروشن خورمصیبت میں جتا ہیں، ہمیں چاہیے کہ فرصت سے فائدہ اٹھا کیں، اس فرصت سے ففلت وطن اور اہل وطن سے غذاری کے مترادف ہوگی۔

جس فض كدل من وطن كى عبت نبيس المعدد ند بجود و انسانيت كے ليے باعث نك بهداك و انسانيت كے اللہ باعث نك بهداك و الله و كالددگار الله و الله و كالله و كا

الحر مالحرام ۱۳۳۷ه (اکتوبر ۱۹۱۵) وکیل خلیفه سیّدالرسلین السلطان المعظم محمد کاظم بوزباشی

وكيل نقذس مآب شيخ الاسلام (مولوي) مجمه بركت الله

﴿ ضميمه (۲) ﴾

میں ہے کاظم بے کا ذکر ضروری ہے۔

راجامهندر پرتاپ کابیان

راجا مہندر پرتاپ نے بھی اپی''داستانِ حیات' میں جرمن اور ترکی مشن کے حالات اختصار آبیان کے جیں، جن کا خلاصہ ذیل میں پیش کیاجا تاہے:

ا۔ راجا صاحب ۱۵ رفروری ۱۹۱۵ وکو برلن پنچے تھے اور ۱۵ راپریل کو وہاں سے
ہوم افغانستان روانہ ہوئے۔ راستے میں وہ ویا تا (آسڑیا) تھہرے، جہاں عباس طلمی پاشا
مابق خدیومصراور سردار امراؤ سنگھ سے ملاقات کی، پھر استنبول میں سلطان محمد شادخاں،
عازی انور پاشا، عازی طلعت پاشا اور ولی عبد سلطنت سے ملے وہاں سے روانہ ہوکر
بغداد پنچ، جہاں عازی رؤف پاشا سے ملاقات ہوئی۔ ایران کے راستے ہرات پنچ۔
۲۔ راجا صاحب کے رفقاء یہ تھے: ڈاکڑ قان بمن حیگ (جس کا درجہ سفارت
فانے کے سکریٹری کا تھا)، ڈاکڑ بیکر (Baker) ہمٹر روہر (Rohr) (بمن حیگ کا سکریٹری) ہمولا نا برکت اللہ، کچھ افغان آفریدی جنگی قیدی، دو بونیر کے افغان جو راستے میں پچھ اور جرمن ہمراہ ہوگئے۔ ترکوں
ریاستہا ہے متحدہ امریکہ سے آسئے تھے۔ راستے میں پچھ اور جرمن ہمراہ ہوگئے۔ ترکوں

س۔ ہرات سے ان کیلئے سرکاری مہمانداری کا انتظام ہوگیا۔ ۲ راکتوبر ۱۹۱۵ء کو کا بنچ۔ باغ بابر میں انھیں تھہرایا گیا۔ پغمان میں امیر صبیب اللہ خال اور سردار نصر اللہ خال سے وفد نے ملاقات کی جوشج سے بعد دو پہر تک جاری رہی۔ پھران سے الگ الگ ملاقاتیں ہوئیں۔ راجا صاحب کے پاس قیصر جرمنی اور سلطان ترکی کے خطوط

تھے۔فان ہن ملک کے پاس جرمن جانسلر کا مکتوب تھا۔

۳۔ کابل میں حکومت موقتہ قائم کی ،جس کےصدر راجاصاحب ،وزیر اعظم مولانا برکت اللہ اور وزیر داخلہ مولانا عبید اللہ تھے رمسٹر اللہ نو از خاں ، ڈاکٹر خوشی محمد (عرف محمد علی واحد حسن) وغیر وسکریٹری مقرر ہوئے۔

۵۔ حکومت موقتہ کی طرف سے زارروں کے پاس سفارت بھیجی گئی۔خط سونے کے پتر پر لکھا گیا تھا،اسے ڈاکٹر خوشی محمد (محم علی)اور ڈاکٹر متھر اسٹکھ (جس کا دوسرا نام راجاصاحب نے شمشیر سنگھ کھاہے)روس لے گئے۔

۲۔ ۱۹۱۷ء کے اواخر میں راجاصاحب مزارشر بیف اور ۱۹۱۷ء میں روس گئے۔ ۷۔ راجاصاحب اور مولانا برکت اللہ ہی کی کوشش سے مہا جرطلبدر ہا ہوئے جنھیں حکومت افغانستان نے افغانستان کینجتے ہی قید کر لیا تھا۔ (۱)

⁽۱) My lifestory ازراجامېدر پرتاپ (۱۳۵۳ تا ۱۵۸) ـ

ساتوال باب:

امير رحمت الله

نياامير

امیر نعمت الله کی شہادت کے وقت ان کے بڑے صاحبز ادے برکت الله بہت چھوٹے تنے اور جماعت مجاہدین میں مولا نا رحمت الله (بن ایان الله بن امیر عبد الله)

کے سواکوئی شخص الیانہ تھا جس کی امارت پرسب یا اکثر اصحاب شنق ہوجاتے۔ وہ امیر شہید کے برادر عم زاداور برادر نبیتی تنے اور انہیں کو جماعت میں سب سے زیادہ اثر ورسوخ ماصل تھا، چنا نچہ وہی بالا تفاق امیر پنے گئے، ہمیں ان کی حربی اور انظامی صلاحیتوں کے بارے میں کچھ معلوم نہیں، لیکن میدواقعہ ہے کہ ان کی پوری تربیت امیر عبد الله مرحوم اور امیر عبد الکریم مرحوم کی آغوش میں ہوئی تھی۔ ۱۸۸۸ء سے وہ آگ اور خون کے ان امیر عبد الکریم مرحوم کی آغوش میں ہوئی تھی۔ ۱۸۸۸ء سے وہ آگ اور خون کے ان ہنگاموں میں شریک چلے آتے تھے جنہیں عرف عام میں لڑائیاں کہا جا تا ہے۔

مولوی برکت الله اوران کے بھائیوں کی تربیت انہیں امیر صاحب نے کی ، وہ سب ان کے حقیق بھانچ تھے اور مولوی برکت الله کی شادی امیر رحمت الله ہی کی اکلوتی صاحبز ادی ہے ہوئی ، برکت الله جوان ہوئے اور جماعت کے کاروبار میں سرگرم حصہ لینے کی صلاحیتیں ابحر آئیں تو انہیں ہے۔ سالاری اور مدار المہامی کے عہدے مونب دیئے گئے۔

تلقّب كامسكه

مواوی برکت الله ابتدا بی سے جماعت میں "شنرادہ" کے لقب سے معردف

ہو گئے تھے بعض مخاط حضرات نے اس تلقب کے متعلق اچھی رائے ظاہر نہیں کی۔(۱) اور يقيبنا جماعت مجاهدين كے سلسلے ميں اس نوع كے تلقبات كوكوئى بھى پسنديده باخوش گوار نہیں ہجھ سکتا اور نہاس کیلئے کوئی معذرت پیش کرنا مناسب معلوم ہوتا ہے۔ میں سمجھتا ہوں اس لقب كا آغاز يوں ہوا كه بركت الله صاحب بہت كم عمر تھے، جب ان كے والد نے اجا تک شہادت یائی،لوگ پیار ہے برکت الله کوشنرادہ کہنے گئے ۔شدہ شدہ پیمستقل لقب بن گیا، ورنه ظاہر ہے کہ نہ جماعت مجاہدین کی امارت کا سلسلہ موروثی تھا، نہ کسی امیر جماعت کی حیثیت مستقل حاکم یا بادشاہ کی تھی کہ اس کے بیچے کوشنر اور قرار دیا جاتا، نہ کسی امیر یامولا ناولایت علی مرحوم کے خاندان میں ہے کسی فردنے اس قتم کے انتسابات مجھی گوار اسمجے، جن سے دنیوی بادشاہی کی بوآتی ہو۔ یہ خداکی راہ میں انتہائی جانبازانہ خدمات کا معاملہ تھا اور منصب امارت جماعت کے اتفاق و رضامندی برموقوف تھا، انتخاب كے سلسلے ميں امير كى مهارت فِن حرب اور صلاحيت قيادت كےعلاد واللهيت، زيد و تقوى اور جذبه خدمت دين كوپيش نظرر كها جاتا تها مولا ناولايت على مولا ناعنايت على ، مولا ناعبداللداورمولا ناعبدالكريم انہيں خصوصيات كى بناء براميرينے محت تے اوران ك جوحالات او پر پیش کیے جاھے ہیں،ان سے روز روش کی طرح آشکارا ہے کہ انکی بیش بہا زند گوں کا ایک ایک لحصرف خدمت دین اور جہاد آزادی میں صرف ہوا اور انہوں نے دنیا کی ہرمتاع بے دریغ اس راہ میں قربان کردی۔ان میں سے بعض کوجھوٹے یا بڑے علاقوں میں حکمرانی کاموقع بھی ملا، تاہم وہ اینے آپ کو برا بر'' فقیر' سیحصتے رہے اور' 'فقر'' بى ان كاسر ماية افتخار تها، كيكن دينوى مال واسباب عي محروى كافقرنبيس ، بكه علامه اقبال کی اصطلاح میں'' فقرغیور''جس کا مقصد ونصب انعین خدا کی رضا کے سوا کیجھنہیں اور جو اس رضا کی خاطر دنیا کی ہرشنے کو بے دریغ محکرادیتا ہے۔

⁽١) مثلاً ملاحظه بومواد نامسعود عالم مرحوم كي كتاب "بندوستان كي پيني اسلامي تحريك" طبع دوم بس: ٥٠١

غرض ایسے تلقبات وانتسابات وانسته اختیار کیے گئے ہوں یا اتفاقید کسی کے نام کا جزو بن گئے ہوں انتقاقید کسی بھی نقطۂ نگاہ سے جماعت مجاہدین کے ساتھ کوئی مناسبت نہیں، وہاں صرف ایک ہی امتیاز مطلوب وزیبا ہے اور وہ سے کہ کس نے مقاصد خدمت میں زیادہ سے زیادہ قربانیاں کیں۔

اسعبدكاكام

جس حد تک بچھے علم ہے مولانا رحمت اللہ کے عہد امارت میں رزم و پیکارکا کوئی قابل ذکر واقعہ پیش نہ آیا جمکن ہے کہیں کہیں چھوٹی چھوٹی جھڑ پیں ہوئی ہوں ، پہلی جنگ یورپ پر افغانستان کی تیسر کی جنگ کے دوران میں سرحد آزاد کے اندر جا بجا جوم کز بن گئے تھے وہ آہستہ آہستہ ٹو ئے رہے ،صرف ایک چرکنڈ کا مرکز باقی رہ گیا ، جس نے خود اسمست کے مرکز ہے تھی زیادہ شہرت حاصل کرلی۔ بیمرکز جماعت کے ایک ممتازر کن مولوی عبدالکریم (۱) نے قائم کیا تھا جو تنوج (یوپی) کے رہنے والے تھے۔افسوں کہان کے زیادہ حالات معلوم نہ ہو سکے ،صرف اتنا معلوم ہوا ہے کہ مرکز قائم کر لینے کے بعدانہیں امیر نعمت اللہ کے متعلق نا خوشگوار اطلاعات ملیں تو اسمست چلے گئے۔ ہندوستان کے تمام مرکز وں کواطلاع دیدی کہ چندہ چم کنڈ بھیجیں ، واپس چرکنڈ بہنچ تو بھلے چنگ سوئے ، مجمع مرکز وں کواطلاع دیدی کہ چندہ چم کنڈ بھیجیں ، واپس چرکنڈ بہنچ تو بھلے چنگ سوئے ، مجمع مرکز وں کواطلاع دیدی کہ چندہ چم کا درائی نے بتایا کہ خاصے سی رسیدہ تھے۔

یچھ مدت تک مولوی فضل الہی مرحوم وزیر آبادی یہاں عارضی طور پر امیر ہوئے پھراس کا انتظام متنقلاً مولا نامحمد بشیرشہید کے حوالے کردیا گیا اوراپنی شہادت تک کم وبیش چودہ برس وہی اس کے قلم ونسق کے ذمہ دارر ہے۔مولا نامحمد بشیر نے سرحد پہنچتے ہی حکومت افغانستان اوروہاں کے بعض اکابر سے تعلق پیدا کر لئے تھے۔اس وجہ سے

⁽١) اميرعبدالكريم نيس بكديد جماعت بجابدين كاكب يرافي ركن تق جوعا لبا ١٩٢٢ ميل فوت موت ـ

جماعت مجاہدین کو افغانستان میں خاص احتر ام حاصل رہا۔ غالبًا ایک رقم سالانہ ملق تھی، خود مولا نامحر بشیر کو جو پچھ ملتا تھا پورے کا پورا جماعت کی نذر کر دیتے تھے۔ وہ وقتا فو قتا کا بل جاتے رہتے تھے۔ ۱۹۳۳ء میں مولوی برکت اللہ اور جماعت کے دس بارہ اصحاب کو بھی اپنے ساتھ لے گئے تھے تا کہ ارباب اختیار سے جماعت کا حساب اور جماعت کا رشتہ براہ راست استوار کردیں۔ بیان کا آخری سفر تھا جس سے مراجعت پروہ شہید کر ڈالے گئے۔

''المحرض''اور''المجاهد''

ز مانه کا مذاق بدل چکا تھا اور اخبارات اشاعت مقاصد کا ایک عمرہ ذریعہ بن گئے تھے، اس وجہ سے خود جماعت نے بھی ایک معمولی دئتی پرلیں کے ذریعے سے مختلف اوقات میں اخباروں کے اجراء کا انتظام کیا۔ ان میں سے دواخباروں کے چند پر پے مجھاتفاقیہ میں ل گئے، ایک کانام' السمحوض ' تھا۔ اس کی پیثانی پریہ آیت درج کا شوق دلا) اس کا پہلا ہر چہ ۸ روتمبر ۱۹۳۸ء کو نکلا تھا۔ بیمعلوم نہ ہوسکا کہ اس کے کل كتنے ير چشائع ہوئے۔ دوسرااخبار 'الممجاهد' 'جنوري ١٩٨٠ء ہے تكانا شروع ہوا۔ اس كى پييثانى يربية يت ثبت تَى: وَلَنَبْلُونَ عُنْكُمْ حَتَّى نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالسَصَّابِويْنَ وَنَبْلُواْ اَخْبَارَ مُحْمَ (اورجمَتْهِيںضرورآ زمائيں گےتا كەجان ليس كون تم میں سے جہاد کرنے والے ہیں اور کون ثابت قدم رہنے والے، اور تمہارے احوال کو جانچیں گے) بیمولا نامحد بشیرشہید کی یادگار میں نکالا گیا تھا، چنانچداس پر لکھا جاتا تھا: 'ب يا د گار شهبيد ملت الغازي المهاجر مولوي محمد بشير رحمة الله عليه '' دونو ب اخبار و بي ميمو ما فارسي اور اردو کے مضامین ہوتے تھے کہھی بھی پشتو کے مقالات بھی درج کیے جاتے تھے۔

جماعت مجاہدین کے عام مخاطبین یہی تین زبانیں سمجھتے تھے، میں ان دونوں اخبار دل کی پیشانیوں کی تصویریں کتاب میں شامل کررہا ہوں تا کہ یادگار کے طور پر محفوظ رہیں۔

اميركىسيرت

مولانا رحمت الله کی سیرت کے متعلق مولوی مجرعلی صاحب تصوری مرحوم نے "مشاہدات کابل و یا عنتان" بیں جو پجھتے مرفر مایا ہے بیں اس کے متعلق پچھ موضییں کرسکتا۔خود بیس ۱۹۲۵ء بیں ان سے ملاتھا، یقین جانئے کہ مجھے وہ زہد وتقوی ، ایثار و قربانی اور سادگی و بنفسی کا ایک مثالی نمونہ نظر آئے۔ممکن ہے منصب امارت پر فائز مون سے بیشتر ان کی عام حالت مختلف ہواور مولوی محمد علی مرحوم نے انہیں غالبا ۱۹۱۸ء میں دیکھا تھا، جب مولانانحت اللہ امیر تھے۔

میں اسم سے گیا تو امیر صاحب نے کھدر کی شلوار اور کھدر کا لیا کرتا پہن رکھا تھا، ہر کھدر کی دستارتھی جے سیاہ رگوالیا تھا، پاؤں میں دیبی جوتا تھا، لیک دونوں پاؤں کے جوتوں کی شکل مختلف تھی، میں نے پوچھا تو معلوم ہوا کہ ایک جوتا کی سے بدل گیا تھا، حالت کے باوجود نمل سکا تو امیر صاحب بدلا ہوا جوتا ہی بہن رہے ہیں، وہ کام دے رہا ہوا دور جب کام دے رہا ہے تو اسے جھوڑ کر نیا جوتا خرید نامحض تکلف ہے یائنس پروری۔ مور جب کام دے رہا ہے تو اسے جھوڑ کر نیا جوتا خرید نامحض تکلف ہے یائنس پروری۔ وہ پانچوں وقت کی نماز مسجد میں خود پڑھاتے تھے، جماعت کے کاموں سے فارغ ہوتے تو اس کھیت میں کام کاخ کے لئے چلے جاتے جوامیر کے لئے محصوص تھا۔ اس میں موسم کی سبزیاں ہوتے روز ان یا تیسر ہے دن سبزی اتار تے ، تھوڑ ک تی اپنے لئے رکھ کر موسم کی سبزیاں ہوتے روز ان کی خدمت موسم کی سب کی سب مجاہدین کے گھروں میں بانٹ آتے۔ جھے تین چارر وز ان کی خدمت میں رہنے اور گھنٹوں بات چیت کرنے کا موقع ملا، وہ خود بہت کم ہولئے تھے، میں کوئی سوال کرتا تو تفصیل سے جواب دیتے۔ د بی علوم امیر عبد الکریم مرحوم سے پڑھے تھے، میں کوئی سوال کرتا تو تفصیل سے جواب دیتے۔ د بی علوم امیر عبد الکریم مرحوم سے پڑھے تھے، میں کوئی سوال کرتا تو تفصیل سے جواب دیتے۔ د بی علوم امیر عبد الکریم مرحوم سے پڑھے تھے، میں کوئی سوال کرتا تو تفصیل سے جواب دیتے۔ د بی علوم امیر عبد الکریم مرحوم سے پڑھے تھے،

فنونِ حرب جماعت کے مشاق استادوں سے سیکھے تھے۔ جبیسا کداو پرعرض کیا جا چکا ہے، وہ عنفوانِ شاب سے مختلف معرکوں میں شریک ہونے لگے تھے۔ پرانی وضع کے تمام ہتھیاروں کا استعمال بہت اچھے طریقے پر جانتے تھے۔

جهاديشمير

آزادی کشیر کے جہادیں جماعت بجاہدین بھی شامل ہوئی تھی ،اس کے ساتھ امبر صاحب بھی کشمیر بہنچ اور جب تک لڑائی ملتوی نہ ہوئی ، برابر محافی جنگ پررہے۔ سرحد آزاد سے باہر آنے کا ان کیلئے یہ پہلا اور آخری موقع تھا، میراخیال تھا کہ جماعت کے حالات مرتب کر لینے کے بعد دوبارہ ان کی خدمت میں پہنچوں گا اور کم از کم وہ حصے انہیں طرور سنالوں گا، جن کا تعلق ان کی ہوشمندی کے زمانے سے ہے۔ لیکن افسوس میں اپنا کام پورانہ کر پایا تھا کہ انہیں مالک حقیقی کی طرف سے بلاوا آگیا اور وہ اس عالم میں پہنچ کام پورانہ کر پایا تھا کہ انہیں مالک حقیقی کی طرف سے بلاوا آگیا اور وہ اس عالم میں پہنچ جہاں جانے والے والی نہیں آتے اور موت کے درواز سے سے گذر سے بغیران شک پہنچنامکن نہیں۔ رحمہ اللہ تعالی

موجوده صورت حال

مولا نارحمت الله کی وفات کے وقت مولوی برکت الله نظر بند تصاور غالبًا اب تک نظر بند بیں۔ حکم نظر بندی شاید سابقه حکومت سرحد نے جاری کیا تھا، جس کی وجہ وعلّت مجھ پر منکشف نه ہوسکی۔ پچھنہیں کہا جا سکتا کہ اب جماعت کے نظم کا کیا حال ہے اور کاروبارکس طرح چل رہا ہے۔ اس حقیقت کا اعتراف کرنا چاہئے کہ مولوی برکت الله نے ہوش سنجالنے کے وقت سے ضروری انتظامات کے سلسلے میں جوسر گرمیاں دکھا کیں، وہ یقینا قابل ستائش تھیں، انہوں نے مختلف دوائر سے تعلقات پیدا کئے۔ امیر رحمت الله اپی سادگی اورخلوت پیندی کے باعث وہ کام انجام نددے سکتے تھے جومولوی برکت الله اپنی سادگی اورخلوت پیندی کے باعث وہ کام انجام نددے سکتے تھے جومولوی برکت الله

نے انجام دیے۔

اب وہ حالات ہی باتی نہیں رہے جن میں جماعت کی تاسیس ہوئی تھی ،ان مقاصد
کی حیثیت ہی بدل چک ہے، جن کیلئے سواسو سال تک بے مثال قربانیوں کا سلسلہ
غیر منقطع طریق پر جاری رہا۔ نئے ماحول نے جہاد فی سبیل اللہ کے مواقع بھی بدل دیئے
ہیں اور اب تنظیمات بھی نئے اصول پر ہونی جا ہئیں۔اس لئے کہ وہ دورختم ہوگیا جس
ہیں اور اب تنظیمات بھی نئے اصول پر ہونی جا ہئیں۔اس لئے کہ وہ دورختم ہوگیا جس
کے تقاضوں کی بناء پرسید احمد شہید نے ۱۸۲۲ء میں خطۂ سرحد کو بطور مرکز منتخب کیا تھا۔

حرف آرزو

حکومت یا کتان مولوی فضل الی مرحوم کی تحریک پر مزر دعداراضی کے دو چک ان اصحاب کیلے مخصوص کر چکی ہے،جنہوں نے جماعت مجامدین کی اعانت کےسلسلے میں انگریزی حکومت کے ماتحت گونا گول محنتیں اور مشقتیں برداشت کیں۔ کیا جماعت مجاہدین کے دہ افراد کم از کم ایسے ہی سلوک کے مستحق نہیں جواسمست میں بیٹھے ہیں اور حالات ہے وا تفیت رکھنے والے اصحاب کوعلم ہے کدا نئے معمولی گزارے کا بھی کوئی قابل ذکر وسلہ موجود نہیں۔ آخریبی لوگ ہیں، جن کے اسلاف اسلامیت و آزادی کا پرچم سربلندر کھنے کیلئے جانیں لڑاتے رہے اور ان کے خونِ حیات سے سرحدی کو ہتان کی وادیاں اور میلےمزین ہوتے رہے۔ کیاسا دات ِستھاندو ملکایاسا دات ِبونیر پرخصوصی توجہ مبذول ند ہونی جاہے جوسید شہید کے وقت سے مجاہدین کے بہترین معاون رہے؟ کیا بورے علاقہ مرحد میں کوئی دوسرا گھرانا مل سکتا ہے، جس نے ان سادات کے برابر مجاہدین کی خدمات انجام دی ہوں یااس حق پرست گروہ کی یاوری میں و لیک جانی اور مالی قر بانیاں کی ہوں؟ ان حضرات کی کوئی خدمت اور کوئی قربانی کسی دینوی منفعت کے لئے نہ تھی، وہ صرف اینے خدا ہے جز ا کے آرز ومند تھے، کیکن کیا کروڑ وں فرزندان تو حید کی اس وسیج سرزمین میں جو آج آزادی کی نعت عظمیٰ سے دلشاد و بامراد ہے، ان بزرگوں اور جوال مردول کی قدر ومنزلت اور عزت واحترام کا زیادہ سے زیادہ عملی اظہار نہ ہونا چاہئے، جنہوں نے خوفنا ک تاریکی میں اپنی شدرگ کے لہوسے آزادی کے چراغ جلائے اوراس جذبہ صادقہ کو بھی افسردہ نہ ہونے دیا، جوقو موں اور ملتوں کی زندگی کانقش بنداور فلائے دوام کا دسیلہ ارجمند ہے؟

آ مھواں باب:

جماعت مجامدين اور بزرگانِ ياغستان

روشني کي کرنيں

جماعت بجاہدین کے قیام یا بختان کی طویل واستان من وعن سائی جا بھی ہے، اس سے واضح ہے کہ جماعت کو بار ہا نہایت رخی دہ حالات سے سابقہ پڑا اور سرحد بول یا یا بختا نیوں کے ہاتھوں الیں خوفٹاک تکلیفیں اٹھا کیں، جن کا ذکر بھی دل میں ناسورڈال دینے کیلئے کافی ہے۔ جن دشمنوں کے خلاف جا نباز انہ جنگ مجاہدین کا نصب العین تھا، شایدوہ بھی ان ہے دیا دہ تکلیفیں نہ پہنچاتے ، تا ہم اس تار کی میں بھی روشن کی کرنیں ملتی شایدوہ بھی ان سے زیادہ تکلیفیں نہ پہنچاتے ، تا ہم اس تار کی میں بھی روشن کی کرنیں ملتی ہیں، مثلاً سادات ستھانہ و ملکا یا سادات بونیر جن کا دامنِ وفا ہر دور میں مہتاب کی طرح اجلا اور بے داغ رہا اور جن کی اعانت و رفاقت بھی کسی ذاتی غرض سے آلودہ نہ ہوئی۔ حضرت سیدامیر ملا صاحب کو ٹھازندگی کی آخری ساعت تک مجاہدین کے معاون و خیرخواہ دے اگر چاس سلسلے میں آئیس حددرجہ در دناک مصائب کا ہدف بنیا پڑا۔

حضرت اخوند صاحب صوات نے بھی جنگ امبیلہ کے بعد مجاہدین سے انتہائی خلوص کا برتاؤ کیا تھا، بلاشبہ بعد از اں اس برتاؤ کی کیفیت بدل گئی، ان کے علاوہ بھی مختلف بزرگوں سے وقتانو تناجماعت کو بلا واسطہ امداد کمتی رہی۔

ملاصاحب ہدّہ

بہ لحاظ فضل و تقدّی ان میں سے تقدم ملا مجم الدین صاحب کو حاصل ہے جوملاً

صاحب ہذہ کے نام سے معروف ہیں۔ وہ یا عنتان کے بہت بڑے عالم اور مقبول عوام پیر طریقت تھے۔ اس کے علاوہ افغانستان کے مشرقی حصوں ہیں بھی انہیں وسیع اثر و رسوخ حاصل تھا۔ اجنبی اقتدار کے متعلق ان کا نقطہ نگاہ وہی تھا، جس پر جماعت مجاہدین قرنوں سے کاربند چلی آتی تھی۔ چنانچہ جب ۱۸۹۵ء ہیں انگریزوں نے چر ال پر پیش قدمی کی تو ملآئے موصوف نے اس پیش قدمی کی مزاحت اور آزادی یا عنتان کی حفاظت میں کوئی دقیقہ سعی افعاندر کھا، بعد میں آپ کی زندگی کا ایک ایک لحداس مقصد کی پیش بر و میں مرف ہوا۔ مجاہدین کو چرکنڈ میں مرکز قائم کرنے کی ضرورت پیش آئی تو ملا صاحب میں مرف ہوا۔ مجاہدین کو چرکنڈ میں مرکز قائم کرنے کی ضرورت چین آئی کو ملا صاحب میں کی مجد کے سائے میں اس کے لئے جگہ تجویز ہوئی ، تفصیلات چرکنڈ کی جائے وقوع اور کیفیت آبادی کے سلسلے پیش ہوں گی۔ اور کیفیت آبادی کے سلسلے پیش ہوں گی۔

ملآصاحب بإبره

میملاً صاحب بھی تحریک آزادی کے تمام کارکوں اور بجاہدین کو ہرمکن ذریعے سے
مدددیتے رہے۔ مرکز چرکنڈ کی حفاظت ہیں ان کے اثر ورسوخ کا بھی خاص حصہ ہے،
ان کا اصل نام غالبًا عبد الکریم تھا، یا غستان کے اکا برعلاء والل طریقت ہیں شار ہوتے سے ،مولوی مجمع کی تصوری نے سفر یا غستان ہیں ان کی زیارت کی تھی ، لکھتے ہیں:
ملاصاحب سفید ریش ہزرگ تھے، میرے خیال ہیں اس وقت
مدا اساحب سفید ریش ہزرگ تھے، میرے خیال ہیں اس وقت
مینک کے قرآن شریف پڑھتے تھے اور ایسے تیز روکہ جوان بھی مشکل سے
مینک کے قرآن شریف پڑھتے تھے اور ایسے تیز روکہ جوان بھی مشکل سے
ماتھ دے کیس ،و بلے پتلے جسم کے ، دراز قامت اور چیرے سے نور ایمانی اور
فہم وفراست عیاں تھے ، بات چیت میں نہایت سنجیدہ۔(۱)

⁽۱) مشاهدات كالل وياهمتان من : 22

ملآصاحب سنڈاکے

ان ملا صاحب کا اسم گرای علی احمر تھا۔ چکیسر کی طرف دریائے سندھ کے مغربی کنار ہے پر' سنڈ اک' نام ایک گاؤں ہے، ملاصاحب اس کی نسبت ہے مشہور ہوئے۔ زہد وعبادت میں آئیس او نچا درجہ حاصل تھا، الل صوات نے نواب دیر کے تصرف سے آزادی حاصل کرنے کیلئے سخطیمات کا سلسلہ شروع کیا تو ملا صاحب کو اپنے ہاں لے آئے، اول اس خیال سے کہ ایک مقدس اور خدا رسیدہ بزرگ کی سر پرستی میں ضروری سخطیمات جلد پایے بحیل پر پہنچ جا ئیس گی۔ دوم یہ خیال ہوگا کہ ملا صاحب، معزت صاحب، حضرت معاجب بد ہ کے مرید اور خلیفہ بیں اور ایکے متعدد خواجہ تاش آس پاس کے قتف علاقوں میں موجود تھے، لہذا ان کی وجہ سے سب کی تائید واعانت حاصل ہوگ ۔ ویسے بھی اس می موجود تھے، لہذا ان کی وجہ سے سب کی تائید واعانت حاصل ہوگ ۔ ویسے بھی اس حمل کی تو بیات کا سرچشہ سمجھا جاتا تھا، انہوں نے صوات میں جو تحریک جاری کی اسکے حالات آگے چال کر بیان کئے جائیں گے۔ انہوں نے صوات میں جو تحریک جاری کی اسکے حالات آگے چال کر بیان کئے جائیں گے۔

حاجی صاحب تر نگ زئی

حاجی صاحب کا نام فضل واحد تھا بخصیل چارسدہ کے ایک گاؤں ترکگ زئی کے باشدے تھے، یدان آٹھ مقامات میں شامل تھا جن کی وجہ سے زمانہ کا فنی میں علاقہ چارسدہ کا نام ہشت گرر ہا۔ سیدعبد الجبارشاہ ستھانوی حاجی صاحب کے متعلق لکھتے ہیں کہ آئیں:

میں نے دیکھاہے، ووایک عابدوزاہداورصار فخص ہے، علم اس کا زیادہ نہیں بہت سادہ، صاف دل اور نیک بزرگ ہے۔(۱)

⁽١) شهادت التقلين مصدورة فلي نسويس ١٢٠٠

مولا ناحسین احمد مدنی فرماتے ہیں کہ حاجی صاحب نہایت متی ، پر ہیز گار، صاحب علم فضل اور مشہور پیران طریقت وسلوک ہیں سے تھے۔(۱) ان کاتعلق شیخ البند حضرت مولا نامحود الحن کی تحریک آزادی سے بھی پیدا ہوگیا تھا۔ پہلی جنگ یورپ ہیں ترک انگریزوں کے خلاف جرمنی کے معاون بن گئے اور خلافت اسلامیہ کی طرف سے جہاد کا اعلان ہوگیا تو حاجی صاحب بھی دعوت جہاد کیلئے وقف ہو گئے۔ زمانہ برانازک تھا، جب معلوم ہوا کہ آئیس گرفتار کر لینے کی تجویزیں زیر غور ہیں تو ضعف پیری کے باوجود بہت معلوم ہوا کہ آئیس گرفتار کر لینے کی تجویزیں زیر غور ہیں تو ضعف پیری کے باوجود بہت بڑی جا کداد چھوڑی اور وطن مالوف سے ہجرت کر کے بونیر چلے گئے۔ اہل وعیال کو بھی ساتھ لے گئے ان کے فرزندوں میں سے فضل اکبر عرف بادشاہ گل خاص طور پر قابل ذکر ساتھ لے گئے ان کے فرزندوں میں سے فضل اکبر عرف بادشاہ گل خاص طور پر قابل ذکر ہیں، ملا صاحب بابرہ اور ملا صاحب سنڈ ا کے کی طرح حاجی صاحب نے بھی حضرت صاحب بڑی ہیں۔ صدوحانی فیض حاصل کیا تھا۔

جنگ رستم

بونیر پہنچتے ہی حاجی صاحب نے نفیر عام کاصور پھونک دیا، چونکہ خودامن وراحت کی زندگی اور بہت بڑی جا کداد چھوڑ کرراہ جی شرکا مزن ہوئے تھے، علاوہ بریں علم و فضل اور تقدی میں خاص شہرت حاصل تھی، اس لئے بہت جلد خاصی بڑی جمعیت کو بغرض جہاد تیار کرلیا۔ جماعت مجاہدین بھی ان کے ساتھ شامل ہوگئی اور انہوں نے سدم یارستم کے علاقے میں انگریزی چوکیوں پر ہلّہ بول دیا، حکومت کوان کی سرگرمیوں کاعلم ہو چکا تھا اور مقابلے کے لئے پوری تیاری کرلی گئی جملہ آوروں کے خلاف تو پوں کی گولہ باری شروع ہوگئی اور پہلے ہی جملے میں ایک سو کے قریب جانبیں تلف ہوئیں۔ اس پر از ور شروع ہوگئی اور پہلے ہی جملے میں ایک سو کے قریب جانبیں تلف ہوئیں۔ اس پر از ور

⁽۱) نتش حيات جلدووم بص:۱۸۱

کہ وہ ہردینی دعوت پرخلوس سے جانیں قربان کرنے کیلئے تیار ہوجائے تھے، لیکن چونکہ باقاعدہ عسری تظیمات سے محروم تھ فوجوں کی طرح جم کراڑ نا آئیں نہ آتا تھا، اس لئے ان کی قربانیاں عموماً ولخواہ نتائج بیدا نہ کرتی تھیں، البتہ جماعت مجاہدین نے استفامت سے مقابلہ کیا اور مسلسل چھا ہے مارتے رہے، اس رزم و پیکار کے سلسلے میں جماعت کا ایک بلاین امیر نعمت اللہ کے حالات میں چیش کیا جاچکا ہے۔

حاجی صاحب کی مجاہد اند مساعی کے ساتھ ساتھ ملا صاحب سنڈ اکے نے صوات میں جو اقد امات کئے ان کی تفصیل بیان کرنے سے پہلے ضروری ہے کہ صوات کے عمومی حالات کا سرسری نقشہ پیش کردیا جائے۔

صوات ميں صورت ِ حالات

صوات کے بادشاہ سید اکبرشاہ سقانوی کی وفات عین اس دن ہوئی تھی جس دن ہندوستان بیل افغرز ندشنرادہ ہندوستان بیل افغرز ندشنرادہ مبارک شاہ کم وبیش چھ مبینے تک نظم ونسق کے بکھرے ہوئے شیرازے کو درست کرنے میں گئے رہے۔ جب انہوں نے دیکھا کر گالف قو توں کا طوفان خطرناک صورت اختیار کر گیا ہے تو وہ خود باہر نکل آئے کہ اہل صوات اپنے لئے جو انظام مناسب سمجھیں کر گیا ہے تو وہ خود باہر نکل آئے کہ اہل صوات اپنے الے جو انظام مناسب سمجھیں کر گیا ہے تو ہو خود باہر نکل آئے کہ اہل صوات اپنے الے جو انظام مناسب سمجھیں موات سے ،انہوں نے بادشاہی قبول نے کی اور قبائل نے ابنا ابنا انظام کرلیا۔

رؤسائے باجوڑ کی ایک شاخ جندول میں حکمران تھی، جو باجوڑ ہی کا ایک حصہ ہے، خان جندول کے آخری ہیں سال میں خاصی خان جندول کے ایک فرزند عمر اخان نے گزشتہ صدی کے آخری ہیں سال میں خاصی شہرت حاصل کرلی، والد نے اسے اختلاف کی بنا پر باہر نکال دیا تھا، وہ ۱۸۷۸ء میں لوٹا اورایک سال کی کھکش کے بعد جندول پر قابض ہوگیا۔ پھراس کی فتو حات کا سلسلہ شروع

ہوا، چنانچاس نے ۱۸۹۰ء تک پوری ریاست دیر کے علادہ ہاجوڑ کے بڑے جھے اور جنوبی صوات پر بھی قبضہ کرلیا، پھر وہ چتر ال کے اس دعویدار کا حامی بن گیا جو ریاست سے جلاد طن تھا اور ایک ہی لیے میں اس نے چتر ال کوبھی لے لیا ،اس اثناء میں محمد شریف خال رئیس دیر بالاصوات میں جلاد طن ہوکر میشار ہا۔

۱۸۹۵ء میں انگریزوں نے چتر ال پر پیش قدی کی تو فوج کو پائیس صوات اور دِیر کے گذر ہے بغیر چارہ نہ تھا۔ اس طرح براہ راست عمرا خال سے کفکش شروع ہوگئی۔ انگریزوں نے اپنے پرانے شیوے کے مطابق دِیر کے جلاوطن رئیس محمد شریف خال کو ساتھ ہو گئے ، انگریزی ساتھ ابو کے ساتھ ہو گئے ، انگریزی فوج کیلئے بہ ہولت گذر کا انتظام ہوگیا اور دیر کے علاوہ صوات کا وہ علاقہ بھی جو عمرا خال کے قبضے میں تھا، انگریزوں نے محمد شریف خال کے حوالے کردیا۔

دىر وصوات كى تشكش

محرشریف خال دوراندیش اور تجربکار آدی تھا،اس نے اہل صوات کو مطمئن رکھنے میں کوئی کر اٹھاندر کھی گراس کا جانشین اور نگ زیب خال کا نول سے بہرا تھا، زبان میں کنت تھی اور مرض جذام میں مبتلا ہو گیا تھا،اس نے پہلے ہی دن سے سارا کارو بارا پنے ملازموں پرچھوڑ دیا، جن کے سامنے زیادہ سے زیادہ پیے وصول کرنے کے سواکوئی نصب العین نہ تھا۔ پھر اور نگ زیب خال نے بیطر یقد اختیار کیا کہ مختلف علاقے اجاروں پر دید بتا، اور بندھی رقبیں وصول کر لیتا۔ اجارہ دار جس طرح چاہتے رعایا کا خون جوسے، اہل صوات نے دو تین مرتبدریاست دیر کے کارکنوں کو باہر نکال دیا، لیکن وہ فوج لے کر آتے اور توت کے بل پرتمام بقابے وصول کر لیتے۔

تک آ کر اہل صوات نے ریسو جا کہ کسی کو بادشاہ بنا کر قومی قوت کی تنظیم کا انتظام

کریں، پھرلز کرنواب دیر کے چنگل سے رہائی پائیں۔ای سلیلے میں وہ ملا صاحب سنڈا کے کواپنے ہاں لائے تھے،ای سلیلے میں مختلف شخصیتوں کے سامنے بادشاہی کی پیش کش کی،کیکن دیر کی زبردست جنگی قوت کے خوف سے کوئی شخص کا نٹوں کا تاج سر پر رکھنے کے لئے تیار نہ ہوتا۔

سيدعبدا لجبارشاه ستفانوى

آ خرسب نے بالا تفاق طے کیا کہ بادشاہی کیلئے سب سے بڑھ کرموز وں سید عبد الجبارشاہ ہیں، جوریاست امب کے وزیر کی حیثیت میں اپنی انتظامی سیاسی اور حربی صلاحیتوں کے روشن ثبوت پیش کر چکے تھے، ان کے اعزہ واقر با یونیز، چملہ، صوات اور یاغتان کے دوسرے حصوں میں جابجا موجود تھے اور یقین تھا کہ وہ سب سیدموصوف کے معاون بن جا کیں گے، نیز سادات کے اس گھر انے کا ایک جلیل القدر فرد (سیدا کبر شاہ) کے معاون بن جا کیں گے، نیز سادات کے اس گھر انے کا ایک جلیل القدر فرد (سیدا کبر شاہ) کے جدا مجدسید عمر شاہ کے حیقی بھائی تھے۔

غورومشورہ کے بعد قرار پایا کہ سیدعبد الجبار شاہ صوات میں شرعی اصول کے مطابق نظام حکومت قائم کریں، قومی قوت کو منظم کر کے بندری صوات کو دیر کے تصرف سے نجات دلائیں اور تمام رؤسا وخوانین سیدموصوف کے معین ویاور ہیں۔ 9 رجمادی الاخری ۱۳۳۳ھ (۲۲۷ راپریل ۱۹۱۵ء) کو دریائے صوات کے جنوبی کنارے پر بانڈی بالا میں درختہائے چنار کے نیچے سیدعبد الجبار شاہ کی دستار بندی ہوئی اور وہ صوات کے محکر ال بنے، ملا صاحب سنڈ اکے کواس حکومت میں غیررسی طور پرشخ الاسلام کی حیثیت حاصل ہوگئی۔

مشكلات كار

چیش نظر کام بے حد تھن تھا اور اس کیلئے انتہائی محنت و جفائشی کے علاوہ تمام قومی

عناصر کے دلی تعاون اور حسن مّد بیر کی ضرورت تھی ۔مثلاً:

ا- دری جنگی قوت سے عہدہ برآ ہونے کیلئے مناسب قوت فراہم کرلینا خاصے وقت کا مختاج تھا۔

۲- قبائل کی عام حالت الی تھی کہ جب تک ان سب کو نئے انتظام کے ماتحت صریح فائدہ نظرنہ آتا، امید نقطی کہ وہ خوش دلی ہے اسکے ساتھ تعاون پر آ مادہ ہوں گے۔
 ۳- پھر ہر قبیلے میں مختلف گروہ تھے لہذا دائر وُنظم میں ان کے درمیان تو ازن قائم رکھے بغیراندیشہ لگار ہتا تھا کہ وہ بگڑ جا کیں گے۔

المات ودیراگرچه یا عنانی علاقے تصاور یا عنانی علاقوں کے معاملات میں انگریزوں کو براو راست مداخلت کاحق حاصل نہ تھا، تاہم حکومت ہند نواب دیری حامی اور درای بھی ہے احتیاطی ایسے حالات پر منتج ہو سکتی تھی کہ حکومت مذکورہ دیری حمایت کے لئے میدان جنگ میں اثر آتی۔

۵- چکدره کی فوجی چھا دُنی ایسے مقام پر واقع تھی کہ ہر وقت پیچید گیوں کا خطرہ لگار ہتا تھا۔

غالبًا ایسے بی نازک حالات کو پیش نظر رکھتے ہوئے سید عبد الجبار شاہ نے ملا صاحب سنڈ اکے سے بات چیت کے دوران میں بید معاملہ بھی طے کرایا تھا کہ صوات کی سخیمات کمل ہونے اور دیر کے تصرف سے آزادی حاصل کرنے تک کوئی ایسا قدم نہ اٹھایا جائے جس سے حکومت بہند کو مداخلت کا بہائیل جائے۔ ایک بہت بڑی وجہ تشویش بیتھی کہ جنگ یورپ زوروں پرتھی، ترک انگریزوں کی انتہائی کوشش بیتھی کہ یا عستان میں کوئی ایسا ہنگامہ بیانہ ہوجو یا عستانی قبائل کوشتعل کرد ہے۔ سرجارج روس کیپل صوب میں کوئی ایسا ہنگامہ بیانہ ہوجو یا عستانی قبائل کوشتعل کرد ہے۔ سرجارج روس کیپل صوب مرحد کا جیف کمشز تھا، آگی خودرائی سب پرواضح تھی، حکومت سرحدی معاملات میں اس کی رائے بڑی کرتی تھی، دوسیدعبد البجار شاہ کا سخت کالف اور نواب دیر کا سرگرم حامی تھا۔

ملآ صاحب سنڈا کے کا اقدام

عابی صاحب تر نگ زئی نے بونیر میں جواقدام کیا تھا، اس سے کوئی دلخواہ نتجہ نہ لکلا اور قبائل بونیر ابتدائی نقصان کے بعد افسر دہ ہوکر بیٹھ گئے تو حاجی صاحب نے ملا کے پاس پیغام بھیا کہ آپ بھی بچھ کریں اور ہمیں صوات میں بلا لیں۔ یہ پیغام ملا تو ملاصا حب سنڈا کے نے براہ راست انگریزوں کے خلاف جہاد کے وعظ کینے شروع کیے اور اس خرض سے بڑالشکر تیار کرلیا۔ سیدعبد الجبارشاہ نے ایک خاص مجلس میں اس اقدام کے مضر پہلو واضح کیے اور لوگوں نے ان پہلوؤں کو معقول تسلیم کیا تو ملا صاحب ناراض ہوکر چلے گئے۔ یہ د کھے کرلوگوں پر پریشانی طاری ہوگئی، انہوں نے سمجھا کہ ایک خدارسیدہ ہوکر چلے گئے۔ یہ د کھے کرلوگوں پر پریشانی طاری ہوگئی، نیامران کے لئے غضب آسانی کا موجب بے گا۔ چنا نچہ ملا صاحب کوراضی کر کے لایا گیا، ان کی تجویز کے مطابق لشکر تیار موجب بے گا۔ چنا نچہ ملا صاحب کوراضی کر کے لایا گیا، ان کی تجویز کے مطابق لشکر تیار کر لئے گئے اور حملہ کردیا گیا۔

اگریزی فوج پہلے سے تیارتھی،اس نے منظم طریق پر گولہ باری شردع کی تو قبائلی الشکر مخبر نہ سکے اور منتشر ہوگئے، یہاں تک کہ افراتفری میں ملاصا حب کو بھی چیھے ہمنا پڑا۔ اگر بزوں نے اب نواب دیر کی فوج بھی طلب کر لی اور دونوں نے مشتر کہ حیثیت میں صوات کے اندر پیش قدمی کا فیصلہ کرلیا۔ جوعناصر سیدعبد البجار شاہ کی تنظیمات سے دل سے متنفر تھا اگر چہ بہ ظاہر انہیں کچھ کہنے کی ہمت نہ پڑتی تھی، وہ سب یکسو ہوکر بیٹھ گئے، ملا صاحب سنڈ اکے نے بونیر بیٹی کر سیدعلی تر ندی خوث بونیر کے مزاد شریف پر ڈیرہ جالگایا، شاید ان کی خواہش بیتھی کہ اہل صوات اگر دیشن کے مقابلے میں استقامت کا مظاہرہ نہ کر سکے تو اہل بونیر کو تیار کرنا جا ہے۔

و فاعی تذبیریں اب سید عبدالجبارشاہ نے منتشر قوی عناصر کو فراہم کر کے ایک دفاعی منصوبہ تیار کیا، جس کا معاید تھا کہ پیش قدی کرنے والے انگریزی کشکر پر خفیہ پہاڑی مورچوں سے
بناہ چھاپوں کا لا تمنائی سلسلہ شروع کردیا جائے ، نیز حضرت اخوند صاحب صوات
کے ایک خلیفہ صاحبزادہ باباسے اہل دیر کے نام ایک اعلام تکھوایا جس کامضمون یہ تھا کہ
میں دنیوی معاملات اور ملکی جنگوں سے ہمیشہ الگ رہا ہوں لیکن انگریزوں نے آزاد
اسلامی ملکوں پر حملے شروع کردیئے ہیں ، یہ ایسا معاملہ ہے جو مدت مدید سے پیش نہ آیا
تھا، انگریز خلیفۃ اسلمین کے خلاف بھی جنگ کررہے ہیں ، اسی سلسلے میں وہ صوات پرلشکر
لے آئے ہیں اور دیرکا کشکر بھی ان کے ساتھ ہے ، اہل دیرکومیری تھیمت یہ ہے کہ اسلام
اور ایمان نے کرصوات کو انگریزوں کے قبضے میں نہ دیں۔ بہتریہ ہے کہ واپس چلے جا کیں
یا آئے نہ بردھیں اور جہاں ہوں وہیں تھرے دیں ، اگر آئے بردھے تو:

میں بدؤات خود قبال کے لئے موجودرہوں گا،میری موت تمہارے ہاتھ شہادت کی موت ہوگی اور تمہارے مردے اہل صوات کی گولیوں سے واخل صف کفار ہوں گے۔ دنیا کی زندگی کا کوئی اعتبار نہیں، دو دن کی زندگی کی خاطرا یمان ضائع کردینا سخت بذھیبی کا باعث ہوگا۔

اس اعلام کی نقلیں اہل دیر کے علاوہ صوات کو بھی جینج دی گئیں، اور ایسا بندو بست کردیا گیا کہ ہر شخص اسکے مضمون سے آگاہ ہوجائے۔ یہ بھی جان نے کہ مدافعت کرنے دالے لشکر کے علم دار حضرت صاحبزادہ بابا ہوں گے، ملا صاحب سنڈ اکے کو بھی بیاعلام پہنچا دیا گیا ،سماتھ ہی تکھا گیا کہ دریائے سندھ سے جلال آباد (افغانستان) تک آپ کیلئے لشکر فراہم کرنے کا بندو بست ہو چکا ہے،تشریف لائیں اور جومور چہاہے لئے پسند کریں،اس میں بیٹے جا کیں۔

نواب دیراورانگریزوں کے لئے سراسیمگی حعرت صاحبزادہ بابالشکر لے کراس جگہ ہے قریب جا بیٹھے جہاں انگریزوں اور نواب دریکالشکر تھا، ان کے اعلام نے ہمہ گرسراسیمگی پیدا کردی تھی، اس اثناء میں ملا صاحب سنڈ اکے بھی ہو نیر سے تشریف لے آئے اور انھوں نے پائیں صوات کے جنوبی و مغربی حصہ میں شموز تی اور اون زئی کے درمیان ڈوپ نامی پہاڑ پرصا جزادہ باباسے بھی آئے بوچ کرمور چونائم کرلیا۔ سیدعبد الجبارشاہ نے عبد الواحد جمعداد کومع ان کی نفری کے ملا صاحب سنڈ اکے کے مور ہے سے اگریزی لشکر پر چھاپوں کا سلسلہ شروع ہوگیا۔ سید عبد الجبارشاہ فر ماتے ہیں کہ بلا نافہ ہر رات شبخون ما راجا تا۔ اوھر صاحبز ادہ بابا کے اعلام نے اہل در کو بھی ہے حدمتا ٹرکیا، وہ دن کے وقت تو چپ چاپ بیٹھے رہے، رات کے وقت خودا گریزی کیمپ پر چھاپ مارتے، ایک شب کے چھاپ بیٹھے رہے، رات کے وقت خودا گریزی کیمپ پر چھاپ مارتے، ایک شب کے چھاپ بیل دو تین آ دی مقتول وقت نودا گریزی کیمپ پر چھاپ مارتے، ایک شب کے چھاپ بیل دو تین آ دی مقتول ہوئیان ہوگیا اور اگریز کی فوج پیش قدی کا ارادہ ترک کرکے چکارہ کی پر بیٹان ہوگیا اور اگریز بھی، آخرا گریزی فوج پیش قدی کا ارادہ ترک کرکے چکارہ کی پاس میدان میں خیمہ زن ہوگئی۔ (۱)

بقيه حالات

سیدعبدالجبارشاہ تقریبا دوسال صوات کے حکمرال دے، پھرائیس مختلف اسباب کی بناء پر وہاں سے نکلنا پڑا، جن کی تغصیل موجودہ کتاب کے موضوع سے خارج ہے، ملا صاحب سنڈ اکے بالاصوات میں چلے سے، یہ معلوم نہ ہوسکا کہ کب ان کی وفات ہوئی۔ جاجی صاحب رُبّ تگ زئی ہونیر سے صوات پنچے، سیدعبدالجبارشاہ نے ان کیلئے استے غلے کا انتظام کر دیا تھا جو وقت کے زخ کے مطابق پانچے چھ ہزار رو پے کا ہوگا۔ پھر حاجی صاحب بالاصوات میں اپنے ایک مرید کے ہاں جامھرے، انجام کا رصوات کے قیام کو تالیند کرتے ہوئے وہم مند قبیلے میں چلے سکے، وہیں اقامت اختیار کرلی اور وہیں وفات پائی۔

⁽۱) بیمالات سیدهبدالجبارشاه کی کتاب شهادة التفلین حصدوم سے ماخوذ ہیں۔

نوال باب:

شيخ الهند كى تحريك آزادى

ایکاہمتحریک

تفخ الہند حضرت مولا نامحمود حسن دیوبندی نے آزادی کی جوتح یک منظم کی تھی، اگر چاسے براوراست جماعت مجاہدین سے ربط وتعلق نے تھا،لہذااس کے تفصیلی تذکر سے کا یہ موز دس مقام نہیں، تاہم دونوں تحریفہ یک سلسلۂ ارادت شاہ اسلحیل شہید اور سید احمد شہید پر منتہی ہوتا تھا، دونوں کے مقاصد میں ضاصی کیسانیت تھی، دونوں مسلمانوں کی سر بلندی اور ہندوستان کی آزادی کیلئے کوشاں خصی سے دونوں نے ابتدائی سرگرمیوں کیلئے یا عنتان کو منتخب کیا اور ہندوستان کے آزادی کیلئے کوشاں شیس کی ایک موزوں خطرتها، جہاں بین الملی چیدگیوں سے محفوظ رہ کر تہی ساز وسامان، شیل کی افراہ می میں میں کا می موقع ملاوہ اشتراک رہاں بی دائر سے میں کام کا موقع ملاوہ اشتراک رہاں بی دائر سے میں کام کا موقع ملاوہ اشتراک رہاں بی کی نہوگا۔

ابتدائی طریقِ کار

افسوس کہاس تحریک کے پورے حالات اب تک روشی میں نہ آسکے، میں جانتا موں کہمولا ناحیوں اللہ سندھی نے اپنے ملقہ ہائے ممل کے

متعلق خاصی گراں قدر معلومات فراہم کردی ہیں، لیکن جس مدتک جمعے علم ہے تحریک کے ابتدائی طریق کارکاسراغ لگانے کی کوشش ندگی تی ہم ہم مطالعے اور غور و فکر کا نچ و یہ ہے کہ حضرت شیخ البند آپنی عملی زندگی کے آغازی میں ایک نقط مثل تیار کر بچلے تھے اور اسے لباسِ عمل بہنانے کی کوششیں انہوں نے اس وقت سے شروع کردی تھیں جب ہندوستان کے اندرسیاسی سرگرمیاں محض برائے نام تھیں ۔ ملک کے حالات کسی تیز تحریک کیلئے ہرگز سازگار نہ تھے ، مسلمانوں پر جیرانی اورافسروگی طاری تھی ، وہ ثریاسے تحت المری کا میں جاگرے تھے اور پھی بھی میں نہ آتا تھا کہ اپنی کھوئی ہوئی حیثیت حاصل کرنے کے لئے کونسا داستہ اختیار کریں اور کس طریق عمل پر کا مزن ہوں ۔ ایسے اصحاب بہت کم نظر آنے تھے ، جن کے ظوم پر اعتماد کیا جا سے ، اور جو چیش نظر مقاصد کیلئے بر تکلف ہرتم کی قربانیوں پر آمادہ ہوں ۔ پھر حضرت شیخ البند "کے سامنے ایک بڑی مصلحت یہ بھی تھی کہ قربانیوں پر آمادہ ہوں ۔ پھر حضرت شیخ البند "کے سامنے ایک بڑی مصلحت یہ بھی تھی کہ دار العلوم دیو بند کو حکومت کے عماب کا ہدف بننے سے حتی الا مکان محفوظ رکھیں۔

اسلامی درسگاہوں کی تحریک

میرے اندازے کے مطابق انہوں نے یہ طے کیا تھا کہ جن جن اصحاب میں عملی صلاحیت پائیں، انہیں جا بجا خصوصاً یاضتان کے مختلف حصوں میں دینی اور اسلامی درسگاہیں قائم کرنے کی ترغیب دیں۔ ملاصا حب سنڈ اکے نے بھی حضرت شیخ الہند سے ملاقات کی تھی، انہوں نے جب کام شروع کیا تو ابتداء میں ایک اہم اسلامی درسگاہ بی قائم کرنے کی کوشش کی تھی، حاجی صاحب تر نگ زئی شیخ الہند سے استفادہ کر چکے تھے، ان کے پیش نظر بھی درسگاہیں قائم کرنے ہی کا سلسلہ تھا۔

سیدعبد الجبار شاہ ستھانوی لکھتے ہیں: جب مجھے نمائندگان صوات نے بتایا کہ طا صاحب سنڈ اکے اسلامید کالج پشاور کے بالقابل ایک عالی شان اسلامی درسگاہ کی بنیاد رکھنا چاہتے ہیں تو ہیں نے ان پرصاف صاف داضح کردیا تھا کہ بیاصطلاح ایک خاص جماعت کا شعار ہے، جس ہیں مولوی صاحبان ادرعلاء شامل ہیں۔ اسلامی درسگاہوں کو حکومت برطانیہ کے خلاف شظیمات کا پردہ بنالیا گیا ہے ادر حاجی صاحب ترنگ زئی جو اپنے ضلعے ہیں ایسی درسگاہیں قائم کرنا چاہتے ہیں، وہ بھی اس طلع کے ایک رکن ہیں۔ سیدصاحب کہتے ہیں کہ جھے بی تو علم نہ تھا بیاصطلاح کس نے ایجاد کی اور اس کا مرکز کہاں تھا، لیکن جنگ طرابلس اور جنگ بلقان نے واضح کردیا تھا کہ یورپ کی بڑی بڑی سلطنتیں ترکوں کے دخمن حملہ آوروں کی پشتیبانی کر کے خلافت اسلامیہ کو برباد کردینے کے دریے ہیں، اس پرصلمانوں میں ہمہ گیر بے چینی کی لیردوڑ گئی۔ علاقت اسلامیہ خش بنتے فلافت اسلامیہ میں بلنے میں خلافت اسلامیہ اور مقامات مقدسہ کی حفاظت کے لئے سرگرم ہو گئے ، اس سلسلے میں بلنے و خلافت اسلامیہ اور مقامات مقدسہ کی حفاظت کے لئے سرگرم ہو گئے ، اس سلسلے میں بلنے و اشاعت کیلئے بہترین طریقہ ہے تھا گیا کہ گاؤں گاؤں اور ستی بستی ہیں اسلامی درسگا ہیں قائم کردی جا کیں۔ (1)

للحيح تربيت

غرض شیخ البند کا ابتدائی منصوبہ بہی تھا اور اسے حصرت کے تعلیمی مشاغل سے خاص مناسبت تھی۔ یا در ہے کہ سید احمد شہید نے جب مسلمانوں کو بغرض جہاد منظم کرنے کا قصد فر مایا تھا تو پیروں کے شیوے کے مطابق مختلف علاقوں کے دور سے شروع کردیے تھے، جگہ وعظ بھی ہوئے، بیعت بھی لی جاتی، ''تو جہ'' بھی دی جاتی، اس طریقے کوسید شہید کے مشاغل سے خاص مناسبت تھی۔ میر سے نزد کیے مولا نامحہ قاسم نانوتو کی اور مولا نا محمد قاسم نانوتو کی اور مولا نامحہ کتاب کی این وار العلوم یوبند کا اصل مقصد ونصب العین بھی و بی تھا، جس کے رشید احمد کارفر مایانِ ویوبند میں سے صرف حضرت شیخ البند سرگر عمل ہوئے، اس طریقے اور

⁽١) شهادت التعلين حصدووم المي نسويم ٢٠٠٠

شیوے کے مطابق جلدحسب مراد نتیج برآ مدہونے کی تو تع ندر کھی جاسکتی تھی، تاہم ایک برافائدہ یہ تھا کہ انقلا بی مسامی کے ساتھ ساتھ عوام کی سیح تربیت کا کام بھی انجام پا تا تھا۔ جس طرح سید شہید کی دعوت اصلاح میں انجام پا تا تھا، اس انقلاب سے بڑھ کر مصیبت خیز اور تباہ کن شئے کوئی نہیں ہوسکتی جسکے عوام پیش نظر مقاصد کی تربیت سے کا ملا ہے بہرہ ہوں، دریا وس کا پانی نہروں کے ذریعے سے کھیتوں میں پہنچتا ہے، تو زمین کی اندرونی صلاحیتیں پیداوار کے انبار فراہم کردیتی ہیں، لیکن اگر وہ پانی ہے بناہ سیل کی شکل اختیار کر لیتو بستیوں کی ویرانی اور فسلوں کی ہربادی کے سواکیا نتیجہ نکلے گا؟

حوادث كاججوم وتواتر

مجھے یقین ہے کہ حضر سے شخ الہند مرحوم ومخفورا ہے ای منصوبے کے مطابق کاربند
رہنا چاہجے محقے ہیکن حالات کی خوفاک مخالفا ندر فاراور حوادث کا بہجوم و تواتر اُن کے صبر و شکیب کیلئے شدید آ زمائٹ وں کا موجب بن گیا۔ مولا ناحسین احمد فرماتے ہیں کہ حضر ت کی گہری نظر واقعات عالم بالخصوص ہند و ستان اور ترکی پرمرکو زرجی تھی بطرابلس اور بلقان کے تر ہرہ گداز مظالم اور اندر و ن ہند میں انگریزوں کی روز افزوں چیرہ دستیوں نے انہیں اس قدر متاثر کیا کہ آ رام اور چین تقریباً حرام ہو گیا۔ گویا وہ اپنے افتیار سے نکل گے ، فتا کے وجوا قب سے بروا ہوکر انہیں سر بہ کف اور گفن بردوش میدان انقلاب میں نکلنا پڑا۔ زمانے کی تاریکیاں ، موسم کی کالی کالی گھٹا کمیں ، احوال کی نزاکتیں ، اہل ہند بالخصوص پڑا۔ زمانے کی تاریکیاں ، موسم کی کالی کالی گھٹا کمیں ، احوال کی نزاکتیں ، اہل ہند بالخصوص مسلمانوں کی ناگفتہ بہ کمزوریاں رکاوٹ بن کر سامنے آ کیں اور پچھ عرصدای غور وخوض میں گذرا ، گر پانی سرسے گذر چکا تھا ، اس لئے خوب سوچ سمجھ کرصرف قادر مطلق پراعتا و میں گذرا ، گر پانی سرسے گذر چکا تھا ، اس لئے خوب سوچ سمجھ کرصرف قادر مطلق پراعتا و اور بھروسہ کر کے کام شروع کر دیا۔ (۱)

⁽۱) "نقش حيات" جلدووم بمن:١٣٥-١٣٦

ابھی دہ کوئی فیصلہ کن قدم نہیں اٹھاسکے تھے کہ پہلی جنگ پورپ شروع ہوگئ، دو تین ماہ بعد ترک انگریزوں کے خلاف جنگ میں شامل ہو گئے گو یا اطمینان ورلجمعی ہے آ ہت آ ہتے کام جاری رکھنے اور نتائج کا انتظار کرنے کی مہلت ختم ہوگئی اور اس کے سواچارہ نہ رہا کہ جو پچھ بھی ممکن ہوئی الفور کیا جائے تا کہ انگریزوں کی مشکلات میں اضافہ ہو، ترکوں کو تقویت پنچے اور ہندوستان کی آزادی کا خواب اپنی سیح تعبیر سے ہم آغوش ہوجائے۔

فوری کام کی ضرورت

حضرت شيخ البند ان تمام اصحاب كى طبيعتول اور صلاحيت استقامت كا اندازه فرماتے رہتے تھے، جوان کے پاس تعلیم واستفادہ کی غرض سے آتے۔ان میں سے بعض موزول امحاب کوانہوں نے اپنے کام کیلئے چن لیا تھا، انہیں تھم دے دیا کہ جلد ہے جلد بإغستان يننج جائيس اورآ زادقبأئل كومندوستان برحيله كيلئة اثفائيس مولا ناعبيدالله مرحوم كوانهول نے افغانستان بھیج و یا كهامیر حبیب الله خال والی افغانستان كواس نازك وقت میں خدمت اسلامیت کیلئے جانباز انداق^ا ام پرآمادہ کریں، حاجی صاحب تر نگ زئی اور ملّا صاحب سنڈ اے کے متعلق ہمیں قطعی طور پرمعلوم ہے کہ وہ حضرت شیخ البند کی تحریک مع وابسة تصدان كعلاده مولاناسيف الرحلن، مولانا محرميان عرف منصور انصاري، مولا نافضل ربی،مولا نافضل محمود،مولا نامحمرا کبر،حضرت شیخ کے خاص کارکن تھے۔خود مندوستان میں ان کے خلص کار کنوں کا شار مشکل ہے، مثلاً مولا نا عبد الرحیم رائے پوری، مولا ناخلیل احد بمولا نامحمه احمه چکوالی بمولا نامحمه صادق (کراچی)، شخ عبد الرحیم سندهی ، مولانا محد ابراجیم راندیری ، مولانا غلام محد دین بوری ، مولانا تاج محود (امروث ، ضلع سكمر)، دُا كثر مخاراحمدانصاري، حكيم عبدالرزاق انصاري دغيره سيكرون ايسے اصحاب ہيں جنكے نام بھی ہمیں معلوم نہیں۔مولانا ابوالكلام آزاد،مولا نامجمعلى، حكيم اجمل خال،نواب وقارالملك اورونت كاكثر بوب بزير بنما حضرت في الهند كمثير ومعادن تق_

مولا ناعبيداللدسندهي

مولانا عبید الله سندهی کابل جانے کیلئے تیار ہو گئے تو اس سلسلے میں پہلا اہم مسئلہ روپٹے کا تھا، مولا ٹا ابوالکلام آزاد نے اس مقصد کیلئے حاتی سیٹے عبدالله ہارون مرحوم سے ملاقات کی ،انہوں نے بہتامل پانچ ہزاررو پٹے پیش کردیے، جومولا ٹاعبیداللہ کودید ہے مئے۔(۱) معلوم نہیں ،اس کے سوابھی کوئی رقم ملی یانہ کی۔

دوسرامئلان کی جاتی تھی، خفیہ پولیس مولانا مرحوم پر تنعین تھی اوران کی ہر نقل وحرکت کی تگرانی کی جاتی تھی۔ اس مصیبت سے بیخے کی تدبیر بیسو چی گئی کہ مولانا بہاول پوراور سندھ چلے جائیں، وہاں دیہات میں اس طرح رہے لیس گویا کوئی کام ان کے پیش نظر خبیں، چنا نچہ وہ 1918ء کے اوائل میں دیلی چھوڑ کر پہلے بہاول پور بعد از ال سندھ پہنی خبیں، چنا نجہ وہ 1910ء کے اوائل میں دیلی چھوڑ کر پہلے بہاول پور بعد از ال سندھ پہنی کرتے رہے، پھر یکا کید نظاور ۱۹۱۵ اگست کو سورایک کے ملاقے میں داخل افغانستان ہوئے۔ شیخ عبدالرجیم سندھی (۲) بلوچتان کی آخری صد تک ساتھ دہے۔

⁽۱) حاتی سینے عبداللہ بارون مرحوم نے پہیں روپے مابانہ کی طازمت سے زندگی شروع کی تھی ، پھر وہ بہت بڑے تاجر بن مجے اوران کی آ مدنی لاکھوں روپے سالانہ تھی۔ وہ ہر دّوراور ہرعبد بیں تو می کا موں کیلئے معتبہ برتیس نکا لئے تھے۔ موجود وصدی کے اوائل بیس سندھ کے اندر تبلیخ اسلام کے لئے جو کام جاری ہوا تھا ، اس بیس بھی بے ثاررو پیڈرج کیا ، خلافت ، لیگ اور سلم کا نفرنس کی شخصیات بیس بھی وہ چپ چاپ گرانفقد ایدا دوسے رہے۔ تابل نورامریہ ہے کہ اجرائے کار کے سواان کے ماشنے کوئی غرض نہ تھی ، دوسر سے ادار دل کو جورو پیددیا اس کا حساب مشکل ہے ، خود کرا ہی

⁽۲) بیا جار یا کر پانی کے بڑے بھائی تھے۔مسلمان ہوجانے کے بعد نوری زندگی تبلغ اسلام میں بسر کردی، سیاس کامول میں بھی حصہ لیتے رہے، سر ہند میں وفات پائی۔ میرے عزیز وکرم دوست پٹنے عبد الجیدسندھی بھی ان کے عزیز ول میں ہیں، وہ بھی اسلام لانے کے وقت سے برابر قید کی تکلیفیس اٹھاتے رہے ہیں۔

قیام افغانستان کے حالات کا خلاصہ یہ ہے کہ قندھار ہوتے ہوئے 10را کتو بر ١٩١٥ء کو کابل پہنچے۔سر دار نصر اللہ خال ، امیر حبیب اللہ خال اور ان کے فرزندا کبر سر دار عنایت اللّٰه خاں سے ملاقا تیں کیں،ترکی اور جرمن مشن آیا اور ہندوستانیوں نے حکومت موقتہ قائم کی ،تو مولا نابعض وجوہ ہے اس کے ہم نواندرہ سکے۔راجا مہندر پرتاپ صدر حکومت موقتہ کے متعلق مولا تا کو یقین ہو چکا تھا کہ وہ کا نگریس کے بجائے ہندومہا سھا کے کارندے میں اور انہوں نے خود حکومت موقتہ کی اسکیم لالہ لاجیت رائے کو دیدی تھی۔ عَالبًا ای اسکیم کی بناء پرلالہ لاجیت رائے نے جہاں افغانیوں کے حیلے کا افسانہ تیار کیا تھا، حکومت موقتہ کی طرف ہے روس ، جایان اور ترکی مشن بھیجے گئے ۔ مولا ٹا ان کی تجویز و ترتیب میں شریک رہے۔افغانستان میں خدام خلق کی ایک جماعت بنائی جس کا نام '' جنو داللہ'' رکھا۔ امیر امان اللہ خال کے عہد میں ایک ہندوستانی تعلیم گاہ قائم کرنے کی اجازت لی لیکن برطانوی سفیر نے زور دے کر بیاجازت مستر د کرادی۔۱۹۲۳ء میں افغانستان ہے نکل کر ماسکواور استنبول ہوتے ہوئے مکہ معظمہ پہنچ مسکے ۔(۱)۱۹۳۹ء میں وطن واپس آئے۔

ريثمى خطوط

مولانانے كابل سے ايك خطريشي پارى براكھ كرشخ عبدالحق نومسلم ك باتھ شخ

عبدالرجیم سندھی کے پاس بھیجا تھا اور تاکید کردی تھی کہ شخ صاحب فورا تجاز چلے جائیں یا کسی معتدعلیہ حاجی کے دریعے سے خط حضرت شخ البندکو پہنچادیں، شخ عبدالحق طلب کے ساتھ بجرت کرکے کا ہل پہنچا تھا اور بیان کیا جا تا ہے کہ الله نواز خاں کا ملازم تھا، وہ خض ہر لحاظ سے قابلِ اعتماد تھا، لیکن خدا جانے کیا حالات پیش آئے کہ اس نے خط شخ عبدالرجیم کے حوالے کرنے کے بجائے الله نواز خال کے والد خان بہا دررب نواز خال کو دے دیا۔ ان کے ذریعے سے بجائے گورز مائیل او ڈوائر کے پاس پہنچا، اس طرح حکومت کو حضرت شخ البند ، مولا ناعبداللہ اور دوسرے کارکنوں کی تحر کی کے جھراز معلوم ہوگئے۔ اس وقت سے شخ عبدالرجیم کا تعاقب شروع ہوگیا اور شخ البند کو بھی مکہ معظمہ میں مولا گوں حوادث سے گذرتے ہوئے بالا خرگر فاری ونظر بندی قبول کرنی پڑی۔

اصل خط کامضمون غالبًا میتھا کہ حکومت موقۃ نے افغانستان سے عہد نامہ کرلیا ہے،

ہاتی حکومتوں کے پاس بھی سفار تیں بھی جارہی ہیں،اس سلسلے میں حکومت ترکیہ ہے بھی

ربط وضبط پیدا کر نامنظور ہے، آ خر میں حضرت موصوف سے درخواست کی گئ تھی کہ دبط و
ضبط پیدا کرنے اور معاہدہ کرانے ہیں امدادوی، اس ریشی خط کے ساتھ مولا نامحہ میاں
عرف منصور انصاری کی طرف ہے بھی ایک خط تھا، رولٹ رپورٹ ہیں ریشی خط کے
متعلق جو پچھ مرقوم ہے وہ غلط اور تاقی معلومات پر مبنی ہے۔ (۱)

حضرت شيخ الهندّ

ہندوستان میں گرفتاریاں شروع ہوگئی تعیں، حصرت شیخ الہند ہبت پریشان ہو گئے تھے کہ کہیں بیٹھے بٹھائے گرفتار نہ ہو جا کیں اور اس طرح ضروری جدو جہد کے اوقات لقطل میں بسر نہ ہوں، لہذاوہ با ہرنکل جانا چاہتے تھے۔ انہوں نے اپنے دوسرے مشیروں

⁽۱) رولت راورت من ۲۵۱-۸۵۱

کے علاوہ مولا نا ابوالکلام آزاد ہے بھی مشورہ کیا بمولانا آزاد کی رائے قطعی طور پر بیٹھی کہ باہر نہ جانا چاہئے ،اور بہبیں بیٹھ کر کام کرنا چاہئے۔اگر اس اثناء میں گرفتاری ہوجائے تو اسے تبول کئے بغیر چارہ نہ ہوگا، وہ جانے تھے کہ باہر جاکر کوئی کام نہ ہوسکتا تھا اور باہر رہ کرمعطل ہیٹھنے سے اندررہ کرمعطل ہوجانا ہر حال میں بہتر تھا۔

حضرت شیخ الہند ؓ نے یہی مناسب سمجھا کہ پہلے تجاز پنچیں وہاں سے ذمہ دارترک وزیروں اور ماموروں سے ربط وضبط پیدا کرکے ایران وافغانستان کے راستے یاغستان جا کیں، چنانچہوہ چندر فقاء کے ساتھ تجاز چلے گئے۔

جج کیا، اس وقت ترکوں کی طرف ہے غالب پاشا حجاز کا گورنرتھا، مکہ معظمہ کے مشہور تا جرحافظ عبد الجبار دہلوی کے ذریعے سے غالب پاشا کے ساتھ ملاقا تیں کیں اور ان سے تین تحریریں حاصل کیں:

۱- پہلی تحریر مسلمانانِ ہند کے نام تھی۔

۲- دوسری تحرید میند منوره کے گورزبھری پاشا کے نام تھی جس میں مرقوم تھا کہ حضرت شیخ البند معتدعلیہ فخض ہیں،ان کا احر ام کیا جائے اور انہیں استنبول پہنچادیا جائے۔
۳- تیسری تحریر غازی انور پاشا کے نام تھی کہ ایکے مطالبات پورے کئے جا کیں۔
غالب پاشا نے خود حضرت موصوف کو تاکید کی کہ آپ تمام ہندوستانیوں کو آزادی
کامل پر آمادہ کریں، ہم ہر ممکن احداد میں گے اور صلح کی کانفرنس منعقد ہوگی تو اس میں
ہندوستان کیلئے آزادی کامل کی جمایت کریں گے۔ان میں سے پہلی تحریر ہندوستان کی
تاریخ سیا سیات میں ' غالب نام' کے نام سے معروف ہوئی۔

انور پاشااور جمال پاشاسے ملاقات حضرت شخ الہند ج سے فارغ ہوکر مدینہ منورہ چلے گئے اور انجمی وہ استنبول جانے کے لئے تیار نہ ہوئے تھے کہ انور پاشا، وزیر حربیۃ کیہ اور جمال پاشا گورزشام کے مدینہ منورہ وینجنے کا تارآ گیا۔ چنانچہ ان ہے بھی تخلیہ بیں ملاقاتیں ہوئیں، جمال پاشانے وہی مطالب دو ہرائے جو غالب پاشا حضرت شیخ الہند کے سامنے بیش کر چکاتھا، نیز وعدہ کیا کہ وہ شام پہنچ کر حضرت کے حسب خوا ہش ترکی ،عربی اور فاری میں ایسی تحریرات بھیج دے گا، جنہیں جا بجاشا کع کیا جا سکے دعشرت نے یہ بھی کہا کہ جھے محفوظ طریق پر حدود افغانستان تک پہنچا دیا جائے تا کہ میں یاغستان چلا جاؤں۔ ہندستان کے راستے گیا تو افغانستان تک پہنچا دیا جائے تا کہ میں یاغستان چلا جاؤں۔ ہندستان کے راستے گیا تو اگریز جھے گرفتار کرلیں گے، جمال پاشانے اس بناء پر معذوری فلا ہرکی کہ روی فوجیں ایران میں سلطان آ بادتک پہنچا گئی ہیں، گویا افغانستان کا راستہ کٹ گیا ہے، فی الحال آ پ کو افغانستان پہنچا ناغیر مکن ہے، واپسی میں گرفتاری کا خطرہ ہے تو مجازیا ترکی عملداری کے کسی دوسرے مقام پر شہر جائیں۔

''غالب نامهُ'' كاارسال

حضرت خودتو تجازی میں تھہر گئے ، لیکن ' غالب نامہ ' اوردوسر سے ضروری کاغذات بہ طریق محفوظ ہندوستان پہنچانے کی تدبیر سے جی کہ کپڑے رکھنے کے لئے لکڑی کا ایک صندوق ہنوایا، اس کے سختے اندر سے کھود کر کاغذات رکھ دیے، پھر انہیں اس طرح ملادیا کہ باہر سے دیکھنے والا کتنائی مصر کیوں نہ ہو، پتہ نہ لگا سکے بلکہ شبہ بھی نہ کر سکے، بیہ صندوق مولا نا ہادی حسن رئیس خال جہاں پور (مظفر تگر) اور حاجی شاہ بخش سندھی کے حوالے کردیا گیا۔ بمبئی میں جہاز پری آئی ڈی بھی موجود تھی اور اہل شربھی بہ کٹرت آئے ہوئے ، انہیں میں سے مولا نا محد نبی نام کے ایک مخلص نے مولا نا ہادی حسن صاحب سے کہا کہ آگرکوئی چیز محفوظ رکھنی ہوتو ابھی مجھے دید سے کے ۔ چنا نچے صندوق انھیں دیدیا گیا، دہ اسے محفوظ نکال لائے اور تو رکتم ریں نکال لیں۔ دبلی میں حاجی احد میرزا

فوٹوگرافر نے ان کے فوٹو لئے اور مولانا محرمیاں عرف منصورانساری کے ہاتھ بیتح رین سرحد بھیج دی گئیں۔ بعداز ال حضرت نے اپنے ایک عزیز کواس خیال سے تحریروں کاراز بتاویا کہ وہ ہندوستان واپس جاکر ان کے فوٹو لینے اور جا بجا پہنچانے کا پیغام ارباب کارتک پہنچائے۔ اسے گرفتار کرلیا گیا اور اس نے سب پچھے بتاویا جس کی بنا پر مختلف اصحاب کی تلاشیاں ہوئیں اور انہیں گونا گول مصائب سے سابقد پڑا۔

حضرت شیخ الهندٌ کی اسیری اور ر ہائی

شریف حسین نے اگریزوں سے خفیہ خفیہ عہد و پیان کر کے ترکول سے غداری کی اور تجاز میں جینے ترک موجود تھے وہ تحت وشد یوظلم وجود کا ہدف بینے۔حضرت شیخ الہند اور ان کے دفیقوں کو اسر کر کے شریف نے جدہ پہنچادیا، جہاں سے انگریز انہیں پہلے مصر لے گئے، پھر مالٹا میں نظر بند کردیا، تین برس سات مہینے کے بعد ۲۰ رمضان ۱۳۳۸ھ (۸رجون ۱۹۲۰ء) کو بمبئی پہنچا کر انہیں رہا کیا۔

ز مانهٔ قیام ججاز میں ڈاکٹر مختاراحمدانصاری بھیم عبدالرزاق انصاری بمولا نامحمدابراہیم راند بری وغیرہ نے حضرت کی جو خدمت کی ، وہ ایئے حسناتِ عالیہ کا گراں بہا حصہ ہے۔

چندگذارشیں

حضرت مرحوم نے جس جذبے، خلوص، ہمت اور والہیت سے کام کیا، اس کے بارے میں بیعا جز کیا کہ سکتا ہے، جوان اوصاف و خصائص کا میچ اندازہ بھی نہیں کرسکتا،
لیکن صاف ظاہر ہے کہ اصل منصوبہ جن حالات میں تیار کیا گیا، وہ حددرجہ ناسازگار تھے،
جھان بین اور غور وفکر کی مہلت قطعاً میسر نہتی، جدهر روشن کی کوئی کرن نظر آئی اس سے استفاد ہے میں تامل نہ کیا گیا۔ چونکہ پورامنصوبہ عالم اضطرار میں تیار ہواتھا، اس لئے اس کا کوئی پہلوبھی یا کدار ثابت نہ ہوا، لیکن میدان عمل کی ہر شئے کا حسن صرف جذبہ عشق اور

وارقی محتِ مقاصد پر موقوف ہے، یہال تدبیرول کی پختلی منصوبوں کی پائداری اور عقل و خرد کی دور بنی و مصلحت اندیشی کوکون یو چھتا ہے؟

در عائب مائے طور عشق حکمتها کم است عقل را بامصلحت اندلیث مجنوں چہ کار

حضرت کے تمام کارکن علم فعنل، زہدوتقویٰ، بےغرضی و بےنفسی اور جراُت وایثار میں اپی مثال آپ تھے۔مولانا عبید الله مرحوم نے کم وبیش پچیس سال غربت میں عمد ارے، کو یا اصل زندگی اس کام کی نذر کردی۔مولا ناسیف الرحمٰن اورمولا نامنصور انصاری نے جلاوطنی کی حالت میں وفات یائی۔ان میں سے سی کی حرارت اسلامیت و آ زادى آخرى سانس تك ايك لحد كيلي بهى افسرده ند موئى اليكن مجھے بد صدادب بد كہنے كى اجازت دیجئے کہ وہ حضرات جن کاموں پر مامور ہوئے ان کیلئے ہر لحاظ سے موزوں نہ تھے، جو جرنیل خطرناک مقامات پر فوجوں کے علمدار بننے کی ہمت رکھتے ہیں،ضروری نہیں کہ وہ سیاس مجالس میں بھی ویسے ہی اہم کارنا ہے انجام دے سکیں۔

ابك تعجب أنكيزامر

مولا ناحسین احدمدنی نے اپنی کتاب' اسیر مالٹا'' میں بورے واو ق وقطعیت سے فرمایا تھا کہ حضرت شخ الهند ّنے نہ غالب یاشا، انور یاشا اور جمال پاشا سے ملاقا تم کیس ندان كيليخ ايبا كوئي موقع تعاليكن" ونعش حيات "مين ايك ايك شيئة كاتغصيلا ذكر فرمايا-۔ ساتھ ہی اس طرز عمل کے جواز کی دووجہلس پیش کرمیں ، فرماتے ہیں:

ا- تعریضی جواب دینالینی ایسے کلمالے کوجواب میں استعمال کرنا، جن ك دومعنى بول، يتكلم ان ك دوسر عمعنى ك اور خاطب كمحد اور سيجه، يد جموث نبیں ہے اورا سے موقع پر بلاشبہ جائز ہے۔(۱)

⁽۱) نقش مهات جلد دوم من ۲۰۴۲

۲- عام لوگ بجهت بین که جهوث برحالت مین برااور حرام ہے حالانکه
 جموث بعض اوقات میں فرض اور واجب ہوجاتا ہے اور بعض اوقات میں
 مستحب اور بعض اوقات میں مباح اور بعض اوقات میں حرام اور مکروہ ہوتا
 ہے۔(۱)

" تعریقی جواب" کے متعلق کچھ کہنے کی ضرورت نہیں، لیکن دوسری صورت کے متعلق جب مولا ناحسین احمد من جیسے بزرگ جواز کا فتوئی دیں تو میر ہے جیسے فرو مایہ علم کیلئے کچھ کوش کرنے کی کیا مخبائش باتی رہ جاتی ہے، تاہم صاف صاف کہد دینا چاہئے کہ دل اس پر مطمئن نہیں اوراگر ذاتی تحفظ کے مسئلے کواسی انداز میں قبول کرلیا جائے ، جس انداز میں اسے چیش کیا گیا ہے تو بھر مجاہدانہ کارناموں اوران کے شمن میں قرباندوں کا انداز میں اسے چیش کیا گیا ہے تو بھر مجاہدانہ کارناموں اوران کے شمن میں قرباندوں کا معاملہ ختم سمجھنا چاہئے ، اور تسلیم کرلینا چاہئے کہ جان کوکوئی گزندنہ پنچے، گزند کا اندیشہ ہوتو معدم شئے جان کا تحفظ ہے، خواہ نصب العین کا حشر بچھ ہو۔ جب تک تاریخ کے صفحات مقدم شئے جان کا تحفظ ہے، خواہ نصب العین کا حشر بچھ ہو۔ جب تک تاریخ کے صفحات سے عزیمت کے تمام واقعات دھونہ ڈالے جا ئیں، اس مسلک کو دل کیوں کر قبول کر سکن ہے، جومولا ناحسین احمد مدنی نے چیش فرمایا ہے، اگر چہ اس کے لئے دواوین فقہ میں کوئی بنا دموجود ہو۔

⁽۱) نقش حيات جلدووم بس: ٢٠٥

دسوال باب:

مولا نامحمه بشيرشهبير

ايك عظيم المرتبت شخصيت

مولا نامحد بشیراگر چہ جماعت مجاہدین میں امارت عظمیٰ کے منصب پر فائز نہ ہوئے تاہم ان کے مجاہدانہ کارناموں کی حیثیت اتنی ہے کہ امیر نعمت اللہ اور امیر رحمت اللہ کے عہد کی بوری سرگزشت میں سب سے بوا حصہ مولانا مرحوم ہی کا تھا۔ وہ ایک عجیب و غریب شخصیت کے مالک تھے،جن حالات میں انہوں نے وطن چھوڑ اتھا، وہ غالباً بہت کم اصحاب کو پیش آئے ہوں مے الیکن پوری مدت اجرت میں ایک بھی مرتبہ بی خیال نہ آیا كدوطن واپس آئيں، حالانكدان كے لئے واپسى كےمواقع بر برولت بيدا بوسكتے تھے۔ میں نے۱۹۳۴ء میں ایک مرتبدان ہے عرض کیا کداب ہندوستان سے باہررہنے کے بجائے اندررہ کرزیادہ مفید کام انجام دیا جاسکتا ہے۔انہوں نے بیسنا تو بیٹھے بیٹھے كمر ب ہو گئے، ميں نے ديكھاكم آئكھوں سے آنسوببدر ہے تھے، فرمايا: اگر مجھے يقين نہ ہوتا کہتم خلوص سے بیسب بچھ کہدرہے ہوتو میں مجھتا کہ تہیں انگریزوں نے میرے یاس بهیجاہے، میں جس دن گھر چپوڑ کر نکلاتھا، خداسے عہد کیا تھا کہ جب تک ہندوستان کی سرزمین بر انگریز کا سامیمی موجود ہے، خواہ اس کی حیثیت کچھ ہو، بھی واپس ند **جا دس گا**ءاوراس سرزمین میں سانس لینااینے او پرحرام سجھوں گا۔ میں بیرعہدا پنے آخری وَم تك نبا مول كا_

غرض وہ ان عظیم الشان انسانوں میں سے تھے جو قرنوں کے بعد پیدا ہوتے ہیں،

میں نے اپنی زندگی میں ان جیسا مخلص، دین دار، باحست، غیور اور آزادی و اسلامیت کا شیدائی کوئی ندد یکھا، استقامت میں بھی وہ اپنی مثال آپ تھے۔

خاندان

ان کا اصل نام عبد الرجیم تھا، کیکن سرحد پہنچنے کے بعد محمد بشیر کے اختیاری نام کو وہ شہرت حاصل ہوئی کہ اصل نام بہت کم لوگوں کو یا در ہا۔ ان کے والد ما جدمولا تارجیم بخش ملوال (ماہلو وال) ضلع فیروز پور کے باشندے تھے، وہاں سید احمد شہید کی جماعت کے ایک فردمولوی حیدرعلی آ بسے تھے، جن سے مولا نا رحیم بخش کے بڑے بھائی حافظ محمد ایک فردمولوی حیدرعلی آ بسطیل نے بیعت کی ،خودمولا نارجیم بخش نے بھی ابتدائی تعلیم انہیں مولوی حیدرعلی سے آئی ،خودفرماتے ہیں:

میں نے ایسا کوئی عالم تمبع سنت وشریعت نہیں ویکھا،اس فاکسار بران مولوی صاحب، اس میں مولوی صاحب، اس میں ان کی مدورتی ہے، افغانانِ طوال سلطان فال صاحب، سکندر فال صاحب، ممال الدین فال صاحب آپ (مولوی حیدرعلی) کی بڑی عزت کرتے،اس عاجز کے براور حافظ محمد اسلامیل صاحب بجائے فلیفہ تھے۔(1)

مولا تارچم بخش نے دیلی جا کرشنے الکل میال نذیر حسین مرحوم سے حدیث کی سند حاصل کی، پھر لا ہور آ میے اور چینیاں والی مجد میں امام بنادیے گئے، یہیں انہوں نے نکاح کیا، متحدد وی کی کماییں جواس عہد میں بہت مقبول ہوئیں۔ غالبًاان کے پارخ نکاح کیا، متحدد وی کمایی کمیس جواس عہد میں بہت مقبول ہوئیں۔ غالبًاان کے پارخ نئے تقے، دو بھین میں فوت ہو گئے، تین ان کے بعد زندہ رہے، ایک مولا تا عبد الرحیم عرف مولا نا محمد الرحم نواسلامی کالج میں ایف، اے تک تعلیم یانے کے بعد محکمہ انہار میں ضلع دار بن گئے تھے، انسوس کہ جوانی ہی میں فوت ہو گئے، یاں اسلام کی دویں کمار معنف مولانا رجم بخش میں۔

ایک ان کی ہمشیر تھی جس کا نام زینب تھا۔

مولا نا كى ابتدا كى تعليم

مولا ناعبدالرحیم ۱۸۸۵ء میں بیدا ہوئے ، اپنے والد سے پوری تعلیم پائی ، قرآن ، حدیث اور تاریخ سے خاص شغف تھا ، پھر انہوں نے اپنے والد کی تصانیف کے علاوہ دوسری وینی کتابوں کے تراجم کا سلسلہ شروع کرادیا اور ایک اعلیٰ دارالا شاعت قائم کرلیا ، جس کا نام 'عبدالرحیم عبدالرحمٰن تاجرانِ کتب' قرار دیا۔ چنانچہ وہ اس کام میں منہمک ہوگئے اور اس کواپنی زندگی کا مستقل مشغلہ بنالیا ، یہاں تک کہمولا نارجیم بخش کا انتقال ہوا تو ان کے منصب کی طرف بھی تو جہ نہ کی اور مولا نا عبدالواحد غزنوی مرحوم چیزیاں والی مسجد کے امام مقرر ہوئے۔

ہجرت کے وقت مولانا عبد الرحیم کے چار بچے موجود تھے، عبد الحکیم، عبد العلیم، عبد العلیم، عبد العلیم، عبد العلیم، عبد العظیم، اورصفیہ بیگم۔ بڑے صاحبز ادے عبد الحکیم پندرہ برس کی عمر میں پہلے فوت ہو چھے تھے،صفیہ بیگم مولانا کی ہجرت سے چند ماہ بعد فوت ہوئی اور عبد العظیم دوسال بعد، باتی دو بچوں میں سے عبد الحلیم ایک لڑکا اور پانچ لڑکیاں چھوڑ کر ۱۹۳۹ء میں رہ گرائے عالم بقاء ہوا، ایک صاحبز ادہ عبد العلیم خدا کے فضل سے زندہ وسلامت ہے اور ایک کارخانے میں اچھی ملازمت پر مامور ہے۔

ہجرت

مولانا اواكل عى سے جماعت مجابدين كے كام من حصد لينے لكے تھے، تحقيق طور پر معلوم ند موسكا كدرو پيد فراہم كرنے كے علاوہ دہ اور كيا كام كرتے تھے۔ انہوں نے خود مجمعے بتايا كد من ہندوستان سے جحرت كا ارادہ كر چكا تھا، كيكن خيال تھا كہ تجارت كے سلسلے ميں باہر جاك كا، چر جہال مناسب ہوگا تو كھن افتيار كرلوں گا۔ انجى بجمد سلے نہ كر سكے

سے کہ بورپ میں جنگ چھڑگی اور دھڑا دھڑگر فاریاں شروع ہوگئیں۔ ویکھتے ویکھتے ویکھتے ویکھتے کا لجوں کے طلبہ نکل کرسر حدیجنج گئے ، ایک عزیز دوست نے مولا ناکوخر دی کہ آپ کے بھی وارنٹ جاری ہو چکے ہیں ، انہوں نے فورا اپنے دل میں ایک فیصلہ کیا، مجمح اٹھتے ہی گھر والوں سے کہا کہ ایک آ دمی سے روپئے لینے ہیں اور میں اس کی طرف جارہا ہوں اگر آج نہ گیا تو روپ ملنے کی امیر نہیں ، چونکہ کا روبار کے سلسلے میں ایسے معاملات پیش آتے رہے ہوں اور بہن مرحبے ہیں اور بہن میں کے سے مل کر روانہ ہوگئے ، لیکن کسی کو خبر نہ تھی کہ مستقل طور پر ہجرت کر کے جا رہے ہیں ، راولپنڈی پہنچ کرخطوط کھے ، لیکن کسی کو خبر نہ تھی کہ مستقل طور پر ہجرت کر کے جا رہے ہیں ، راولپنڈی پہنچ کرخطوط کھے ، لیکن ان خطوط کے لا ہور پہنچنے سے دوگھنٹہ پیشتر وہ سرحد کو عبور کر کے آزادعلائے میں داخل ہو ہے ہیے۔

مولوی کی الدین احمد قصوری نے بتایا کہ مولانا عبد الرحیم ایک سے زیادہ مرتبہ مشورے کے لئے والدمحترم (مولانا عبد القادر) کے پاس آئے، جو جماعت مجاہدین کے ایک سرگرم کارکن تھے۔ والدصاحب برابر بیمشورہ دیتے رہے کہ باہر نہ جاتا چاہئے اور بہیں کام کرنا چاہئے، لیکن مولانا فیصلہ کر چکے تھے، چپ چاپ نکلے اور سرحد جاکروہ کام شروع کردیا، جسے دہ ای عقیدے میں بہترین اسلامی، دینی اور قومی کام جھتے تھے۔

بإبندئ عبد

اس زمانے میں ان کے دار الکتب کا نام بہت اعلیٰ پیانے پر پہنچا ہوا تھا، سیکروں روپے کی آ مدنی تھی، ان کے بیچ چھوٹے تھے، بھائی نیا نیا ملازمت میں داخل ہوا تھا، بظاہر کاروبار کے جاری رہنے یابال بچوں اور اہل خاندان کا گزارہ چلنے کی کوئی صورت نہ تھی، کیکن مولا تانے سلطانِ فرض کے مقابلے میں کسی دوسری چیز کی طرف توجہ نہ فرمائی، بعد میں انہیں برابر معلوم ہوتا رہا کہ بچی کے گزارے کی کوئی اچھی صورت نہیں اور وہ

سخت تکلیف میں ہیں، تاہم انہوں نے خدا سے جوعهد کرلیا تھا، اس کی پابندی ہیں فرق نہ آئے دیا: "مِنَ الْمُولْمِنِیْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْ ا مَاعَاهَدُوا اللّهَ عَلَیْهِ" کی جیتی جاگی مثال ہے رہے۔

کالجوں کے طلبہ فروری ۱۹۱۵ء میں سرحد محتے تھے اور خود مولانا کے مکان پران کی روائل کی علیہ مورے ہوتے تھے۔ مولانا نے اس سے پچھ دن بعد ہجرت کی امیح تاریخ معلوم نہ ہو تکی الیکن ۱۹۱۵ء مین مجاہدین کی جن جنگی کارروائیوں کا مختصر سامر قع امیر نعمت اللہ کے حالات میں چیش کیا جا چکا ہے ان میں مولانا برابر شریک دہے، بلکہ یہ کہنا مناسب ہوگا کہ وہ کارروائیاں مولانا ہی کی کوششوں کے باعث عمل میں آئیں۔

سرحدآ زادمین سرگرمیان

 فکست ہوتی۔ جب ترک اگریزوں اور اتحادیوں کے خلاف جنگ میں جرمنی کے معاون بن گئے تو اسلامی نقطۂ نگاہ ہے بھی ہندوستان میں حدور جب ضروری کام بی تھا کہ اگریزوں کی مشکلات میں زیادہ سے زیادہ اضافہ کیا جاتا، اس کی صورت بہی تھی کہ سرحد پرجابجا خطرات کا طوفان بپا کردیا جاتا، تا کہ اگریز اپنی فوجوں کا بڑا حصہ سرحد کی تفاظت کے لئے رکھنے پر ججور ہوجاتے، اور باہر کی محاذیر کمک نہ بھیج سکتے۔ مولا نامحہ بشیر کی تمام سرگرمیاں اس مقصد کی تحییل ہی لئے مولا نانے کوئی دقیقہ سعی اٹھاندر کھا، جماعت بجاہدین کی تاریخ اس مقصد کی تحمیل کے لئے مولا نانے کوئی دقیقہ سعی اٹھاندر کھا، جماعت بجاہدین کی تاریخ کے آخری دور میں اتنا بڑا اور وسیع الاثر کام صرف مولا نامحہ بشیر جیسی عظیم المرتبت شخصیت بی انجام دے سے تھی تھی۔

كابل ميں اثر ورسوخ

اس مقصد کے لئے حکومت افغانستان سے بھی گہرے تعلقات پیدا کر لیمنا ضروری تھا، مولا نامحر بشیر نے میکام بھی بہطریق احسن انجام دیا، جس صدتک مجھے انداز ہے ان کی گفتگو بہت سادہ ہوتی تھی اور انہوں نے کسی امر کی وضاحت کے لئے بھی خطیبا نہا نداز افقار نگاہ افتیار نہ کیا، لیکن ان کے اخلاص وللہیت کا بیعالم تھا کہ جس کے سامنے بھی اپنا نقطہ نگاہ پیش کرتے وہ حدد رجہ متاثر ہوئے بغیر ندر ہتا۔

اس زمانے میں افغانستان پر امیر صبیب اللہ خال حکمراں تھا، وہ اگریزوں کے ساتھ خاص تعلقات سے تعلقات کے باعث ہرا ہے اقدام سے گریزاں رہتا تھا جواس کے تعلقات پر برائے نام بھی اثر انداز ہو سکے۔لیکن مولانا محد بشیر نے امیر حبیب اللہ خال کو بھی ہے حدمتا ثر کرلیا۔

مروم مولوی محقصوری لکست بین کرمولا ناجم بشیرامیرانجام بن سکوکل عن محکال

آئے تو نائب السلطنت سردار نفر اللہ خان، چرخود امیر حبیب اللہ خان سے ملاقات کی۔ امیر صاحب کے مزاج میں اتناعمل دخل پیدا کرلیا کہ موصوف نے انہیں یا خستان کی تنظیم کیلئے مامور فر مایا اور بارہ ہزار سالانہ نظیمی اخراجات کیلئے ان کے حوالے کیا۔ (۱)

یاغستان کے لئے وکیل امیر

چنانچہ وہ یا عستان چلے گئے اور تھوڑی ہی مدت میں وہاں کے اکثر ملاؤں اور سرداروں سے امیرصاحب کے نام بیعت کے خطوط حاصل کرلائے۔

اعلی حضرت ان خطوط کو دیم کر بہت مسر ورجوئے، اور مولوی محمد بشیر صاحب کو ممل بشیر ' کا خطاب مرحت فر مایا۔ تمام پاشتان کے لئے ان کو وکیل مخار مقرر کیا، اورا کیف فر مان ای مضمون کا مرحت فرمایا کہ ملا بشیرا میرصاحب کی طرف سے بیعت لینے کے بجاز ہیں، اعلی حضرت پرام کریز کی حکومت کا اس قدر خوف طاری تھا کہ وہ علاندیا آگریز وں کے خلاف کسی سازش میں شرکت کرنے خوف طاری تھا کہ وہ علانیا گھا کہ وہ اعلیٰ حضرت کوخوف و ہراس کے اس گنبدے نکال لائے۔ (۲)

خاص طور پر قابل تو جہ بیامر ہے کہ امیر صبیب اللہ خال کے تعلق میں ایسے کا رنامہ م عظیم کا اعز از مولا نامحمہ بشیر کے سوا کوئی دوسرا حاصل نہ کر سکا۔

مولا نا کےمعاون

مولوی محمطی فرماتے ہیں کہ سرحد آزاد کے دوپٹھان انگریزی فوج میں صوبیدار میجر کے عہدول پر مامور تھے، وہ فرانس کے کسی میدان سے موقع پاکر بھاگے اور جرمنوں کے پاس پہنچ گئے، پھرتر کی و جرمن مشق کے ساتھ افغانستان آئے، بیدونوں افسراس زمانے

(۲) مثابدات کالل دیاغتان بس:۳۰

(۱) مشاہدات کالمل دیاضتان ہم: ۲۹

میں مولوی صاحب مرحوم کے ساتھ ہو گئے۔ جب وہ تظیمی کام کے سلسلے میں یاعستان آمے ہے:

چنانچدانہوں نے پہلے تو یا ختانیوں کو تربیت عسکری دیٹی شروع کی....

بعد میں جب میں اسمست آیا تو وہ ملا بشیر کی معیت میں تیراہ اور محسود علاقے
میں گئے ،اس علاقہ میں ان کے اگر سے ملا بشیر کا دورہ بہت کا میاب رہا۔(۱)
غرض مولانا کو تنظیمات جہاد کے سواکسی مشغلے سے کوئی دلچپی نہ تھی ، ان کی زندگی کا
ایک ایک لیے ای کام کے لئے وقف ہوگیا۔ انہیں جہاں ڈھب کا کوئی آ دمی ملا ، اس سے
کی کام لیا، گویا وہ برقی حق کی ایک زبر دست رَو تھے کہ جہاں جہاں سے گذر سے زندگی کی
حرارت پیدا کرتے اور ایمان وجمیت کے چراغ جلاتے گئے۔

⁽۱) مشاہدات کابل دیا طبحان می: ۳۰ مولوی عبدالرزاق کا بیان ہے کہ ان بیں سے ایک کانام عبدالسبوان تھا اور دوسرے کا عبدالرحان میں اسے میں دو بیکے متے کین انہیں مفرور قرار دیتا درست نہ ہوگا ، دونوں دوسرے کا عبدالرحان ہے بندوستانی ادرافغانی بیا عبدالرحان کے بیک بیٹ ہے جندوستانی ادرافغانی بیا عبدالرحان کے بیک بیٹ ہو گئے ۔ مولا تا برکت اللہ نے انہیں برلین بالیا، بھا تیوں کے مولا تا برکت اللہ نے انہیں برلین بالیا، جرکن مثن کے ساتھ بیکا بل آئے باضعان می کو دیکی ،اس سے جرکن مثن کے ساتھ بیکا بل آئے باضعان میں کو اور تھے بعد البحان ادرعبدالرحن نے انہیں تی پریڈ کے علاوہ محلل کا کام بھی بیٹ ترجیاج بین مغلول کے عبد کی بیڈ ترجیاج بین مغلول کے عبد کی بیٹ ترجیاج بین کی تعلی کی بیٹ ترجیاج بین مغلول کے عبد کی بیٹ ترکیا ہوں کی بیٹ کی بیٹ

کابل والامنعوبہ ناکام ہوجائے پر عبدالبھان کائم بے ہمراہ روس کے رائے والی چلا گیا۔ تا شفتد کہتھا تو سنا کہ امان اللہ فان نے جلک استقلال چیز دی ہے، چتا نے لوٹ پڑا، کا بل کی جگ ختم ہوگئ تو جڑک جا کر بٹیا تھی بنے کا کمی ہنے کا کمی منظمانی (چین) بش گذری، دوسری جنگ ہوئے ہوئے ہے کھودی پہلے کائل آ کر بٹیا تھی بنے کا کار فائد قائم کیا، سبحاش چندر ہوں ہندوستان سے لکل کرکا بل کے رائے جا پان چلا کیا تو بچومعلوم فیس کوکس مناہ پر معرام بنان کوقید کر دیا گیا اور چارسال قید میں گزار کراس نے وفات پائی۔ یہ تفسیلات مولوی عبدالرزاتی کواس لئے معلوم جی کمیدالرزاتی کواس لئے معلوم جی کدو فاصی مدت عبدالرزاتی کواس لئے معلوم جی کمیدو فاصی مدت عبدالرزاتی کواس لئے معلوم جی کدو فاصی مدت عبدالرزاتی کواس لئے

گیار ہواں باب:

شهادت كاحادثه اليمه

اک خونچکال کفن میں کروڑوں بناؤہیں پڑتی ہے آ کھ تیرے شہیدوں یہ حور کی

مركز چركند

مولا نامحمہ بشیر معمول کے مطابق انگریزوں کی مخالفت اور ہندوستان کی آزادی کے لئے مختلف منصوبے تیار کرنے میں مصروف تھے، اس زمانے میں ان کامستقل مقام مرکز چرکند تھا، جس کی مختصری کیفیت ذبل میں درج ہے:

جلال آباد کے شال اور شال مشرق میں کوہ ہندوگش کی متعدد شاخیس پھیلی ہوئی ہیں ان میں سے ایک شاخ وہ ہے جو جلال آباد کے پاس سے دریائے کنٹر کے ساتھ ساتھ پہلی گئی ہے، اسمار کے قریب اس میں سے ایک اور شاخ نکلی ہے جو پہلی شاخ کے متوازی مشرق میں واقع ہے۔ ان شاخوں میں یاغتان کے کئی مشہور مقام آتے ہیں، مثلاً پیشف (بفتح شین)، چفتا سرائے، قنم ، جن بلٹی ، دیروغیرہ، پشت سے تین چارمیل شال میں دریائے کنٹر کا ایک موڈ ملتا ہے، جس کے قریب مشرقی سمت میں ایک درہ واقع ہے، میں اس مقام پر سرکانی نام ایک موضع ہے، درے سے پہاڑ پر چڑھنا شروع کردیں تو چوٹی سے مشرقی سمت اتر کرکوئی نصف میل کے فاصلے پر ایک مقام ہے، جے بالا چرکنڈ کیتے ہیں، اس سے آگے دو تین فرلا نگ برایک بہت بردی مجد ہے جو حضرت مثل صاحب

ہُرہ نے تعمیر کرائی تھی اور آج کل معجد صاحب مبارک کے نام سے مشہور ہے۔ یہاں چھوٹے چھوٹے پہاڑی نالوں کی افراط ہے، معجد کے پاس شیخ چرکنڈ نے اپنے رہنے کا بندوبست کرلیا ، اسی معجد سے متصل جنوبی ست میں مجاہدین کا مرکز ہے، معجد اور آبادی کے درمیان صرف ایک تک گلی واقع ہے۔

آبادی کی کیفیت ہے ہے گئی کے ساتھ ساتھ چارمکان ہیں، دویش مجاہدین رہے تھے ایک میں فلہ وغیرہ رکھا جاتا تھا۔ چوتے اور مغربی ست کے مکان میں مولانا فعنل اللی وزیر آبادی مقیم تھے، صرف اس کا دروازہ گلی میں تھا، مجاہدین کے مکانوں کا دروازہ مشرتی سمت میں تھا، مکانوں کی اس لائن کے جنوب میں مشرقی ست ایک چھوٹا سا کمرہ تھا، جس میں اس آبادی کے اندر میں مولانا محمد بشیرر ہے تھے۔ اس کے ساتھ چھوٹا سامحن تھا، جس میں اس آبادی کے اندر آبنے کا دروازہ واقع تھا، اس چھوٹے صحن کے ساتھ مشرق میں ایک بڑا کر و بنادیا گیا تھا، محمد میں ان فانے کے طور پر استعال کرتے تھے۔ مجاہدین کے اس مرکز کی مکا دیت آئی ہی محمد کی تھیں جو ضرورت کے وقت محمل کی تھیں جو ضرورت کے وقت محمل کی تھیں جو ضرورت کے وقت محمل کی تغیر نہیں ہوا، فصیل کے طور پر استعال ہو سکیس، آئی بھی بھی کی کیفیت ہے اور اس میں کوئی تغیر نہیں ہوا، فصیل کے طور پر استعال ہو سکیس، آئی بھی بھی کی کیفیت ہے اور اس میں کوئی تغیر نہیں ہوا، فصیل کے طور پر استعال ہو سکیس، آئی بھی بھی کی کیفیت ہے اور اس میں کوئی تغیر نہیں ہوا، فسیل کے طور پر استعال ہو سکیس، آئی بھی بھی بھی جھی ہوتے تھے، پائیں چرکنڈ اس مقام سے پائی چھیسل فی میں واقع ہے۔

ہمہ گیرشہرت

یے چوٹاسامرکز تھا جو ۱۹۱۵ء میں قائم ہوا اور مولا نامحہ بشیری امارت کے زمانے میں اس نے ہمہ گیر شہرت حاصل کی، یہاں تک کہ مجاہدین کے اصل مرکز اسمست کی شہرت بھی اس کے آگے ماند پڑگئی۔ دیکھئے! خداکی راہ میں خلوص وحسن نیت سے سرگرم عمل رہنے کی برکت وکرامت کہ پانچ سات چھوٹے چھوٹے اور کیچے مکانوں کی آبادی

نے آزادی واسلامیت کی تاری میں کتابلندمرتبه عاصل کرلیا۔

یہاں یہ بھی بتادینا چاہیے کہ جاہدین کا بیم کر حکومت افغانستان کی خاص سفارش اور حضرت ملاصاحب ہڈہ کے معزز خلفاء کی سر پہتی میں بنا تھا، جن میں سے حضرت بادشاہ صاحب اسلام پور، حضرت ملاصاحب بابرہ اور میاں صاحب سرکانی بطور خاص قائل ذکر ہیں۔ بابرہ چرکنڈ کے شال میں آٹھ دس تھنٹے کی مسافت پر ہے اور حاتی صاحب تر بگ زئی کامرکز غازی آباد تقریباً سات تھنٹے کی مسافت پر۔

شهادت كافبل از وفت احساس

مولانا محمد بشیر کا خیال مدت سے بہ تھا کہ وہ اچا تک شہید کردیے جائیں مجے ہتمبر ۱۹۳۳ء میں مجھے بمقام کابل ان کی زیارت کاشرف حاصل ہواتھا توانہوں نے اپنے اس خیال یا تا ترکائی مرتبه اظهار کیا تھا،اگرمیرا حافظ نلطی نہیں کرتا تو بیجھی فرمایا تھا کہ پہلے ان برایک دومر تبدقا تلاند حملے ہو چکے ہیں ، یاعستان کے ہر حصے میں وہ بے حد ہرول عزیز تھے، افغانستان کے چھوٹے بڑے ،غریب امیر ،معمولی کارکن اور ارکانِ حکومت ان کا انتہائی احترام کرتے تھے، جماعت میں انہیں جو خاص مقام حاصل تھا ،اسے پیٹی نظر رکھتے ہوئے وہم بھی نہ ہوسکتا تھا کہ کوئی انہیں گزند پہنچانے کی جسارت کرے گا،البت انگریزی حکومت اور اس کے متوسلین مولانا کے جانی دشمن تھے، اس لئے کہ جانتے تھے، جب تک مولا نازندہ ہیں ،ان کا دل ود ماغ اوران کے قوائے عمل انگریزی حکومت کا تنختہ اللنے میں کوئی دقیقۂ سعی اٹھانہ رکھیں ہے، لیکن انگریزوں کا ہاتھ مولا نا تک وینچنے کی نظر بظاہر کوئی صورت نہ تھی ، الاً یہ کہ وہ اینے کسی کارندے کو چمر کنڈ بھیج دیتے اور وہ جماعت مجابدین میں شامل ہوکر موقع کا انتظار کرتا۔ سناجاتا ہے کہ جس وقت مولانا اطراف کوہاٹ میں انگریزوں کے خلاف تنظیمات فرمارے تصفو انگریزوں نے ان کی جائے

اقامت کا حال معلوم کر کے ہوائی جہاز سے گولہ باری کرائی تھی ،لیکن مولا تا بفضل خدا محفوظ رہے۔

وصيت نامهُ مجمل

احساسِ شہادت کے پیش نظر مولا نانے ۲۷رذی المجب۱۳۵۲ه (۱۱رابر بل ۱۹۳۴ء) کودود میت نامے لکھے، ایک مجمل ومخضر، دوسرامفصل مخضر وصیت نامه عام تھا، مفصل کی پیشانی پر مرقوم تھا:' دمتعلق ابراہیم وغیرہ'' وصیت نامہ مجمل کامتن ذیل میں درج ہے: بیشانی پر مرقوم تھا:' سمالاً الرحمٰن ال

بعد سلام مسنون کے اور ووائ آخری کے سب بھائیوں مجاہدین ہندی چرکنڈ کو معلوم رہے کہ بہ قضائے اللی میں اتفاقیہ مارا جاؤں یا اپنی موت جلدی مرجا کال تو حضرت امیر صاحب کے اس سے نیا تھم یا صدر(۱) آنے تک میرے بعد جماعت چرکنڈ کے امام وصدر جناب میاں معاذ صاحب رہیں محاد صالاری جمعیت یعنی جنگ و مدافعت کے سردشتہ دار اور مشیر خاص میاں معاذ صاحب کے بھائی ایوب صاحب ہوں ہے۔

خزانچی بھی بدستورمیاں معاذ صاحب ہی رہیں یا بھائی ایوب صاحب، جیسا کہ ان کا اتفاق ہو، بھائی عنایت اللہ بدستور جمعدار رہیں اور ان دونوں کے تھم کومیرے تھم کے برابر جانیں۔

عزیزی ارجند ابراہیم،غلام علی، نیز عبد القدوی خال ان میوں کے ہربات میں خصوصی معاون ویاور ہوکر جماعت کوسنجالیں، باتی سب بھائی عزیز ان عبداللہ و ماہ وسمندروا کبرومیر غلام و فیروز بھی ہوشیار اور ان سرداروں کے بورے تابعداررہ کرخداور سول کوراضی کریں،میرا قاتل میری طرف سے

⁽۱) اشتباه سے بینے کے لئے جماعت چمرکنڈ کے امرکوا صدر " کہتے تھے۔

معاف ہے،اس کامعاملد خدا پرچھوڑ دیں،البتہ جماعت سے خارج کردیں۔ مرقومہ ۲ سرزی المجہ ۱۳۵۲ء۔

فقيرمحم بشربقلم خوداز جركند

مفصل وصيت نامه

ای تاریخ کومولانا نے ایک اور وصیت نامه لکھا، جس میں مختلف امور کے متعلق مفصل بدایات درج تھیں، اس کی نقل ذیل میں ملاحظ فرمائے۔ مفصل بدایات درج تھیں، اس کی نقل ذیل میں ملاحظ فرمائے۔ بسم اللہ الرحمٰن الرحمٰ:

بعد سلام مسنون سب بھائیوں خاص کر حضرت امیر صاحب اسم اور چرکنڈ کے صدر وسالارصاحبان کو بخو بی روشن رہے کہ اس عرصہ بست سالہ قیام جمعیت میں میں نے اپنے گئی کابل یا چرکنڈ یا کسی اور جگہ ذاتی رو بیہ بیسہ ورثے میں نہیں چھوڑا، نہ ایک حبہ یا ایک تار دھا گا تک نیچے اپنے کسی عزیز و رشتہ دار کوروانہ کیا اور خود بھی اپنا گزارہ اس معیار پر دکھا، جس سے کم میں میں کرنہ سکتا تھا، اس لئے آج فارغ البال فدائے متعال کی رحمت پرتو کل کرکے اس کی بارگاہ میں حاضر ہور ہا ہوں۔ اگر ہو سکے اور جب بھی یاد آجاؤں تو دعاء سے فراموش نہ کریں۔

جب عزیزی مولوی صبغت الله(۱) صاحبزادہ چرکند رخصت ہوکرائمس گئے تو دو تفکیح میں نے ان کو ہدید کئے ،وہ میرے ذاتی ہی تھے، اور تیسراتفکیہ جہازی جو ابراہیم کے پاس ہے،وہ بھی میرا ذاتی ہے۔ یہ تیسراتفکی عزیزی ار جمند مثیل فرزندا براہیم ہی کاملک جانے ،یا جمعیت اسے اس کی قیمت دے دے۔در اصل زماند انقلاب گزشتہ افغانتان (۲) کے وقت سے جمعیت

⁽¹⁾ صبغت الله بن اميرنقت الله شهيد

⁽٢) بچيسڤا کے دور کا انقلاب

چركند مين لكائے موئے تين سورويه كابل كے وض مين نے يفنكي ليا تھا۔ حفرت امير صاحب كي خدمت مين عرض ہے كه ميرا خيال عزيزى ابراہیم کی شادی کسی موزوں مگر کرانے کا تھا اور میں ارجمندی سے وعدہ کر چکا تھا، مگرموقع نہ یاسکا، پس اگر آ ب میرے اس خیال ووعدہ کوعزیزی کے متعلق جو کہ فعدا کاری وصعداتت کا پتلا ہے، سردشتہ کردیں گے اور اسے اسمس میں یا چر کنڈ میں خوش رکھیں گے اور کام لیں گے تو میرے بعد بھے پراحسان کریں گے۔ چھوٹا ہشت مکہ جرمنی تفکی جوخود میرے گلے میں ہوتا تھا، نیز ایک مشہدی صافه ریشی جو مجھے تحفۃ ملاتھا، نیزتین ریشی دویٹے سرکاری اور آپ کے حضور میں پیش ہونے کے میں دونوں گرم چیکن مسرے سیاہ دخا کی بھی آپ جے دی، باقی کیرے ابراہیم کے علم میں ہیں، میرے پٹکوں میں سے ایک شاہ جی نعت الله صاحب كوديديا جائے ، سفيد چيكن كام كےنبيں رہے، تا ہم چھوٹا میاں صاحب معاذ اور برا بھائی ابوب یا حاجی صاحب عبدالعلیم لے لیس یا جے یددی، موناتفکی بھی مع مونے کارتو سول کے جو غالباً میرے رک میں ہیں، سرکاری ہے،مندرجہ فوق ہشت کمکہ جرمنی تفتلج کے پچھ کارتوس بھی میرے ٹرنک میں ہیں اگر چہوہ بھی میرے ایک دوست نے تخذ دیے تھے، سرکاری ہی سمجھے جائیں ،البنتہ میری خواہش ہے کہان کارتوسوں کے حساب میں ہے چمر كند كے وفادار جمعيتى بھائيوں كونى نفر ايك ايك روپيكھى كے لئے دے ديا جائے، خدائے پاک آپ کوجزائے خیردے گا۔

میرے ٹرنک میں جو کاغذات ہیں ان میں بعض جماعت کیلئے بہت قیتی سندات وتصدیقات خدمت اسلام پر حاوی ہیں، کسی نا قابل اعتاد اور بے پروا ہاتھ میں نہ جانی چاہئیں، امنائے خاص جمعیت دیکھیں اور محفوظ رکھیں۔ بہ فضل خداوندی چرکنڈ کا کتب خانہ بھی خوب ہی کتب دینی و تاریخی پر حاوی ہے، اگر محفوظ رہے گا اور بھی بھی دھوپ لگوا کراہے کیڑوں ہے بچاتے رہیں گرتو جب بھی کوئی عالم جید جعیت میں آ جائے تو اسے بہت کام دےگا،
اس لئے اس کی گہداشت و حفاظت میں پوری کوشش کی جائے۔
عدو و افغانستان میں روغن زر داور غلہ و تفنگ کی آ زادی کا فرمان مجریہ عکومت حاضر بھی ملفوف و صیت نامہ ہے، انشاء اللہ جد پدصدر کی مہراور و ستخط ہے بھی عکومت اس لطف و مہر بانی کو جاری رکھے گی جو خود میری ممبر ہے وہ رکھتی تھی۔
عام ارکانِ جماعت سے استدعاء ہے، اہم میں ہوں یا چرکٹ میں یا پر رفقار کی کوشش کی ہے کہ چھوٹوں کو فرزندوں کی جگہ اور ہمسروں کو بھائیوں کی پر رفقار کی کوشش کی ہے کہ چھوٹوں کو فرزندوں کی جگہ اور ہمسروں کو بھائیوں کی باند سمجھا، تا ہم میں ایک گنا ہگار انسان تھا اور انتظام جمعیت کی فر مدوار یوں کا تیراہ و ووزیرستان تک مسئول رہا، کسی کو جھے سے کی قشم کی کوئی رخبش اور خقگی ہوتو معافی فر ماویں، دوسروں کی ہر قشم کی زیادتیاں جو کسی نے دیدہ و دوانستہ یا سہوا میر سے حق میں کیس، حبیۃ للہ معاف کر چکا ہوں ، سب زھتی و دوائی سلام قبول کریں ہوتوں میں مرقومہ ۲۷ روزی المجھات ہے۔

فقيرمحر بشير بقلم خوداز جركند

شهادت

مولانا غالبًا اوکل عمبر ۱۹۳۳ء میں مولوی برکت اللہ ابن امیر نعمت اللہ اور جماعت کے چھسات آ دمیوں کے ہمراہ کا بل گئے تھے، وہاں سے اواخرا کو بر میں واپس آئے، رمضان السبارک کی پہلی رات کواپنے کمرے میں شہید کردیے گئے، جماعت کے ذمہ دار افراد نے بتایا کہ مولانا کی شہادت ایک پنجابی طالب علم عبد الحلیم نام کے ہاتھ سے ہوئی جو بہرے پر متعین تھا۔ اس سازش میں غالبًا ورلوگ بھی شامل تھے۔ مولانا اپنے کمرے میں تنہا سوتے تھے اور عادت میتھی کہ کواڑ بند کر کے سوجاتے تھے، اندر سے زنجیرلگاتے تھے۔

سحری کے لئے ایک آ دمی آئیس جگانے گیا اور دروازہ کھولاتو دیکھا کہ مولانا دروازے
کے سامنے ہی زمین پر چت لیٹے ہوئے ہیں، اس نے دوسرے مجاہدین کو بلایا، کمرے
میں اندھیراتھا لائین کی روشن میں دیکھا گیا تو مولانا چار پائی کی پائینتی کی طرف زمین پر
جیت پڑے تھے اور قاتل یا قاتلوں نے آئیس بکرے کی طرح ذرج کرڈ الاتھا۔

جماعت کے دستور کے مطابق ہمیشہ دات کو تین بہرے ہوتے تھے، پہلانمازعشاء سے ساڑھے دی ہے جنگ، دوسراساڑھے دی سے دو ہے تک، تیسراصی تک عبدالحلیم کا پہراد وسراتھا، اندازہ یہ ہے کہ ای وقت میں اس کے ساتھی آئے، سب نے ل کر بحالت خواب دبالیا، پھرچار بائی سے نیچا تارکر گلے پرچھری پھیردی، جسم پرزخم کا اورکوئی نشان نہتھا، البتہ ازار بند تک کپڑے خون آلود تھے۔ مولانا کے پاس ایک کتا بھی تھا، جورات کے وقت کسی کو بجاہدین کی بستی کے پاس نہ آنے دیتا تھا، یہ کتا حیست پر بندھا ہوا تھا، گویا عبدالحلیم نے اپنے ساتھیوں کو بلانے سے پیشتر اسے بھی قابور کیا تھا۔

قاتل کی سر گزشت

جیسا کہ پہلے بنا یا جا چکا ہے، قاتل کا نام عبد الحکیم تھا۔ وہ اس زمانے میں آیا تھا، جب مولانا کا بل گئے ہوئے تھے، بالکل نو جوان تھا، داڑھی ابھی نکل ہی رہی تھی، اس نے بنایا کہ میں ضلع گور داسپور سے آیا ہوں اور محبد میں تھہر گیا۔ مولانا اور مولوی برکت اللہ واپس آئے تو اس وقت بھی مجد ہی میں رہتا تھا، مولوی برکت اللہ اسمست چلے گئے تو مولانا کو اس کا خیال آیا، اسے کھانا بھی با قاعدہ پہنچاتے اور چائے بھی اپنے ساتھ پلاتے۔ حالات وریافت کئے تو اس نے بتایا کہ ماں باپ مرچکے ہیں، پھھا تگریزی پڑھ لی تھی، اب تاائی مولان نے بانا چاہتا ہوں۔ پرواند رُاہ داری نہ لل لی تھی، اب تلاشِ موانی نے اسے جماعت میں رہنے پرآمادہ کر لیا، قرآن مجید پر سکا، لہذا چرکنڈ چلا آیا، مولانا نے اسے جماعت میں رہنے پرآمادہ کر لیا، قرآن مجید پر

ہاتھ رکھوا کر عہدلیا کہ نہ احکام جماعت کی خلاف ورزی کرےگا، نہ بدعبدی اور غداری کا مرتکب ہوگا۔مجاہدین کے دل میں اس کے نتعلق شبہات تھے،کین مولانانے فرمایا کہ اس نے قرآن پر ہاتھ رکھ کرمیری تسلی کردی ہے،اب شبہ کی کوئی گنجائش نہیں،اس کی تعلیم کے لئے پیٹا ورسے کتابیں منگوا کیں۔

بعض غورطلب امور

اس حقیقت میں کوئی شبہیں کہ مولانا کی شہادت عبد الحلیم کی سازش اور تعاون سے ہوئی، کین اس سلسلے میں بعض امورا سے تھے، جن کا کوئی اطمینان بخش حل نیل سکا۔ مثلاً:

ا- جماعت کا دستوریہ تھا کہ نمازِ عشاء سے پیشتر کسی کورات کے پہرے داروں کا علم نہ ہوتا تھا، نماز کے بعد جمعد ارمختلف آدمیوں کواطلاع دے دیتا کہ جہیں فلاں وقت سے فلاں وقت تنداندر کا کوئی آدمی باہر جا سکتا تھا، نہ باہر کا اندر آسکتا تھا۔ نہ باہر کا اندر آسکتا تھا۔ سے کہ عشاء کے بعد پہرے داری کاعلم ہونے پر عبد الحلیم نے اندر آسکتا تھا۔ سوال ہے ہے کہ عشاء کے بعد پہرے داری کاعلم ہونے پر عبد الحلیم نے این ساتھیوں کوئس ذریعے سے اطلاع دی ؟

۲- وہ خود نحیف البدن اور کمزور آ دمی تھا اور تنہا ایسے اقدام کی جرائت نہ کرسکتا تھا،
 نیزمولانا کو جس حالت میں شہید پایا گیا، اس سے صاف واضح تھا کہ بیرا یک سے زیادہ
 آ دمیوں کا کام تھا، وہ آ دمی کون تھے اور کہاں ہے آئے؟

۳- مولانا کائ صرف عبدالحلیم سے مانوس تھا،اس لئے کہ وہ مولانا کے ساتھ رہتا تھا، کتے کو جھت پر باندھنے کا کام ای کے ہاتھوں انجام پایا۔اگر وہ سازش میں شریک نہ تھا تو قاتلوں کے لئے یہ آ سانیاں کیوں بہم پہنچا کیں؟

۳- چرکنڈ کا گاؤں مجاہدین کے مرکز سے تین یا چارفرلانگ پرتھا۔ سوال بیہ کہ اگر عبد الحلیم کے ساتھی چرکنڈ میں مقیم تھے تو اس نے اپنے بہرے کے وقت میں کس ذریعے سے آئییں اطلاع دی؟ نصف میل جانا اور نصف میل آنا وقت طلب تھا، اگروہ

پہرہ چھوڑ کرخود جاتا تو دوسروں کوفو راعلم ہوجاتا ،للبذا پیشلیم کئے بغیر چارہ نہیں کہ خود مرکز کے اندریااس کے بہت قریب اس کا کوئی شریک کاریہلے ہے موجود تھا۔

۵- اگراس کے ساتھی چمر کنڈ میں منتظر بیٹھے تھے تو بجیب بات بیہ کہ اہل چمر کنڈ
 کوا گلے دن ظہر کے وقت تک مولانا کی شہادت کے متعلق کوئی علم نہ ہوسکا۔

مولوی فضل البی وزیرآ بادی اگر چه جماعت مجاہدین سے الگ تھے تاہم ان کا مکان مجاہدین کی آ بادی میں داخل تھا، اور اس کا دروازہ باہر کی گلی میں کھانا تھا۔ یعنی اس مکان کے ساکن آ مدورفت میں مجاہدین سے بعلق تھے، نیز اس کا ایک راستہ مولا نا کے مکان کی جیست پر سے جاتا تھا، لہذا واقعاتی شہادت کی بنا پرشبہ کیا گیا کہ مولوی فضل البی بھی اس مازش میں شریک ہیں، گویا عبد الحکیم نے ان کے کسی مقرر کئے ہوئے آ دمی کے ذریعے ساختی قاتلوں کو اطلاع دے کر بلایا اور اس مقدس بزرگ کو شہید کر کے وہ چپ چاپ رفو چکر ہوگئے۔ جس نے ہیں سال کی زندگی کا ایک ایک لیحہ جہاد فی شہیل اللہ میں گزارا، مولوی فضل البی اور مولا نامحہ بشیر کے درمیان جو شدید اختلافات چلے آتے تھے، وہ اس مولوی فضل البی اور مولا نامحہ بشیر کے درمیان جو شدید اختلافات چلے آتے تھے، وہ اس شہیے کے لئے تقویت کا باعث بن گئے ، لیکن واقعہ بیہ کے کہمولوی فضل البی عاد شہشہادت سے تین روز پیشتر گل صاحب چار میگی کے پاس چلے گئے تھے، گویا ان کی براو راست سے تین روز پیشتر گل صاحب چار میگی کے پاس چلے گئے تھے، گویا ان کی براو راست سے تین روز پیشتر گل صاحب چار میگی کے پاس چلے گئے تھے، گویا ان کی براو راست سے تین روز پیشتر گل صاحب چار میگی کے پاس چلے گئے تھے، گویا ان کی براو راست شرکت کا بہ ظاہر کوئی امکان نہ تھا۔

بادشاهگل اور دوسرے اصحاب کی آمد

جماعت مجاہدین نے شہادت کے واقعے کو چھپائے رکھا، البتہ بادشاہ گل، گل صاحب چارمنگی وغیرہ کوفور اَ اطلاعات بھیج دیں کہ مولا ناشہید ہو چکے ہیں آپ جلدا زجلد آ کر نماز جنازہ میں شریک ہوں۔ ظہر کے وقت اہل چرکنڈ کو اطلاع ملی تو انہوں نے مجاہدین کی بستی پر چڑھائی کردی، اس اثناء میں بادشاہ گل صاحب آ گئے اور شورش دب گئے۔ کیم رمضان المبارک کوعصر کے وقت مولا ناا بیے خون آلود کیڑوں میں فن ہوئے۔ سررمفان المبارک کوگل صاحب چار منگی بھی آگئے، بادشاہ کل نے دوسو چالیس روپے میں دو بیل نحر یدے، فچروں پر گیہوں منگوائے، آس پاس محملکوں اور خواتین کورعوت دے کر بلایا، سب کے لئے کھانے کا انتظام کیا۔ اس محملان المبارک کونما نوجی کے بعد مجد میں اجتماع ہوا، بادشاہ گل نے زبر دست تقریر کی، جس میں جماعت مجاہدین کے علاوہ مولا نابشیر کے اوصاف ومحالہ بیان کئے اور ان کی عظیم الشان اسلامی خدمات پر روشنی ڈالی۔ آخر میں کہا کہ یقل انگریزی حکومت کی سازش اور ایماء سے ہوا ہے۔ اہل جرکنڈ سے مخاطب ہوکر فرمایا کہ تمہارے علاقے میں ایسے واقعے کا پیش آ ناتہ ہارے لئے باعث بنگ وعار ہے۔

چونکہ مولوی فضل الہی پر بھی شبہ تھا،اس لئے اجتماع میں فیصلہ ہوا کہ وہ اپنا مال اسباب لے کرمجاہدین کی بستی ہے نکل جا کیں، چر کنڈ ندر ہیں۔ یا غستان میں اور جہاں چا ہیں قیام رکھیں۔

شهادت کی ذمه داری

ابر ہا بیامر کدمولا نا کوشہید کرنے کاحقیق ذمہ دارکون تھا، تو اس بارے میں بقینی و قطعی طور پر پچھ عرض کرنامشکل ہے، البتہ چندامور بالکل داضح ہیں:

ا- جس گروہ نے مولانا کوشہید کیا ،اس میں عبدالحلیم یقینا شریک تھا ،اوراس کے سرگرم تعاون کے بغیر میکام انجام نہ پاسکتا تھا۔

العدخوداس کے بعد الحلیم کواپنے بہرے کاعلم رات کے نو بجے ہوا ہوگا، اس کے بعد خوداس کے لئے باہر جا کراپنے ساتھیوں کواطلاع دینے کا کوئی امکان نہ تھا، لہذا ضروری ہے کہ اسلیم کیا جائے کہ اس کے شرکاء مرکز سے بہت قریب کسی محفوظ مقام پر چھپے بیٹھے ہوں گے، یہ خیال بھی ہوتا ہے کمکن ہے انہوں نے مناسب موقع کے انتظار میں اس طرح کئی را تیں گڑاری ہوں اور باہم اشارے مقرر کرلئے گئے ہوں۔

۳- بیاہتمام تنہا عبدالحلیم نہ کرسکتا تھا، اس کے پس پشت کوئی بردی طاقت ہونی چاہئے جس کے وسائل بہت وسیع ہوں۔

سلسلے میں افغانستان میں جارہا تھا تو وہ چرکنڈ کیوں پنچا؟ خیال ہوسکتا ہے کہ جوراستہ اس نے افغانستان میں جارہا تھا تو وہ چرکنڈ کیوں پنچا؟ خیال ہوسکتا ہے کہ جوراستہ اس نے افتیار کیا تھا، چرکنڈ بھی اس میں ایک منزل تھا، لیکن وہ وہاں ویر تک کیوں تھہرارہا؟ اس کے پنچنے سے کی روز بعدمولا نا کابل ہے آئے، پھروہ آٹھ دس دن تک مولوی برکت اللہ مدارالمہام جماعت مجاہدین کی مہمانی میں گےرہے، عبدالحلیم نے یہ پوری مدت چرکنڈ کی ممار المہام جماعت مجاہدین کی مہمانی میں گےرہے، عبدالحلیم نے یہ پوری مدت چرکنڈ کی مسجد میں گزاری اور کہیں نہ گیا۔ اس سے صاف ظاہر ہے کہ وہ کی گہری سازش کے ماتحت دہاں پہنچاتھا، اورخودمولا نا کے خلوص واعتاد نے اسے کام جوئی کی مہلت دیدی۔ مہاوت کے بعد عبدالحلیم کا کوئی سراغ نمل سکا، قرینہ ہیہ ہے کہ وہ ہندوستان چلا آیا، یہاں اسے دارو گیرکا کوئی خطرہ نہ ہوسکتا تھا، اس لئے کہ اس کا فعل بدا متبارِ نتیجہ گھا کی مواجع نے راغلب نہیں کہ یہ سب پچھائی حکومت کے اہتمام وانتظام سے انجام پایا ہو۔

مولانا نے جس دن راہ بجرت میں قدم رکھا تھا وہ اپنی جان جال آفریں کے حوالے کر چکے تھے، لیکن کتنے رنج وقلق کا مقام ہے کہ جو بلند پایے شخصیت دشمنانِ اسلامیت وآزادی کے خلاف جہاد کرتی ہوئی مرنے کی آرزومند تھی، وہ ابنوں کے ہاتھوں رمضان المبارک کی پہلی رات میں بہ حالت بے کسی ذبح ہوئی، یقین ہے کہمولانا کے جذبہ فداکاری کی زبان پر آخری وقت میں بھی بیتر انہوگا۔

جانے کہ داشت کردفدا ئے تو آذری شرمندہ از تو گشت کہ جانِ دگر نہ داشت

بارہواں باب:

مولا نامحمر بشيركي شخصيت

قتل کی ذ مهداری

مولانا محمر بشیری شہادت کے متعلق جتنی تفصیلات دستیاب ہوسکیں پیش کردی گئیں، صرف ایک بات رہ گئی اوروہ سیکہ مولانا کی شہادت سے تقریباً ایک سال قبل محمد نام ایک مخص نے بھی انہیں شہید کرنا چا ہا تھا اور وہ فائز کرتے ہوئے گرفتار ہوا، حسن اتفاق سے مولانا کو کوئی گزند نہ پہنچا اور محمد کو اسی وقت جماعت سے خارج کردیا گیا۔ غالبًا اس حادثے کے ساتھ ہی مولانا نے وصیت نامے مرتب کردیے تھے، اس لئے کہ انہیں خیال ہوگیا تھا، خدا جانے کب ایسا موقعہ دو ہارہ پیش آجائے۔

بائیس سال کے بعد آج بیروش کردیتا غالبًا افشائے رازنہ مجھا جائے کہ جوتفعیلات
پہلے پیش کی جاچکی ہیں، یہ والاحسرت سردارشاہ محود خان غازی نے اپنے خاص آ دمیوں
کے ذریعے سے مہیا کی تعیس، اس زبانے میں وہ افغانستان کے وزیر حربیہ ہے، لہٰذا ان
کے متند ہونے میں کلام کی تخبائش نہ ہونی چاہئے۔ سردار موصوف کو بھی مولا تاسے خاص
تعلق تھا، ظاہر ہے کہ اس پوری سازش کی روح روال عبد انحلیم تھا، لیکن جیسا کہ عرض کر چکا
ہے، وہ تنہا یہ کام انجام نہ دے سکتا تھا، اور جن حالات میں اس نے سازش کولباس عمل
پہنایا، ان میں باہر سے کوئی امداد حاصل نہ کرسکتا تھا۔ جب تک مجاہدین کی بستی کے اندر
کوئی خص اس کا پورا ہم نوانہ ہوتا، غالبًا اسی وجہ سے مولوی فضل الی مرحوم کے متعلق بعض
قلوب میں شبہات پیدا ہوئے۔ یہ بھی واقعہ ہے کہ مولوی فضل الی اور مولا نامحہ بشیر کے
قلوب میں شبہات پیدا ہوئے۔ یہ بھی واقعہ ہے کہ مولوی فضل الی اور مولا نامحہ بشیر کے

باہمی تعلقات حدور جہ خراب ہے، تاہم اس زیانے میں بھی اور بعد کے دور میں بھی اکثر صائب الرائے افراد کا خیال یہی تھا کہ بیسب بچھانگریزوں کے ایماء اور ساز باز سے ہوا۔ اس مقصد کو پورا کرنے کیلئے انہوں نے کیا کیا تدبیریں اختیار کیں؟ اس سوال کا کوئی مفصل اور مستند جواب اب تک نیمل سکا۔ اتنا اور عرض کر دینا چاہئے کہ مولا تا کی شہادت ساڑھے دیں اور ڈیڑھ دو بج کے درمیانی وقت میں ہوئی، غالبارات کے بارہ ساڑھے بارہ ساڑھ وقت مولا تا کے کمرے سے چار بندوقیں، ایک ریوالور اور ایک کا بلی وُھسا بھی لے گئے۔ ان میں سے کی کے متعلق بعد میں پچھ معلوم نہ ہوسکا اور نہ ہے تایا جاسکتا ہے کے عبد الحلیم زندہ سے یا فوت ہوگیا اور زندہ ہے تو کہاں ہے؟

مولانا كى شخصيت

اس طرح وہ عظیم الشان شخصیت اس دنیا سے رخصت ہوئی، جس نے بیس سال تک جماعت جاہدین کی رگوں میں زندگی کا نیاخون دوڑائے رکھااور جس کا وجود مسلسل ومتوائر انگرین کی حکومت کے لئے انتہائی سرائیمگی واضطراب کا باعث بنار ہا۔ مولا تا ۱۹۱۵ء میں اعتمان بہنچے تھے اور جاتے ہی مجاہدانہ سرگرمیوں میں مشغول ہو گئے۔ انہوں نے یا عنتان کے مخلف حصوں میں جہاد کے مرکز قائم کئے ، تمام قبیلوں میں وعظ وقذ کیرسے یا عنتان کے مخلف حصوں میں جہاد کے مرکز قائم کئے ، تمام قبیلوں میں وعظ وقذ کیرسے اسلامی حمیت وغیرت کی آگ بحرکائی اور انہیں آگریزوں کے خلاف جہاد پر آمادہ کیا۔ ان کے باہمی تفرق مثابے تاکہ وہ متحد ہوکر موثر و نتیجہ خیز کام کر سکیں ، انہیں جس خطے یا ان کے باہمی تفرق یا بہت ایداد کی امید ہو سکتی تھی ، اس کے پاس بے تکلف پنچے اور اس خواشرون کی ساتھ ملانے میں کوئی دقیہ سے اٹھا نہ رکھا۔ یا عنتان یا افغانستان میں جواثر ورسوخ اور جو احترام و ہردل عزیز کی انہیں مت العر حاصل رہی ، وہ شاید ہی کسی دوسر کے ہو مشکل ملیں گی ، ان کے باس ہرعہد ممونے ہیں کئے ، ان کی مثالیں بھی دور حاصر میں بہشکل ملیں گی ، ان کے باس ہرعہد مہونے چنوں کے جو ان کی مثالیں بھی دور حاصر میں بہشکل ملیں گی ، ان کے باس ہرعہد مہونے چنوں کے بان کی مثالیں بھی دور حاصر میں بہشکل ملیں گی ، ان کے باس ہرعہد مہونے چنوں کے ، ان کی مثالیں بھی دور حاصر میں بہشکل ملیں گی ، ان کے باس ہرعہد مہونے چنوں کی دان کی باس ہرعہد مہونے پیش کئے ، ان کی مثالیں بھی دور حاصر میں بہشکل ملیں گی ، ان کے باس ہرعہد

میں ہندوستان اور افغانستان سے گرال قدر رقبیں پہنچتی رہیں، ان کے بال بچوں کی مالی حالت کچھ مدت بعد بہت تقیم ہوگئ تھی، تا ہم ایک حب بھی کسی کو نہ بھیجا اور ہر شئے جماعت مجاہدین کے کاموں کے لئے وقف رکھی۔

محرعلی قصوری کابیان

مولوی محمد علی تصوری کو کابل اور یا عستان میں مولا نا کے ساتھ کام کرنے کا موقع ملا تھا، وہ بار باران کی تعریف کرتے ہیں۔ایک جگہ لکھتے ہیں کہ مولا نامحمہ بشیر: حیرت انگیز انسان تھے،ان کی انتظامی قابلیت اور سیاسی سوجھ بوجھ بے

مثال تقی ، انہوں نے کابل پہنچ ہی امیر صاحب (عبیب اللہ فال) کے مزاج میں انہوں نے کا بل پہنچ ہی امیر صاحب نے ان کو یا عنتان کی تظیم کیلئے مامور میں اتناعمل دخل پیدا کرلیا کہ امیر صاحب نے ان کو یا عنتان کی تظیم کیلئے مامور فر مایا اور بارہ بزاررو بیسالانہ تظیمی اخراجات کیلئے ان کے حوالے کیا۔ (۱)

⁽۱) مشاہدات کائل ویاغستان ہمن: ۲۹

دوسری جگه فرماتے ہیں:

ملابشرصاحب بھی ایک بے نظیرانسان تھے بجسم عمل ،خلوص کا بتلا ،انگریز کے خلاف پروپیگنڈا کرنے میں بڑے مشاق ،مقرر ایسے اعلیٰ درجے کے کہ بڑے بڑے جمعے ان کی آتش بیانی ہے محور ہوجاتے تتھے۔(1)

برایک مقام برارشاد بوتاہے:

جماعت کے بااثر حفرات میں ہے امیر نمت اللہ کے بعد ملا بشیر تھے۔ ملا بشیر واقعی حیرت انگیز محف تھے، سلف صالح کے سے جانشین، انتقاف کارکن مجسم عمل ،ایٹار کا پیکیر، بے غرض میچ معنوں میں انقلائی لیڈر تھے۔ انہیں و کھے کر اقبال کامشہورشعریا و آتا تھا۔

یہ کلی ہمی اس گلتانِ خزاں منظر میں تھی الیی چنگاری بھی یا رب اپنی خاکشر میں تھی امیر حبیب اللہ خال صاحب نے ان کے کام سے خوش ہوکر بارہ ہزار روپٹے سالانہ وظیفہ مقرر کردیا تھا، وہ اس میں سے تو ت لا یموت رکھ لیتے ، ان کا اثر تمام یاغنتان میں بے نظیر تھا، ہر قبیلے کے ملک اور شیوخ ان کی بے حد عزت کرتے تھے حق یہ ہے : نہیں کہ وجہ سے تمام علاقوں میں امیر نعمت اللہ کا خاصا وقار قائم ہوگیا تھا۔ (۲)

أيك قابل غورنكته

ایک قابل خور تکتہ ہے ہے کہ امیر مجاہدین کے جن حالات سے بعض دوسرے مخلص اصحاب پر برا اثر پڑااور وہ نہ محض واپس چلے آئے بلکہ مجاہدین کا کام بھی جھوڑ دیا، وہ حالات مولا نامحمہ بشیر کے بھی سامنے آئے اور یقینا آئیس انتہائی رنج پہنچا ہوگا، تا ہم انہوں نے اپنا کام نہ چھوڑ ا۔ وہ جس نصب العین کے لئے اہل وعیال اور گھریار کوترک کرنے پر (۱) مشاہدات کا بل دیا جا استان میں:۱۱۱-۱۱۱

www.BestUrduBooks.wordpress.com

آمادہ ہوئے تھے، برستوران کے سامنے رہا۔ دوسر بےلوگوں نے بہتم کھا کہ خودان کی طرح جماعت کے برفردکو بنفس، بغرض اور پیکرایٹار ہونا چاہئے۔ بیخواہش پوری نہ ہوئی تو وہ کام چھوڑ کرلوٹ آئے، مولانا کی خواہش بھی یقینا یہی تھی، لیکن انہوں نے کام نہ چھوڑ اادر سمجھ لیا کہ مشکلات زیادہ جی تو ان سے عہدہ برآ ہونے کے لئے زیادہ محنت و مشقت اور زیادہ جفاکشی و جاں فشانی کی ضرورت ہے۔ اس سے مولانا کے عشقِ مقاصد کا صحیح اندازہ ہوسکتا ہے۔

قوموں اور ملکوں کی تقدیریں بدلنا اور انہیں غلط راستے سے ہٹا کر سی راستے پراگاتا آسان کا منہیں ،اس کے لئے غیر معمولی صبر واستقامت کی ضرورت ہے۔ مقصد ونصب العین کے سیچ شیدائی مشکلات وموانع سے گھبرایا نہیں کرتے بلکہ اپنی سرگرمیوں کو تیز تر کردیتے ہیں اور اپنی ہمتوں کو استوار بنا لیتے ہیں۔ عرفی نے اپنے مشہور شعر میں اس حقیقت کی طرف اشارہ کیا ہے۔

> نوا را تلخ تر می زن چودوقِ نغمه کم یابی مدی راتیز ترمی خوال چومحمل را گرال بنی

مولانا کی پوری مجاہدانہ زندگی اس استقامت کی ایک عجیب وغریب مثال ہے۔
مرکز مجاہدین کی بعض خرابیوں یا کمزور یوں کی بنا پروہ نہ اصل کام سے دست بردار ہوئے
اور نہ ہمت ہاری۔افغانستان میں امیر حبیب اللہ خال کے تذبذ ب اور بے ہمتی نے ان
کے ایک عظیم الثان منصوبے کونا کام بنادیا تھا، تاہم وہ پریثان نہ ہوئے اور اپنی زندگی
کے آخری سانس تک پیش نظر مقصد کے لئے تدبیریں سوچتے اور اسباب فراہم کرتے
رہے۔نظیری کیا خوب کہ گیا ہے:

کار ماباگردش طاس است و نقش کعبتین باحساب انجم و کج بازی گردوں چه کار



كابل ميں ایک دعوت

میں کتاب کمل کر چکا تھا کہ اتفاقیہ حاجی میرش الدین مرحوم معتدانجمن جمایت الاسلام کی کتاب ''سیاحت ِ افغانستان'' دیکھنے کا اتفاق ہوا۔ اس میں چائے کی ایک دعوت کا ذکر ہے جورا جامہندر پرتاپ کی طرف ہے مہاجرینِ ہندکو ہوئل مرکزی اندرانی (کابل) میں بتاریخ اارنومبر ۱۹۲۷ء بوقت تین بجے بعد دو پہر دی گئی تھی۔ اس دعوت میں حاجی میرشس الدین اور دوسرے ہندوستانیوں کے علاوہ جماعت مجاہدین کی طرف ہے بھی بعض اصحاب ترکیک تھے، جو وفد کی صورت میں کابل آئے تھے۔ مثلاً مولا نامحمہ بشیر، سیدفضل اللہ شاہ ، مولوی محمد اساعیل۔

راجاصاحب کی تقریر

اس موقع پر راجا صاحب نے ایک کمبی تقریر کی ، اس میں دوسرے امور کے علاوہ جماعت مجاہدین کا ذکر کرتے ہوئے کہا:

آپ میں ہے اکثر احباب کو خالبًا اس صدسالہ تحریک مجاہدین ہندیہ کا پہلے ہے علم ہوگا کہ کس طرح اس تحریک بانیوں نے جب ہندوستان میں اپنی قومی سلطنت وحکومت کے قصر کو اغیار کے ہاتھوں تباہ ہوتے پایا تو اس کی حفاظت و بحالی کے لئے اطاک واوطان ،خولیش وا قارب اور ہرتم کی راحت و آ رام کولات مار کر بیابانوں اور سرحد ہند کے تنگ و تاریک بہاڑوں میں آ کر جگہ بکڑی اور دعمن کی ہر تباہ کن کوشش کے باوجود ہندوستان کی آ زادی کے جگہ بکڑی اور دعمن کی ہر تباہ کن کوشش کے باوجود ہندوستان کی آ زادی کے

حصول کیلئے کسی قربانی وفدا کاری ہے بھی ہمی در لینے نہ کیا۔ اگر چہ ملک وملت
نے اس جماعت اور اس تحریک کی طرف کما حقہ تو جنہیں کی بگر ایک زماند آئے گا
کہ جب ہندوستان کے افق پر ان کے کار نامے سنبری حروف سے لکھے ہوئے
نظر آئیں گے اور مادروطن کا ایک ایک فرزنداس پر بجافخر کرتاد کھائی دےگا۔
اس کے بعدر اجاصاحب نے حاجی میرشم الدین کی تعلیمی خد مات کا ذکر فر ما یا اور
یہ بھی کہا کہ قومیں ایک بی جست میں ترتی نہیں کرتیں بلکہ مقدس مقاصد کے لئے قرنوں
فداکاران قربانیاں کی جایا کرتی ہیں۔

مولا نامحر بشير كے ارشادات

راجاصاحب کے بعدمولا نامحربشرنے اپنی طرف سے اور تمام ارکان وفد مجاہدین کی طرف سے راجا صاحب کا شکریہ ادا کیا اور جماعت کے نصب العین نیز بعض فداکاریوں کا بھی ذکر فرمایا، اس ضمن میں کہا:

اگر چہ گزشتہ چھسال کے عرصے میں بعض افراد کی کو تہ اندیشیوں کے باعث الیں سرایا فدائیت تحریک بھی شقاق واختلاف کی جھینٹ چڑھ چلی تھی ادر اس کے مشہور مراکز اسمر و(۱) چمرکنڈ میں تعلقات منقطع ہو چکے تھے بمر خدائے پاک کا کمال احسان ہے کہ سال حال کے دوران میں میسب جماعت پھرایک ہوگئی ہے اور اسمد سے لے کروز برستان تک کے مراکز ایک ہی سلط میں نسلک ہوگئی ہے اور اسمد سے لے کروز برستان تک کے مراکز ایک ہی سلط میں نسلک ہوکرایک ہی نظام کے ہاتحت خدمات نہ ہی ولمی بجالار ہے ہیں ،اس کا میاون فی مراکز کے نمائند ہے اس جگہ کیجا تشریف فحرہ ہو کہ آئ آپ اپنے درمیان کل مراکز کے نمائند ہے اس جگہ کیجا تشریف فرماد کیور ہے ہیں۔ پروگرام محض اس قدر ہے کہ ہندوستان کی آئندہ آزادی کے قصر کی بنیاد وں کے وہ پھر نہایت ہی مضبوطی سے نصب کردیں جن کی بنیاد

⁽۱) بداسمسع ب غالبًا ساعت كى بناء پرات اسم' لكود يا كميار

پراس کی اپنی حکومت کے قصر کے ستون اور دیواریں کھڑی ہوں۔ مولوی محمد اکبرتر جمان نے اپنی تقریر میں فرمایا کہ مجاہدین کے درمیان اتفاق کا سہرا مولا نامحمہ بشیر کے سر ہے اور رچھش ان کی مخلصانہ مساعی کا ثمر ہے۔(1)

ضرورى امور

ان تقریروں سے مندرجہ ذیل امور واضح ہوتے ہیں:

ا- جماعت مجاہدین کے مرکز اسمست سے وزیر ستان تک پوری سرحد آزادیں قائم تھے۔

۲- اس کے دوبڑ بے مرکز وں لینی اسمت اور چرکنڈ میں چھسال تک اختلاف و
 انشقاق کا سلسلہ جاری رہا، یہاں تک کہ ان کے درمیان تعلقات بھی منقطع ہو چکے تھے۔
 ۳- چھسال کے بعد ۱۹۲۲ء میں مولا نامحہ بشیر کی کوششوں سے اختلاف دور ہوا
 اور دونوں مرکز ایک نظام کے تحت کام کرنے لگے۔

۳- جماعت مجاہدین کے مقاصد میں آزادی ہند کونمایاں ترین درجہ حاصل تھااور بیمقصد آخری دورہی میں نہیں بلکہ سید شہیر ؓ کے وقت سے جماعت کے سامنے رہا۔

⁽۱) ساحت افغالستان بم:۲۶-۲۹

تير ہواں باب:

مولوي فضل الهي وزيرآ بإدي

ابتدائی کام

جماعت بجابدین کے ایک بہت بڑے کارکن مولوی فضل الہی وزیر آبادی تھے، جن کا ذکر مولا نامجہ بشیر کی شہادت کے سلسلے میں ایک سے زیادہ مرتبہ آچکا ہے۔ وہ کسی امیر گھر انے کے فردنہ تھے، ان کے والد ما جدمولوی میر ال بخش ریلوے کے محکمے میں ملازم ہوئے اور غالبا پلیٹیئر کے درجے پر پہنچ کر سبک دوش ہوگئے۔ تقریباً اڑھائی بڑاررو پسے انہیں بونس کے طور پر ملا۔

مولوی فضل اللی نے بھی اسی محکے میں طازمت اختیار کر لی تھی، لیکن ان کے دل میں ابتدائی سے دپنی اور اسلامی خدمات کی تڑب موجود تھی۔ پیچنیس کہا جا سکتا کہ کس ذریعے سے جماعت مجاہدین کے ساتھ تعلق بیدا کیا۔ ۱۹۰۳ء یا ۱۹۰۳ء میں اسمست پنچ اور امیر عبد الکریم کے ہاتھ پر بیعت جہاد کی۔ وہاں سے تھم ہوا کہ ہندوستان جا کر جماعت کیلئے چندہ اور آ دمی فراہم کرتے رہیں۔ وہ پہلے بھی بہ طور خود میں کام کررہ بحاعت کیلئے چندہ اور آ دمی فراہم کرتے رہیں۔ وہ پہلے بھی بہ طور خود میں کام کررہ بحصے۔ ۲۰۱۰ میں ملازمت ترک کردی اور جماعتی کاموں کے لئے وقف ہو گئے، وہ چپ فیاپ ملک کے طول وعرض میں پھرتے رہتے تھے، تمام ممتاز ملکی رہنماؤں سے گہر سے تھات پیدا کر لئے ،ان میں سے بہطور خاص قابل ذکرمولا نا ابوالکلام آزاد ہیں، جن کی دی وعوت نے '' الہلال'' کے ذریعے سے عالمگیر شہرت حاصل کر لئے تھی۔

مولوی فضل اللی نے اس دوران میں ہزاروں روپے فراہم کے اور اپنے ساتھ مخلص کارکنوں کی ایک بہت بڑی جماعت پیدا کر لی، جس کے افراد، فراہم کردہ روپیداور آدی اسمست پینچاتے تھے۔ جماعت کوجس چیز کی ضرورت ہوتی تھی اس کا انتظام مولوی صاحب موصوف کردیتے تھے۔ چنانچہ ایک مرتبہ مولا نا ابوالکلام کے ذریعے سے ایک فرو کواسمست پینچایا جوڈ اکٹری کی تعلیم پوری کرچکا تھا۔

گرفتاری اوراسیری

سیکام بہل ندھا، قدم قدم پر شم شم کے خطرات در پیش تھے، چنا نچہ 1910ء میں مولوی صاحب کی بھی سرگرمیاں انگریزوں کی خفیہ پولیس کے علم میں آگئیں اور انہیں گرفتار کرکے جالندھر کے جیل خانے میں بند کردیا گیا۔ لیکن مولوی صاحب کا نشہ ایسانہ تھا، جے اسیری کی ترشی اتار سکتی، انہوں نے جیل میں وئی جحہ نام ایک وارڈرکو اپنا ہم نوابنا لیا اور اس کے ذریعے سے تمام رفیقوں کو سرگرمی کے ساتھ کام جاری رکھنے کی تحریری ہدایتیں دیتے رہے۔ سوئے اتفاق سے ایک تحریر پکڑی گئی، وئی محمہ وارڈر پختہ کارنہ تھا، اس نے مصیبت سر پرآتے دیکھی تو تمام راز افشا کردیے، اور مولوی صاحب کی تحریرات جن جن جن رفیقوں کے پاس جاتی تھیں ان سب کے نام بتادیے، چنانچہ ان لوگوں کو بھی گرفتاری کی مصیبتوں سے سابقہ بڑا۔

مولوی صاحب کے والد ماجد ۱۹۱۱ء میں ملازمت سے سبکدوش ہوئے تھے اور ۱۹۱۸ء میں فوت ہوئے مار کانظم ونسق درہم ۱۹۱۸ء میں فوت ہو گئے۔اس حادثے نے مولوی صاحب کے گھر بار کانظم ونسق درہم برہم کرڈ الا، چنانچہوہ مجبوراً ایک سمال کے لئے تین ہزارروپے کی ضانت دے کراس شرط پر رہا ہوئے کدوزیرآ باوسے باہر نہ جا کیں گے، شدید پابندی کی اس مدت میں بھی انہوں نے جماعت مجاہدین کا کام جاری رکھا اور اس میں کوئی فرق نہ آنے دیا، حالا تکہ ان کیلئے

خطرات بہت بڑھ گئے تھے۔

ہجرت

صفانت کی معیاد ختم ہوئی تو وہ عمول کے مطابق فراہمی زراعانت کے لئے دور کے کرنے گئے، ساتھ ساتھ چھریاں، قینچیاں بھی بچپا کرتے تھے۔ جون ۱۹۲۰ء میں قاضی کوٹ سے اسلحہ برآ مدہونے کی اطلاع ملی تو مستری ابراہیم کے بیان کے مطابق مولوی صاحب نے کہا کہ اب زندگی کا خاتمہ ہے، جہاں مجھے اپنے بچاؤ کا موقع ملے گا وہاں چلا جاؤں گا، اُنہیں دنوں میں وہ ہجرت کرکے یاغتنان چلے گئے اور اپنے بال بچوں کوہمی وہیں بلالیا۔ معلوم نہیں، کتنی مدت اسمست میں گزاری چرچرکنڈ چلے گئے اور ہجرت کی بقیہ مدت وہیں بسرکی۔ چرکنڈ کی جماعت کے رئیس مولوی عبدالکریم کا انتقال ہوا تو مولا نامجہ بشیر تیراہ وزیرستان گئے ہوئے تھے۔ جماعت نے مولوی فضل اللی کوعارضی طور پر رئیس فتخب کرلیا، مولا نامجہ بشیر اپنا کام انجام دے کر واپس آ ئے تو مرکز اسمست کی برایت کے مطابق وہ مستقل رئیس بن گئے۔ غالبًا بیامر پہلی مرتبہ مولا نامجہ بشیر اور مولوی فضل اللی کے درمیان اختلاف کا باعث ہوا، جوآ خری وقت تک قائم رہا۔

یہ نہ جھنا چاہئے کہ دونوں میں ہے کسی کوریاست وامارت کی خواہش تھی ،اس وجہ سے ان کے درمیان کلدر پیدا ہوا۔ دونوں بڑے ہی مخلص اور ایثار بیشہ تھے۔معلوم ہوتا ہے کہ دونوں کے طریق کاراور لائح کمل میں بنّن فرق تھا، اور دونوں چاہئے تھے کہ جماعتی کاروبارا پنے ذوق ،طبیعت اور صواب دید کے مطابق چلا کیں۔ یہ اختلاف یقیناً صد در جہ ناخوش گوار تھا، جے دور کرنے کے لئے بعض مخلصوں نے بار ہا کوششیں کیس ،لیکن میاس صد تک دور نہ ہوسکا، جس کی آرز وسب کوتھی، لہذا ایک مقام پررہنے کے باوجود دونوں کے تعلقات میں انقطاع کا سلسلہ جاری رہا۔ اگر چہ مولا تا محمد بشیر جماعت چرکنڈ کے تعلقات میں انقطاع کا سلسلہ جاری رہا۔ اگر چہ مولا تا محمد بشیر جماعت چرکنڈ کے

مسلمہ رئیس تنے اور مولوی فضل اللی جماعت کے کام میں دخل نہ ویتے تھے، یہی اختلاف تھا جس کی بنا پر سمجھا گیا کہ مولا نامحہ بشیر پر قا تلانہ حملہ کرانے یا انہیں شہید کرانے میں مولوی صاحب کا بھی ہاتھ تھا۔ مولا نامحہ بشیر نے خود مجھ سے ایک مرتبہ الی ہا تیں کیس جن سے متر شح ہوتا تھا کہ وہ مولوی فضل اللی کی طرف سے مطمئن نہیں ، تا ہم مجھے اب تک کوئی الیمی شہادت نہل سکی جس سے مولوی فضل اللی کی طرف ما کہ کردہ الزام کو خفیف سی بھی تقویت پہنچ تی۔

ہجرت سے پچھ ہی مدت بعد مولوی صاحب موصوف کی والدہ کا جدہ اور بھائی محمد الٰہی کا انتقال ہو گیا کیکن ان حوادث پر بھی انہوں نے ہندوستان آنا گوارانہ کیا اور اپنے فیصلہ ہجرت پرمتنقیم رہے۔

سيدصاحب كيمتعلق عقيده

حافظ عنایت الله صاحب امرتسری جو جامع اہل حدیث گجرات میں خطیب ہیں ، فر ماتے ہیں کہاوائل میں مولوی فضل الہٰی سیداحمہ شہید کوشہید نہ مانتے تھے :

میں نے ایک مرتبہ سیدصاحب کوشہید بتایا تو آپ خت ناراض ہوئے، جھے دھکا دے کر چار پائی سے نیچ گرادیا اور فرمایا کہ وہ زندہ اور غائب ہیں عنقریب ظاہر ہوں گے۔ نیز آپ نے جماعت کا شائع کردہ ایک رسالہ بہنام ''خلاصہ' مجھے دکھایا جس بیس بیصدیث درج تھی کہ:

اذا منضت الف و مئتان واربعون سنة بعث الله المهدى فيساينغ على يده خلق كثير ثم يغيبه الله فيرتد ون الى دين ابائهم الا من اتبع كتاب الله وسنت نبيه.

جب ایک ہزار دوسو چالیس سال گذر جائیں گے تو اللہ تعالیٰ مہدی کو اضاعے گا، بہت کی خلقت اس کے ہاتھ پر بیعت کرے گی، پھراللہ اسے عائب

کردے گا اور لوگ اپ آبائی دین کی طرف لوث جا کیں ہے ، سوائے ان کے جواللہ کی کتاب اور اس کے نہی گسنت کے پیرو ہوں) گرید وایت صدیث کی کسنت کے پیرو ہوں) گرید وایت صدیث کی کتاب میں نہیں، بلکہ جو ذخیر و کموضوعات کے نام سے علائے کرام نے جمع فرمایا ہے ، اس میں بھی یہ روایت نہیں معلوم ہوتا ہے کہ سیدصا حب کی شہادت کے بعد وضع کی گئی اور اس قتم کی بے سرو یا حکایات سوائے احمدی میں بھی درج ہیں، گرتقیم ہند کے بعد مولوی صاحب مرکز چرکنڈ سے اپنے وطن واپس تشریف لائے تو میرے رو بروآ پ نے گئی بارسیدصا حب کوشہید بتایا۔

کویا آخری دور میں ان کاعقیدہ بدل گیا تھا۔ میں اس مسئلے پر' سیدا تھ شہید' میں مفصل بحث کر چکا ہوں، اعادے کی ضرورت نہیں۔سید صاحب کے زندہ اور غائب ہونے کاعقیدہ ہر نقطہ نگاہ سے تا قابل قبول ہے۔

مولوي صاحب كي مراجعت

ہام روایت ہے ہے کہ مولوی صاحب اواخر جولائی ۱۹۲۸ء میں یاعت ان سے وطن واپس آئے اور انہیں گرفتار کرلیا گیا، کین جلدر ہا ہوگئے۔ مجھے بعض ذرائع سے معلوم ہوا کہ وہ تقسیم سے پیشتر حجیب جھیا کر ہندوستان پہنچ گئے تھے۔ پکھ مدت بنگال میں رہے ، جب دیلی میں تقسیم کی بحثیں ہور ہی تھیں تو مولا نا ابوالکلام آزاد کے علاوہ بعض دوسرے اکا برسے بھی ملاقا تمیں کرتے رہے۔ وہ جب تک یاعت ان میں رہے ، کچ کا گر کسی سے د' نہرور بورٹ' کے بعد مسلمانوں میں کا گریس کے متعلق شدید ہے اعتمادی پیدا ہوگئی تھی اور اکثر اکا برکا گریس کے مقابلے میں مسلمانوں کی مختلف جماعتوں کو ہم رائے ہوگئی تھی اور اکثر اکا برکا گریس کے مقابلے میں مسلمانوں کی مختلف جماعتوں کو ہم رائے اور ہم آ ہنگ بنانے میں مصروف ہو گئے تھے۔ اس تحریک میں رئیس الاحرار مولا نا محملی مرحوم اور مولا نا شوکت علی مرحوم ہیں بیش شے۔ روز نامہ ''انقلاب'' اسلامی تنظیم کا عکم مرحوم اور بنا ہوا تھا، مولوی فضل الی نے رمضان ۱۳۲۸ھ (جنوری ۱۹۳۰ء) میں ایک طوم کی

مکتوب، جوفل اسکیپ سائز کے جارصفات پرمشمل تھا''انقلاب'' کی وساطت سے مولا نامحمعلی اور مولا نامحمعلی اور مولا نامحمعلی اور میں کا کو کھا تھا، ان میں انتہائی گرم جوثی سے کا گلرس کے مسلک کی تائیداور ہمار ہے مسلک کی مخالفت کی گئی تھی۔ یہ دونوں مکتوب اب تک میرے پاس محفوظ ہیں، لیکن تقسیم ہند کے بعد وہ لا ہور تشریف لاکے تو کا گلرس کے مخت مخالف اور لیگ کے سرگرم حامی بن کے تھے۔

وفات

يهال آكرانهول في جهاو كشميريس بهى حصدليا تفاء اور "جهاو كشمير"كي نام ساك کتاب شائع کی تھی، جماعتی حالات کے متعلق ان کے پاس بڑی بیش قیمت معلومات اول گی ایس نے بار ہا عرض کیا کہ تھوڑی کی فرصت نکال کر ان معلومات ہے مشرف أرمائيس مليكن أنهيس وقت شامل سكا۔ وہ خود ميرے ياس آنے كے وعدے كرتے رہے،جنہیں مسلسل سفروں کے باعث پورا نہ کر سکے۔انہوں نے ان لوگوں کے لئے مزروعہ زمین کے دو چک بھی مخصوص کرائے تھے جنہیں جماعت مجاہدین کی خدمات کے سلسلے میں گونا گوں تکلیفیں پہنچی تھیں۔ ۵رمئی ۱۹۵۱ء کو وزیر آباد میں فوت ہوئے ، ومیت کے مطابق انہیں بہمقام بالا کوٹ اس احاطے میں فن کیا گیا جس میں سیداحمہ شہید کی قبر بتائی جاتی ہے، حالانکہ سیدصاحب کی قبر کامتعین نشان کوئی نہیں ،موجودہ قبر کم وہیش باسٹھ سال بعد ۱۸۹۳ء میں بنائی ممکی تھی۔اگر سید صاحب اس قبر میں فین ہوئے تو میت صرف دوتین دن وہاں رہی پھر نہنگ سکھوں نے اسے نکال کروریائے کفھار میں بہادیا۔ ببرحال مولوی صاحب مرحوم کی کسی رائے یا طریق عمل ہے کسی کو کتنا ہی اختلاف ہو، وہ بڑے مخلص مجاہد اور نہایت سرگرم کارکن نتے۔زندگی کے بیشتر اور بہترین اوقات

ان مشاغل میں بسر کئے ، جن کے اختیار کی تو فیق ملت میں سے بہت کم آ دمیوں کونھیب

ہوئی اوران بزرگوں کی عظمت کا انداز ہ کون کرسکتا ہے جواعلی دینی اورسیاسی مقاصد کے لئے جانیں ہتھیلیوں پرر کھے چھرتے رہے اور جنہوں نے راحت و آسائش کی بہاریں چھوڑ کر عمریں مصیبتوں اور پر بیٹا نیوں کے شعلہ زار میں گزار دیں، اس لئے نہیں کہ خود انہیں کوئی او نیچا منصب حاصل ہوجائے ،صرف اس لئے کہ اسلام کا بول بالا ہواور اس سرز مین کے سر پر آزادی کا تاج رکھا جائے۔ وہ جہاد کوایک اہم اسلامی فرض مجھ کراوا کرتے رہے اورخدا کی رضا کے سواان کی کوئی غرض نتھی۔

چودهوال باب:

مولوي محرعلى قصوري

خاندان

مولوی محمطی قصوری اس خاندان کے چشم و چراغ تھے، جس کے اکثر افراد نے دين بقوم اورملك كي خدمت من بهت بلند درجه حاصل كيا ـ ان كااصل وطن شلع سيالكو ف کا ایک گاؤں تھا، پھرمولوی محمر علی کے بردادا قاضی غلام حسین دلا در ہضلع گوجرانوالہ چلے آئے اور جس حد تک معلوم کر سکا ہوں ان کے فرزندار جمند مولوی غلام احمد سب سے يهل الل حديث موت ان ك تين فرزند تها: مولانا عبد القادر، مولوى عبد الحق اور مولوی عبدالله مولانا عبدالقادر نے تعلیم ہے فراغت کے بعد دکالت کا امتحان پاس کیا اورقسورکو پریکش کے لئے منتخب کیا۔ وہ غیرمعمولی دل ود ماغ کے انسان تھے، بہت جلد وکالت میں اتنا او نیا مرتبہ حاصل کرلیا کہ پنجاب کے مشہور وممتاز وکلا میں شار ہونے کھے۔ دولت کی ریل پیل شروع ہوگئی، بہت بردی جا کداد پیدا کی اورقصور ہی کومتنقل وطن بنالیا۔ اس وجہ سے وہ خود اور خاندان کے تمام افراد 'قصوری'' مشہور ہوئے ، وہ ان برگزیدہ انسانوں میں تھے،جن کی دینداری دنیوی وسائل کی فراوانی ہے بھی متاثر نہیں ہوتی۔اپنی بود و ماند،وضع قطع ،لباس ہمیشہ ساد ہ رکھا اور مال وزر دینی اور مکنی کا موں میں بے دریغ صرف کرتے رہے۔ مزید حالات آ گے چل کربیان ہوں گے۔

اسلام کے لئے زندگی وقف کردی۔

مولاناعبدالقادر کے جارصا جزادے ہوئے: بزے مولوی محی الدین احمد ان سے چھوٹے مولوی محی الدین احمد ان سے چھوٹے مولوی احمد علی اور سب چھوٹے مولوی احمد علی اور سب چھوٹے مولوی محمد علی جوآ جکل ہائی کورٹ کے ممتاز بیرسٹروں میں ثمار ہوتے ہیں۔

ابتدائی زندگی

مولوی مجرعلی اگست ۱۸۹۱ء میں پیدا ہوئے، میٹرک تک قصور میں تعلیم پائی، گورنمنٹ کالج لا ہور سے امتیازی درج میں ڈگری حاصل کی، پھر والد ماجد نے اعلیٰ تعلیم اور بیرسٹری کیلئے ولایت بھیج دیا۔ کیمبرج سے ریاضیات کا امتحان اعزاز کے ساتھ پاس کیا۔ بیرسٹری کے کچربھی پورے کر لئے بتھے، سند ندحاصل کر سکے بتھے کہ گھر آئے اور جنگ بوریے شروع ہوگئی اس لئے واپس نہ جا سکے۔

حافظ غیرمعمولی تھا اوراپ عبد کے چندمخصوص طلبہ میں تارہوتے تھے۔ پہلی جنگ سے صرف ایک مہینہ پیشتر ہندوستان آئے تھے اور بقینا انہیں بہتر سے بہتر سرکاری ملازمت ال سی تھی ، لیکن قیام انگستان ہی کے زمانے میں اپنی زندگی دینی ، اسلامی اور مکلی کاموں کے لئے وقف کر چکے تھے۔ یہاں مختلف ملکی رہنماؤں سے مشوروں کے بعد طے کیا کہ افغانستان چلے جا کیں ، اس لئے کہ معلوم ہو چکا تھا برطانیہ اور دوس ال کرایران کی طرح افغانستان کو بھی زیراثر لانے کا فیصلہ کر چکے ہیں۔ مولوی صاحب موصوف کاعزم میں تھا کہ حکومت افغانستان کو اس خوفناک خطرے سے آگاہ کریں ، اس کے سد باب کے یہ تھا کہ حکومت افغانستان کو اس خوفناک خطرے سے آگاہ کریں ، اس کے سد باب کے لئے منظم کرنے میں کوئی وقیقہ سعی افغانستان کو اسلامیت و آزادی کے مقاصد کے لئے منظم کرنے میں کوئی وقیقہ سعی افغانہ رکھیں۔ چنا نچہ ان کے بیان کے مطابق ایک مرسری ''تحریک' کے بعد امیر حبیب اللہ خاس نے انہیں حبیبیکا کی کا پرنیل مقرد کردیا ،

اور وہ مارچ ۱۹۱۵ء میں کا بل چلے گئے۔(۱) میراس پیکرِ خدمت کا بہلا ایٹارتھا، جس کا شرف اے عاصل ہوا۔اس کے تواب میں ان کے والد ماجداور دوسرے عزیزوں کا بھی حصہ ہے، جنہوں نے ان کی تعلیم پر ہزاروں روپے خرج کرنے کے باوجود اس ایٹار کو خوش دلی ہے منظور کرلیا۔

کابل میںسر گرمیاں

افغانستان کی علمی ترقیات اور تو می تنظیمات کے متعلق انہوں نے اپنے ذہن میں جوخوشکوا، نصورات قائم کرر کھے تھے، وہ کا بل پہنچ جانے کے بعد سراسر غلط ٹابت ہوئے۔
لیکن اہل حق مشکلات سے گھبرایا نہیں کرتے بلکہ صبر واستقلال سے چین نظر کا موں میں منہمک ہوجاتے ہیں، منزل کی سنگلا فی اور راستے کی دشواری ان کی قوت رفتار پر بھی اثر انداز نہیں ہوئی۔ مولوی محم علی نے جلد سے جلد ایک موزوں نصاب تیار کیا اور انتہائی موانع کے باوجود اسے منظور کرائے تعلیمی نظام کی درتی میں مصروف ہوگئے۔ ساتھ ساتھ سیاسی سرگرمیاں بھی جاری رکھیں، ان کا منصوبہ بظاہر بیتھا کہ مختلف اصحاب کی امداد سے بیاختانی قبائل کو امیر حبیب اللہ خال سے وابستہ کر کے اس اجتماعی قب ہندوستان پر عملہ کرائیں، جسیا کہ پہلے عرض کیا جا چکا ہے، اس وقت ہندوستان میں فوج بہت کم تھی، حملہ ہو جاتا تو اس وسیع ملک کو آزاد کرالینے کے قوی امکانات موجود تھے۔ اس کام میں مولان تاجہ بشیر سب سے بڑھ کر معاون ثابت ہوئے۔

پھرتری اور جرمن وفد افغانستان بہنج گیا، جو امیر حبیب الله خال کے لئے مزید تقویت کاباعث تعا، تاہم امیر موصوف تذبذب کی تشکش سے نجات نہ پارکا، آخرایک بیر کے استخارے نے اس منصوب کو ہمیشہ کیلئے فتم کردیا، یدداستان اپنے موقعے پر تفصیل

⁽۱) مثابهاستهالل وياضعان من

سے سنا کی جا چکی ہے۔

کابل ہے یاغستان

پیرصاحب نے محض ہندوستان پر حملے ہی سے ندروکا تھا، یہ بھی کہددیا تھا کہ محمد علی افغانستان کا دیمن ہودیا تھا کہ محمد علی افغانستان کا دیمن ہے اور اسے فورا نکال دینا چاہئے۔ ظاہر ہے کہ بیسب پھھا گریزوں کے ایماء کا کرشمہ تھا، امیر کے بھائی سردار نھراللہ خال اور تا درشاہ مرحوم نے جواس زمانے میں سیدسالار تھے، مولوی محمد علی کو نکالنے کی سخت مخالفت کی، اس لئے امیر صبیب اللہ خال اسے اراد کولہا سی عمل نہ بہنا سکا۔

تاہم خود مولوی صاحب تعطل و بے عملی کی زندگی ہر کرنے پر تیار نہ ہے، الہذا وہ افغانستان ہے باہر جانے کی تجویزی سوچنے گئے۔ اس میں ایک مصلحت یہ بھی تھی کہ اگر یزوں کواعتراض کی تخبائش ندر ہے۔ اس اثناء میں آہیں افغانستان کا وکیل بنا کر جرمنی سیجنے کا فیصلہ کرلیا گیا، وہ ابھی تیار ہی میں مصروف تھے کدامیر کے بعض حوار یوں کی خفیہ سازش سے ان کے مکان پر سلح ڈاکھ ڈالا گیا۔ مدعا یہ تھا کہ مولوی صاحب کوموت کے محاث اتار دیا جائے۔ وہ تو خوش تعتی سے رفح کئے البتہ ان کا سامان اور تمام کا غذات ڈاکوا تھا کرلے گئے۔ چندروز کے بعدامیر کے فرمان کے مطابق ایک سوآ دمیوں نے ان کے مکان کا محاصرہ کرلیا، تاور شاہم مرحوم کی سعی سے ان کے لئے حجیب چھپا کر باہر نگلنے کا انتظام ہوا اور وہ اپنے ایک رفیق شخ اہرا ہیم سندھی نیز بعض مہا جرطلبہ اور مولا نا بشیر کی معیت میں کنر پہنے گئے جہاں سید جمال الدین افغانی کے گھر انے کے ایک شخص سید عبدالقادر نے ان کا استقبال کیا۔ کنٹر ہی میں سوٹ بوٹ اتار کرملاً دَن کا الباس بہنا اور درمیانی پہاڑ کو عبور کر کے چرکنڈ چلے گئے۔ (۱)

⁽١) مشابدات كالل وياغستان من ٣٩-٣٩

ياغستان بمسكام

كابل سے وہ جون ١٩١٧ ویس فکلے تھے، كو ياصرف سواسال میں انہوں نے وہ تمام كام انجام ديے جن كا ذكر او يركيا جا چكا ہے۔ ياغستان اس غرض سے محك متع كم قبائل كو مظم کرے ہندوستان برحملوں کیلئے تیار کردیں۔ پھرامیر افغانستان کوان کی تائید وحمایت من اقدام کی دعوت دیں تا کہ جومنصوبہ پہلے ناکام ہوچکا تھا،اے دوبارہ معرض نفاذیس لائیں۔ پہلے امیر کوا ٹھانے اور سرگر معمل ہونے برآ ہادہ کرنے کی کوشش کی مخی تھی اب ہیہ سو**جا** کہ قباکل کی عملی سر گرمیوں کے دلخواہ نتائج اس کے سامنے پیش کئے جا کیں شایداس کی رک غیرت کا منجمدخون حرکت میں آ جائے۔ چنانچہ مولوی صاحب حاجی صاحب ترتک زئی اور ملا صاحب بابڑہ کے مراکز میں پہنچے بصوات ،امب ، چتر ال اور دوسرے خوانین ورؤسا کے باس قاصد بھیج ، محلف اجتاعات میں براز ور تقریریں کیس، سب کو جہاد کے لئے آ مادہ ہوجانے کی وعوت دی۔ رز مک، یارا چنار، کو ہاٹ درہ، تھل، پٹاور وغیرہ کی سمت میں ملوں کامنعوبہ تیار کیا اور مولا تا محمد بشیر کوامیر حبیب اللہ خال کے پاس كالمل بهيجا -خود فرمات بين كداس اثنابين بم في مشل كيطور يرايك جمله كرف كا فيصله كرليا، چنانچە:

یں اور حاتی صاحب تر مک زئی، گنداب، شب قدر اور مجنی کے حاذ پر حملہ آ ور ہوئ ، ملاصاحب بابرہ اپ حاذ پر ہمارے ساتھ کوئی تمیں ہزار کا لشکر ہوگا، اے قتلف ٹولیوں میں بانٹ کرہم نے تمام درے پر بیمن خود مح ایک پیش قدی کی تمام راہیں روک دیں۔ ایک اسکلے مور ہے پر میں خود مح ایک سوتمیں مجاہدین کے تقا، ہم سے کوئی دوسوگز پر انگریزی گورا فوج خند قیس کھود کر مورچوں میں بیٹی ہوئی تھی۔ ان کے عقب میں شب قد رکا قلعہ تھا۔ کیارہ مورچوں میں بیٹی ہوئی تھی۔ ان کے عقب میں شب قد رکا قلعہ تھا۔ کیارہ مورچوں میں بیٹی مورچوں پر پر واز کر کے لئکریوں کی نشاندی کر دے تھے موائی جہاز ہمارے مورچوں پر پر واز کر کے لئکریوں کی نشاندی کر دے تھے

تا کہ قلعے کی آتش بارتو ہیں ہمارے مورچوں پر گولداندازی کریں۔ قلعے سے بہتر تو ہیں بدیک دست صرف ہمارے مورچے پر کو لے پینکی تھیں۔(۱)

یہ اور آئی تین دن اور تین رات تک جاری رہی۔اس مدت میں کھانے کو پچھے نہ طا، صرف پانی پی کر گزارا کیا۔مولوی صاحب کے موریچ میں گیارہ مجاہرین شہید ہوئے، آخر انگریزی فوج پسپائی پر مجبور ہوئی۔مجاہدین ان کی خند توں پر بل پڑے ہیکڑوں بندوقیں اور لاکھوں کا رتوس ان کے ہاتھ آئے۔(۲)

امير حبيب الله كى بيمتى

تمام مجاہدانہ سرگرمیوں کی مثال ایک اگریزی اسلوب بیان کے مطابق شخرادے کے بغیر ہملک کے ڈرامے کی تھی۔ اس سم کے متفرق مچھاپے یقیناً بہ کھڑت مارے جاسکتے تھے، تزلزل کا تو ذکر ہی نہ کرنا چاہئے ، منظم جنگ آ زمائی امیر صاحب کی سرگرم اعانت پر موقوف تھی۔ افسوس کہ مولانا محمد بشیر کابل سے بالکل بے نبل مرام واپس آئے۔ انہوں نے بتایا کہ امیر حبیب الله علانے ملاقات پر بھی راضی نہ ہوا۔ رات کے بارہ بجنواب گاہ میں بلایا اور سرسری بات چیت کے بعدوالیس کردیا۔ سردار نصر الله خال نے مختلف طریقوں پر معذرت کی کوشش کی اور بارہ یا پندرہ ہزار روپے نیز اسلحہ دے کر رفصت کردیا۔ (۳)

مولانا عبید الله مرحوم کا خیال ہے کہ امیر حبیب الله خال جورو پید قبائل پرخر جی کررہے تھے، وہ بھی انگریزوں کا دیا ہوا تھا۔ جب انگریزوں نے دیکھا کہ یا عنانی قبائل کو چھا پوں کے لئے منظم کیا جارہا ہے تو ان میں بدزورید پروپیگنڈہ کرایا گیا کہ امیر

⁽۱) مشامدات کایل دیاعتان بس:۳۳

⁽٢) مشاهرات كالل وياعنتان يم: ١٥

⁽۳) مشاہدات کا بل ویاغستان ہم: ۹۷

کے بغیر جہاد نہیں ہوسکتا اور قبائل کی امارت کاحق امیر افغانستان کو پنچتا ہے۔ جب تک وہ اعلانِ جہاد نہ کرے قبائل کے لئے لڑنا از روئے شریعت درست نہیں۔اس طرح امیر صاحب اور قبائل کوایک رشتے میں مرتبط کر کے دونوں کو دابسہ تقطل کر دیا گیا۔ (۱)

آ خری دور

مولوی جمع کی چرکنڈ ہے نظانو صوات ہوتے ہوئے اسمست پہنچ گئے۔ وہاں بھی انہوں نے خاصی مدت گزاری۔ چونکہ امرائے جماعت کے حالات ان کے نزدیک اطمینان بخش نہ تھاس لئے با قاعدہ جماعت ہے وابستگی اختیار نہ کی ۔ لیمنی ہیت المیر کی بیعت کا حلقہ اپنی گردن میں نہ ڈالا۔ جب روس میں بالشویکوں نے زار کی حکومت کا تختہ الت دیا تو امید بندھی کہ روس جنگ ہے کنارہ شہوجائے گا اور جرمن فوج فرانس میں اسحادی عساکر کا پچوم نکال کررکھ دے گی ۔ مولوی صاحب نے روس کے راستے جرمنی پہنچنے کی اسکیم تیار کر لی تو انتظامات کمل ہونے کے انتظام میں سندھ کڑی کے علاقے کا دورہ کیا۔ اس اثنا میں جنگ کا پان پلنے لگا ، جرمنی کی جنگی قوت میں اضحلال کے آثار نمودا راس اثنا میں جنگ کا پان بائر مودا راس میں اضحلال کے آثار نمودا راس اثنا میں جنگ کی باس جا کر اس مالے تاری کے باس جا کر مصالحت کیلئے سلسلہ جنبانی شروع کردی۔ مولوی صاحب نے یا ختان میں ''سلیمان' مصالحت کیلئے سلسلہ جنبانی شروع کردی۔ مولوی صاحب نے یا ختان میں ''سلیمان' کر بالمشافہ بات چیت کر لیں۔

خوانین کے کہنے کے مطابق صاحبزادہ سرعبدالقیوم کی طرف سے با قاعدہ دعوت نامہ بھی بھیجے دیا گیا۔ چنانچہ مولوی محرعلی صاحب پشاور پہنچے۔طویل گفتگو ہوئی۔روس کیپل نے کہا کہ آپ واپس آ جائیس اور اطمینان سے اپنے گھرر ہیں۔ چاہیں تو نہایت اعلیٰ

⁽١) ميدالله سندمي كي ذاتي ذائري من ١٢٥٠

ملازمت کابندوبست ہوسکتا ہے، بلکہ فوری طور پراسلامیہ کالج پشاور ہیں پرلیل کا عہدہ پیش کردیا تھا نیز کہا کہ اگر جماعت مجاہدین اور یاغت آئی مہموں کے پورے حالات لکھ کر دیں تو میں خود یہ کتاب ایڈٹ کروں گا، حکومت کے فرج سے اسے چھواؤں گا اور آپ کو ایک لا کھرو بیدرائلٹی کا ملے گا۔ مولوی صاحب نے اپنے افر با اور مجاہدین کے مشورے سے واپسی منظور کرلی، باقی وونوں پیشکشیں مستر وکردیں۔ (۱) واپسی کے وقت روس کمیل نے انہیں دوسو بونڈ کی تھیلی دی، انہوں نے بیرقم ڈپٹی برکت علی کے حوالے کردی، جوایک مقد مے میں ماخوذ ہونے کے باعث سزاسے نہینے کے لئے یاغت ان چلے گئے مولوی مجمع علی کے واپسی کا انتظام کردیا تھا، مگریہ طے ہوا تھا کہ وہ دوسال مانسی و میں وہراس اثناء میں ان کے فرزندار جند کو ہیڈ ماسٹر بنا کر مانسی و بھیج دیا گیا تھا۔

بقيهزندگي

مولوی محریل نے مراجعت کے بعد بھی اپنے تمام سابقہ روابط برستور قائم رکھے۔
ایک مرتبہ مولا نامحہ بشیراوران کے بعض رفقاء نے سطے کیا تھا کہ ہندوستان سے تعلیم یافتہ نوجوانوں کو یا عستان بالریا جائے۔ مولوی محم علی اس تحریک کوفروغ دینے کا بھی ایک بہت بڑا مرکز تھے۔وہ بڑی سے بڑی ملازمت لے سکتے تھے، لیکن غور ومشورہ کے بعد انہوں نے تعارت کا شغل افقیار کیا۔ بمبئی اور مدراس میں کی سال گزار ہے۔ بیداستان بجائے خود بڑی اہم ہے، لیکن ہم یہاں اسے تفصیلا پیش نہیں کر سکتے۔ اپنے بڑے بھائی مولوی محمی اللہ بن احمداور عم محر مولا ناعبید اللہ کو جمعیت وعوت و تبلیغ کے کارفر ما بنایا۔ ان کے اور جمعیت کے بیرے بورے مصارف اپنے ذمے لے لئے، چنانچہ بیداصحاب سالہا سال ملیوار، جمعیت کے بورے معارف اپنے ذمے لے لئے، چنانچہ بیداصحاب سالہا سال ملیوار، معرد ناعبیداللہ مولوی مادرہ مولانا کے مورد کی معرفت کی طرح موان نے کر ہندوستا

ن طع مج (کابل بی سات سال مین ۲۹۸) سیم نبین دهیقت وی ب جومتن می مرض کی گی اوراس کاسب سے

بواثبوت يه ب كمولوى محد على كالإاندر كرميان برابر جارى وين-

پونداوردوسرے حصول میں کام کرتے رہے۔ مولوی محمطی کی طرف سے انہیں اور جمعیت
کو دو ہزار ساٹھ روپیہ ماہانہ طنے تھے۔ پندرہ سورو پے ایک اور صاحب دیتے تھے، تشیم
کے بعد مولوی صاحب نے نمک کی تجارت شروع کردی تھی۔ آخری دور میں وہ ایک
کار خانے سے وابستہ ہو گئے تھے، متعدد کتابیں چھا ہیں، قیام لاہور کے زمانے میں
قرآن مجید کا درس دیتے تھے۔ تعلیم یافتہ نوجوانوں میں ان کے درس کو خاص درجہ قبول
حاصل تھا۔ تمام قومی اور فدہمی تحریکات میں چیش پیش رہے، خود بھی کسی جماعت یا فرد کی
طرف سے ایک جے کے بھی ممنون نہوئے۔

۱۲رجنوری ۱۹۵۹ء (مطابق ۱۲۷ جمادی الاولی ۱۳۷۵ھ) بروز پنجشنبہ مسیح ساڑھے آٹھ بجے اچا تک حرکت قلب بند ہونے سے وفات پائی۔

شخصيت

مولوی صاحب کا قد اُن کے والد ما جد کی طرح متوسط تھا، رنگ اتنا گورا کہ اگریزی
لباس چین لیتے تو دلی کے بجائے ولایتی معلوم ہوتے تھے۔ داڑھی مو نجھوں کے بال
بہت کم تھے، بایں ہمہ داڑھی ہمیشہ رکھی، اسلامی اخلاق و عادات کا ایک بجیب پیکر تھے۔
اگریزی، اردو، عربی اور فاری کے بکسال ادیب مانے جاتے تھے، چاروں زبانوں میں
برتکلف لکھتے اور ہو لتے۔ مطالع کا ہمیشہ شوق رہا، اور جو پچھ پڑھا حافظ میں پیوست
ہوگیا۔ کسی مجلس میں بیٹھے بیٹھے دو چارمنٹ کے لئے بھی اٹھنا پڑتا تو جب واپس آتے
ہوگیا۔ کسی مجلس میں بیٹھے بیٹھے دو چارمنٹ کے لئے بھی اٹھنا پڑتا تو جب واپس آتے
دسلام علیکم "کہ کر بیٹھتے۔ دینی علوم سے خاص دلچی تھی، حدیث وتفییر کی تقریباً تمام
کتابیں دیکھ تھے، حافظ ابن قیم کی تصانیف سے بہت شخف تھا۔

روپے پیسے سے بھی محبت نہ ہوئی ، مولا نا عبید الله سندھی نے لکھا ہے کہ کابل میں ایک مرتبہ ڈاکٹر خوشی محمد کو جن کا اختیاری نام میرزا محمد علی تھا، روس جھیجنے کی ضرورت

پڑی، روپیہ پاس نہ تھا، مولوی محمطی ہے آگر چہر سرکی تعارف تھا، کیکن جب اپنی تکلیف کا اگر ملکے الفاظ میں ان سے کیا تو بہت متاثر ہوئے اور دوماہ کی تخواہ بیفنگی لے کر ہماری ضرورت پوری کردی۔ (۱) روس کی لی نے انہیں دوسو پونٹر دیے تھے، یہ رقم انہوں نے بہتو قف ڈپٹی برکت علی کی نذر کردی۔ کا بل سے روائلی کے وقت جو پچھ پاس تھا اس میں سے نصف انقلالی کام کے لئے دے دیا اور خود صرف تین پونٹر لے کر روانہ ہوگئے۔ بیس کہ بی مدت تک دو ہزار رو پٹے ماہوار تبلیغ کیلئے دیتے تھے، ہزاروں روپئے دوسرے بی کاموں کی نذر کئے۔ (۲)

⁽۱) كابل بين سائت سال بمن: ۲۵

⁽۲) مشاهرات کایش د ماغستان مس۳۳

يندر موال باب:

ایک گمنام مجامد

یہ کلی مجمی اس گلستانِ خزاں منظر میں تھی ایسی چنگاری بھی یارب اپنی خاکستر میں تھی

محمدسين

آپ نے اب تک ان اصحاب کے حالات ملاحظ فرمائے ، جن کے ناموں سے دنیا
نا آشنا نہ تھی۔ اگر چان کے پورے حالات یا مجاہدانہ کارناموں سے آگاہ نہ ہو، لیکن اب
ایک ایسے مجاہد کے حالات پیش کئے جاتے ہیں جس کا نام بھی بھی منظر عام پر نہ آیا،
حالانکہ وہ خلوص ، سرگری عمل ، استقامت اور پیش نظر مقصد کے لئے جانفٹانی میں مشہور
مجاہدین کرام سے قطعافر ورزنہ تھا۔ یہ محمد حسین تھا جس نے جماعت مجاہدین میں پہنچ کر
محمرنام اختیار کرلیا تھا۔

محرحسین کا وطن کوٹ بھوانی داس (ضلع گوجرانوالہ) تھا، اس کا والد پیرمحمد قوم اراعین ،تھوڑی کی زمین کا مالک اور گاؤں کا نمبر وار تھا۔ اور اس نے مولا ناغلام رسول سکنہ قلعہ میہاں سنگھ سے نیش حاصل کیا تھا۔ کتاب وسنت کا پابند، زاہداور عزلت پیند تھا۔ سکنہ قلعہ میں ترک وطن کا خیال اس درجہ غالب ہوا کہ سب پچھ چھوڑ کر جلا گیا، پھر والیس نہ آیا، پچھ نیس کر اربی یا کسی نہ آیا، پچھ نیس کر اربی یا کسی دوسری جگہ وفات یائی۔ قاضی کوٹ کے مقدمے میں جمرکنڈ کے ایک بجابد عبدالصمد عرف دوسری جگہ وفات یائی۔ قاضی کوٹ کے مقدمے میں جمرکنڈ کے ایک بجابد عبدالصمد عرف

پیر محد کاذ کر آیا ہے ممکن ہے میدونی بیر محد موجس کا ذکر ہم کررہے ہیں۔

میر حسین کی پیدائش ۱۸۹۲-۱۸۹۲ء میں ہوئی، گویا والد کی بھرت کے وقت اس کی عمر صرف دو تین برس کی ہوگی۔اس سے بڑے دو بھائی تتھا درا یک بہن، ایک بہن اس سے حچوٹی تھی، جو دالد کی بھرت کے وقت شیرخوار پکی ہوگی۔

فيصلهُ ہجرت

۲-۱۹۰۱ء میں ضلع گوجرانوالہ اور آس ماس کے دیباتی علاقے میں مولا نا ولی محمد ساکن فتوحی والا ضلع فیروز بورسیدا کبرشاه ساکن سکھانہ ضلع سیالکوٹ کے دورے شروع ہوئے۔ یہ دونوں بزرگ نہایت متقی اور پر ہیز گار تھے اور جماعت مجاہدین کے سرگرم ملغ، بہت سادہ انداز میں وعظ فرماتے ، تاہم وعظ ایسے پراثر ہوتے کہ جوسنتااس کے قلب میں اسلامیت کی روح بیداری ہوجاتی، سیروں اصحاب راوحق میں جانبازی کے لئے تیار ہو گئے محرصین کی عمراس وقت آٹھ نوسال کی ہوگی الیکن کلم من کی پذیرائی ،دل کی صفائی، جذبات کی یا کیزگ، اخلاق کی طہارت اور ذہن کی تنویر پرموقوف ہے،اس کے لئے بیضروری نہیں کہ انسان شہور وسنین کی خاصی منزلیں طے کر لے اور علوم سے دفاتر جاے لے محد حسین اواکل طفلی ہی سے متاثر ہوتار ہا۔۱۲-۱۹۱۱ء میں جب اس کی عمر اٹھارہ انیس سال کی تھی، وطن ہے ہجرت کرکے جماعت مجاہدین میں شامل ہونے کا فیصله کرلیا، افراد خاندان میں سے چھوٹی ہمشیر کے سواکوئی اس کاراز دار ندتھا، اٹھارہ انیس سال كاساده ديهاتي نوجوان اتنابرا فيصله كرتا باورسوله ستره سال كى بمشيراس كى مؤيد و عامی ہے۔اس ہمشیرنے اپنازیورزادراہ کیلئے نذرکیا، گویاوہ بھی اپنی زندگی بھائی کی طرح خدمت جن کیلئے وقف کر چکی تھی ،البتہ عورت ذات ہونے کے باعث باہر نہ جاسکتی تھی۔

جماعت كاكام

جيما كوع ض كياجا چكا ب،اسمست چيني كي بعد محد حسين كانام "مجرعم" ركها كيااور اس کے ذمے میدکام لگایا گیا کہ ڈاک لائے ، لے جائے ، نیز ہندوستان ہے روپے اور آ دمی مرکز میں پہنچا تا رہے۔ اس خدمت میں بعض دوسرے اصحاب بھی اس کے ساتھ شامل تصر مثلاً خان محداور عبيد الله جو ١٩٢١ء من قاضي كوث كرمقد مرمم كر منزم تصر بوں تو دار الجہاد میں جماعت کا کوئی کام بھی مہل نہ ہوسکتا تھا، اس لئے کہ ہر کام میں جان بھیلی برر کھنی پڑتی تھی ،لیکن قاصد کی خدمات انجام دینے کا مطلب بیتھا کہ زندگی ہر لمحہ پریشانی اور سراسیمگی میں گذرے۔ ہر لحظہ راز افشا ہوجانے کا اضطراب ، ہر وقت گرفتاری کا خطرہ، گرفتاری اور اسیری نظر بہ ظاہر جان دینے سے بڑی قربانی نہھی ، تاہم جن خوش نصیبوں کے دل عشق مقاصد سے لبریز تھے انہیں گرفاری موت سے بردھ کر تکلیف دہ نظر آتی تھی۔ اول اس لئے کہ جماعت کے کام کونقصان پہنچے گا، دوم اس لئے کمکن ہے برطانوی خفیہ پولیس کے جلادوں کی باز برس اور خوفناک اذیت رسائی میں کوئی ایسی بات زبان سے نکل جائے ، جوعہد اخفا کے نقض کا باعث بن جائے۔ یامکن ہے اچا تک جماعت کی کوئی تحریر دشمن کے قبضے میں جلی جائے اور اس سے اصل کام میں خلل پیدا ہویا بعض اہم راز بے نقاب ہوجائیں۔ سوم اس لئے کہ زندگی کے جن اوقات كوايك بلندنصب العين كے لئے وقف كيا تھا،اس سے طویل بے تعلقى بيدا ہو جائے گ اور خداجانے کتنی مدت قید و بند کی بے جارگ میں گزار نی پڑے۔ بیسب کچھ درست تھا، گر کسی نہ کسی کوتو بیاکا مانجام دینا ہی تھا اور جب محم^{حسی}ین کواس فرض کے لئے منتخب کرلیا گیاتواس کے لئے بساط کے مطابق بجا آوری کے سواحیارہ نہ تھا۔

شان عزبیت

اس کے بعد محر حسین والدہ سے ملاقات پر راضی ہو گیا چنا نچہ ایک سفر میں رات کے وقت ملاقات کی جگہ اور ساعت مقرر ہوگئ ۔ خداجانے کس ذریعے سے خفیہ پولیس کو بھی اس کی اطلاع مل گئی اور اس نے محر حسین کی گرفتاری کے انتظامات مکمل کر لئے۔ دوسری طرف محر حسین نے پولیس کی تک و دو دیکھی تو اندازہ کر لیا کہ معاملہ خطرناک صورت افتیار کر چکا ہے، چنا نچہ اپنے فاص ذرائع سے اس نے والدہ اور ہمشیر کو بھی اطلاع دے دی، پھر رات کا بڑا حصہ مقامات اور اوقات ملاقات کے تغیر و تبدل ہی میں گذر گیا۔ انجام کا را کی غیر معروف راستے میں گھنٹے ڈیڑھ گھنٹے کی ملاقات کے بعدوہ پولیس کے چنگل کا را کی غیر معروف راستے میں گھنٹے ڈیڑھ گھنٹے کی ملاقات کے بعدوہ پولیس کے چنگل سے بچتا ہوا، بخیرت نکل گیا۔ دیکھا آپ نے بیا کی نوجوان دیباتی تھا جس کی تعلیم بھی

زیادہ نہ تھی، کین اس کے دل ود ماغ کی بلندی، اس کی ہمت، عزیمت، دوراند کئی اور
اندازہ شناسی ملاحظہ ہوکہ پولیس کی کوئی دام گستری اس کی سرگرمیوں پرانداز نہ ہوتگی۔
قاضی کوٹ کے مقد ہے کی روکداد ہے داضح ہوتا ہے کہ محمد حسین برابر یہاں آتا
رہتا تھا۔ ایک مرتبہ مولوی فضل الہی کے یہاں آیااور کہا کہ جو بم آپ کو پہنچائے گئے تھے
انہیں استعال کیوں نہیں کیا؟ اگر آپ کو استعال میں تامل ہے تو مجھے دہ بچئے تا کہ میں
استعال کروں۔ مولوی فضل الہی نے جواب دیا کہ تمہاری معرفت میں یہ کام نہ کروں گا،
کیونکہ اگر جماعت کا کوئی آ دمی ایسا کام کرتا ہوا پکڑا جائے تو اسکی ذمدداری مجھے پر ہوگی۔

گرفتاری اوراسیری

وہ آٹھ سال تک جماعت کی خدمات انجام دیتار ہا، اسمت کے بجائے وہ چمرکنگ کے مرکز سے متعلق ہوگیا تھا۔ پشاور سے ضروری سامان کی خریدکا سارا کارو بارای کے حوالے کردیا گیا تھا، اس لئے کہ وہ تمام خفیہ راستوں سے واقف تھا، اوراسے بیجی معلوم تھا کہ خطرے کے وقت بچاؤ کے لئے کیا کیا تدبیری اختیار کرنی چاہئیں۔ یاد ہوگا کہ سام ۱۸۹۳ء میں روپ اور آدمیوں کی بہم رسانی کا سراغ لگانے کیلئے مردان کے ایک پٹھان نے اپنے بیٹے کو ملکا بھیج دیا تھا۔ ۱۹۲۰ء میں بھی حکومت نے اپنے ایک کارند کے کو باہد کے بیس میں چمرکنڈ روانہ کردیا، جہاں وہ جماعت میں گھل مل گیا، اور جمید معلوم کرتار ہا۔ ایک مرتبہ جمرحسین اسب خرید نے کیلئے پشاور آیا تو بیا نگریزی جاسوس بھی رکن جماعت کی حیثیت میں ساتھ آیا، اسب خرید نے کیلئے پشاور آیا تو بیا نگریزی جاسوس کی حیثیت میں ساتھ آیا، اسباب خرید اجاچکا اور مراجعت کا وقت آیا تو بد بخت جاسوس کی حیثیت میں ساتھ آیا، اسباب خرید اجاچکا اور مراجعت کا وقت آیا تو بد بخت جاسوس کی حیثیت میں ساتھ آیا، اسباب خرید اجاچکا اور مراجعت کا وقت آیا تو بد بخت جاسوس کی حیثیت میں ساتھ آیا، اسباب خرید اجاچکا اور مراجعت کا وقت آیا تو بد بخت جاسوس کی حیثیت میں ساتھ آیا، اسباب خرید اجاچکا اور مراجعت کا وقت آیا تو بد بخت جاسوس کی حیثیت میں ساتھ آگا، اسباب خرید اجاچکا اور مراجعت کا وقت آیا تو بد بخت جاسوس کی جیشت میں ساتھ آگا، اسباب خرید اجاچکا اور مراجعت کا وقت آیا تو بد بخت جاسوس کی جاسوس بی جاسوس نے پولیس کو خبر پہنچا دی، بول اجاپ کی گھراڈ ال کرمجھ حسین کی جاسوں کے پاس جیشار ہا، جاسوس نے پولیس کو خبر پہنچا دی، بول اجاپ کی گھراڈ ال کرمچھ حسین کی جاسوں کی کھراڈ ال کرمچھ حسین کی جاسوں کی گھراڈ ال کرمچھ حسین کی جاسوں کی جاسوں کی جاسوں کی کھراڈ ال کرمچھ حسین کی کھراڈ ال کرمچھ حسین کی جاسوں کی جاسوں کی کھراٹ ال کی کھراٹ ک

آنہیں دنوں جا بجابم گرے تھے، مثلاً ڈین ہوٹل بیثاور میں، رسال پور جھاؤنی میں، ایک بم راولپنڈی میں پولیس کے ایک بڑے افسر کی کوٹھی پر گراتھا۔ان واقعات کومجاہدین سے منسوب کر کے محمد حسین کوسات سال قید بامشقت کی سزاسنادی گئی۔

مصيبت بالائے مصيبت

چونکہ محرصین کے پاس کوئی رقم نتھی اور نہ کوئی مخص اس کا شناسا تھا کہ دفاع کا خرچ برداشت کرنے کے لئے تیار ہوتا، غالبًا مجاہدین کے سواکسی کواس واقعے کاعلم بھی نہ تھا اور مجاہدین اپنے خاص حالات کی بناء پر کچھ کر نہ سکتے تھے، اس لئے عام قاعدے کے مطابق خیراتی فنڈ سے اپیل کی تجویز ہوئی۔ اس سلطے میں ضروری تھا کہ محرصین کے متعلق نیک چلنی کی تقدیدی گرجرانوالہ کی پولیس سے حاصل کی جاتی۔ چنا نچہ کا غذات گو جرانوالہ بھیج دیے گئے، یہاں اس زمانے میں قاضی کوٹ کے بم کا مقدمہ چل رہا تھا اور پولیس کو محمد حسین کو گو جرانوالہ لاکر قاضی کوٹ کے بم کا مقدمہ چل رہا تھا اور پولیس کو محمد حسین کو گو جرانوالہ لاکر قاضی کوٹ کے مقدمے میں چودہ سال قید با مشقت اور پانچ سو دسین کو گو جرانوالہ لاکر قاضی کوٹ کے مقدمے میں چودہ سال قید با مشقت اور پانچ سو دو ہے جرمانے کی مزید سزاوے دی گئی۔ اس لئے کہ استغاثے اور سلطانی گواہ کے بیان روپے جرمانے کی مزید سزاوے دی گئی۔ اس لئے کہ استغاثے اور سلطانی گواہ کے بیان کے مطابق جو تین آ دمی بم ، کارتوس وغیرہ چرکنڈ سے لائے تھے، ان میں ایک محمد سین کو قبیری تھی۔ ان میں ایک محمد سین کو قبیری تھی۔ ان میں ایک محمد سین کو قبیری تھی۔ کہ مطابق جو تین آ دمی بم ، کارتوس وغیرہ چرکنڈ سے لائے تھے، ان میں ایک محمد سین کو قبیری تھی۔

همت واستقامت

اب محمد حسین کی پوری سزائے قیدا کیس سال کی ہوگئ تھی اور پانچ سورہ بے جرمانہ۔ اس وقت وہ زندگی کے اٹھا کیسویں، انتیبویں مرصلے میں تھا اور سلسل دس سال جماعت کی خدمت انجام دینے میں بسر کرچکا تھا، جن میں سے ہرخدمت عرفی کے اس مشہور شعر کی تصور تھی: عافل مرو كه تا در بيت الحرام عشق صد منزل است و منزل اول قيامت است

اس کے دل میں بھی راحت و آسایش اور فارغ البالی وکام جوئی کی وہ تمام آرزو کیں موجزن ہوتی ہیں۔ وہ آرزو کیں موجزن ہوتی ہوسیم القوئی جوانوں کے دلوں میں موجزن ہوتی ہیں۔ وہ امیر نہ سی لیکن اتناغریب بھی نہ تھا کہ اطمینان کی زندگی بسر نہ کرسکتا۔ پھر والدہ کے علاوہ چار ماں جائی ہستیوں کی آئیسیں اس کی راوِ محبت میں بچھنے کے لئے تیار تھیں، لیکن اس نے مد چیزیں ایک بلند مقصد کے لئے قربان کردیں جواس کے نزدیک شرعی فریضے کی خیشیت رکھتا تھا۔ ہر لحظہ خطرے، تگ ودو، جانبازی یا اسیری ودکلیری کی زندگی پند کرلی، اور پوری مدت قید صبر واستقامت سے گزاردی۔

شیخ دین محمد صاحب نے جو مختلف عہد دن پر مامور رہنے کے بعد آج کل وزیرامور کشمیر ہیں۔ محمد سین کے حالات سے متاثر ہو کر بلا معاد ضدا پیل دائر کی اور انتہائی دل سوزی سے کام کیا، تاہم نتیجہ صرف بید لکلا کہ ہائی کورٹ نے دونوں سزائیں بیک وقت شروع کرنے کا تھم صادر کردیا، گویا مجموعی سزا بداعتبار جس چودہ سال رہ گئی اور جرمانہ معاف ہوگیا۔

آ خری دور

1978ء میں آخری فیصلہ ہوا تو اسے دور دراز کے جیل خانوں میں بھیج دیا گیا، یہاں تک کہ متعلقین کے لئے ملاقات کی بھی کوئی صورت ندر ہی۔ اس کا زیادہ تروفت جبل پور (وسط ہند) کے جیل میں گذرا، جار پانچ سال کے بعد ایک کارڈ آیا کہ جبل پور میں ہوں اور بخیریت ہوں، دس سال میں ایسے کل تین جار خط آئے۔

۳۱-۱۹۳۰ء میں اس کی بائیس ران میں در دشروع ہوااور بڈی کا ناسور ہو گیا۔ ڈاکٹر

کے علاج سے بچھ فائدہ نہ ہوا۔ دس سال میں قو اعد جیل کے مطابق دوسال کی رعایت بل چکی تھی ، یوں چودہ سال میں سے صرف دوسال کی قید باقی تھی کہ کی سا ۱۹۳۳ء میں حکومت نے پولیس کے زیر گرانی اسے گو جرانو الہ بھیج دیا۔ وہاں سے اسے حسب ہدایت کوٹ بھوانی داس پہنچادیا گیا۔ گویا حکومت کو یقین ہو چکا تھا کہ اب وہ تندرست نہ ہوگا اور ناسور اس کی جان کے کررہے گا۔ بدر دی ملاحظہ ہوکہ اس حالت میں بھی ایک پابندی یہ لگائی کہ سپر نند ڈنٹ بولیس سے تحریری اجازت کئے بغیرگا کو سے باہر نہ جائے ، دوسری سے کم بری اجازت کے بغیرگا کو سے باہر نہ جائے ، دوسری سے کم بری احاضری کی رپورٹ دیا کرے۔

اگر چہاس فریب کے لئے چلنا چرنا تخت دو بھرتھا تا ہم وہ صابرانہ ان احکام کی میں اسلام ہوا تہ ہم وہ صابرانہ ان احکام کی میں کرتارہا، پچھ مدت بعد ناسور بھٹ گیا اور نقل وحرکت بالکل ممکن نہ رہی۔اس وقت تھم ہوا کہ چوکیدار اور نمبر دارگاؤں میں محمد حسین کی موجودگی کی رپورٹ با قاعدہ دیتے رہیں۔ اوا خرسمبر ۱۹۳۳ء میں یعنی رہائی سے صرف چار ماہ بعداس کی بوڑھی والدہ نے وفات پائی، صرف دوروز بعد مجاہم محمد حسین بھی راہ گرائے عالم بقا ہوا، پولیس کو اطلاع دی گئی،سب انسپٹر پولیس نے موقع پر آ کرمحمد حسین کی موت کی تھدیتی کی، اس کے بعداس مرحوم و مغور کی فعش کو آغوش قبر میں سلایا گیا۔

جیل فانے کے زمانے کی بابت تو پچھٹیں کہا جاسکنا، کیکن زندگی کے جوآخری چار مہینے اس نے اقر ہا بیس گزارے، دیکھنے والوں کا بیان ہے کہ بیاری کے باوجوداس کا دل ایک لمحے کے لئے بھی چرکنڈ اور اسمست کے خیال سے عافل نہ ہوا۔ گویاا نتہائی آرزویہ تھی کہ جس طور بھی ممکن ہوو ہاں بہنچ جائے کہ شایداس حالت میں بھی کوئی خدمت انجام دے سکے۔(1)

⁽۱) یہ تمام حالات قاضی عبد الرحیم صاحب ساکن قاضی کوٹ نے لکھ کر بھیجے، جن کے لئے میں ان کا اور مولا نامحہ اساعیل ناظم اعلیٰ جماعت اہل حدیث کاممنون ہوں۔

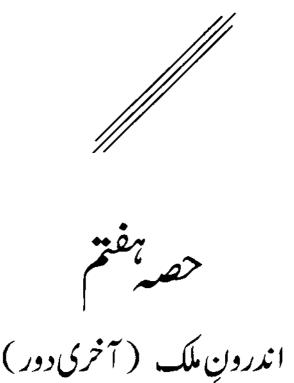
شہیروں کی یاد

کیا کہا جاسکتا ہے کہ ایسے کتنے بہادرہ جانباز جوان تھے جنہوں نے اپنی بیش قیمت زندگیاں اسلامیت و آزادی کیلئے اس جہاد آرائی کی نذرکیں، جس کی عکم داری کا شرف ایک صدی تک جماعت مجامدی تک جماعت مجامدی تک جماعت مجامدی تک جماعت مجامدی کے قرور مسرت کے نعروں سے فضا کو ہنگامہ زار بنادیئے کے آرز ومند ہیں، کیا انہیں بھی خیال آیا ہے کہ ان جوانمردوں کی یاد بھی تازہ کریں؟ ایک ایرانی شاعر نے اپنے وطن کے شہیدان حریت کی یادتازہ رکھنے کے لئے جن روح افروز جذبات کونظم کا لباس بہنایا تھا، وہ ملک کے کامگاران آزادی کے لئے ایک زندہ ویا یندہ درت عبرت و تنہیہ ہیں:

اے مرغ سحر چو ایں ہب تار گرداشت ز سر سیاہ کاری و ز نغمہ روح بخش اسحار رفت از سر خفتگاں نماری کمھود گرہ ز زلف زر تار محبوبہ نیلگوں عماری یزدان بہ کمال شد نمودار و اہریمنِ زشت خو حصاری یاد آر نشخ مردہ یاد آر

یعنی جب غلامی اور محکومی کی شب تاریک ختم ہوجائے ، صبح کے روح افروز نغنے سونے والوں کی آنکھوں سے نیند کا خمار زائل کر دیں ، آزادی کا سورج اپنی سنہری زلفول کی گر جیں کھول دے ، خدا کی رحمت ہر طرف اوج کمال پر نمودار ہوجائے اور شیطان کو اس کے تمام شراتگیز ، شکنڈوں کے ساتھ قید و بند میں ڈال دیا جائے تو ان شمعوں کی یاد فراموش نہ ہونی جا ہے جو جل جل کررات کی تاریکی میں روشنی کا سامان بہم پہنچاتی رہیں اوراسی جانفشانی میں بچھ کررہ گئیں۔

برصغیر ہندمیں تحریک احیائے دین اور سرفر وشانہ جدوجہد کی مکمل سرگذشت





يهلاباب:

جماعت کی اعانت اور طریقِ کار

اسلامی حمیت کابے پناہ سمندر

ہم بتا چکے ہیں کدابتدا ہی سے ملک کے اندرد توت و تبلیغ نیز جمع مال وفراہمی مجاہدین کا ایک نہایت وسیع اور مستحکم نظام قائم ہو گیا تھا جس میں سرگری سے کام ہوتا تھا، یہاں سے مجاہدین کی بڑی جماعت سرحد پنجی ہویانہ پنجی ہولیکن روپیہ خاصی مقدار میں پہنجی جاتا تھا، ہرصوبے میں سیکڑوں افراد چپ جاپ اس کام میں مصروف تھے، اور ان سب کے متعلق خاص فرمہ داراصحاب کے سواکسی کو کلم نہ تھا۔

جنگ اسپیلہ کے بعد حکومت نے اس نظام کودرہم برہم کرڈالنے میں کوئی کسرا مخانہ رکھی، پے در پے مختلف کارکنوں اور کار فرماؤں پر مقد مے چلائے گئے اور عمو فا ملز مین کو صبطی کہا نہ دوام بدعبور دریائے شور کی سزائیں دی گئیں ،مقصود بدتھا کہ ان سزاؤں سے تمام لوگوں کے دلوں میں دہشت بیٹے جائے اور آئندہ کوئی بھی باسانی کاروباراعانت میں حصہ لینے کے تیار نہ ہوسکے۔

کم وہیش آٹھ دس سال کی تختیوں اور تشدد آرائیوں کے بعد حکومت کو یقین ہوگیا تھا کہ اب ملک کی داخلی تحریک اعانت ہیں کوئی روح باتی نہیں رہی ، لہذا اس کی روش بھی بدل گئی اور مزید آٹھ دس سال گذر جانے کے بعد انڈیمان کے وہ قیدی بھی رہا کردیے گئے جن کے سفینہ ہائے حیات امواج تشدد کے تجییز کے کھانے کے باوجود سلامت رہے تھے ، تاہم اصل نظام بدستور قائم رہا اور اعانتی کاروبار میں کوئی خلل پیدا نہ ہوا۔ بانیانِ

تحریک کے خلوص وحسن نیت کے اس اعجاز سے کون انکار کرسکتا ہے کہ جب حکومت برغم خودتمام متاز کارفر ماؤں اور کارکنوں کو دارو گیر کی زنچیروں میں جکڑ چکی تھی تو خود بخو د نئے افراد بروئے کارآتے رہے،اس سے اندازہ ہوسکتا ہے کے سیداحد شہید نے اسلامیت اور آ زادی کی جوحرارت وحمیت قلوب وارواح میں پیدا کردی تھی وہ کتنی استوار و یا کدارتھی، اوراس كا دائره كس درجه وسيع وجمه كيرتغابه

کارکنوں کےلشکر

میں نے ہر چندکوشش کی کہاس نظام کے تمام کارکنوں کی سرگزشت ہائے حیات معلوم ہوسکیں یا نہ ہوسکیں ،لیکن ممتاز افراد کے بورے کام کی کیفیت تو سامنے آ جانی جا ہے الیکن دس بیں اصحاب کے سواکس کے بارے میں کچھ پتا نہ چل سکا اور ان کے متعلق بھی زیادہ سے زیادہ یہ بتایا گیا کہ وہ اس نظام سے وابستہ تھے، مثلاً بہار میں مولانا عبدالعزيز رجيم آبادي، مولانا عبدالله عازي بورى، بنجاب مين مولانا عبدالقادر قصورى، مولوی ولی محرفتوحی والا،مولوی قضل الٰهی وزیر آبادی، حافظ محمصدیق، رتلام اور بمبئ میں حافظ عبد الغفور ، مدراس مين كاكاعمر صاحب، دبلي مين پنجابي الل حديث، كلكته مين کیڑے اور او ہے کے اہل صدیث تاجر۔ (۱)

گویا آخری دور میں اعانت مجاہدین کا اکثر و بیشتر کام زیادہ تراہل حدیث حضرات بی نے انجام دیا، اس جماعت کے افراد کی ایک امتیازی خصوصیت بیتھی کہ بیدملازمتیں ببندنه کرتے تھے اورا کثر تجارتی مشاغل میں مصروف رہتے تھے، یا کوئی صنعتی کارخانہ قائم كر ليتے تھے، زكوة يابندي سے فكالتے اور بيرو پيموما مجامدين كى نذركرديتے،اس كے علاوه صدقات کی رقمیں بھی ای مدمیں دے دیتے ،موقع یاتے تو کاروبار میں تفع کا انداز ہ

⁽۱) مشابدات كابل و ياغستان بص: ۱۱۹ و ۲۰

کرتے ہوئے عطیات میں بھی کوتائی نہ کرتے۔ مجاہدین کی اعانت کے علاوہ ان کا روپیداصلاحِ عقائد کی مفید کتابیں شائع کرنے میں صرف ہوتا، مثلاً'' تقویۃ الایمان' یا بعض دوسرے رسائل و کتب۔

بعض الیی ہتیاں بھی اس کام میں سرگرمی سے شریک رہیں جن کے متعلق کسی کو خیال بھی نہ ہوسکتا تھا کہ انہیں ایسے مشاغل سے کوئی دلچہیں ہوسکتی ہے، مثلاً مولوی عبد الحق مرحوم مالک رفاو عام پرلیں، جنہوں نے غالبًا ۱۹۲۳ء میں 'دمسلم آ وٹ لک' نکالاتھا، وہ لا ہور میں جماعت مجاہدین کے اعانتی کام کا ایک ممتاز مرکز تھے۔ جس صدتک مجھے علم ہے وہ زندگی کی آخری ساعت تک بیاکم انجام ویتے رہے، اگر چداس میں ان کے لئے بورے خطرے تھے، اور ایک مرتبدہ گرفتار بھی ہو چکے تھے۔

ان کے علاوہ ڈاکٹر عبدالقوی لقمان کے والد ماجد مولا نامحداحد جو عام طور پرصوفی احمد مشہور تھے، مولا نا احمد علی ناظم المجمن خدام الدین، خواجہ عبد المحکی ، مولا نا عبدالقادر قصوری مرحوم کا پورا خاندان ، وغیرہ سب شریک تھے۔ گوجرانوالہ، وزیر آ باداور سیالکوٹ کے بہت سے اصحاب مثلاً قاضی عبدالرؤف اور قاضی عبیدالله (قاضی کوٹ) ، حافظ عنایت الله اثری ، مستری ابراہیم حافظ آ بادی ، سیدا کبرشاہ ملکانه (صلح سیالکوٹ) ۔ ان میں سے بعض اصحاب اور متعدد دوسرے اشخاص کے فقرسے حالات آ تندہ ابواب میں جا بجا بیان ہوں گے ، چیش نظر باب میں صرف ان حضرات کے طریق کارکی نسبت کچھ عرض کرنا جا ہتا ہوں۔

جمع زركا نظام

قاضی عبدالرجیم صاحب ساکن قاضی کوٹ (مسلع کوجرانوالہ) خوداس خاندان کے ایک جلیل القدر فرد ہیں جوتحریک مجاہدین سے وابستہ رہا اور اس سلیلے میں قید و بند کی ر پیونید ماند. مشقتیں برداشت کیں، وہ فرماتے ہیں:

مجاہدین کیلئے مالیات کے انظام کی بیصورت تھی کہ بڑگال، ہندوستان (یو پی اور بہار) پنجاب وغیرہ تمام علاقوں سے جماعت کے افرادز کو قاور عشر باقاعدہ جمع کرکے مرکز (اسمست و چرکنڈ) کو بھیج دیتے اور بلاا جازت مرکز اس میں سے ایک پائی بھی خرچ کرنا گناہ بجھتے تھے۔صدقاتِ فطر باقاعدہ جمع کرکے مقامی فقراء دمساکین پرخرچ کئے جاتے ،اگران میں سے پچھن کے جاتا تو مرکز کو بھیج دیا جاتا، بعض دفعہ بوقت ضرورت صدقاتِ تطوع بھی وصول کئے مرکز کو بھیج دیا جاتا، بعض دفعہ بوقت ضرورت صدقاتِ تطوع بھی وصول کئے جاتے، چنانچہ ایک دفعہ ای قسم کی جندے میں صرف قاضی کوٹ سے تین سو روپی فراہم کر کے بھیجا گیا، اس قسم کی رقمیں دوسر سے تمام علاقوں سے بھی فراہم کی گئیں، ان کی مجھے مقدار اللہ تعالیٰ بی کو معلوم ہے۔ (۱)

ال سے انداز ہ ہوسکتا ہے کہ جمع زر کا بڑا ذراید صرف زکو ۃ بعشر اور صدقات کی تنظیم سے پیدا کرلیا گیا تھا، البتہ ضرورت کے وقت تمام اصحاب مزید رقمیں پیش کردیتے تھے، قاضی کوٹ صرف ایک موضع تھا، جب وہاں سے ایک مرتبہ تین سورو پے فراہم ہو گئے تو باقی دیہات و مقامات کے چندے ملاکر یقینا بہت بڑی رقم جمع ہوگئ ہوگی، بنگال و بہار میں ابتدا سے پیطر یقہ رائح تھا کہ روز انہ کھا تا لیکا تے وقت مستورات ایک مشی جا ول ایک ملکے میں ڈالتی جا تمیں اور ہفتے یا مہینے کے بعد جنس کیجا جمع کر کے فروخت کردی جاتی ۔

قاضی کوٹ کے مقدمہ بم (۱۹۲۱ء) کے ایک بیان میں بنایا گیا ہے کہ ایک مرتبہ پانچ بزارروپے چرکنڈ بھیجنے کا فیصلہ کیا گیا، چار بزارروپیہ حافظ رتلام سے لے آئے تھے، ایک بزار مولوی فضل الی وزیر آبادی نے فراہم شدہ رقوم میں سے دیدیا اور بیر قم صرف ایک مرکز سے ایک مرتبہ گئی، دوسرے مراکز کی رقول کا کچھ حال معلوم نہ ہوسکا۔

⁽١) قاضى عبدالرجيم كاايك كمتوب.

مولوی ولی محد نے اس مقد مے ہیں بیان دیتے ہوئے کہا کہ تنہا میں ہرسال تین سو کے اندرزقم بھیجنا تھا، ایک مرتبہ ایک ہزار عام چندہ ہوا، تین ہزار جلال الدین ڈوگرساکن بوڑے والے نے دیے، یوں چار ہزار چندہ بھیجا گیا۔ 1910ء میں اپنے اسمست جانے سے پیشتر چارہی ہزار کی رقم مولوی فضل اللی کی وساطت سے بھیجی تھی۔ (1)

ایک اور بیان مظہر ہے کہ قاضی عطا اللہ ساکن سانگلا اور ابراہیم ساکن ضلع فیروز پور آئے اور ڈیڑھ ہزاررو پے چندے کے مولوی فضل الہی کے مکان پردے گئے، بیدونوں صاحب مولوی ولی محد کے مرید تھے۔ (۲)

رویے کی مصارف

یقینا بورے ملک کے تمام حصول سے روپید خاصی مقدار میں جاتا تھا، قاضی عبدالرجیم فر ماتے ہیں:

جورہ پیدمرکز کو بھیجا جاتا تھا وہ مرکزی جماعت کے افراد کی ضروریات

ہے بہت زیادہ ہوا کرتا تھا، لیکن ماحول اور سیاسی مصالح کے مدنظر اس کا بیشتر
حصہ مدی قبائل پرصرف ہوتا تھا۔ جماعت کے مصارف بیس اس کا بہت تھوڑا
حصہ ہوا کرتا تھا، بیسب پچھمرکزی جماعت کے افراد اوراصحاب جل وعقد کے
مشور سے ہوا کرتا تھا، اس لئے افراد مرکزیا عوام جماعت کو اس سے کوئی
مشور سے ہوا کرتا تھا، اس لئے افراد مرکزیا عوام جماعت کو اس سے کوئی
شکایت پیدا نہ ہوتی تھی اور مجاہدین مرکز تمام تکالیف خندہ پیشانی سے گوارا کر
لیتے تھے۔ بی وجنھی کہ سرحد بیس جماعت مجاہدین کو بہت زیادہ اثر ورسوخ
حاصل تھا اور قبائل ہوقت ضرورت مجاہدین سے پیشتر ہی میدان جہاد میں کود

⁽۱) رودادمقدمه قاضی کوت (۲) رودادمقدمه قاضی کوت

⁽٣) قاضى عبدالرحيم كامكتوب_

اگرمیراا ندازہ غلط نہیں تو امیر عبدالکریم مرحوم کے عہدتک یہی حالت تھی ، جماعت کے مشور ہے اور اتفاق ہے روپے کا ایک حصہ گرد و پیش کے قبائل کی نذر کیا جاتا تھا اور جماعت کی ضرورت کے لئے صرف اتنی رقم رکھی جاتی جس میں معمولی خورد ونوش اور پوشش کا انتظام ہوسکتا ، البتہ اسلحہ کی خرید لوازم میں داخل تھی اور ان پر رقم خرچ کے بغیر چارہ ندتھا۔

ديانت وامانت

روپیفراہم کرنابلاشہ بڑی محنت، مشقت، تنظیم اور سرگری عمل کا طلب گارتھا، کیکن اس ہے بدر جہازیادہ قابل ذکر اور مستحق صدستایش امرید تھا کہ روپیہ مرکز تک پہنچانے والے تمام افراد مولوی محمطی قصوری کے قول کے مطابق دیانت وابانت میں اپنی مثل آب تھے۔ بعض اوقات ایہا ہوتا کہ جماعت کے قاصد روپیہ لینے کے لئے آجاتے، بعض اوقات مرکز وں سے مختلف لوگوں کو اسمست یا چرکنڈ بھیج دیاجا تا۔ چھوٹے مرکز وں سے جولوگ رقمیں لے کر بڑے مرکز وں میں پہنچاتے وہ اصل رقموں میں سے ایک دمڑی میں جولوگ رقمیں لے کر بڑے مرکز وں میں پہنچاتے وہ اصل رقموں میں سے ایک دمڑی جمی خرج نہ کرتے ، کم وجیش ایک سوسال تک بیرنظام قائم رہائیکن پورے وثوق سے کہا جاسکتا ہے کہ بڑگال وجمئی کے دورافقادہ مراکز سے یا عندان تک بھی ایک حب بھی ضائع نہ جوا اور نہ کی کے تھرف میں آیا۔

میں اس سلسلے کی صرف ایک مثال پیش کرنے پر اکتفا کروں گا، حافظ عنایت اللہ اثری وزیر آبادی جو آج کل جامع اہل حدیث مجرات میں خطیب ہیں، اکتوبر ۱۹۱۵ء میں ایک رقم اسمست پہنچانے پر مامور ہوئے تھے جو اشرفیوں کی شکل میں دواڑ حائی سیر سے کم نہتی ، یعنی کم و بیش چار ہزار، آمدورفت میں جوخرج ہوا حافظ صاحب نے اپنچ پاس سے خرج کیا، بیرقم بہنچا کردہ اوا خرد تمبر میں واپس ہوئے توان کے پاس صرف استے پہنچ سے کہ ہری پور سے جہلم تک کا نکٹ خرید کیس، جہلم بینچ کر ایک درزی کی دوکان پر چارروز

کام کیا، جب وزیر آبادتک کے تکٹ کی رقم فراہم ہوگئی تو باقی سفر طے کیا۔ کیا جماعتی رقوم میں دیانت و امانت کی ایس کوئی مثال جمارے عہد کی بڑی بڑی سیاس انجمنوں اور جمعیتوں میں بھی ال سکتی ہے؟ حافظ صاحب اگر مرکز سے واپسی کا خرج لے لیتے تو یہ ہرگز فیر مناسب نہ سمجھا جا تا، مگر انہوں نے ایک دمڑی بھی نہ لی، یہ غیر معمولی دیانت وامانت اس امر کا نتیج تھی کہ مجاہدین کی پوری تحریک اصل دین پر منظم ہو گئھی اور اسی بنیادی نہ بی حیثیت نے اس میں وہ روح پیدا کر دی تھی جس کی کوئی نظیر جمارے عہد کی کسی دوسری تنظیم میں نہیں مل سکتی۔

رازداري

جولوگ اسمست و چرکنڈ اور مراکز وطن کے درمیان آید ورفت پر مامور ہوتے، وہ چونکہ اکثر اہل حدیث ہوتے لہذا أنہیں تا کیدکر دی جاتی کہ راستے میں نماز پڑھتے وقت سے پر ہاتھ نہ باندھیں، رفع پدین اور رفع سبابہ نہ کریں، آمین بلند آواز سے نہ ہیں۔ وہ کسی خلص دوست یار فیق پر بھی اپناراز طاہر نہ کرتے تھے۔ (۱) طویل تجربے کے بعد کسی خلص دوست یار فیق پر بھی اپناراز طاہر نہ کرتے تھے۔ (۱) طویل تجربے کے بعد کسی کی پختہ کاری کا بقین ہوجا تا تو اسے صرف وہ باتیں بتائی جاتیں جن کا اظہار ناگز بر ہوتا۔

مید لوگ عمو بارات کو سفر کرتے ، دن کے وقت محفوظ مقامات پر اقامت اختیار کر لیتے، آنے جانے والے افراد کا علم ہندوستان کے مختلف مرکز وں کی جماعتوں کے صرف امیر وں کو ہوتا ، تو ہا می فظر وں میں ان کی کیفیت عام درویشوں یا طلبہ سے زیادہ نہ بہوتی، بلکہ بعض مقامات پر وہ سادھوؤں کا بھیس اختیار کر لیتے۔ جس علاقے میں سے گذر نا ہوتا ، ای کالباس اور طریق کلام و معاشرت اختیار کر لیتے، یا یہ ظاہر کرتے کہ وہ بولئے سے معذور ہیں۔ (۲) یہ سب تد ہیریں صرف راز داری اور اخفاء کی غرض سے ضروری تبھی گئے تھیں۔

⁽۱) حافظ عنايت الله كا كمتوب (۲) قاضي عبد الرحيم كالمتوب

قاصد

مولوی جمع علی قصوری کے بیان سے متر شج ہوتا ہے کہ جماعت مجابدین میں قاصدول کی خدمات انجام دینے کے لئے جن اصحاب کو متخب کیا جاتا تھا وہ ایسے اوصاف کے مالک ہوتے تھے جیسے ہر خض میں جمع نہیں ہو سکتے ۔ مولوی صاحب لکھتے ہیں کہ قاصد نہایت ہوشیار، زیرک اور معتمد علیہ آ دمی ہوتے تھے، وہ بہر وپ بھر نے میں استاد اور اپنا علیہ بدلنے میں مشاق ہوتے تھے۔ نفیہ پولیس اور اپنیش پولیس کے آ دمی ہر وقت ان کے تعاقب میں رہتے تھے، لیکن جماعت مجاہدین کے قاصد انہیں چکمہ دیتے اور ان کے چنا قب میں رہتے تھے، لیکن جماعت مجاہدین کے قاصد انہیں چکمہ دیتے اور ان کے چنا سے بچتے ہوئے رو پیداور پیغامات اسمت تک پہنچانے میں شرالاک ہومز کے چنال سے بچتے ہوئے رو پیداور پیغامات اسمت تک پہنچانے میں شرالاک ہومز کے بناور سے حکومت ہندگی سرحد میں داخل ہوتے اور پنجاب، دبلی ، یو پی ، بہار ، کلکتہ ، ی پی ، نبار ، کلکتہ ، ی پی ، بہار ، کلکتہ ، ی کلے نے رگر دے ساتھ لے آ تے تھے۔ جماعت کے سی فردگو بھی معلوم نہ ہو سکا کے لئے نے رگر دے ساتھ لے آ تے تھے۔ جماعت کے سی فردگو بھی معلوم نہ ہو سکا کے کئے اصحاب قاصدی کی خدمات انہ میں وہ سے ہیں ۔

یہ عجیب وغریب طریق پر جھیں بدلتے تھے، بھی یور پین لباس پہن لیتے ، بھی کالج کے طالب علم بن جاتے ، بھی سرحد کے رئیس زادوں کی ہی پوشاک زیب برکر لیتے اور سرچھلی پررکھ کرکام کرتے۔ ہندوستانی مراکز ان لوگوں کی جانبازی اور اعلیٰ سیرت ہے سے حدمتاثر ہوتے۔(1)

مولوی صاحب نے فرمایا کہ وہ حد درجہ امین اور بے غرض ہونے کے باوجود
"جماعت کے لئے جرت انگیز جمونا پرو پیگنڈہ کرتے تھے۔"(۲) موصوف نے اس کی
تفصیل نہیں بتائی لیکن سیفالبا اس دور کا ذکر ہے جب مرکز کی حالت پہلے کی سی نہ دہی
تفصیل نہیں بتائی طاہر ہے کہ کسی امیر یا اس کے مشیرانِ خاص کی حیثیت بدل جانے ہے
الاسلام خاہر ہے کہ کسی امیر یا اس کے مشیرانِ خاص کی حیثیت بدل جانے ہے
الاسلام خاہر ہے کہ کسی امیر یا اس کے مشیرانِ خاص کی حیثیت بدل جانے ہے
الاسلام کا بارہ یا ختان میں: ۱۲۱-۱۲۱

جماعت کے مقصد ونصب العین پر کوئی اثر نہ پڑسکتا تھا، اور مخلص کارکنوں کا اولین فرض کیں تھا کہ جماعت کے نظامِ اعانت کو گڑنے ہے بچائے رکھیں اور سمجھیں کہ زودیا بدریر حالت ضروری پلٹے گی۔ بعض وقتی خرابیوں کی بناء پر کسی جمعیت کو بگاڑ لیناسہل ہے لیکن اس کی جگہ نئی ہیئت قائم کرنا اور اسے مقبول بناناسہل نہیں۔

عبدالقادر

انبیں قاصدوں میں محمد حسین بھی شامل تھا، جس کاذکر ہم 'دسمام جاہد' کے زیرعنوان کر چکے ہیں۔ ان میں متعدد دوسرے اصحاب بھی شامل تھے، جو ہم ، کارتو س، بندوقیں اور ریوالور یہاں پہنچاتے رہے۔ مولوی محم علی نے اس سلسلے میں عبد القادر ، عبد الله اور عبد الله اور عبد الله وہ عبد الرحمٰن کا ذکر بطور خاص کیا ہے۔ عبد القادر کے متعلق لکھتے ہیں کہ ایک مرتبہ وہ ہندوستان کا چکر کاٹ کر ہری پور کے راستے اسمست جارہا تھا، در بند پہنچا تو گورے سیاہیوں نے اے گرفار کرلیا، اس نے اپنے کوٹ کے اندر بہت می رقم نوٹوں کی شکل میں سلوار تھی تھی اور ہندوستان کے بعض بڑے بڑے لیڈروں کے خطوط بھی تھے۔ گوروں نے کوٹ اترواکر رکھ لیا اور عبد القادر کوحوالات میں بند کردیا، اگر وہ کوٹ کی سلائی ادھر واکر دیکھ لیتے تورو پیچھی ٹل جا تا اور خطوط بھی۔

مولوی صاحب اس وقت اسمت میں تھ، وہاں عصر کے وقت عبد القادر کی گرفآری کی اطلاع ملی، سب کوصد مہ ہوا، مولوی صاحب نے افطار کے وقت گرگزا کر بارگاہِ باری تعالیٰ میں عبد القادر کی رہائی کے لئے دعاء کی ۔ رات کوخواب میں بھی و یکھا کہ عبدالقادر رہا ہوگیا، وہ واقعی رہا ہوگیا اور اسمست پہنچ کر قصد سنایا کہ تبجد کے وقت ایک بزرگ آئے، حوالات کا دروازہ کھولا، کوٹ میر ہے حوالے کیا اور کہا کہ یہاں سے نکال و ینا میراکام تھا، اب بھاگ کر پچ فکانا تمہارا کام ہے، چنا نچہ بید دریا کوعور کرکے آزاد علاقے میں داخل ہوگیا، پھر باطمینان اسمست پہنچ گیا۔

دوسراباب:

قاضي كوك كامقدمه

تمهيد

یہ مقدمہ ۱۹۲۰ء میں دائر ہوا تھا اور ۱۹۲۱، میں اس کے ملزموں کو سزا کا حکم سنایا گیا تھا۔اس زمانے میں اخباروں نے اسے بم کیس یعنی بم مقدمہ قرار دیا تھا، حالانکہ بیہ موضع قاضی کوٹ سے ناجائز اسلحہ کی برآ مد کا مقدمہ تھا، جن میں بم بھی تھے، رائفلیں بھی، ریولوار بھی اور کارتوس بھی۔

قاضی کوٹ ایک گاؤں ہے جو گو جرانوالہ شہر سے دس میل شال مغرب میں واقع ہے، مغلول کے عہدِ عروج میں ہی ہیہ موضع پر گندایمن آباد کے قاضیوں کی جا گیر کا ایک حصدتھا، جو غالبًا کی پشتوں تک منصبِ قضا پر فائز رہے۔ مغلوں کے عہدِ زوال میں بدامنی کا دور دورہ ہوا تو ان لوگوں نے اس موضع میں سکونت اختیار کرلی، اس کا پہلا نام شنر اد پور تھا، کیکن قاضیوں کی وجہ ہے ' قاضی کو ئے''کا نام شہرت پذیر ہوا۔

خاندان کے بعض افرادگلاب سنگھ اور زبیر سنگھ والیان کشمیر کے ہاں بھی معزز عہدوں پر فائز رہے، ان میں از سرنو دینی ذوق و شیفتگی کا آغاز قاضی نظام الدین (بن قاضی قمرالدین بر فائز رہے ہان میں از سرنو دینی ذوق و شیفتگی کا آغاز قاضی نظام الدین (بن قاضی قمرالدین بن قاضی بدر الدین) سے ہوا جنہیں سید امیر حیدر (۱) شاہ صاحب خان پوری ہزاروی (۱) مولانا سیوعبداللہ فزنوی کی ذات گرای کو قوشرت عام عاصل ہا دران کا خاندان آج بھی علوم کتاب وسنت کا متاز مرکز ہے، لیکن سید امیر حیدر شاہ کو بہت کم نوگ جائے ہیں، خان پور ککھوال شلع راد لہذی ان کا آبائی مسکن تھا، ایک دوز شکار کھیل کروائیں آئے تو ایک کنز بارے نے سب باتی حاشیدا محل صفح پر

ے عقیدت ہوگئی تھی۔ پھرسید موصوف کی وساطت سے مولا ناعبداللہ الغزنوی سے رشتہُ ارادت استوار ہوگیااور خاندان کے اکثر افراد جماعت اہل حدیث میں داخل ہوگئے۔

انگریزی حکومت سے بیزاری اور لا تعاون کاسلسلہ پہلے ہی سے جاری تھا، امیر حیدر شاہ اور مولا ناعبد اللہ الغزنوی کی صحبت نے ڈوگروں کی ملازمت سے بھی کرا بہت کا جذبہ بیدار کر دیا اور اہل خاندان نے زراعت کے علاوہ طبابت کو ذریعہ معاش بنالیا - میراخیال ہے کہ قاضی نظام الدین ہی کے عہد میں جماعت مجاہدین سے اک گونہ ربط وضبط بیدا ہوگیا ہوگا، کیکن خاندان کے جن افراد کا تعلق حکومت کی دارو گیر کے سلسلے میں منظر عام پر آیا وہ دو تھے: ایک قاضی عبد الرؤف (ابن قاضی محمد حنیف بن قاضی قطب الدین بن قاضی رکن الدین بن قاضی عبد اللہ بن بن قاضی بدر الدین بن قاضی بدر الدین)۔

ان دونوں نے اعانت مجاہدین کی تحریک میں نمایاں حصد لیا اور میرے اندازے کے مطابق دونوں ۲۰۱۰ء ۱۹۰۰ء سے گرفتاری (جون ۱۹۲۰ء) تک انتہائی سرگرمی کے ساتھ کام کرتے رہے، یہاں تک کہ اسمست بھی گئے۔ میں مجھتا ہوں کہ خاندان کے دوسرے افراد بھی بہر حال ان کے شریک و معاون ہوں گے، اگر چہان کی گرفتاری کے بعد کسی دوسرے کے ربط قعلق کا اثبات قرین دانشمندی نہ تھا۔

مقدمے کی کیفیت

مقد ہے کی سرسری کیفیت میہ ہے کہ کار کنانِ جماعت مجاہدین میں سے جار پانچ

م فرشته شخیکا بقیدهاشید کهافی دابیشه جایئی ، انهول نے پر داوند کی ، دوسرے دوز بھی بھی ہوا، تیسرے دوز اس نے محوز کے کاباک پکڑلی اور اتار لیا مصافی کرتے ہی شکار کاشوں فتم ہو گیا، و ہیں تغیر گئے ، چندروز کے بعد کنز ہارائبیں سوتا چھوڑ کر چلا گیا۔ بھربیا ہی رہنما کی تلاش میں مولا ناغلام رسول قلعہ میہاں شکھ دالے کے پاس مگئے اور ان سے فیض عاصل کر کے درجہ کمال میر ہنچے۔ (سوائح میات ، ص: ۱۳۳۱–۱۳۳۲) افراد یعنی پیقوب درویش، محد حسین عرف محد عمر، سلیمان عرف ایوب، غلام محمد عرف محد، امراد یعنی پیقوب درویش، محد حسین عرف محد عرف اور کارتوس یا عستان سے لائے، بیمولا نابشر اور مولوی یوسف (۱) نے مرکز اسمست سے بھیج متے اور ہدایت کردی تھی کہ مولوی فضل اللی وزیر آبادی کودید ہے جا کیں، بیسب چیزیں بطورامانت لو ہے کے ایک صندوق میں بند کر کے قاضی کوٹ میں قاضی عبد الرؤف کے مکان کی ایک کوٹھری کے اندر ذمن کردی گئیں۔

کارجون ۱۹۲۰ء کوعلی مجمد کانسٹبل متعینہ فیروز پورشج کے جارساڑھے چار ہج ملتانی درواز ہے کو کھول کرامرتسری دروازہ کھو لئے کیلئے جارہا تھا، قصوری درواز ہے کو جواب نہ ملا، پھر اس نے دیکھا کہ ایک آ دی گھیت میں بیٹھا ہے، آ واز دی کون ہے؟ پھر جواب نہ ملا، پھر آ واز دی اور کانسٹبل اس آ دی کی طرف گیا، آ دی نے اشحے ہی پستول چلایا، لیکن گوئی علی محمد کے پاس سے فکل گئ، اس نے دوسری مرتبہ پستول چلانا چاہا، نہ چل سکا، اس اثنا میں ایک شخص نے پیچھے ہے آ کر پستول چھین لیا، آ دی پکڑا گیا تو اس نے پچھے ہے آ کر پستول چھین لیا، آ دی پکڑا گیا تو اس نے پچھے ہے آ کر پستول چھین لیا، آ دی پکڑا گیا تو اس نے پچھے ہے آ کر پستول چھین لیا، آ دی پکڑا گیا تو اس نے پچھے ہے ان کارکر دیا۔ جب محکمہ پولیس نے پرانے کاغذات دیکھ کر فیصلہ کیا کہ پیشخص ڈیکٹی کی تین مختلف وارداتوں کا مفرور اوراشتہاری بحرم ہے تو اس نے بتادیا کہ میر انام احمد ہے، خان بہادر کے نام سے مشہور ہوں، بھاعت بجابہ بن کا کام کرتا ہوں، میر ہے والد کا نام باناں ہو اس نے بتادیا کہ بیشی ہوں، موضع مہت تھانہ جلال آ بادشلع فیروز پور کا باشندہ ہوں، میں اور میر سے فلال فلائ ساتھی مرکز مجابد بن سے اسلی ہے کر آ نے اوروہ اسلی قاضی عبدالرؤ ف کے گھر میں دئن ہے۔

(۱) پیمولوی بوسف وی ہیں جنہوں نے مدت بعد امیر نعت اللّٰہ کو آل کیا اور خود موقع پر مارے گئے ، میں نے عرف کے طور پرکار کنول سکے دونام ککھے ہیں جوانہوں نے جماعت بچاہ بن میں پہنچنے کے بعد اختیار کر لئے تھے۔ ابتدائی نام ان کے اصل نام ہیں۔ اس کے بعد حسب ہذایت گوجرانولہ کی پولیس نے قاضی عبدالرؤف کے گھر کی وربندی کرلی، اس ہے ہتھیاروں کے متعلق بوچھا گیا تو اس نے انکار کردیا، لین اجمد عرف خان بہاور نے قاضی عبدالرؤف کے سامنے اپنابیان و ہرایا تو اقراروا قبال کے سوا عبدالذہ می دُن شدہ صندوق نکالا گیا، خان بہاور کے علاوہ قاضی عبدالرؤف اور قاضی عبدالذہ می گرفتار ہو گئے۔ مولوی فضل اللی ، محد حسین عرف محمد عمر، سلیمان عرف ایوب، غلام محمد عرف محمد کا اس وقت کوئی بتا نہ تھا، قاضی عبیداللہ کو سلطانی گواہ بنالیا گیا، ان کے اور احمد عرف خان بہاور کے بیانات سے اکثر کارکنوں کے ناموں کا علم ہوگیا، ان سب کو گرفتار کر کے مقد مے میں کھانے کی کوشش کی گئی، مثلاً خواجہ عبدالعزیز وفتر اکاؤنٹینٹ کے مولوی اللی بخش بمبانوالہ ہے ، محمد رمضان ، مستری ابراہیم اور حافظ عنایت اللہ اثری خطیب جامع اہل حدیث گجرات وزیر آباد ہے ، حاجی بشیرالدین جوتے والے اور خلیفہ خطیب جامع اہل حدیث گجرات وزیر آباد ہے ، حاجی بشیرالدین جوتے والے اور خلیفہ اسحاق دیلی سے گرفتار ہوکر آئے ، ان حضرات نے بہت تکلیفیس اٹھا کیس کین شرکت جرم کا کوئی ثبوت نہ ملئے کے باعث رہا کردیے گئے۔

بعض تعجب انكيزامور

اس مقد ہے کے سلسلے میں بعض امور سراسر حیران کن ہیں ،مثلاً: ۱- احمد عرف خان بہادر نے جوالک مخلص کار کن تھا کس بنا پر گرفآر ہوتے ہی تمام راز افشا کردیے؟

۲- قاضی عبید الله کے مخلص اور صادق العبد ہونے میں کلام نہ تھا، وہ اس سے پیشتر بھی ایک مرتبہ مولوی فضل اللی کے زماند اسیری میں موصوف سے خط و کتابت کے باعث گرفتار ہو چکے تھے اور کم وہیش سولہ سال تک جماعت کا کام انجام دیتے رہے تھے۔ انہوں نے اس وجہ سے سلطانی گواہ بنا منظور کرلیا؟ اس سے بھی زیادہ عجیب بات یہ ہے کہ ان کے اقبالی بیان سے کسی

دوسرے ملزم کونقصان پہنچتا یا نہ پہنچتا، کیکن ملزموں میں قاضی عبد الرؤف بھی شامل ہے، جوقاضی عبید اللہ کے بہنوئی بھی شامل ہے، جوقاضی عبید اللہ کے بہنوئی بھی ہے، کیا قاضی عبید اللہ کو بید خیال نہ آیا کہ اپنے استے قریبی رشتہ دار کے خلاف ایک سکتین الزام کے اثبات میں حکومت کا معاون بننا کسی حالت میں بھی مناسب نہیں؟

۳- اس مقدے میں استغاثے کی طرف سے شہادتیں دینے والے بعض وہ حفرات تھے جو جماعت کے سرگرم کارکن رہ چکے تھے، مثلاً تاج محمد عرف فقرائلد، الله دتا عرف عبدالحکیم، مولوی دئی محمد حب ساکن فتو می والا بھی گواہان استغاثہ ہی میں شامل تھے، حالا تکہ وہ سولہ سترہ سال دعوت جہاد کی مشعل کئے پنجاب کے مختلف اصلاع میں دورے کرتے اور مسلمانوں کے سینوں میں دین میں شامل ہوئے تھے۔ سینوں میں دین میں شامل ہوئے تھے۔

ميرااندازه

بادی النظر میں ان امور کے متعلق کوئی اطمینان بخش اور دل پذیرتو جیہ ذہن میں نہیں آتی ،احمد عرف خان بہاور کے متعلق کوئی اطمینان بخش اور دل پذیرتو جیہ ذہن میں ہیں آتی ،احمد عرف خان بہاور کے متعلق کے بہت خاص ہتھکنڈ وں سے کام لے کر اسے تعلق کا اسے تین تعلین وار داتوں کا مسلمہ بحرم قرار دی ایا تو اس نے مجھا کہ اپنے آصلی تعلق کا اعتراف کر لے خواہ اس کا نتیجہ بچھ ہو، اور ان الزامات سے بچ جائے ، جن سے اسے کوئی واسطہ نہ تھا۔ جب جماعت مجاہدین سے تعلق کا اقرار کر لیا تو پولیس نے باقی راز بھی واسطہ نہ تھا۔ جب جماعت مجاہدین سے تعلق کا اقرار کر لیا تو پولیس نے باقی راز بھی انگوالئے ، قاضی عبیداللہ کے سامنے احمد خان بہادر کا اقبالی بیان آیا تو انہوں نے بچھ لیا کہ اب انکار یاسکوت بالکل بے سود ہے، لہذا جو پچھ معلوم تھا صاف صاف بتا دیا۔

باقی تین امحاب کی حیثیت خان بهادراورقاضی عبیداللہ ہے محتلف ہے، وہ خاص تصورات کی بناء پر جماعت مجاہدین سے وابسۃ ہوئے تھے جوامیر عبداللہ اور انہیں اسمست میں کے عہد تک بالکل بجاودرست تھے۔ بیز مانہ گذر چکا ، نیادور آیا اور انہیں اسمست میں طویل قیام کاموقع ملا، تو دیکھا کہ جوتصورات انہوں نے قائم کرر کھے تھے وہ ہرگز درست نہ تھے، اس طرح ان کے دل ٹوٹ گئے اور یقین ہوگیا کہ جو پچھانہوں نے کہااور کیا تھاوہ سراسر غلط تھا، وہ ''بروتقوئ' کے لئے قربانیاں کرتے اور قربانیوں کی طرف وعوت دیتے وہ سراسر غلط تھا، وہ ''بروتقوئ' کے لئے قربانیاں کرتے اور قربانیوں کی طرف وعوت دیتے وہ براسر غلط تھا، وہ ''بروتقوئ' کے ایم قربان کا سے تعاون پر منتج ہوا۔ اس وجہ سے وہ جماعت کی کی مصلحت میں انہیں جماعت کی کی مصلحت سے کوئی دلچیں نہ ہو تی تھی، بلکہ یوں سمجھنا چاہئے کہ وہ اپنے خیال کے مطابق ایک شدید سے کوئی دلچیں نہ ہو تھی، اور اس کی خلافی کی صورت بہی تھی کہ تمام اصحاب کواس سے گناہ کے مرتک ہوئے کی امکانی کوشش کرتے ، چنانچے انہوں نے برتکلف مخالفانہ بیان دید ہے۔

يبشيال اورسزائيس

مقدمه ابتدائی تحقیقات کیلئے خان نیائے بھٹریٹ درجہ اول، گوجرانوالہ کی عدالت میں چیش ہوا، اس میں بہت سے اصحاب نے استفاثے کی طرف سے شہادتیں ویں، ہمارے نزدیک سب سے بڑھ کر دلچپ شہادت میر فضل امام انسپکٹری آئی ڈی کی تھی۔ انہوں نے فرمایا کہ بیمقدمہ ایک بہت بڑی اور وسیع سازش کا جزو ہے، جس میں بہت سے اصحاب شامل ہیں، مثلاً: امیر امان اللہ خاں (فرمانروائے افغانستان)، جزل تاور خال (جو بعدازال نادر شاہ کے لقب سے فرمانروائے افغانستان سے)، مولوی عبدالرجیم عرف محمد بشیر، مولانا عبید اللہ سندھی، مولوی یعقوب جو مجاہدین چرکنڈ میں شامل ہے، عرف عرف محمد بشیر، مولانا عبید اللہ سندھی، مولوی یعقوب جو مجاہدین چرکنڈ میں شامل ہے،

ملانجیم (۱) ،عبدالصمدعرف پیرمحمد (چرکنڈ) ، ذوالقرنین عرف کرم البی (چمرکنڈ) ،امیر نعت الله(امیرمجاہدین)وغیرہ۔

سالارد تمبر ۱۹۲۰ء کوخان غلام حسن خال نے ملزم بیشن سپر دکر دیے ۱۹۲۰ رجنوری سے رائے بہادر گنگارام سیشن جج کی عدالت میں ساعت شروع ہوگئی، قاضی عبد الرؤف کی طرف سے شخ دین محمد وکیل تھے، ۲۱ راپریل ۱۹۲۱ء کوسیشن جج نے بیشکم سنایا:

۱- احمر عرف خان بهاور ، زیر دفعه ۱۳ بی ۳۰ تعزیرات بهندسات سال قید می انداور زیر دفعه ۲۰ قانون اسلح سات سال قید ـ

۲- قاضى عبدالرؤف زير دفعه ۱۲۰ بي ۳۰۰ تعزيرات بند چارسال قيد،
 چارسور و پيي جرمانداورزير دفعه ۲۰ قانون اسلحه چارسال قيد.

ہائی کورٹ میں اپیل کی گئی، اراگست ۱۹۲۱ء کوجٹس مارٹینو نے فیصلہ سنایا، سزائیس بحال رکھی گئیں، لیکن میں کم دیدیا کہ قید کی دونوں سزائیس بیک وقت شروع ہوں، چنا نچہ احمد عرف خان بہادر سات سال کی سز اپوری کر کے رہا ہوا اور غالبًا • ۱۹۵ء میں وفات پائی۔ قاضی عبد الرؤف بعد انقضائے سزا رہا ہوئے، آج کل چک (۴۹) مجاہد آباد (ڈاک خانہ لودھرال ضلع ملتان) میں سکونت پذیر ہیں۔ مولوی فضل الہی نے اٹھائیس مربعے زمین ان اصحاب کیلئے حاصل کی تھی جنہیں تحریک مجاہدین کے سلسلے میں نقصان پہنچا تھا، ان میں سے دومر بعے قاضی صاحب موصوف کو دیے گئے، اکاسی بیاسی سال کی عمر نے سے معذور ہیں۔ سال کی عمر نے سے معذور ہیں۔ سال کی عمر نے سے معذور ہیں۔

محمد حسین عرف محمد عمریشاور میں گرفتار ہوا، وہاں سے سات سال کی سزا ہوئی، پھرزیر غور مقدمے میں اسے چود وسال کی سزادی گئی، اسکے حالات پہلے پیش کیے جاچکے ہیں۔

⁽۱) معلوم ند ہوسکاید کن صاحب کی طرف اثنارہ ہے، میراخیال ہے، کداس سے مراد بلائجم الدین عرف ملا صاحب ہڈاہیں، حالا تکدموصوف اس سے پیشتر واصل بہتن ہو یکے تھے۔

قاضى عبدالرؤف كابيان

میں نے شخ الحدیث مولا نامحہ اساعیل اور قاضی تھیم عبدالرحیم صاحب کی عنایت سے مقدمہ قاضی کوٹ کی شلیس دیجے لی تھیں، مجھے ان میں قاضی عبدالرؤف اورخان بہاور کے بیانات نہ ملے، اب قاضی عبدالرؤف سے پورے واقعات معلوم کر لیے، اس بیان سے بعض ایسی با تیں روشنی میں آئیں جو پہلے معلوم نہ تھیں وہ خلاصہ ویل میں درج ہیں:

ا- اسلحہ قاضی عبیداللہ کے پاس بھیج گئے تھے، وہ سرگودھا میں تھے،
قاضی عبدالرؤف نے والوں کو قاضی عبیداللہ کے مہمان سمجھ کرکھا نا کھلایا،
تواضی عبدالرؤف خواہش کے مطابق مولا نا فضل النی کو وزیر آباد بلوادیا، خود قاضی عبدالرؤف کو اسلحہ وغیرہ کا ایک وقت تک کوئی علم نہ تھا۔

۲- وہ مولوی فضل اللی کے ہاتھ پر بیعت امارت کر چکے تھے، مولوی فضل اللی نے ہاتھ پر بیعت امارت کر چکے تھے، مولوی فضل اللی نے قرآن پر ہاتھ رکھوا کر بیعت کی تصدیق کرائی، پھراسلی کے متعلق بتایا اور قاضی عبد اللہ بھی آئے ہوئے تھے لہذا ازاں مزید بم آئے، اس وقت قاضی عبید اللہ بھی آئے ہوئے تھے لہذا عبدالرؤف اور عبیداللہ دونوں نے یہ بم بھی صندوق میں رکھ دیے۔

۳- خان بہادری والدہ پیارتھی، وہ مولا نافضل الہی سے پانچ سورو ہے لیکر فیروز پورچلا گیا اور وہاں پکڑا گیا، تفصیل وہی ہے جواو پر پیش کی جا چک ہے۔
۳- جیسا کہ عرض کیا جا چکا ہے، خان بہادر نے گرفتاری کے بعد سب کچھ بتادیا اور سرکاری گواہ بننے کی کوشش کی، یہ واقعہ قاضی عبید اللہ اور قاضی عبدالہ واختلاف عبدالرؤف دونوں کیلئے اس طرح اچا تک پیش آگیا کہ آئیں انکار واختلاف کی شخوائش نظر نہ آئی ۔ عکومت نے سوچ سمجھ کرقاضی عبید اللہ کوسرکاری گواہ بتالیا اور معافی کا وعدہ کرلیا۔

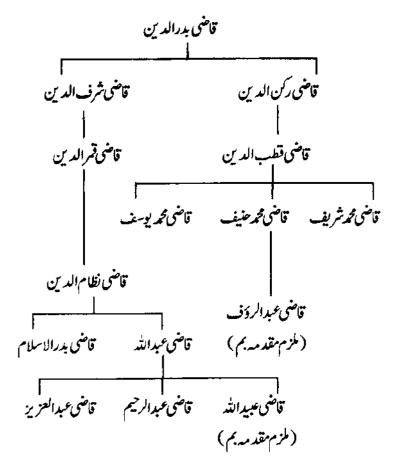
۵- قامنی عبدالرؤف خودگرفتار ہو چکے تصلیکن انہوں نے مولا نافضل اللہی کو بروقت پیغام بھیج دیا اور وہ نیج کر سرحد آزادیش پہنچ گئے۔

ایک اہم معاملہ

قاضی عبدالرؤف نے جوسب سے بڑھ کراہم اور بطور خاص تو چہ طلب بات بتائی،
یتھی کہ مولا نافعت اللہ امیر جماعت مجاہدین نے ایک بم اسی سائز اور رنگ کا انگریزوں
کے حوالے کردیا تھا جیسے بم قاضی کوٹ بھیج گئے تھے، یہ بم بطور ثبوت بھیجا گیا تھا اور سرحد
سے ایک انگریز افسر نے آ کراسے عدالت میں پیش کیا۔ شیخ وین محمد نے محمد حسین وغیرہ
کے علاوہ قاضی عبد الرؤف کی و کالت بھی احسن طریق پرکی، غالبًا امیر لعمت اللہ کا بم
عدالت میں پیش ہونے ہی کی بناء پر مولان فضل اللی نیز ان کے بعض رفیقوں اور امیر
صاحب کے درمیان مخاصمت کا آغاز ہوا، یہاں تک کہ اسی وجہ سے امیر صاحب بالآخر
قتل ہوئے۔

قاضی عبد الرؤف نے اپنی طرف سے مولا نا ثناء اللہ مرحوم امرتسری اور مولا نا محدابرا ہیم مرحوم میرسیالکوٹی کوبھی بہ طور گواہ چیش کیا، جیسا کہ اوپر بتایا جا چکا ہے قاضی صاحب کومختلف دفعات کے ماتحت چار چارسال قیداور چارسور و پے جریانے کی سزا ہوئی تھی، ہائی کورٹ نے قید کی دونوں سزائیس بیک دفت شروع کرنے کا تھم دیا، چنانچہ قاضی صاحب سزایوری کرکے اکتو بر ۱۹۲۴ء میں رہا ہوئے۔

خاندان قاضيان كاشجرة نسب



تيسراباب:

مولا ناعبدالقادر قصوري

مولا ناعبدالقا درقصوري

اب ہم ان اربابِ عزیمت کے حالات پر پہنچ گئے ہیں جنہوں نے ملک کے اندررہ کر جماعت مجاہدین کا کام کیا یاوہ ترک وطن کر کے مرکز میں پہنچے اور دہاں پچھ مدت گزار کر والیں آگئے یا باقی عمر باہر ہی گزاری یا دوسرے مشاغل کے باوجود جماعت مجاہدین کے والی آگئے یا باقی عمر باہر ہی گزاری یا دوسرے مشاغل کے باوجود جماعت مجاہدین کے کام کوتقویت پہنچائی۔ ان سب کے اساء واحوال ہے آگا ہی نہ ہوسکی اور فی الحال اپنی معلومات پیش کردیتے کے سوا جارہ نہیں ، اس سلسلے کا آغاز مولا نا عبد القادر قصوری سے کرتے ہیں۔

مولانا کے خاندانی حالات کا سرسری ذکر ان کے فرزندار جمند مولوی محم علی کے تذکر ہے ہیں آ چکا ہے اور ان کے اعاد ہے کی ضرور تنہیں ۔ مولانا کے والد مولوی غلام احمداور قلعہ میبال سنگھ کے مشہور بزرگ مولانا غلام رسول ہیں گہر ہے دوستانہ تعلقات تھے، چنانچے مولانا کی رسم بسم اللہ مولانا نظام رسول ہی نے اوا کی تھی ، دینیات کی تعلیم گھر پر پائی ، پھراور پنٹل کالج لا ہور میں داخل ہوئے ، اس زمانے میں اور پنٹل کالج کے طلبہ بھی اگریزی خواں طلبہ کے ساتھ امتحانوں میں میٹھ سکتے تھے، البتہ وہ جواب اردو میں لکھتے تھے۔ مولانا عبدالقادرامتحان میں سب سے اول نمبر پر آ کے اوراگریزی خواں طلبہ میں سب سے اول نمبر پر آ کے اوراگریزی خواں طالب علم اگریزی خواں طالب علم اگریزی خواں طالب علم اگریزی خواں طلبہ برچھی کوئی ان کے برابر نہ پہنچ سکا ہم محموں کو یقین نہ آ یا کہ کوئی اردوخواں طالب علم اگریزی خواں طلب علم اگریزی خواں طلبہ پرچھی سبقت لے جا سکتا ہے، پر پے واپس کئے گے اورامتحان وہ بارہ اگریزی خواں طلبہ پرچھی سبقت لے جا سکتا ہے، پر پے واپس کئے گے اورامتحان وہ بارہ وہ بارہ

ہوا۔ مولا نانے دوبارہ اول درجہ حاصل کیا اور انہیں سولدروی باہواری وظیفہ ملا۔ مولانا کا کمال ایٹار ملاحظہ ہوکہ وظیفے کی رقم پوری اپنے جھوٹے بھائی عبدالحق کی تعلیم کے لئے دے دیتے اور خوداس قلیل می رقم میں گزران کرتے جوان کے والد بھیجے ، قانون کا امتحان بھی اعز از سے یاس کیا۔

وكالت

وہ موج رہے تھے کہ کہاں وکالت شروع کریں ،اس دوران بیل قصور کا ایک مقدمہ مل گیا، غالبًا پانچ رویے اس کی فیس تھی ، مولا نا ایک آ دی کوساتھ لے کر قصور پنچے ، یہ خیال بھی تھا کہ دیکھیں قصور بیس وکالت شروع کرنے کے امکانات اچھے ہیں یانہیں ۔ مختفر سا سامان ہمراہ تھا بخصیلدار کے ہاں مقدے کی بیشی تھی ، فیصلہ مولا نا کے حق بیس ہوا۔ قابل ذکر واقعہ سے کہ تحصیلدار بہلے ہی مقدے میں مولا نا کی جرح من کر صددر جہ متاثر ہوا ، مقدے کے بعد انہیں تا کیدی مشورہ دیا کہ آپ قصور ہی میں تھم جا کمیں ماشاء اللہ بہت جلدتر تی کریں گے اور بہترین وکیلوں ہیں آپ کاشار ہوگا۔

یہ پیشگوئی درست ٹابت ہوئی ،مولا ناتھوڑی ہی دیر میں ناموروکیل بن گئے ، چنانچہ قصور ہی میں توطن اختیار کرلیا ، اسی مقام کی نسبت سے مشہور ہوئے ۔ جائیداد بھی خرید لی اور عالی شان مکان بھی بنالیا ، وفات کے بعداس سرز مین کی آغوش میں آسودگی پائی۔

وکیلوں اور بیرسٹروں کے خاص طبعی رجحانات ہوتے ہیں، بعض نو جداری میں کمال پیدا کر لیتے ہیں اور بعض دیوانی میں، مولا تا کا کمال بیتھا کہ وہ دیوانی وفو جداری دونوں میں کیسال درجۂ امتیاز پر پہنچ، آخر میں بیرحالت ہوگئ تھی کہ دور دور کے اصلاع سے لوگ آتے اورگراں قدرفیس دے کرانہیں ساتھ لے جاتے۔

بديثى اشياء سےاحتراز

وہ طبعاً سادگی پیند تھے، اگر چہ ، لی لحاظ ہے امیروں میں محسوب ہوتے تھے، ہزاروں روپے ہزاروں روپے ہزاروں روپے توی کاموں میں صرف کئے ، دوستوں کی ضانتوں میں ہزاروں روپ کا نقصان اٹھایا، وسترخوان پر ہمیشہ پانچ دس مہمان ضرور ہوتے، لیکن ان کا اپنا طریق بود و ماند ہرشم کے تکفات ہے پاک رہا، عربھی سادہ لباس پہنا، معمولی پاجامہ جس کی وضع نیم شلوار کی ہوتی تھی معمولی تھی، سردیوں میں گرم صدری اور کوٹ میں گرم صدری اور کوٹ میں گرم اللہ کا لیا کوٹ، سر پر معمولی ٹو پی، سردیوں میں گرم صدری اور کوٹ میں گرم صدری اور کوٹ میں گرم اللہ کوٹ، سر پر معمولی ٹو پی، سردیوں میں گرم صدری اور کوٹ مینتے تھے اور یاؤں میں گرگانی نمادیسی جوتا۔

بدینتی اشیاء نے پہلے بھی چندال دل بستگی نہتھی ، ابتدائی دور ہی میں ایک خاص واقعہ چیش آیا جس کے باعث بدلیثی اشیاء سے امکانی احتر از کا پختہ عہد کر لیا اور زندگی مجر اس عہد کے یابندر ہے۔

ان کے والد وقافو قا قصوراً تے رہتے تھے۔ وہ روزاند دل پارے تلاوت کرتے تھے۔ایک مرتبہ آئ تو مکان کے جن میں دو تخت بچھے ہوئے تھے، نماز فجر سے فراغت کے بعد وہ تلاوت کے لئے ایک تخت پر بیٹھ گئے ، دوسرے تخت پر مولانا مقد مات کی تیاری کرنے گئے،انہوں نے شمل بنانے کے لئے چاقو اٹھایا تو والد کی نظرا تفاقیہ اس پر گئی، پوچھا کہ کیسا چاقو ہے؟ مولانا نے عرض کیا کہ جرمنی کی ایک فرم راجرس کا بناہوا ہے اور ساڑھے سات آنے میں تر یوا ہے۔ یہ شنتے ہی والد ہوئے: کیا تنہیں اپنے ہما ہے کا اور ساڑھے سات آنے میں تر یوا تو دیتا ہے اور جب چاہوا سے سان پر لگوا کر تیز کرا سے ہو؟ سب لوگ باہر کے چاقو کون کراسکتے ہو؟ سب لوگ باہر کے چاقو ٹرید نے لگیں گئو اس ہما ہے کے چاقو کون خریدے گا،اوراسے کہاں سے روزی لے گئی

بس اس واقعے نے مولا تا کو بدیثی اشیاء سے مزید تنفر کردیا، چنانچہ بدیثی مال کے بائکاٹ کی تحریک بہاں جاری ہونے سے بہت پہلے وہ دلیں اشیا کا استعمال پابندی سے شروع کر چکے تھے۔

يگانهُ استقامت

بےمثال دیانت

مولانا پنجاب میں خلافت اور کا گرس کی تحریک کے روح رواں تھے، جب تک مجلس خلافت باتی رہی اسکے صدر رہے، اصابت رائے اور شانِ استقامت وایٹار کی بدولت انہیں آل انڈیا مجالس میں بھی عزت و تکریم کامتاز درجہ حاصل تھا، اس مدت میں سیکڑوں مرتبہ انہیں دور دراز کے سفر دل اور دورول کی ضرورت پیش آئی، اصلاع پنجاب کے دور ہے تو بہ کشرت ہوتے رہے، ابتداء میں دہ اپنا اور رفیقول تک کا کرایہ اپنی جیب سے ادا کرتے تھے، جب مالی حالت زیادہ اچھی ندر ہی تو اس وقت بھی اپنے سفریا دوسرے مصارف کا بارخلافت یا کا تکرس پر بھی نہ ڈالا ، نہ کسی بھی شکل میں ان مجالس کے سرمایوں سے بھی کوئی بردی یا چھوٹی رقم وصول کی۔

انہیں اکثر لا ہور آٹا پڑتا اور بعض اوقات کی کی دن یہاں تھہرتے ، دن جرقو می کام کرتے ، بیبیوں مہمانوں کیلئے دفتر خلافت میں کھانا تیار ہوتا ، مولا ناصبح کی نماز سے فارغ ہوتے ہی اپنے بھائی مولوی عبداللہ کے مکان سے دفتر میں بھنچ جاتے ، اپنے بیبیوں سے موسم کا کوئی میوہ اور دود در منگوا کر ناشتہ کر لیتے ، دونوں وقت کا کھانا اپنے بھائی کے ہاں کھاتے ، مجلس کا کھانا مجھی نہ کھایا ، حدیہ ہے کہ دفتر میں بیٹھے بیٹھے کوئی واتی خط کھنے کی ضرورت بیش آتی تو کاغذا ورلفا فہ بھی دفتر سے نہ لیتے ، اپنے بیبے دیکر باز ارسے منگواتے۔

وزارت کی پیشکش

رج کیلئے گئے تو سلطان عبد العزیر آل سعود سے اصلاح نظام حکومت کے متعلق مفصل گفتگو ہوئی، سلطان مولانا کی بات چیت سے اتنا متاثر ہوا کہ اصرار کیا کہ جاز میں وزیریا مشیر کا عہدہ قبول فر مالیں، مولانا نے صاف انکار کردیا، واپس آئے تو ایک مرتبہ عزیز وں اور دوستوں کی مخضری مجلس میں حالات سناتے ہوئے اس بات کا ذکر فرمایا، سب نے بالا تفاق کہا کہ اس پیشکش کو قبول کر لینے میں کیا مضا گفتہ تھا، بہر حال بیا ایک اسلامی مملکت کی خدمت تھی، بیرائے پیش کرنے والوں میں ان کے فرزند مولوی محمطی اسلامی مملکت کی خدمت تھی، بیرائے پیش کرنے والوں میں ان کے فرزند مولوی محمطی بھی تھے۔ مولانا نے جواب دیا:

سنو محرعلی! مجھے خدمت قبول کر لینے کا مشورے دیتے ہوتو پہلے میرے

لئے تمن ہزار روپے ماہوار کامستقل انظام اپنے پاس سے کردو، ہیں واپس جا کر خدمت اپنے ذے لے لیتا ہوں، لیکن سلطان سے شخو اولیکر خدمت کرنا میرے لئے ممکن نہیں۔اسلام وسلمین کی بہتری یا کمکی مصالح کے پیش نظر جو پھرے لئے ممکن نہیں۔اسلام وسلمین کی بہتری یا کمکی مصالح کے پیش نظر جو پھر ضروری ہوگا ای صورت میں سلطان سے صاف صاف کہ سکول گا جب اس کا یا اسکی حکومت کا کوئی احسان مجھ پر نہ ہوگا۔ ور نہ ہوسکتا ہے کہ حق گوئی اور حق نمائی کے بجائے صرف اپنی ملازمت کی حفاظت میر انصب العین رہ جائے۔ اس طرح خدمت کا حقیق شرف کیوں کر قائم رہ سکے گا؟ یا آج خدمت قبول کر لینے کا بتیجہ یہ ہوگا کہ کل اے جھوڑ نا پڑے،اصل مقصد یوں بھی یورانہ ہوگا۔

اعانت بحامدين

انہوں نے ملکی اور سیاسی کاموں میں جس سرگرمی ، انہاک اور جوش ہیت ہے حصہ لیا اور جو جو کارنا ہے انجام ویے ، ان کی تفصیل پیش نظر کتاب کے موضوع سے خاری ہے ، پہوالات تفصیل ہمارے عہد کی سیاسی تاریخ میں بیان ہوں گے جو اس وقت زیر تالیف ہے۔ یہاں صرف یہ بتانا ضروری ہے کہ مولا نا اپنی زندگی کے ابتدائی دورہی میں جماعت بحاجم ہوگئے ہے ، وہ اپنی آ مدنی کا خاصا حصہ اس کام میں صرف کرتے ہے اور ان کے پاس جماعت کے کارکن بھی آتے رہتے تھے۔ جولوگ بجرت کے آرزومند ہے وہ بھی مشورے کیلئے مولا ناکے پاس جہنچتے ہے اور اب تک ایسے اصحاب موجود جیں جومولا ناکے تامی کو سرحد آزاد میں پہنچاتے رہے۔ مولوی محمد موجود جیں جومولا ناکے تامی کرتے ہے ۔ والدمحر م موجود جی مرحوم نے دو تین مرتبہ ذکر کیا کہ میری عمر زیادہ نہتی جب والدمحر م مولوی محمد علی مرحوم نے دو تین مرتبہ ذکر کیا کہ میری عمر زیادہ نہتی جب والدمحر م

جاسكتا تفانكين مولانا كحضبط واحتياط كاابتمام ملاحظه بوكه حقيقت حال مبهى اييع عزيز

فرزندوں پر بھی ظاہر نہ ہونے دی، حالا تکہ انہیں تمام مشوروں میں شریک رکھتے تھے۔

مولوی محی الدین احد کوبھی ایسے کی واقعے یاد ہوں گے۔

ایک مرتبہ انہوں نے فر مایا کہ مولوی ولی محمد (ساکن فتوتی والے) میری موجودگ میں آئے اور والدمحترم سے کہا کہ اسنے پونڈ دے دیجئے (۱) میں ایک خاص رقم پوری کر کے مجاہدین کو بھیجنا چاہتا ہوں۔ مولا نانے غالبًا دومر تبہ خلافت کے سر مایے میں سے بھی خاصی بڑی رقم جماعت مجاہدین کو بھیجوائی تھی، غالبًا بیرقم کسی ایک فردیا مختلف افراد نے اسی غرض سے دی تھی۔

يبكرمحاس

مولانا کی صحت آخری دنوں ہیں اچھی ندرہی تھی، لیکن وہ کاموں ہیں گےرہے تھے، مشورے لینے والے دوستوں اور نیاز مندوں کو مشورے دیے خواہ مشورے ذاتی معاملات کے متعلق، جدردی اور لطف و نوازش کا بیہ عالم تھا کہ جو بھی ان کے پاس بہنے جا تا اس کے ہرکام ہیں ہمکن مدودیے، خواہ سیاسی و عوامی دائرے ہیں اس سے کتابی اختلاف ہوتا۔ وہ واحد ہزرگ دیکھے جنہوں نے سیاسی اختلافات اور ذاتی تعلقات کو جمیشہ الگ الگ رکھا اور اختلاف کی انتہائی شدت ہیں بھی ذاتی تعلقات کو جمیشہ الگ الگ رکھا اور اختلاف کی انتہائی شدت ہیں بھی ذاتی تعلقات کو اس شان سے نباہا گو یا بھی کوئی اختلاف پیش بی نہ آیا تھا۔ جن لوگوں نے تو می کاموں میں تکلیفیں یا نقصان اٹھائے تھے، ان کی بے صدقد رفر ماتے ، جب تک اپنی مالی صالت اچھی تھی اس طریق پران کی امداد کرتے کہ امداد لینے والے کے سوا آج تک کوئی اس سے آگاہ نہوسکا خور و فکر کے بعد جورائے قائم کر لیتے تھے اس پر مضبوطی سے کوئی اس سے آگاہ نہ ہوسکا نے ور و فکر کے بعد جورائے قائم کر لیتے تھے اس پر مضبوطی سے قائم رہے ، وسعت حوصلہ کا بیر بھی تھی کہ کا ختلاف رکھے والوں کی بھی قدر کرتے بھی کی کا ختلاف کی میں خور کی ان کیا، اپنی رائے قائم کر بھی قدر کرتے بھی کی کا ختلاف کے سوائی بھی فدر کرتے بھی کی کا ختلاف کے سو قائم رہے ، وسعت حوصلہ کا بیر بھی کھی کی اختلاف کو سو غلن پر حمل نہ کیا، اپنی رائے کے اختلاف کو سو غلن پر حمل نہ کیا، اپنی رائے کے اختلاف کو سو غلن پر حمل نہ کیا، اپنی رائے

⁽¹⁾ مولوی مجی الدین احر کوسیح رقم یادند تھی۔

ہر مجلس میں بے تکلف پیش کردیتے تھے، بھی کسی بڑے آدمی کی غیر مناسب رعایت ضروری نہ مجھی الیکن گفتگو کا طریقہ ایسا نہ تھا کہ کسی کوخواہ مخواہ دنج پیدا ہو، ہمیشہ رائے کو دلائل سے موثوق بناتے اور دوسر بے کے نقط کا گاہ کی تضعیف بھی دلائل سے کرتے۔ غرض سیاسی لیڈروں میں مولانا جیسا جامع اوصاف شخص بہت کم دیکھنے میں آیا۔

وفات

اگر چہ آخری دنوں میں سرگرم سیاسی مشاغل سے کنارہ کشی اختیار کر لی تھی، لیکن پوری زندگی وسیع دائر ہ احباب ورفقاء میں گزاری تھی، اس لئے لوگ بہ کشرت ان کے پاس آتے رہتے تھے۔ بیاری کاشد بددورہ اس زمانے میں ہواجب وہ اسپنے بھینچ ڈاکٹر جیند کے پاس رام پور گئے ہوئے تھے۔ ذرا طبیعت اچھی ہوئی تو لا ہور آگے اور اپنی فرزند ارجمند مولوی محمعلی بیرسٹر ایٹ لاکے پاس تھہر گئے، جواس زمانے میں لٹن روڈ پر رہتے تھے۔ طبیعت کرورضر ورتھی، اس لئے لیٹے رہتے تھے یا بھی چار پائی پرسہارا لے کر بیٹے جاتے ،لیکن یہ خیال نہ ہوسکتا تھا کہ دائی مفارقت کا وقت اتنا قریب آپنچا ہے۔ میں نے اس زمانے میں کئی مرتبہ گھنٹوں ان سے با تیں کیس۔ ۱۲ مرنومر ۱۹۳۲ء (۲ مرذی قعدہ میت کوقت و رہتے ہے کے دقت میں کئی مرتبہ گھنٹوں ان سے با تیں کیس۔ ۱۲ مرنومر ۱۹۳۲ء (۲ مرذی قعدہ میت کوقصور لے جاکر دفن کیا گیا۔

مولوي محى الدين احمه

مولاناعبدالقادر کے فرزنداکبر۱۸۸۹ء میں پیدا ہوئے۔ بی،اے پاس کر لینے کے بعد مولانا انہیں پیرسٹری کے لئے ولایت بھیجنا چاہتے تھے، انہوں نے اس پیشے پر ناپندیدگی کا اظہار کیا،ان کے چھوٹے بھائی مولوی محمطی ولایت گئے، کیمبرج سے ڈگری لینے کے علاوہ بیرسٹری کے لکچر بھی پورے کر لئے تھے،امتحان نددے سکے تھے، وطن آئے

اس ا ثناء میں جنگ بورپ چینز گئی اور بیرسٹری رہ گئے۔

محی الدین احمد نے مجھ مدت لاء کالج میں گزاری، انہوں نے خود ایک مرتبہ بہ طور لطیفہ سنایا کہ ہم دونوں بھائیوں میں سے کوئی بھی آبائی چشے کے قابل نہ بنا، حالانکہ والد محترم کی خواہش بہی تھی ۔ ایک مرتبہ کسی عزیز کے ہاں بیٹھے ہوئے تھے، اتفاقیہ بہی مسئلہ زیر گفتگو آگیا، خواجہ حافظ کا دیوان سامنے پڑا تھا، میں نے بطور تفنن اس میں سے فال نکالی تو بہ شعر فکلا:

چند به ناز پرورم مهر بتانِ سنگ دل یادِ پدرنے کنندایں پسرانِ ناخلف میں نے آخری مصرع والدمحتر م کے سامنے بدل کریوں پڑھا: "کار'' بپدرنے کنندایں پسرانِ ناخلف

اورکہا کہ لیجئے خواجہ حافظ بھی ہمارے ہم رائے ہیں، والدصاحب مسکرا کر خاموش ہوگئے۔

مولا ناکےسب سے چھوٹے فرزند محمود علی نے بیرسٹری کا امتحان پاس کیااور آج وہ ممتاز ترین وکلاء میں شار ہوتے ہیں۔

اخبارنو ليى اورنظر بندى

مولوی محی الدین احمد کچھ مدت متفرق مشاغل میں بسر کرنے کے بعد کلکتہ چلے گئے اور وہاں سے مولانا ابوالکلام آزاد کی سرپرتی میں ''اقدام'' کے نام سے ایک عالی شان روز نامہ جاری کیا۔ جنگ کا زمانہ تھا، مولانا آزاد کے لئے بنگال سے اخراج کا تھم جاری ہوگیا اور وہ رانچی چلے گئے۔ مختلف صوبوں کی حکومتوں نے اپنے اپنے علاقوں میں ''اقدام''کا داخلہ بند کر دیا۔ مولوی محی الدین احمد مجبور آا خبار بند کر کے وطن واپس آئے،

تصور ہے انہیں لا ہور بلا یا گیا اور آ نافا نا گرفتار کر کے لا ہور جیل میں بند کردیا گیا۔ پھری
آئی ڈی کے ایک افسر کے رو ہرو بیثی ہوئی ،اس نے چھوشتے بی کہا کہ ہمیں معتبر ذریعے
ہے سب بچر معلوم ہو چکا ہے ، اگر چ چ بتا دوتو خیر ، ورنہ بڑی سخت سزادی جائے گ۔
می الدین احمد نے بے تکلف جواب دیا کہ اگر آپ کوسب پچر معلوم ہو چکا ہے تو مجھ سے
کیوں پوچھتے ہیں؟ اگر میں کوئی بات آپ کی معلومات کے خلاف کہدوں گا تو ظاہر ہے
کیا تی ہمجھیں سے معتبر ذریعے سے حاصل کردہ معلومات کے خلاف ہے۔

وہ افسر بہت جزیز ہوا اور تھم دیا کہ جی الدین احمہ کے دونوں ہاتھ پیچھے کی طرف کر کے جھٹڑی لگا واورا سے تھر ڈکلاس ہیں سوار کر کے ہوشیار پورچھوڑ آ و اس جابرانہ تھم کی تھیل ہوئی ، جی الدین احمہ کے پاس نہ کوئی پیسہ تھا نہ کسی عزیز کو اطلاع تھی کہ کیا صورت حال چیش آئی، ہوشیار پور پہنچ تو تھم ہوا کہ انہیں دسو ہہ کا کلٹ لے دو، چتا نچہ بید رسو ہہ کا کلٹ کیا۔ دوسرے دوزان پہنچ، وہاں کے ہیڈ ماسٹر سے ملے، اس نے گر مجوثی سے استقبال کیا۔ دوسرے دوزان کے والد کو بھی اطلاع مل گئی اور انہوں نے ایک آ وی سامان دے کر دسو ہہ بھیج ویا۔ جنگ کا زمانہ مولوی می اطلاع مل گئی اور انہوں نے ایک آ وی سامان دے کر دسو ہہ بھیج ویا۔ جنگ کا زمانہ مولوی می الدین نے وہیں گڑ ارا، فروری ۱۹۹۹ء ہیں رہا ہوئے ، ان کی نظر بندی کے زمانہ ہیں مولانا عبد القادر نے چار پائی پرسونا ترک کر دیا تھا، ایک چہوتر سے پرصف بچھی رہتی تھی ، اسی پر لیٹ جاتے۔

قومی خدمات

قصور والیس آئے تو راؤلٹ ایکٹ کے سلسلے میں ہنگاہے شروع ہو گئے، ان بنگاموں میں مولانا عبدالقادر اور مولوی محی الدین دونوں گرفتار ہوئے، اس ابتلاء سے نجات ملی تو پونہ میں ایک یتیم خانے کا انتظام سنجال لیا، نیز جعیت دعوت و تبلیغ کی نظامت کے فرائض انجام دیتے رہے، اس دوران میں ان کے بھائی محم علی ایک بندھی رقم

ماہوارائنہیں دے دیتے تھے۔

یمی زمانہ ہے جب مولا ناعبدالقادر کے چھوٹے بھائی مولوی عبداللہ بھی دعوت و تبلیخ

کا کام کرتے رہے، یہی دور ہے جس میں ملیبار کے ماپلوں کے متعلق ان حضرات نے
عالی شان تعمیری کارنا ہے انجام دیے، لیکن ان کی تفصیل ہمار ہے موضوع سے خارج
ہے۔ مولوی محی اللہ بین احمداور مولوی عبداللہ دونوں بقدر فرصت مجابد بین کی خدمات بھی
انجام دیتے رہے، ان دونوں نے مولوی ولی محمد (فتوحی والا) کے ہاتھ پر بیعت جہاد بھی
کی تھی۔ غرض اس خاندان کے بیشتر افراد جماعت بجابد بین سے کم دبیش وابستہ رہے اور
کی تھی۔ غرض اس خاندان کے بیشتر افراد جماعت بجابد بین سے کم دبیش وابستہ رہے اور
فی ضدمات کی بجا آوری میں تو کسی نے بھی حتی الامکان کوتا ہی نہی۔ مولا ناعبدالقادر
نے حب دین اور عشق آزادی کا جو چراغ روشن کیا تھا اس سے خاندان کے ہرایک فرد
نے حب دین اور عشق آزادی کا جو چراغ روشن کیا تھا اس سے خاندان کے ہرایک فرد

چوتھاباب:

مولوي و لي محمه

ابتدائی حالات

صلع فیردز آپور میں دریائے تلج کے کنارے ایک چھوٹا ساگاؤں ہے'' فقوح والا''، مولوی ولی محمد یہیں کے رہنے والے تھے۔ ذات کے سندھوجاٹ تھے، والد کا نام اللہ دین تھا، ان کی پیدائش ۱۸۷۵ء کے آس باس ہوئی، اس لئے قاضی کوٹ کے مقدے میں گواہی دیتے ہوئے مولوی صاحب نے اپنی عمر پینتالیس سال بتائی تھی اور قاضی کوٹ کا مقدمہ ۱۹۲۱ء میں ہوا تھا۔

میں نے متعدد اصحاب سے بو جھا کہ مولوی صاحب نے کن کن اصحاب سے دینی تعلیم حاصل کی تھی ،کوئی کی جھے نہ تا سکا۔ مولوی محی الدین احمد قصوری صاحب فرماتے تھے کہ انہوں نے ذاتی مطالع سے دینی معلومات حاصل کی تھیں اور اندازہ ہے کہ وہ کوئی بورے عالم نہ تھے،ان کے پاس امام احمد بن عنبل کی مستدھی جومولوی محی الدین احمد کود سے دی تھی ،اس پر جا بجانشان کے ہوئے ہیں اور حاث ، برنوٹ بھی ہیں۔

انتہائی سادگی

ان کالباس بہت معمولی تھا، نیلے رنگ کا تہد باندھتے ، کھدر کا کرتااور کھدر کی پکڑی، سردیوں میں معمولی لوئی یا پٹواوڑھ لیتے ، مولوی محی الدین احداور ان کے عممحترم مولوی عبداللہ ایک مرتبدان سے ملنے کیلئے فتوحی والا پہنچے۔ ووفر ماتے ہیں کہ مولوی صاحب نے ایک نہا ہت سادہ مجد بنار کھی تھی، پچھ دیواریں اور اس پر معمولی حجمت، پاس اپنے رہنے کا ایک نہا ہت سادہ مجد بنار کھی تھی، پچھ دیواریں اور اس پر معمولی حجمت باس ایک کیا جمرہ تھا، ہم نے اطلاع کرائی تو آئے ہی پوچھا: کھانا تو آپ ضرور کھا کیں گے، تھوڑی دیر میس بھنا ہوا تھیہ لے آئے ، اس پر تجب ہوا کہ ایک ججموٹے سے گاؤں میں جہال کوئی باز ارنہیں ، اتن جلدی قیمہ کہاں سے عاصل کرلیا۔ مولوی صاحب نے خود فر ما یا کہ قربانیوں کے موقع پر میں اپنے جھے کا گوشت خٹک کر کے رکھ لیتا ہوں اور جب کوئی شہری مہمان اتفاقیہ آ جاتا ہے تو اس کی تو اضع میں صرف ہوتا ہے۔ با تیں بھی انتہائی سادگ سے کرتے تھے، ان میں عالمانہ شان کا شائیہ تک نہ ہوتا، لب واج بھی ٹھیلھے و یہاتی تھا۔

خدادادتا ثير

وعظ و تذکیر میں خدانے غیر معمولی تا شیر عطا کی تھی، جود نی حرارت ان کے قلب میں موجز ن تھی اسے سامعین کے داوں میں اتار دیتے۔ قاضی کوٹ کے مقد سے میں جن اصحاب نے گواہیاں دی تھیں، ان میں سے بیشتر اصحاب مولوی و لی محد کے مرید و معتقد سے ، ان سب نے بیان کیا کہ مولوی صاحب کے وعظ سے متاثر ہوکر انہوں نے اہل صدیث کا مسلک اختیار کیا اور انہیں کی تلقین سے وہ جماعت مجاہدین کے ساتھ وابست ہوئے۔ مولوی صاحب عموماً دور سے، کرتے رہے تھے، گوجرانوالہ ، سیالکوٹ وغیرہ اضلاع میں ہزاروں آ دمی ان کے ہم نوا بے ، ان میں سے ایسے بھی تھے جو مولوی صاحب کا تھی یا تے ہی گھریار چھوڑ کرنگل گئے اور اسمست یا چرکنڈ میں ہرتم کی خدمات صاحب کا تھی یا تے ہی گھریار چھوڑ کرنگل گئے اور اسمست یا چرکنڈ میں ہرتم کی خدمات انجام دیتے رہے ، اور ایسا کوئی بھی نے تھا جو با قاعدہ ذکو ق نہ نکالتا ہو، ذکو ق کی تمام رقمیں مولوی صاحب کے پاس یاان کے مقرر کئے ہوئے آ دمی کے پاس جمع کردی جا تیں اور وہاں سے سے جاہدین کے مراکز میں پہنچادی جا تیں۔

طريق وعظ وتذكير

وعظ بھی بہت سادہ طریق پر کہتے تھے،مولوی محمد اسحاق صاحب مدیر'' الاعتصام'' نے بتایا کہ عموماً جاریائی پر کھڑے ہو کرمجمعوں میں مفتلو کیا کرتے تھے۔ بین کر بے حد تعجب ہوا۔عموماً دیکھا گیا ہے کہ مقرر اور خطیب اپنی تقریروں میں تا تیرونفوذ پیدا کرنے كے خيال سے لباس بھى اچھا بہنتے ہيں اور جو بچھ كہنا ہوتا ہے اسے بھى بہلے ذہن ميں ترتیب دے لیتے ہیں، پھر ہرمطلب کوتقویت پہنجانے کی غرض سے دلچسپ وموزول مثالیں پیش کرتے ہیں،علاوہ بریں ان کے لئے تخت مجھتے ہیں اور ان برقالین جیمائے جاتے ہیں، مقصود یہ ہوتا ہے کہ سننے والے تقریر کے آغاز سے پیشتر ہی ایک حد تک متاثر موجائیں یا اس طرح ان کے جذب یذیرائی کوخوب بیدار کرلیا جائے۔مولوی ولی محمد کا ساراطریقداس کے برنکس تھا۔ کیا ہارے عبد میں کوئی مخص کسی ایسے مقرر وخطیب کووقع سمجھ سکتا ہے جومعمولی حاریائی پر کھڑا ہو کر مجمع کو خطاب کرے؟ مولوی و لی محمد کو تکلفات ے کوئی مناسبت نتھی ، تا ہم وہ جو کچھ کہتے دلوں میں اتار دیتے۔

ایک عجیب واقعه

مولوی محی الدین احمد نے ایک عجیب واقعہ بیان کیا کہ حارے عزیزوں میں ضلع سالکوٹ کے ایک صاحب تھے جمی نماز نہ پڑھی ادر کسی دین کام سے کوئی ولچیلی نتھی، سارا دن حقہ پیتے رہتے تھے۔ایک مرتبہ مولوی ولی محمر سیالکوٹ مگئے، بہت شہرت تھی کہ ان کی بات چیت بے حد پر تا ثیر ہوتی ہے۔ ہمارے عزیز کو بھی اس کاعلم تھا، چنانچہوہ تج بے اور امتحان کی غرض سے مولوی صاحب کے پاس سیالکوٹ پہنچا ،مولوی صاحب نے یوں بات چیت شروع کی ، کہ ہم تو ایسے آ دمیوں سے ملنا بھی پہندنہیں کرتے ، کھر آ ہستہ آ ہستہ مجھانے گئے، تھوڑی ہی دریمیں جارے عزیز کی بدیفیت ہوئی کہ آ تکھوں

ے بافتیار آنسو بہدرہے تھے، اس وقت توبد کی، وہ نہ صرف پکا نمازی بلکہ پکا تہجد خوال بن گیااوراس وقت سے تادم والیس حقے کومند ندلگایا۔

جماعت مجاہدین سے تعلق

بین معلوم ہوسکا کہ جماعت عجابہ بن سے مولوی صاحب کا تعلق کیوں کر بیدا ہوا؟
اغلب ہے کہ جماعت کے سی کارکن ہے اتفاقیہ ملاقات ہوگئ ہو، یہ بھی ممکن ہے کہ
اسلامی نظام کے قیام کی تجویزیں سوچتے سوچتے وہ مجابہ بن کی طرف راغب ہوگئے
ہوں۔انہوں نے قاضی کوٹ کے مقدے میں گواہی دیتے ہوئے بیان کیا کہ میں پہلی
مرتبہ انجمن صایت الاسلام کے بندرہویں سالانہ جلے پریاضتان گیاتھا، گویا یہ ۱۹۵ء کا
واقعہ تھا، جب ان کی عمر تقریباً میں سال کی ہوگ۔ اس وقت مولا ناعبداللہ مجابہ بن کے
امیر تھے اور ٹیلوائی میں جماعت کا مرکز تھا، اس کے بعد بھی وہ چند مرتبہ ضرور یاغستان
گئے،لیکن اندازہ میہ ہے کہ چندروز سے زیادہ قیام نہ رہا۔انہوں نے خود فر مایا کہ میں نے
کے بعد دیگر ہے تین امیروں کی بیعت کی،امیر عبداللہ سے قبلا قات کاذکر آ ہی چکا ہے،
اس کے بعد امیر عبد الکریم کے عہد میں بھی وہ گئے اور بیعت کی اور امیر نعمت اللہ کے عہد
میں انہوں نے خاصی کمی مدت مرکز میں گزاری۔

ملک کے اندرکام

سوال پیدا ہوتا ہے کہ دہ کیوں مرکز میں نہ تھہرے، اور بار بار واپس کیوں آتے۔ رہے؟اس کا سبب بالکل واضح ہے۔وعظ دیذ کیر کے ذریعے سے جماعتی کار و بارکوتقو بت پہنچانے کی ان میں خاص صلاحیت تھی، لہٰذا ان کا صحیح مقام یمی تھا کہ ملک کے اندر رہ کر روپے اور آ دمیوں کا ہند و بست کرتے ، انہوں نے ریکام یقیناً اسے اعلیٰ بیانے پر انجام دیا کہ چند ہوے ہو ہے اور متاز کارکنوں کو چھوڑ کر ، جیسے مولا نا ولا بت علی ، مولا نا عنایت علی وغیرہ، کوئی بھی مولوی ولی محمد کی برابری کا دعوی نہیں کرسکتا ۔ اگر بوروپ میں جنگ نہ چھٹر جاتی، ملک کے اندریا شالی و مغربی سرحد پر انگریزی حکومت کے نقطۂ نگاہ سے بعض تشویشناک حالات نہ پیدا ہوجاتے اور مولوی ولی محمد کو اطمینان و دلجمعی سے کام جاری رکھنے کا موقع مل جاتا تو یقین ہے کہ وہ مسلمانوں کی بہت بڑی جماعت کو جہاد کے لئے تیار کردیتے۔

هجرت

جنگ جھڑ جانے کے بعد یہاں دارو گیر شروع ہوئی تو مولوی صاحب کوہمی گرفآری کا اندیشہ لاحق ہوا، یا کم از کم بیدواضح ہوگیا کہ اب وعظ و تذکیر کا کام جاری نہ رہ سکے گا، چنانچ انہوں نے اپنے ارادت مندوں کو بھی ہجرت کا تھم دے دیا اورخود بھی وطن چھوڑ کر اسمست چلے گئے۔ وہ امیر عبداللہ اور امیر عبداللہ یم کے عہد میں جماعت مجاہدین کا جونقشہ دکھے بچکے تھے، امیر نعت اللہ کے عہد میں وہ باتی نہ رہا تھا، چنانچ اسمست پہنچ کر حالات مرا پا بدلے ہوئے دکھے تو دل پر چوٹ گی اور وہ حد درجہ پریشان ہو گئے کہ کیا کریں، مرا پا بدلے ہوئے و کیے تو دل پر چوٹ گی اور وہ حد درجہ پریشان ہو گئے کہ کیا کریں، جس مقصد کے پیش نظر انہوں نے اپنی اور ہزاروں مسلمانوں کی زندگیاں خطرے میں ڈالی تھیں اس کے لئے مجاہدانہ می وکوشش کا بہ ظاہر کوئی امکان نہ تھا، اس پر انہوں نے فیصلہ کرلیا کہ خوش نبی ہیں جس خوفنا کے خلطی کا ارتکاب کر بچے ہیں، اس کی تلانی کی کوئی تھیلہ کرلیا کہ خوش نبی ہیں جس خوفنا کے خلطی کا ارتکاب کر بچے ہیں، اس کی تلانی کی کوئی تدییرانتھیار کرنی جا ہے۔

مولوی محمعلی قصوری کابیان

سرحد پہنچ کرمولوی ولی جمد نے موی نام اختیار کرلیا تھا، مولوی جمع علی قصوری لکھتے ہیں کہ ان کے ساتھ ایک سو پنجا لی مجاہدین نے اجمرت کی تھی ، (۱) امیر نعمت اللہ نے انہیں (۱) خودمولوی صاحب نے اپنے بیان میں کہا کہ اجمرت کرنے والوں میں سے میرے مریدوں کی تعداد پھا گائی۔

اپنہ ہاتھ میں لینے کی غرض سے ایک خوبصورت لڑکی کے ساتھ نکاح کرادیا۔ چند ماہ بعد دوسرے نکاح کا انظام کردیا، پہلی بیوی کے بطن سے ایک لڑکا بھی پیدا ہو چکا تھا اور مولوی صاحب پوری طرح تابیلی کی زنجیروں میں جکڑے جاچے تھے، ان کیلئے امیر صاحب کی طرف سے معقول وظیفہ مقررتھا، و یہ بھی تمام کا موں میں ان سے مشورہ لیاجا تا تھا۔ (۱) معلوم ہوتا ہے کہ مولوی صاحب کے اکھڑے ہوئے دل کو جمائے رکھنے کی بید تدبیر یں کارگر نہ ہو کیس چنا نچے انہوں نے تنہائی میں مولوی مجمعلی تصوری سے کہا کہ امیر صاحب کو عورتوں سے شغف ہے، جہاد سے اعراض برتا جا رہا ہے، جماعتی سرمایہ ذاتی اغراض کیلئے بے دریخ استعال ہوتا ہے۔ جمھے تو شرم آتی ہے کہ چجاب میں اتنا جموٹا پرو پیگنڈ اکرتا رہا، یہاں آکر معلوم ہوا کہ پہلے خواب میں تھا اور اب آکھیں کھلی ہیں، کاش میں ہندوستان بی میں مارا جا تا اور یہاں نہ آتا، میر اایمان مترلزل ہورہا ہے، کیا گئی ہیں، کاش میں ہندوستان بی میں مارا جا تا اور یہاں نہ آتا، میر اایمان مترلزل ہورہا ہے، کیا گئی ہیں، کاش میں ہندوستان بی میں مارا جا تا اور یہاں نہ آتا، میر اایمان مترلزل ہورہا ہے، کیا گذہب ای کانام ہے؟

ساتھ بی اعتراف کیا کہ امیر نے شادیاں کرادیں، اچھی بیویاں ال تکئیں، ان کی بدولت اب دنیاوی زندگی سے آتی ول بنتگی ہوگی ہے کہ امیر کے خلاف زبان نہیں ہلا سکتا۔(۲)

جماعت سے علیحد گ

مولوی صاحب کی طبیعت تو عام حالات دیکھ کر بی بیزار ہو چکی تھی الیکن مجھ میں نہ آتا تھا کہ کیا وجہ پیش کر کے علیحدہ ہوں ، انہوں نے خود جو کیفیت بتائی اس کا خلاصہ بیہ کہ جماعت اسمست حضرت سید احمد کوشہید نہ مانتی تھی ، کہتی تھی کہ وہ غائب ہیں ، جب خراسان کی طرف سے امیر کابل انگریزوں کے خلاف علم جہاد بلند کریگا تو سید صاحب

امام مبدی بن کرظاہر ہوں گے۔ظہور کی تاریخ ۱۳۳۵ھ (۱-۱۹۱۱ء) بتائی گئی تھی۔ مولوی صاحب اسمست ہی میں تھے جب مولا نامحہ بشیر کا ایک مکتوب کا بل سے آیا، جس کامضمون میں تھا کہ جرمنوں اور ترکوں کا وفد کا بل میں پہنچا ہوا ہے، امیر کا بل ۱۳۳۵ھ میں ضرورا گریزوں سے لڑے گا، مجاہدین کو بھی تیار رہنا جا ہے تا کہ امیر کے ساتھ ہوجا کیں اور مفتو حدملک میں سے حصہ لینے میں بیچھے ندرہ جا کیں۔(۱)

است اسکا سال گذرگیا اور امام کا ظهور نه موا، جنگ یورپ بھی ختم ہوگئ اور امیر کا بل نے انگریزوں کے خلاف ایک قدم بھی نه اٹھایا۔ پھر امیر صبیب اللہ خال مارا گیا اور امان اللہ خال فر مانروائے افغانستان بنا، انگریزوں سے لڑائی چھڑی کیکن جلد صلح ہوگئی اور امام کے ظہور کا معاملہ پیش نہ آیا، بس اس بنا پر مولوی ولی محمد نے جماعت سے علیحدگ افتار کرلی:

واليسي

انہوں نے خود بیان کیا کہ میں نے امیر نعمت اللہ سے اس بارے میں گفتگو کی اور کہا کہ امام مہدی کے ظہور کی پیشگو ئی بالکل غلط اور جھوٹی ہے۔ تلخ کلامی بھی ہوئی ،اس کے بعد مجھے یہی مناسب معلوم ہوا کہ اسمست سے نکل جاؤں۔

چنانچہ وہ نگل کرسب سے پہلے ریاست امب کے علاقے میں پنچے جوسر حد آزاد سے متصل تھا، اور اسمست سے بیعلاقہ زیادہ دور نہ تھا، وہاں سیدعبد الجبار شاہ ستھانوی سے ملاقات ہوئی، جواس زمانے میں ریاست امب کے وزیر تھے، انہوں نے ستھانہ میں مولوی صاحب کے لئے قیام کا بند و بست کردیا اور خود پٹاور گئے، وہاں معلوم نہیں کس کس

(۱) حافظ عنایت الله اثری کا ایک بیان اس ملسلے میں پہلے نقل ہو چکا ہے پچرمعلوم نہیں کہ ۱۳۳۵ھ بیں امام مہدی یاسید صاحب کے ظہور کی تاریخ کہاں سے پیدا ہوگئی معلوم ہوتا ہے کہ جماعت میں بعض فیرمتندروایات رائج تھیں، یقینا بیاملیٰ مقاصد کے پیش نظر پھیلائی گئی ہوگئی الیکن ظاہر ہے کہ بیطر یقد سراسر غلط تھا اوراس کا انجام قطعا اچھانہ ہوا۔ ے ملے اور کیا بات چیت ہوئی، واپس آئے تو مولوی صاحب کومشورہ دیا کدصا جزادہ سرعبدالقیوم سے ملئے۔

وہ رخصت کیکراپے وطن ٹو پی میں مقیم تھے ، مولوی صاحب ان سے ملے تو انہوں نے ایک متح ہولوی صاحب ان سے ملے تو انہوں نے ایک متوب دیا جسے لے کرمولوی صاحب پٹاور پہنچے۔ بائیس روز وہاں تھہر ہے رہے میں سب معاملات ملے ہوگئے تو انہیں لا ہور آنے کی اجازت ملی ، مولوی صاحب نے بیہی فرمایا کہ مجھ رصرف ایک شرط عائد کی گئی اور وہ بیر کہ ایسا کام پھر نہ کرنا۔ (1)

فروری۱۹۲۱ء میں آئے تھے، بھر ہندوستان سے بجرت کر کے مکہ معظمہ چلے گئے اور وہیں وفات پائی۔

ضروری گزارش

مولوی صاحب کے ابتدائی دورِ حیات اور آخری دورِ حیات میں بیّن تفاوت شاید بعض طبیعتوں پرشاق گذر ہے، مثلاً یہ بات کہ واپس آ کر انہوں نے قاضی کوٹ کے مقد ہے میں ایس گواہیاں ہی قرار دیا جاسکتا ہے۔ مقد ہے میں ایس گواہیاں دیں جنہیں بہر حال سرکاری گواہیاں ہی قرار دیا جاسکتا ہے۔ بختک پیطر زِعمل کھنکتا ہے، لیکن میں پہلے بھی عرض کر چکا ہوں کہ انسانوں کی طبیعتیں مختلف ہوتی ہیں بعض لوگ ایک خاص تصور کے ماتحت انتہائی مجاہدا نہ سرگرمیوں میں چیش چیش رہتے ہیں، جب ان پر واضح ہوتا ہے کہ اصل تصور درست نہ تھا تو نیک طبعی کی بنا پر مناسب یہی سیجھتے ہیں کہ جفلطی انہوں نے کی تھی اس کی تلافی کر دینی چا ہے اور اس سلسلے من جائز صدود کا بھی چنداں خیال نہیں رکھتے۔ اس کے برعم بعض طبیعتیں ایسی ہوتی ہیں کہ حالات کوخلا نے تو تع سخت سے سخت ناسازگار پاکرعزم وہمت میں اور زیادہ استوار کہ حالات کوخلا نے تو تع حت سے سخت ناسازگار پاکرعزم وہمت میں اور زیادہ استوار اور کوششوں میں اور زیادہ سرگرم ہوجاتے ہیں۔ مولوی ولی محمد اپنے بعض خداداد جو ہروں

⁽۱) بیمالات فودمولوی صاحب کے بیان سے ماخوذ ہیں۔

کے باوجود جو بالکل نادر تھے پہلے طبقے کے آ دمی تھے، دوسرے طبقے کے نہ تھے۔

ہوسکتا ہے بعض اصحاب اس روش کو بہت اچھا نہ بمجھیں لیکن اس سے نہ مولوی
صاحب کے نیک کام پر کوئی اثر پڑسکتا ہے اور نہ یہ بمجھنا چاہئے کہ وہ خدانخو استہ انگریزوں
کے ہم نوابن گئے تھے، یا کسی لالح کی بناء پر انہوں نے بیطریقہ اختیار کیا، حاشا و کلا! وہ

یہی سمجھتے تھے کہ گناہ کا کفارہ اسی صورت میں ادا ہوسکتا ہے، خواہ اس رائے ہے کسی کو
انفاق ہویا نہ ہو،ان کی نیک طبعی کا بیروش ثبوت ہے کہ ہندوستان میں نہ تھہرے بلکہ مکہ
معظمہ چلے گئے۔

يانچوال باب:

اسلامیت کے جواہر یارے (۱)

حافظ عنايت اللّداثري

اب مختلف اصحاب کے تذکرے یکجاملا حظ فرمائے:

حافظ عنایت اللہ وزیر آباد کے رہنے والے اور حافظ عبد المنان محدث وزیر آبادی
کے شاگر دہیں۔ عالبًا ۱۹۱۳ء سے جماعت بمجابدین کے ساتھ آپ کی وابستگی کا آغاز ہوا،
مارچ ۱۹۱۳ء میں آل انڈیا اہل حدیث کانفرنس کا اجلاس بہ مقام امرتسر منعقد ہوا تھا، اس
میں مولا ناعبد العزیز رحیم آبادی بھی تشریف لائے۔ اجلاس کے بعد وزیر آباد کو بھی اپنے
قد وم سے مشرف فر مایا۔ حافظ عنایت اللہ اس ز مانے میں حافظ عبد المنان سے پڑھتے بھی
تھے اور اپنی دوکان پر درزی کا کا م بھی کرتے تھے۔ مولا نا رحیم آبادی نے بھی کچھ کام
دیا، وہ پوراکر دیا تو مولا نار جیم آبادی بہت خوش ہوئے ، دبلی بینے کرتار کے دریعے سے بلا
لیا تعلیم کے لئے حافظ عبد اللہ عازی پوری کے سپر دکیا جو مدرسدریاض العلوم میں پڑھاتے
سے اور میر زاولی اللہ بیگ سے فرمایا کہ عنایت اللہ کو بنوٹ سکھاد ہے ہے۔

مولا نارحیم آبادی جب وہلی تشریف لاتے توشیخ عطاء الرحمٰن اور شیخ عبد الرحمٰن کے ہاں پھا ٹک جبش خاں میں قیام فرماتے ، جمعہ پڑھاتے تو خطبے میں سورہ ق اول سے آخرہ تک پڑھتے اور مختصری تقریر بھی فرماتے ۔ پھروہ ، حافظ عبد اللہ غازی پوری اور دوسر سے علماء ورؤسائے وہلی اوکھلا میں جمع ہوتے ، وہاں بنوٹ کے کرتب دکھائے جاتے ، جنہیں

دیکی کر بہت خوش ہوتے ، انہیں اور حافظ عازی پوری کو مجاہدین سے بڑی الفت تھی اور جہاد کا بہت شوق تھا۔ اسی خیال سے وہ موزوں جوانوں کو منتخب کر کے ان کیلئے سپاہیانہ فنون کے سکھنے کا انتظام فر مایا کرتے تھے ،گھر سے آ سودہ حال تھے ، ہزاروں رو پے جماعتی کا موں میں خرچ کئے ،مولا ناشبلی کی سیرۃ النعمان پر جوانقادانہوں نے حسن البیان کے نام سے شائع کیاس کا جواب آج تک کوئی ندد سے سکا۔

پھر حافظ عنایت اللہ مولوی فضل اللی کے ذریعے سے جماعت مجابدین کے ساتھ وابستہ ہوئے، اکتوبر 1918ء میں اسمست گئے، وہاں کے حالات، امیر نعمت اللہ سے گفتگو، جماعت کے بعض معتقدات کے متعلق تاثرات اور سفر آمد ورفت کی کیفیت ہم پیش کر چکے ہیں، بم کے مقدمے میں وہ بھی گرفتار ہوئے تھے لیکن ثبوت نہ ملنے کے باعث رہا کردیے گئے، آج کل جامع مجدا ہل حدیث مجرات میں خطیب ہیں۔

مسترى ابراہيم

یہ نظام آباد (متصل وزیر آباد) کے رہنے والے تھے، والد کا نام امام دین ہے۔مقدمہ قاضی کوٹ کے وقت ان کی عمر پینتالیس سال کی تھی ،مولا نا حافظ عبدالمنان محدث سے فیض یافتہ تھے،مولوی ولی محمد کی تلقین سے اہل حدیث ہوئے اور مولوی فضل الہی کی وساطت سے جماعت مجاہدین کے ساتھ وابستگی پیدا کی۔ یہ آ منگر وں کے اس خاندان میں سے تھے جسے ہنرمندی اور کاریگری میں خاص شہرت حاصل تھی۔حکومت خاندان میں سے ستھے جسے ہنرمندی اور کاریگری میں خاص شہرت حاصل تھی۔حکومت انہیں مل گیا تھا،عموماً تکواریں اور بندوقیں بناتے تھے، مالی اعانت کے علاوہ حسب استطاعت جماعت مجاہدین کو اسلح بھی بھیجا کرتے تھے۔مولوی فضل الہی انہیں انتظامی مشوروں میں شریک رکھتے تھے اور ان کے فیصے خاص کام یہ تھا کہ اسمست جانے والے مشوروں میں شریک رکھتے تھے اور ان کے فیصے خاص کام یہ تھا کہ اسمست جانے والے

جتنے آ دمی وزیر آباد پینچیں، انہیں ریل پرسوار کرادیا کریں۔ قاضی کوٹ کے مقد ہے میں انہیں بھی گرفتار کیا گیا تھا، کیک کوئی شہوت ان کے خلاف بہم نہ پہنچا للبذ اتفتیش کی تھینچ تانی کے سوا وہ ہر آزار سے محفوظ رہے۔ ۱۹۳۵ء کے قریب وفات پائی۔ قاضی عبد الرحیم فرماتے ہیں کہ مستری صاحب نہایت شریف انسان اور پابندا حکام شریعت تھے۔

تاج محد

تاج محمه ولد جلال الدين باجوه جائ، ساكن موضع سكھانة ضلع گوجرانواله _ قاضي کوٹ کےمقدے کے وقت پینیتس سال کی عرتقی مولوی ولی محمد کی تلقین ہے اہل صدیث ہوئے، پھر بورا خاندان مولوی صاحب موصوف کا مرید ہوگیا، جماعت مجاہدین سے تاج محمہ کا تعلق ۱۹۱۰ء کے لگ بھگ پیداہوا، یہ بھیتی باڑی کرتا تھا اور ہرسال پیداوار کاعشر با قاعدہ مجاہدین کو بھجوایا کرتا تھا۔مولوی ولی محمہ جرت کر کے اسمست پہنچ گئے تو اپنے تمام مریدوں کے باس پیغامات بھیج کہ ہندوستان دارالکفر ہے وہاں ہے ججرت کرکے اسمست آجاؤ_چنانجد ١٩١٥ء مين تائ محر بھي اسمست چلا گيا اور وہاں اپنا نام نصر الله رکھا۔ دوتین ماہ تک اسمست میں قواعد کرتا اورنشانہ بازی سیکھتار ہا، پھرا ہے چمر کنڈ بھیج دیا گیا، جہاں میر مختلف جیمایوں میں شریک رہا۔ چرکنڈ سے دوبارہ اسمست آیا تو سنا کہ مولوی و لی محمد صاحب مرکز کو چھوڑ کر ہندوستان چلے گئے ہیں ، پھراسے چمر کنڈ بھیجا گیا تو وہاں کی جماعت کے امیر مولوی عبد انگریم صاحب، الله د تا ادر بلال کومولوی قضل الہٰی کے پاس روپیہ کے لئے بھیج چکے تھے،ان کی واپسی میں تاخیر ہوگئ تو امیر موصوف نے تاج محمداورعبداللدعرف عبدالرحمن ساكن وزيرآ بادكوبهي روانه كرديا،اس اثناء ميس اسمست ے عبداللہ ، سلیم الله اور الوب آ گئے تھے، جنہیں مولوی بوسف نے ایک خط دے کرمولوی عبدالحق ما لک رفاہ عام کے پاس بھیجا تھا کہ اگر بم پھنکوا ؤ تو ان کا انتظام کر دیا جائے ،

مولوی صاحب نے جواب دیا کہ میں بیکا منہیں کرسکتا۔ تاج محمد نے مستری ابراہیم کی معرفت پانسوتمیں روپے مولوی فضل النی کے گھرسے متگوائے اور عبداللہ عرف عبدالرطن کو بیرقم دیے کر چرکنڈ واپس کر دیا، خودایئے گھر چلا گیا، بارہ تیرہ روز بعد قاضی کوٹ کے مقدمہ کے سلسلے میں گرفتار ہوگیا اور اس مقدمے میں استفاثے کی طرف سے گواہی دی۔

الله دتاعرف عبدالحكيم

یہ مولوی ولی محمد کی وجہ ہے اہل حدیث ہوا اور مولوی صاحب ہی کے ہاتھ پر بیعت جہاد کی۔ جب موصوف کی طرف سے پیغام آیا تو ہجرت کرکے اسمست چلاگیا، وہاں سے چرکنڈ بہنچا اور مجاہدین کی سرگرمیوں میں شریک رہا۔ امیر امان اللہ خاں کی خدمت میں بہنچانے کے لئے مولوی عبدالکریم امیر جماعت چرکنڈ کے پاس بھیجا، وہاں شدمت میں بہنچانے کے لئے مولوی عبدالکریم امیر جماعت چرکنڈ کے پاس بھیجا، وہاں سے مولوی عبدالکریم کے علاوہ مولانا محمد بشیر، مولوی حنیف اور مولوی عبدالحمید جشن میں شامل ہونے کیلئے کابل گئے تو اللہ دتا اور بعض دوسرے اصحاب بھی ان کے ہمراہ تھے۔ اس میں مولانا محمد بشیر نے امیر موصوف سے بید درخواست کی کہ اول جماعت مجاہدین کو کچھ زمین عطاکی جائے، دوم ہمیں جو امدادی رقم ملتی ہے اس میں اضافہ کیا جائے تاکہ گزارا بخو لی ہو سکے، سوم بم مہیا کیے جائیں، جنہیں ہندوستان کے مختلف جائے تاکہ اشتہار چھاپ حصوں میں بھتکوایا جائے ، چہارم ایک مطبع کا انتظام کر دیا جائے تاکہ اشتہار چھاپ حصوں میں بھتکوایا جائے ، چہارم ایک مطبع کا انتظام کر دیا جائے تاکہ اشتہار چھاپ حصوں میں بھتکوایا جائے ، چہارم ایک مطبع کا انتظام کر دیا جائے تاکہ اشتہار چھاپ کے جائیں، بیدرخواسیں منظور ہوگئیں۔

ان کے علاوہ امیر نے ارکانِ وفد اور چرکنڈ واسمست کے بعض دوسرے اکابر کے لئے چنع ،نگلیاں، پوشین اور تمنے دیے، کابل سے واپسی پرمولوی عبد الکریم نے اللہ دتا اور بلال کوید پیغام دے کرمولوی فضل النی کے پاس بھیجا کہ جلدسے جلد آ دمی ارسال کیے جا کمیں کیونکہ لڑائی شروع ہونے والی ہے۔مولوی صاحب نے چندروز کے توقف کی

ہدایت کی ، اللہ دتا گھر چلا گیا ، معلوم ہوا کہ اس کے خسر کا انقال ہو چکا ہے۔ ایک چھوٹا بچہ بھی فوت ہوگیا ہے اور گھریار کی گرانی کرنے والا کوئی نہیں ، لہذا وہ یہیں تھہر گیا۔ قاضی کوٹ کے مقدے میں گرفتار ہوا اور استغاثے کی طرف سے شہادت دی عبداللہ عرف عبداللہ عرف عبداللہ عبدالرحمٰن ساکن سنھلہ اللہ دتا کا ہرادر عم زادتھا ، جس کا ذکر جماعت کے قاصدوں میں بار آیا ہے۔

الله دتا ہی کے بیان سے واضح ہوا کہ فیروز پور کے ایک مجاہد داؤد نے چرکنڈ سے آکر ڈاکہ ڈالا تھا۔ احمد عرف خان بہادر بھی اس کے ہمراہ تھا، داؤد گرفآر ہوگیا ،خان بہادر پھی کرڈلا اور چرکنڈ پہنچ گیا۔

چودهری اله داو

چودھری صاحب موضع سنجھلہ ضلع سیالکوٹ کے رہنے والے تھے عنفوان شباب ہی میں ہجرت کا ارادہ کرلیا، ان کا صرف ایک بچے تھا اساعیل نام، جس کی عمر چھ سات سال سے زیادہ نہ ہوگی۔ اہلیہ سے اپنے ارادے کا ذکر کیا تو وہ معیت کے لئے تیار نہ ہوگی، سے صورت حال دیکھی تو اہلیہ کوطلاق دے دینے کا فیصلہ کرلیا، اہلیہ اورا تارب نے موصوف کو مشورہ دیا کہ طلاق نہ دو و یہے چلے جاؤ، اگر وہاں مشقل قیام کی صورت بیدا ہوجائے تو بیٹ کے طلاق ہو دو ویہ کے جاؤ، اگر وہاں مشقل قیام کی صورت بیدا ہوجائے تو بیٹ کے طلاق ہو جہاد کی نیت سے مار ہا ہوں کچھیں کہا جا سکتا کہ وہ اپس آئی ما دب نے کہا میں ہجرت اور جہاد کی نیت سے جار ہا ہوں کچھیوں کہا جا سکتا کہ وہ اپس آئی میانہ و دے دی اور اپنے نابالغ بیج کو مار ہا ہوں کے حقوق کا ہو جھ میری گردن پر ہو، چنانچ طلاق دے دی اور اپنے نابالغ بیج کو ساتھ کے کر چلے گئے۔ تین چارسال یا عنتان میں گزارے، جب وہاں حالات کی ناسازگاری حد برداشت سے باہر ہوگئ تو مجور آوا پس آگئے۔ ۱۹۳۵ء کے لگ جھگ موضع ناسازگاری حد برداشت سے باہر ہوگئ تو مجور آوا پس آگئے۔ ۱۹۳۵ء کے لگ بھگ موضع سنجھلہ میں وفات یائی۔

ظاہر ہے کہ ان میں ہے اکثر اصحاب معمولی دیہاتی تھے اور زیادہ پڑھے لکھے نہ تھے، انہیں سیاسیات ہے بھی زیادہ آگاہی نہھی ، آزادی اور اسلامیت کے لئے جنگ کو ایک اہم دینی خدمت سجھ کر بے تکلف ہر قربانی کے لئے تیار ہو گئے ۔ بعض کے کاروبار کو نقصان پہنچا، بعض کے گھر بار تباہ ہوئے ، اور معلوم ہے کہ کامیا بی کی حالت میں ان کے لئے نہ شہرت وانعام کی کوئی امیر تھی اور نہ جا گیرو وظیفہ کی ، نہ اس فتم کے خیالات سے ان کے دل ور ماغ کا دامن بھی ملوث ہوا، دینی حرارت کے میہ شعلے اس آگ ہے جھڑ کتے تھے جو انیسویں صدی کے ربع اول میں سیداحمد شہید نے سلگائی تھی ، ان کے ارادت مند اس آگ یے سلسل ومتو اتر بے مثال قربانیوں کا تیل ڈالتے رہے۔

مولوى عبدالرزاق

ان کااصل وطن رائے چک ہے، جو کلانور (ضلع گورداسپور) سے جارمیل کے بہت کے دوالد ماجد جن کا نام نور الدین تھا، خاص تعلیم یافتہ تھے، مولوی محمد حسین بٹالوی اور مولوی سیدعبد الببارغزنوی سے خاص تعلق تھا۔ بیمعلوم نہ ہوسکا کہ وہ خود اہل حدیث ہوئے یا خاندان اس سے پیشتر ہی اہل حدیث ہو چکا تھا۔

عبدالرزاق نے ابتدائی تعلیم اپنے بڑے بھائی مولوی مولا بخش کے پاس حاصل کی جو لاہور میں چودھری شہاب الدین کے ادارہ مطبوعات قانونی کے مہتم تھے۔مولوی مولا بخش محمد بشیر (عبدالرزاق بھی وہاں مولا بخش محمد بشیر (عبدالرزاق بھی وہاں آنے جانے گئے،مولا نامحمہ بشیر نے ہجرت کی تو تاکید کر دی تھی کہ مولوی مولا بخش ان کا حساب و کتاب دیکے ایک کریں، چنانچہ وہ خاصی دہر تک بیکام انجام دیتے رہے،اس زمانہ میں بعض اوقات چارسورو پےروزانہ کی آمدنی تھی، آہتہ آہتہ بیسلسلہ درہم برہم ہوگیا۔ عبدالرزاق نے کچھ اسلامی کتابیں اور رسالے پڑھے تو شوق بیدا ہوگیا کہ کی

طرح یا عنتان پنجیس مولوی عبدالحق ما لک رفاه عام پریس کے پاس مجاہدین کے قاصد آتے رہے تھے، ان میں سے عبدالقادر کی خاص شہرت تھی، جس کا ذکر مولوی محمد علی کے حالات میں بھی آچکا تھا۔ بیسرحد کے قریب انگریزی علاقے میں رہتا تھا، اس سے عہد و حالات میں بھی آچکا تھا۔ بیسرحد کے قریب انگریزی علاقے میں رہتا تھا، اس سے عہد و پیان کر کے عبد الرزاق روانہ ہوئے ، ہری پور سے در بند ہوتے ہوئے اسمس بہنچ، وہاں مہمان فانے میں رہے، دو تمین روز کے بعد بیعت کی، اس زمانے میں بنگالی ہند وستانی تنولی و غیرہ جماعتیں الگ الگ تھیں اور ہر جماعت میں بچاس آ دمی ہوتے تھے۔

جماعتى فرائض

بیعت کے بعدان کے ذمے بیکام لگایا گیا کہ ضرورت کی چیزیں ہندوستان سے لایا کریں یا وہاں سے آنے والے آ دمیوں کو لے آیا کریں، چنانچہ انہیں تمام راست دکھادیے گئے۔عبدالرزاق نے متعدد سفر کئے، مولوی و کی محدفتو جی والا کے اکثر مریدین کو انہیں نے اسمست پنچایا۔ یہاں سے مولا ناعبدالقادر قصوری کو جب ضرورت چیش آتی متعید الرزاق بی نہ کسی آدی کے ہمراہ انہیں بھیج دیتے تھے، مثلاً ڈپٹی برکت علی کو عبدالرزاق بی لے کر گئے تھے۔ آئے۔ مرتبدراولپنڈی میں ایک مخلص فوجی جمعدار نے مبدوق کا انظام کیا اور پیغام بھیجا کہ بنہ وق متحکولی جائے، چنانچہ اسمست سے عبدالرزاق بی راولپنڈی آئے۔ ایک بندوق اور دوسو کا رقوس روئی کی بوری میں رکھ لئے گئے۔ بندوق اور دوسو کا رقوس روئی کی بوری میں رکھ لئے گئے۔ در بندسے دریا عبور کرکے آزاد علاقے میں پنچ تو روئی کی بوری کسی کودے دی، بندوق اور کا رقوس اسمست پنجادے۔

ایک مرتبہ جارہے تھے تو دیکھا کہ دارہ گیر بڑھ گئ ہے، چنانچے انہیں بھی ہری پور میں روک کر داپس بھیج دیا گیا، یہاں باز پرس شروع ہوگئی،لوگوں کی گرفتاریاں ہونے لگیں، عبدالرزاق بیرہالت دیکھ کرلا ہور سے رو پڑچلے گئے، وہاں سے آگے بڑھ کرایک پہاڑی كاؤن مين مقيم موسيح ،اس اثناء مين 'بلوغ المرام پڑھي'۔

مستقل ہجرت

یچھدت کے بعد خیال آیا کہ وطن پہنچنا چاہئے، زیادہ ترفاصلہ پیدل طے کیا تاکہ پیچانے نہ جا کیں، لیکن رائے چک پہنچتہ ہی گرفتار ہو گئے اور انہیں لا ہور پہنچادیا گیا۔ اس جگہ عالبًا دویا تین روز حوالات میں رہے، چودھری علی گو ہرنام ایک پولیس افسر کے سامنے پیشی ہوئی، وہ چودھری شہاب الدین کے عزیز تصاور مولوی عبدالرزاق کے بھائی مولوی مولا بخش کو خوب جانتے تھے۔ انہول نے رہا کردیا اور میہ کچھ مدت تعلیم پاتے رہے، دل میں خدمت ملت و ملک کی جو حرارت بھری ہوئی تھی وہ چین نہ لینے دیتی، وقافو قال پنے مرکزوں میں بھی آتے جاتے رہے تھے۔

جب مولا نامحر بشراور مولوی بوسف نے یہ فیصلہ کیا تھا کہ ہندوستان سے اعلی تعلیم
یافتہ نو جوان بھیج جا کیں تو عبدالرزاق نے اس سلسلے میں بھی خاصا کام کیا، پھرخود بھی چلے
گئے، خاصا وقت اسمست اور چمر کنڈ میں گزارا، بالآ خرکا بل میں مقیم ہو گئے۔ ۱۹۴۲ء میں
بعض ناخوشگوار حالات سے مجبور ہوکر واپس آئے اور مدت تک خفیہ پولیس کی بسبب
آزاری کا نشانہ بنے رہے۔ آج کل لا ہور میں مقیم ہیں، ان کے بعض حالات ڈاکٹر رحمت کے سلسلے میں بیان ہوں گے۔

مولوي عبدالواسع

بعض اصحاب اختیارا نہیں بلکہ اضطراراً مرکز مجاہدین میں پنچے اور جماعتی کا مول میں شریک رہے۔ان میں سے ایک مولوی ولی الله قصوری تنے، جوریاست فرید کوٹ میں میرمنثی بن گئے تنے، بزی دولت پیدا کی ،قصوری کے رئیس سمجھے جاتے تنے، فرید کوٹ کا ایک راجانوت ہوا تو حکومت نے اس کے جانشین کی نابالغی کے زمانے میں ایک انظامی

ڈیٹی برکت علی

ڈپٹی صاحب گوجرانوالہ کے رہنے والے اور پنجاب میں سینئر جج تھے، وہ پنشن پر سبک دوش ہونے کے قریب پنچو تو بالا دست حکام کے عماب میں آگئے اوران پررشوت کے دومقد سے بنادیے گئے۔ دونوں میں دودوسال قید کی سزاسنادی گئی۔ ڈپٹی صاحب مولا ناعبدالقادر تصوری کے دوست تھے، مولا نانے اس سزاکے خلاف ہائی کورٹ میں اپیل دائر کردی اور ڈپٹی صاحب کو پانچے ہزار کی ضانت پر دہا کرالیا۔ قرائن کی بنا پر یفین

⁽۱) قاضی کوٹ کے مقد سے میں جو بیانات ہوئے ، ابن میں نام عبد الباسط بتایا گیا ہے، میرے نزد کیے مولوی مجمعلی کا بیان زیادہ متند ہے۔

⁽۲) مثامرات كالمل وياضتان يمن: ۱۱۵-۱۱۳

ہو چکا تھا کہ اپیل مستر د ہوجائے گی اور سز ابحال رہے گی ، اس لئے کہ ہندو چیف بچے کو ڈپٹی صاحب سے خاص کا وش تھی ، مولا ناعبدالقادر نے خود پانچے ہزار کا نقصان برداشت کرلیا اور ڈپٹی صاحب کو خفیہ خفیہ ہندوستان سے اسمست بھیج دیا۔ مولوی محمطی قصوری اسمست بنچے تو ان کی تلقین سے ڈپٹی صاحب نے قرآن مجید کا ترجمہ بھی پڑھا، حدیث کی کتابیں بھی دیکھیں اور نہایت متشرع اور تجدگر ارمسلمان بن گئے۔ (۱)

مولوی محمطی کے لئے روس کیپل نے واپسی کا انتظام کردیا تو انہوں نے اصرار کرے ڈپٹی صاحب کوآ زادی دلانے کی کوشش کی ، حکومت پنجاب تو راضی نہ ہو آل کیکن روس کیپل نے بیا نظام کردیا کہ ڈپٹی صاحب میعاد وقید کے دوسال سرحد میں گزارلیں ، چنانچہ انسہرہ کا مقام ان کے لئے تجویز ہوگیا۔اس اثناء میں ان کے صاحبز ادے کو مانسہرہ ہائی سکول کا ہیڈ ماسٹر بنادیا گیا۔،اس طرح ڈپٹی صاحب اپنے بال بچوں سے ل گے اور دوسال کی مدت مانسمرہ میں گزار کر پنجاب آئے۔

مولا نامحم على تكھوى

آپ ہنجاب کے مشہور عالم ومفسر مولا نامحد تکھوی کے بوتے ہیں، جن کی منظوم بنجا بی تفییر ہمارے ہاں بہت متداول ہے۔ مولا نامحد کے والد حافظ بارک اللہ تنے، زہدو تقدیل اور علم وفعل کی وجہ سے تمام لوگ ان کا بہت ادب کرتے تھے۔ ایک مرتبہ نواب میروٹ ان سے ملنے کے لئے 'د تکھو کے' آئے، جوریاست محدوث ہی کا ایک موضع تھا، مصافحہ کے وقت نواب صاحب کی کلائی پر ہاتھ پڑاتو معلوم ہوا کہ سونے کے تگن پہن مصافحہ ہیں، حافظ صاحب بہت برہم ہوئے اور فرمایا کردین سے بے پروالوگ ہمیں گوشہ تنہائی ہیں بھی چین سے نہیں میضنے دیے اور تا جائز چیزیں بہن کر آجاتے ہیں۔ نواب نواب

⁽١) مشاهرات كابل وياضعان

تخت ناراض ہوااور حافظ صاحب کوریاست سے نکل جانے کا تھم دے دیا، چنانچہ وہ اہل خاندان کو لے کرریاست بہاول پوریس جابیٹے، پھر دریائے سلج میں ایسی طغیانی آئی کہ نواب ممدوث کے محل بھی خطرے میں پڑگئے۔ اس وقت نواب کو احساس ہوا کہ بیہ مصیبت حافظ صاحب جیسے مقدل بزرگ کوریاست سے نکالنے کی پاواش میں نازل ہوئی ہے، چنانچہ انہیں منت والتماس سے بہاعزاز واپس بلایا گیا۔ سید جعفر علی نقوی ۱۲۳۵ ھیں جا بہاول پور میں جا کہ دیا تھا ہوئی تھی تو ریاست بہاول پور میں سے گذرتے ہوئے حافظ بارک اللہ سے بھی ملاقات ہوئی تھی، یہ حافظ صاحب کی جلا طاح بی کی سے کا داقعہ ہے۔ (۱)

حافظ صاحب کے فرزندار جمند حافظ محمد بہ طور مصنف مشہور ہیں، ان کی تصانیف میں سے تغییر محمدی تو پنجاب کے لاکھوں مسلمانوں نے پڑھی اور تی ہوگی، حافظ محمد کے ایک صاحبزاوے مولانا عبدالرحمٰن تھے جنہوں نے دبلی جاکر شخ الکل میاں نذیر حسین مرحوم سے حدیث پڑھی ، مولانا محم علی آئیس کے فرزند ہیں۔ ۱۹۳۸ء میں ہجرت کرکے مدینہ منورہ چلے گئے، وہیں قیام پذیر ہیں، مجد النبی میں درس و تدریس کا سلسلہ جاری کررکھا ہے۔

مولانا محمطی سالہاسال چرکنڈ میں مجاہدین کے ساتھ دہے، اس سے پہلے اور بعد مجاہدین کی سالہ سالہ برابر جاری رکھا۔ انسوس کہ ان کی سرگرمیوں کے مفصل حالات معلوم نہ ہو سکے اور اتنا موقع نمل سکا کہ کسی ذریعے سے خود مولانا کو حالات لکھ دینے کی زحمت دی جاتی ، ہندوستان سے ہجرت کا سبب یہی تھا کہ وہ غیر مسلم اجنبی

(۱) ملاحظہ ہو جماعت مجابدین بس:۳۰ ۳۰ وہال خلطی سے حافظ صاحب کانام تبارک الله لکھا حمیاء مولانا نور محد کے متعلق بھی ایسان واقعہ میرے مصافحہ نہ کیا کہ متعلق بھی ایسان واقعہ میرے علم بیس آیا، نواب بہاول بورسے ملاقات کے لئے محلے تو اس وجہ سے مصافحہ نہ کیا کہ نواب نے سونے کے کتن بین رکھے تھے۔

حکومت کے ماتحت زندگی بسر کرنا اسلامیت حقد کے منافی سیجھتے تھے اور انگریزی حکومت کا تختہ الب کی کامیا بی تختہ الب کی کامیا بی مشتبہ ہوگئی تھی، تحریف خلافت اور تحریک کی میا بی مشتبہ ہوگئی تھی، تحریک خلافت اور تحریک ترک موالات بیں بھی مولا نامحم علی نے سر گرمی سے حصہ لیا تھا۔

تقتیم کے بعدمولا نا کا پورا خاندان اوکاڑہ میں مقیم ہو گیا، وہاں مولا نا محمر علی کے ایک صاحبز ادے نے جامعہ محمدیہ کے نام ہے ایک دینی درسگاہ قائم کرلی ہے۔(1)

صوفى عبدالله

صوفی صاحب نے خود فرمایا کہ میں مولوی ولی مجھ فتوحی والا اور مولوی فضل الہی کی دل نواز اور ایمان افروز تقریریں من کر جماعت مجاہدین سے وابستہ ہوا، یہ ملکہ و کوریا کی وفات سے بعد کی بات ہے ۔ یعنی صوفی صاحب موجودہ صدی کے اوائل ہی میں اپنی زندگی مجاہدانہ فدمات کے لئے وقف کر چکے تھے، شروع میں مولوی فضل الہی کے ساتھ چندہ فراہم کرنے کیلئے دورے کیا کرتے تھے، مولوی فضل الہی قید ہو گئے تو صوفی صاحب اکیلے جماعت کی فدمات انجام دیتے رہے۔ قاضی کوٹ کا مقدمہ بم قائم ہوا اور مولوی فضل الہی ہندوستان سے ہجرت کر کے جلال آ بادوکا بل ہوتے ہوئے چرکنڈ پنچے تو صوفی عبداللہ کا دل بھی وطن سے اچا ہے، ہوگیا، چنا نچہ دہ بھی چرکنڈ پنچے تو صوفی میں اختلا فات رہے۔ کئی سال وہاں گزارے، جب مولا نا محمد بشیر اور مولوی فضل الہی میں اختلا فات پیدا ہوئے تو صوفی صاحب واپس آ گئے۔ (۲)

⁽۱) بیرهالات مجھے مولوی محمراسحات میر "الاعتصام" ہے معلوم ہوئے۔

⁽۲) خودصوفی صاحب نے اختلاف کی جوکیفیت بتائی اس کا طلامہ یہ ہے کر عبد الکریم تنوجی کی وفات پر مولوی فضل اللی اعد اللی امیر ہے ، مولا نابشیروز رستان سے والیس آئے تو انہوں نے امارت کا دعویٰ اس بناء پر کیا کہ مولوی فضل اللی سے پہلے جمرت کرے آئے تھے مولوی فضل اللی نے امارت چھوڑ دی، سسہ باتی حاشیدا محلے صفحہ پر

مشكلات كار

مجاہدین کا ہر کام واقعی جانبازی کا کام تھا،لیکن جن لوگوں کو ہندوستان سے چندہ لانے کیلئے بھیجاجا تا تھا،ان کا توایک ایک لیحہ بے اطمینانی میں گذرتا تھا۔صوفی صاحب کو بھی چند سے کی غرض سے بھیجا جاتا تھا،وہ فرماتے ہیں کہ محض ہندوستان ہی میں خطرات نہ تھے،سرحد آزاد میں بھی قزاتی کا خوف دامن گیرر ہتا تھا۔مجاہدین نے کی ذریعے سے بھاور میں ایک مکان کرائے پر لے رکھا تھا، آنے جانے والے اس مکان میں تھمرتے بھے بعض اوقات قافلے کے انتظار میں ان کا قیام متد ہوجا تا تھا۔

ایک مرتبصوفی صاحب روپے لے کر گئے اور چندروز پیٹاور میں تھہرے رہے، جب قافلے کی صورت نہ بنی تو اسلیے روانہ ہوگئے، راستے میں ڈاکوؤں سے سابقہ پڑا صوفی صاحب جھٹ بیشاب کے بہانے بیٹھ گئے اور جورتم ان کے پاس تھی، وہ بیٹھے بیٹھے زمین میں دفن کردی۔ ڈاکوؤں نے تلاشی لی تو کچھ نہ پایا اور انہیں رخصت کردیا۔ جب ڈاکوفاصی دورنکل گئے توصوفی صاحب نے رقم نکالی اور چم کنڈ بہنچ گئے۔

ایک مرتبدا کیلے جارہے تھے کہ ایک بہاڑ کی چوٹی پر دات کے وقت ایک بہت بڑا سانپ ملاء جسے صوفی صاحب نے اثر دہاسمجھا، چنانچہ آپ نے سَلاَمٌ عَللٰی نُـوْحِ فِی

مگذشته منجه کا بغیرها شید..... الل چرکنڈ نے بیافیصلہ تبول ند کیا ،مولا نامحمہ بشیر اسمست مجئے اور وہاں ہے ایک جماعت مجاہدین کی سماتھ لائے ،آتے ہی امارت سنجال کی اور خزانچی بھی اپنا مقرر کیا۔

میراا تھازہ ہے کہ صوفی صاحب کو یا تو ظاہ نہی ہوئی یا انہوں نے صرف ایک فریق کے بیانات کو درست ہم جو نیا ، جس صد تک جمعے علم ہے اور بیعلم بمیوں فر مددارا فراد کے بیانات پر بنی ہے، مولانا ٹھر بشیر نے بھی امارت کی خواہش ندگی، وزیرستان سے دالیس آ کران کے اسمست جانے کی دجہ یقی کہ امیر نعت اللہ کے واقعے میں انہیں بھی ملزم کر دانا جار ہا مقاء اس لئے کہ امیر کے قاتل یوسف ہے مولانا کے خاندان کا خاص تعلق تھا۔ جب اسمست میں ان کی ہے گنا ہی ہا ہت ہوگی تو مرکز کی طرف ہے انہیں امیر بنادیا تھیا، البت بیدورست ہے کہ ان کے اور مولوی ضفل اللی کے درمیان مشکش جاری دیں۔ الْمُعَالَمِيْنَ كاوردشروع كرديا، خدانے اس بلاكوثالاتو صوفی صاحب آ گے بر<u>ھے پ</u>رايك گاؤں سے گھوڑا لے كرمنزل مقصود يرفا ئز ہوئے۔

دینی درسگاه کا قیام

صوفی صاحب کوخدانے عمل کا پیکر بنایا ہے، چرکنڈ سے واپس آئے تو دیکھا کہ لاکل پور کے علاقے میں اہل حدیث کی کوئی درسگاہ نہیں، چنانچہ رجب ۱۳۵۷ھ (دیمبر ۱۹۳۸ء) کو خداکا نام لے کرایک درسگاہ کی بنیا در کھ دی۔ آج بیدایک کامیاب درسگاہ ہے، جس میں پنجاب کے علاوہ بنگال، مدراس، یو پی، بلوچتان اور سرحد کے طلبہ تعلیم حاصل کررہے ہیں۔

جماعت کےاسا تین

صوفی صاحب کے بیان کے مطابق مندرجہ ذیل حضرات جماعت مجاہدین کی امداد واعانب کے ستون تھے: (۱) مولانا عین القصاۃ تکھنوی (۲) مولانا عبد العزیز رحیم آبادی (۳) مولانا زین العابدین (۳) مولانا لیافت الوری (۵) ڈاکٹر فرید، در بھنگہ (۲) مولانا عبد اللہ سینا مڑھی (۷) مولانا عبد السجان جھنگا وا (۸) حافظ شریف جھرکا (۹) مافظ عبد اللہ سینا مڑھی (۷) حافظ اسحاق دبلی (۱۱) شخ عطاء الرحمٰن، مدرسہ رحمانیہ دبلی (۱۲) حافظ حمید اللہ کشن سخ (۱۳) حافظ اسحاق دبلی (۱۱) شخ عطاء الرحمٰن، مدرسہ رحمانیہ دبلی (۱۲) حافظ حمید اللہ کشن سخ (۱۳) حافظ اسحاق دبلی (۱۲) سیٹھ عبد اللہ کشن سخ (۱۳) مولانا ابراہیم بنارسی (۱۲) سیٹھ عبد اللہ کوچین (۱۵) سیٹھ داؤد دبلی (۱۹) حاجی عطاء اللہ، اوڈ انوالہ (۲۰) حاجی ابراہیم ماڑی اٹاری (۱۲) جناب محمد حاجب راوی والے (۲۲) حافظ عبد اللہ کا خواجہ داوی والے (۲۲) حافظ عبد اللہ کا خواجہ داوی والے (۲۲) حافظ عبد اللہ خانی پوری (۲۳) مولانا عبد الخیر عظیم آبادی۔

چھٹاباب:

اسلامیت کے جواہر یارے (۲)

مولوي سلطان محمر

جماعت مجاہدین کے ایک خاموش اور گوششین کا رکن مولوی سلطان محمد تھے، جن کے متعلق عوام میں مشہور ہو گیا تھا کہ وہ نوٹ بناتے ہیں، اور انہیں اس فن میں ایسا کمال حاصل ہے کہ تجربہ کار مبصر بھی اصل اور نقل میں تمیز نہیں کر سکتا۔ جس حد تک میں معلوم کر سکا ہوں مولوی صاحب نے خود کبھی نوٹ نہیں بنائے، البتہ انہیں کیمیا گری کا شوق تھا، عالبًا جاندی بنا لیتے تھے اور سونا بنانے کے نسخوں کی تلاش میں سرگرم رہتے تھے۔

بشاور یا یا غستان کا ایک گروہ ان کا رفیق بن گیا تھا، وہ گروہ نوٹ ضرور بناتا تھا،
مولوی صاحب کے پاس سوسورو پے کے نوٹوں کے صندوق بھرے آتے تھے،خودانہوں
نے ان میں ہے بھی ایک حبہ تک نہ لیا اور پوری رقمیں صرف دو کا موں میں صرف کرتے
رہے: اول جماعت مجاہدین کی اعانت، جوزیادہ تراسلحہ کی شکل میں ہوتی تھی، دوم اپنے
انقلابی منصوبے کیلئے اسلحہ کی فراہمی ہمولوی صاحب کا اپنا میرحال تھا کہ نہایت سادہ لہا س

پہ سیاں معزز خاندان کے فرد تھے، لاہور کے سرکاری چھاپے خانے میں کمپیوز میٹر وہ ایک معزز خاندان کے فرد تھے، لاہور کے سرکاری چھاپے خاص کے طور پر ملازم ہوئے، چونکہ ابتدائی ہے انہیں اسلامی اور وطنی کا مول کے ساتھ خاص ول بستگی تھی،اس لئے اپنے دوہم مشرب رفیقوں کوشر یک کاربنا کرنوشہرہ میں ایک پریس قائم کرلیا، جس کانام غالبًا''ملٹری پرلیں' تھا۔ نوشہرہ کو کاروبار کیلئے منتخب کرنے کی اصل وجہ غالبًا بیتھی کہ سرحد آزاد کے قریب پہنچ کراعانت مجاہدین بہتر طریق پر انجام دے سکیس ، اور آس یاس مختلف مقامات پر مرکز قائم کردیں۔

جیدا کداو پرعرض کیا جاچکا ہے، جو پچھ انہیں ملتا تھا، اسلحہ کی فرید پرصرف کردیتے سے، واقف حال اصحاب کے بیانات کو درست سلیم کیا جائے تو ان کے پاس بار ہااسلحہ کے صندوق بھرے ہوئے آئے ،لیکن سی کومعلوم نہ تھا کہ یہ اسلحہ کہاں بنتے ادر کس ذریعے ہے آئے ہیں۔

ترک موالات کے ابتدائی دور میں بعض ہندوستانی لیڈرسلم انقلاب کے آرز دمند
ہے، پرامن انقلاب کے حامی دوسری دلیلوں کے علاوہ بیعندر بھی پیش کیا کرتے ہے کہ
مسلم انقلاب کیلئے ہتھیار کہاں سے آئیں گے۔ بیان کیا جاتا ہے کہ ایک موقع پرمولوی
سلطان محمد نے بعض متاز لیڈروں کی مجلس میں بمقام امر تسر اسلحہ کے دوصندوق بطور نمونہ
پیش کئے تھے، اور پوچھا تھا کہ ایسے کتنے صندوق درکار ہیں تا کہ ان کا انتظام کردیا
جائے۔ پھرجس خفیہ ذریعے سے بیصندوق لائے گئے تھے، اسی خفیہ ذریعے سے محفوظ
مقام پر پہنچادیے گئے۔

مولوي صاحب كامنصوبه

مولوی صاحب نوشہرہ سے لا ہور چلے آئے تھے، انہوں نے بہ طورخود انقلاب کی جو اسلیم تیار کی تھی، وہ کچھاس تم کی تھی کہ بہروں اور خانساموں کی ایک بہت بڑی تعداد کو اپنی جماعت میں شامل کریں، انہیں ہتھیار دے کر ہندوستان کے تمام بڑے بڑے اگر بز شہروں اور چھاؤنیوں میں پھیلا دیں۔ پھر بیک وقت ہر مقام کے بڑے بڑے اگر بز افسروں کو قبضے میں لے لیا جائے اور نظام حکومت خودسنجال لیا جائے۔

اس اسکیم کی پوری تفعیلات کہیں ہے معلوم نہ ہو سکیں ، مولوی صاحب کی زندگی میں ہے اسکیم کمل نہ ہو سکی اور نہ اس پرعمل کی نوبت آئی۔ اس دوران میں اچا تک ان کے خلاف نوٹوں کا مقدمہ قائم ہوگیا، جس میں غالبًا سات سال کی سزایا ئی ، رہائی کے بعد طبابت کا پیشہ اختیار کر لیا تھا، نظر بظاہر باکل خاموثی اور کمنای کی زندگی بسر کرتے رہے، پچھ مدت پیشتر وفات پائی۔ انہیں لوگ عام طور پرمولوی صاحب نہیں ، بابوصاحب کہتے تھے۔ مولوی صاحب آگر چہ کہنے کو بے تعلق اور گوشہ نشین سے آ دمی تھے لیکن اپنے دائر ہ ممل میں ان کا اثر ورسوخ بہت و سیج تھا۔ بنایا جاتا ہے کہ ایک مرتبہ اچا تک ان کی در بندی ہوگئی ، ان کے مکان میں ایک یا دوصندوق اسلی سے بھرے ہوئے موجود تھے، تھوڑی ، ی در بندی ہوگئی ، ان کے مکان میں ایک یا دوصندوق اسلی سے بھرے ہوئے موجود تھے، تھوڑی ، ی در بندی در بندی اسے کارکنانی خاص کوتا کیدی ہوایا ہے بھیجیں اور تلاثی با قاعدہ شروع ہونے سے در پیش اینے کارکنانی خاص کوتا کیدی ہوایا ہے بھیجیں اور تلاثی با قاعدہ شروع ہونے سے در پیش اینے کارکنانی خاص کوتا کیدی ہوایا ہے بھیجیں اور تلاثی با قاعدہ شروع ہونے سے در پر میں اینے کارکنانی خاص کوتا کیدی ہوایا ہے بھیجیں اور تلاثی با قاعدہ شروع ہونے سے

مولوی عبدالله پیثاوری

كچه كس طرح ياية تكيل كو پنجاكه اس كاعلم كسي كونه بوسكا_(1)

بیمولوی صاحب صوات یا بونیر کر بنے والے تھے۔ ۱۹۱۰ء کے آس پاس لا ہور آئے اور یہاں'' پشاوری'' کی نبست سے مشہور تھے۔ غلام حسن شیش گرکے مکان پر قرآن مجید کا درس شروع کیا، غلام حسن ہی غالبًا ان کے ضروری مصارف کا کفیل تھا، وقتا فو قنا وعظ بھی فرمایا کرتے تھے۔

پیشتر اسلحہ کے صندوق بدل کران کی جگہ و ہے ہی دوسر مے صندوق رکھ دیے گئے ، بیسب

اس زمانے میں اسلامیہ کالج لا ہور کی گراؤنڈ برانڈرتھروڈ (کیلیاں والی سرک)
کی طرف سے کھلی ہوئی تھی اور انجس جمایت اسلام نے مکانوں اور دکانوں کی جو قطار
(۱) یہ حالات مجھے اپنے عزیز دوست می الدین صاحب (کرینڈ لے بحک لاہور) سے معلوم ہوئے، وہ مولوی ملطان مجھے کے نازمندوں میں تال تھے۔

بنوار کھی ہے بیدنہ بنی تھی، احمد بیہ بلڈ عکس کی جانب بھی صرف چند عارتیں نظر آتی تھیں، مولوی عبداللہ بھی بھی نماز مغرب کے بعد گراؤنڈ میں تقریر فرماتے اور بھی نہ بہی جلسوں کی صدارت کرتے، وعظ کا طریقہ ایسا تھا جس کی مثال بھی نہ دیکھی گئی۔ تقریر کرتے کرتے لیمی آ جاتے تو متر نم انداز میں بولنے گلتے، بعض الفاظ کے مختصر افغانی تلفظ کے ساتھ بیر نم بڑا مزادیتا تھا۔ مسائل میں بڑے تشدد اور سخت کیر تھے، ایک مرتبہ معراج کے جسمانی یاروعانی ہونے کی بحث چھڑ گئی، ایک مشہور مسلمان لیڈر نے کہہ دیا کہ بہد اختلاف چنداں قابل تو جہ نہیں۔ مولوی عبد اللہ ایک دم جوش میں آگئے اور فر مایا بی خلط ہے، پھر دلائل چیش کر کے اس لیڈر سے برسر عام تو بہ کرائی ۔ کالجوں کے جن طلبہ نے فروری 190ء میں بھرت کی تھی کہا جاتا ہے کہ ان میں سے بعض مولوی صاحب بی کے فروری 1918ء میں بھرت کی تھی اور انہیں بھرت پر آمادہ کرنے میں بھی مولوی صاحب بی کے مظ و تبلغ سے متاثر ہوئے تھے اور انہیں بھرت پر آمادہ کرنے میں بھی مولوی صاحب کے مشورے شامل تھے۔ واللہ اعلم بالصواب۔

مولوی صاحب اوراوڈ وائر

ا اوری کیلے بھی تقریر کا وقت مقررتھا، ان کی تقریر کے دوران میں مائکل اوڈ وائر آگیا، پیاوری کیلے بھی تقریر کا وقت مقررتھا، ان کی تقریر کے دوران میں مائکل اوڈ وائر آگیا، جو پنجاب کا گورنرتھا۔ جنگ یورپ بڑے زوروں پر جاری تھی، ترک انگریزوں کے خلاف جرمنی کے حلیف کی حیثیت میں لڑرہے تھے۔ مائکل اوڈ وائر اگر چہ نیانیا آیا تھا اور اس کی جابریت آشکارانہ ہوئی تھی، تاہم مشہورتھا کہ وہ بڑا سخت حاکم ہے اور پنجاب جنگی بھرتی کا خاص مرکز تھا۔ اوڈ وائر اردو بخو بی جھتا اور بولتا تھا، کارفر مایانِ انجمن نے مولوی صاحب سے درخواست کی کہ اب اپنی تقریر ختم سیجے، اس لئے کہ آپ کا وقت ہو چکا صاحب نے درخواست کی کہ اب اپنی تقریر ختم سیجے، اس لئے کہ آپ کا وقت ہو چکا ہے۔ انہوں نے فر مایا، بہتر! اب صرف دعاء باتی ہے، چنانچہ فوراً ہاتھ اٹھا کر دعاء شروع

کردی، جواس مضمون کی تھی:

اے اللہ مسلمانوں کو قوت ایمان دے، انہیں اسلام پر ثابت قدم رکھ، نیک عمل کی تو فیق عطا کر، انہیں بید ہے، وہ دے مجمع دعاء کے ہر کلڑے پر بلند آ واز سے آ مین آ مین کہدر ہاتھا، یکا کیک مولوی صاحب نے کہا:

اے اللہ! مسلمانوں کو حکومت کا مزاہمی چکھا دے، اگر انگریزوں کی حکومت نہیں دیتانہ دے، روس ہی کی حکومت دیدے۔

ائل جلسہ نے زورشور ہے آمین کمی اور مولوی صاحب ایک دم مجمع سے عائب ہوگئے۔
وہ سلسل مجاہدین کی اعانت کا کام انجام دیتے رہے اور شاید ای غرض سے لا ہور
آئے تھے۔ یہاں ان کی تمام سرگرمیاں انگریزوں کے خلاف رہیں، آخر ان کی گرفتاری
کا فیصلہ ہوگیا، لیکن مولوی صاحب گرفتاری سے تھوڑی دیر پہلے چھپ چھپا کرنج نظے اور
پٹاور پہنچ گئے۔ پولیس نے شدت سے ان کا تعاقب کیا، کہا جاتا ہے کہ ایک مقام پر ان کی
گرفتاری بینی ہوگئ تھی، لیکن وہ و بوار تو ڈکرنکل گئے۔ پھر معلوم نہ ہوسکا کہ زندگی کے باتی
اوقات کہاں گرارے اور کب وفات پائی۔ جب وہ یہاں تھے تو مشہور تھا کہ عقیدے کے
روسے اہل حدیث ہیں۔

مولوی کرم الہی

مولوی صاحب ان خاموش کارکنوں میں سے تھے جن کی مثالیں ہمارے عہد میں بہت کم رہ گئی ہیں۔اصل وطن قادر والا بخصیل زیرہ ضلع فیروز پورتھا۔ ۱۸۸۵ء کے قریب پیدا ہوئے، مدت دراز تک گورنمنٹ ہائی سکول لدھیا نہ میں عربی کے ٹیچرر ہے، مولوی عبدالرزاق صاحب ان سے تکی مرتبہ ملے تھے، دہ بتاتے تھے کہ تخواہ میں سے تھوڑی می رقم اپنے گزارے کے لئے رکھ لیتے باقی مجاہدین کو بجواد ہے۔لدھیانہ میں حافظ نور دین

بھی مولوی صاحب کے معاون ور نیق تھے۔فلاہر ہے کہ جو ہزرگ ذاتی مثاہرے کا بیشتر حصہ خدا کی راہ میں دے دیتے تھے، وہ دوسرے افراد سے بھی ضرور چندہ فراہم کرتے ہوں گے،لیکن ان کے طریق کار کی کوئی تفصیل معلوم نہ ہوسکی۔ جماعت کے آ دمی خفیہ خفیہ ان کے پاس آتے رہے تھے اور وقنا فو قنانہیں کے ہاتھ رقمیں بھیجی جاتی تھیں۔

مولوی صاحب کے صاحبزاد ہے نے بتایا کہ حکومت کوموصوف کی سرگرمیوں کاعلم ہو چکا تھااور مجاہدین سے ہمدردی کے باعث ان پرکڑی نگرانی کا انتظام ہوگیا تھا، تاہم وہ جس کام کوایک اہم وینی فرض بچھ کرادا کرتے تھے اسے ترک کرنے پر آ مادہ نہ ہوئے اور مگرانی کے باوجود ہرمکن ذریعے سے رو بیہ جاہدین کو پہنچاتے رہے۔

آ خران کا تبادلہ گورنمنٹ ہائی سکول لدھیانہ سے گورنمنٹ ہائی سکول جالندھر میں ہو گیا، یقین ہے کہ جالندھر میں بھی انہوں نے خدمت مجاہدین کا کام جاری رکھا ہوگا۔ ۱۹۳۳ء میں سرکاری ملازمت سے وظیفہ لے کر قا دروالا میں مقیم ہو گئے اور تقسیم تک و ہیں رہے۔

فسادات شروع ہوئے تو دوسرے لا کھوں مسلمانوں کی طرح مولوی کرم الہٰی صاحب کو بھی وطن مالوف سے بجرت کرنی پڑی قصور پہنچ تو ہینے میں مبتلا ہو گئے ، بیاری علی حالت میں اپنے خلف اکبر چودھری عبدالرحمٰن صاحب بی ،اے ، لی ٹی کے باس پاک پٹن پہنچ گئے ، وہیں تین روز بعدوفات پائی ۔گویا می غالبًا سمبر ۱۹۳۷ء کا واقعہ ہے ،ان کی اولاد میں چارصا جبز ادے ہیں اور تین صاحبز ادیاں ، میلوگ خانیوال میں رہتے ہیں۔(۱)

حاجي نور محمر صراف

ماجی صاحب نے بیرزو پور میں صرافہ کی دکان قائم کر رکھی تھی، اس سے زیادہ حالات معلوم نہ ہوسکے، اور نہ یہ چلا کہ ان کے کاروبار کا کیا حال تھا، صرف اتنا معلوم ہے کہ وہ ابتدائی دور بی سے جماعت مجاہدین کیلئے رقیس جمع کر کے بیجیج رہتے تھے، بلکہ اپنی دکان کا ایک حصد صرف اس غرض سے وقف کردکھا تھا کہ جماعت کے قاصدوں یا اسمست و چرکنڈ جانے والوں میں سے کوئی پہنچ جائے تو باطمینان تھہرے اور آ رام کرسکے۔ حاجی صاحب ایسے مہمانوں کے لئے کھانے یا دوسری ضروریات کا انتظام کردیے تھے۔

مولوی محمد اسحاق صاحب مدیر' الاعتصام' نے بتایا کہ حاجی صاحب اگر چہ ہوے محتاط تھے لیکن حکومت کوان کی سرگرمیوں کی اطلاع کسی ذریعے سے پہنچ گئی ،اور ۱۹۱۱ء میں انہیں گرفتار کرلیا گیا، تاہم کوئی واضح ثبوت نہل سکا، اس لئے چھوڑ دیا گیا۔ غالبًا ۱۹۳۰ء میں انہوں نے وفات یائی۔

ميال غلام حسين

یہ بزرگ مولوی ولی محمد کے ہم وطن تھے یعنی ان کا گاؤں بھی فتوتی والا تھا۔ان کے بھی زیادہ حالات معلوم نہ ہوسکے،البتہ مولوی محمد اسحاق صاحب نے بتایا کہ فیروز پوراور آس پاس سے تمام روپیہ انہیں کے ذریعے سے مجاہدین کو پہنچتا تھا، کچھ پہتے نہیں کہ انہوں نے ارسال ذرکے کیا کیا وسائل اختیار کرر کھے تھے،لیکن زندگی بحریہ خدمت چپ چاپ انجام دیتے رہے۔

صوفى جلال الدين

موضع ہریہ والا ریاست فرید کوٹ اصل وطن ہے، اب چک ۵۳گ، ب تحصیل جڑ انوالہ لائل پور میں مقیم ہیں۔ یہ بھی مولوی ولی محد فتو جی والا کی تقریروں اور وعظوں سے متاثر ہوکر جماعت سے وابستہ ہوئے اور مولوی ولی محد کے ایک قاصد کے ہمراہ اسمست پہنچ کرامیر نعمت اللہ کے ہاتھ پر بیعت کی۔ وہاں فوجی قواعد کے میاتھ تھے۔ اسمست میں کعب اور مولی عین الدین ساکن ساندہ (ضلع لا ہور) ان کے ساتھ تھے۔ اسمست میں کعب نام اختیار کیا، مولوی اللی بخش کا نام عبدالا ول اور مولوی عین الدین کا ابو بکر رکھا گیا۔ تو اعد سیکھ چکے تو مجاہدین میں شامل ہوئے، سرکاوئی کی جنگ میں شریک رہے جس کا ذکر ہم نے رستم کی جنگ کے نام سے کیا ہے۔ انگریزی چھا وُنیوں پرشِخون بھی مارے، چار برس رہ کرامیر کی ہوایت کے مطابق وابس آگئے۔ اس کے بعد بھی سال میں ایک مرتبہ ضرور ویکر کا خرائے کے اس کے بعد بھی سال میں ایک مرتبہ ضرور ویکر کا خرائے کے ایک مرتبہ ضرور

ان کے گاؤں میں 99 فی صد سکھ آباد تھے، اس لئے جگہ محفوظ تھی، چنانچہ بگال، بہار، یو بی سے جو حضرات خدمت بجاہدین کے سلسلے میں آتے تھے ان کا ایک خاص پڑاؤ صوفی صاحب کا مکان تھا، وہاں کسی جاسوس کی خبر رسانی یا پولیس کی حلاقی کا کوئی اندیشہ نہ تھا۔ بمبال والا کے مقدمہ بندوق اور قاضی کوٹ کے مقدمے سے صرف اس لئے بی گئے کہ ادان کے خلاف کوئی مینی گواہ نہ ال سکا، چنانچہ مجسٹریٹ نے بہی کہ کررہا کیا کہ تیری قسمت اچھی ہے، موقع کی کوئی شہادت نہیں ملی۔

معاونين جماعت

صوفی صاحب کے بیان کے مطابق مندرجہ ذیل حضرات جماعت مجاہدین کے خاص معاون تھے: (۱) مولانا عبدالقادر تصوری (۲) مولانا قاضی سلیمان منصور پوری

مصنف "رحمة للعالمين" وغيره (٣) مولانا عبد التواب ملتاني (٣) مولانا محد على تكصوى

(٥) مولانا عطاء الله تكهوى (٢) مولانا عبد الله كسے والا منطع فيروز پور (٤) عبد الله

كوشے والا منطع فيروز پور (٨) صوفى محرسليمان روڑى والا اور (٩) ان كے صاحبز ادے
مولانا حكيم عبد الله (١٠) مياں منس الدين (ضلع لا بور) (١١) مياں غلام حسين فتوحى
والا (٩١٢ علائے الل حديث بذهى وال (ضلع فيروز بور) ـ

مونی صاحب وقنافو قنا آ دی بھی اسمت بھیجے رہتے تھے، چنانچوا یک دفعہ محمد عمرنام کے ایک لوہار کو بھیجاتھا جو دس سال وہاں رہا۔

متفرق اصحاب

ان کے علاوہ بھی فیروز پور کے مختلف اصحاب نے اعانت مجاہدین کا کام سنجال رکھا تھا۔ مثلاً:

ا- مولوی عبد الکریم صاحب جود گرے کنال میں ایس ڈی او تھے۔ تقتیم کے بعد لا ہور آگئے اور مجھ مدت لا ہور اور ملتان میں اہم خدمتوں پر مامور رہے، آج کل ریٹائر ہو چکے ہیں۔ صاحب موصوف خلوص ، محبت ، اسلامیت اور اخوت کا ایک ایسا پیکر ہیں ، جن کی مثالیں بہت کم ملیں گی۔

- ۲- چودهری عبدالستار خان، بیخاص فیروز پوریس رہتے تھے۔
 - ٣- عبدالسلام ساكن تلوندى ضلع فيروز بور.
- 47- سلیمان ساکن ضلع فیروز پور،جس نے سرحد میں ایوب نام اختیار کرلیا تھا۔ مسلع سیالکوٹ کے بھی متعدد اصحاب کے اساء مختلف سلسلوں میں آئے ہیں ،مثلاً سلیم الله،غلام محمد، آخر الذکر سرحد میں' محم''کے نام سے مشہور تھا۔

ساتوال باب:

اسلامیت کے جواہر یارے (۳)

تمهيد

اب آخر میں ان طلبہ کے حالات اختصاراً لکھ دینا جا ہتا ہوں جوفر دری 1918ء میں جہاد کی نیت سے کالج چھوڑ کرگئے۔اس میں کوئی شبنہیں کہ وہ سب مجاہدین سے وابستدند رہے، تاہم:

۱- انہیں سرحد آزاد میں پنجانے کے ذمہ دار دہی اصحاب تھے جو جماعت بجاہدین کاکام کرتے تھے۔

۲- ان کی پہلی منزل وہی جگہ تھی جہاں مجاہدین قیام پذیر تھے۔

٣- ان میں سے بعض نے آ کے چل کر جماعت مجاہدین سے وابستگی اختیار کی لی۔

سم- دوسرے اصحاب نے بھی حتی الا مکان جماعت کی سرگرمیوں میں اعانت کا

سلسلہ برابر جاری رکھا، یا کم از کم جماعت مجاہدین سے ان کی جمدردیاں کم نہ ہوئیں اور بعض اوقات اس سے انتساب کی بناء پر رفع مشکلات میں بھی مدد لی۔

۵- ان اصحاب نے قربانیوں کا جونمونہ پیش کیا، وہی تھا جس کی مثالیں جماعت مجاہدین سے باہر شاذ ہی ملیں گ۔

كيفيت سفر

میری آرزوھی کہ کوئی صاحب ایسے ل جائیں جن سے ان کے سفری کیفیت تفعیلا

معلوم ہوجائے۔انقاقیہ ڈاکٹر رحمت علی مل گئے جورائع صدی سے زیادہ مدت جلاوطنی میں گرار کر پاکستان آئے اور آج کل پنجاب یو نیورٹی میں فرانسیسی زبان کے پروفیسر ہیں۔ان سے جوحالات سنے وہ اختصار آذیل میں درج ہیں:

ڈاکٹر صاحب نے بتایا کہ کل طالب علم گیارہ تھے، چارمیڈیکل کالج کے، دوایم اے کے اور پانچ نی اے کے۔ان کے ساتھ بعض اور اصحاب بھی ٹل گئے تھے، جن کا ذکر موقع پرآئے گا۔

لاہور سے روانہ ہوکر یہ غیور نو جوان ہری پور پہنچ، جہاں کا سٹیشن ماسر مجاہدین کا ضدمت گزار تھا اور اس نے ایک مکان صرف ای غرض سے الگ لے رکھا تھا کہ آنے جانے والے جانے والے بیان کے قاصدوں کی خاطر تو اضع کرتار ہے۔ چنانچہ ان سب کوائی مکان میں تھم رایا، کھانا کھلایا، پھر سواری کا انظام کر دیا اور بیاصحاب در بند پہنچ جورکیس اسب کا مرکز تھا۔

رئیس ندکوراگر چاگریزی حکومت کی مرضی کے خلاف تھلم کھلا کچھند کرسکتا تھا، گر عجابدین کے تمام آ دمیوں کوعزت واکر ام سے اپنے پاس تھہرا تا تھا۔ وہاں نہایت پرتکلف کھانا کھلا یا گیا، ایک رات در بند میں گر ارنے کے بعد ان کے عبور کے لئے کشتی کا انظام کردیا گیا، دریائے اٹک سے پار ہوتے ہی آ زاد علاقہ آ گیا، وہاں سب نے انگریزی حدود سے باہر نگلنے پر خدا کا شکر ادا کرتے ہوئے عہد کیا کہ جب تک انگریزوں کو ہندوستان سے نکال نہ لیں مے واپس نہ آئیں گے۔

مركزمجامدين

وہاں سے بیلوگ پیادہ مرکز مجاہدین میں پہنچ، واضح رہے کہ تقریباً تمام طلبہ خاصے امیر گھر انوں کے چثم وچراغ تھے اور انہوں نے اپنی زندگی میں تکلیف ومشقت کا دور کہی

نہ دیکھا تھا،کیکن جذبہ ؑ آ زادی واسلامیت نے ہرمشقت بخوشی برداشت کر لینے بر ٓ مادہ کردیا۔مرکز مجاہدین کی حالت دیکھ کرنظر بظاہران پر کوئی اچھااثر پڑنے کی امید نہ ہو علی تھی، وہ درویشوں کی آبادی تھی،جن کے یاس دنیوی ساز وسامان حقیقتا کچھ نہ تھا، نہ تو پیں ، نداسلحہ کے کارخانے ، ندعالی شان بارکیں ، نہ بڑے بڑے لٹکر ، مکین لوگ ایک نصب العین کی عزت واحترام کا پر چم سنجالے بیٹھے تھے، کھانا بہت معمولی ،رہناسہنا حد درجہ سادہ (۱)، جہاں موقع مل جاتاد بنی غیرت کی بناء برجانیں ہتھیلیوں برر کھ کرلڑنے كے لئے تيارر ہتے۔

ڈاکٹر رحت علی بتاتے ہیں کہ اگر چہ امیر مجاہدین بہت کہتے تھے، یہیں تھہر جا ہے کیکن جمیس یقین ہو چکا تھا کہ جوسروسامان مجاہدین کے پاس ہےوہ انگریزوں سے جنگ كرنے اور انہيں شكست دینے كے لئے ہرگز قابل توجہ نہيں سمجھا جاسكتا ، البذا ہميں يمي مناسب معلوم ہوا کہ سیدھے کا بل جائیں اور امیر کا بل ہے ل کر اسلام کے نام پر اپیل کریں، دہ حرکت میں آ جائیں گےتو سرحد آ زاد کا ایک ایک جانباز ساتھ ہوجائے گااور ہندوستان کوآ زاد کرالینے کے درواز کے کھل جا کیں گے۔

امیرمجامدین نے جب دیکھا کہ ہم رکنے والنے نہیں تو ایک رہبر ہمارے ساتھ کر دیا جوہمیں بحفاظ**ت افغانستان لے** گیا۔

جلال آباد

یہ قافلہ جلال آباد پہنچا تو پولیس نے سب کو گھیرے میں لے لیا اور سرائے کی ایک کوتھری میں بند کردیا۔تھوڑی دیر کے بعد سب کے لئے دوکو تھریوں کا انتظام کردیا گیا، (۱) ذاكٹر رصت على نے بتایا كدا كي مرتبه عار ب ايك سائعي كوشسل كى ضرورت يزي، اند مير ب يمن اے ايك ويك لى ،اس نے سمجھا پانى ہے، نو ئے بعر بحر كر ۋالنے لگا، بعد يس معلوم ہواكدد كيك بس بجابدين كے لئے وال يكائى كئ تق آخردہاں کے گورنر سے ملاقات ہوئی، اس نے سمجھا کہ اگران لوگوں سے کوئی نامناسب سلوک ہوااورا فغانوں کو علم ہوگیا کہ بیا ہجرت کر کے آئے ہیں اور اسلامی ملک ہیں انہیں تکلیف دی جارہی ہے تو ہنگامہ بیا ہو جائے گا، لہذا مصلحتا سب کے لئے سواری اور بار برداری کی غرض سے یابوؤں کا انتظام کردیا۔ راستے کے لئے خرج دے دیا، چودہ پندرہ سپائی ساتھ کردیے اور تھم دے دیا کہ انہیں کا بل لے جاؤ، اس طرح اگر چہ جلال آباد ہی سے اک گونہ نظر بندی کی کیفیت پیدا ہوگئی تھی، لیکن خودمہا جرین کواریا کوئی احساس نہ تھا اور کوئی تکلیف بھی پیش نہ آئی۔

كابل

کائل پنچا آئیں کو وال کے بنگلے پر لے گئے، اس نے کہا کہ امیر صاحب کو آپ لوگوں کے آنے کی خبر ہے، اگر واپس جانا چاہوتو پور ہے آرام ہے پہنچا نے کا انظام کر دیا جائے گا۔ مہا جرین اس پر بگڑ ہے اور کہا کہ ہمیں کسی ذریعے سے ترکی پہنچا دو، جو اب ملا کہ اس کی کوئی صورت نہیں، البتہ تہمیں اپنے پاس تھہراؤں گا، چنا نچہ بنگلے ہی کے ایک حصے بیس تھہرایا گیا اور پہر ہے لگا دیے گئے۔ اس وقت آشکارا ہوا کہ یہ آزادی نہیں قید ہے، برخص کے لئے تمیں روپے ما ہانہ وظیفہ مقرر ہوگیا، انہوں نے کھانا لیکا نے کے سلسلے ہے، برخص کے لئے تمیں روپے ما ہانہ وظیفہ مقرر ہوگیا، انہوں نے کھانا لیکا نے کے سلسلے میں کام بانٹ لیے، کھانا پکا، کھاتے اور بیٹھے رہتے ، بھی بھی پولیس کے بہر ہے میں باہر بھی پھی پھرایا جاتا، بین اس موقع پر سرحد کے طلبہ کی ایک جماعت بھی آئی، وہ ہرجگہ یہی کہتی آئی تی، وہ ہرجگہ یہی کہتی آئی تی، وہ ہرجگہ یہی کہتی آئی تی خوانی ہی ہے، بھی جائیں ہم سے پہلے آنے والے لوگ جارہے ہیں وہیں ہم بھی جائیں گے، جنانے انہیں بھی نظر بند کر دیا گیا۔

جب ترکی اور جرمنی کا وفد کابل پہنچا، مولا نابر کت اللہ اور راجا مہندر پرتاپ وفد کے ساتھ آئے ، ان کی سفارش پر پہرے اٹھا گئے گئے اور چلنے پھرنے کی آزادی ل گئے۔ یہی

زمانہ ہے جس میں طلبہ کے مختلف وفود باہر کے ملکوں میں بھیجے گئے، تفصیل آ مے بیان ہوگی مشن تاکام والیس گیا تو پھر ان لوگوں کیلئے قید کا تھم ہوگیا، چنانچہ بیدایک الگ مکان میں پہنچاد ہے گئے جس کے دروازے پر پہرے دار بیٹھے دہتے تھے، اب آپ ایک ایک کی داستان الگ الگ سنیں۔

ڈاکٹر رحمت علی

ڈاکٹر رہمت علی فرماتے ہیں کہ قید سے نگ آگیا، اور میں نے فیصلہ کرلیا کہ جس طرح بھی ممکن ہو بہاں سے بھاگنا چاہئے، بھاگئے میں بڑی مصبتیں تھیں، مکان کے دروازے پر ہروقت پہرہ رہتا تھا، رات بی کے وقت نگلناممکن تھا، کیکن اس زمانے میں نو بچ شب کوتو پ چلتی تھی جس کے بعد کوئی شخص خاص اجازت نامے کے بغیر کھر سے باہر نہ پھر سکتا تھا۔ سوچ بچار کے بعد مولوی عبدالرزاق (۱) کوساتھی بنایا، یہ بھی ترکی جانے کے لئے مفطر ب تھے، شہر کے کونے پرایک سج تھی، اسے ملاقات کا مقام مقرد کرلیا۔

ڈ اکٹر صاحب نے شب کے ساڑھے آٹھ بے نکلنے کی ہمت کی، پہلے اپنی پوشین فراکٹر صاحب نے شب کے ساڑھے آٹھ بے نکلنے کی ہمت کی، پہلے اپنی پوشین

ایک رسی میں باندھ کرطاتے کے رائے نیچ گرائی جوایک گلی میں کھلّاتھا، پھرخود فکے اور توپ چلنے سے پیشتر مسجد میں پنچے، وہاں عبدالرزاق صاحب ند ملے، مسجد بندھی، چتانچہ بیشہر سے باہرنکل کرایک ایسی مسجد میں جا پہنچے جو بے آبادھی، پوسیّن اوڑھی اورا یک کونے میں نیک لگا کر بیٹھ گئے۔

صبح کی نماز کیلئے توپ چلی تو یہ نماز ادا کر کے نکلے، بدی سڑک پر پہنچ تو عبد الرزاق صاحب بھی ٹل مکئے، انہوں نے رات پہلی مجد میں گزاری تھی جس کے درواز سے ملانے بند کردیئے تھے۔ دونوں نے اپنے آپ کو چرکنڈ کے درویش قرار دیا جو ملا صاحب کے

⁽١) ان كمالات ملي بيان مو يك بير-

تھم سے بغرض زیارت مزارشریف جارہے تھے۔ درہ نے شیر والا راستہ اختیار کیا جو بہت خطرناک تھا، راہداری کا ایک جعلی پروانہ تیار کررکھا تھا، منزل بہمنزل چلتے چلتے اورشدید موسم سرما کی مصبتیں سہتے مزارشریف پنچی، وہال مجاہدین چرکنڈ کا ایک محت موجود تھا، اس کے ذریعے سے بخارا جانے کا انتظام ہوا، بخارا میں بھی بزی تکلیفیں پیش آئیں۔ وَاکثر رحمت علی نے چند سال روس میں بسر کئے، جہاں مولوی برکت اللہ کی توجہ سے ان کیلئے اچھا انتظام ہوگیا تھا، پھر یہ فرانس چلے گئے، وہاں بھی بے حدمشقتیں اٹھانی پڑیں۔ آخر اللہ تعالی نے ان کیلئے کشائش کا انتظام کردیا، فرانس ہی میں شادی کی ، ان کے بیجو وہیں تعلیم یارہے ہیں۔

قوموں کے لئے سر مایہ فخر

ڈاکٹر صاحب کا قلب آج بھی آزادی اور اسلامیت کے انہیں خلصانہ جذبات
سے لبر بزے جو انہیں نو جوانی کے عالم میں وطن سے باہر لے گئے تھے، اور جن کی وجہ
سے انہوں نے عمر کا بڑا حصہ اجنبی ملکوں میں گزارا۔ جیسا کہ میں پہلے بار ہاعرض کر چکا
ہوں خدمت ملک وطت یا خدمت انسانیت کا راستہ بڑاہی کشن ہے۔ جولوگ وقتی جوش
کی حالت میں بیراستہ اختیار کر لیتے ہیں وہ غیر معمولی آفات وحوادث پیش آنے پرعمو یا
مشراز ل ہوجاتے ہیں، لیکن جو جوانم دسوج سمجھ کراس میدان میں قدم رکھتے ہیں انہیں
مشرکلات وموانع بھی ہراساں نہیں کر سکتے۔ ڈاکٹر صاحب کود کھے کہ کس طرح ہرآفت
اور ہر حاوث کے کومردائی سے برواشت کیا، نہ ہمت ہاری نہ وہ نصب العین چھوڑا جس کیلئے
انہوں نے زندگی بسری تھی۔ ایسے ہی لوگ ملکوں اور تو موں کیلئے عزت کا سرمایہ ہوتے
ہیں اور انہیں کی بدولت زندگی کے ظلمت زار میں روشن کی کر نیں جلوہ گررہتی ہیں۔ ڈاکٹر

عبدالرشيد

ان کے حالات پہلے بیان ہو چکے ہیں، انہوں نے یا خستان پہنے کرا پنا نام یوسف رکھا تھا۔ مولا نامجہ بشیرانہیں کا بل سے اپنے ہمراہ چرکنڈ لے آئے تھے اور بیٹے کی طرح رکھتے تھے۔ غالبًا یہ یا خستان کے ان دوروں میں بھی شریک رہے جومولا نانے جا بجامر کز قائم کرنے کیلئے اختیار کئے تھے۔ چرکنڈ سے امیر نعمت اللہ نے انہیں اسمست بلا کر اپنا کا تب خاص اور معتدمقرر کر لیا۔ صونی عبداللہ کا بیان ہے کہ یہ چرکنڈ کے امیر عبدالکرم تنوجی کے ہمراہ اسمست گئے تھے، کا تب خاص ہونے کے دوران میں یوسف پر بید تھیقت منطف ہوئی کہ امیر نے انگریزوں کے ساتھ کوئی نہ کوئی مفاہمت کرلی ہے جس کی وجہ منطف ہوئی کہ امیر نے انگریزوں کے ساتھ کوئی نہ کوئی مفاہمت کرلی ہے جس کی وجہ جماعت کی مجاہدانہ سرگرمیاں مختل ہورہی ہیں، نیز ہندوستان سے جورو پیدآ تا تھا وہ جماعت کی مجاہدانہ سرگرمیاں مختل ہورہی ہیں، نیز ہندوستان سے جورو پیدآ تا تھا وہ جو جاتے امیر کے ذاتی مصارف و مصالح کی نذر ہوجا تا تھا۔ اس وجہ سے مختلف اصحاب کے دل میں تکدر پیدا ہوگیا تھا اور بعض پریشان و موجا تا تھا۔ اس وجہ سے مختلف اصحاب کے دل میں تکدر پیدا ہوگیا تھا اور بعض پریشان و موجا تا تھا۔ اس وجہ سے مختلف اصحاب کے دل میں تکدر پیدا ہوگیا تھا اور بعض پریشان و مالیس ہورہی ہیں ہورہ کے دائی مصارف و مصالح کی نذر

یداطلاعات ہندوستان پنجیں تو مختلف مرکزوں نے چندہ جمع کرنا چھوڑ دیا ، یا وہ رقمیں جمع کرتے تو اسمست کے بجائے چرکنڈ بھیج دیتے۔ یوسف ان مصیبتوں سے بہت متاثر ہوئے۔ طے کرلیا کہ امیر نعمت اللہ کوموت کے گھاٹ اتارے بغیر جماعت کانظم و وقارقائم نہیں رہ سکتا ، اوراس کام کے لئے تنجائش پیدانہیں ہوسکتی جواس جماعت کا مقصد وحید تھا۔ جیسا کہ پہلے بتایا جا چکا ہے انہوں نے موقع پاکرامیر کوختم کر دیا ، پھرخو دبھی اس جگہ مارے گئے۔ جن اصحاب نے انہیں دیکھا تھا وہ پورے وثوتی سے کہتے ہیں کہ یوسف جگہ مارے گئے۔ جن اصحاب نے انہیں دیکھا تھا وہ پورے وثوتی سے کہتے ہیں کہ یوسف بڑاہی غیور مختلص اور بہا درنو جوان تھا ، مولا نامحمد بشیر کی رائے بھی بہی تھی ، وہ فر ماتے تھے کہشر کی دائے بھی کہ یوسف کے شد یداشتھال کی حالت میں اس سے بیتر کت سرز دہوئی۔

محمدحسن

ی سلع سیالکوٹ کے رہنے والے ہیں، سرحد بی کی انہوں نے اپنا نام یعقوب رکھ لیا تھا اور اب تک ای نام سے مشہور ہیں۔ پہلا نام بہت کم اصحاب کو معلوم ہے، وہ سرحد سے افغانستان پنچے اور تمام مجاہدانہ سرگرمیوں میں نمایاں حصہ لیتے رہے۔ جب جرمن اور ترکی وفد نے خبری بے کو یاغستانی قبائل کی تنظیم پر مامور کیا تھا تو ہندوستانی کارکنوں میں سے مولوی یعقوب ہی کو خبری بے کے ساتھ بھیجا گیا تھا، یاغستانیوں میں سے جولوگ انگریزوں کے تریاثر تھے، انہوں نے خبری بے اور ان کی پارٹی پر حملے کرائے، پھر مجبوری میں انہیں خاصی دیر تک مخالفت کا ہدف بنائے رکھا۔ بہادر یعقوب نے تمام تکلیفوں کا مرد انہ دار مقابلہ کیا، پھروہ کابل چلے گئے اور دہیں تھیم رہے۔

بچہ سقاؤ کے دورِنساد میں بھی یعقوب نے افغانستان کی گرال قدر خدمات انجام دیں، وہ مرحوم نادر شاہ اوران کے بھائیوں کے ہمراہ تھے۔ قبائل کی یہ حالت تھی کہ آج نادر کے ساتھ ہوجاتے اور دوسرے دن کوئی فضول و بے بنیاد عذر پیش کر کے خالفوں کے ساتھی بن جاتے ۔ مولوی یعقوب نے آخری وقت تک تحریک اصلاح کاساتھ دیا اور جانبازی میں کوئی کسراٹھا نہ رکھی، کامیا بی کے بعد انہیں دارالتر جمہ میں کوئی عہدہ دے دیا گیا تھا، میں ۱۹۳۳ء میں ان سے ملاتھا تو دارالتر جمہ ہی میں مامور تھے۔ حضرت شخ الہند مرحوم کے ترجمہ قرآن اور تفییری حواثی کا ترجمہ فارسی میں کرایا گیا تو مولوی یعقوب بھی اس کام میں معادن رہے۔ سناجاتا ہے کہ بعد میں ان کے متعلق حکومت افغانستان کوغلط فہمی پیدا ہوگئی، اب معلوم نہیں کس حال میں ہیں۔

عبدالله اورعبدالرحمن

یدوونو احقیقی بھائی تھے،ان کے مجاہدانہ کارناہے بھی بڑے قابل قدر ہیں۔مولوی

عبدالرزاق نے مجھے بتایا ہے کہ عبداللہ کھ مدت کا بل میں گزار نے کے بعد چرکنڈ آگئے تھے اور جماعتی کا موں میں شریک رہے۔ اتفاق سے وہاں اختلافی صورت بیدا ہوگئی اور اس میں وہ بے چارے موت کے گھاٹ اتارے گئے۔ اصل معاملے کی تفصیلی کیفیت واضح نہ ہو تکی۔ ڈاکٹر رحمت علی فرماتے تھے کہ وہ جس زمانے میں یاغستانی قبائل کومنظم کرر ہے تھے کہ وہ جس زمانے میں یاغستانی قبائل کومنظم کرر ہے تھے کہ وگئے۔

عبدالرحمٰن جب ساتھ گیا تو نوعمرتھا، اس نے بدستورا پی سرگرمیاں جاری رکھیں، کچھ مدت کیلئے وہ چپ چاپ میا نوالی کے ضلعے میں تقیم ہو گیا تھا، پھرافغانستان واپس چلا گیا،ایک مرتبد وہاں کسی وجہ سے قید بھی ہو گیا تھا،ر ہائی کے بعد وہیں وفات پائی۔

مولوى عبدالبارى اورذ اكثر شجاع الله

ہماری دستورساز اسمبلی کے رکن مولوی عبدالباری بھی ان طلبہ میں شامل سے جنہوں نے فروری ۱۹۱۵ء میں بھرات کی تھی۔ کابل میں یہ مہاجر نوجوانوں کی جماعت کے صدر بن گئے تھے، جب ترکی اور جرکن مثن کابل پہنچا اور مولا نا عبداللہ نے اس کے ارکان سے ملاقاتوں کا سلسلہ شروع کیا تو مولوی عبدالباری ہی مولا نا کے تر جمان کی خدمات انجام دیتے رہے۔ پھر حکومت موقتہ ہند (مقیم کابل) نے ایک وفد ترکی بھیجنے کافیصلہ کیا، اس کیلئے مولوی عبدالباری اور ڈاکٹر شجاع اللہ مقرر ہوئے اور یہ وفد ایران کے داست ترکی روانہ ہوا۔ مولا ناعبیداللہ نے اس کے لئے ایک سوپونڈ مولا نامحہ بشیر سے قرض لیے تھے، جو بعد میں اوا کرد سے گئے۔ مولا نافر ماتے ہیں کہ اس وفد کو انگر یزوں نے ایران میں گرفتار کرلیا اور دونوں صاحبوں کو لا ہور لے آئے، یہاں ان سے حکومت موقتہ وغیرہ میں طلا ت تکھوا لئے گئے اور آئیوں کہ عرصہ نظر بندر کھ کرر ہاکردیا۔

و اکثر شجاع اللہ شخ عظیم اللہ کے بھائی تھے، افسوس کہ مدت ہوئی وہ فوت ہو چکے ہیں۔مولوی عبدالباری نے مسلم لیگ کی تحریک ہیں جو پچھے کیا،اس کاذکر یہاں غیرضروری

ہے، آج کل وہ مجلس دستورساز پاکستان کےرکن ہیں۔

عبدالقادرآ زر

یہ گورنمٹ کالج لا ہور کے طالب علم تھاور جب میں نے انہیں دیکھا تھا تو ہوئے خوش پوش رہتے تھے۔نظر بظاہر کسی کواحساس نہ ہوسکتا تھا کہ جمرت اور جہاد کی بلاا تگیز ہوں کے لئے تیار ہو سکتے ہیں، تا ہم جب کام کا وقت آیا تو انہیں آرام وراحت کی زندگی چھوڑ کرتکلیفوں اور مصیبتوں کالیل ونہار افتیار کرنے میں ایک لمحے کے لئے بھی تامل نہ ہوا۔ کا بل سے حکومت موقتہ نے انہیں ڈاکٹر متھر اسکھ کے ساتھ جاپان بھیجا تھا اور افغانستان کا بل سے جاپان جانے کا محفوظ راستہ روس کے سواکوئی نہ تھا۔

جونبی ڈاکٹر متھر استگھ اور عبد القادر آزرنے سر صدروس میں قدم رکھا، حکومت روس نے انہیں گرفآد کرکے انگریزوں کے حوالے کر دیا، چنانچہ وہ لا ہور لائے گئے ۔ مولا تا عبید اللہ کے بیان کے مطابق موصوف نے بھی مولوی عبد الباری کی تیار کر دہ تحریر پر دستخط کردیئے۔(۱) کچھ دیرنظر بندرہ کر دہ بھی رہا ہوگئے۔افسوس کہ انہوں نے جوانی ہی میں وفات یائی۔

ڈ اکٹر متھر اسکے ہم کے ایک مقد ہے کا مفر ورتھاءاسے پھانسی کی سز ادی گئی۔ (۲)

(۱) کابل بین سانت سال بین ۲۳:

(۳) کابل میں سات سال ہیں ۳۰ کے سولوی محم علی تصوری نے مشاہدات کابل و یا عستان میں ایک و اکثر منگل سنگھ کا ذکر کیا ہے ، جس کا بینا ماس وجہ سے رکھا گیا کہ دہ مولوی صاحب کے پاس منگل کے دن پہنچنا تھا۔ میرے دل میں بار بارشہ بیدا ہوتا ہے کہ بید و اکثر محمر استگھ ہی تھا۔ مولوی صاحب فر باتے ہیں کہ بیہ بنگال کی دہشت پہند جماعت کارکن تھا والے ہے ہوئی کی میزا کا تھم سایا گیا تھا والے ہے ہوئی جہنچ کی تجویز تھی ، دوسیوں نے گرفتار کر کے اگریز دل کے حوالے کردیا، جب بھائی کی میزا کا تھم سایا گیا تو اس نے مسکرا کر کہا کہ میری آخری تمنا پوری ہوئی۔ بھائی کے دفت تک اس کا دزن بارہ پونڈ بڑھ گیا ، میزا کے نفاذ کے وقت اس سے بوچھا گیا کہ کوئی خواہش ہوتو تنا دو، اس نے جواب دیا: میری آخری خواہش بیہ ہے کہ میری موت انگریزی کفن میں آخری کیل طابت ہو۔ غرض وہ بڑائی جری اور نڈر کارکن تھا۔ (مشاہدات کابل ویا طابتان میں: ۲۱ میران کوئی خواہش بیت ہو۔ غرض وہ بڑائی جری اور نڈر کارکن تھا۔ (مشاہدات کابل

مہا جرطلبہ میں ایک عبدالحمید صاحب بھی تھے جنہیں ماسٹر عبدالحمید کہا جاتا تھا، وہ باہر مختلف قوی وطنی سرگرمیوں میں شریک رہے، پھر واپس آ گئے تھے، اب معلوم نہیں کہاں ہیں۔

يثنخ محدابراتيم

شیخ صاحب سندھ کے نومسلم سے ، صبیبیہ کالج کابل میں تاریخ کے پروفیسر مقرر ہوئے _مولوی مجمع علی قصوری کے رفیق خاص اور دونوں ایک ہی مکان میں رہتے ہے۔ مولا ناعبید اللہ کابل بہنچ تو اس مکان سے قریب ہی ایک مکان کرائے پر لے لیا تھا اور شیخ مجمد ابراہیم ہی کی وساطت سے مولا نا ان لوگوں سے ملے جن کے لئے ان کے پاس تعارفی خطوط سے مولا نا فرماتے ہیں کہ ان کا تمام اندوختہ ہمارے ہی کام میں صرف بوا مولوی مجمع ملی کے ساتھ انہیں بھی پروفیسری سے ملیحدہ ہونا پڑا تھا اور یہ یا عستان چلے ہوا۔ مولوی مجمع ملی کے ساتھ انہیں بھی پروفیسری سے ملیحدہ ہونا پڑا تھا اور یہ یا عستان چلے آئے سے اور پشتو سکھ کرلوگوں کوقر آن شریف کی تعلیم دیتے رہے۔ (۱)

مولوی محمطی قصوری لکھتے ہیں کہ شیخ محمد ابراہیم کودوادر رفیقوں کے ہمراہ ایران کے رائے میں استے ترکی بھی شہید کردیئے گئے تھے۔(۲) مولانا عبید اللہ فرماتے ہیں کہ شیخ محمد ابراہیم نے افغانستان سے گذر کر روس پہنچنے کی کوشش کی، کیکن افغانستان سے گذر کر روس پہنچنے کی کوشش کی، کیکن افغانستان کے ایک گاؤں میں فوت ہوگئے۔

شبر کیا جاتا ہے کہ ڈاکو یا عستان سے ان کے ساتھ تھا، اس نے شیخ صاحب کوشہید کر دیا۔ آخری وقت میں شیخ محمد ابراہیم نے اپنے دوسرے ساتھی کوایک خط لکھ دیا، وہ میں نے پڑھا ہے، اس کے ایک لفظ سے شبہ ہوتا ہے کہشنخ صاحب سمجھانا جا ہتے ہیں بہت ممکن ہے وہ ڈاکونہ ہو بلکہ آگریزوں کا کارندہ ہو۔ (۳)

⁽۱) كايل مين سات سال من ٢٥٠ ١٥٨ ٢٥٠ (٢) مشابدات كابل وياضعان من ١٢٨-١٢٩

⁽r) كابل مين سات سال يمن ٢٠٠

آ تفوال باب:

اسلامیت کے جواہر پارے (۴)

سردارعبدالمجيدخال

و اکثر رحت علی نے بتایا کہ بیغالبًا میانوالی کی طرف کے تھے، مزید حالات معلوم نہ ہو سکے۔ مولوی عبد الرزاق کے قول کے مطابق مباجر طلبہ نے انہیں اپنا سردار بنائیا تھا، انہوں نے اسیری کی تکیفیں بڑے صبر سے برداشت کیں اور غالبًا ۲۲ برجمادی الاخریٰ ۱۳۳۵ھ (۱۹ مرابر بل ۱۹۱۵ء) کو کابل میں وفات پائی۔ مولوی عبد الرزاق نے بتایا کہ سردار مرحوم کے دفیق عبد القادر آزرنے ان کے لوح مزاد کے لئے ایک قطعہ کہا تھا، جس کے صرف دوشعر یادرہ گئے:

کرد ہجرت ز ہند بہر غزا گشت راحل بہ سوئے دار بقا (۱) آه! عبد المجيد خال مرحوم بست و ششم جمادی الثانی

ميرظفرحسين

یہ کرنال کے ایک معزز گھرانے کے چٹم و چراغ ہیں، گورنمنٹ کالج لاہور کے نہایت قابل طلبہ میں شارہوتے تھے، اور ریاضی میں خصوصاً انہیں خاص کمال حاصل تھا۔ جمرت کے بعد اسمست ہوتے ہوئے کا بل گئے، وہاں ابتدا میں اپنے ساتھیوں کے ہمراہ (۱) آخری شعرے فیرموزوں ہونے سے بحث نیں، بیاشعار مرف بطوریادگاردرج کئے جارہے ہیں۔ تکلیفیں اٹھائیں ہمین ان ارباب عزیمت میں سے تھے جومشکلات کے جوم اور مصائب و نوازل کے تو اثرکی بناء پر اپناسوچا سمجھا ہوارات بد لنے پر بھی آ مادہ نہیں ہوتے - نادر شاہ مرحوم کے خاندان سے بہت اچھے روابط پیدا ہوگئے تھے اور حق بیہ ہے کہ یہال سے جتنے اصحاب ہجرت کرکے کابل گئے ، ان میں سے جسکو راحت و آسائش کی چند ساعتیں نفییب ہوئیں ان میں سب سے زیادہ حصدای خاندان کی تو جہات ومساعی کا تھا۔

قیام کابل کے دوران میں میر ظفر حسن ہراس تح یک میں شرکی رہے جو ہندوستان
کی آ زادی اور سلمانون کی سرباندی کے لئے جاری ہوئی۔ افغانستان کی جنگ استقلال
میں امیر امان اللہ خاں نے نادر شاہ مرحوم کوخوست کے محاذ پر بھیجا، مرحوم کے بھائیوں میں
سے سردار شاہ ولی خاں اور سردار شاہ محمود خاں ساتھ تھے، منظم اور قواعد داں فو جیس بہترین
ساز دسامان کے ساتھ اس سے پیشتر ڈکہ اور چین کے محاذ وں پر بھیجی جا چکی تھیں، اس لئے
امان اللّٰہی دور کے آغاز میں نادر شاہ مرحوم اوران کا خاندان زیر عماب تھا۔ جب حالات
نے ابن کی خد مات سے فائدہ اٹھا تا تاگریر بنادیا تو نہ تربیت یافتہ افسر باقی تھے اور نہ اچھا
سامان ، لیکن نادر شاہ خدا کا نام لے کرغیر قواعد داں اور غیر منظم لٹکر ہی کے ساتھ حفاظت
کی بناء پر ان

قابل فخركام

اس فوج کے ساتھ صرف چند تو پیس تھیں، لیکن ماہر تو پکی کوئی نہ تھا، توپ چلا تا بھی خاصی مہارت کا کام تھا، لیکن اس سے بدر جہازیادہ بیضروری تھا کہ تو بوں کی شست ٹھیک رہتی تا کہ گولے نشانے پر ہیٹھتے۔ بیکام اسی صورت میں بہطریق احسن انجام پاسکتا تھا کہ فاصلے کا اندازہ کرکے توپ کاز اوبید درست کردیا جاتا۔ اس موقعے پر میر ظفرحسن کی ریاضی دانی بے صدکارگر ثابت ہوئی، وہ فاصلے کا حساب کر کے بتادیتے کہ کونساز او بدر کھنا چاہئے اور اس کے مطابق گولے برسائے جاتے۔سب سے پہلا گولہ ناور شاہ مرحوم نے خود بھینکا۔ٹل کی فتح اس کارنامہ ناور شاہ مرحوم کا تھالیکن میر ظفر حسن بھی اس میں شریک تھے، اسی فتح کے بعد متار کے کا فیصلہ ہوا، بعد از ال شرا لکا صلح طے ہوئیں، جن کے مطابق افغانستان کی خارجہ پالیسی مدت مدید کے بعد آزاد ہوئی، اور ملک کواستقلال ملا۔

مولانا عبیداللہ مرحوم فرماتے ہیں کہٹل کے محاذ پر میر ظفر حسن کے کارنا ہے بہت زیادہ تحسین کے قابل سمجھے گئے:

سلطنت افغانیا سے امارے کی ہندوستانی بھائی گزارا کرتے رہے۔(۱)

تخواہ دیتی رہی جس سے امارے کی ہندوستانی بھائی گزارا کرتے رہے۔(۱)

مطلب یہ کہ اصل تخواہ جنگ پل کی خدمات جلیلہ کے صلے میں مقرر ہوئی تھی لیکن

ان سے ایک برائے نام خدمت بھی متعلق کردی گئی تھی۔ میر ظفر حسن کی شانِ ایٹار ملاحظہ

ہوکہ اس شخواہ میں سے صرف تھوڑی ہی رقم اپنے گزارے کے لئے رکھ لیتے اور باقی رقم

رفیقوں کے حوالے کردیتے جن کے گزارے کی کوئی صورت نہ تھی ،یا جو پچھوہ مکاتے

مینے ،تمام ضرریات کے لئے کفایت نہ کرتا تھا۔

افغانستان سے ترکی

⁽۱) کافی شریاحیال این:۸۲

گئے تھے۔روس وینچنے کے بعد ڈاکٹر خوتی محمد نے ایسی با تیس شروع کردیں جن کامطلب میہ تھا کہ کمیونزم کی غیر مشروط تائید کے بغیر کام نہ چل سکے گا۔ مولا نا کے لئے یہ مشکل پیش آئی کہ ان کا انحصار زیادہ تر ڈاکٹر خوتی محمد پر تھا اور اس کے بغیر موصوف کے لئے گزارے کی بھی کوئی صورت نہتی۔ میر ظفر حسن نے اپنی تخواہ میں سے باون پونڈ کی رقم بچار کی تھی ،وہ بہتو تف مولا نا کے حوالے کردی تا کہ اسے اپنے صرف میں لائیں اور روز مرہ کی ضروریات سے بے پر داہوکر ارکانِ حکومت سے آزادانہ گفتگو کریں ،اس سے میر ظفر حسن کی عالی ہمتی ، بلندنگا ہی اور اصول پر دری کا اندازہ ہوسکتا ہے۔

یہ معلوم نہ ہوسکا کہ گئی مدت روس میں تھہرے، وہاں سے ترکی پہنچ گئے اور استنبول کے جنگی کالج میں تعلیم پاکرتر کی فوج میں معزز عہدے پر مامور ہوئے۔ پھروہ جنگی کالج میں انگریزی کے پروفیسر مقرر ہوگئے، ترکی ہی میں شادی کی اور ظفر حسن ایک مشہور ہوئے۔ اب پنشن لے بچے ہیں اور استنبول میں مقیم ہیں۔ ۱۹۳۹ء میں دو تین مہینے کے لئے یہاں بھی آئے تھے، گو یا چونتیس سال کے بعد انہوں نے اپناوطن دو بارہ دیکھا اور وہ اس حال میں کہ ان کے تمام اقر بااصل وطن سے جمرت کرکے پاکستان آ بچے تھے۔ اس حال میں کہ ان کے تمام اقر بااصل وطن سے جمرت کرکے پاکستان آ بچے تھے۔

جنگی خدمات کےعلاوہ انہوں نے علمی سرگرمیاں بھی جاری رکھیں ،ان کا ایک بہت بڑا کار نامہ ریہ ہے کہ مولا ناشبلی کی شہرہ آفاق سیرت النج گوانہوں نے ترکی زبان میں منتقل کیا ،اس قتم کے جامع اوصاف آ دمی بہت کم پیدا ہوتے ہیں۔

كابل ميں ايك صحبت

میں ۱۹۳۳ء میں کابل گیا تھا تو میر ظفر حسن کابل آئے ہوئے تھے، نادر شاہ مرحوم نے تخت نشینی کے بعد فوجی تعلیم کا انتظام از سر نواعلی پیانے پر کیا تو ترکی حکومت سے چند افسروں کی خدیات مستعار کی تھیں، ان میں میر ظفر حسن کو بہ طور خاص بلوایا تھا۔ انہیں میرے متعلق علم ہواتو بے تکلف آئے اور ہڑی دیر تک خفگی آمیز باتیں کرتے ہے۔

واقعہ یہ ہے کہ اس زمانے ہیں مسلمانوں نے جو پالیسی اختیار کررکھی تھی ،اس میں

کانگرس سے تشکش بیدا ہوگئ تھی ،اصل معاملہ آئندہ کے نظام حکومت کا تھا، مسلمان ایسے

تخفظات چا ہے تھے جن میں ان کی مستقل حیثیت محفوظ ہو سکے۔اس پالیسی کے اسباب

وتفصیلات سے باہر کے بھائی پوری طرح آگاہ نہ تھے اور ان کا احساس بیتھا کہ مسلمان

ہندوستان کی آزادی میں رکاوٹ پیدا کررہ ہیں۔میرظفر حن کی خفگی کا سبب یہی تھا۔

میں نے عرض کیا کہ اس طرح تو ہم کسی نتیج پرنہیں بہنج سکتے ، پہلے مجھ سے سنے کہ حالات

میں منے عرض کیا کہ اس طرح تو ہم کسی نتیج پرنہیں بہنج سکتے ، پہلے مجھ سے سنے کہ حالات

کیا ہیں ،مسلمانوں کے مطالبات کیا ہیں اور جو کشش جاری ہے اس کی ذمہ داری کس پر

عائد ہوتی ہے۔اس کے بعد جورائے عالی ہوا سے تو جہ سے سنوں گا اور اگر ہم لوگوں سے

کوئی غلطی سرز دہور ہی ہے تو اس کی تلافی میں تامل نہ ہوگا۔

کوئی غلطی سرز دہور ہی ہے تو اس کی تلافی میں تامل نہ ہوگا۔

اس کے بعد ایک مرتبہ خودان کے بنگلے پراجماع ہوا، جس میں مولا نامحر بشیر، ڈاکٹر نورمحر، مولوی عبد الرزاق، مولوی یعقوب اور بعض دوسر ے احباب شریک ہے، دوسری مرتبہ ڈاکٹر نورمحد کے بنگلے پر بارہ ہے ؛ و پہر سے دات کے بارہ ہے تک مسلسل گفتگو ہوتی رہی، میں نے مسلمانوں کا نقطہ نگاہ اور موقف تفصیل سے واضح کردیا تو میر ظفر حسن نے فرمایا کہ میں قومی معمالح میں ظلل ڈالنے کا خیال بھی نہیں ہوسکتا تھا، جو پھے ضروری ہوکرو، تاہم آزادی کی تحریک کوزیادہ سے زیادہ تفویت پہنے ؤ۔

اس دلکشاصحبت کی یا داب تک ذہن میں تازہ ہے، میر ظفر حسن جب پاکستان آئے تو آرزو تھی کہ پھران سے اس طرح بات چیت کا موقع مل جائے ، کیکن وہ زیادہ وقت نکال نہ سکے بصرف دو گھنٹے کے لئے غریب خانہ کومشرف فرمایا۔

سردارالله نوازخال

یہ ملتان کے ایک امیر گھرانے کے فرزند ہیں، کابل کینچنے کے بعد یہ بھی نادرشاہ مرحوم کے خاندان سے بہطور وابستہ ہو گئے تھے، کچھ معلوم نہ ہوسکا کہ انہوں نے پہلے کیا کارنا ہے انجام دیئے۔ راجا مہندر پرتاپ نے لکھا ہے کہ حکومت موقتہ میں انہیں سکریٹری کا عہدہ دیا گیا تھا، بچہ سقاؤ کے دوراقتدار میں نادرشاہ مرحوم نے افغانستان کو فوضویت کے بحران سے نجات دلانے کیلئے جہاد شروع کیا تھا تو ہوی قابل قدر خدمات انجام دیں۔ کہاجا تا ہے کہ وہی وزیریوں کے اس لشکر کو تیار کرکے لے مجئے تھے جس نے سردارشاہ دلی خال اور سردارشاہ محدود خال کی سرکردگی میں براہ راست کابل پر پیش قدمی کی اوراسے فتح کرکے بچے سقاؤ کا اقتدار ختم کیا۔ نادرشاہ مرحوم کوقوم نے بادشاہ نتخب کرلیا تو سردار اللہ نواز خال کو در بارافغانستان کی طرف ہے جرمنی میں سفیرمقرر کردیا گیا۔

رينمي خط رينمي خط

مردار الله نواز خال كاايك بھائى محرنواز خال بھى ساتھ گياتھاليكن وہ جلدواليل آگيا۔ شخ عبدالحق سردار الله نواز خال ہى كے خاندان كاملازم تھا، جس كے ہاتھ مولانا عبيدالله مرحوم نے ايك خطريشي پارہ پر پر لكھ كر حضرت شخ الهند مرحوم كے پاس مكم معظمه بھيجنا جاہا تھا۔ شخ عبدالحق كوتا كيدكى تھى كہ يہ خط شخ عبدالرحيم سندھى كو پہنچا ديا جائے، انہيں لكھ ديا تھا كدوہ اسے خودشخ الهند كے پاس مجاز لے جائيں ياكمى معتبر آدى كے ہاتھ بھيج ديں۔ مولانا فرماتے ہيں:

اس الله کے بندے نے دہ خطوط الله نواز خال کے والدخان بہادردب نواز خال کو دینچادیے،اس کے واز خال کو پہنچادیے،اس کے بعد کے واقعات مشہور ہیں۔ ہندوستان میں گرفتاریاں شروع ہو کیں ہم جیران

رہ گئے، چندروز کے بعد حضرت شخ البند اوران کے رفقاء مکم معظمہ ہے گرفتار ہوئے ، چندروز کے بعد جمیل حقیقت معلوم ہوئی ۔ بیوا قعات ہمارے لئے موت سے زیادہ نا گوار تھے۔(1)

ڈا کٹرخوشی مح**ر**

مولا تا عبیداللد مرحوم کے بیان کے مطابق بیضلع جالندھر کے تھے، میڈیکل کالج لا ہور میں دوسال سے زیادہ تعلیم یا چکے تھے، دل ند ہی جذبات سے لبریز تھا، ہجرت کے بعد کابل میں رفیقوں کے ہمراہ قید کی تکیفیس اٹھا کیں، قیام کابل کے دوران میں مولانا عبیداللہ سے وابستگی پیدا ہوئی، انہیں حکومت موقتہ میں سکریٹری بنادیا گیا تھا۔

جب حکومت موقت (مقیم کابل) کی طرف ہے ایک وفدروں بھیجے کا فیصلہ ہوا تو راجا مہندر پرتاپ چاہجے سے کہ ڈاکٹر متھر اسکھ کو بھیجا جائے ، جومقد مہ بم کامفرور تھا اور اس کا ذکر پہلے آ چکا ہے، مولا نا عبید اللہ نے اصرار کیا کہ ڈاکٹر متھر اسکھ کے ساتھ ایک مسلمان نوجوان کو بھی جانا چاہئے تا کہ وفد کی حیثیت بیں جامعیت بیدا ہوجائے اور سمجھا جائے کہ یہ ہندوستان کی دو بڑی قو موں کا نمائندہ ہے۔ یہ مسئلہ سردار نفر اللہ خال تا نب السلطنت کے سامے بیش ہوا تو اس نے فریقین کے دلائل من کرمولا نا عبید اللہ کی تجویز السلطنت کے سامے بیش ہوا تو اس نے فریقین کے دلائل من کرمولا نا عبید اللہ کی تجویز منظور کرلی۔ چنا نچہ ڈاکٹر خوشی محمد کو ڈاکٹر متھر اسٹھ کے ساتھ بھیجا گیا اور ان کا نام میر زامجم علی رکھا گیا۔

روس میں کام

ڈاکٹر متھر استھے کے لئے راجا مہندر پرتاپ نے خرج کا نظام کردیا، ڈاکٹر خوشی محمد کے مصارف سفر کے لئے مولانا عبیداللہ نے مولوی محمد علی قصوری سے ذکر کیا اور انہوں

⁽۱) كالمل مي سات سال من ٢١

نے دومینے کی تخواہ پینگی حاصل کر مے مولانا کی نذر کردی۔ ان کے ساتھ دوخادم بھی گئے ایک مسلمان اور دوسرا کا بلی سکھ۔ وفد تاشفند پنجا تو زار کی طرف ہے تھم آیا کہ ارکان کو گرفتار کر لیا جائے ، تاشفند کے گورز نے مداخلت کر کے انہیں قید سے بچایا اور بیلوگ واپس آگئے۔ مولانا فرماتے ہیں:

یہ مشن بے کار ثابت نہیں ہوا، روی واگریزی اتحاد میں یہ کسی قدر مشکلات پیدا کرسکا، جن کی تلائی کے لئے لارڈ کچنز کوخود سفر کرنا پڑا۔ روی انقلا یوں نے ایک بمفلٹ شائع کیا جس کا نام (روی زبان میں) ہے "سونے کی پڑئی پر کندہ کرایا گیا تھا) اس میں مشن کے متعلق خط وکتابت ندکور ہے۔(ا)

مولانا لکھتے ہیں کہ یہ وفد واپس آیا اور سر دار نفر اللہ خال نے تفصیلات سفر معلوم کرنی چاہیں تو ڈاکٹر متھر اسٹکھ ہر سوال کے جواب میں یہی کہتا: بخیر رفتنم و بخیر آ مدیم (ہم خیریت سے گئے اور خیریت سے آئے) ڈاکٹر خوشی محمد عرف میر زامحمہ نے تخلیے میں یاد داشتوں کی کتاب جیب سے نکالی اور مفصل حالات سفر کے علاوہ مختلف لوگوں سے بات داشتوں کی کتاب جیب سے نکالی اور مفصل حالات سفر کے علاوہ مختلف لوگوں سے بات چیت کا خلاصہ بھی پیش کردیا۔ (۲)

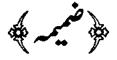
بعدكے حالات

پھرڈ اکٹر خوثی محمد نے پچھ مدت کا بل میں گزاری۔ جب مولا نانے روس جانے کا فیصلہ کیا تو ڈاکٹر خوثی محمد ساتھ تھے۔انہوں نے احمد سن نام اختیار کرلیا تھا، معلوم ہوتا ہے کہ پہلے ہی سفر میں ان پر کمیونزم کا خاصا اثر ہو چکا تھا، دوسری مرتبدروس پنچے تو با قاعدہ عمیونسٹ یارٹی کے مبر بن گئے۔راجا مہندر پرتاب لکھتے ہیں کہ انہیں تھر ڈانٹر بیشنل میں ان کائل میں سات سال ہیں۔ د

ایک اہم عہدہ لل گیا تھا۔ (۱) مولا ناروس سے ترکی ہوتے ہوئے جاز پہنچ گئے، احمد حسن ماسکوہی میں تقیم ہے، غالباً شادی بھی وہیں کرلی تھی۔

میری اخبارنو کی کے ابتدائی دور میں آئی طرف سے اگریزی میں ٹائپ شدہ بیا ٹات وقا فوق آ یا کرتے تھے، جن میں کمیونٹ پارٹی کی سرگرمیاں درج ہوتی تھیں، اور بعض بین الاقوامی مسائل پر تجرہ کیا جاتا تھا۔ پھر یہ سلسلہ مسدود ہوگیا۔ مولوی عبدالرزاق نے مجھے بتایا کہ ۱۹۳۳ء میں وہ کمیونٹ پارٹی کی داخلی شکش کے سلسلے میں گرفتار ہوئے اور برسرافتد ارگروہ نے دوسر ممتاز کمیونٹوں کے ساتھ آئیں بھی موت کی سزادی۔ اسٹالن نے مختلف اوقات میں اپنے مخالفوں کا صفایا کرنے کے جواقد امات کیے، آئیں میں سے ایک اقدام میں ہمارے اس بلند یا بہ بجاہد کی جان بھی گئی، رحمہ اللہ تعالیٰ۔

⁽۱) میری داستان حیات انگریزی مِس:۵۲



خواجهاللدد تااورخواجه عبدالعزيز

جماعت بجاہدین کے معاونوں اور کارکنوں میں جن جن کے حالات معلوم ہو سکے بیان کردیے گئے۔ مجھے یقین ہے کہ معاونوں کی تعدادان سے بدر جہازیادہ ہوگی، لیکن ان سب کے حالات یانام معلوم کرنے کا کوئی فر اید میسرنہ آسکا۔ بعض دوستوں نے ایپ ایپ دائرے میں بڑی سعی فرمائی، جن میں سے مولوی محمد اسحاق صاحب مدیر الاعتصام کا ذکرایک سے زیادہ مرتبہ آچکا ہے، جن دو بزرگوں کے نام زیب عنوان ہیں ان کے حالات بھی موصوف ہی نے خواجہ عبد العزیز کے صاحبز ادے خواجہ محمد ایوسف سے کھوائے۔

خواجہ عبدالعزیز ا کا ؤنٹینٹ جزل کے دفتر میں سپر نٹنڈنٹ تھے،۱۹۴۳ء میں پنشن لی الیکن ۱۹۴۲ء میں دوبارہ ملازمت کرلی۔ ۴۸- ۱۹۴۷ء میں ریاست قلات کے فنانشل سکریٹری تھے۔تریسٹے سال کی عمر یا کر ۱۱رجون ۱۹۵۲ء کو دفات یائی۔

خواجہ عبد العزیز کے دالدخواجہ اللہ دتا ریل کے محکمے میں اسٹیشن ماسر ہتھ۔ میرا خیال ہے کہ جماعت مجاہدین سے تعلق خواجہ اللہ دتا نے پیدا کیا، پھریہ میراث خودخواجہ عبد العزیز نے سنجال لی۔خواجہ صاحب، ان کے دالدادر والدہ کے سواکسی کواس تعلق کا علم نہ ہوسکا اور میتنوں بے حدضا بط، دوراندیش اور مختاط تھے۔

مولوی فضل الٰہی وزیر آ بادی ہے ان کا تعلق بہت گہرا تھا۔خود مولوی صاحب

موصوف نے سنایا کہ ۱۹۱۹ء میں ہجرت کر کے گھر سے نکلاتو فقدم قدم پر گرفتاری کا اندیشہ تھا، پیٹاور بہنچاتو کوئی ایسا آ دی نظر نہ آیا جو جھے پناہ دیتا۔خواجہ عبدالعزیزان دنوں پیٹاور میں متے، رات کے دفت ان کے پاس پہنچا اور پورے حالات بیان کردیئے، انہوں نے بین کلف منہ رائیا۔ دفتر جاتے تو باہر سے قتل لگاجاتے، واپس آتے تو دن ہجر کے حالات سناویتے کئی روز کے بعد مختلف لوگوں سے مل ملاکر رات کے دفت مجھے سرحد سے پار کردیا۔ وہ سرکار ملازم تھے، راز کھل جاتا تو ملازمت بھی جاتی اور اسیر بھی ہوتے، تا ہم کوئی خطرہ انہیں قو می فرض سے روک نے سکا۔

ایک واقعہ خود خواجہ صاحب نے سنایا کہ ۱۹۱ء میں ہم کو چہ بلوچاں مزنگ، لا ہور میں رہتے تھے۔ جماعت بجابدین کے چند کارکن تو می سر مایے کے بونڈ والد کے حوالے کر گئے ،ان میں سے ایک بکڑا گیا اور خداجانے پولیس نے کس تدبیر سے کام لیا کہ اس بے چارے نے پونڈ وں کی مقدار بھی بتادی اور ہمارے گھر کا بتا بھی دے دیا۔ چنا نچہ پولیس ہمارے گھر بیتجی اور پوچھا تو ہم نے انکار کردیا، والدکولائے اور اس کارکن کا سامنا کرادیا۔ انہوں نے فرمایا کہ میں تو اس شخص کو جانتا ہی نہیں۔ پھر کہا گیا کہ اچھا آپ باہر کھڑ ہے ہوکر گھر میں آ واز دیں کہ است پونڈ کی جور قم میں نے کل رکھوائی تھی وہ دے دی جائے ،حقیقت ظاہر ہو جائے گی۔ والد نے یہ بھی کیا، لیکن والدہ نے کہلا بھیجا کہ آپ نے جائے ،حقیقت ظاہر ہو جائے گی۔ والد نے یہ بھی کیا، لیکن والدہ نے کہلا بھیجا کہ آپ نے خوش فیویڈ جھے نہیں دیے ، آ خر تلا تی کی گئی، لیکن جس ڈ بے میں پونڈ رکھے ہوئے تھے ہما ی خوش فیبی سے پولیس نے کھول کر ہی نہ دیکھا، اس طرح ہم محفوظ ہو گئے۔

خدا جانے انہیں زندگی میں ایسے خطرات کتنی مرتبہ قبول کرنے پڑے ،کین مجاہرین کی اعانت کا کام بدستور جاری رکھااور انکے پاس جماعت کے آ دمی برابر آتے رہتے تھے۔